आल्हखंड-बडा।

असली २३ लडाई ५२ गढविजय।

(महोबेकी बोलीमें)

जिसमें

पृथ्वीराज आदि राजाओंके साथ आल्हा ऊदनि आदि महावीरोंका युद्ध आल्हाछन्दमें वर्णित है।

जिसको

आल्हा गानेवाले प्रेमियोंके चित्तविनोदार्थ,

पं० नारायणप्रसाद सीतारामजीसे संकलित

एवं परिवर्द्धित कराय,

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये

छापकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९७७, शकाब्दाः १८४२.

कल्याण-मुंबई.

बडा आल्हखण्ड असली ५२ गढ विजयकी पृथक् २ लडाई।

नंबर.	आल्हखण्डकी लडाइयाँ	पृष्ठ.

इति आल्हखंडकी लडाइयोंकी अनुक्रमणिका समाप्त ।

आल्हखण्ड ।

प्रस्तावना ।

दोहा–गणपति विधि हरि हर सुमिरि, लिखत यथामति पाय
आल्हखण्ड प्रस्तावना, सुनहु सुजन मन लाय ॥ १ ॥

आल्हा छन्द ।

अलख निरंजन परमेश्वरको ❀ लै परभात रामको नाम ।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र वै सिरजत ❀ पालत हरत सृष्टि परधान ॥ १ ॥
नेति नेति कहि वेद पुकारत ❀ महिमा अमित विष्णु भगवान ।
सो अवतार लेत भक्तन हित ❀ हरिजन सदा करत गुण गान ॥
भाषे व्यास पुराण अठारह ❀ अरु महभारत कियो बखान ।
गाये कृष्णचरित्र अनूपम ❀ जिन बहु हने असुर बलवान ॥
कियो युद्ध कौरव पांडव मिलि ❀ सारथि बने कृष्ण महराज ।
जो कछु इच्छा कृष्णचंद्रकी ❀ सोई तहां रचायो साज ॥ ४ ॥
दुर्योधन आदिक कौरव सब ❀ मारे गये युद्ध मैदान ।
भूप युधिष्ठिरादि पांडव तहँ ❀ जीते कृपा कीन्ह भगवान ॥ ५ ॥
अहंकार वश भे पांडव तब ❀ विनती करी कृष्ण ढिग आय ॥
रही कामना युद्ध करनकी ❀ कलिमें पूर्ण करहु सुरराय ॥ ६ ॥
यह सुनि बानी भीमादिककी ❀ सोचे मनहिं कृष्ण भगवान ।

अहंकार वश भये पांडुसुत ❀ ताते इनहिं देहु वरदान ॥ ७ ॥
कौरव हाथ कराय मीचु इन ❀ पुनि करि हेतु देहुँ निजधाम ।
यह विचारि कहि एवमस्तु प्रभु ❀ हरषित भये सकल तेहि ठाम॥८॥
सोई प्रगट भये कलियुगमें ❀ आल्हा आदि बीर बलवान ।
बावन गढके नृप जीते तिन ❀ करिके युद्ध घोर घमसान॥ ९ ॥
मांडलीक नृप भूप युधिष्ठिर ❀ जिनको सुयश प्रगट संसार ।
प्रगट भये सोई आल्हा हुइ ❀ जिनकी रही अमर तलवार ॥
भीमसेन प्रगटे ऊदन ह्वै ❀ औ सहदेव बीर मलिखान ।
अर्जुन प्रगटे ब्रह्मानंद ह्वै ❀ चारों भये महाबिया ज्वान॥ ११ ॥
लाखनि राना जो कनवजके ❀ पांडव नकुलक्यार अवतार ।
दुर्योधन प्रगटे दिल्लीमें ❀ ह्वइके पृथ्वीराज सरदार ॥ १२॥
चौंडा ब्राह्मण पृथ्वीराज ढिग ❀ द्रोणाचारजको अवतार ।
दुश्शासन प्रगट्यो धांधू ह्वै ❀ ताहर कर्ण क्यार अवतार॥ १३॥
नर अभिमन्यु भये इन्दल ह्वै ❀ बेला भई द्रौपदी आय ।
इहि विधि प्रगटे कौरव पांडव ❀ सब मिलि कीन्हों युद्ध अघाय १४
माहिल राजाकी चुगलिनमें ❀ राजा बिगरि गये परिमाल ।
रहउ शूर नहिं भरतखंडमें ❀ लूटन लगे यवन महिपाल ॥ १५
हुकुम चलायो सब हिंदुन पर ❀ बिद्वति करी यहाँपर आय ।
लाखन हिंदू मुसलमान करि ❀ बहुतै पुस्तक दिये जलाय १६॥
अच्छे अच्छे ग्रन्थ नशाये ❀ कीन्हीं बहुत अनीति अघाय ।
इतिहासनमें लिखो हाल यह ❀ पढि पढि रोम जात थरांय॥ १७॥
जब आये अँगरेज बहादुर ❀ तबते सुचित भये सबलोग ।
होत न्यायते काम यहाँ अब ❀ सिगरी प्रजा करत सुख भोग ॥ १८
बन्दोबस्तके रहे कलक्टर ❀ कुछ दिन शहर फर्रुखाबाद ।
मिष्टर सी. ई. इलियट साहब ❀ कीन्ही आल्हखंड मरजाद॥ १९ ॥

गावनवाले जो जाहिर थे ❀ तिनते लिखवायो त्यहि काल ।
अँगरेजीमें करो तरजुमा ❀ लंदन भेजि दियो ततकाल ॥ २० ॥
आज्ञा लै अपने मतवेमें ❀ मुंशी रामस्वरूप छपाय ॥
संवत उनइससै उनतिसमें ❀ असली आल्हा नाम धराय ॥ २१ ॥
कियो प्रगट लै मोल लोग सब ❀ बाँचत आल्हखंड सब ठाम ।
पंडित भोलानाथ गवैया ❀ ताही समय रहे सरनाम ॥ २२ ॥
तिनको सुन्दर आल्हखंड यह ❀ तिनते यथा समय हम पाय ।
प्रथम छपायो नगर बंबई ❀ पुनि लक्ष्मणपुर लियो छपाय ॥ २३ ॥
अब बढ़ायके भलीभाँति हम ❀ शोधेउ शहर बंबई जाय ।
चन्दभाट कृत आल्हखंडको ❀ बहुविधि खोजिलियो मँगवाय ॥ २४ ॥
सोऊ शोधि लिखो पाछेते ❀ आज्ञा रंगनाथकी पाय ।
भेजिदियो कल्याण प्रेसमें ❀ छापन हेत मोद सरसाय ॥ २५ ॥
श्रीवेंकट ईश्वर यंत्रालय ❀ स्वामी खेमराज सरनाम ।
हैं जो सेठ बंबईमाहीं ❀ तिन सुत रंगनाथ बुधिधाम ॥ २६ ॥
दूसर सुत श्री श्रीनिवासजी ❀ होवैं सुखी सहित परिवार ।
नित नित बाढै भवन सम्पदा ❀ है यह आशीर्वाद हमार ॥ २७ ॥
वर्षाऋतुमें समय पाय सब ❀ आल्हा पढत सुनत मन लाय ।
ताते लिखिके आल्हखंड यह ❀ भोलानाथी दियो सुनाय ॥ २८ ॥
नारायन प्रसाद लक्ष्मीपुर ❀ सीताराम सहित सरनाम ।
हाट पुस्तकालय सोहतहै ❀ सम्मुख हनूमान बलधाम ॥ २९ ॥
समय पायके आल्हा गावो ❀ नित उठि लेउ रामको नाम ।
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ बहुविधि धारि ध्यान घनश्याम ॥ ३० ॥

इति प्रस्तावना शुभमिति ।

लि० । पं० नारायणप्रसाद सीतारामजी

पुस्तकालय लखीमपुर खीरी (अवध).

भूमिका।

आल्हा संग्रामका मूल कारण।

प्रिय पाठकगण! प्रगट हो कि कुरुक्षेत्रके मैदानमें जब महाभारत युद्ध हुआ तब श्रीकृष्णचन्द्रजीकी सहायतासे पांडवोंने कौरवोंसे विजय पाई। उस समय दुर्योधन आदिक कौरव नष्ट हुए और युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव ये पांचों पांडव विजयी हुए परन्तु भीम आदिककी इच्छा युद्धसे पूर्ण न हुई। इस कारण श्रीकृष्णजीके सन्मुख जाकर प्रार्थनापूर्वक स्तुति की, कि हे कृपासिन्धु! आपकी कृपासे कौरवोंको तो जीता। परन्तु हमारी युद्धकी इच्छा बनी ही रही। इसलिये आप प्रसन्न होकर यह वर दीजिये कि हम कलियुगमें युद्ध करके इच्छा पूरी करें।

यह बात सुनकर श्रीकृष्णजीने अपने मनमें विचारा कि जीत होनेसे इनको अभिमान हो गया है अब कौरवोंके हाथसे इनकी मृत्यु कराकर बैकुंठ पहुँचाऊँ। यह विचार कर श्रीकृष्णजी बोले कि अच्छा तुम्हारी इच्छा पूरी होगी सोई युधिष्ठिरजी आल्हा हुए भीमसेन ऊदन हुए अर्जुन ब्रह्मनन्द हुए नकुल लाखनि हुए सहदेव मलिखान हुए इस प्रकार पाँचों पांडव अवतार लेकर प्रगट हुए। इन्दल अभिमन्युका अवतार है, कौरवोंमें राजा दुर्योधन पृथ्वीराज हुए दुश्शासन धाँधू हुआ कर्ण ताहर हुए द्रोणाचार्य चौंडा ब्राह्मण हुए इस प्रकार ये सब प्रगट हुए और उमंगके साथ युद्ध किया अन्तमें सब नाश होगये, आगे आल्हखंडसम्बन्धी वीरोंका संक्षिप्त वृत्तान्त लिखा जाता है।

राजा परिमालका जन्म।

जब कलियुगके कुछ वर्ष बीते तब चन्देली नगरमें चन्द्रवंशी महाराज चन्द्रब्रह्म हुए धर्मात्मा चन्द्रब्रह्मजीको चन्द्रमाने प्रसन्न होकर पारसमणि दी थी उस पारस पत्थरको छूकर लोहा भी सुवर्ण हो जाता था। उसीके

प्रभावसे महाराजने अनेक यज्ञ किये और बहुत सेना रखकर सब राजा-ओंको जीतकर संसारमें अपना यश फैलाया, महाराजके मंत्री चिन्तामणि तोमरवंशी क्षत्रिय थे, चन्द्रब्रह्मके पुत्र वीरब्रह्म, वीरब्रह्मके पुत्र रूपचन्द्र, रूपचन्द्रके पुत्र व्रजब्रह्म, व्रजब्रह्मके पुत्र वन्दन हुए । महाराज वन्दनने पांच यज्ञ किये, वन्दनके पुत्र जगद्ब्रह्म, जगद्ब्रह्मके पुत्र सत्यब्रह्म, सत्य-ब्रह्मके पुत्र सूर्यब्रह्म हुए, सूर्यब्रह्मने अपने नामसे सूर्यकुंड बनवाया । सूर्य-ब्रह्मके मदनब्रह्म, मदनब्रह्मके पुत्र कीर्ति हुए, कीर्तिने अपने नाम कीरति-सागर बनवाया । महाराज कीर्तिके यहां बीस लाख सेना थी. कीर्तिके पुत्र परमाल (चन्देले) प्रतापी राजा हुए, राजा परिमालने तीर्थयात्रा करते हुए बहुत दान ब्राह्मणोंको दिया और अनंगपाल आदि सब राजाओंको अपने वशमें कर भेंट लेलेकर छोड दिया और अमरनाथ गुरुकी आज्ञासे अपना खाँडा सागरमें पखार दिया फिर गुरुकी शपथ कर ली और अस्त्र शस्त्रको हाथ नहीं लगाया । इसी कारण युद्धके नामसे कांप जाते थे कि एक तो मैं वृद्ध होगया दूसरे अस्त्र शस्त्र हाथमें ले नहीं सकता हूँ, मेरा यश जो फैल रहा है उसमें लांछन लग जायगा । राजा परिमालके पितृ वंशमें एक चम्पावती नाम कन्या थी, जो राठौरवंशी क्षत्रिय महाराज कनवजको विवाही थी. जिस वंशमें राजा जयचन्दजी हुए ।

राजा परिमालका विवाह ।

राजा वासुदेवका दूसरा नाम मालवन्त था सो महोबेमें राज्य करते थे राजा वासुदेवके दो पुत्र १ माहिल २ भोपति थे । मल्हना आदि पांच कन्यायें थीं मल्हना बहुत सुन्दरी थी, उसके रूपकी बडाई सुनकर राजा परिमालने महोबेपर चढाई की और राजा वासुदेव व माहिल भोपतिको युद्ध करके जीत लिया तब हार मानकर राजा वासुदेवने मल्हनाका विवाह राजा परिमालके साथ कर दिया । फिर मल्हना रानीने चन्देलोंमें रहना अंगीकार नहीं किया और कहा कि हम महोबेमें ही रहेंगी, यह सुनकर

राजा वासुदेवने महोबेकी राजधानीको छीनकर राजा परिमालने अपना नि-वासस्थान बनाया। राजा वासुदेव उरईमें जा रहे और राजा परिमालको अपनेसे प्रबल जानकर सम्मानके साथ शुभ दृष्टिसे देखते रहे और छल कपट रहित वर्ताव करने लगे । परन्तु माहिल मन ही मन कुढ रहे थे, कुछ कर नहीं सकते थे, कुछ ही काल बीते राजा वासुदेव परलोकगामी हुए । उरईका राज्य माहिल करने लगे और अपने भाई भोपतिको जग-नेरमें किला बनवाय वहाँका राज्य दिया । माहिल और भोपति दोनों भाई राजा परिमालकी सम्मतिसे सब काम करते थे, भोपतिका दूसरा नाम जागनि था । माहिलने राजा परिमालसे चुगुली माफ करा ली थी और परिमालसे बदला लेनेके दाँवघातमें लगे रहते थे, इसीसे माहिलकी चुगुलीपर राजा परिमाल कुछ ध्यान नहीं देते थे इसका यह परिणाम हुआ कि पीछेसे सर्व नाश हो गया, राजा परिमालके अन्य भी अनेक रानियां थीं ।

दस्सराज बच्छराजका वृत्तान्त ।

माडौगढका राजकुमार (राजा जम्बैका पुत्र) करिंगा राय गंगा स्नान करने आया वहाँ मेलेमें अपनी बहिनके लिये नौलखा हार ढूँढता था, इतनेमें माहिलने उससे मिलकर कहा कि तुम राजाओंके बेटे होकर बजारमें हार खरीदते फिरते हो, महोबेमें हमारी बहिनके पास नौलखा हार है चलकर लूट लो। यह सुनकर करियाने महोबेमें आकर हार लेना चाहा तब ताल्हन सैयद और दस्सराज बच्छराजने लडकर उसको मार भगाया, कुछ समय बीते ताल्हन सैयद बनारस गये थे, माहिलने जाकर करियाको खबर दी कि सैयद बनारसको गये हैं । मौका अच्छा है अब चलकर नौलखा हार ले आओ। यह सुन करिया आया और दशहरिपुर-वामें जाकर आधी रातको छापा मारा, दस्सराज बच्छराजको सोते हुए बांध लिया, दिवलाके गलेसे नौलखा हार और सब गहना, हाथी पच-

शावद, घोडा पपीहा, लाखापातुर आदि इन सबको साथ लेके माडोंको लौट गया। दस्सराज बच्छराज दोनों भाइयोंको कोल्हूमें पिरवाय शिर, काट बर्गद वृक्षमें टँगादिया। दस्सराज बच्छराजकी उत्पत्ति वनमें हुई थी इस कारण इनको बनाफर कहते थे, इनकी उत्पत्तिका विस्तार दूसरे आल्हखंडमें लिखा जा चुका है।

पृथ्वीराजका जन्म।

दिल्लीके राजा अनंगपाल जिस समय थे उसी समय कन्नौजमें राजा विजयपाल (अजयपाल), जोधपुरमें नाहरराय, चित्तौरमें समरसिंह, पाटनमें भीमदेव, जैसलमेरमें भोजदेव, आबमें जेत पँवार, अजमेरमें सोमेश्वर राजा थे, कविचंद भाटने लिखा है कि राजा अनंगपालका कामध्वजके साथ युद्ध हुआ, उस युद्धमें अजमेरपति सोमेश्वरने अनंगपालकी सहायता की, इससे प्रसन्न होकर अनंगपालने अपनी छोटी कन्या कमला देवीका विवाह सोमेश्वरके साथ कर दिया। कमलाका दूसरा नाम इन्द्रवती और इन्द्रकुँवरि भी था, कमलाके गर्भसे संवत १११५ विक्रमीयमें पृथ्वीराजका जन्म हुआ, पृथ्वीराजकी जन्मपत्रीके विषयमें चन्द्र कविने पद्धरी छन्दमें इस प्रकार लिखा है कि—

दरबार बैठि सोमेश राय, लीन्हे हजार ज्योतिषि बुलाय ॥
कहो जन्मकर्म बालक विनोद, शुभ लगन मुहूरत सुनत मोद ॥
संवत एकादश पंचअग्ग, वैशाख मास पग्व कृष्ण लग्ग ।
गुरु सिद्धियोग चित्रा नखत्त । गरनाम कर्णशिशु परम हित्त ॥
ऊषा प्रकाश इकवारिय रात । पल तीस अंश त्रय बाल जात ॥
गुरु बुद्ध शुक्र परि दशैइथान । अष्टमे थान शनि फल विधान ॥
पंचवूअथान परि सोम भौम । ग्यारवें राहु बल करन होम ॥
बारहें सूर सो करन रंग । अन मौन माइ तिन कर भंग ॥
पृथिराज नाम बल हरै छत्र । दिल्लीय लखत मंडे सुछत्र ॥
चालीस तीन तिन वर्ष साज । कलि पुहुमि इन्द्र उद्धार काज ॥

इस कवितामें कुछ भूल अवश्य है वैशाख कृष्ण पक्षका जन्म चित्रा नक्षत्रमें लिखा है, तिथि नहीं लिखी, परंतु चित्रा नक्षत्र वैशाख कृष्ण प्रतिपदाको हो सकता है, क्योंकि चैत्रमासकी पूर्णमासी चित्रा नक्षत्रका मुख्यस्थान है, नामके नामसे ही मासका नाम मुख्य माना जाता है। सो प्रतिपदाको सही और वैशाखमें सूर्य मीन राशिके अथवा मेषराशिके होते हैं, डेढघडी रात रहे जन्म लिखकर बारहवें स्थानमें सूर्य लिखे हैं। यह असंभव है पांच और दो मिलाय सातवें स्थानमें चंद्रमा लिखा है, तो आधे चित्रातक कन्या राशि होती है तो कन्याका चंद्रमा सातवें होनेसे मीन लग्नमें जन्म निश्चय हुआ। तो मेषके सूर्य दूसरे हुए यदि मीनके सूर्य हों तो मूर्तिमें हुए, सूर्य और बुधका प्रायः साथ रहता है। यहाँ सूर्य बारहवें घरमें लिखे और बुधको दशमस्थानमें लिखा, यह बात भी असमंजसकी है, कुछ हो, यहाँ संवत् १११५ में जन्म मान लेनेकी आवश्यकता है।

पृथ्वीराजके जन्मसे पहले पृथ्वीराजकी माताको अतिकष्ट भोगना पडा था, जिसका संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि तोमरवंशी महाराज अनंगपालकी कन्या इन्द्रवती तीन महीनेके गर्भसे थी। श्रावणका महीना था पिताने बुलाया और कन्याको गर्भवती सुनकर पंडित चन्दनलालजीसे पूछा कि इस कन्याके गर्भस्थ बालकका वृत्तान्त कहो, पंडितजीने उत्तर दिया कि इसके गर्भसे बडा प्रतापी शूर वीर पुत्र उत्पन्न होगा। सब राजाओंको जीत लेनेवाला होगा और इसको सब नरदेही कहेंगे और यह तुम्हारे वंशभरको यहाँसे निकालकर निष्कंटक राज्य करेगा। यह सुनकर महाराज अनंगपाल चिंतायुक्त हुए और अपने वंशके लोगोंको बुलाकर सब हाल कह सुनाया, तब कुटुंबीलोग बोले कि महाराज आप अपनी कन्याको बुलाय एकान्तमें समझाकर कहो कि हमने तेरे गर्भके विषयमें पंडितोंसे पूछा तो उन्होंने कहा कि तुम्हारी कन्याके गर्भसे बडा

प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा, परन्तु जो यहाँ रहेगी तो इसका गर्भ गिर जायगा। इस कारण तबतक तीर्थाटन कर आओ, इस प्रकार समझाकर इन्द्रवतीको हमारे साथ भेज दीजिये । हम इसको किसी कुँवामें गिराकर लौट आवेंगे, यह सुनकर राजा अनंगपाल वहांसे रनिवासमें जा अपनी रानीके समीप इन्द्रवतीको बुलाकर कहा कि हे पुत्रि! आज हमने ज्योतिषियोंको बुला तुम्हारे गर्भके कल्याणनिमित्त पूछा था तो पंडितोंने कहा कि आपकी कन्याके गर्भसे बडा प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा! परन्तु यहाँ रहेगी तो गर्भ पतन हो जायगा, सो जो तुम्हारी इच्छा हो तो अपने कल्याणनिमित्त हमारी सेना और कुटुंबी जनोंको साथ लेकर तबतक तीर्थाटन कर आओ! इन्द्रवती यह वचन पिताका सुन मातासे सम्मति करके अपनी कुशल कामना करके मधुर वचन बोली हे पिता! जो आपकी आज्ञा हो सोई करूँगी। तब राजा अनंगपालने अपने कुटुम्बियोंको बुला सेनासहित तीर्थाटनके मिस इन्द्रवतीको भेज दिया, वे सब घोर वनमें इन्द्रवतीको ले गये और रात्रिके समय छल करके एक कुवाँमें डाल दिया। बाद सबलोग दिल्लीको लौट आये और राजासे कहा कि आपका काम हम कर आये, इन्द्रवती उस कुवाँमें पडी हुई बहुत विलाप करने लगी उसी समय हरिकी इच्छासे एक अश्वत्थामा नामक साधु आ गये और इन्द्रवतीको कुवाँसे निकालकर पूछने लगे कि तुमको इस कुवाँमें किस दुष्टने डाल दिया? तब इन्द्रवतीने कहा ' महात्मन्! मैं राजा अनंगपाल दिल्लीपतिकी कन्या हूँ और अजमेरके महाराजकी प्रिय रानी हूं। रात्रिके समय शयन करनेमें नहीं मालूम कि कौन राक्षस व देव मुझको उठा लाकर यहाँ कुवामें डाल गया । यह सुनकर साधुने कहा कि अब तुमको तुम्हारे पिताके यहाँ पहुँचा दें अथवा पतिके यहाँ सो शीघ्र बताओ। तब इन्द्रवती बोली कि अब मैं कहीं न जाऊँगी, इस समय तो मेरे पिता आपही हो मेरी रक्षा करो। यह सुनकर

साधुने इन्द्रवतीको कन्याके समान अपनी मढीमें रख रक्षा करने लगे इन्द्रवती वहां अपने पिताके यहाँसे भी अधिक सुखपूर्वक रहने लगी । पुराण इतिहासके अनुसार बलभद्रविलास एक बडे ग्रन्थमें लिखा है कि—

अथ सा माघमासे तु त्रयोदश्यां सिते भृगौ ।
पुष्ये द्वित्रीन्दुचन्द्रेऽब्दे मध्याह्नेऽभिजितिक्षणे ॥ १ ॥
मुदिते लोकसन्ताने तदा पुत्रमजीजनत् ।
यं वदन्ति नराः सर्वे धार्तराष्ट्रावतारकम् ॥ २ ॥
आजानुबाहुः शशिपूर्णिमास्यः पद्मायताक्षो मदनैकरूपः ।
वीरप्रहन्ता क्षितिभारहर्ता वंशाऽवतंसो नरदेहसंज्ञा ॥ ३ ॥

अर्थात् संवत् ११३२ माघ शुक्ल त्रयोदशी शुक्रवारको दो पहर दिनके समय पुष्य नक्षत्र अभिजित् मुहूर्तमें सब लोगोंके प्रसन्न समय कमलाके पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसको सब मनुष्य दुर्योधनका अवतार कहते हैं । वह बालक लंबी भुजावाला, चन्द्रमाके समान मुख कांतिवाला, कमलके समान नेत्रोंवाला, कामदेवके समान सुन्दर रूपवाला, वीरहंता भूमिके भारको हरनेवाला, चौहानवंशमें भूषण नरदेही हुआ ।

मुनिजीने उस बालकका नाम पृथ्वीराज रक्खा, पांच वर्षकी अवस्थामें ही मुनि अश्वत्थामाजीने बाणविद्याकी शिक्षा दी, सात वर्षकी आयुमें अनेक विद्यायें मुनिजीने सिखाई । तब पृथ्वीराज वनमें निर्भय होकर विचरने लगे, बाणों करके सिंह व्याघ्र आदि पशुओंको मूर्च्छित कर पकड पकडके मढीमें ला ला अपनी माता व मुनिराजजीको आनन्द देते हुए बाललीला दिखाते थे ।

पृथ्वीराजका अपने पितासे मिलना और घरपर आना ।

महाराज सोमदेव एक दिन वनमें आखेटको निकले, दैवयोगसे उसी वनमें पहुँचे जहाँ पृथ्वीराज वनमें विचरते हुए सिंह आदि पशुओंको पकड रहे थे । राजा सोमदेवने उस बालकको देखकर विचार किया

कि यह बालक कौन है ? जिसको देखकर हमारा हृदय विह्वल होने लगा है। हमारी प्यारी जीती होगी और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ होगा तो ऐसाही पुत्र हुआ होगा। यह विचार कर महाराज उस बालकसे पूछने लगे कि तुम किसके बालक हो ? यहाँ इस वनमें किस कारण विचरते हो ? यह सुनकर बालक कहने लगा कि अश्वत्थामा ऋषि मेरे पिता हैं, आपको रुचै तो मेरे स्थानको चलिये। तब महाराज सोमदेव उस बालकके साथ गये, ऋषिने राजाको देखकर मधुर वचनोंसे सत्कार किया और पूछा कि आपका स्थान कहाँ है राजाने कहा कि मैं अजमेरका राजा सोमदेव हूं, चौहानवंशमें उत्पन्न क्षत्रिय हूं। मेरे दो स्त्रियां रहीं उनमें एक तो कुशवंशी कोतलजी अजमेरिके राजाकी पुत्री, दूसरी तोमरवंशी अनंगपाल हास्तिनापुरके राजाकी पुत्री मुझको अपने प्राणोंसे भी अधिक प्यारी थी, वह गर्भवती थी। जब उसके गर्भके लक्षण अनंगपालने पंडितोंसे पूछा, तब पंडितोंने पण्डितोंने कहा कि जो बालक इसके गर्भसे उत्पन्न होगा वह तुम्हारे वंशभरको यहाँसे निकालकर राज्य करेगा। तब उस बातमें शंका मानकर अनंगपालने हमारी गर्भवती प्यारीको अपने कुटुंबियोंके साथ श्रावणमासमें तीर्थके मिस भेजकर मार डाला। यह समाचार सुन उसी दिनसे उदास मन रहा करता हूँ, मुझको कुछ नहीं सुहाता, यह कहकर महाराज सोमदेवजी नेत्रोंसे आँसुवोंकी धारा छोडने लगे। और मढीके भीतर बैठी हुई इन्द्रवती अपने पतिको पहचान उनके वचन सुनकर आँसू बहाने लगी। राजा सोमदेवजीको दुःखित देखकर अश्वत्थामाजी कहने लगे हे राजन् ! आप कुछ शोच न करो ईश्वरकी गति विचित्र है, जो दूसरेको मारना चाहता है वह औरसे मारा जाता है सुनो राजन् ! हमने यहीं बैठे एक वटवृक्षपर कबूतरका जोडा बैठा देखा एक वधिक उस वृक्षके नीचे धनुषबाण लिये आ पहुँचा और कबूतरके जोडाको देखकर बाण चढाय धनुष तानकर मारना चाहता था

इतनेमें एक बाज पक्षी ऊपर आया और कबूतरके जोडाको मारना ही चाहता था ऊपर नीचे अपना काल देख कबूतरका जोडा भी घबडाने लगा कि अब मृत्यु आ गई । इसी अन्तरमें वटवृक्षकी जडमें बाँबीसे एक साँप निकला और व्याधको काट खाया, वह गिर पडा उसके हाथसे छूटा हुआ बाण ऊपर बाज पक्षीके जा लगा, ऐसे वे दोनों मरगये और कबूतर पक्षीका जोडा बच गया। इस कौतुकको देखकर हम यहाँ वनमें स्थिर हैं, हे राजन् ! तुम्हारी स्त्री इस घोरवनमें एक कुएँमें पडी थी हमने उसे निकालकर पुत्रीके समान पालन किया है, सो आप अपनी स्त्री और पुत्रको लीजिये । यह कह इन्द्रवतीको मढीसे बाहर बुलाकर सामने किया और पृथ्वीराजका हाथ पकडा दिया, महाराज सोमदेवजीके आनन्दकी सीमा न रही । पुत्रको हृदयसे लगाया, पृथ्वीराजने भी पिताको प्रणाम किया, अनन्तर अश्वत्थामाजीको प्रणाम कर स्त्री पुत्रको साथ ले महाराज सोमदेवजी अजमेरको चलने लगे । तब अश्वत्थामाजीने पृथ्वीराजको आशीर्वाद देकर एक अर्धचन्द्राकार बाण दिया और कहा कि यह बाण खाली नहीं जायगा और तुम शब्दवेधी बाण मारनेमें प्रसिद्ध होगे तुमको सब शब्दवेध चौहान कहेंगे, तुम्हारा नाम पृथ्वीभरमें प्रसिद्ध होगा । इस प्रकार आशीर्वाद देकर जानेकी आज्ञा दी; तब पृथ्वीराजने मुनिजीके चरणोंमें प्रणाम किया । इन्द्रवतीने भी मुनिराजको प्रणाम किया, महाराज सोमदेवने भी प्रणाम किया और चले । अजमेर आकर पृथ्वीराजने कान्हदेवजीको प्रणाम किया और आशीर्वाद पाया, जब पृथ्वीराज बारह वर्षके हुए तब अपने भाई कान्हदेवको अपना पुत्र सौंपकर महाराज सोमदेवजी परलोकगामी हुए । कुछ दिन उपरान्त महाराज नाहू अपने पुत्र सोमदेवके शोकसे परलोकगामी हुए और महाराज पृथ्वीराज अनेक शूर वीर सामंतों सहित राज्य करने लगे । जो सौ मनुष्योंसे अपनी और अपनी

सेनाकी रक्षा कर सके फिर सौको मार गिरावे उसको योद्धा कहते हैं, उसमें पांच हाथीका बल होता है। और सौ योद्धाओंमे जो अपनी रक्षा भलीभांति कर सके उसको शूर कहते हैं, उसमें दश हाथीका बल होता है, तथा सौ शूरोंसे जो अपनी रक्षा कर सके उसको सामन्त कहते हैं। उसमें वीस हाथीका बल होता है। एवं जो सौ सामन्तोंमे अपनी रक्षा कर सके उसको धवल कहते हैं; उसमें चालीस हाथीका बल होता है तथा जो सौ धवलोंसे अपनी रक्षा कर सके तो उसको सबल कहते हैं उसमें अस्सी हाथीका बल होता है। उनमें महाराज पृथ्वीराज तो सबल थे। राजा कान्हदेव आदि धवल थे और एक सौ आठ सामन्त, सोलह सौ शूर तथा दशहजार योद्धा थे, इन सबके साथ महाराज पृथ्वीराजजी अजमेरमें राज्य करते थे।

पृथ्वीराजका दिल्लीपति होना।

पश्चिम दिशासे अफगानिस्तानका बादशाह सुल्तान शहाबुद्दीन गोरी एक समय दिल्लीपर चढ आया और अनंगपालके पास एक दूत भेजकर जनाया कि आपसे युद्ध करनेके लिये गजनी शहरका बादशाह आया है और अटक नदीपर आकर डेरा किया है। यह समाचार पाकर अपने मंत्रियोंको बुलाकर सम्मति की कि यदि हम अटक नदीपर युद्ध करने जावें और दूसरा कोई राजा चढ आवे तो दिल्लीकी रक्षा कौन करेगा? मंत्रियोंने कहा कि आपके वंशमें तो कोई भी इस योग्य नहीं जो दिल्लीकी रक्षा कर सके, परंतु आपकी कन्या (इन्द्रवती) का पुत्र पृथ्वीराज इस योग्य है, उसको बुलाकर तबतक अपना राज्य सौंप दीजिये। यह सुनकर राजा अनंगपालने अजमेरसे पृथ्वीराजको बुलाया, महाराज पृथ्वीराज अपने चचा कान्हदेव, व शूरवीर व चन्द कवि तथा अनंगपालकी भेजी हुई सेनाके साथ आदिभयंकर नामक बडे हाथीपर सवार होकर दिल्ली आ अपने नाना अनंगपालके चरणोंमें प्रणाम किया। अनंगपालने पृथ्वीराजको हृदयसे

लगालिया और बोले कि पश्चिमसे अफगानिस्तानके गजनी शहरका बादशाह चढ आया है, हम उससे युद्ध करने जाते हैं तबतक तुम यहां राज्य करो। यह सुन पृथ्वीराजने कहा कि इस प्रकार मैं आपका राज्य स्वीकार नहीं करूंगा आप सब समझाकर उनके सामने मुझको राज्याधिकारी कीजिये और यह भी कह दीजिये कि यदि मैं भी लौटकर आऊं तो विना आज्ञा पृथ्वीराजके न आने पाऊं। यह सुनकर अनंगपालने अपने मंत्री व कुटुंबीजनोंको तथा अन्य सब लोगोंको बुलाकर उनके सामने कहा कि हम अटकपर शत्रुसे युद्ध करने जाते हैं और अपना राज्य कोषादिक सब पृथ्वीराजके आधीन करते हैं, तुम सब पृथ्वीराजकी आज्ञा मानना, यह कहकर राजा अनंगपाल शत्रुसे युद्ध करनेको चले गये। पृथ्वीराजने अनंगपालकी सेनाके सब मनुष्योंको रत्न, वस्त्र, धन आदि देके प्रसन्न कर लिया और भोजनादि सत्कारसे सबको अपने अधीन कर लिया। अजमेरसे अपनी चाची व भाई आदिको बुलाकर दिल्लीमें बसाया और अपनी पूर्व सेनाको अजमेरगढकी रक्षाके निमित्त रख दिया। अपने चाचा रावशूरको अजमेरका अधिपति किया, इस प्रकार दिल्लीके राज्याधिकारी पृथ्वीराज हुए। उस समय पृथ्वीराजकी आयु सोलह वर्षकी थी उसी अवसरमें चामुंडराय ब्राह्मण महाराज पृथ्वीराजके यहां आया जिसका वृत्तान्त आगे लिखेंगे।

अनंगपालकी बडी पुत्री सुन्दरीका विवाह विजयपालके साथ हुआ था, जिसके गर्भसे जयचन्दका जन्म हुआ। कहीं ऐसा भी लिखा है कि सुन्दरीका विवाह जयचन्दके साथ हुआ था। इन दो बातोंमें नहीं मालूम कौनसी बात सत्य है खैर जो हो, वृद्ध होनेपर राजा अनंगपालका चित्त इस असार संसारसे उठ गया। इस कारण बदरिकाश्रममें जाकर तपश्चर्या

१ परंतु हमको यही निश्चय होता है कि राठौरवंशी विजयपालके साथ सुन्दरीका विवाह हुआ था।

करनेका निश्चय किया और अपने कोई पुत्र न होनेसे दत्तक पुत्र लेनेकी इच्छा प्रगट की।

लोगोंको विश्वास था कि राजा अनंगपाल जयचन्दको दत्तक लेंगे, परंतु ऐसा न हुआ। समय पाय पृथ्वीराजको अजमेरसे बुलाकर राज्य दिया, इस बातसे जयचन्दके चित्तमें जलन उत्पन्न हो गई, जिसक परिणाम यह हुआ कि जयचन्द पृथ्वीराजके शत्रु बन गये और पृथ्वीराजके शत्रु शहाबुद्दीन गोरीमें जा मिले। जिससे यह भारतवर्ष (हिंदुस्तान) मुसल्मानोंके हाथमें चला गया और इसकी स्वाधीनता सदाके लिये कूच कर गई। आपसकी फूटने हिंदुस्तानको पराधीन कर दिया, पराधीनताके कारण हिन्दुओंको बहुतसे दुःख भोगने पडे थे, जो इतिहासोंके पढनेसे साबित होता है। वर्तमान राज्यमें तो भारतमें स्वाधीनताका बहुत अंश लौट आया है जिससे उस समयका दुःख भूल गया है।

पृथ्वीराजका विवाह।

गुजरातका राजा भोलाराय बडाही अहंकारी, था पृथ्वीराजने उसका अहंकार चूर्ण किया और इच्छन कुमारीके साथ विवाह किया। फिर चन्द्रपुंडीरकी कन्या दाहिमी नामवाली परम सुंदरीसे विवाह किया। अनन्तर दिल्लीसे पूर्व दिशाकी ओर समुद्रशिखर नामका एक नगर था वहां यादववंशीय राजा विजयपालका पुत्र पद्मसेन राज्य करता था। पद्मसेनकी कन्या पद्मावती परम सुन्दरी थी, उसका विवाह कमाऊँके राजा कमोदमनिके साथ होना निश्चय हुआ था। परंतु पद्मावतीने पृथ्वीराजके गुणोंकी प्रशंसा सुन रक्खी थी, इस कारण पृथ्वीराजको अपना पति मानकर अपनी ओरसे पत्र भेजा। पृथ्वीराजने तोतेके द्वारा वह पत्र पाकर पढा और पद्मावतीके साथ विवाह करनेका निश्चय किया और एक छोटीसी सेना लेकर समुद्रशिखरपर चढ गये, विजयपाल और कमोदमनिको परास्त करना कुछ कठिन न था, थोडे ही समयमें पद्मावतीको

व्याह कर दिल्लीको लौट आये । उरईके परिहार राजा माहिलकी बहिन अगमाके साथ पृथ्वीराजका विवाह हुआ, अगमा रानी बड़ी बुद्धिमती थी इसी कारण सब रानियोंमें वही मुख्य पटरानी समझी जाती थी, उसीके गर्भसे द्रौपदीने बेला नामसे जन्म धारण किया था। देवगिरिकी राजकन्या शशिव्रताके पानेकी आशासे कन्नौजाधिपति जयचन्द देवगिरिको गये, पृथ्वीराज जाकर उस कन्याको हर लाये । पृथ्वीराजके साथ जयचन्दका युद्ध हुआ । युद्धमें पराजित हो जयचन्द कन्नौजको लौट गये (पृथ्वीराज कर्णाटकको गये वहाँसे केलहन नामवाली एक नायिकाको साथ लेकर लौट आये) अन्तमें कन्नौजाधिपति जयचन्दकी कन्या संयोगिताके साथ पृथ्वीराजका विवाह हुआ, इसका वृत्तान्त विस्तारपूर्वक यहाँ नहीं लिखा जा सकता परंतु इतना कह देना आवश्यक है कि संयोगिताके लानेमें पृथ्वीराज और जयचन्दकी ओरके बहुतसे शूर वीर मारे गये, जिससे दोनोंमें निर्बलता आगई पृथ्वीराज इसी संयोगिताके प्रेममें मग्न रहा करते थे, राजकाजमें आलस्य करने लगे । यह संयोगिता न थी किन्तु भारतखंड जैसे स्वाधीन हिन्दुराज्यकी वियोगिता थी, धर्म और वैराग्य तो पृथ्वीराजमें थाही नहीं, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये पांचों विकार पृथ्वीराजमें थे । इन सबका फोटो पृथ्वीराजके चरित्रमें उतर आवेगा, संयोगिताके मोहमें फँसकर कामके वश होकर महलमें ही रहने लगे जिससे अराजकता फैलने लगी । वेतन (पगार) न मिलनेके कारण सेना डामाडोल होने लगी इसका परिणाम जो हुआ सो संक्षेपसे आगे लिखेंगे । पृथ्वीराजकी बहिन पृथाके साथ चित्तौरपति समरसिंहका विवाह हुआ था । दिल्लीकी गद्दीपर बैठते ही पृथ्वीराजके हाथ नागौ

१ देवगिरिके राजा मानकी कन्या परम सुन्दरी शशिव्रता नामा थी उसका विवाह राजाने अपने पुत्र लक्ष्मणसेनके कहनेसे जयचंदके भाई वरिचंदके पुत्रसे ठहराया था इसकी कथा विस्तरित है ।

रके एक उपवनमें एक बहुत बडा खजाना लग गया, इस धनसे चौहान बहुत ही धनी हो जायँगे इस द्वेषसे कन्नौज और पाटनके राजाओंने पृथ्वीराजपर धावा किया और गजनी मढसे शहाबुद्दीन गोरीको सहायताके लिये बुलाया। पृथ्वीराजने पाटनके राजाको हराकर चित्तौर नरेश समरसिंहकी सहायतासे शहाबुद्दीन पर आक्रमण किया और उसको कैद कर आठ हजार घोडे दंड लेकर छोड दिया, यही पृथ्वीराजके पराक्रमका पहला काम था। फिर खदुवनमें बहुत धन पाया उस धनको पृथ्वीसे निकालते समय शहाबुद्दीनने आक्रमण किया उस बार भी पहलेकी नाईं पृथ्वीराजने उसको कैद कर बहुतसा धन दंड लेकर छोड दिया तभीसे पृथ्वीराज धनी चौहान भी कहे जाते थे।

चामुंडवीर (चौंडा ब्राह्मण) का वृत्तान्त।

इन्द्रदत्त ब्राह्मण बकसरमें रहता था, उस गुणी ब्राह्मणके दो पुत्र थे १ सूर्यमणि २ चामुण्ड। दोनों देवीजीके उपासक थे, पांच वर्षकी पूजासे प्रसन्न हो देवीजीने आकाशवाणी द्वारा कहा कि ब्राह्मणो! अब तुम दोनोंसे हम प्रसन्न हैं इच्छानुसार वरदान माँगो। यह सुनकर सूर्यमणिने यह वर मागा कि हे भगवती! हमको राज धन और यशसे परिपूर्ण करो, देवीने कहा एवमस्तु। चामुंडने कहा हे भगवती! मैं कुछ दिन और पूजन करके वर मांगूंगा, यह कह बडे प्रेमसे देवीजीका पूजन करने लगा, सूर्यमणिको व्याघ्रवंशी महाराज रीवाँनरेशने बुलाकर आदरपूर्वक बहुतसा धन दे अपना पुरोहित नियत कर राज्यमें उत्तम अधिकार दिया। दो वर्षके उपरान्त देवीने चामुंडसे कहा कि हे विप्र! अब वर माँगो, तब चामुंडने कहा हे भगवती! रणमें विजय, युद्धमें कुशलता और अमरत्व प्रदान कीजिये तब देवीजीने कहा कि तुम युद्धमें कुशल होगे अपनेसे समानवालोंके साथ युद्ध करके विजयी और योद्धाओंमें श्रेष्ठ होगे परन्तु अमरत्व संसारमें दुर्लभ है। रणमें सब शत्रु तुम्हारे हाथसे मारे जायँगे परन्तु तुम्हारी मृत्यु

देशराजके पुत्र (आल्हा) के हाथसे होगी। यह कहकर देवीजी अन्तर्धान हो गईं चामुंड वीर अपने घर आया, इसके प्रमाणमें बलभद्रविलासका

श्लोक—"सर्वेषां त्वमरीणां च रणे मृत्युर्भविष्यति ॥
देशराजात्मजं प्राप्य भवान्गन्ता यमक्षयम् ॥ ४ ॥

एक दिन चामुंड वीर दिल्ली गये वहां द्वारपालके हाथ एक पत्र पृथ्वीराजके पास पहुँचाया, पृथ्वीराजने वह पत्र बांचकर चामुंड वीरको अपने समीप बुलाया और प्रणाम किया । चामुंडने आशीर्वाद दिया और राजाकी आज्ञासे सुन्दर आसन पर बैठ गये ।

ततो नृपस्तत्कुशलं विदित्वा कृतादरं तं निजदुर्गमध्ये ॥
ददौ निवासं कतिचिद्दिनानि विचारयंस्तद्गुणकर्मशीलम् ॥ ५
निरीक्ष्य विद्यां रणभूजयत्वं तथा समालक्ष्य वरं महेश्याः ॥
सम्मंत्र्य सर्वैः प्रददौ विलोक्य राजन् स तस्मै निजभूमिभारम् ६ ॥
अथ प्रजानामधिपस्स्वसैन्यमाहूय सर्वं वचसा समूचे ॥
मया द्विजोऽयं भवदाधिपत्ये प्रकल्पितो यः स च माननीयः ॥ ७ ॥

अनन्तर महाराज पृथ्वीराजने चामुण्ड ब्राह्मणसे कुशल पूँछ उसका वृत्तान्त जानकर अपने गढमें उस ब्राह्मणके गुण कर्म स्वभाव जाननेके लिये कुछ दिन वास करनेको आज्ञा दी ॥ ५ ॥ फिर चामुडराजकी विद्या रणभूमिमें जय, तथा देवीजीके वरदानको भलीभांति समझकर सबकी सम्मतिसे पृथ्वीराजने अपने राजका भार चामुंडराजको सौंप दिया ॥ ६ ॥ और अपनी सेनाके मुख्य जनोंको बुलाकर यह कहा कि मैंने इस ब्राह्मणको तुम लोगोंका मालिक किया, जो आज्ञा करें उस आज्ञाको तुम सबलोग मानना ॥ ७ ॥

पृथ्वीराजका अविचार और अहंकार ।

राजा अनंगपालकी एक रत्नमंजरीनाम वेश्या थी, उसके दो पुत्र बडे बली रणमें कुशल पर्वताकार रूपवाले और वीरहंता थे । उस वेश्याको चामुंड ब्राह्मणके कहनेसे पृथ्वीराजने दिल्लीसे निकाल दिया, तब वह वेश्या

पचीस हजार भट और करोडों रत्न व अपने दोनों पुत्रोंसहित दिल्लीसे निकलकर गढ गजनीको चली गई। दो वर्ष बाद गढ गजनीका बादशाह अलाउद्दीन अपने भाइयों सहित चतुरंगिणी सेना लेके पृथ्वीराजसे युद्ध करने आया और उसकी सहायताके अर्थ अरबका बादशाह एक लाख सेना ले दिल्लीको चारों ओरसे घेर लिया । युद्ध होनेपर पृथ्वीराजकी विजय हुई, ऐसे पांच बार गढ गजनीका बादशाह एक लाख सेना ले चढा किन्तु पांचों बार पृथ्वीराजहीकी विजय हुई, बादशाहको पकड बहुतसा धन दंड ले लेकर छोड दिया।

एक समय अरब देशका मीर एक लाख अस्सी हजार सेना लेकर अजमेर पर चढ आया और चाहा कि छल करके अजमेरका राज्य हर लिया जावे। इस कारण घोडोंके सौदागर बनकर अजमेरमें आये, नगर भरमें उनके घोडोंकी प्रशंसा होने लगी । पृथ्वीराजने भी घोडोंकी प्रशंसा सुनकर अपने मंत्री कैमाषको भेजा, कैमाषने वहां जाकर घोडोंको और उनके सामानको देखकर ताजुब किया, सब घोडोंको देख भालकर मीरके चढनेके घोडेको मोल लेनेकी इच्छा प्रगट की। मीरने पहले तो उस घोडेको बेचनेसे इन्कार किया परंतु जब कैमाषने मुँह मांगा मोल देना चाहा तब मीरने बेंचना मंजूर किया। कहते हैं कि पृथ्वीराजने वह घोडा छत्तीस करोड रुपये देकर मोल लिया, इससे पृथ्वीराजका खजाना बहुत खाली हो गया इसी प्रकार और तरहसे भी छल कर मीर सेनाने पृथ्वीराजको हानि पहुँचाई अन्तमें घोर युद्ध हुआ । मीर और मीरकी सेनाको राजपूतोंने विध्वंस कर दिया यह समाचार सुनकर मीरके मामा ख्वाजापीरको बहुत क्रोध आया और खुद अजमेरमें आये आकर ख्वाजापीरने अपनी दैविक करामातोंसे हिन्दुओंको सताना प्रारंभ करादिया। पृथ्वीराजने अनेक उपाय किये कि ख्वाजापीर किसीको न सताएँ और हमसे परास्त होकर यहाँसे चले जांय परन्तु कोई उपाय न चला। तब अपने मंत्रियोंके आग्रहसे पृथ्वीराजने अपनी धायकी लडकी

परम सुन्दरी गुज्जरीको ख्वाजा साहबका तप भंग करनेके लिये भेजा, उसने वहां जाकर ख्वाजासाहबके सामने बहुतेरे हावभाव कटाक्ष किये, परंतु सब व्यर्थ हुए । वह खुद उनकी मुरीद बनकर सेवा करने लगी, तब लाचार होकर पृथ्वीराजने अपने मित्र कविचंद वरदाईको भेजा कि जाकर ख्वाजा साहबको प्रसन्न करो । चन्दने जाकर अपनी चतुराईसे ख्वाजा साहबको प्रसन्न कर लिया, ख्वाजा साहब इस बातपर राजी हुए कि यदि पृथ्वीराज अजमेरको पीरोंके लिये छोड दे तो हम किसीको न सतायेंगे। पृथ्वीराजने यह बात मान ली और अपनी सब सेना आदिको दिल्लीमें भेजकर अजमेर पीरोंके लिये छोड दी, तबसे अजमेर ख्वांजा पीरके नामसे प्रसिद्ध है ।

जिसके शिरपर राज्यका मुकुट है उसको कभी सुख नहीं, क्योंकि जिसके ऊपर राज्यशासनका भार रहता है उसके पीछे अनेक प्रकारकी चिन्ताएँ लगी रहती हैं । परंतु शासकोंको अपनी मानमर्यादा और अपने पूर्वजोंके यशका बहुत ख्याल रहता है, राजपूतोंमें यह विशेषता थी कि वे अपने कुलकी मर्यादाके लिये किसी भी अडचनकी पर्वाह नहीं करते थे । किन्तु कर्तव्य पालनमें अनेक कठिनाइयोंको सहते हुए भी तत्पर रहते थे 'प्राण जायँ पर वचन न जाहीं' यह उनका प्रधान सिद्धान्त रहता था । पृथ्वीराज दिल्लीमें थोडे ही दिन सुखसे रहे कि उनके लिये कठिन धर्म पालनका समय आ उपस्थित हुआ ।

गढ गजनीके बादशाह शहाबुद्दीनके दरबारमें एक सुंदरी चित्ररेखा नामवाली वेश्या थी, वह गाने, नाचनेमें बहुत ही निपुणा थी इसी कारण शहाबुद्दीन उसको बहुत चाहता था परंतु वह उसके छोटे भाई हुसेनखाँ पर मोहित थी । जब शहाबुद्दीनने जाना तो दोनोंको मार डालनेकी आज्ञा दी, तब हुसेनखां चित्ररेखाको लेकर वहांसे भागकर हिंदुस्थान आया और पृथ्वीराजके समीप आय अपनी रक्षाके निमित्त विनती करने लगा ।

१ बा

पृथ्वीराजने सोचा कि इसने अच्छा काम तो नहीं किया परंतु शरणागतकी रक्षा करनी चाहिये। यह विचार कर उसको नागोरमें रख दिया, शहाबुद्दीनको जब खबर मिली कि हुसेनखांको पृथ्वीराजने नागोरमें रख लिया तब अपने अरबखां सरदारको दिल्ली भेजकर पृथ्वीराजके समीप कहला भेजा कि हुसेनखां और चित्ररेखाको हमारे सिपुर्द कर दो, नहीं तो सुलतानका दासत्व स्वीकार करना पडेगा। अरबखां दिल्ली पहुँचा और बादशाहका संदेशा कह सुनाया, दासत्वका नाम सुनते ही पृथ्वीराजका शरीर मारे क्रोधके कांपने लगा और उत्तर दिया कि शहाबुद्दीनमें कुछ पराक्रम हो तो चढाई करके प्रगट करै वृथा गाल मत बजावे, अरबखां यह उत्तर सुनकर लौट गया। उसी अवसरमें देवगिरीके राजा मानकी शशिव्रता कन्या थी मानने चाहा था, कि पृथ्वीराजके साथ इसका विवाह करैं, परंतु अन्तमें अपने पुत्र लक्ष्मणसेनके कहने सुननेपर जयचन्दके भाई वीरचन्दके पुत्रसे उसकी सगाई कर दी। यह सुन शशिव्रताने एक पत्र पृथ्वीराजके पास भेजा पत्र पाते ही पृथ्वीराज अपने वीरोंसहित देवगिरि पहुँचे और वीरचन्दके साथ युद्ध कर शशिव्रता दिल्ली हरलाये। यह समाचार सुन कन्नौजसे क्रोधपूर्वक राजा जयचन्द बहुत बडी सेना लेकर देवगिरिपर चढे, जयचन्दने समझा कि राजा मानने विश्वासघात किया है। जयचन्दकी चढाई सुनकर राजा मानने पृथ्वीराजसे सहायता मांगी, पृथ्वीराजने चामुंडरायको बहुत बडी सेना देकर भेज दिया। चामुंडरायने राजा मान और रावल समरसिंहके भाई अमरसिंहकी सहायतासे जयचन्दको हरा दिया, ग्यारह दिनतक युद्ध होता रहा, इस विजयके हर्षमें पृथ्वीराज अपने मंत्रियों सहित नर्मदा तटपर हाथियोंके पकडनेके लिये गये थे। वहां लाहौरके गवर्नर चन्दपुंडीरने संदेशा भेजा कि शहाबुद्दीन गोरी बहुत बडी सेना लिये हिंदुस्तान पर चढाई करनेके लिये आ रहा है। यह समाचार पातेही पृथ्वीराज उसको रोकनेके लिये पंजाब

पहुंचे, शहाबुद्दीनने जयचन्दको कहला भेजा कि दिल्ली शून्य पडी है। अपनी हारका बदला चाहो तो दिल्लीपर चढ जाओ, बदलेके भूखे जयचन्दने यह न शोचा कि ऐसा करनेसे हिंदुओंको सदाके लिये विदेशी दास बनना पडेगा। जयचन्दने दिल्लीपर चढाई की, यह खबर मिलते ही पृथ्वीराज दिल्ली पहुँच गये, शहाबुद्दीनने मैदान पाकर दिल्लीकी ओर कूच किया परन्तु चन्दपुंडीरने मार्गमें ही रोक दिया, उधर पृथ्वीराज जयचन्दको हराय शीघ्र दिल्लीसे चलकर शहाबुद्दीनसे लडनेके लिये आ गये। सारूडेके मैदानमें सामना हुआ, यह सुनकर पृथ्वीराजकी ओरसे हुसेनखां भी लडनेके लिये आ गया। चित्तौरके रावल समरसिंहके सेनापतित्वमें पृथ्वीराजकी ओरसे जेत परमार चामुंड ब्राह्मण और अन्य सरदार लडते थे एक दिन रात युद्ध हुआ पृथ्वीराजके तेरह और शहाबुद्दीनके चौंसठ सरदार मारे गये। दूसरे दिन सबेरा होतेही सुलतानकी ओरसे बीस हजार सेना लेकर तातारखांने धावा किया, पृथ्वीराजकी ओरसे हुसेनखाँने सामना किया। बहुत देरतक लडाई होती रही जब हुसेनखांकी ओरके सब साथी मार डाले गये तब वह खुद तलवार लेकर तातारखाँ पर झपटा, तातारकी गदाने उसका काम तमाम कर दिया, मरते २ उसने भी तातारखांका शिर तलवारसे काट डाला। चित्ररेखा हुसेनखांकी लाशके साथ जीती पृथ्वीमें गड गई, युद्ध होता रहा पृथ्वीराजने बडे साहसके साथ अपनी सब सेना लेकर शहाबुद्दीनकी सेनापर धावा किया, शहाबुद्दीन भी धीरताके साथ लडने लगा। अन्तमें राजपूतोंकी जीत हुई, सुलतानकी सेना भागने लगी, चामुंडवीरने पीछा किया और शहाबुद्दीनको पकड लाया। उसको लेकर पृथ्वीराज दिल्ली आये कुछ दिनों कैद रख नौ हजार घोडे, आठ हाथी, बीस ढालें और हीरा मोती आदि दंड लेकर उसको छोड दिया.

यहाँ पृथ्वीराजके अविचार और अहंकारने इस बातका विचार न किया कि आज हम शक्तिमान् हैं कल शक्ति न रही तो ऐसे शत्रुको छोड

देनेसे परिणाम क्या होगा, इस लेखके उत्तरमें पृथ्वीराजके पक्षपाती लोग जो कुछ लिखैं से। उनका पक्षपात है परन्तु हम यही कहेंगे कि महाराज पृथ्वीराज और राजा जयचन्दने देश भलाईकी ओर कुछ भी ध्यान न दिया अपने २ अहंकारके वश होकर परस्पर लडते लडते रहे ।

पृथ्वीराजकी वीरता ।

पृथ्वीराजको शक्तिमान् देखकर अनेक राजालोग शुभ भावसे द्वेष मानने लगे और प्रजाको उभाडने लगे, कुछ लोग बदरिकाश्रममें अनंगपालके पास पहुँचे और शिकायत करने लगे । अनंगपालने कुछ ध्यान न दिया परंतु एक हिंदी कहावत है कि ' कहे सुने दीवालें चल जाती हैं ' निदान अनंगपालने पृथ्वीराजको कहला भेजा कि तुम मुझसे आकर मिलो, अथवा राज्य छोड दो । इसके उत्तरमें पृथ्वीराजने कहला भेजा कि बडोंकी आज्ञा हमको मानना चाहिये परन्तु हम निर्दोष हैं, पाई हुई भूमिको छोडना क्षत्रियधर्मसे विरुद्ध है । यदि आपकी इच्छा ऐसी ही हो तो युद्ध करके हमको यहाँसे निकाल दो, यह उत्तर पाकर अनंगपालने क्रोध कर चढाई कर दी । पृथ्वीराजने नानाका सामना करना उचित नहीं समझा, इस कारण उनके धावाको किलामें रहकर ही रोका । चार दिन-तक अनंगपालने धावा किया जब देखा कि किलाको जीतना असंभव है तब लाचार होकर लौट गये और अपने माधव सरदारको गजनी भेजकर शहाबुद्दीनसे सहायता माँगी । वह यही चाहता था तुरन्त दो लाख सेना लेकर चढ आया, अनंगपाल भी दो हजार सिपाही तीन सौ बैरागी एक हजार सवार लेकर सोनपुरमें सुलतानसे जा मिले । इधर पृथ्वीराजने भी युद्धकी तैयारी की । दिल्लीसे पांच कोश दोनों सेनाओंमें युद्ध होने लगा, पृथ्वीराजने आज्ञा फेर दी कि नानाजीको जीता पकड लेना उनपर कोई शस्त्र न चलाना । बहुत कालतक युद्ध होता रहा; अन्तमें सुलतानकी पराजय हुई । कैमासने अनंगपालको और चामुंडरायने शहाबुद्दीनको पकडकर बाँध

लिया। पृथ्वीराज इस प्रकार विजय पाकर दिल्ली लौट आये और एक दरबार किया उसमें अनंगपालको बुलाकर चरणोंमें प्रणाम किया और ऊंचे आसन पर बिठाकर पूछा कि पिताजी आपको यह अयोग्य बुद्धि किसने दी, जो म्लेच्छोंका साथ कर आपने इतनी हानि कराई? अनंगपालने कुछ उत्तर न दिया। सुलतान भी वहाँ लाया गया और दंड लेकर छोड दिया गया। अनंगपालजी तेरह महीने दिल्लीमें रहे, पृथ्वीराजने बहुत आदरसे रक्खा और उनकी सेवाका पूरा प्रबन्ध कर दिया। तथा दिल्लीमें ही रहकर धर्मध्यान करनेकी प्रार्थना की, परंतु अनंगपालने बदरिकाश्रममें ही रहना पसन्द किया और जानेके लिये बहुत हठ किया तब पृथ्वीराजने दश लाख मुद्रा सौ नौकर और ग्यारह ब्राह्मण साथ देकर बदरिकाश्रम पहुँचा दिया।

उस समयके राजपूतोंकी शक्ति ऐश्वर्य और देशभक्तिको विचार कर आश्चर्य होता है कि जिस देशके राजपूत अपने देशकी रक्षाके लिये अपने प्यारे प्राणोंतकको कुछ नहीं समझते थे, यह देश कैसे विदेशियोंके हाथमें चला गया। इसके उत्तरमें अपनी अपनी सम्मतिके अनुसार लोगोंने लेख लिखे हैं, परन्तु अधिक लोगोंकी अनुमति यही है कि आपसकी फूट ही राजपूतोंकी अवनतिका कारण है। यदि राजपूतोंमें एकता होती और वे देशहेतुके लिये आपसके वैरविरोधको दूर कर विदेशियोंका सामना करते तो उनकी वह दशा न होती, जो उनके ऐसा न करनेसे हुई। राजपूतोंने अपने वंश गौरवके गर्वमें आकर आपसमें लडना आरंभ कर दिया तब ही उनकी स्वाधीनताका अन्त हुआ। फूटहीने उनका सत्यानाश किया। कविगंगने ठीक कहा है।

कवित्त।

" फूटि गये हीराकी बिकानी कनी हाट हाट, काहू घाटि मोल काहू बाढि मोलको लयो। टूटि गई लंका फूटि मिल्यो है बिभीषण राम, रावण समेत बंश नाशवान ह्वै गयो॥ कहै कविगंग दुर्योधनसे छत्रधारी, तनिकके

फूटेते गुमान वाको ने गयो। फूटेते नरद उठि जात बाजी चौसरकी, आप-सके फूटे कहो कौनको भलो भयो ॥ १ ॥

फूटने ही राजपूतोंको और उन्हींके साथ साथ भारतको गारत करदिया। महाराज पृथ्वीराजके समयके अन्तमें ही इस फूटने विशेष बल पकडा था और इसीसे उनके पश्चात् देश विदेशियोंके हाथमें गया। पृथ्वीराजने यह विचार न किया कि परस्पर विरोधके कारण हमारी शक्ति घटती चली जाती है, लोभमें आकर शहाबुद्दीनसे दंड ले लेकर उसको बार बार छोड देते थे।

पृथ्वीराजने अपने चौहानी वंशके गर्वमें आकर राजपूतोंमें अनेक शत्रु कर लिये थे, परंतु पृथ्वीराजका सामना करनेकी योग्यता रखनेवाले केवल दोही थे, एक गुजरातका चालुक्यराजा भीमदेव, दूसरा कन्नौजका रठौर राजा जयचन्द। यदि भीमदेव और जयचन्द शत्रुता न कर पृथ्वी-राजकी सहायता करते तो भारत देश भी आज संसारके स्वतंत्र राज्योंमें गिना जाता, परंतु ऐसा न करके उन्होंने स्वयं शहाबुद्दीनको भारतमें बुलाकर देशकी स्वतंत्रता उसके अर्पण कर दी। पृथ्वीराजको भीमदेव और जयचन्दके साथ अनेक युद्ध करने पडे।

भीमदेव और पृथ्वीराजके आपसी झगडेका हाल सुनो भीमदेव गुजरातका राजा था, उसके पास बहुत बडी सेना थी। कच्छ काठियावाड, झालावाड और मालवाके राजा उसके आज्ञाकारी थे। अमरकोशके कर्ता अमरसिंह जैन उसके मंत्री थे उसके काका सारंगदेवके १ प्रतापसिंह, २ अरिसिंह ३ गोकुलदास, ४ गोविंद, ५ हरिसिंह, ६ श्याम, ७ भगवान् ये सात पुत्र थे, वे सब शूर वीर थे। सारंगदेवकी मृत्युके पश्चात् उनकी भीमदेवके साथ अनबन हो गई, इस कारण वे सातों भाई दिल्ली आकर पृथ्वीराजके आश्रय रहने लगे। एक दिन पृथ्वीराजकी सभामें महाभारतकी कथा हो रही थी उस

समय सभामें सब शूर सरदार बैठे थे, कथामें एक स्थानपर वीररसका प्रसंग आया उसको सुनकर वीरोंके नेत्र लाल हो गये भुजाएँ फड़कने लगीं । सारंगदेवके बडे पुत्र प्रतापसिंहने मूछपर हाथ फिराया, पृथ्वीराजके काका कन्ह चौहानने देख लिया चौहानोंकी सभामें आश्रित हुवा चालुक्यका यह वीरकर्म कन्हसे सहन न हुआ । कन्हने क्रोधमें भरकर उसी समय तलवारसे प्रतापसिंहका शिर काट डाला । यह देख प्रतापसिंहके छओं भाइयोंने कन्ह पर धावा किया, कन्हने सबको मारडाला, सब सभासद चित्रसमान बैठे देखते रहे । पृथ्वीराजको कन्हका यह नीचकर्म सहन न हुआ क्रोध करके कन्हको बहुत कुछ बुरा भला कहकर धिक्कारा, कन्हने अपने बचावमें यह कहा कि मेरी प्रतिज्ञा है कि मेरे सामने जो मूछपर ताव देगा उसको मैं जीता न छोडूंगा । यह सुन पृथ्वीराजको कन्हका इतना गर्व सहन न हुआ और आज्ञा दी कि आँखोंमें पट्टी बांध रक्खो तबसे कन्हकी आंखोंमें पट्टी बँधी रहती थी । युद्धके समय पट्टी खोली जाती थी, यह समाचार पाकर भीमदेवने अपना बडा अपमान समझा कि हमारे चचेरे भाइयोंको निरपराध मार डाला । इस अपमानका बदला लेनेके लिये दिल्लीपर चढाई करनेका निश्चय किया । परन्तु वर्षाकाल होनेसे कुछ समयतक वह चढाई न कर सका ।

उस समय आबूगढ पर प्रमार राजा जेतसिंह राज्य करता था, वह भी एक स्वतंत्र बलवान् राजा था उसके १ पुत्र सलख नामक और दो कन्यायें १ मन्दोदरी २ इच्छन कुमारी थीं । इच्छन कुमारीके रूप लावण्यकी प्रशंसा देशभरमें फैल रही थी, मंदोदरीका विवाह भीमदेवके साथ हुआ था, इच्छन कुमारीकी प्रशंसा सुनकर भीमदेवने जेतसिंहको कहला भेजा कि इच्छन कुमारीका विवाह मेरे साथ करो या आबूगढ छोड दो । इसके उत्तरमें जेतसिंहने कहला भेजा कि भीमदेवको बडा गर्व है, पर प्रमार उसकी गीदड भभकीसे डरनेवाले नहीं हैं । यह सुन

भीमदेवने क्रोधमें आकर आबूगढपर चढाई कर दी, सो समाचार पाकर जेतसिंहने इच्छन कुमारीको पृथ्वीराजके यहां भेज दिया और अपने पुत्र सलखको भेजकर पृथ्वीराजसे सहायता मांगी। पृथ्वीराज आबूगढतक नहीं पहुँचने पाये थे कि भीमदेव आबूगढपर चढ धाया, और अंधेरी रातमें आबूगढको विजय किया, जेतसिंहने बडी वीरतासे सामना किया, परन्तु अन्तमें मारा गया। भीमदेवने आबूगढको अपने वशमें किया तबतक सलख और पृथ्वीराज पहुँचे दोनों सेनायोंमें घोर संग्राम हुआ भीमदेव हारकर गुजरात लौट गया। उसी अवसरमें शहाबुद्दीन गोरीने कई बार दिल्लीपर चढाई की परंतु हर बार उसकी हार हुई, पृथ्वीराजने दंड लेलेकर छोड दिया। अनन्तर पृथ्वीराज और भीमदेवमें बडा भयंकर युद्ध हुआ भीमदेवको पृथ्वीराजने मार डाला, भीमदेवके पिता कचरारायने पृथ्वी-राजकी अधीनता स्वीकार कर ली। पृथ्वीराज उसको पाटनकी गद्दी-पर बिठाकर दिल्ली लौट आये, इस विजयने पृथ्वीराजका आधिपत्य दिल्लीसे दक्षिणतक फैला दिया था। राजपूताना, मालवा, गुजरातके सब राजा पृथ्वीराजके आधीन होगये। केवल कन्नोजके राजा जयचन्द और बुंदेल खंडकी राजधानी महोबेके चंदेल वंशी राजा परिमाल ये दोनों राजा पृथ्वीराजके अधीन न थे।

शहाबुदीन गोरी बारबार पृथ्वीराजसे हराया जाकरभी सदा पृथ्वी-राजको सतानेका अवसर देखता रहता था, उसके जासूस भेष बदलकर सदा दिल्लीमें घूमते रहते थे और खबरें भेजा करते थे। जब पृथ्वीराज पद्मावतीको लेने समुद्र शिखर गये थे और वहाँसे लडकर पद्मावतीको ब्याहे दिल्लीको थोडी सेना लिये आरहे थे उस समय शहाबुदीनको खबर मिली कि पृथ्वीराज थोडी सेना लिये दिल्ली जा रहे हैं। उसने आकर मार्गमें ही रोक लिया और युद्ध होने लगा, पृथ्वीराजने उसे कैद कर लिया और आठ हजार घोडे दंड लेकर छोड दिया। पृथ्वीराज दिल्ली

पहुँचे परन्तु सेनामेंके कुछ घायल मार्ग भूलकर भटकते हुए महोबा पहुँचे, सन्ध्याका समय था प्रबल वायुके साथ वर्षा होने लगी जिससे वे घायल और भी व्याकुल हो गये। समीप ही राजा परिमालका एक उपवन था उसमें वे घायल अपनी रक्षाके निमित्त जाने लगे, बागके मालीने रोका, एक घायलने उस मालीका शिर काट डाला। मालीकी स्त्रीने जाकर मल्हना रानीसे कहा रानीने राजाको सुनाया, राजाने कुछ सेना भेजी घायलोंने लडकर उस सेनाके सब बुंदेलोंको मार डाला, तब परमालको बहुत क्रोध आया और ऊदनको बुलाकर आज्ञा दी कि उनको बांध लाओ और मार डालो। ऊदनने कहा महाराज! घायलोंपर प्रहार करना शूरोंका धर्म नहीं है इन घायलोंको दमन करनेसे फिर पृथ्वीराजसे लडना पडेगा। यह सुन माहिल परमालसे कहने लगा कि ऊदन डरता है इस कारण पृथ्वीराजके घायलोंको मारना नहीं चाहता, कानके कच्चे परिमालने ऊदनको डपटकर आज्ञा दी कि शीघ्र जाकर उन घायलोंको मारो लाचार होकर ऊदन गये और घायलोंपर आक्रमण किया। उन बीस घायलोंमें कनक चौहान नामका एक वीर सैनिक था उसने उनका नेता बनकर बडे साहसके साथ ऊदन वीरका सामना किया, परंतु ऊदनके साथ कबतक ठहर सकते थे, ऊदनने उन सबको समाप्त कर दिया। यह लडाइ चंदेलेके नाशका कारण हुई, इस लडाईसे पृथ्वीराज और चंदेलमें वैर हो गया। पृथ्वीराजने सुनकर चढाई की और सिरसासे महोबेतक युद्ध हुआ आल्हखंडमें अनेक युद्ध महोबेवालोंसे और पृथ्वीराजसे हुए, इन सब युद्धोंमें माहिल ही कारणरूप था। कन्नोज राज्य दिल्लीराज्यसे अधिक समृद्धशाली था, राजधानी कन्नौज उस समय एक सर्वोपरि नगर था उसका घेरा पन्द्रह कोश था, मनुष्यसंख्या बहुत अधिक थी, तीस हजार दूकानें तमोलियोंकी थीं, इसीसे वहाँकी बाजारका अनुमान कर लीजिये। अस्सी लाख सेना थी जयचंदको अपनी शक्तिका

बडा अभिमान था, जयचंदने राजसूय यज्ञ करके संसारमें अपनी कीर्ति स्थापन करनेकी इच्छा की, सब प्रकारका प्रबंध कर देशदेशांतरोंके राजाओंको अपनी सेवामें उपस्थित होनेका सँदेशा भेजा। भारतवर्षके प्रायः सबही राजपूत नरेश अपने दलबल समेत जयचन्दकी आज्ञानुसार कन्नौजमें आ पहुँचे, परंतु पृथ्वीराज और रावल समरसिंहने आना उचित न समझा. जयचन्दके भेजेहुए दूतसे पृथ्वीराजने अभिमान भरे वचन कहकर उसको सभासे निकाल दिया। इस अपमानका बदला लेनेके लिये जयचन्दने अपने भाई बालुकरायको साठ हजार सेना देकर पृथ्वीराजको पकड लानेके लिये भेजा और इधर यज्ञका मुहूर्त निकट आया जानकर जयचन्दने एक सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर एक छडी उसके हाथमें दे पृथ्वीराजके नामसे द्वारपालके स्थानमें खडी करा दी। यह सुधि पाकर पृथ्वीराजको बडा क्रोध आया और जयचन्दके यज्ञको विध्वंस करनेकी प्रतिज्ञा कर कन्हकी संमतिसे कुछ सेना साथमें लेके आगे बढे और खोखंदनामक स्थानमें युद्ध कर बालुकरायको मार डाला और राठौर सेनाको मार भगाया। यह समाचार कन्नौजमें पहुँचा सुनते ही जयचन्दको बडा क्रोध आया और शोक छा गया, यज्ञको बंद करके जयचन्दने दिल्लीपर चढाई करनेका विचार किया परंतु इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिससे चढाई न हो सकी।

संयोगितास्वयंवर।

संयोगिता नामकी एक कन्या जयचन्दकी रानी जुन्हाईके गर्भसे उत्पन्न हुई थी, उसके समान सुन्दर कन्या भरतखंडमें न थी। सखियों द्वारा उसने पृथ्वीराजकी प्रशंसा सुन रक्खी थी। इस कारण उसने पृथ्वीराजकी अर्द्धांगिनी बननेकी प्रतिज्ञा कर ली थी। यह हाल रानी जुन्हाईने सुना और जयचन्दको सुनाया तो जयचन्दको बडा शोक हुआ, उसका प्रेम हटानेके लिये जयचंदने अनेक उपाय किये

परंतु कोई उपाय काम नहीं आया। तब संयोगिताके स्वयंवरकी इच्छा की, जो मंडप यज्ञके लिये रचा गया था उसीमें संयोगिताका स्वयंवर रचा गया। संयोगिता हाथमें वरमाला लिये हुए सभामें पहुँची और सब राजाओंको छोड उसने पृथ्वीराजकी प्रतिमाके गलेमें माला पहिना दी। इससे जयचन्दका क्रोध लज्जाके कारण और भी बढ गया, और कन्नौजके एक ओर गंगाजीके तटपर एक विशाल महलमें संयोगिताको रख दिया और रखवालीके लिये अनेक दासियां तथा सैनिक नियुक्त कर दिये। यह सब समाचार जब पृथ्वीराजने सुना तब उनका मन संयोगिताके प्रेमकी ओर खिंच गया और विचार किया कि जैसे बनै वैसे संयोगिताके साथ विवाह कर दिल्ली लाना चाहिये। प्रगट रूपसे यह काम होना कठिन था इस कारण ग्यारह हजार सैनिकों सहित सेवकके भेषमें चन्दकविके साथ कन्नौजको चल दिये। पृथ्वीराजके सरदार भी भेष बदलकर चन्दकविके साथ हो लिये, वहां पहुँच सेनाको कन्नौजके बाहर छोड चन्द्रकवि राजा जयचन्दके दरबारमें पहुँचे साथमें पृथ्वीराजको अपने सेवकके रूपमें ले गये, जयचन्दने कविचन्दका स्वागत किया और कुछ समयतक अलंकारके साथ वार्तालाप किया। जयचन्द बोले हे चन्द! संजयके समान बुद्धिमान् तुम पृथ्वीराजके दरबारमें थे फिर उन्होंने निष्कारण हमारे भाईको मारकर हमारे यज्ञमें विघ्न क्यों किया? दिल्लीपति महाराज अनंगपाल हमारी सेवा करते थे, हम भी उनकी मानमर्यादाकी रक्षा करते थे। इन्होंने हमारी आज्ञा विना पृथ्वीराजको दत्तक पुत्र बनाया तब केवल उनकी सेवा पर दृष्टि करके हमने क्षमा किया। आज अस्सी लाख सेना हमारी आज्ञामें है सब हिंदू मुसलमान् हमारे आतंकसे थरथर कांपते हैं फिर पृथ्वीराजने जानबूझकर सिंहकी पूछ दबानेका कैसे साहस किया। यह सुनकर चंदने उत्तर दिया कि महाराज! पृथ्वीराजको सिंहकी पूंछ दबानेका अभ्यास तो जन्मसे है

परंतु वे आपको सपुच्छ नहीं समझते थे, यदि आप परस्परके उपकारको ही सेवा समझते हैं तो महाराज पृथ्वीराजने आपकी सेवामें क्या कसर की ? जब आप दक्षिण देशपर चढकर गये पीछेसे शहाबुद्दीन गोरी कन्नौजपर चढ आया था, यदि उस समय पृथ्वीराजने आपकी रक्षा न की होती तो आपको दक्षिण सिधारनेके सिवाय और कौनसा मार्ग था, फिर जब आप ऐश्वर्यमदमत्त होकर धर्मकी मर्यादा तोडने लगे 'अश्वमेधं गवालम्भं संन्यासं पलपैतृकम्। देवराच्च सुतोत्पत्तिः कलौ पंच विवर्जयेत् ॥' अर्थात् अश्वमेध यज्ञ, गोमेधयज्ञ, संन्यास, मांससे पितरोंको पिंडदान, देवरसे पुत्र उत्पन्न करना ये पांच कर्म कलियुगमें वर्जित हैं। इस महावाक्यके विपरीत कलिवर्जित यज्ञ आरम्भ कर दिया तब पृथ्वीराजजीने अपने सरल स्वभावसे केवल एक बार धनुषकी टंकोर करके आपको चेतादिया तो क्या अनुचित किया। यह उत्तर सुनकर जयचन्द कहने लगे कि हे कविचन्द ! क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि कलियुग कैसा ! काल राजाका कारण नहीं राजा कालका कारण है महाभारतमें लिखा है।

'कालो वा कारणं राज्ञो राजा वा कालकारणम्।
इति ते संशयो माभूद्राजा कालस्य कारणम् ॥

इससे तुम्हारा बल वाणीमें है जैसा शास्त्रमें नहीं है। अच्छा बतावो इतने मुकुटधारी राजा इस समय हमारी सभामें बैठे हैं इनमें पृथ्वीराज किसकी अनुहार है, इसके उत्तरमें कवि वर चन्द इसी शब्द कहती बार सेवकरूप पृथ्वीराजकी ओर पीछेको हाथ करके कहने लगे।

छप्पै-इसो राज पृथिराज जिसो गोकुलमें मोहन। इसो राजपृथिराज जिसो भारतमें अर्जुन ॥ इसो राज पृथिराज जिसो अभिमानी रावन। इसो राज पृथिराज राम रावन संतापन ॥ वरस तीसछे अधिक हैं तेजपुंज अनुपम वदन। इम जपै चन्दवरदाय वर पृथीराज अनुहार इन ॥ १ ॥

---

१ दक्षिणदिशा-यमलोक।

यह सुन जयचन्दने पृथीराजकी ओर देखकर विचार किया कि जब मैं इस सेवककी ओर देखता हूँ तो इसके मुखपर मुझको राजतेजकी झलक प्रत्यक्ष दिखाई देती है। इसकी अवस्था भी पृथीराजसे मिलती हुई है। चन्द पृथीराजको अनुपम वदन कहकर इसकी अनुहार बताता है। मेरे अपमानसूचक वचन सुनकर इसका मुख लाल हो गया। होंठ फडक उठे, क्रोधित सांपके समान नथुने फुंकार मारने लगे, सिंहकी रुधिर पूरित दांतोंकी नाईं नेत्र लाल हो गये। भृकुटीसे युगान्तक रुद्रके तीसरे नयन खुलनेकासा भाव दिखाई देने लगा। ये लक्षण साधारण मनुष्यके नहीं हो सकते, इन लक्षणोंसे तो यही जान पडता है कि यह पृथीराज है, इसके पकडनेका यह अवसर अच्छा है। परन्तु यह पृथीराज न हुआ तो बडी हँसी होगी, लोग कहेंगे कि पृथीराज तो हाथ नहीं आता सेवकको पकडकर अपना मन सन्तोष करते हैं। यह विचार कर जयचन्दने मनमें कहा कि करनाटकीको बुलाऊं वह पृथ्वीराजके महलमें रही है वहांसे अलग होने पर भी पृथ्वीराजको ही पुरुष समझकर शिर ढकती है, जो वह यहां आकर अपना शिर ढँक लेगी तो इसके पृथ्वीराज होनेमें कुछ संदेह न रहेगा। यह सोचकर करनाटकीको सभामें बुलाया। वह सभामें आय पृथ्वीराजको देख शीघ्र घुंघुट कर लिया, यह देख चन्दने तुरंत यह दोहा पढा—

'करनाटक कौशल भई, तज संकोच दरबार।
यहाँ कुशल सब होयगी, कहु निज वृत्ति विचार॥'

यह करनाटकी पृथ्वीराजकी वेश्या थी पृथ्वीराज इसको बहुत चाहते थे। एक समय कैमाष और करनाटकी एक दूसरे पर मोहित होगये और परस्पर गुप्त संबंध रखने लगे और पृथ्वीराजको मालूम हुआ तब पृथ्वीराजने कैमाषको मारडाला परंतु करनाटकी भागकर कन्नौज आई और संयोगिताकी दासी बनकर रहने लगी। उसीने पृथ्वीराजकी प्रशंसा कर संयोगिताका चित्त पृथ्वीराजकी ओर झुका दिया था।

करनाटकीने चन्दका इशारा समझ तुरन्त घूंघट खोल दिया. जयचन्दने उससे इस व्यवहारका कारण पूँछा, करनाटकीने उत्तर दिया कि महाराज! पृथ्वी और चंदका दृढ सम्बन्ध समझकर मैंने इतनी मर्यादा की, जो पृथ्वीराजको प्रत्यक्ष देख लेती तो शिर ढककर क्यों उघाडती। इस उत्तरसे जयचन्दका संदेह कुछ कम हुआ, परंतु सर्वथा निवृत्त न हुआ। जयचन्दने मनमें कहा कि क्या करें संदेह नहीं जाता अच्छा अभी तो ये यहाँ ठहरेंगे गुप्त दूत भेजकर इनका सब भेद ले लिया जायगा। यह विचार कर सेनापति रावणसे कहा कि नगरके पश्चिम मखमलके डेरेमें चन्दजीको ले जाकर ठहराओ और मिहमानीका सब सामान पहुँचाओ, इनको किसी प्रकारका परिश्रम न हो। यह सुनकर सेनापतिने कहा जो आज्ञा। अनन्तर मंत्रीने चंदको पान देकर बिदा किया। चलते समय चंदने यह दोहा पढा।

"जय जय चन्द सदा रहे, याही विधि आनन्द।
कुमुद विकाश प्रकाश लखि, होय कमल द्युति मन्द॥

इस दोहामें ध्वनिसे जय जय शब्द भिन्न उच्चारण करके चन्द अपनी विजयका बोध कराता है, रावणने चंदको ले जाकर ठहराया।

अनन्तर जयचन्दने अनेक दूत दूती भेजकर भेद लेना चाहा पर कुछ भेद नहीं जान पाया। तब अचानक मंत्रीको साथ ले चन्दके डेरेमें गये। देखते ही सेवकने डेरेमें जाकर कहा कि महाराज! जैसे निर्मल आकाशमें एकाएक बादल प्रगट हो जाते हैं इसी प्रकार इस समय राजा जयचंद अपने डेरोंमें अचानक आ पहुँचे और चन्दसे मिला चाहते हैं। यह सुन कर चन्दने कहा उनको सत्कारसे जलदी लिवा ला, सेवक गया और पृथ्वीराज पलंगसे नीचे उतरकर बैठ गये, चंद पलंगपर बैठे। जयचन्दको मन्त्रीसहित आते देखकर चन्द पलंगसे उतरकर जयचन्दको ऊँचेपर बिठाकर आप नीचे बैठ गये, तब जयचन्द मुसक्याकर बोले, एकाएक

बादल प्रगट होनेसे चन्दको कुछ मलिनता तो नहीं हुई ? यह सुनकर चन्दने मनमें कहा क्या इन्होंने सेवककी बात सुन ली, महाराजको पलंग पर बैठे तो नहीं देख लिया ? यह सोचकर प्रगटमें बोले महाराज ! बादलसे चन्दको मलिनता हो तो कुछ हानि नहीं परंतु बादलकी जल वृष्टिसे प्यारे पपीहाकी प्यास अवश्य बुझनी चाहिये। यह सुन जयचंदने कहा।

सोरठा–मिलत कर्म अनुसार, बहुत पपीहन स्वाति जल।
बहुत न उपल प्रहार, होत एक ही जलदसों॥

(फिर मंत्रीने कहा)

दोहा–रत्न विन्दु वरषै नृपति, सुरपति सम सर्वत्र।
हतभागे सूखे रहैं, शिर दारिद्रको छत्र॥

अथवा–

दोहा–सुरपति सम सर्वत्र प्रभु, कंचन वर्षत नीर।
माथे छत्र दरिद्रको, बूँद न परत शरीर॥

यह सुनकर चन्दजी चुप हो रहे, अनन्तर पृथ्वीराजसे जयचन्दको पान देनेकी आज्ञा दी तब पृथ्वीराजने विचारा कि हथेली पर रखकर सेवककी भाँति पान देना ठीक नहीं। यह विचार दाताओंके समान अँगु-लियोंसे पकड़कर पान दिया। जयचन्दने अस्वीकार किया, परन्तु कवि चन्दके समझानेसे पान ले लिया। पान देते समय पृथ्वीराजने जयचन्दके हाथमें एक ऐसा झटका दिया कि जयचन्द गिरते गिरते सम्हल गये। तब जयचन्दने जान लिया कि यह पृथ्वीराज हैं तुरंत जयचन्द मन्त्री समेत उठकर चल दिये और सेनापति रावणको बुलाकर आज्ञा दी कि चन्दके डेरेको घेरकर पृथ्वीराजको बाँध लो। आज्ञा पाते ही सेनापति रावण तीन लाख सेना लेकर चढ़ा और चारों ओरसे चंदके डेरेको घेर लिया, यह सुनकर पृथ्वीराजने

युद्ध करना चाहा। तब संजमरायके पुत्र लंगरीरायने सेनापति बन केवल दो हजार घुडसवार सेनाकी सहायतासे रावण और उसकी तीन लाख सेनाका नाश कर डाला, परन्तु किल्बिषा नामवाली तोपके गोलेसे लंगरीराय भी वहीं समाप्त होगया।

जिस समय यह युद्ध हो रहा था उस समय नगरके उत्तर ओर गंगा तटपर एक सवार अपने घोडेको पानी पिला रहा था उसके वस्त्र और चेहरासे यह जान पडता था कि अभी युद्धसे चला आ रहा है। उसके अंग अंगसे वीररस टपक रहा था, घोडेको जल पिलाकर वह चलनेहीको था कि घोडेकी अयालमेंसे एक मोती टूटकर अचानक जलमें गिर पडा, उसको भक्ष्य पदार्थ जानकर मछलियां उछलकर झपटने लगीं, यह तमाशा देखने पर सवारका मन प्रसन्न हो गया और वह अपने हाथसे मोती तोडतोडकर जलमें डालने लगा, जब अयालके सब मोती डाल चुका तब घोडेकी पूंछकी ओर हाथ बढाया और मोती तोड तोडकर फेंकने लगा। यह कौतुक संयोगिता अपने महलके झरोखेसे देख रही थी और देखनेमें इतनी लीन थी कि उसको अपने शरीरकी भी सुध न थी, संयोगिता युद्धके समाचार पाकर छतपर जा रही थी, परंतु सवारको देखतेही झरोखेहीमें खडी रहगई। करनाटकीके कहनेसे जाना कि यह सवार पृथ्वीराज है, जब घोडेकी पूछके मोती चुकने जाना तब संयोगिताने दो थाल मोती अपनी दो दासियोंके हाथ भिजवा दिये एक थाल एक दासीने घोडेकी पूंछपर रख दिया। पृथ्वीराज मछलियोंके दृश्यमें लीन था, जब एक थालके मोती हो चुके तब दूसरा थाल रख दिया गया। जब वह भी हो चुका तब थालमें हाथ लगा ध्यान भंग हो गया, पीछे देखा तो दो सुंदरियोंको खडे देखा, पूछा तुम कौन हो? उन दोनोंने कहा कि हम संयोगिताकी सखियां हैं। आप महलमें चलिये पृथ्वीराज तुरंत प्रसन्नतापूर्वक महलमें गये दोनों प्रेमी मिलकर प्रसन्न हुए संयोगिताकी

प्रार्थनासे रात भर महलमें रहकर गान्धर्व विवाह किया। प्रभात होते ही लौटनेका वचन दे अपने डेरेपर आये, मंत्रियोंने भी रातका सब हाल जाना पश्चात् यह निश्चय हुआ कि संयोगिताको हरकर दिल्ली ले चलना चाहिये इस अभिप्रायसे पृथ्वीराज अपने सब सरदारोंको साथ ले रात्रिसमय संयोगिताके महलमें पहुँचे और अपना अभिप्राय प्रगट कर संयोगिताको वीरवेषमें अपने साथ लिया । कुछ दूर जाकर विचार किया कि इस प्रकार चोरोंके समान काम वीरोंको नहीं चाहिये, यह विचार कर चन्द कविको जयचन्दके पास जानेको कहा कि जाकर इस बातकी सूचना दे दो चन्दने राजनीतिसम्बन्धी दोचार बातें कहकर कहा कि सूचना देनेकी क्या आवश्यकता है। जयचंदको स्वयं सूचित हो जायगा। आपका काम बन गया अब आप घर चलिये. यह सुनकर पृथ्वीराजको कुछ क्रोध आया तब चन्दने कहा कि—

दोहा—सचिव वैद्य गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं प्रभु आश ।
राज देह अरु धर्मकर, होय वेगही नाश ॥

महाराज ! क्रोध नहीं करना चाहिये सच्ची वीरता तो क्रोध रोकनेहीमें है । भला जो मनुष्य अपना क्रोध न रोक सकेगा वह शत्रुको कैसे रोक सकेगा यह सुनकर पृथ्वीराजने कहा कि हमारे चित्तमें यही हट गया है कि तुम जाकर जयचन्दसे संयोगिता समेत हमारे दिल्ली जानेका समाचार कह दो, वृथा समय मत खोओ और विवाद करके आज्ञा भंग मत करो इतनी बात सुनते ही चन्द कवि वहांसे चल दिये और जयचंदकी सभामें पहुँचकर आशीर्वाद दिया ।

दोहा—श्रीगोविंद प्रतापसे, सुख भोगें जयचंद ।
चितकी सब चिंता मिटै, रहै सदा आनंद ॥

जयचंदने चंदसे कहा कहो कविराय क्या कोई नवीन समाचार है ? चंद बोले महाराज ! राजकुमारी संयोगिता प्रसन्न है। पृथ्वीराजजी संयो-

गितासंयुक्त दिल्ली जानेके लिये आपसे अनुमति चाहते हैं । सुनते ही जयचन्द बोले, आह ! क्या संयोगिता पृथ्वीराजके साथ है ? हमने यज्ञ किया जिसमें घीके बदले रुधिरकी आहुति दी गई । यह सुन चन्दने कहा कि आप इतने दुःखित क्यों होते हैं, पृथ्वीराज आपके पुराने व्यवहारी हैं, ईश्वरने उनको राजकुमारीके सम्बन्ध योग्य बनाया है । कन्या किसीको देनी ही पडती यह कैसा अच्छा हुआ कि राजकुमारीने जिसकी स्वर्ण प्रतिमाके गलेमें वरमाला पहिराई थी, उसीके साथ सम्बन्ध हो गया । सुनकर जयचन्द बोले चन्द ! तुम क्यों जलेपर नोन छिडकते हो, माता पिताकी सम्मति बिना यह सम्बंधकी रीति कैसी ? इसमें हमारे लिये कैसी लज्जाकी बात है । चन्दने कहा स्वयंवरमें माता पितासे सम्मति लेकर वरमाला पहिरानेकी रीति कहीं नहीं सुनी गई, फिर इसमें लज्जाकी कौनसी बात है ? जयचन्द बोले कुछ हो, इस विषयमें पृथ्वीराजकी ओरसे हमारा ऐसा अपमान हुआ है कि हम इसका बदला अवश्य लेंगे, जो चन्द्रादि ग्रह पश्चिमके बदले पूर्व दिग्गमन करेंगे तो भी यह सम्बन्ध न होगा । जयचन्दकी यह बात सुनकर चंदने उत्तर दिया कि जैसे चन्द्र आदि ग्रहोंके पूर्व दिग्गमनमें संदेह नहीं वैसे ही अब इस सम्बन्धमें कुछ संदेह नहीं रहा, आप क्रोध किस पर करते हैं । महाराज पृथ्वीराज क्या अब आपसे पृथक् हैं, आप अपनी आत्मासे बदला लेनेका विचार करते हैं तो भले ही करलें परन्तु आपको इसका पछतावा अवश्य होगा । सुभद्राहरणके उपरान्त कृष्ण बलरामने अर्जुनका सम्बन्ध अंगीकार किया तो कैसा अच्छा परिणाम हुआ और ऊषा अनिरुद्धके गान्धर्व विवाहके उपरान्त बाणासुरने प्रतिवाद किया तो कैसा दुःख पाया ? परस्परके विवादमें किसीको सुख नहीं मिलता । चन्द कविके ये वचन सुनकर जयचन्द बोले यह सब सत्य है, परंतु संसारमें जिसकी बात न रही उसका क्या रहा, इस बातके उत्तरमें चन्द बोले महाराज !

आप ध्यानपूर्वक विचारिये कि कुरुक्षेत्रमें अठारह दिन युद्ध हुआ उसमें अठारह अक्षौहिणी सेना दोनों ओरकी मारी गई। पांडवोंने सौ भाई दुर्योधन आदिके सिवाय भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य आदि अद्वितीय वीरोंको रण-शायी करके विजय लक्ष्मी पाई और छत्तीस वर्ष राज्य किया, परंतु महाराज युधिष्ठिरजीके मनको क्षण भर भी सन्तोष नहीं हुआ। वह बारम्बार ठंडी श्वास लेकर यही कहा करते थे कि जिनके लालन पालनके लिये मनुष्य राजलक्ष्मी चाहता है उनका विनाश करके अब मैं क्या सुख भोगूँ ? यह सुनकर जयचन्दने कहा चन्द ! अब तुम जाओ हमारी इच्छा होगी सो हम करेंगे तुमने सूचना देदी यह भी अच्छा किया। यह सुनते ही चन्द उठकर चल दिये, जयचन्द पहलेहीसे युद्धकी ठान चुके थे, बीस लाख सेना लेकर पृथ्वीराजका पीछा किया और अपने सरदारोंको आज्ञा दी कि—

कवित्त ।

धावहु चतुरंगिणी लै वेगि बलशाली जन, पृथ्वीते नाम पृथ्वीरा-
जको मिटाय दो। गावहु सिंदूर अरु शंकरादि ऊँचे स्वर, तोपनको
मारि मारि भूमि उलटाय दो ॥ लावहु मम शस्त्र मैं चालि हौं
तुम्हारे संग, शत्रुको सुयश आजु धुरिमें मिलाय दो। दावहु स्वसे-
नसे रिपुनको भली प्रकार, दिल्लिहि उजारि बीच धारमें बहाय दो ॥

जयचन्दके धावाकी खबर पाते ही उधर यह निश्चय किया गया कि एक एक सरदार जयचंदको रोकता जाय और अन्य सरदार पृथ्वीराजके साथमें दिल्लीकी ओर बढ़ते जायँ, सबसे पहले गोविन्दरायने रोकना आरंभ किया। उसके मारे जानेपर चंदपुंडीर राठौरोंके साथ लडने लगा, चंदपुंडी-रके उपरान्त आतताईने आकर राठौर सेनाको रोका। जयचंदकी ओरसे केहरि कंठीर आततार्ईसे बातचीत करके लडने लगा और सेनाको चीरता हुआ पृथ्वीराजके निकट जाकर गलेमें फंदा डाल दिया। पृथ्वीराजके निकट ही घोडेपर सवार संयोगिताने उस फंदेको काट डाला, तब केहरि

कंठीरने आततांईको मार गिराया, तुरन्त ही पृथ्वीराजने बाण मारकर केहरि कंठीरको स्वर्ग पहुँचा दिया। तदनन्तर निडुरराय (हमीर) पज्जू-नतुम्बर पहाड कान्हदेव आदि वीर लड लडकर स्वर्ग सिधारे, दिल्लीके फाटकतक युद्ध होता रहा। कान्हदेवने बडी वीरताके साथ युद्ध किया, जय-चन्दके भाई रतीभानने कान्हदेवको मारा, मरते समय कान्हदेवने रती-भानको भी मार गिराया। पृथ्वीराज दिल्ली पहुँच गये इस युद्धमें जयच-न्दके सब सैनिक मारे गये, जो उस समय साथमें थे। पृथ्वीराजके चौंसठ सामन्त और ग्यारह हजार सैनिक काम आये, केवल हाहुलीराय चन्द और रामगुरु पुरोहित बचे थे, इस युद्धने पृथ्वीराज और जयचन्द दोनोंको शक्तिहीन कर दिया था। पीछेसे जयचन्दको होश आया कि यह बडा अनर्थ हो गया, संयोगिता हर ले जाने उपरान्त पृथ्वीराज अधिक विषयासक्त हो गये और उनकी शक्ति कम होती चली गई अर्थात् अन्तके दिन आ गये।

पृथ्वीराजके अन्तिम दिन।

संयोगिताके प्रेममें अधिक आसक्त होकर पृथ्वीराजने जब राजसभा-ओंमें जाना छोड दिया और महलमें ही रात दिन रहने लगे तब प्रजामें गडबड मच गई। कुछ लोगोंने पृथ्वीराजके समीप प्रजाके दुःखोंकी पुकार पहुँचानेका निश्चय किया, इसके लिये कविवर चन्दने एक पत्र लिखा जिसमें ऐसे शब्द लिखे थे ' तुंपर गोरी रत्तियं अरु ता घर गोरी तक्कियं, अर्थात् तुम तो गोरी स्त्रीके साथ रति सुखमें लिप्त हो रहेहो और तुम्हारा घर सहाबुद्दीन गोरी तक रहा है, यह पत्र सब सरदार लेकर संयोगिताके मह-लमें पहुंचे वहाँ पहले ही संयोगिताने दासियोंका पहरा लगा रक्खा था ' लोगोंने एक दासीको पत्र देकर उसे पृथ्वीराजके पास पहुँचानेकी प्रार्थना की, दासीने वह पत्र पृथ्वीराजको न देकर संयोगिताको दे दिया। पढते ही संयो-गिताके क्रोधकी सीमा न रही, पत्र लिखनेवालोंको चाबुकसे मारकर भगा

देनेके लिये अपनी सात सौ दासियोंको आज्ञा दी, दासियोंने लोगोंपर चाबुक झाडना प्रारंभ किया । स्त्रियोंपर हाथ डालना अनुचित समझकर लोग भागने लगे यह दृश्य संयोगिता अपने झरोखेसे देख रही थी, पास ही पृथ्वीराज भी खडे खडे देखकर हँस रहे थे । कविचन्द और हाहुली रायने पृथ्वीराजको हँसते देख लिया, चन्दको तो शोकके साथ दया आई परंतु हाहुलीराय हमीरको बडा क्रोध आया । चन्दने उसको बहुत समझाया परंतु उसने एक न मानी और अपने अपमानका बदला लेनेके लिये शहाबुद्दीनके पास गजनी पहुँचा । वह तो यही चाहता था कि किसी तरह पृथ्वीराजको हराकर हिंदुस्तान पर अपना आधिपत्य जमाऊँ, बडी खुशीके साथ दश लाख सेना लेके दिल्लीपर चढाई कर दी । इधर पृथ्वीराजके प्रायः सब वीर सेनापति युद्धोंमें काम आ चुके थे, संजमराय आदि महोबेकी लडाईमें और कन्ह, लंगरीराय, चंदपुंडीर, गोविन्दराय, जामयादव, आततताई आदि वीर कन्नौजकी लडाईमें मारे गये थे । चंदके पुत्र धीरपुंडीरको मुसलमानोंने छलसे मार डाला था, पृथ्वीराजको यह सुधि न थी, कि दिल्लीमें अब एक भी सरदार नहीं रहा । शहाबुद्दीनकी चढाईका हाल जब चित्तौर पहुँचा तब रावल समरसिंह दिल्ली आये साथमें एक लाख सेना थी, अपने राज्यका भार अपने पुत्र रत्नसिंह पर छोडा, आठ दिनतक पृथ्वीराजसे भेंट न हुई, तब एक तोतेके द्वारा पृथ्वीराजतक पत्र पहुँचाया । पत्र पहुँचते ही पढा तब पृथ्वीराजकी आँखें खुल गईं, तुरंत आकर समरसिंहसे मिले, जो सरदार बचे थे वे पृथ्वीराजको देखकर शहाबुद्दीनसे युद्ध करनेकी तैयारी करनेलगे । अबकी बार जयकी आशा नहीं थी अपने एक मात्र पुत्र रायनेमिको युद्धमें सम्मिलित नहीं होने दिया उसको जैतराव परमारके पास भेज दिया । चलते समय संयोगितासे मिलकर युद्धमें आना चाहा उसने बडी कठिनतासे आने दिया, कागर नदीके किनारे ठट्टानामक स्थानके निकट दोनों सेनाओंका सामना हुआ, राजपूतोंने

अपनी स्वाधीनताकी रक्षा के लिये प्राणोंपर खेलकर युद्ध किया। परन्तु उनकी स्वाधनिताके दिन पूरे हो चुके थे, इसीसे उनकी हार हुई। उस समय जयचन्दको छोड अनेक राजाओंने सहायता की थी, यदि जयचन्द साथ देते तो कदाचित् यह हिंदुस्तान मुसलमानोंके हाथ न जाता, परन्तु होनहार बलवान् है। स्वजाति और स्वदेशके मित्र रणक्षेत्रमें समरसिंह आदि नरेश मारे गये, पृथ्वीराजने अकेलेही बहुत युद्ध किया किन्तु अन्तमें पकड लिये गये। इस समय बन्दी पृथ्वीराज अन्धे कर दिये गये थे पृथ्वीराजके गलेमें लोहेकी एक भारी जंजीर डालकर सुलतान पृथ्वीराजको गजनी ले गया और वहां एक कमरामें कैद कर रक्खा कवि वरचन्द अनेक कष्ट सहतेहुए पृथ्वीराजसे मिलनेके लिये गजनी पहुँचे और सुलतानकी आज्ञासे पृथ्वीराजसे मिलने गये। चन्दका आना जानकर पृथ्वीराज उठ खडे हुए तब सुलतानने एक वजनदार जंजीर और डलवा दी यह देख चन्दको शोक हुआ। चन्दने बादशाहसे कहा, जहाँपनाह मैंने सोचा था कि मेरे आनेसे पृथ्वीराजका दुःख कम होगा सो और भी बढ गया। यह अंधा अब आपको क्या तकलीफ पहुँचा सकताहै, यदि आप इसको स्वतंत्र रक्खें तो यह समय समय पर बडी बडी करामातें दिखावेगा। जिससे आप बहुत खुश होंगे, यह अंधा होनेपर भी शब्दवेधी बाण मार सकता है, सुलतानके जीमें यह बात देखनेकी इच्छा हुई। परीक्षाके लिये एक दिन नियत हुआ, महलमें सब सरदार इकठे हुए, ऊपर सिंहासन पर सुलतान अपने सरदार सहित बैठा था, नीचे पृथ्वीराज और चन्द खडे हुए थे। पृथ्वीराजके हाथमें तीर कमान दिया गया, एक ओर लोहेके सात तवा लटकाये गये, सब लोग पृथ्वीराजकी ओर देख रहे थे। कविवर चन्दने कहा—

छप्पै—इही बान चहुआन, राम रावन्न उथप्प्यो। इही बान चहुआन, कर्ण शिर अर्जुन कप्प्यो॥ इही बान चहुआन, शंभु त्रिपुरासुर

संध्यो । इही बान चहुआन भमर लक्षमन कर बंध्यो ॥ सो बान आज ताकर चढ्यो चंद विरद सच्यो चवे । चहुआन रान संचर धनी, मत चूके मोटे तवे ॥

दोहा—चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमान ।

एते पर सुलतान है, मत चूकै चहुआन ॥

चन्दने तीर चलानेके लिये सुलतानसे आज्ञा मांगी, सुलताननें चन्दके भेदको न समझकर कह दिया मार,मार शब्द सुनतेही पृथ्वीराजने तीर मारा, तीर लगतेही सुलतानका काम तमाम होगया । सुलतानका मरना देखकर सरदारोंने आक्रमण किया,मुसलमानोंके हाथसे मारा जाना अनुचित समझ कर वे दोनों मित्र एक दूसरेके गलेमें तरवार मारकर एक साथ मरगये,पृथ्वीराजके उपरांत यह देश यवनोंके हाथ आया उसके लिखनेकी यहाँ आवश्यकता नहीं है यहाँ तो पृथ्वीराजका हाल लिखना था सो लिखा गया ।

महोबेके उडने घोडोंका वृत्तान्त ।

राजा परिमालकी रानी मल्हना परम सुंदरी थी, जिस समय नखसे शिखातक शृंगार करती थी उस समय लक्ष्मीजीके समान शोभाको प्राप्त होती थी ।

श्लोक—यां हर्म्य पृष्ठे किल क्रीडयन्तीं विलोक्य तां भूपकदाचिदिन्द्रः ।

देवोऽपि दिव्याम्बरवासिनीभिः सुसेवितः कामवशं प्रणीतः ॥ ८ ॥

अर्थात् जिस मल्हनाको राजमन्दिरपर सखियोंके संग विहार करते देखकर एक समय देवताओंका राजा इंद्र मोहित होगया, जो इंद्र स्वर्गवासिनी देवांगनाओं करके नित्य सेवित था सो जब इंद्र भी मोहित हो गया तो औरोंका क्या कहना ॥ ८ ॥

मल्हना पर मोहित हो जानेके कारण इंद्रने राजा परिमालसे मित्रता की, राजाने इंद्रका बडा सत्कार किया और इंद्रके श्यामकर्ण घोडेको

अपनी अश्वशालामें बँधवा दिया। वहाँ राजा परिमालकी चितरंगी आदि घोडियोंका उससे संयोग हुआ, इंद्रने सात दिन निवास किया, परिमालको इंद्रने विजुलियाखाँडा, वज्र कमान, बिजली समान पीली रेशमी चादर, पपीहा घोडा और पचशब्दा हाथी जो ऐरावतके अनुसार था। जिसके जँजीर घुमानेसे बहुत दूरतकके मनुष्य रणभूमिमें गिर पडते थे इतनी वस्तुएँ दीं। पांच वर्षतक मित्रता रही, एक दिन परिमालके वेषमें राजा इंद्र मल्हनाके समीप गये, मल्हनाने अपना स्वामी समझकर कहा कि आज आप एकादशीको कैसे आये? तब इंद्रने कहा कि तुम्हारे स्वामीके रूपमें हम देवराज इंद्र हैं तुमसे मिलने आये हैं और आशीर्वाद देते हैं कि हमारे ही समान तुम्हारे पुत्र उत्पन्न हो, यह सुनकर मल्हनाने हाथ जोडके कहा देवेन्द्र! आपकी बडी कृपा हुई जो दर्शन दिया। आपका आशीर्वाद पाकर मैं कृतार्थ हुई, पतिव्रत धर्मके प्रभावसे आज मुझको देवदर्शन हुए यह सुनकर इंद्र अपने पुरको चले गये फिर कभी नहीं आये। इंद्रके पाँच वर्षके आगमनसे चितरंगी घोडीसे १ करिलिया, २ हरनागर, ३ मनुरथा, ४ वेंदुला ये चार घोडे हुए पाँचवीं कबुतरी घोडी हुई और सामान्य राशिकी घोडी गर्भिणी हुई थी उससे हिरोंजिनी घोडी उत्पन्न हुई। पपीहा घोडा इंद्र स्वयं दे गये थे। इस प्रकार ये सात घोडा घोडी बहुत उत्तम पवनके समान वेगवाले थे। वेंदुला घोडेका नाम दलगंजन भी था, एवं करिलिया घोडा हंसामणि नामसे भी प्रसिद्ध था।

आल्हाका संक्षिप्त वृत्तान्त।

दस्सराजकी स्त्री देवकुँवरिके गर्भसे आल्हाका जन्म हुआ, महाराज परिमाल और रानी मल्हनाने बडा उत्सव किया। दस्सराज और बच्छराज दोनों भाइयोंने बडा आनंद माना। राजा परिमालने ज्योतिषियोंको बुलाय बालकके लक्षण पूँछे तब पंडितोंने कहा कि यह बालक सिंह

लग्नमें उत्पन्न हुआ, सब राजाओंपर सिंह समान गरजेगा, इसका नाम आल्हा जगत्में प्रसिद्ध होगा । इसका नाम युगोंतक प्रसिद्ध होगा और इसके नामके साथ हजारों राजाओंका नाम वीरताके साथ बखाना जायगा यह सुनकर राजा परिमाल बहुत प्रसन्न हुए और ज्योतिषियोंको अनेक रत्न देके बिदा किया । आल्हाकी सवारीका घोडा करलिया था जब माडोंसे अपने बापका बदला लेकर महोबे आये तब वहाँसे पच-शब्दा हाथी घोडा पपीहा लाये सो भी आल्हाकी सवारीमें हाथी और पपीहा घोडा भी रहा । आल्हाका विवाह नैनागढमें राजा नैपालीकी कन्या सुनमाँ (सुलक्षणा) से हुआ था, सुनमाँका दूसरा नाम मछुला था । आल्हा सब युद्धोंमें विजय पाते रहे, कहीं हार न हुई, बेलाके सती होनेपर युद्धके समय जब आल्हाकी और सब सेना कट गई, कोई योद्धा न रहा तब महाकोप करके आल्हाने भगवतीकी दी हुई खड्गको मियानसे निकाला, उस खड्गके उठानेसे जहाँतक उसकी आभा पडी वहांतकके सब वीर शिरहीन हो गये । केवल पृथ्वीराज और चन्दकवि वृक्षकी ओटमें शेष रहे, उसी समयमें श्रीगोरखनाथजी आगये और आल्हाका हाथ पकड लिया, फिर बोले कि ऐसा मत करो। इस खड्गको बन्द करो। इस प्रकार गोरखनाथजीकी आज्ञासे आल्हाने खड्गको मियानमें कर लिया। तब आल्हाको साथ लिये श्रीगोरखनाथजी पृथ्वीराजके पास जाकर बहुत समझाय बुझाय दिल्लीको भेज दिया और आल्हाको साथ लिये तप करनेके अर्थ वनको चले गये । आल्हाने देवीजीकी बहुत उपासना करके अमरत्व वरदान पाया था, आल्हा युधिष्ठिरजीके अवतार हैं जो पांडवोंमें सबसे बडे और प्रतापी तथा सत्यवादी थे ।

मलिखानका वृत्तान्त ।

बच्छराजकी स्त्री तिलका अथवा ब्रह्मा नामवाली रानीसे सहदेवका अवतार मलिखानका जन्म हुआ, राजा परिमालने ज्योतिषियोंको बुलाय

बालकके लक्षण पूछे तो पंडितोंने कहा यह बालक भी सिंह लग्नमें जन्मा है यह सिंह समान बलवान् होगा। जैसे वनमें सिंह सब जीवोंका स्वामी होता है इसी प्रकार मनुष्योंमें यह सिंहके समान वीर होगा। इसके चरणमें पद्म होनेसे यह किसीके मारे नहीं मरेगा, जब पद्म फटेगा तब यह मर सकता है वैसे नहीं मर सकता। यह देवीजीका उपासक होगा और देवीजीसे वर पावेगा,यह सुनकर राजा परिमाल बहुत प्रसन्न हुए। मलिखानका विवाह पथरीगढ (कोट कमोंदी) में गजराजाकी बेटी कुसुमासे हुआ था। मलिखानने देवीजीकी उपासना कर जब देवीजीको प्रसन्न किया, तब देवीजीने वरदान दिया कि तुम्हारी सर्वत्र विजय होगी, किसी वीरके हाथसे तुम्हारी मृत्यु न होगी, मलिखानने अकेलेही पृथ्वीराजके वीरोंको जीता

श्लोक—ये ये भटाः तस्य मुखे रणाग्रे समागताश्चोद्यतशस्त्रहस्ताः ॥
ते ते क्षयं तेन यमस्य नीताः श्रीवत्सराजस्य सुतोत्तमेन ॥ ९ ॥
यथा युगान्ते परितो महाग्निर्यथान्तको वै धृतकालदंडः ॥
तथा महीपस्य महाबलौघं शस्त्राग्निना दग्धमथ प्रचक्रे ॥ १० ॥

जे कोई योद्धा रणमें शस्त्र लेकर मलिखानके सन्मुख आते थे उनको बच्छराजका पुत्र वीर (मलिखान) अपने शस्त्रके प्रहारसे शीघ्र यमपुरीको भेज देता था ॥ ९ ॥ जैसे प्रलयकालमें महा अग्नि अपने तेजसे और महाकाल अपने कालदंडसे जगत् प्रलय करता है इसी प्रकार वीर मलिखानने अपने शस्त्रकी अग्निसे पृथ्वीराजकी सब सेनाको भस्म कर डाला अर्थात् सब सेना तितर बितर होगई ॥ १० ॥

अनन्तर पृथ्वीराज सेनाके नाश हो जानेपर कूच कर गये फिर जब दुष्ट माहिल सिरसा आया और अपनी बहिन तिलकासे मिलकर मलिखानके मारे जानेका भेद ले गया तब जाकर पृथ्वीराजसे कहा कि मलिखानके पांवमें पद्म है जबतक वह पद्म नहीं कटेगा तबतक मलिखान नहीं मरेगा। और ऊभे खुदवाकर उनमें सांगें बरछी भाला गडवा दीजिये

वहां धोखेसे मलिखानको ले जाइये, जब घोडी ऊभेमें गिर पडेगी तब पाँवका पद्म फट जायगा और मलिखान खुद मर जायगा । पृथ्वीराजने ऐसा ही किया दोसौ ऊभे खुदवाकर उनमें बर्छी भाले साँगें गडवा दीं और लडाईके लिये वहां ताहरको ऊभेके सामने खडा कर लडनेके लिये मलिखानको बुलाया । ज्योंहीं ऊभेपर होकर घोडी निकली कि ऊभेमें गिर पडी, मलिखानके पांवका पद्म फट गया और मूर्च्छा आ गई, पछताकर मलिखान मरगया । इस प्रकार धोखेसे मलिखान मारा गया, मलिखानके खड्गकी प्रशंसामें एक दूसरा आल्हखंड लिखा जा सकता है, क्योंकि मलिखानने अपने खड्गके बलसे प्रायः सब राजाओंको जीतलिया था ।

लाखनि रानाका वृत्तान्त ।

श्लोक—कान्यकुब्जे नृपश्चैको राजन् राठोरवंशजः ॥
जयचन्द्रः समाख्यातो भूभुजां शिरसो मणिः ॥ ११ ॥
पंच पंच सहस्राणि यस्य द्वार्षु चतुर्षु च ॥
उद्यतास्त्राणि तिष्ठन्ति सैन्यान्येवमहर्निशम् ॥ १२ ॥
नृपाऽनुजो महावीरो रतिभानुर्बलाग्रणीः ॥
यत्प्रभावं समालक्ष्यारयो जग्मुः पराभवम् ॥ १३ ॥
तस्यात्मजो विशालाक्षः पूर्णचन्द्रसमाननः ॥
नकुलस्यावतारोऽभूल्लाखनेति परिश्रुतः ॥ १४ ॥

हे राजन् ! कन्नौजमें एक राठौरवंशी क्षत्रिय राजा जयचन्द राजाओंमें शिरोमणि हुए ॥ ११ ॥ जिसके नगरमें चारों फाटकोंपर पांच पांच हजार सेना शस्त्रोंको उठाये दिन रात खडी रहती थी ॥ १२ ॥ राजा जयचन्दका छोटा भाई महावीर रतीभान नाम बलवानोंमें अग्रगन्ता था, जिसके प्रभावको देखकर शत्रुलोग रण छोड भागते थे ॥ १३ ॥ उस रतीभानका पुत्र विशाल नेत्रोंवाला पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाला, नकुलका अवतार लाखनि नामसे पृथ्वीमें प्रसिद्ध हुआ ॥ १४ ॥

देश बंगालमें कामरू राजधानी शहर बूँदीमें महाराज गंगाधरकी बेटी कुसुमासे लाखनिका विवाह हुआ था। लाखनिने रणक्षेत्रमें जो वीरता दिखलाई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, जिस समय वीरता दिखाते हुए लाखनि पृथ्वीराजके सन्मुख पहुँचे उस समय पृथ्वीराजने कुछ तेहाकी बात कही तो लाखनिने सामने छाती करके कहा कि तुम भी अपनी अभिलाषा पूरी करलो, पृथ्वीराजने अपना धन्वा लेकर अनेक बाण लाखनिके मारे!

शराघातहतो वीरो वारणे भटसत्तमः ॥
यथा तथैव संतस्थो मृतोऽपि वीरपुंगवः ॥ १५ ॥

बाण लगनेसे लाँखनिने प्राण तो छोड दिये परंतु जिस प्रकार हाथी पर बैठे थे वैसेही बैठ रहगये किसी ओरको शिर न हिला ॥ १५ ॥ जब लाखनि रानाकी हथिनीने टक्कर मारकर पृथ्वीराजके हाथीको हटा दिया और पृथ्वीराजने पीठ फेरी तब लाखनि राना मूर्च्छित हो गये, वास्तवमें लाखनि राना बडा वीर था।

ढेबाका वृत्तान्त ।

महोबेमें राजपुरोहित चिन्तामणिका पुत्र ढेबा बहुत सुंदर रूपवाला शकुनविद्यामें परम प्रवीण था, महाराज परिमाल और रानी मल्हना आदि सब ढेबाको बहुत प्यार करते थे क्योंकि ढेबा भी बडा वीर था। ऊदनिसे ढेबाकी बडी मित्रता थी और ढेबा बडा शुभचिंतक ब्राह्मण था ढेबाका दूसरा नाम देवकर्ण था। देवकर्ण और पृथ्वीराजके सौतेले भाई संजमरायमें बडा युद्ध हुआ था, दो बार अपनी गदासे देवकर्णने संजमरायके शिरको फाड दिया परन्तु चन्द कविने दोनों बार अपने बाणसे संजमरायके शिरकी फांकोंको जोड दिया। संजमराय युद्ध करते करते मूर्च्छित हो गये, देवकर्णको सोमवंशी भी कहा है, परंतु यह ढेबाका ही दूसरा नाम था। प्यारमें ढेबा नाम रखलिया गया था, जिस समय कीर्तिसागर

पर युद्धमें ब्रह्मानन्दके बाणसे मूर्च्छित होकर पृथ्वीराज लोथोंमें जा गिरे थे उस समय गिद्ध गिद्धनी पृथ्वीराजकी आंख निकालना चाहते थे। संजमवीर एक ओर वहीं पडा था उसने पक्षियोंको देख अपना मांस काटकर पक्षियोंको खिलाया और पृथ्वीराजकी रक्षा की, उसी समय पृथ्वीराजकी मूर्च्छा दूर हुई । मल्हना रानीने डेबाको मनुरथा घोडा चढनेको दिया था।

धांधूका वृत्तान्त ।

दस्सराजकी स्त्री देवकुँवरिके गर्भसे अभुक्त मूलमें बालक उत्पन्न हुआ, राजा परिमालने ज्योतिषियोंको बुलाय बालकके लक्षण पूँछे । पंडितोंने कहा कि यह बालक अभुक्त मूलमें जन्मा है इसके देखनेसे पिता जीवित नहीं रह सकता । यह बालक बडा बलवान् हजारों मनुष्योंका सरदार होगा परन्तु अपने वंशवालोंसे युद्ध करेगा, यह सुनकर परिमालने धायको बुलवाकर वह बालक दिलवा दिया और कहा कि इस बालकका पालन भले प्रकार करो किसी प्रकारका क्लेश इसको न हो। यह कह महोबेकी उत्तर ओर एकान्तमें उसके रहनेको एक मन्दिर खाली करा दिया और दस्सराजको बुलाकर कहा कि तुम भूल करके उस बालकको नहीं देखना, इस प्रकार उस बालकके पालनका प्रबन्ध राजाने कर दिया जब वह बालक आठ महीनेका हुआ तब कार्तिकी पूर्णिमाको गंगा स्नान करने निमित्त बिठूर घाट जानेके निमित्त धायने हठ किया तब कुछ सेनासे सुरक्षित उस धायको राजा परिमालने बिठूर भेज दिया । वहां बिठूरमें पृथ्वीराजभी अपने चाचा कान्हदेव सहित आये थे, कार्तिकी पर्वके समय स्नान कर धाय उस बालकका हाथ एक पंडितको दिखाने लगी वहीं पृथ्वीराजभी खडे थे। बहुत सुंदर राजलक्षणोंसे युक्त तेजवाले बालकको देखकर एक रक्षकसे पृथ्वीराजने पूछा कि यह किसका बालक है, उसने कहा कि यह बालक दस्सराजका है।

राजा परिमालने इस धायको इस बालककी रक्षा करनेको नियत किया है। यह सुन पृथ्वीराजने एक जादूगरको बुलाकर कहा कि आज रात्रि-समय अपने जादूसे इस बालकको लाकर हमको दोगे तो हम तुमको बहुत कुछ इनाम देंगे। जादूगरने रात्रिसमय धाय आदि सब रक्षकोंको अपनी जादूसे मूर्च्छित कर उस बालकको चुरालिया और ले जाकर पृथ्वीराजको दिया पृथ्वीराजने उस जादूगरको अनेक रत्न देकर बिदा किया। उस बालकको चंचल दृष्टिवान् और कांतिमान् देखकर कान्ह कुमारने कहा हे तात! हमारे कोई सन्तान नहीं इस कारण यह बालक हमको दे दो, तब पृथ्वीराजने कान्ह कुमारको दे दिया। दिल्ली पहुँचकर कान्ह कुमारने उस बालकको गोद लेकर बडा उत्सव किया। ज्योतिषियोंको बुलाय नामकरण संस्कार कराय पंडितोंने नष्टजन्मपत्र बनाकर उसका नाम देवपाल रक्खा परंतु कान्हदेवने देवकुँवरिका पुत्र होनेके कारण चंदपुंडीर नाम प्रसिद्ध किया। वह बालक छोटी ही अवस्थामें बहुत मोटा ताजा था। इस कारण प्यारसे लोग धांधू कहकर पुकारने लगे। इससे दूसरा नाम धांधू प्रसिद्ध हो गया। कन्नौजके युद्धमें कान्हदेव रतीभानके हाथसे मारे गये तब पृथ्वीराजने धांधूको अपना छोटा भाई समझकर अस्सी हजार सेनाका सरदार बनाया काम पडनेपर लाखोंका सरदार बनादिया जाता था। गंगाजीसे धाय जब महोबे पहुँची और राजाको खबर दी कि बालक चुरा लिया गया सो सुनकर सबने सन्तोष किया। कुछ दिनों बाद सुना कि गंगा बिठूर घाटसे एक बालकको लाकर कान्हदेवने गोद बिठाया है तब परिमालने कहा कि कुछ चिन्ता नहीं महाराज पृथ्वीराजके चाचा कान्हदेवजी महावीर बली हैं उनके यहां जानेसे वह बालक बहुत सुखमें रहेगा उसका अहोभाग्य है जो ऐसे स्थानमें पहुँचा ऐसे कह सुनकर संतोष किया।

ब्रह्मानन्दका वृत्तान्त।

राजा परिमालकी रानी मल्हनाके गर्भसे श्रीकृष्णजीके कृपापात्र अर्जुनने

जन्म लिया वृद्धावस्थामें पुत्र जन्म होनेके कारण राजा परिमालने बडा आनन्द माना । महोबे भरमें आनन्द छागया । बालकके जन्मका उत्सव महोबेमें बडी धूमधामके साथ किया गया जिसका बर्णन नहीं किया जासकता । राजाने ज्योतिषियोंको बुलाय बालकके लक्षण पूंछे तब ज्योतिषियोंने कहा कि यह बालक वैशाख शुक्ल तृतियाको सूर्योदय समय मेष लग्न रोहिणी नक्षत्र मेषके सूर्य वृषके चन्द्रमामें जन्मा है इसी तिथिमें परशुरामावतार हुआ था । सूर्य चन्द्रमा उच्च राशिमें हैं इस कारण यह बालक चन्द्रवंशमें भूषण चन्द्रमाके समान प्रकाशमान्, सूर्यके समान तेजस्वी और परशुरामजीके समान बलवान् होगा, और ब्रह्मण्य होगा । इस कारण रणमें कोई वीर इसको सामने होकर जीत नहीं सकेगा, यह सुनकर परिमालने बहुत आनन्द माना फिर पूँछा कोई ग्रह अरिष्ट तो नहीं है, पंडितोंने कहा कि महाराज ! ऐसा कोई भी प्राणी संसारमें नहीं है, जो अरिष्टसे रहित हो परन्तु इस मंगलोत्सवमें अरिष्ट कहनेकी आवश्यकता नहीं । जब राजाने हठ किया तब ज्योतिषियोंने कहा कि इस बालकका स्त्रीभाव अच्छा नहीं है स्त्रीहीके कारणसे इसकी मृत्यु होगी, फिर ज्योतिषियोंने उस बालकका नाम ब्रह्मानन्द रक्खा, राजा परिमाल कुछ उदास हुए फिर संतोषकर ज्योतिषियोंको अनेक रत्न देकर बिदा किया, अरिष्टके कारण ही परिमालने ब्रह्मानन्दका विवाह नहीं करना चाहा, परंतु माहिलखानके बहुत हठसे विवाह अंगीकार किया । ब्रह्मानन्दका विवाह दिल्लीमें पृथ्वीराजकी कन्या बेलाके साथ हुआ था, दुष्टात्मा कलहप्रिय माहिलके कहनेसे पृथ्वीराजने महोबेपर चढाई की । कीरतिसागरपर लडाई हुई, पहले तो ब्रह्मानंदके छोटे भाई रणजीत और माहिलके इकलौते बेटे अभईने युद्ध किया, जब दोनों मारे गये और उनका कबंध जागा तब ब्रह्मानंद चढ गये और युद्ध करने लगे सब वीरोंसे एक एक करके युद्ध हुआ जब ब्रह्मानंद जीतनेमें न आये तब माहिलके कहनेसे पृथ्वीराजने युद्ध करना

आरंभ किया। चन्दकविने पृथ्वीराजसे कहा कि महाराज ! ब्राह्मणोंका प्यारा ब्रह्मा कदापि आपसे जीता नहीं जा सकता। तब पृथ्वीराजने क्रोध करके अश्वत्थामाका दिया हुआ अर्ध चन्द्राकार बाण ब्रह्मानन्दके मारनेको हाथमें लिया यह देखकर ब्रह्मानन्दने शीघ्रताके साथ एक तीक्ष्ण बाण महाराज पृथ्वीराजके मारा।

श्लोक-ब्रह्मबाणेन व्यथितो राजा मूर्च्छामवाप ह।
हाहाकारे तदा जाते युद्धे तस्मिन् रणोत्सवे ॥ १६ ॥

ब्रह्मानन्दके बाणसे व्याकुल होकर पृथ्वीराज मूर्च्छित होगये, उस समय रणभूमिमें बड़ा हाहाकार हुआ, इतनेमें योगियोंके भेषमें लाखनि ऊदन आदि जो कन्नौजसे आगये थे सो आ पहुंचे। अनन्तर जब बेलाका गौना था तब दुरात्मा माहिल ब्रह्मानन्दको अकेले ले जाकर दिल्लीमें पहुंचा और वहां युद्ध कराया, उस युद्धमें भी ब्रह्मानन्दने बड़ी वीरता दिखाई। चामुंडराय और ताहरने धोखा देकर घायल कर दिया था, ब्रह्मानन्दके सामने लड़कर कभी किसीने विजय नहीं पाई यह ब्रह्मानन्दका वृत्तान्त लिखा, आगे ब्रह्मानन्दकी बड़ी बहिन चन्द्रावलिका वृत्तान्त संक्षेप रीतिसे लिखते हैं।

चन्द्रावलिका वृत्तान्त।

राजा परिमालकी रानी मल्हनाके गर्भसे एक कन्या उत्पन्न हुई, जिसका नाम चन्द्रावलि रक्खा गया। ब्रह्मानन्दके जन्मके दूसरे साल उसका विवाह इस प्रकार हुआ कि चन्द्रावलि परम सुन्दरी थी, उसके रूपकी प्रशंसा सुनकर बौरीगढसे वीरसाहि सेना लेकर चढ आये और राजा परिमालके पास एक दूत द्वारा कहला भेजा कि अपनी कन्याका विवाह हमारे पुत्र इन्द्रसेनके साथ कर दो, नहीं तो हम युद्ध करके कन्या हरण करेंगे, और महोबेको विध्वंस कर डालेंगे। यह सुनकर परिमालने रनिवासमें जाय रानी मल्हनासे कहा, मल्हनाने कहा कि तुमने अपने सब अस्त्र शस्त्र सागरमें पखार दिये दस्सराज बच्छराजको करिया सोतेसे

बाँध ले गया और वहाँ लै जाकर मार डाला । ताल्हन सैयद बनारसमें छा रहे बहुत दिनोंसे आये नहीं यहां युद्ध करनेवाला कौन है ? कन्या किसी राजाके यहाँ व्याहनीही होगी, इस कारण उचित है कि व्याह कर दो। वीरसाहि भी यादववंशी क्षत्रिय हैं कुछ चिन्ताकी बात नहीं है, यह सुनकर राजा परिमालने वीरसाहिके दूतको उत्तर दिया कि कन्याका विवाह हम करेंगे परन्तु इस प्रकार अनरसके साथ नहीं करेंगे। इस कारण वीरसाहि लौट जायँ हम पीछेसे तिलक और दिन नियत करके सँदेशा भेजेंगे, तब बरात चढाकर लावें । यह सुनकर दूत चला गया। राजा परिमालका उत्तर वीरसाहिसे कह सुनाया, सुनकर वीरसाहि प्रसन्न हुए और लौट गये। अनंतर राजा परिमालके कथनानुसार चन्द्रावलिका विवाह इंद्रसेनके साथ हुआ परंतु दुरात्मा व कलहप्रिय माहिलके उपद्रवोंके भयसे परिमालने चंद्रावलिको नहीं बुलाया, चंद्रावलिका गौना नहीं हुआ था गौनेमें भी लडाई बनाकर हालमें छापी गई है, इसी प्रकार लाखनिके गौनेमें भी लडाई नहीं हुई थी। परंतु बनानेवालोंने झूंठी लडाई बनाकर सच्ची लडाइयोंमें भी सन्देह उत्पन्न करा दिया है झूंठी लडाइयोंके मिलनेके कारण आल्हखंड प्रायः गप्प समझा जाता है, चंद्रावलिकी चौथी लेने जब ऊदनि गये थे तब कलही माहिलकी चुगलीके कारण बडा युद्ध हुआ था फिर चौथी हुई उस समय चंद्रावलिका पुत्र जगनिक बहुत छोटा था माहिलके भाई जगनिक जगनेरीमें राज्य करते थे, उनके मरनेपर राजा परिमालने जगनेरीका किला जगनिकको दिया था। जगनिक भी बडा वीर था! ब्रह्मानंदका छोटा भाई रणजीत था जो भुजरियोंकी लडाईमें ताहरके हाथसे मारा गया था।

ऊदनका वृत्तान्त ।

दस्सराजकी रानी देवकुँवरिके गर्भसे भीमसेनजीने आकर जन्म लिया। राजा परिमालने पुत्र जन्म सुनकर आनंद माना। परंतु देवकुँवरिने अपने

पतिके शोकमें उस पुत्रका होना अच्छा नहीं समझा, अपनी बाँदीको तुरन्त दे दिया और कहा कि इस पुत्रको ले जाकर कहीं फेंक दे। विधवा होनेपर मेरे यह पुत्र हुआ इस कारण मैं इस पुत्रको नहीं चाहती। बांदीने बहुत कुछ कहा सुना परन्तु देवकुँवरिने यही कहा कि इस पुत्रको मेरे सामनेसे लेजा। तब बाँदिने उस पुत्रको ले जाकर मल्हनाको दिया और सब हाल कहा, मल्हनाने उस पुत्रको ले लिया और पालन करने लगी। राजा परिमालने ज्योतिषियोंको बुलाय उस बालकके लक्षण पूछे तब पंडितोंने कहा कि यह पुत्र बडा बलवान् होगा, रणक्षेत्रमें किसीसे नहीं डरेगा। इसका नाम ऊदन प्रसिद्ध होगा। यह अपने आल्हाभाईके नामके साथ प्रसिद्ध होगा, इसके नामको जगत्में लोग बडी वीरताके साथ लेंगे और इसका यश गावेंगे। यह सुनकर परिमाल बहुत प्रसन्न हुए, मल्हना रानीने अपने पुत्र ब्रह्माके साथ साथ ऊदनकी भी पालना की, एक सिंहिनी नामवाली महिषी थी उसका दूध पिलाकर ऊदनको पाला, जब ऊदन बारह वर्षके हुए तब अस्त्र धारण कर वनमें शिकार खेलनेको जाने लगे। और बाललीला करके सबको सुख देने लगे। एक दिन देवीजीकी पूजा करते करते अपना शिर काटकर देवीजीको चढानेकी इच्छासे हाथमें खांडा लिया उस समय देवीजीकी आज्ञा बोली हे पुत्र ! ऐसा मत करो, हम तुझसे प्रसन्न हैं तू संसारमें महावीर बली प्रसिद्ध होगा और रणमें जाकर तू किसीसे नहीं डरेगा। तेरी मृत्यु ब्राह्मणके हाथसे होगी यह सुन-ऊदन प्रसन्न हुए ब्राह्मणके हाथसे अपनी मृत्यु जानकर सन्तोष किया।

श्लोक—ऊदनस्य कृतं कर्म क एवं मानवेषु च ॥
रणे कुर्याद्द्वितीयो यः शूरसामन्तघातिनम् ॥ १७ ॥

शूरसामन्तोंके मारनेवाले ऊदनके किये कर्मोंका कौन ऐसा दूसरा मनुष्य है जो कर सके ॥ १७ ॥ ऊदनसे पांच दिन सुलिखान छोटे थे जो वीर मालिखानके छोटे भाई थे।

अवशेष वृत्तान्त ।

हिंदुस्तानके सब राजाओंमें परस्पर प्रेम था। एक दूसरेके यहां महोत्सवमें जाया करते थे और जब कहीं राजसभा होती वहां सब एकत्र होकर अपनी अपनी सम्मति प्रकाश कर देशकी उन्नतिके उपाय शोचा करते थे। राजा अनंगपाल दिल्लीमें राज्य करते थे सो जयचन्द और पृथ्वीराजके नाना थे, जयचन्द कन्नौजके राजा थे और पृथ्वीराज अजमेरके राज्याधिकारी थे। अनंगपालने पृथ्वीराजको दत्तक पुत्र बनाया और दिल्लीका राज्य सौंपा। यह बात जयचन्दको अच्छी नहीं लगी इसीसे जयचन्द और पृथ्वीराजमें अनबन हो गई और इसी कारण दोनोंमें वैरभाव बढ़ता ही गया। वच्छराजके मरने उपरांत सिरसा गढ़को पृथ्वीराजने दबा लिया और अपने पुत्र पारथको उसमें रख दिया, जब वच्छराजके पुत्र मलिखानने जाना तब युद्ध करके सिरसा छीन लिया तबसे मलिखानसे पृथ्वीराजका वैर हो गया। और महोबेमें पृथ्वीराजके कुछ घायल वीर गुणमंजरी दासीसहित आकर बागमें उतरे तो मालीने उनको मना कर एक घायल वीरके शिरमें कंकड मारा तब उसने दौडकर मालीका शिर काट डाला। मालिनिने जाकर राजा परिमालसे कहा। परिमालने कुछ सेना भेजी उसको घायलोंने मार डाला, तब परिमालने आल्हा ऊदनको बुलाकर कहा कि जाकर घायलोंको मारो, आल्हा ऊदनने परिमालको बहुत कुछ समझाया बुझाया परंतु कलही माहिलके भडकानेसे परिमालने आल्हा ऊदनकी एक बात भी नहीं मानी। लाचार होकर ऊदनने जाकर उन घायलोंको मारडाला। गुणमंजरीने धीरे धीरे दिल्ली जाकर सब वृत्तान्त अपने स्वामी पृथ्वीराजसे कहा उधर माहिल भी पहुँचे और झुठी चुगली खाकर पृथ्वीराजको परिमालका वैरी बना दिया ऐसी ही ऐसी बातोंमे राजाओंमें परस्पर वैर बढ़ता गया, एक दूसरेसे लड लडकर शक्तिहीन होगये, तब यवनोंने आकर धोखा देकर रातोंमें छापा मारकर यहां अपना अधिकार जमाया।

असली आल्हखंड।

मिस्टर सी. ई. इलियट साहब बहादुर फर्रुखाबादमें बन्दोबस्तके कलक्टर थे, उन्होंने आल्हा गानेवालोंसे आल्हखंड लिखवाकर अंग्रेजीमें तर्जुमा कर लंदनको भेज दिया उसको नागरीमें छापनेके लिये मुंशी रामस्वरूपजीने साहब बहादुरसे आज्ञा लेकर अपने प्रेसमें छापकर संवत १९२१ में पहली बार प्रकाशित किया, इसीसे उसको असली आल्हखंड कहते हैं। परंतु जिन अल्हैतोंके द्वारा वह आल्हखंड लिखी गई उन्हीं अल्हैतोंमेंसे किसी अल्हैतकी लिखी हुई आल्हखंड हो अथवा उसीके अनुसार उससे उत्तम हो तो क्यों न असली मानी जाय। हमारी यह आल्हखंड उसी समयके प्रसिद्ध अल्हैत पंडित भोलानाथजीकी लिखी हुई है किसीकी नकल नहीं है और महोबेकी बोलीमें है उसीको ठीककर और बढ़वाके छापनेको दी गई है, इस कारण इसके असली होनेमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

सज्जनोंके हितैषी-
पं० नारायणप्रसाद सीतारामजी,
पुस्तकालय लखीमपुर (अवध).

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

आल्हखंडकी भूमिकाकी सूची।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त।

श्रीनिकुंजविहारिणे नमः ।

आल्हखण्ड बडा ।

मंगलाचरण ।

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

त्रिभंगी छन्द ।

जय जय गणनायक, जयति विनायक, जन सुखदायक, लंम्बोदर। जय जय प्रतिपाला, दीनदयाला, रूप विशाला,

गजशेखर ॥ जय जगपति अनन्ता, जय भगवन्ता, जय इकदन्ता, नागवदन । जय गौरीनन्दन, त्रिभुवन वन्दन, शत्रुनिकन्दन, सिद्धिसदन ॥ २ ॥

सवैया ।

रामको नाम बडो जगमें सोइ, रामको नाम रटैं नर नारी ।
रामके नाम तरी शबरी बहु, तारे अजामिलसे खल भारी ॥
रामको नाम रटो हनुमान, हते रजनीचर लंक पजारी ।
प्रेमते नेमते राम रटो नित, रामको नाम सदा हितकारी ॥ ३ ॥

तथा ।

भाल विशाल त्रिपुंड्र विराजत, मस्तक एक कला शशि सोहै ।
दीनदयालु कृपालु प्रभो दुख, दोष दुरावत ताप विमोहै ॥
पार न पावत वेद कभू, महिमा तुम्हरी कहि पावत को है ।
मुंडन माल गले उर व्याल, रटो शिवशंकर पालत जो है ४ ॥

कुंडलिया ।

मनमें धीरज धारिके, जप तप करना दान ।
लावो मन समुझायके, पद सरोजका ध्यान ॥
पद सरोजका ध्यान मान मन वचन हमारा ॥
भूषण लोक अनन्त कृपा कर लेय सहारा ॥
भोलानाथ मनाय अरे मन चेत पियारा ।
भजे नहीं हरिनाम मूढ डूबै मझधारा ॥ ५ ॥

चौपदी छन्द ।

जय त्रिभुवन वन्दनि सुर उर चंदनि, दुष्ट निकन्दनि सदा जये । मम विपति विभंजनि खलदल गंजनि, जन मनरंजनि कृपामये ॥ जय जय जगजननी भवभय हरनी, जग विस्तरणी शिव वामा । जय विषय निवारिणि कलि-मलहारिणि, अधम उधारिणि सुखधामा ॥

सुमिरनी ।

प्रथम मनावों श्रीगणेशको * सुमिरत होयँ सिद्धि सब काम ।
हैं सब लायक दास सहायक * सुंदर वदन रूप अभिराम ॥
रक्त बरन लंबोदर सोहै * सोहै अंग अंग सब लाल ।
मस्तक कंचन मुकुट बिराजै * राजै कंठ मुंडकी माल ॥
एकदंत गजबदन विनायक * लायक सुभट कालके काल ।
शंकरनंदन दुष्ट निकंदन * वंदत जगत गौरिके लाल ॥
ऋद्धिसिद्धिनिधि चंवर डुलावें * सुरगण हाथ बाँधि रहिजायँ
तेज बिराजै अंग अंगमें * शोभा अमित बरणि नहिं जाय॥
विघ्न बिदारी भवभय हारी * युग युग हरत भूमिको भार ।
महिमा गावें शेष शारदा * जिनका कभी न पावें पार॥
मैं अज्ञान मोहवश निशिदिन * केहिविधि रटों तुम्हारो नाम
दास आपनो जानि मोहिं प्रभु * पूरण करहु नित्य सब काम
बहुरि मनावों मातु भवानी * औ जगदीश शम्भु भगवान।
माथ नवाशें सब देवनको * करिकै इष्टदेवको ध्यान ॥
तीर्थन ध्यावों श्रीगंगाजी * कलिमल हरनि,धार फहराय
ज्ञानिन ध्यावों सनकसनन्दन * वीरन भीष्मपितामह ध्याय
प्रेमिनमें ध्यावों नंदनंदन * ऋषियन कपिलदेव भगवान्
वैद्यन ध्यावों धन्वन्तरिको * कीशन मध्य वीर हनुमान ॥
धाम सुध्यावों जगन्नाथजी * क्षेत्रन कुरुक्षेत्र हरद्वार ।
पुरिन मध्य ध्यावों काशीजी * है जहँ विश्वनाथ दरबार ॥
योगिन ध्यावों शिवशंकरको * दानिन हरिश्चन्द्र महराज ।
सत्य सराहौं श्रीदशरथको * औ प्रहलाद भक्त शिरताज ॥
चक्र सराहौं श्रीविष्णूको * जासों अभय भक्तको दीन ।
वज्र सराहौं इन्द्रदेवको * वृत्रासुरै पराजय कीन ॥

शूल सराहौं शिवशंकरको * जासों काटि जलंधर दीन ।
धन्य कमंडलु श्रीब्रह्माको * जामें राखि सुरसरिहि लीन ॥
शूरन ध्यावौं लंकापतिको * सन्मुख युद्ध रामसों कीन ।
मुख नहिं मोर्‍यो समरभूमिते * अरु ह्वैगयो वंशते हीन ॥
नारि शिरोमणि सीताजीको * ध्यावहु बार बार नमि माथ ।
धर्म पतिव्रतको पालन करि * वनको गई रामके साथ ॥
पूरव ध्यावौं जगन्नाथजी * पश्चिम कृष्णचन्द्र करतार ।
दक्षिण ध्यावौं रामेश्वरको * उत्तर बद्रिनाथ दरबार ॥
आगे सुमिरौं सकल देव पुनि * कहिहौं बीर पँवारा गाय ।
कंठ विराजौ मेरे कंठेश्वर * जिह्वा बैठु शारदा माय ॥
जो जो अक्षर माता भूलूं * सो सो लिखियो जीभ हमार ।
तेरी नैया पर चढि बैठौं * बेड़ा खेइ लगैयो पार ॥

सुमिरन–श्रीगणेशजी ।

प्रथम सुमिरिये श्रीगणेशको * सुमिरे होत सिद्धि सब ठाम ।
हैं गणनायक सबलायक प्रभु * सुन्दर वदन रूप अभिराम ॥
रक्तवर्ण सोहत लंबोदर * सोहत अंग अंग सब लाल ।
कंचन मुकुट सुघर मस्तक पर * सोहै कंठ मुंडकी माल ॥
एकदन्त गजबदन विनायक * वन्दत जगत गौरिके लाल ।
शंकरनन्दन दुष्ट निकन्दन * भक्तन अभय देत सबकाल ॥
तेज विराजत अंग अंगमें * शोभा अमित बरणि नहिं जाय
चमरढुलावतऋद्धिसिद्धि मिलि * निशिदिनहरतविघ्नसमुदाय
महिमा गावत शेष शारदा * मैं कस रटौं तुम्हारो नाम ।
जानि आपनो दास मोहिं प्रभु * पूरण करहु नित्य सब काम

श्रीसूर्यनारायणजी ।

सुमिरन करिबे दिननायकको * हैं प्रत्यक्ष देव संसार ।

जिनकी महिमा सब जग जाहिर * पूरण ब्रह्मरूप करतार ॥
हैं अविनाशी सुखराशी प्रभु * अंजलि दिये करत उद्धार।
जिनके उदय होत जग जागै * निज निज काज करै संसार॥
नित उठि करहि प्रणाम रविहि जो * ताके होयँ पूर्ण सब काम
भक्तिभावसे जो ध्यावै रवि * होवैं सुलभ सिद्धि सब याम
रविमंडल सब देव विराजत * कीन्हें कृपा होत भव पार।
नेम धर्मसे लवण त्यागिके * रविदिन एक बार आहार॥
करै आरती दिननायककी * मनमें धारि भक्ति अभिराम
सूर्यपुराण सदृश बरतै जो * सो नर लहै अंत रविधाम

श्रीदेवीजी।

सुमिरौं श्रीगिरिजा जगदंबा * दुर्गा महा कालिका माय।
आदि शक्ति चंडिका भवानी * अस्तुति करत देव समुदाय
भीर परत जबहीं भक्तनपर * तब तब माता करैं सहाय॥
मारे दानव मधुकैटभसे * अरु महिषासुर दीन गिराय
चंडमुंडको भक्षण कीन्हा * कीन्हा रक्तबीजका नाश।
शुंभ निशुंभ विदारे माता * निशिदिन करौं तुम्हारी आश
रूप अनेक धरे जगदम्बे * औ भक्तनकी करी सहाय।
तैसेइ करिके दया दृष्टिकी * मेरे कंठ विराजो आय॥
गावनवालेको स्वर दीजै * औ बजवैयहि दीजै ताल।
नाचनवालेको नैना देउ * मर्दको देउ खड्ग अरु ढाल
गावनवालेको स्वर बांधै * बांधै ताल मंजीरन क्यार।
नाचनवालेको पग बांधै * ताको करहु कालिका क्षार॥
हाथ जोरिके मैं मांगत हौं * राखौ अंब नामकी लाज।
पूरण कीजै सदा आश मम * जस नित करौ संतके काज

श्रीसरस्वतीजी।

मातु सरस्वतीनिकों मैं सुमिरों * विद्याशक्ति शारदा माय।
शरद चन्द्रमयंक सम आनन * शोभा अंग अंग दरसाय।
सोहत पुस्तक एक हाथमें * वीणा दूजे हाथ सोहाय।
कुंडल सोहत हैं कानन में * अस्तुति करैं देव समुदाय।
हंसवाहिनी बुद्धिदायिनी * जग उत्पत्ति करनि महरानि
ब्रह्मशक्ति प्यारी ब्रह्माकी * सब विधि जगत माहिं सुखदानि
कमलासन राजत सुन्दर अति * जाको रूप न बरणा जाय।
नाग यक्ष गन्धर्व सुरासुर * सुन्दरि मोहि मोहि रहिजाय।
दीजै माहिं बुद्धि वर वाणी * माँगत हाथ जोरि महरानि
सदा हमारी मनोकामना * पूरन करहु मातु प्रण ठानि

श्रीब्रह्माजी।

बहुरि सुमिरिये ब्रह्माजीको * हैं जो वेद सृष्टि करतार।
ऋग यजु साम अथर्व वेद हैं * जिनमें कह्यो मुख्य सब सार
ज्ञानकांड अरु कर्मकांड पुनि * भाख्यो तहँ उपासना ज्ञान
सब मर्यादा हैं वेदन महँ * जगहित सुमिरि पढ़ै धरि ध्यान
आदिपुरुष चतुरानन स्वामी * माँगों हाथ जोरि शिर नाय
पूरण कीजै मनोकामना * निशि दिन मोको होउ सहाय

श्रीविष्णुजी।

बहुरि सुमिरिये श्रीविष्णुको * व्यापक सकल जगत करतार
जब जब भीर परत देवनपर * तब तब आय लेत अवतार
होत सहायक सब देवनके * दुष्टन मारि करत संहार।
रक्षा करत सकल भक्तनकी * पहिन करि हरत भूमिको भार
सदा क्षीरसागर के वासी प्रभु * लक्ष्मी चापत चरण ललाम
ब्रह्मा उपजे नाभि कमलते * शोभा अमित कृष्ण तन श्याम

हाथ जोरिके मैं विनवत हौं * हे प्रभु कृपासिन्धु भगवान ।
पूरण कारिये मनोकामना * सिद्धि दीजै दास आपनो जान ॥

श्रीमहादेवजी

सुमिरन कीजै महादेवको * जोके शिर गंगा अंग आधार ।
अंग अंगमें भस्म रमाये * नन्दी वृषभ नाथ असवार ॥
मस्तक चन्दा अति सोहत है * औरौ कंठ मुंडकी माल ।
बांधि साँप आभरण तनमें * कमल समान नैन अथ लाल ॥
जटाजूट भभूत विराजै * आवै अंग अम्बिका मीत ।
भूत पिशाच प्रेत सँग डोलैं * बोलैं वे नाना भय बतात ॥
डमरू हाथ त्रिशूल विराजै * शोभा जासु बरणि नहिं जाय ।
हैं अविनाशी सब देवनमें * महिमा रटैं देव समुदाय ॥
सुखराशी कैलास निवासी * हैं अविनाशी शंभु सुजान ।
सेवक सुखदायक सब लायक * पूरण कर दास मनमान ॥
हाथ जोरि प्रभु मैं विनवत हौं * हे प्रभु महादेव भगवान ।
आश हमारी पूरण कारिये * निशि दिन धरौं आपको ध्यान ॥

श्रीरामचन्द्रजी

चैत उजेरी तिथि नवमीमें * शुभ दिन अति परा शुकवार ।
पूरण ब्रह्म रूप गुणसागर * लीन्हा रामचन्द्र अवतार ॥
सुमिरन कीजै तिन प्रभुको नित * अरु लक्ष्मण पद शीश नवाय ।
भरत शत्रुहन अरु सीताके * सुमिरौ चरण कमल शिर नाय ॥
गुरु वशिष्ठजीको सुमिरौ पुनि * सुमिरौ भरद्वाज महराज ।
विश्वामित्रकर सुमिरौ पद * सुमिरौ नारदादि मुनिराज ॥
पुनि सुग्रीव दास अंगद पद * सुमिरौ वीर बली हनुमान ।
सुमिरौ जामवंत नल नीलहि * द्विविद मयंद आदि बलवान ॥
हाथ जोरिके मैं विनवत हौं * हे प्रभु रामचन्द्र भगवान ।
पूरण कारि निज मनोकामना * दीजै मोहि भक्तिको दान ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी-सवैया।

पुण्य प्रताप प्रभा पलटै, विचरैं खल नीच निशाचर राई।
भक्तनको दुख भूरि मिलै, अरु पापके भार धरा गरुआई॥
धर्म रु कर्म घटै जवहीं, वहुतै जग वाजत द्वेष वधाई।
भार उतारनको जगमें, तवहीं प्रगटैं भुवि श्रीयदुराई॥

लागत भादौं तिथि आठैं दिन * प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान।
भक्ति प्रेमवश श्रीयशुदाकी * खेलत गोद मोद मन मान॥
कोटि काम सम मूरति राजै * सुभग शरीर श्याम अभिराम।
लाल कमलसम पग विशाल दोउ * मुनि मन मधुप रहत मनथाम॥
लाल अधरन विच दँतियाँ द्वै * नासा देखि कीर शरमाय।
चारु कपोलन अनमोलन पर * निरखत वारवार मन जाय॥
नखद्युति वर्णत वनि आवै नहिं * छावै हिये मोद सवकाल।
कमल पाखुरिन पर मोती जनु * विकसे लसे हरन जंजाल॥
ध्वजा वज्र अरु अंकुशादिकी * रेखा रुचिर रही दरशाय।
मुनि मन मोहै सुनि नूपुर धुनि * कटि किंकिणी शब्द सरसाय॥
नयन विशाले मुख प्याले सम * दरशत सरस शोभयुत कान।
हैं युग भौंहें निरछौंहें सोउ * भाल विशाल तिलक झलकान॥
त्रिवली सोहै भलि पेटमहँ * अति गंभीर मनोहर नाभि।
भुजा अदूषण युत भूषण सो * हिय वघनहा रहा छवि नाभि॥
चिक्कन कुंचित गभुआरे कच * पीत झँगुलिया रही सुहाय।
क्या छवि वरणौं वालकृष्णकी * शोभा अंग अंग दरशाय॥
हाथ जोरिकै मैं विनवत हौं * हे प्रभु कृष्णचंद्र करतार।
पूरण करि नित मनोकामना * दीजे मोहिं भक्ति सुखसार॥

श्रीवेदव्यासजी।

पुनि मैं सुमिरौं मुनिनायकको * हैं जो सत्य ज्ञान गुणखान।

सत्यवती पाराशर नन्दन * मुनिवर व्यासदेव भगवान ।
अष्टादश पुराण जिन भाषे * तिनके नाम कहौं हर्षाय ।
ब्रह्मपुराण पद्म अरु विष्णू * वांमन नारदीय सुखदाय ॥
मत्स्य ब्रह्मवैवर्त भागवत * अरु शिव अग्नि भविष्यमहान।
लिंग कूर्म पुनि गारुड जानौ * शूकर अरु ब्रह्मांड पुरान ॥
मार्कंण्डेय स्कन्द जो गावत * पावत सकल जगत कल्याण
पुनि सो सुखी रहत निशि वासर * अन्तिमलहतमोक्षनिर्वाण

श्रीनारदजी ।

बहुरि सुमिरिये तेहि योगीको * वीणा सदा रहत जेहि हाथ।
लोक लोकमें जो विचरत हैं * गावत सदा विष्णु गुणगाथ।
नाश करावत हैं असुरनको * पुरवत सदा सुरनके काज।
ऐसे योगी श्रीनारदजी * हमरे माननीय शिरताज ॥
मुनिवर ज्ञानी नाम ब्रह्मऋषि * हैं नारायण भक्त सुजान ।
दीजै मोहिं भक्ति हरिकी प्रभु * विनवौं बारबार धरि ध्यान

श्रीगंगाजी ।

सुमिरन करिये नित गंगाको * भागीरथी नाम विख्यात ।
सकल जगतकी तारनहारी * माता धर्म तुम्हारे हात ॥
गंगाहेत भूप भागीरथ * पहुँचे हरद्वारमें जाय ।
कीन्ह तपस्या शिवशंकरकी * हर्षित भये शंभु सुरराय ॥
माँगो माँगो भागीरथजी * हम हैं अति प्रसन्न महराज॥
गंगा माँगी शिवशंकरसे * पूरण किये भक्त सब काज।
गंगा यमुना औरु सरस्वती * संगम कीन्ह प्रागमें आय ।
नाम त्रिवेणी सब जग जानै * मज्जन किये पाप नशि जाय
अक्षयवट है कल्पवृक्ष जहँ * अरु है भरद्वाज अस्थान ।
वेनीमाधव जहाँ विराजत * दर्शन जासु मुक्ति निर्वान ॥

काशी कनउजा कानपूर पुरु * सागर सेतु और हरद्वार।
गंगाजीके रेती जमुनामें * जारि जरि पाप होत सब छार।
शुभ वर दीजै गंगे माई * पूरण सबी कीजियै काम।
पाप नशावनि सन्त उबारनि * निस अक्काम देति सुरधाम।
दास तुम्हारो शरणागत है * सेवक जानि हिय हर्षायि।
वाणी ज्ञान बुद्धि वर दीजै * विनती करो शीश पद नायि।

श्रीहनुमानजी।

बहुरि सुमिरयें हनूमान पद * हैं जो महावीर संसार।
शोभा सिन्धु रूप गुण आगर * सागर सुयश बुद्धि आगार।
पूर्णभक्त श्रीरघुनन्दनके * जगत प्रसिद्ध व
अंजनितनय सन्त सुखदायक * लायक सुभट
रामदुलारे सीता प्यारे * लक्ष्मण प्राणदान गुणखान।
आश हमारी पूरण करिये * हे बलवन्त वीर हनुमान।
चरण तुम्हारके सुमिरनते * मनके सिद्ध होयँ सब काम।
नाम तुम्हारो साधु सन्तजन * सुमिरन करत आठहू याम।
मल्ल अखाडेमें जो सुमिरे * पावै विजय होय यश मान।
जो बल चाहै निज देहीमें * वेयोना रटै वीर हनुमान॥
जबहीं मेहर करैं बजरंगी * तुरतै होय मल्ल बलवान।
तासों ध्यान करो निशिबासर * रक्षा करहिं वीर हनुमान॥
तुम्हरे अखाडेमें माकत हो * हे बलवन्त अंजनी लाल।
निज सेवककी मनोकामना * पुरवो दास जानि सब काल।
गावत आल्हनकी जड़ माकसे * बरणों आल्हखंड म्हलायाम
भारत [illegible] पुरुषारथ * आगे सुनिये कथा [illegible]

सवैया।

रामको [illegible] कहा जगमें, सोइ रामको नाम रटै नर सोऊ।

रामके नाम तरी शबरी बहु तारे अजामिलसे खल भारी ॥
रामको नाम लियो हनुमान, हने बहु निश्चर लंक मँझारी ।
प्रेमते नेमते नाम रटै नित, रामको नाम बडो हितकारी ॥

तथा ।

श्रीगिरिजापतिको सुमिरों, सुमिरौं पुनि मैं गिरिजेश दुलारे ।
अंजनिपुत्र बली हनुमान, तुहीं सब भांतिनसों रखवारे ॥
इमि हिये जिनकों सब देवन, भक्तन कष्ट सदा निरवारे ।
मैं मतिमन्द यथामतिसों, सबके हित गावत वीरपँवारे ॥

कुंडलिया ।

मारो अपने क्रोधको, निश्चय शत्रु ठान ।
ऐसी समता धारिले, होवै मित्र जहान ॥
होवै मित्र जहान, कानि सब मानैं भारी ।
करि आदर सत्कार, बात पूँछैंगे सारी ॥
नारायण धरि ध्यान, बोल सबसे प्रिय बैना ।
होय सिन्धु भव पार, पाय जगमें सुख चैना ॥

इति सुमिरन ।

राजा परिमालका व्याह ।

महोबेकी पहिली लड़ाई ।

दोहा—श्रीगणेश गुरुपद सुमिरि, इष्टदेव मन लाय ।
आल्हखंड वर्णन करत आल्हा छंद बनाय ॥

सुमिरनी ।

ब्रह्म सनातनको सुमिरों मैं * सुमिरों पुनि अनंत भगवान
जग उपजायो जिन ब्रह्मा ह्वै * रक्षा करत विष्णु ह्वै जान॥
पुनि संहार करत शंकर ह्वै * महिमा जासु बरनि नहिं जाय
जब जब भीर परत भक्तन पर * तबतब विष्णु करत सहाय
दश अवतार प्रगट जगमाहीं * तिनके नाम कहौं दरसाय।
प्रथम मत्स्य अवतार धारिके * शंखासुरहि कीन्ह बध जाय
रक्षा करी सकल वेदनकी * दूजो कूर्म रूप भगवान ।
पीठि आपनी पर गिरि धारो * मन्थन कियो समुद्र महान
ह्वै वराह पृथिवी धारण करि * मारो हिरण्याक्ष बलधाम ।
यह अवतार तीसरो जानो * सुमिरत होयँ सिद्धि सब काम
चौथो रूप धरो प्रभुजीने * सो हम तुमहिं कहत समुझाय
वैर कियो है हिरणाकुशने * अरु प्रहलाद दीन्ह बँधवाय
ताहि समैया जगन्नाथजी * नरहरि रूप पहूँचे आय ।
उदर बिदारो हिरणाकुशको * जन प्रहलादहि लीन्ह बचाय
पंचम रूप धरो वामनको * भिक्षुक भये इंद्रके काज ।
तीन पैग पृथ्वी नृप बलिसे * मांगी जाय छाँडिके लाज॥
रूप बढायो पुनि प्रभुजीने * नापे सकल लोक मनलाय
सुमन वृष्टि भइ स्वर्गलोकते * हर्षित भये देव समुदाय॥

छठो रूप श्रीपरशुरामको * जिनको जानत सकल जहान।
कहँलग वरणौं तिनके बलको * मारा सहसबाहु बलवान ॥
पुनि जब भीर पडी सन्तनपै * पूरण रूप आप करतार ।
सरयू निकट अयोध्याजीमें * लीन्हों रामचन्द्र अवतार ॥
मारि ताडुका तारि अहल्या * तोरचो धनुष जनकपुर जाय
सिया व्याहि आये नगरी निज * गवने विपिन पिता रुख पाय
प्रभु सिय लषण सहित वन विहरे * सीता हरी निशाचर आय
पुनि गति कीन्ही गृध्रराजकी * कीन्हों मित्र सुकंठहि जाय॥
मारा बालि सिया सुधिकारण * भेजा हनूमान बलवान ।
श्रीहनुमान गये लंकाको * तहँपर मिले विभीषण जान॥
करि विध्वंस वाटिका तरुवर * मारा अक्षयपुत्र बलधाम ।
पुनि विवाद करि लंकापतिसे * जारी सकल लंक तेहि ठाम॥
हनुमत पहुँचे पुनि सीता ढिग * आज्ञा पाय चले प्रभुपास।
सब सुधि आय कही रघुवरसे * मनमें ठानि असुरका नाश
सेतु बँधायो रामचंद्रने * उतरे सिंधु सेन ले साथ ।
लंक जाय निशिचर संहारे * घननादादि हने रघुनाथ॥
मारा रावण पुनि रघुवरने * दै अभिषेक विभीषण साथ
क्रिया कराई पुनि रावणकी * चलिभे राम सिया ले साथ
यहिविधि नाशकियो असुरनको * हरिलो सकल भूमिको भार
पुनि प्रभु राजकियो पृथिवीपर * कीन्हों जगत सुयश विस्तार
बहुरि सतावन लगे असुरगण * साधु संत भये भयमान ।
मथुरामाहिं रूप गुणसागर * प्रगटे कृष्णचंद्र भगवान॥
जिनकी लीला सब जग जाहिर * जानत सबै वृद्ध अरु बाल
घटघटवासी अविनाशी हैं * गो द्विज रक्षक दीनदयाल
मारि पूतना हनि शकटासुर * बक अरु तृणावर्तको मार

गर्व नशायो इन्द्रदेवको * चक्र अँगुरीपर धरो पहार ॥
केशी व्योमासुर वृषभासुर * मारे कंस आदि खलसार ॥
रक्षा कीन्हीं पांडवकुलकी * सारथि बने भक्तके काज ॥
पुनि ह्वै बौद्ध याम धारण करि * राजत जगन्नाथ दरबार ॥
दशम रूप कल्की जग ह्वैहै * यह हम कहे दशौं अवतार ॥
नगर अयोध्याके मंडलमें * राजत नैमिषार वनराज ।
शौनकादिऋषिजहँश्रोतागण * बाँचत कथा सूत शिरताज ॥
गिरो विष्णुको चक्र मनोवे * पृथ्वीमध्य जानिशुभथान ।
जितने तीरथ हैं जग अन्तर * तिन सब तहाँ कीन अस्थान ॥
अपनो अपनो नाम उचारत * डारो नीर चक्रके माहिं ।
तबते चक्रतीर्थ सब गावत * राजत नैमिषारके माहिं ॥
एक प्रयागराज नाहिं आये * तासो पंच प्राग विख्यात ।
देवि ललिता जहाँ विराजे * तीरे बहीं गोमती मात ॥
बुडकी लेवै चक्रतीर्थमें * ताके सकल पाप नशि जायँ ।
दक्षिण चौकी है भैरवकी * ऊपर धर्मध्वजा फहराय ॥
नैमिषारते उत्तर मिश्रिष * पश्चिम योजन सात प्रमान ।
नाथगोकर्णशिवप्रसिद्धतहँ * मन अनुकूल देत वरदान ॥
पुनि मैं सुमिरौं उन विप्रनको * जे श्रुति नीति शास्त्र वक्तार ।
परम पियारे नारायणके * धारें विष्णु भक्ति उरहार ॥
सुजनसमाजनकोपुनिसुमिरौं * जे परकाज रहत तैयार ।
अड़े रात दिन उपकारे महँ * हरिगुण गहे बड़े दातार ॥
कड़े न होवें कबहूं स्वप्नमें * कबहुँ न पड़ें विषयके जाल ।
जड़े यथोचित निजधर्ममहँ * नाहीं हर्ष शोक कहु काल ॥
पुनि मैं सुमिरौं व्यासदेवको * जिनहिं अठारह रचे पुरान ।
सेतु बनायो भव उतरनको * करिहरिचरणकमलगुणगान

तेतिस कोटि देव सुमिरन करि * कहिहौं वीर पँवारो गाय।
कंठ विराजौ मेरे कंठेश्वर * जिह्वा बैठु शारदा माय ॥
जो जो अक्षर माता भूलूं * सो सो लिखियो जोर हमार।
तेरी नवैया पर चढ़ि बैठौं * खेवा खेइ लगैयो पार ॥
सुमिरि शीतला जाजमऊकी * मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार
छप्पन कलुआ बावन भैरों * चौसठि योगिनि लेउँ अधार
देवी सुमिरौं हिंगलाजकी * धौलागढ़में प्रगटीं आय।
जो अमनमें सुमिरन करिहैं * ताको सदा सिद्धि हुइ जाय॥
ऊँचे पर्वत भवन विराजै * अनहद बाजे बाजत द्वार।
घोरासी घंटा गर्जत जहँ * अरु मिरदंग झांझ झनकार॥
सकल शृंगार अंग विच सोहैं * सोहैं कंठ मोतियन हार।
छत्र विराजै शिर सोनेका * अरु चन्दाकी ज्योति लिलार।
हीरालाल जवाहिर बिच बिच * रतनन भूषण जड़े अपार।
सकल देवता शीश नवावैं * अस्तुति करें मातु दरबार॥
बरणों शारदा आल्हखंडकी * दाहिने होउ शारदा माय।
बड़ बड़ क्षत्री भये रणधीर * सुनि सुनि नाम जीव हुलसाय
करणी सुनि सुनि काँपे करेजा * धनि धनि जगतसिंधु औतार
[illegible] हिरणाकुशकी * जिनके बलको नाहिं सम्हार
त्रेता माहिं राम अरु लक्ष्मण * अंगद और वीर हनुमान ॥
परशुरामको महा पराक्रम * जानत सबहि लोक बलवान
कौरव पांडव भे द्वापरमें * जिन भारतमें युद्ध मचाय।
जन्म धारिके फिरि कलियुगमें * आल्हा आदिक नाम धराय
सिंहरूप है जगमें जन्मे * गढ़ टोकरमां दिये ढहाय।
बावन गढमें शाखा कीन्हों * भई सहाय शारदामाय॥
ऐसे वीर सदा नहिं उपजें * नाहिन शाखा देउँ सुनाय।

बावन गढको युद्ध बखानूँ * यारो सुनियो कान लगाय॥
किला बखानूँ कालिंजरको * जामें बसैं चँदेले राय।
ऐंठा पाग बँधे शिर ऊपर * कलँगी एक हाथ फहराय॥
कोट बखानूं गढ सिरसाको * जामें बसैं वीर मलिखान।
जासम योधा जग नाहिं हुइहै * ना गजमोतिनसी महरानि॥
वेटी बखानूँ वासुदेवकी * तिलका और दिवलदे मात
मलिखे सुलिखे आल्हा ऊदन * जन्मे कोखि जगत विख्यात
खाँडो बखानूँ चंदेलेको * जो सागरमें धर्यो पखार।
चारि वीर मछलाके वरणों * जिनपै विद्या अगम अपार
गुरू बखानूँ अमरनाथसे * जो चेलनकी करें सहाय।
भाला बखानूँ मैं जगनिकका * जामें उडत चिडी बिंध जाय
कछुक बखान करों बौनाको * जो कुडियलका चोर अपार
फतह बखानूँ तुनिआल्हाकी * नौसे झंडा चलत अगार॥
गाँसी बखानूँ बघ उदयाकी * पर्वत फोरि पार हुइ जाय।
घोडी बखानूँ नर मलिखेकी * चारो सुम्म स्वर्ग मंडराय॥
चुगल बखानूँ उरईवालो * जाको नाम माहिल परिहार।
करिके चुगुली परिमालकी * कीन्हों नाश क्षत्रियन क्यार॥
छोडि सुमिरनी आगे वरणों * हितसों आल्हखंड संग्राम।
जेठ दशहरासे वर्षाभरि * यारो पढो छोडि सब काम॥
कहूँ लडाई अब महुबेकी * यारो सुनियो कान लगाय।
जेहि विधि आये नगर महोबे * व्याहन गये चंदेले राय॥
जिनको राज महोबो कहिये * उनको सबो सुनाऊं हाल।
जैसे व्याही मल्हना रानी * औ बसिगये राजा परिमाल॥
राजा वासुदेव महुबेका * दूजो माल्यवंत जेहि नाम।
बडा लडैया महुबेवारो * राजा वासुदेव बलधाम॥

दो सुत कहिये वा राजाके * भोपति और महिल परिहार ।
मल्हना बेटी वासुदेवकी * तिलका और दिवलदे क्वाँरि ॥
तिनमें मल्हना ऐसी सुन्दर * सूरज चंदाकी उनहारि ।
तेज विराजै अंग अंगमें * ऐसी कोइ लखी ना नारि ॥
केहरि सम ताकी कटि कहिये * कंठ कोकिला सम उच्चार ।
चाल मराल नाक सुअनासी * नयना हिरनाके अनुसार ॥
उड़ी खबरिया देश देशमें * जगमें सुघर मल्हनदे नारि ।
बेटी राजा वासुदेवकी * औ महुबेकी राजकुमारि ॥
भूप चंदेला चंदेलीका * जिसको नाम कहत परिमाल ।
जितने जोधा भरतखंडमें * सो हनि हनि कीन्हें परिमाल ॥
सुनी खबरिया गढ़ महुबेकी * सुन्दरि कुँवरि महोबेक्यार ।
ऐसी सुन्दरि जग नाहीं कोइ * जैसी सुघर मल्हनदे नार ॥
सुनिके मोहित भये चँदेल * औ नरनाह राजा परिमाल ।
तुरत बुलायो चिन्तामणिको * मंत्री सुनो चित्तको हाल ॥
तुम तो हमरे शुभ मंत्री हो * दूजा पंडित राजसमाज ।
ऐसी सम्मति मोहिं बतावो * जाते सिद्धि होय यक काज ॥
इतनी सुनि चिन्तामणि बोले * मनको भेद कहो महराज ।
कौन अँदेशा है जियरामें * हुइहैं सभी तुम्हारे काज ॥
फिरिके राजा बोलन लागे * पंडित सुनो हमारी बात ।
राजा वासुदेव महुबेको * कन्या जासु जगत विख्यात ॥
मल्हना नाम तासुको कहिये * जाको रूप न वरणो जाय ।
रूप सुनतहीं वा कन्याको * सो हमरे मन गई समाय ॥
शोधि पत्तरा शकुन बतावो * जाते काम सिद्ध हो जाँय ।
सुनते पंडित शकुन बतायो * नीकी सायति दई बताय ॥

यह चिंतामणि ब्राह्मण थे ।

कूच कराय देउ महुबेको ❁ तुम्हरे होयँ सिद्ध सब काज ।
इतनी सुनतै भूप चँदेले ❁ बहुतै खुशी भये महराज ॥
तुरत नगाड़चीको बुलवायो ❁ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
तोप सजावो किला मसक्कनि ❁ जो किल्लेको देयँ गिराय ॥
हनू हकारनिको सजवावो ❁ सो चरखिनपर देउ धराय ।
पर्वत फोड़निको सजवावो ❁ जो पर्वतको देयँ गिराय ॥
राम लक्ष्मणा तोप सजावो ❁ जो आड़ेमें होय सहाय ।
हनू हँकारनि गर्भ गिरावनि ❁ सोऊ तुरतै लेउ सजाय ॥
गंगा जमुना तोपैं दोनों ❁ तिनको साजि करो तैयार ।
औ घन गर्जनिको सजवावो ❁ बारह कोश जाय दुदकार ॥
तोप कालिका अरु चंडी है ❁ सोऊ दोनों लेउ सजाय ॥
गाज सुनावनि बड़ि बड़ि तोपैं ❁ गोला मन पक्केको ख्याय ।
सबको चरखिन पर धरवावो ❁ लश्करमाहिं देहु पहुँचाय ॥
ग्राफक गोला जिनमें पड़ते ❁ उन तोपनको करो तयार ।
छोटी छोटी तोप सजावो ❁ जो लश्करके चलत अगार ॥
जौन दरोगा था हाथिनको ❁ ताको तुरत लीन्ह बुलवाय ।
हाथी सजावो कजरीवनके ❁ सिंहल द्वीपी लेउ सजाय ॥
चीनी हाथी नये मँगाये ❁ तिनको तुरत देउ सजवाय ।
बड़दन्ता औ छुट दन्ता सब ❁ हाथी तुरतै लेउ सजाय ॥
इकदन्ता औ दुइ दन्तापर ❁ हौदा धरो सोवरण क्यार ।
मंगुल भरा हाथी साजो ❁ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
खूनी हाथिनको सजवावो ❁ पायँन देउ जँजीर बँधाय ।
खोलि जँजीरें रणमें दीजे ❁ रजपूतनको जाय चबाय ॥
पहले गद्दा रेशमवारे ❁ ऊपर हौदा करो तयार ।

सोनेवारी धरो अँबारी ❀ जिनमें रतननका उजियार ॥
जल्द सजाय देउ हाथी सब ❀ इतनो करो जाय तुम काम।
टेरि दरोगा फिरि घोडनको ❀ चीरा कलँगी दई इनाम ॥
ताजी तुर्की घोडा साजो ❀ हंसपरेवा लेउ सजाय ।
रश्की मुश्की पचकल्यानी ❀ औ कुम्मैत लेउ सजवाय ॥
सब्जा सुरखाको सजवावो ❀ नकुला घोडा लेउ सजाय।
जीन धरावो मखमल्वारे ❀ औ ऊपरसे तंग कसाय ॥
गर्रा भर्रा खेतन साजो ❀ जो दुइ पायँनसे ठहराय ।
जलपातुर खेतनमें साजो ❀ जो पानीपर नाचत जायँ ॥
और काठियावाडी घोडा ❀ तुरतै साजि करो तैयार ।
काबुल औ कंधारी घोडा ❀ औ तातारी होयँ तयार ॥
अरबी दरियाई पानीके ❀ घोडा साजि करो तैयार ।
बारहजात कबूतर साजो ❀ रंग बिरंगे होयँ तयार ॥
रंग बिरंगे जीन धरावो ❀ दुहरे तंग देउ खिचवाय ।
ऊँटनवारेनको बुलवाया ❀ तिनको हुकुम दीन फरमाय।
सजो साँडिया मारवाडके ❀ बहुत मजीले लेउ सजाय ॥
अरबी ऊँट मझोले साजो ❀ औ करहलके लेउ सजाय ।
कछु मेवाडी सजो सांडिया ❀ जिनके जिमीं न लागें पायँ॥
बीकानेरी ऊँट सजावो ❀ उनपर गद्दा देउ डराय ।
ऊपर काठी चन्दनवारी ❀ सोन मढी करो तैयार ॥
तंग दुतंगा रेशमवारे ❀ देउ कसाय तुरत यहि बार॥
गले हमेलें सोनेवाली ❀ अरु चौगरमी बजनी धार ।
रथ सजवाय देउ हाथिनके ❀ औ घोडनके करो तयार ॥
ऊँटनवारे रथ सजवावो ❀ अरु बैलनके लेउ सजाय ।
हुक्म पायके सबै दरोगा ❀ लश्कर तुरत पहूँचे जाय ॥

हुक्म सुनाओ चन्देलको * जलदी फौज होय तैयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें * क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
सिगरी तोपें साफ कराईं * सो चरखिनपर दईं चढाय।
तिनके संग बहुतसे छकड़ा * तिनमें गोला दिये भराय ॥
फिरि बारूदकि पेटी लैके * सो छकडनमें दई भराय ।
भई सजावट है हाथिनकी * तिनकी सुनौ हकीकति आय
झूलें हैं जर्कसकी न्यारी * झालरि तिनमें दई लगाय ।
हौदा लटकत हैं रेशमके * झब्बा सोतिनके लगवाय॥
ऊपर हौदा धरे सुनहरी * औ चांदीके दिये धराय ।
तिनके ऊपर धरी अँबारी * तिनपर कलश दिये धरवाय॥
फिर सब घोडनको सजवाया * तिनपै जीन दिये धरवाय ।
शिरपर कलँगी है रतननकी * ऊपर तंग दिये खिचवाय ॥
तंग दुतंगा करे रेशमी * औ गलबीच हमेलैं आय ।
ऊंट सजाये विविध भाँतिके * सो सब तुरत भये तैयार ॥
सजी पालकी औ नालकी * सुन्दर गजरथ लिये सजाय।
खोलि कुठरिया जिरहनवाली * लम्बे चोक दीन डरवाय॥
पहिरी पहिरि भाइ रजपूता * जैसो जाके अंग समाय ।
पहले पहिरे सुर्ख कनातीं * ताके ऊपर कुल्ह कबार ॥
ताके ऊपर बख्तर पहिरे * जामें सांगि बिलोंचा खाय।
ताके ऊपर झीलम भारी * जामें टूटि जाय तलवार ॥
छप्पन छुरियाँ हानि हानि बाँधें * औ गुजरातीं बाँधि कटार।
अगल बगलमें दुइ पिस्तौलें * दहिने दुइ झूमें तलवार
जोडी बांधे कडाबीनकी * गोली टकाभरकी खायं ।
टोप झिलमिला धरि माथेपै * गोली लगत चीप हुइ जाय॥
जितनो गहनो रजपूतनको * ज्वानन पहिरि लीन हर्षाय।

खुला खजाना चन्देलीमें * मुंशी आय गया चौहान॥
दोनों हाथ उठायके बोल्यो * क्षत्रिय सुनो हमारी बात।
जिनहिं पियारी हैं घर तिरिया * सो सो तलब लेउ घर जाउ
जिनका गौना जल्दी आया * सो सब छोरि धरो हथियार
जिनहिं पियारी परम भगोनी * सो सो दुइ बाँधो तलवार॥
दूनी तलब लेउ हमसे तुम * औ रण खेलो जुझ अघाय।
इतनी सुनिके क्षत्री बोले * मुंशी सुनो नवल चौहान॥
जहाँ परसीना गिरै भूपको * तहँ दै देयँ रक्तकी धार।
कटि कटि शीश गिरै धरणीपर * उठि उठि रुंड करैं तलवार॥
सुनिके बातैं सब क्षत्रिनकी * मुंशी बहुत खुशी हुइ जाय।
जायके पहुँचा परिमालेपर * तुम सुनि लेउ चँदेलराय॥
लश्कर साजिरो चँदेलीको * जल्दी आपु होउ तयार।
इतनी सुनतै चन्देल तब * चिन्तामणिसे कह्यो सुनाय॥
जितने राजा यहँ बैठे हैं * सो सब चलैं हमारे साथ।
हुक्म सुनायो तब मंत्रीने * सानियाँ चले साथ नरनाथ
बड़ बड़ जोधा सब सँग लीन्हें * अपना सजै बीर परिमाल।
राजभीर छानी परिमालेकी * अरु तनतनसे बेर ससाल॥
पेंधि पैजामा मिसरूवालो * जामा पहिरि दुदामी क्यार।
अगल बगलमें दुइ पिस्तोलैं * बायें सिहिनि मूठि कटार॥
पाग सुनहरी सिरपर सोहै * कलगी मोतीचूरकी लागि।
साजि चँदेल जब ठाढ भये * मानो इन्द्र अखाड़े जायँ॥
बीरभद्र हाथी सजवाया * जो सब हाथिनका सरदार।
डारिके गद्दा मखमलवारो * सोने हौदा दियो धराय॥
सिढ़ी लगाई मलयागिरिकी * तापर चढ़ै राजा परिमाल।
राजा सजतै सबै सजि गये * शोभा छाय रही तेहि काल

चलिभो हाथी परिमालेको * अरु लश्करमें पहुँचो जाय।
तेज विराजै अंग अंगमें * मानों इन्द्र पहूँचे आय ॥
जबहीं देखो चन्देलको * क्षत्री सबै भये हुशियार।
हाथी चढैया हाथिन चढिगे * बाँके घोडनके असवार ॥
बड बड ठाकुर तोंदनके जे * सो पलकिनमें भये सवार।
सब्जै बाना सब्ज निशाना * सब्जै झंडी भई तयार ॥
सब्जै हाथी सब्जै घोडा * सब्जहि कमर धरे तलवार।
सब्जै पल्टनकी शोभा जहँ * हुइ गइ सब्ज भूमि सब झार
तोपैं झंडा खडे सुनहरी * अगणित ध्वजा रही फहराय
पचको झंडा तब दिखरायो * कूचको डंका दियो बजाय॥
लश्कर चलिभो चन्देलीसे * हाहाकारी बीतत जाय।
बारह जोडी बजै नगारा * धौंसा होत गोलमें जाय ॥
ढाढी करखा बोलन लागे * बिन बिन होवैं शब्द अपार
डगमग मानों धरती डोलै * केहिपर चढै चंद्र सरदार ॥
दबति अँधेरिया दलमें आवै * सूरज रहे धुंधिमें छाय।
मंजिल मंजिलके चलिबे महँ * महुबा धुरा दबायो जाय ॥
लश्कर पारगो तब भूपर * क्षत्रिन छोरि धरे हथियार।
जीन उतारि धरे घोडनके * हाथिन हौदा धरे उतार ॥
ऊँचे ऊँचे पर तंबू लगे * औ नीचेमें लगी बजार।
छूटी रसुइयाँ उमरायनकी * क्षत्रिन भोजन करे उतार ॥
राजा बैठे जब तम्बूमें * निज मंत्रीको लियो बुलाय
सम्मति करिके परिमालेने * लीन्हों कलमदान मँगवाय॥
लैके कागद कलमीवारो * पाती लिखन लाग तेहि बार
पहले लिखिके सन्नामाको * औ पाछेसे लिखी जुहार ॥
ताके पाछे लिखी हकीकति * पढिओ वासुदेव नरराय।

नगर चँदेलीका राजा हों * उपजो चंद्रवंशमें आय ॥
पिता हमारा है जग जाहिर * जाको नाम कीर्ति भूपाल ।
हमसे नाम रूप जाहिर है * कहियत सबै रजा परिमाल ॥
बेटी तुम्हरी जो मल्हना है * जाको रूप प्रगट जग मायँ ।
ताहि व्याहने हम आये हैं * जल्दी व्याह देउ करवाय ॥
हँसी खुशीसे व्याह रचावो * तो यश रहे धरणिमें छाय ।
जो कहुँ नाहीं मुखसे करि हो * महुबो गर्द दिहों करवाय ॥
खबरै करि देउ रंगमहलमें * सखियाँ करें मंगलाचार ।
जो इच्छा तुम्हरी लडिबेकी * तो तुम आय लडो सरदार ॥
इतनो हाल लिखो पातीमें * औ धामनको दइ पकराय ।
लैके पाती धावन चलि भो * औ महुबेमें पहुँचो जाय ॥
धामन आयो जब फाटकपर * दरमानीन कही सुनाय ।
कहांसे आये औ कहँ जैहो * अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोलो धामन दरमानीसे * फाटक जल्दी देउ खुलाय ।
पाती लाये चंदेलेकी * सो राजाको देहैं जाय ॥
खुलिगो फाटक तब महुबेके * धावन चला अगारू जाय ॥
देखी शोभा नगर राजकी * धामन बहुत खुशी हुइ जाय ।
बीच बजारोंमें पहुँचो जब * जहँ चौपडकी राशि अपार ।
हीरनकी ढेरी देखी तहँ * औ मोहरनकी राशि अपार
मूँगा मोती अगणित देखे * बैठे बडे बडे उमराय ।
लगी दुकानें बहु कपडनकी * शोभा वरणि करी ना जाय ॥
हलवाइनकी सजी दुकानें * जिनमें भांति भांति मिष्टान ।
कहँ लग वरणौं मैं बजारको * धामन मोहि गयो लखिथान
जाय पहुँचो राजभवन ढिग * जहँ दरबार महोबेक्यार ।
लगी कचहरी वासुदेवकी * भरमाभून लगो दरबार ॥

जाय साँड़िया दाखिल हुइगो * औ ड्योढ़ीमें पहुँचो जाय ।
सांकारि खैंचत साँड़िनी बैठि गइ * धामन उतरि परो हरगाय॥
लैके पाती धामन चलि भो * औ दरबार पहूँचो जाय ।
देखत शोभा राजसभाकी * मनमें बहुत खुशी हुइ जाय।
बारह द्वारीके बँगला हैं * तेरह द्वारीके दल्लान ।
खंभ अठारसीकी बैठक है * चौविस खंभ बनी चौपार ॥
आधे बँगलामें सब्जी है * आधे रही सफेदी छाय ।
सोने सिंहासन राजा बैठे * ऊपर चौंर ढुरैं रजगाह ॥
फर्श बिछे हैं कीनखाबके * जिनपर इतरनका छिरकाव
शीशी चटकरहीं बँगलामें * औ खुशबोइन उड़ै गुलाल॥
बड़े बड़े क्षत्री शूरमजीले * बैठे बड़े बड़े उमराव ।
शीश पगड़िया दक्खिनवाली * तुर्रा लौटि लौटि रहि जाय॥
बँधे बजुल्ला भुजदंडनमें * कंठा कंठ रहे छवि छाय ।
सिंहकि बैठक जाधा बैठे * एकते एक दइके लाल ॥
छाइ लालरी है नयननमें * ढिहुना नग्न धरे तरवार ।
ऐसी शोभा राजसभाकी * मानहु इन्द्र लोक दरबार ॥
नाच गान महिमा क्या बरणों * सुरपुर मनों अप्सरा गान ।
बन्दी भाट भनत विरुदावलि * करि रहे ढाढ़ी सुयश बखान
खिच सपिडारि बँगलामें * तबला ठुकै तालके साथ ।
बजें तँबूरा गन्धर्वनके * मुरली अधर मरोड़ा खात ॥
बजैं मँजीरा किट किट किट किट * डिर डिर डारा बजे सितार
जोड़ी बजरहिं अलगोजनकी * औ मुरचंग बजैं दो चार ॥
नचैं पतुरियाँ पर्वतवाली * जो चुटकिनमें तोड़ैं तान ।
जबहीं झाँके देत नैननकी * क्षत्रिन लगत कामके बान ॥
देखि तमाशा रहे शूर सब * बैठे तहँ अनेक भूपाल ।

यहि विधि शोभा देखि सभाकी * धामन मोहि गयो तत्काल
मात कदमसे कुन्नस करिके * धामन पाती दई चलाय ।
नजरि बदलि गइ बासुदेवकी * तुरतै पाती लई उठाय ॥
काढ़ि कतरनीसे बँद काटे * तुरत लिफाफा दियो चलाय।
पाती बाँचत पग्ले ह्वै गइ * गुस्सा गई देहमें छाय ॥
दहिने माहिल जो बैठे थे * सो राजासे लगे बतान ।
कहाँसे पाती यह आई है * ददुआ हाल देउ बतलाय ॥
बोले राजा तब माहिलसे * बेटा खबरदार हुइ जाउ ।
पाती आई चन्देलेकी * ब्याहन हेत मल्हनदे क्वाँरि॥
फौज सजावो तुम महुबेकी * औ लड़िबेको होउ तयार ।
इतनी बात कही माहिलसे * औ फिरि कागद लियो उठाय
लैके लिखनी कर कंचनकी * पाती लिखी तुरत नरमान।
उत्तर भेजत हौं चिट्ठीको * हमरे बचन करो परमान ॥
ब्याहु न हुइ है गढ़ महुबेमें * चाहे लाख चढ़ै परिमाल ।
कठिन मवासी गढ़ महुवा है * काहे शीश बिराजो काल ॥
चुप्पे लौटि जाउ अपने घर * नाहीं कटा देहुँ करवाय ।
जो नाहिं इच्छा हो लौटनकी * तो तुम खबरदार ह्वै जाउ ।
चिट्ठी लिखिके दइ धामनको * धामन लौटि गयो तत्काल॥
पाती दीन्हीं बासुदेवकी * औ पढ़ि लई राजा परिमाल
तुरत नगड़चीको बुलवाया * सोने कड़ा दियो डरवाय।
डंका बाजै मेरे लश्करमें * क्षत्री तुरत होयँ तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब फौजनमें * क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहले डंकामें जिनबन्दी * दूसरे बाँधि लिये हथियार॥
तिसरे डंकाके बाजत खन * क्षत्री फाँदि भये असवार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे * बाँके घोड़नके असवार ॥

कोइ नालकिन कोइ पालकिन * कोई गजरथ भये सवार।
मारू डंकाके बाजत खन * लश्कर चला चंदेले क्यार॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी * सो चरखिनपर दई चढाय
पहिया दुरकैं तिन तोपनके * करकति आवैं सिंदुरिया बान
नाहद जोडी बजै नगाडा * दलमें होन लाग घमसान।
नासे झंडाके हलकामें * हाथी चलो चँदेले क्यार॥
हियाँकि बातैं तौ यहँ छोडो * अब आगेको सुनो हवाल।
हुकम पायके माहिल भोपति * अपने लश्कर पहुँचे जाय॥
तुरत नगडचीको बुलवाया * औ यह हुकम दियो फरमाय
बजै नगारा हमरे दलमें * लश्कर साजि होय तैयार॥
डंका बाजो तब महुबेमें * क्षत्री सबै भये हुशियार।
तोप दरोगाको बुलवाया * सोने कडा दियो डरवाय॥
हुकम देदिया माहिल ठाकुर * सिगरी तोपैं लेउ सजाय।
हुकम पायके चला दरोगा * तोपैं सबी सजावन लाग॥
तोप भवानी और कालिका * गोला दो दो मनका खायँ।
हनू हँकारनि गर्भ गिरावनि * सो चरखिनपर दई चढाय
सूर्य लपक्कनि चन्द्र झपक्कनि * सोऊ तोपैं लईं सजाय।
बम्बकी तोपैं सब सजवाई * गोला तीनि कोसलौं जाय
किल्ला तोडनि बुर्ज मरोरनि * पर्वत ढावनि लई सजाय।
तोप संकटाको सजवाया * भैरो तोप लीन सजवाय॥
बिजुली तडपनि तोप सजाई * तोप लक्ष्मणा लई सजाय।
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी * सो चरखिन पर दई चढाय
हाथिन वारेको बुलवाया * सिगरे हाथी करो तयार।
बडे बडे हाथिनको सजवावो * छोटे पर्वतकी अनुहार॥
हाथी सजावो जे इकदन्ता * औ दुइ दन्ता लेउ सजाय।

मैन कुंज मलया धौलागिरि * औ भौंरागिरि लेउ सजाय ।
अंगद गजसे औ पंगदगज * भूरा सब्जा देउ सजाय ।
मुडिया हाथिनको सजवावो * मकुना हाथी लेउ सजाय ॥
हुक्म पायके चला दरोगा * हाथी सभी सजावन लाग ।
डारे गद्दा मखमल वारे * शोभा कछु कही ना जाय ॥
हौदा धरवाये चांदीके * औ सोनेके कलश धराय ।
डारिके रस्सा रेशमवारे * हाथी तुरत दीन्ह कसवाय ॥
एक एक हाथीके हौदामें * बैठे चारि चारि असवार ।
हीरा विराजैं अम्मारिनमें * झालरि लगीमोतियन क्यार
बोलि दरोगा घोडन वारे * सोने कलँगी दई इनाम ।
बडे बडे घोडनको सजवावो * औ जल्दीसे करो तयार ॥
हरियल मुश्की घोडा साजो * सब्जा घोडा लेउ सजाय ।
स्याह सपेदाको सजवावो * औ सबरंगा लेउ सजाय ॥
ताजी तुर्कीको सजवावो * अरबी घोडा करो तयार ।
कच्छी मच्छी घोडा साजो * करो समुद्रपारके त्यार ॥
लक्खा गर्रा और कुमैता * सुर्खा घोडा लेउ सजाय ।
श्यामकर्ण घोडा सजवावो * औ दरियाई लेउ सजाय ॥
चौयाँरि चाल्हि कबूतर साजो * पँचकल्यानी करो तयार ।
हुक्म पायके चला दरोगा * घोडा सबै किये तैयार ॥
चारि कठिलानी इन घोडनपर * ऊपर जीन दिये धरवाय ।
लगे तकसुआ हैं सोनेके * औ रेशमके तंग कसाय ॥
छोटी कलँगी मोतीचूरकी * सो कल्हनपर दई धराय ।
परी लगामैं तब कंचनकी * औ चांदीकी परी रकेब ॥
कहँ लग वरणौं इन घोडनको * शोभा एक न वरणी जाय ।
ऊँट दरोगाको बुलवाया * सगरे ऊँट होयँ तैयार ॥

चला दरोगा ऊँटन वाला * सगर ऊँट सजावन लाग ।
सजे साँड़िया मारवाड़के * बहुत सजीले लिये सजाय ॥
कछु मेवाड़ी सजे साँड़िया * जिनके जिमीं न लागें पांव ।
अरबी ऊँट मझोले साजे * औ करहलके लिये सजाय ।
बाकानेरी ऊँट सजाये * जिनपर गद्दा दिये डराय ।
साजि गइ काठी सब ऊटन पर * सगरे ऊंट भये तैयार ।
रथ सजवाये सब माहिलने * फिर क्षत्रिन ढिग पहुँचे जाय ।
हाथ उठाये माहिल बोले * क्षत्रिउ खबरदार ह्वै जाउ ॥
जितने क्षत्री हमरे दलमें * सगरे बांधि लेयँ हथियार
शूर बघेले और चँदेले * औ जनवार डोडियाख्यार ।
औ रघुवंशी सूरज वंशी * चन्द्रवंशी होयँ तयार ।
हाडावाले बुंदेला वाले * औ राठौर सजें तत्काल ॥
तोमर ठाकुर तुमरधारके * झारा मैनपुरी चौहान ।
सजैं भदावरवाले क्षत्री * औ सजि जायँ यादवाज्वान
मारवाडके क्षत्री साजें * औ परिहार गुटैया टार ।
सब गहलौत और कछवाहे * क्षत्री यादव होयँ तयार ॥
हवशी औ दुर्रानी साजें * जो सनइनको करें अहार ।
हुक्म पायके सबरे क्षत्री * तुरतै होन लगे तैयार ॥
कुरी छतीसो सब सजवाई * डंका होन लाग तेहि बार ।
हाथी चढैया हाथिन चढिगे * बांके घोडनके असवार ॥
कोइ रथपर कोई ऊँटपर * कोई नलकिन भये सवार ।
बडे बडे तोंदनके जे क्षत्री * वे पलकिन पर भये सवार ॥
अलबेले सांडिन पर चढिगे * कमरस्से दुइ बांधे तलवार ।
पैदल पल्टन और रिसाले * सब साजि गये सहुविया झार ।
जितनो लश्कर वासुदेवको * दुइ घंटामें भयो तयार ।

धौंसा बाजा तब लश्करमें * बारह कोस जाय धधकार॥
सिंहा हार्थीको सजवाया * तापर चढे माहिल परिहार।
सज्जा हाथी त्यार करया * भोपति तापर भये सवार॥
हाथ उठाये माहिल बोले * क्षत्रिउ सुनो बात यहि काल
पानी रखियो तुम महुबेको * अपने माय बापके लाल॥
जो मरि जैहो रणखेतनमें * तुरते मिलै स्वर्गमें धाम।
जो मरि जैहो खटिया परिके * कलिमें कोइ न लैहै नाम॥
बोले क्षत्री तब माहिलसे * तुम सुनि लीजो राजकुमार
कटि कटि शीश गिरें धरतीपर * उठि उठि रुंड करें तलवार
निमक तुम्हारो हम खाया है * सो हाडनमें गयो समाय।
पांव पिछारू हम ना धारें * चाहे प्राण रहें की जायँ॥
इतनी सुनिके माहिल भोपति * कूचको झंडा दियो फिराय
लश्कर चलिभो गढ महुबेको * दलमें रही लालरी छाय॥
पांच लाखमें माहिल चलिभे * हाहाकारी बीतति जाय।
धूरि उडानी आसमानलों * सूरज रहे धूंधिमें छाय॥
रणके बाजे बाजन लागे * झमन लागे लाल निशान।
पाइया दुरके उन तोपनके * तडकत जायँ सिदूरिया बान
छम छम छम छम बजें पैजनी * दमके अष्ट धातुकी नाल
सररररर जे रथ दौरें * रब्बा चलें पवनके साथ॥
बारह जोडी बजें नगाडा * बाजे तुरुही औ कंडाल।
इततें लश्कर है माहिलको * उततें सेन रजा परिमाल॥
दोऊ सेना दल बादलसों * पहुँची समरभूमिमें जाय।
कहँ लग बरणों तिन फौजनको * कायर देखि देखि भय खायँ

सवैया।

युद्धको साज बनो दुहुँ ओरसे,वीरबली रणधीर सयाने।

बादलसों दल साजि चढे, तेहि औसरकी छबि कौन बखाने
शूर महाबलवान सबै, जिनको लखि कालहु हारि पराने ।
मैं मतिमन्द कहा वरणौं, तेहि सैन्यको कायर देखि डराने

कायर दुरकत इत उत डोलैं * नौ कोठनमें छुटैं परान ।
जाय मिहरियनसों बतरावैं * अब कस होय मोर कल्यान
करी चढाई परिमालेने * चन्देलीको जो मरदान ।
बडो लडैया जोरावर है * जेहिकी जग जाहिर तलवार
बोली मिहरियाँ सुनिलेउ सैयाँ * लहँगा पहिरिलेउ घरमाहिं
चुरियाँ हाथनमें पहिरो तुम * बिछिया पहिरि पाँवके माहिं
आठ दिनाको बनौ मिहरिया * घरमें रहौ घूँघटा काढि ।
फौजैं चली जायँ हिअनासे * निकरो आप मूछ फटकारि
बात सुनतही बनियाँ छिपिगे * जिनके जिया रहे नादान ।
दोनौं फौजनके अन्तरमें * रहिगा आध कोस मैदान ॥
हाथी बढाओ तब माहिलने * सन्मुख जाय दीन ललकार
केहिकी माता नाहर जाया * केहि रजपूत लीन अवतार॥
कौन बराबरिके हमरे हैं * कौने धुरे दबाओ आय ।
इतनी सुनते चन्देलने * अपनो हाथी दियो बढाय ॥
बोले राजा तब माहिलसे * सुनलो बासुदेवके लाल ।
देश हमारा चन्देली है * हमरा नाम राजा परिमाल॥
बहिनि तुम्हारी ब्याहन आये * जल्दी ब्याह देउ करवाय ।
बिना बिआहे हम ना जैहैं * चाहो प्राण रहैं कै जायँ ॥
इतनी सुनिकै माहिल बोले * चुप्पे लौटि जाउ घरजाय ।
धोखे रहियो ना काहूके * सबके मूँड दिहौं कटवाय ॥
यह सुनि बोले तब चंदेले * माहिल सुनो बात मनलाय ।
जिसकी बेटी नीकी देखें * तुरते भाँवरि लेयँ डराय ॥

डंड बाँधि लेयँ वा क्षत्रीको ❀ मंगहि डोला लेयँ खँदाय ।
इतनी सुनिकै माहिल जरिगे ❀ नैना अग्नि ज्वाल ह्वै जायँ
बोले माहिल चन्देलेसे ❀ तुमरो काल रहो नियराय ।
मगे न बचिहौ रणखेतनमें ❀ अब तुम खबरदार हुइजाउ
माहिल हाथीको लौटारयो ❀ अपने लश्कर पहुँचे आय
तोप दरोगाको बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दीन फरमाय
बत्ती देदेउ सब तोपनमें ❀ इन पाजिनको देउ उड़ाय
लगे मोरचा तब तोपनके ❀ कछु तारीफ करी ना जाय ॥
लैके थैली बारूदनकी ❀ सो तोपनमें दई डराय ॥
गोला डारि दिये तोपनमें ❀ सुम्मा मारे बारंबार ॥
रंजक भरि दइ तब प्यालनमें ❀ ऊपर बत्ती दई लगाय ।
धुआं उड़ानो आसमानलों ❀ सूरज रहे धुंधिमें छाय ॥
दोउ ओरमें दगी सलामी ❀ अब कुछ रहा ठिकाना नायँ
अररर गोला छूटन लागे ❀ कहकह करें अगिनियां ज्वान
सननन सननन गोली छूटीं ❀ सररर तीरनकी आवाज ।
दोनों फौजनका संगम भो ❀ जहँना परी तीरकी मारु ॥
गोला लागे जहि हाथीके ❀ दलमें डाँकि डाँकि गहिजाय
गोला लागे जिन ऊँटनके ❀ दलमें गिरें चकत्ता खाय ।
गोला लागे जिन घोड़नके ❀ चारों सुम्म गर्द हुइ जायँ ।
गोला लागे जिन क्षत्रिनके ❀ तिनकी तव ना स्वर्ग मड़राय
बंबका गोला जिनके लागे ❀ सो लत्तासे जायँ उड़ाय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागे ❀ तिनके हाड़ मास छुटिजायँ।
छोटी गोली जिनके लागे ❀ मानो गिरहू कबूतर खाय ।
बानको डंडा जिनके लागे ❀ तिनके दुइ खंडा हुइजायँ॥
एक पहर भरि गोला बरसो ❀ कोइ रजपूत न टारे पाँव ।

तोपें धँधैं लाली हुइगईं * ज्वानन हाथ धरे ना जायँ
चढ़ी कमनियाँ पानी हुइगईं * चुटकिनके गे मास उड़ाय
मारु बन्द भइ तब तोपनकी * पैदल पलटन बढ़ी अगार॥
लई बँदूकैं तब ज्वाननने * लैके रामचन्द्रको नाम ।
तुरतै चलन लगीं बन्दूकैं * रणमें होन लाग घमसान॥
रिमझिम गोली बरसन लागीं * मानों मघाबूँद झरिलागि ।
फुँकें पलीता बन्दूकनके * दागे कड़ाबीन हथियार ॥
गोली लागे जिन हाथीके * तुरतै तीन कदम हटि जाय ।
गोली लागे जेहि ऊँटके * सो गिरि परै धरनि भहराय
गोली लागे जेहि घोड़ाके * सो गिरि परै चकत्ता खाय
लागै गोली जेहि मानुषके * ताको काल होय तत्काल॥
जिनका काल नहीं है रणमें * उनके गोली न अनियाय ।
जिनका काल लिखारेतनमें * सन्मुख लगै निशाना जाय॥
चारि घड़ी बन्दूकें बाजीं * ज्वानन हाथ सुस्त पड़जायँ
झुके सिपाही दोनों दलके * रहि गो पाँच कदम मैदान॥
साँगें चलन लगीं दोनों दल * ऊपर बर्छिनकी दइ मारु।
छूटें पिचिक्का जे लोहुनके * औ बुचकारिन बोलें बार
बूड़ि जुल्फियाँ गईं लोहुनमें * औ चुचुवात फिरें असवार
चारि घड़ीभरि बजो साँगड़ा * भारी भइ बर्छिनकी मारु
भाला टूटिके दोनों हुइगये * लटुआ कटि बर्छिनके जायँ
यहाँ लड़ाई पाछे परिगइ * अब आगेको सुनो हवाल॥
दोनों फौजनके अन्तरमें * रहिगो डेढ़ पेग मैदान ।
हल्ला करि दो तब क्षत्रिनने * ज्वानन खैंचि लई तलवार॥
खटखट तेगा बोलन लागो * बोलै छपक छपक तलवार॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती * ऊना चलै विलायत क्यार॥

तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वाना॥
पैदलके सँग पैदल भिरिगे ❋ औ असवारनसे असवार॥
हौदाके सँग हौदा भिडिगये ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत।
सात कोसलौं चले शिरोही ❋ चारों ओर होय घमसान॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगे ❋ उनके दुइदुइ पैग असवार।
विसे विसे पर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहारि॥
कल्ला कटिगये जिन घोडनके ❋ धरती गिरैं करौंटा खाय।
कटि भुजदंडैं रजपूतनकी ❋ चेहरा कटैं सिपाहिनक्यार
कटैं भुसुंडा जिन हाथिनके ❋ भुइँमें गिरैं भरहरा खाय।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार॥
पडे दुशाला जो लोहुमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार।
ढालैं डारी हैं लोहुमें ❋ मानो कछुआसी उतरायँ॥
पडी बंदूकैं हैं लोहुनमें ❋ मानो नाग रहे मन्नाय।
डारे घेहा रणमें लोटैं ❋ जिनके प्यास प्यास रट लागि
मुहर कटोरा पानी हुइगो ❋ रणमें कोइ न बूझै बात।
कोई रोवत है तिरियनको ❋ बेडा कौनु लगै है पार॥
कोई रोवत है लडिकनको ❋ कोई पुरिखनको चिल्लाय।
गोल फूटिगो भरो परिगो ❋ लश्कर अनी बदल हुइजाय
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय।
दुइ दुइ फेंटनके बँधवैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह॥
भिडहा आये चन्देलीके ❋ सो लश्करमें दिये छुडाय।
भेड बकारियनकी गिनती नहिं ❋ जे मनइनको करैं अहार॥
छाँडि नौकरी हम माहिलकी ❋ वनकी बेंचि लकरियाँ खायँ
पाँच लाखसे माहिल आये ❋ रहि गये तीनि लाख असवार
दाबे हाथी माहिल आये ❋ औ लश्करमें पहुँचे आय।

मुर्चन मुर्चन माहिल डोलैं ❋ सबसे कहैं पुकारि पुकारि॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भाई लगौ हमार।
भागि न जैयो कोइ समुहेसे ❋ बुडि है सात साखिको नाम
मानुष देही यह दुर्लभ है ❋ यारौ जन्म न वारंवार ।
पात टूटिके ज्यों तरवरसे ❋ भैयो लौटि न लागे डार ॥
यह दिन काहिबेको रहिजैहै ❋ हमरी लाज तुम्हारे हाथ ।
खटिया परिकै जो मरिजैहो ❋ कलिमें कोइ न लैहै नाम ।
जो मरि जैहौ रणखेतनमें ❋ ह्वैइ है अमर तुम्हारो नाम ।
झुके सिपाही महुबेवारे ❋ फिरिके करन लगे तलवारि
झुके सिपाही चन्देलेके ❋ रणमें कठिन करें तलवार ।
भगे सिपाही माहिलवाले ❋ ना देहीकी रही सम्हार ॥
भजत सिपाही माहिल देखे ❋ अपनो हाथी दियो बढाय।
बोले माहिल परिमालैसे ❋ तुम सुनिलेउ चँदले राय ॥
पाँच पाँच रुपयाके नौकर ❋ काहे डारिहो मूंड कटाय ।
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ दुइमें एकु आँकु रहि जाय॥
यह मनभाई चन्देलेके ❋ अपनो हाथी दियो बढाय।
खैंचि शिरोही लइ माहिलने ❋ सो राजापर दई चलाय ॥
ढाल अडाई परिमालेने ❋ उनके अंग न आयो घाव ।
तीनि शिरोही गहि गहि मारीं ❋ औ माहिल मन सोचन लाग
गुर्ज उठायो फिरि माहिलने ❋ सो राजापर दियो चलाय ।
गुर्ज बचायो परिमालैने ❋ दहिने भई शारदा माय ॥
लई कमनियाँ तब माहिलने ❋ गाँसी सेर भेरकी खाय ।
फोंक जमावैं सिंदोहीकी ❋ औ गजवेलिकी गाँसी लागि॥
खैंचि कमनियाँ भुज दंडनपर ❋ तीवा मर मर होय कमान।
चेहरा डाटो चन्देलेको ❋ समुहें छाँडि कैवरी दीन्ह॥

हाथी हटिगो चंदेलेको ❀ उनको राखि लीन्ह भगवान।
माहिल सोचे अपने मनमें ❀ हैं यह महावीर बलवान ॥
बोले माहिल चन्देलेसे ❀ तुम सुनिलेउ राजा परिमाल।
अबहूं लौटि जाउ चन्देली ❀ तौबा बचो तुम्हारो काल ॥
सुनि हँसि बोले चंदेले तब ❀ तुम सुनिलेउ माहिल परिहार।
धर्म क्षत्रियनके नाहीं हैं ❀ जो रण चढिके हटें पिछार॥
जो हम लौटिजायँ चन्देली ❀ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय।
चौथी उचौनी औरो करिलेउ ❀ नाहीं सर्ग बैठि पछिताउ ॥
सुनतै माहिल सांगि उठाई ❀ सो हाथन पर तौलन लाग।
दुचितो देखो जब राजाको ❀ ऊपर सांगि धमक्की जाय ॥
हाथी हटायो पीलवानने ❀ नीचे सांगि गिरी अरराय।
तब ललकारो चन्देलने ❀ माहिल सुनो बात मन लाय॥
उसारिन खेलो समर खेतमें ❀ जैसे कुवाँ भरे पनिहारि।
चारि उचौनी तुम कर लीन्हीं ❀ अब लैलेतै राज हमारि ॥
लई शिरोही परिमालेने ❀ गज मस्तकपर दई चलाय।
मस्तक मारो तब हाथीको ❀ औ माहिलको लियो बँधाय॥
माहिल बँधते परले हुइगइ ❀ भोपति हाथी दियो बढाय।
कौने बाँधो है माहिलको ❀ सो समुहे ह्वै देइ जवाब ॥
इतनी सुनके चंदेलने ❀ अपनो हाथी दियो बढाय।
हमने बाँधो है माहिलको ❀ तुम सुनलेउ जगनली राय॥
बहिनी व्याहि देउ जलदीमे ❀ काहे रारि बढाई आय।
इतनी सुनिकै भोपति बोले ❀ काहे भरम गमायो आय ॥
जितने आये चन्देलीसे ❀ सबके मूड लिहौं कटवाय।
बोले चन्देले तब भोपतिसे ❀ भोपति सुनो हमारी बात ॥
विना विवाहे हम ना जैहैं ❀ चाहे प्राण रहैं कै जायँ।

बावन गढ हमने वश कीन्हें ❋ जीते बडे बडे सरदार ॥
जो आधीनी करै हमारी ❋ जगमें सोई मित्र हमार ।
यह सुनि भोपति बोलन लागे ❋ काहे वृथा करत तकरार ॥
अब बकवाद करत याहीते ❋ शिरपर आयो काल तुम्हार ।
अब तुम सम्हारि जाउ हौदामें ❋ हमरे देखि लेउ हथियार ॥
सुमिरन करके नीलकंठको ❋ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ।
करिके सुमिरन जगदंबाको ❋ भोपति खैंच लई तरवार ॥
करी जडाका जब समुहेपर ❋ वायें उठी गैंडकी ढाल ।
टूटि शिरोही गइ जगनिककी ❋ मनमें सोचि सोचि रहिजाय
गुर्ज उठायो तब जगनिकने ❋ सो राजापर दियो चलाय ।
हाथी हटिगो चन्देलेको ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरगाय ॥
गाफिल करिके तब जगनिकको ❋ राजा तुरत लियो बँधवाय ।
जितनी फौज हती महुवेकी ❋ सो सब रेनबेन हुइ जाय ॥
तुरत साँडियाको बुलवाया ❋ पाती लिखी रजा परिमाल ।
लिखिके पाती यह भेजनहों ❋ पठियो वासुदेव भूपाल ॥
माहिल भोपति तुम्हरे बेटा ❋ सो हम बाँधि लीन्ह रणमायँ ।
बेटी ब्याहि देउ जल्दीमे ❋ अब ना राखो देर लगाय ॥
इतनी लिखि दइ है चिठियामें ❋ सो धामनको दई गहाय ।
पाती लैके धामन चलिभो ❋ औ महुबेमें पहुँचो जाय ॥
लगी कचहरी मालवन्तकी ❋ धामन वहाँ पहुँचो जाय ।
सात कदमसे कुन्नस करिके ❋ पाती गदी दई चलाय ॥
खोलिके पाती राजा बाँची ❋ मनमें सोचि सोचि रहि जायँ ।
लौटि जवाब लिखो चिट्ठीको ❋ पाढियो जाहि चंदेले राय ॥
काठिन मवासी गढ महुबा है ❋ सधि ब्याह होनको नायँ ।
उलटे लौटि जाउ चन्देली ❋ क्यों शिर काल रहा मंडराय ॥

इच्छा रहिगइ जो लडनेकी * तौ तुम सावधान हुइ जाउ॥
लैके पाती धामन पहुँचो * पाती राजै दइ पकराय॥
खोलिके पाती पढी चन्देले * अपनो हुक्म दीन्ह फरमाय
डंका बाजै हमरे दलमें * लश्कर तुरत होय तैयार॥
बजो नगाडा तब लश्करमें * सेना तुरत भई तैयार।
राजा वासुदेव महुबेमें * अपना लश्कर लियो सजाय
घडी चारि केरे अरसामें * सजिगे तीनि लाख असवार
दुइ हजार तोपें सजवाईं * साजे हाथी पाँच हजार॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे * बाँकि घोडनके असवार।
समर भयंकर हाथी साजा * तापर चढे वीर सरदार॥
कूचको झंडा तब फिरवाया * लश्कर चला महोबे क्यार
इतते लश्कर वासुदेवको * उतते फौज चँदेले क्यार॥
दोनों फौजनके अन्तरमें * रहिगो आठ खेत मैदान।
हाथी बढायो मालवन्त तब * आगे जाय दई ललकार॥
कौन शूरमा चन्देला है * जो यह धुरा दबायो आय।
किसने बाँधा है माहिलको * औ जागनिको लियो बँधाय
इतनी सुनिकै परिमालेने * अपनो हाथी दियो बढाय
हमने बाँधो है माहिलको * औ भोपतिको लियो बँधाय
जलदी ब्याहि देउ बेटी तुम * नाहीं महुबो लेउँ लुटाय॥
डंड बाँधिके ब्याह कराऊँ * जोरावरिसे लेउँ बिआहि।
यह सुनि बोले वासुदेव तब * नहिं हम करी सगाई जाय
अपने मनको ब्याह रचत हौ * शिरपर काल विराजो आय
मनके बाढिया तुम राजा हौ * नाहीं बोलत बात सम्हारि।
ब्याहु न हुइ है गढ महुबेमें * चाहे कोटि करो परकार॥
इतनी सुनतै कही चँदेले * सुनियो वासुदेव सरदार।

नहीं सगाई तुमने कीन्हीं ❀ पै हमरे कुला यहै व्योहार॥
कौन सिंहको न्यौता भेजत ❀ वनवन मारत खात शिकार
समय देखि क्षत्री व्याहत हैं ❀ तहँ नाहिं काम सगाई क्यार
जेहिकी बेटी समरथ देखैं ❀ उजगी रूप राशि करतार।
बल्कारि तासों व्याह रचावैं ❀ क्षत्री वरैं तेगकी धार॥
इतनी सुनते वासुदेवके ❀ गुस्सा गई देहमें छाय।
हुक्म दे दिया तब छत्रिनको ❀ तोपन आगी देउ लगाय॥
वेगि उडावो इन राजिनको ❀ टट्टुआ टायर लेउ छिनाय
आगि लगाइ दई तोपनमें ❀ धुअँना रहो सरग मँडराय॥
अन्धकार लश्करमें छाया ❀ सूरज रहे धुंधिमें छाय।
बडि बडि तोपें अष्टधातुकी ❀ सो लश्करमें गर्जन लाग॥
परै दनाका हैं तोपनके ❀ कहकह करैं अगिनियाँ बान
सरर्र सरर्र गोली छूटैं ❀ सननन परी तीरकी मार।
तीरन मारैं जे कमनैता ❀ गोलिन मारैं बरकन्दाज।
गोला लागै जेहि हाथीके ❀ दलमें चिघारि चिघारि रहि जाय
गोला लागै जौन ऊँटके ❀ सो गिरिपरै चकत्ता खाय।
गोला लागै जिन घोडनके ❀ चारों सुम्म गर्द हुइ जायँ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❀ मानो गिरह कबूतर खाय।
जिनके लागै तीरकि गाँसी ❀ क्षत्री गिरैं करोटा खाय॥
जिनके लागै बानको डंडा ❀ तिनके दुइ खंडा हुइ जायँ।
दोउ ओरसे गोला छूटैं ❀ चारों ओर परो घमसान॥
तोपैं धैंधैं लाली हुइगई ❀ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ।
चढी कमनियाँ पानी हुइगई ❀ चुटाकिनके गे मास उडाय॥
तोपैं छाँडि दई ज्वाननने ❀ औ बन्दूकैं लईं उठाय।
मननन मननन गोली छूटैं ❀ मानो मघा बूंद झर लाय॥

सननन सननन सहटी छूटैं ❀ काली नागिनसी मन्नायँ ।
बान कुहनिया छूटन लागे ❀ औ मुलतानी चलै कमान॥
जैसे नागिनं घुसैं गुफामें ❀ तैसे धँसैं अंगमें घाय ।
जेहि हाथीके गोली लागै ❀ दलमें डौंकि डौंकि रहि जाय॥
जैसे वज्र गिरै पर्वतपै ❀ औ धरतीमें जाय समाय ।
जौन ऊँटके गोली लागै ❀ पसुरी तोरि पार ह्वइ जाय॥
जिस घोडाके गोली लागै ❀ चारों सुम्म गर्द हो जाय ।
जिस पैदलके गोली लागै ❀ सो गिरि परै चकत्ता खाय॥
धारि बन्दूकैं दईं ज्वाननने ❀ कमरसे खैंचि लई तलवार ।
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै विलायत क्यार॥
तेगा चटकैं बर्दवानके ❀ कटि कटि रुंड गिरैं भहराय ।
पैग पैगपर पैदल गिरिगे ❀ उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसेबिसे पर हाथी डारे ❀ छोटे पर्वतकी उनहार ।
ऐसो समर भयो महुबेमें ❀ जो बहि चली रक्तकी धार॥
मूडनके तहँ ढेर लागिगे ❀ लोथिन ऊपर लोथि दिखाय।
पगिया डारी हैं लोहूमें ❀ मानौं कमल फूल उतरायँ॥
परे दुशाला हैं लोहूमें ❀ मानौं मच्छ कच्छ उतरायँ।
डारे घैहा रणमें लोटैं ❀ जिनके प्यास प्यास रट लागि॥
दोनों फौजैं संगम ह्वइगईं ❀ चारो ओर चलै तलवारि ।
हलुके घायनके शहिजादे ❀ उठि उठि फेरि करैं तलवारि॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
झुके सिपाही चन्देलेके ❀ सबकी कटा दई करवाय ।
ऊंचे खाले कायर भागे ❀ जे रणदुलहा चले बराय ॥
द्वैद्वै कलँगीके बँधवैया ❀ तिन नारेनकी पकरी राह ।
प्राण पियारे जिनको लागैं ❀ रणमें डारि देयँ हाथियार ॥

ऊपर मुर्दा नीचे क्षत्री ❋ परिगे हाथ पाँव फैलाय ॥
जो कोइ हाथी रणते विचलै ❋ सो मुर्दनपर धारि देइ पाँव ।
विनही मारे वे मरिजावैं ❋ जो मुर्दनमें रहे छिपाय ॥
भजे सिपाही महुबेवारे ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
भजत सिपाही राजा देखे ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ॥
हाथ उठाये राजा डोलै ❋ तुम सुनिलेउ महुबिया ज्वान
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भाई लगो हमार ॥
युद्ध जीतिहौ जो यहि रणमें ❋ सोने कडा दिहैं डरवाय ।
दियो बढावा वासुदेवने ❋ लौटन लगे महुबिया ज्वान ॥
झुके सिपाही फिरि महुबेके ❋ दोनों हाथ करैं तलवार ।
झुके शूरमा चन्देलेके ❋ अंधाधुंध करैं तलवार ।
वर्षा होय रही लोहूकी ❋ सूझैं लाल लाल असवार ॥
सावन भादों ज्यों जल बरसे ❋ त्यों रण रक्त मूशला धार ।
रणमें नहरैं बहि निकरी तहँ ❋ औ शिर कमल तुल्य उतरात ॥
लाशैं बिछगइ हैं धरतीमें ❋ घायल लोट पोट गहिजात ॥
घोडे नहाय गये लोहूमें ❋ लोहू बूडिगई तलवार ।
लाली फैलि रही सब रणमें ❋ मानो फूलि रही फुलवार ॥
मारामार परी रण भीतर ❋ रणमें बीति रहा घमसान ।
मुसलमान कह अल्लह अल्लह ❋ हिंदू नाम लेन भगवान ॥
खुदा खुदा तो सैयद कहते ❋ तोबा तिल्ला करैं पठान ।
कायर भागि गये लश्करसे ❋ अपनी छाँडि छाँडि तलवार ॥
छैल चिकनियाँ भजे प्राण लै ❋ जो नित तकैं पराई नार ।
यह गति होगइ है लश्करकी ❋ बेडा कौन लगावै पार ॥
आधे ज्वान कटे महुबेके ❋ उनके आध चँदेले क्यार ।
बडे लडैया चन्देलीके ❋ दोनों हाथ करैं तलवार ॥

भाला घुमावैं नागदौनिके ❋ जिनमें उडत चिडी बिंधजाय।
साँगैं चमाकि रहीं लश्करमें ❋ नंगी चमक रही तलवार॥
इक मोहरेपर राजा दबिगये ❋ मारामार करैं परिमाल।
इक लँग पंडित चिन्तामणि हैं ❋ इक लँग डटा नवल चौहान
एक अलँग पर हैं चन्द्राकर ❋ भाई जौन चँदेले क्यार।
चारि ओरसे चारौ डटिगये ❋ सारी पलटन दीन्ह झुकाय॥
जैसे भिडहा भेडन पैठै ❋ जैसे सिंह बिडारै गाय।
जैसे लडिका गवडी खेलैं ❋ गिनि गिनि धरैं अगारू पायँ
तैसेइ छूटे चन्देलके ❋ भागे सबै मह्वुविया ज्वान।
इकला वासुदेव महुवेका ❋ सो रहिगया समर मैदान॥
और महुविया शूर सिपाही ❋ ना कोइ रहा खेतके माहिं।
तोप मोरचा छीनि लिया है ❋ अबकोइ धीर धरैया नाहिं॥
हाथी बढायो वासुदेव तब ❋ चन्देले तर पहुँचे जाय।
तहँ ललकारो वासुदेवने ❋ तुम सुनिलेउ चँदेले राय॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ दुइमें एकु आकु रहिजाय।
पहिली उचौनी तुम करि लीजो ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ
इतनी सुनि चन्देले बोले ❋ तुम सुनिलेउ वीर परिहार।
रीति बाँधि दइ चन्द्रब्रह्मने ❋ हमरे कुला यही ब्योहार॥
हाहा खानेको ना मारैं ❋ ना तिरिया पर डारैं हाथ।
गौ ब्राह्मणको नाहिं मारैं हम ❋ ना भागेके परैं पिछार॥
पहिली उचौनी ना खेलैं हम ❋ चाहे प्राण रहैं कै जायँ।
सुनि यह बातें चन्देलेकी ❋ हँसिके वासुदेव नरराय॥
सुमिरन करिके रामचन्द्रको ❋ करसे खैंचि लई तलवार।
करो जडाका चन्देलेपर ❋ बायें उठी गेंडकी ढाल॥
तीनि शिरोही गहि गहि मारीं ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय।

शोचे वासुदेव अपने मन * है बडबली चँदेले राय ॥
साँगि उठाई वासुदेवने * चन्देलेपर दई चलाय।
हाथी हटिगा चन्देलेका * दहिने भई शारदा माय॥
गुर्ज उठाया मालवंतने * सो समुहे पर दिया चलाय।
बाढिकै छलिया परिमालेने * छल करि लीन्हीं चोट बचाय
साँगि गिरी अरराय धरनिमें * सोचे वासुदेव मनमायँ॥
बडो शूरमा यहु लडिका है * भयो सपूत वंशके मायँ॥
ऐसे सोचे मालवन्त नृप * अपने मनमें करत विचार।
जोहि क्षत्रीके कायर बेटा * होवै नाश तासु कुल क्यार॥
जिसके घरमें नारि कलहनी * उसका सुख संपति नशिजाय
बिटिया दीन्हीं मोहिं ईश्वरने * हमरा दीन्हा गर्व नशाय।
जो नाहिं बेटी हमरे होती * क्यों यह लाता फौज चढाय
बैर करत है जो काहूसे * ताको तुरत गर्व नाशि जाय॥
जिसके बेटी जनै आयके * उसकी लाज रखै करतार।
सबै प्रतिष्ठा नशै तासुकी * औ अपकीर्ति होय संसार॥
ब्राह्मण बानियें सब अच्छे हैं * जन्मैं बेटी दुइ औ चारि।
कन्यादान करैं आनँदसों * औ सब सुखी होयँ नर नारि॥
बडी बुराई है क्षत्रिनमें * कन्या जने नाश परिवार।
शीशे जमाईको काटत हैं * अरु बेटीको डारत मार॥
ऐसी रीति चली क्षत्रिनमें * हमपर सही न जावै हाय।
इहि बिधि सोचत मालवंत नृप * चंदेलेसे कही सुनाय॥
गरुये नातेके लडिका हौ * सो तुम चलौ हमारे साथ।
तौ हम व्याह करैं बेटीको * नातर लौटि जाउ नरनाथ॥
इतनी सुनिकै चंदेलेने * राजै लियो तुरत बँधवाय।
कौनसी शेखीमें डूबे हौ * अबहीं भौंरी लिहों डराय॥

सुनिके बातें चन्देलेकी * बोले वासुदेव नरराय ।
डंड खोलिदेउ मेरे बेटनकी * हमरी डंड देउ खुलवाय ॥
अबहीं व्याहि देउ बेटीको * मनमें धीर धरो नरनाथ ।
गंगा कीन्हीं वासुदेवने * औ चलिभये पुत्र लै साथ
जायके पहुँचे राजमहलमें * राजा वासुदेव निजधाम ।
तुरतै सोचे अपने मनमें * अब धोखेमें बनिहै काम ॥
दहक खुदायके महलनमें * तापर पलँग दीन बिछवाय
फिरि बुलवायो परिमालेको * अबहीं भाँरि देउँ डराय ॥
तुम सब लायक चन्द्रवंशमें * बैठो नाहिं चन्द्र सरदार ।
जबहीं बैठन चले चंदेले * सन्मुख खडी पद्मिनी आय
कियो इशारा अपने पतिको * बैठो नाहिं चन्द्र सरदार ।
कुरसी पर्डा वहीं बँगलामें * तापर बैठ भूप त्यहि बार ॥
चतुर छबीला चन्देला है * सो मन समझ गया सब कार।
सन्मुख देखा जब मल्हनाको * मानौं चन्द्र ज्योति उजियार
रूप छबीली निरखि कामिनी * मोहित भया चन्द्र सरदार
मनमें सोचे चन्देले नृप * केहि विधि वरों याहि यहि बार
लोभीको धन दे वश करिये * औ मूरखको बात बनाय ।
नारिजनको अस वस करिये * भूषण वसन अनोखे लाय ॥
दुष्ट पुरुषकी करै बडाई * ऊँची नीची कहै बुझाय ।
अधिक तामसी जो मानुष हो * ताको करै निहोरा जाय ॥
समय देखिकै मानुष बरतै * जैसे बने आपनो काज ।
यहि विधि सोचि चँदेले बोले * सुनिये वासुदेव महराज ॥
शीश लचावन परत ताहि जग * औ आधीन होत एक साथ।
जन्मत बेटी जेहि मानुषके * ताकी लाज रामके हाथ ॥
स्यानी बिटिया जो घर देखैं * तौ राजनको धर्म नशाय ।

घर अपनेमें कभी न रखिये ❋ देहरी नांघत दोष लगाय ॥
उत्तम मानुष जो जगमें हैं ❋ व्याहत वर्ष आठवीं मायँ ।
तेहिते मानौ बात हमारी ❋ हौ तुम बुद्धिमान नरराय ॥
हँसी खुशीसे निज बेटीको ❋ अबहीं व्याह देउ रचवाय ।
इकली कन्याके जियरापर ❋ काहे फौज दिहौ कटवाय ॥
जगमें बेटी गर्व घटावै ❋ शेखी छिनमें देय निकार ।
विधवा होवै जिसकी बेटी ❋ सो तौ महादुखी संसार ॥
रहै प्रतिष्ठा कैसे जगमें ❋ नित नित चिन्ता बढै अपार
इहि विधि समझाया राजाने ❋ बोला वासुदेव परिहार ॥
नीति शास्त्रके जाननहारे ❋ हौ तुम बुद्धिमान नरराय ।
जितनी बात कही तुमने सब ❋ सो हमरे मन गई समाय ॥
जल्दी बुलवाया पंडितको ❋ लग्न मुहूरत लीन्ह विचार ।
सिगरी सखियनको बुलवाया ❋ महलन होय मंगलाचार ॥
हुकम सुनाया मालवन्तने ❋ महुबो नगर देउ सजवाय ।
झाडू लागि गई गलियनमें ❋ औ शतरंजी दई बिछाय ॥
द्वारन द्वारन कलश धराये ❋ बन्दनवारी दई बँधाय ।
आये चंदेल अपने दलमें ❋ तुरतै लई बरात सजाय ॥
चली सवारी परिमालेकी ❋ व्याहन चले चन्द्र सरदार ॥
कहँलग वरणौं मैं शोभाको ❋ मानहुँ चले इन्द्रदरबार ॥
जायके पहुँचे नगर महोबे ❋ घरघर होय मंगलाचार ।
अबिर गुलाल उड़ै चारों दिशि ❋ औ फूलनकी हो बौछार ॥
बहुत सुगन्धित इतर केवडा ❋ जासों सबै मस्त हो जायँ ।
छुटै पिचक्का रंग केसरिके ❋ गलियाँ महकि महकि रहिजायँ
बन्दनवारी घरघर सोहै ❋ द्वारे कलश सोबरन क्यार।
बजे नगाडा सब गलियनमें ❋ नौबति और झाँझ झनकार

सखियाँ बैठीं जो अंटनपर ❋ छज्जन रही लालरी छाय ।
झुकि झुकि देखैं चन्देलेको ❋ औ मन मोहि मोहि रहिजायँ
धनिधानि माता इनकी कहिये ❋ जेहिकी कोखि लीन्ह औतार
जबहीं पहुँचे जाय चंदेले ❋ तुरतै भयो द्वारको चार ॥
हरे हरे गोबर अँगन लिपायो ❋ मोतिन चौक दई पुरवाय ।
भीतर सखियाँ मंगल गावैं ❋ बाहर वेदी दई रचाय ॥
जबहीं राजा भीतर पहुँचे ❋ चन्दन चौकी दई डराय ।
पंडित वेद उचारन लागे ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
चौकी बैठे जाय चँदेले ❋ तुरतै नेग होन सब लाग ।
चिंतामणि पंडित राजाके ❋ गहनेको डब्बा दियो सुहाग॥
अब तौ बर्टाको लै आवो ❋ भाँवरि समय पहूँचो आय ।
तब नाइनको तुरत बुलायो ❋ उबटन वाग दियो करवाय॥
फिरि अस्नान कराये सब विधि ❋ सिगरे वस्त्र दीन्ह पहिराय
पहिरि घाँघरा घूमदार है ❋ दक्षिण चीर सजाओ आय॥
गोटा सुनहरी चौगिर्दा लग ❋ झालरि लगी मोतियन क्यार
जैसे कलियाँ कमल रूप हैं ❋ सो लहँगामें देत बहार ॥
नाकमें नथुनीकी शोभा पुनि ❋ लटकन झूमि झूमि रहिजाय
पड़ा चौगड़ा है नथुनामें ❋ काँटेदार झलूमा खाय ॥
कर्णफूल काननमें सोहै ❋ झुमका गेंदा फूल समान ।
माथे बेंदी नीलमणीकी ❋ उपमा कहत शेष सकुचान॥
बाकी गहने सब लै लीन्हें ❋ सो मल्हनाको दै पहिराय ।
दुलरी तिलरी शीशफूल औ ❋ वेना बेंदी अधिक सुहाय ॥
बाँकी टेढी चौठानी औ ❋ छल्ला छड़ा झाँझ झनकार ।
जुगनू पचलड़ि और सतलड़ी ❋ औ धुकधुकी सोबरन क्यार
चूड़ी और नौगिरी कंकन ❋ पहुँची और पछेला छाप ।

जेहर तेहर अनवट बिछुए ❋ गुजरी किंकिनिकी है झाँप ॥
कहँलग बरणौं मैं गहनोंको ❋ पहिरे सबै मल्हनदे नारि ।
सजिके आई जब बेदीपर ❋ मानो कामदेवकी प्यारि ॥
हाथन मेंहदी पायँ महावर ❋ शोभा एक न वरणी जाय ।
सब शृंगार और आभूषण ❋ मानों इन्द्र अप्सरा आय ॥
चन्दन चौकी पर बिठलाया ❋ सिगरे नेग दीन्ह हर्षाय ।
भौंरी परनलगी मडये तर ❋ उठिके चले चँदेले राय ॥
पहिली भाँवरिके परतै खन ❋ माहिल खैंच लई तलवार ।
करो जडाका जब समुहेपर ❋ मुंशी जौन चन्द्र सरदार ॥
ढाल अडाय दई समुहेपर ❋ ऐसा वीर नवल चौहान ।
दुसरी भाँवरिके परतै खन ❋ जागनि लई शिरोही तान ॥
करो जडाका चन्देले पर ❋ पंडित दीन्हीं ढाल अडाय ।
सातौभाँवरियाहिविधिपरिगइँ ❋ बहुत खुशी चंदेले राय ॥
बहुत दान विप्रनको दीन्हो ❋ सिगरे नेगी लिये बुलाय ।
गहनौं बाँटि दियो नेगिनको ❋ सिगरे याचक गये अघाय ।
जितनो दायज है महुवेको ❋ ताते दूनो दियो लुटाय ।
अनँदबधैया महुवे बाजे ❋ घरघर खुशी रही तहँ छाय
फेरि चँदेल बोलन लागे ❋ सुनिलेउ वासुदेव नरराय ।
करो तयारी तुम बेटीकी ❋ अबहीं बिदा देउ करवाय ॥
खबरें हुइगई रंगमहलमें ❋ बेटी सजिकै भई तयार ।
डोला खँदाय लियो बेटीको ❋ लश्कर कूच दियो करवाय
चली बरायत बिदा होयके ❋ डोला चला मल्हनदे क्यार
नौसै घोडा आगे चलिभे ❋ पाछे चलिभये एक हजार ॥
और भीड सब संगै चलिभई ❋ शोभा एक न वरणी जाय ।
मंजिल मंजिलके चलिबेमें ❋ अपनो धुरे दबायो आय ॥

यक हरकारा दौरत आया ❋ चन्देलीमें पहुँचो आय ।
भई तयारी रंगमहलमें ❋ सखियाँ मंगल रहीं सुनाय ॥
आये चँदेले राजभवनमें ❋ परछनि भई मल्हनदे क्यार ।
दगी सलामी चन्देलीमें ❋ रैयति खुशी भई सब झार ॥
यकदिन मल्हना बोलन लागी ❋ स्वामी सुनो चन्देले राय ।
नगर महोबा मेरे बापको ❋ तेहिसम नगर जगतमें नायँ ॥
चलिके बास करो महुबेमें ❋ नातर हमहिं देउ पहुँचाय ।
नगर चँदेली ना भावत मोहिं ❋ भूलत नाहिं महोबा ठांव ॥
इतनी सुनिके राजा बोले ❋ रानी सुनो हमारी बात ।
बहुत राज है मेरे बापको ❋ अरु है पारसमणि विख्यात ॥
ऐसा पत्थर है हमरे घर ❋ लोहा छुअत सोन ह्वे जाय ।
जहँपर स्वामी रहै नारिको ❋ तहँपर नारि रहै मन लाय ॥
कौन बातकी ह्यां कमती है ❋ सब कुछ दीन्ह मोहिं करतार ।
कमी होय जो कछु हमरे घर ❋ सो सब तुरत करौं तैयार ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ औ राजासे लगी बतान ।
राजपाटकी ना भूखीहौं ❋ चहिये नाहिं मोहिं धन मान ॥
मैं तौ बास करौं महुबेमें ❋ नातर प्राण तजौं शक नाहिं ।
बोले राजा तब रानीसे ❋ रानी धीर धरो मनमाहिं ॥
लडिके महुबो सरकारि लीहौं ❋ जासों काम होय तत्काल ।
धीरज दैके रानि मल्हनाको ❋ आये सभा रजा परिमाल ॥
सम्मति करिके निजमंत्रीसे ❋ दीन्हों हुक्म चन्द्र सरदार ।
बजे नगाडा हमरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
तुरत नगडचीको बुलवाया ❋ सोने कडा दियो डरवाय ।
बजो नगाडा तब लश्करमें ❋ क्षत्री तुरत उठे भहराय ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार ।

तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री सबै भये तैयार ॥
चौथे डंकाके बाजतखन ❀ क्षत्रिन कूच दीन करवाय ।
बावन गढके सूबा लैके ❀ संगहि चले चँदेले राय ॥
मंजिल मंजिलके चलिबेमें ❀ महुबे धुरो दबायो आय ।
तीनि कोश जब महुबो रहिगो ❀ तहँपर डेरा दियो लगाय ॥
फेटैं छुटिगईं रजपूतनकी ❀ हाथिन हौदा धरे उतारि ।
जीन उतारि धरे घोडनके ❀ डेरा डारि दिये सब झारि॥
पाती लिखी तुरत चन्देले ❀ पाढिओ वासुदेव नरराय ।
आधा महुबा हमको देदो ❀ आधा राज देउ बँटवाय ॥
हमसे दुसरी जो तुम करिहौ ❀ तौ हम किला लिहैं छिनवाय
इतनी बात लिखी पातीमें ❀ औ धामनको दई गहाय ॥
लैके पाती धामन चलिभौ ❀ औ महुबेमें पहुँचो जाय ।
जहां कचहरी वासुदेवकी ❀ धामन तहाँ गया नियराय॥
सांकरिखेंचतसाँडिनिबौठिगइ ❀ धामन उतरि परो हरगाय।
लैके पाती धामन चलिभो ❀ औ ड्योढीमें पहुँचो जाय
सोने सिंहासन राजा बैठे ❀ ऊपर चौंर दुरैं गजगाह ॥
सात कदमसे करी बन्दगी ❀ पाती रखिदइ सहित उछाव
नजरिबदलिगइमालवन्तकी ❀ तुरतै पाती लई उठाय ।
पाती बाँचत परलै हुइगइ ❀ देहीं गई सनाका खाय ॥
नाम पढत ही चन्देलेको ❀ जियरा अन्तरिक्ष हुइ जाय
माहिल पूछैं तब राजासे ❀ ददुआ हाल देउ बतलाय ॥
कहांसे पाती यह आई है ❀ सो मोहिं कहो बात समुझाय ॥
इतनी सुनिकै राजा बोले ❀ बेटा सुनो बात मनलाय ॥
पाती आई चन्देलेकी ❀ आधो महुबो देउ बँटाय ।
दुसरी करिहौ जो हमसे तुम ❀ तौ हम लडिके लिहैं छिनाय

अनुचित कारज जो नर करते ❋ तिनकी जगमें रहै न लाज।
सज्जन जनसे वैर बिसाहत ❋ तिनके बिगरैं सभी समाज॥
जो वैरी हो बली आपसे ❋ उनसे लडे गमावैं जान।
करै भरोसा पर नारिनका ❋ उनकी लेवौ मौत पिछान॥
वैर विसाहा था रावणने ❋ सारा कुनबा नाश कराय।
वैर किया था कंसासुरने ❋ दीन्हा मृत्यु द्वार पहुँचाय॥
याते वैर हमहिं करनो नहिं ❋ आधो महुबो देउ बँटाय।
इतनी सुनिकै माहिल जरिगा ❋ अपने लश्कर पहुँचा जाय॥
फौज सजाय लई माहिलने ❋ हाथिनका नाहिं परै शुमार।
नौलख घोडा गढ महुबेमें ❋ पाखरि परी एकही बार॥
तोपें दुइ हजार लेकरके ❋ किल्ले ऊपर दई चढाय।
त्यारी करि लइ जब लडिबेकी ❋ माहिल और जगनसी राय
खबरि कराय दई धामनको ❋ माहिल चढे वीर परिहार।
इतते लश्कर है माहिलको ❋ उतते फौज चँदेले क्यार॥
पहली लडाई भइ तोपनकी ❋ दुसरी भई तीरकी मारु।
तिसरी लडाई भइ सांगिनकी ❋ ज्वानन खैंचि लीन्ह तलवार
पैदलके सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनसे असवार।
दोनौं फौजें संगम हुइगइँ ❋ भारी मारु चँदेले क्यार॥
हल्ला बोलि दियो फौजनमें ❋ फाटक काटि कीन घमसान।
तीनि पहरकेरे अरसामें ❋ लश्कर काटि करो खरिहान॥
जीवत पकडि लियो माहिलको ❋ ओजागनिको लियो बँधाय
खबरि पहुँचि गइ बासुदेव पर ❋ मनमें बहुत गये घबडाय॥
तुरतै चलिभये तब ड्योढीसे ❋ औ चलि आये चँदेले पास।
करी अधीनी परिमालेकी ❋ जानहु मोहिं आपनो दास॥
डंड खोलि देउ दोउ बेटनकी ❋ औ महुबेमें करौ निवास।

बैठे राज करौ महुबेमें ❋ जियकी मेटि देउ सब त्रास॥
सुनिके बातैं वासुदेवकी ❋ महुबे बसे रजा परिमाल।
राजा वासुदेव उरईमें ❋ बसिगये कुटुंबसहित तत्काल
कछुदिन बीते वासुदेव नृप ❋ आई निकट मृत्यु जेहि काल।
तुरत बुलाया चन्देलेको ❋ बोले मालवन्त महिपाल॥
बडे शूरमा तुम क्षत्री हौ ❋ हौ तुम चन्द्रवंश सरदार।
हमरे लडिका यह दोनौं हैं ❋ जो परिहार वंश उजियार॥
सदा सहायक इनके रहियो ❋ इनकी खता न मनमें लाय।
इतनी कहिके प्राण त्यागि दे ❋ पहुँचे स्वर्ग लोक नरराय॥
उरई राज कियो माहिलने ❋ सम्मति दई चंदेले राय।
छोटे भैया नर जागनिको ❋ जगनेरीमें दियो बसाय॥
कही चंदेले तब माहिलसे ❋ तुम सुनिलेउ प्रेमके भाय।
जो कछु दौलति तुमको चहिये ❋ सो तुम लेउ सदा मनलाय॥
बैठ राज करौ उरईमें ❋ तुम्हरी करिहौं सदा सहाय।
हाथ जोरि तब माहिल बोले ❋ तुम सुनिलेउ चंदेले राय॥
बहुत सम्पदा मेरे बापकी ❋ ताते कछू चाहिये नांय।
है स्वभाव मेरो चुगलीको ❋ चुगली मेरी माफ हुइ जाय॥
खता माफ की चन्देलेने ❋ दोनौं भाई दिये समझाय।
ऐसे बांट किया राजाने ❋ औ महुबेमें पहुंचे जाय॥
नगर महोबेको सजवाया ❋ पारसमणिको लिया मंगाय
ऐसा पारस पत्थर कहिये ❋ लोहा छुअत सोन हुइ जाय
छोटा भाई परिमालैका ❋ जाको चन्द्रकार है नाम।
राज्य चंदेलीका दे दीन्हा ❋ औ रानीको लियो बुलाय॥
बारह ब्याह किये चन्देले ❋ ऐसा शूरवीर बलवान।
बारह रानी परिमालैकी ❋ एकते एक रूपकी खान॥

नगर महोबेमें सुन्दर विधि ❀ भोगे राज रजा परिमाल ।
महुबा सजवाया राजाने ❀ रैयति सबै भई खुशहाल ॥
कोट सोवरनका बनवाया ❀ छौनी मोर पंखकी लाग ।
अरु रतननके बने कँगूरा ❀ मानहुँ इन्द्रधाम सुखभाग॥
चौपडकी बजार सजवाई ❀ शोभा जासु वरणि नहिं जाय
लगीं दुकानैं परम मनोहर ❀ बैठे बडे बडे उमराय ॥
बहुतै सुन्दर महल बने हैं ❀ तहँ छज्जनपर सोहैं मोर ।
कटी खिरकियाँ मलयागिरकी ❀ मोहति चित्त देखि सब ठौर
नगर महोबेमें चंदेले ❀ बसिगे प्रगट रजा परिमाल
युगल सांग है चंदेलेकी ❀ जाकी अनी दहाडै काल ॥
जितने योधा भरतखंडके ❀ सो लडि लडि कीन्हें पामाल
बावन गढिया सर करि लीन्हीं ❀ मानी हार सबै भूपाल ॥
किसी बलीकी मार न खाई ❀ सिगगे हालि गयो संसार
रहा मुकाबिल ना योधा कोउ ❀ खाँडा सागर धरा पखार ॥
कसम खायली अमरगुरूकी ❀ अब ना गहूँ हाथ हथियार
अब जो शस्त्र हाथ पकरूँ मैं ❀ नाशै क्षत्री धर्म हमार ॥
यह परिमाल ब्याहकी आल्हा ❀ जेहिविधिसुनीकहीमनलाय
राम बनावे सो बनि जावे ❀ बिगडी बनत बनत बनि जाय
अब मैं कहिहौं गढ कनवजमें ❀ जेहि विधि भयो घोर संग्राम
भयो स्वयंवर संयोगिनिको ❀ जहँ है अजयपालको धाम
राजा पृथीराज अरु जयचंद ❀ जेहि विधिकीन्हयुद्ध घमसान
सो सब आगे वर्णन करिहौं ❀ कहि हौं सकल वीर यशखान

इति परिमालका ब्याह (महोबेकी पहली लडाई) संपूर्ण ।

श्रीः ।

संयोगिनिस्वयंवर।

पृथ्वीराज और जयचन्दकी लडाई।

(कन्नौजखंड)

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिके नारायणको ❋ गुरु गणपतिके चरण मनाय।
मातु शारदाको सुमिरन करि ❋ सुमिरौं बहुरि कालिका माय
विनती करिके गुवर्धनीकी ❋ लैलै फूलमतीके नाम।
सुमिरन करिके संदोहिनिको ❋ जहँ है अजयपालको धाम ॥
सकल देवतनको सुमिरन करि ❋ वेनिचक्कवेके गुण गाय।
सुमिरन करिके सब देवनको ❋ वीर पँवारो देहुँ सुनाय ॥
कंठ विराजौ मातु सरस्वति ❋ भूल अक्षर देहु बताय।
लिखौं स्वयंवर संयोगिनिको ❋ यारो सुनियो कान लगाय
देश अयोध्याके मंडलमें ❋ सोहत नैमिषार वनराज।
ताते दक्षिण रजधानी यक ❋ कनउज नगर राज शिरताज
राजा अजैपाल क्षत्री वर ❋ जो राठौर वंश बिख्यात।
वेनिचक्कवै महाराज जहँ ❋ शोभा तासु वर्णि नहिं जात
अति प्रसिद्ध तिनके बेटा दुइ ❋ जयचँद रतीभान महराज।
लगी सभा जयचन्द विराजैं ❋ सोहैं छत्र और शिरताज ॥
देश देशके राजा बैठे ❋ भारी लागि रहा दरबार।
छत्रपती गढपती नरपती ❋ बैठे बडे बडे सरदार ॥
सूर्यवंश औ चन्द्रवंशके ❋ औ रघुवंशी राजकुमार ॥

बूँदी वाले हाडावारे ❋ औ परिहार गुटैया टार ॥
भदवरिया गहलौत रुहेले ❋ औ सोलंखि वीर चौहान।
नगर चँदेलीके चन्देले ❋ नृप राठौर और कछवाह॥
बँधे बजुल्ला भुजदंडनमें ❋ तुर्रा लौटि लौटि रहि जाय
मोढाके सँग मोढा रगडे ❋ मचियारगडिरगडिरहिजाय
सिंह ठवानि क्षत्री सब बैठे ❋ टिहुना धरे नग्न तलवार ।
क्या छबि वरणौं राजसभाकी ❋ मानहुँ इन्द्रकेर दरबार ॥
नचैं कंचनी बारह जोडी ❋ तबलाठुमकिठुमकिरहिजाय
समय सुहावन गीत सुनावें ❋ गावें भाव बताय बताय ॥
सोलह जोड छोकरा नाचैं ❋ गावें तान मनोहर गान ।
जबहीं झोंक देत नयननकी ❋ क्षत्रिन लगत कामके बान॥
नाच रंग देखें सब क्षत्री ❋ नयनन रही लालरी छाय।
बैठे सैयद गंग पारके ❋ दाढी रही तोंद पर आय ॥
ताही समय महाराजाके ❋ मनमें सोच रहा कछु छाय
व्याहन योग भई संयोगिनि ❋ मैं ताको वर देहुँ मिलाय ।
सोच समझके राजा जैचँद ❋ निज मंत्रीसे कही सुनाय
व्याह,योग संयोगिनि ह्वइ गइ ❋ सम्मति हमहिं देउ बतलाय
यह सुनि ज्वाब दियो मंत्रीने ❋ तुम सुनि लेउ कनोजीराय
चिठिया भेजो सब राजनको ❋ औं,कनउजमें लेउ बुलाय
रचो स्वयंवर संयोगिनिको ❋ जासों सिद्धिं होयसबकाज
सम्मतिउचितसुनीत्यहिऔसर ❋ बहुतै खुशी, भये महराज
चिठिया भेजी सब राजनको ❋ अपनी करन तयारी लाग
देश देशके राजा आये ❋ कनउजनगरकेरधनिभाग
तम्बू तनिगे सब भागनमें ❋ झंडन रही लालरी छाय ।
रचो स्वयंवर संयोगिनिको ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥

बिछे बिछौना रेशमवाले ❋ मंडप तुरत भया तैयार ।
भयो बुलौआ सब राजनको ❋ आये कुरी कुरी सरदार ॥
अपनो अपनो साज सजाये ❋ एकते एक शूर बलवान ।
एक न आये दिल्लीवारे ❋ राजा पृथीराज चौहान ॥
मूरति बनवाई पिरथीकी ❋ सो द्वारे पर दई धराय ।
खबरि भेजि दइ रंगमहलमें ❋ आवै कुँवरि साजि हर्षाय॥
चली सँयोगिनि तब महलोंसे ❋ शोभा अंग अंग रहि छाय।
गहने पहिरे नखसे सिखलौं ❋ बनता बरन करी ना जाय॥
पूर्ण चन्द्रमाके सम आनन ❋ सुन्दर मन्द मन्द मुसकान
नैना हिरनाके सम सोहत ❋ बाँकी चितवन भौंह कमान
माला लीन्हें दोउ हाथनमें ❋ पहुँची राजसभामें जाय ।
समुहे देखै ज्यहि राजाके ❋ सोअपनों शिर लेय झुकाय ॥
बेटी ढूँढ़ै पृथीराजको ❋ सो कहुँ नाहीं परै दिखाय।
खबरि मिलीथीसंयोगिनिको ❋ ऐहैं नाहिं पिथौरा राय ॥
मूरति धरिदइ दरवाजे पर ❋ यह अपने मनकीन्हविचार
गइ संयोगिनि दरवाजे पर ❋ मूरति देखि पिथौरा क्यार
देखत सबके संयोगिनिने ❋ माला तुरत दई पहिराय ।
कै तौ व्याह होय पिरथीसंग ❋ कै तो जपौं राम रटलाय ॥
देखि हाल यह संयोगिनिको ❋ राजा सबै गये खिसियाय
देश देशके जो राजा थे ❋ सबने कूच दियो करवाय
सुनी हकीकति जैचँद राजा ❋ तुरतै सोच रहा उर छाय ।
वेगि बुलाया चन्दभाटको ❋ औ यह कही कनौजीराय
कैसे राजा पृथीराज हैं ❋ सो सब हाल देउ बतलाय
बोले चन्दभाट राजासे ❋ तुम सुनि लेउ कनौजीराय
हैं वरदानी शिव शंकरके ❋ अरु हैं शब्दवेधि चौहान ।

महावीर हैं दिल्लीवारे ❋ रणमें एक शूर बलवान ॥
गजभरि छाती पृथ्वीराजकी ❋ शंका करै कालकी नाहिं।
ऐसे महाराज दिल्लीपति ❋ जीतैं अवशि शत्रु रणमाहिं।
इतनी सुनिके चन्द भाटसे ❋ राजा जैचँद लगे बतान।
हमहिं दिखावो पृथ्वीराजको ❋ कैसे महाराज चौहान ॥
कूच कराओ चन्दभाटने ❋ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय।
करी बन्दगी महाराजको ❋ बहुतै खुशी भये नरराय॥
पृथ्वीराज तब पूछन लागे ❋ अपनो हाल कहौ कविराज।
चन्दभाट तब बोलन लागे ❋ सुनिये पृथ्वीराज महराज॥
रचो स्वयंवर संयोगिनिको ❋ जैचँद महाराज दरबार ॥
देश देशके राजा आये ❋ एकते एक शूर सरदार ॥
तुम्हरी मूरति नृप बनवाई ❋ सो द्वारे पर दई धराय।
भयो बुलौवा संयोगिनिको ❋ माला लिये पहूँची आय ॥
सिगरे राजनपै फिरि आई ❋ औ द्वारे पर पहुँची आय।
मूरति देखी दरवाजेपर ❋ माला तुरत दई पहिराय ॥
कै तौ क्वाँरी रहौं जन्मभर ❋ कै पिरथी सँग होय विवाह।
साँची साँची यह भाषति हौं ❋ मनमें यही हमारे चाह ॥
देश देशके राजा चालि भये ❋ जैचँद सोच रहा उर छाय।
हमहिं बुलाओ तब जैचँदने ❋ पूँछो तुमहिं कनौजी राय ॥
कही हकीकति सब तुम्हरी हम ❋ भेजो तबहिं मोहिं नरनाथ।
तुमहिं बुलायो है देखनको ❋ सो तुम चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिके चन्दभाटसे ❋ बहुतै खुशी भये नरनाह।
अब हम लैहैं संयोगिनिको ❋ मनमें छाय गयो उत्साह ॥
दासी पहुँची थी जो हमरी ❋ ताने कारज दियो बनाय।
यह मन सोचे पृथ्वीराज तब ❋ चन्दभाटसे कही सुनाय ॥

धीरज राखौ अपने मनमें ❀ अबहीं चलिहैं साथ तुम्हार।
हुक्म देदिया पृथ्वीराजने ❀ सिगरे शूर होयँ तैयार ॥
तुरत बुलायो हरीसिंहको ❀ ठाकुर चलो हमारे साथ ।
देवि मरहटाको बुलवावौ ❀ तुमहूँ चलौ साथ नरनाथ ॥
सब सामन्त शूर सँग लीन्हें ❀ औ कनउजको भये तयार।
बोले पृथीराज कान्हरसे ❀ चाचा सुनलो बात हमार ॥
लश्कर लैयो तुम पीछेसे ❀ लीजो साथ शूर बलवान ।
आगे जैहैं हम कारज हित ❀ यह कहि चले बीर चौहान ॥
आठ रोजकी मंजलि करिके ❀ गढ कनउजमें पहुँचे जाय ।
बाना बदलो पृथ्वीराजने ❀ चन्दभाटको संग लिवाय ॥
लगी कचहरी जहँ जयचँदकी ❀ पहुँचे जाय चन्द कविराज ।
आगे आगे चन्दभाट हैं ❀ पाछे पृथ्वीराज नरराय ॥
करी बन्दगी चन्दभाटने ❀ जयचँद चौकी दई डराय ।
चन्दभाट बैठे चौकीपर ❀ पाछे खडे पिथौराराय ॥
नचैं कचनी वा बंगलामें ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
मचियाके सँग मचिया रगडे ❀ मोढा रगडि रगडि रहिजाय
शूर बीर योधा सब बैठे ❀ बैठे बडे बडे सरदार ।
क्या छबि बरणौं राजसभाकै मानहुँ इन्द्र केर दरबार ॥
मनमें सोचैं राजा जैचँद क्या यह खडे पिथौराराय।
मूँछपै हाथ धरो जैचँदने चन्दभाटने कही सुनाय ॥
हाथ न धरियो तुम मूँछनपै इस उनहारि पिथौराराय ।
काडियाँ तडकीं पृथ्वाराजकी ❀ नयनन रही लालरी छाय॥
सूरति देखत राजा जैचंद ❀ मनमें सोचि सोचि रहिजायँ
कैसे जाँच होय पिरथीकी ❀ यह तो चाकर परै दिखाय॥
कोइ कोइ क्षत्री मनमें सोचैं ❀ जेई खडे बीर चौहान ।

चन्दभाटको यह चाकर है ❀ पै यह जानि परत बलवान
मतो विचारो तब जैचँदने ❀ बाँदी जौन पिथौरा क्यार।
ताहि बुलावौं सो देखत खन ❀ करिहै लाज राज दरबार ॥
भयो बुलौआ तब बाँदीको ❀ सो बीरा लै पहुँची आय।
खडो देखिके पृथीराजको ❀ मनमें सोच रहा अतिछाय॥
जो मैं लाज करौं पिरथीकी ❀ तो बँधि जाय पिथौराराय ॥
आँखी मीजाति गई सभामें ❀ राजे बीरा दियो गहाय ॥
शिर खुजलावति बाँदी लौटी ❀ औ रनिवास पहूँची जाय।
ना कछु जानि परो महफिलमें ❀ जानि न परे पिथौराराय ।
राजा जैचँद अपने मनमें ❀ सोचैं बार बार घबराय।
बिना बिचारे जो कछु करिहैं ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय॥
जैचँद बोले सेनापतिसे ❀ बागन इनको देउ टिकाय।
तीनों चलिभये तब ड्योढीसे ❀ दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥
मूरति देखी पृथीराजने ❀ गुस्सा गई देहमें छाय।
स्याह पुतरियाँ लाली ह्वैगईं ❀ औ जरि मरे पिथौराराय ॥
बागमें पहुँचे चन्दभाट जब ❀ अपने तम्बू दिये तनाय।
खबरि भेजि दइ चन्दभाटने ❀ आये यहां पिथौराराय ॥
सुनी खबरि जब संयोगिनिने ❀ आये पृथीराज नरराय ।
डेरा कीन्हों है बागनमें ❀ यह सुनि बहुत खुशी ह्वै जाय
सब सिंगार कियो पद्मिनिने ❀ पहिरे भूषण बसन बनाय।
थार सोबरनको सजवायो ❀ बीरा तामें धरे बनाय ॥
साथ सहेलिनको लैलीन्हों ❀ औ पलकीमें बैठी जाय ॥
एक घरीको अरसा गुजरो ❀ सो बागनमें पहुँची जाय ॥
जहँ पर बैठे पृथीराज थे ❀ तहँ पर गई पद्मिनी नारि ।
पास पहूँची जब राजाके ❀ दीन्हों डारि कंठमें हार ॥

बीरा दैकै पाँच पानको ❋ तुरत आरती धरी उतारि ।
लई बिजनिया फूलनवारी ❋ पृथीराजपै करै बयारि ॥
फिरि संयोगिनि बोलन लागी ❋ सुनिये महाराज नरनाथ ।
हम प्रण कीन्हो है अपने मन ❋ करिहैं व्याह तुम्हारे साथ ॥
नातर क्वाँरी रहौं जन्मभर ❋ नाहीं करौं व्याहकी बात ।
इतनी सुनिके पिरथी बोले ❋ प्यारी सुनौ हमारी बात ॥
जो कछु मरजी नारायणकी ❋ ह्वैहै वही रची करतार ।
धीरज राखौ अपने मनमें ❋ गुजैर घरी घरी पर बार ॥
डोला लैहैं अब हम तुम्हरो ❋ औ दिल्लीमें रखिहैं जाय ।
इतनी बात सुनी पद्मिनिने ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वै जाय ॥
चली सँयोगिनि तब बागियासे ❋ औ महलनमें पहुँची जाय ।
सुनी खबरिया राजा जैचँद ❋ आये यहाँ पिथौराराय ॥
करी तयारी तब राजा ने ❋ दीन्हों हुक्म कनौजीराय ।
दुइसै घोडा त्यार कराये ❋ हाथी तीस लिये सजवाय ॥
चीरा कलँगी साल दुशाला ❋ मोहनमाला औ रूमाल ।
थार सोवरनका सजवाया ❋ तामें धरे जवाहर लाल ॥
संग लेलिया सब काहूको ❋ औ चलिभये कनौजीराय ।
भेंट देनको राजा जैचँद ❋ फुलबगियामें पहुँचे जाय ॥
जबहीं देखो चन्दभाटने ❋ पृथीराजसे कही सुनाय ।
खडे होउ अब तुम जल्दीसे ❋ बीरा राजै देउ गहाय ॥
बीरा लैकै पृथीराजने ❋ सो जैचँदको दीन्हों जाय ।
हाथ दाबिदो तब जैचँदको ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
लोहू देखत परलै ह्वैइगइ ❋ औ जरिगये कनौजीराय ।
चन्दभाटको यह चाकर नहिं ❋ याको नाम पिथौराराय ॥
भेंट जो लाये थे देबेको ❋ चन्दभाटको दई गहाय ।

तुरतै चलिभै राजा जैचंद ❀ औ शूरनको लियो बुलाय
हुक्म देदिया राजा जैचंद ❀ अपनो डंका देउ बजाय ।
जान न पावैं दिल्लीवाले ❀ सबके मूँड लेउ कटवाय ॥
सुनी खबरि यह पृथीराजने ❀ आगे बढे पिथौराराय ।
तीनि कोस कनउजसे उत्तर ❀ अपने डेरा दिय लगाय ॥
कागद लीन्हीं कलपीवारो ❀ अपनो कलमदान मँगवाय
लिखी हकीकति कान्ह देवको ❀ चाचा याहि पढौ मनलाय
जल्दी आवो तुम दिल्लीसे ❀ ह्वै है यहां जंग मैदान ।
पाती लैके धामन चलिभो ❀ कान्हर मिले राहमें आय॥
पाती दीन्हीं तब धामनने ❀ कान्हर लीन्हीं हाथ बढाय
पाती पढतै कान्हदेवने ❀ अपनो हुक्म दियो करवाय
धावा करिदेउ सब जल्दीसे ❀ औ कनउजको लेउ दबाय
तीनि रोजकी मंजिल करिके ❀ औ कनउजमें पहुँचे जाय
तीनि लाख लश्कर दिल्लीको ❀ एकसौ आठ शूर सरदार ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❀ बहुतै खुशी भये महराज ॥
कान्हदेव औ हरीसिंहसे ❀ बोले पृथीराज महराज ।
अब तुम रारि करो कनवजमें ❀ औ डोलाको लेउ खँदाय॥
डोला लेहैं संयोगिनिको ❀ तब छातीको डाहु बुझाय।
इतनी कहिके पृथीराजने ❀ अपनो घोडा लियो मँगाय
सो सजवाय लियो जलदीसे ❀ तापर फाँदि भये असवार।
चारि घरी केरे अरसामें ❀ पहुँचे नदी किनारे जाय ॥
जहाँ महल थो संयोगिनिको ❀ मछली तहाँ चुगावन लाग
देखि संयोगिनि पृथीराजको ❀ तब बांदीको लियो बुलाय
थार भरायो एक मोतिनसे ❀ सो बांदीको दियो पकराय
बाँदी चलिभइ मोती लैके ❀ पृथीराजपै पहुँची जाय ॥

बाल पृथीराज बांदीसे ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
कौने भेजो है तुमको यहँ ❋ सो सब हाल देउ बतलाय
हाथ जोरिके बाँदी बोली ❋ सुनिये महाराज चौहान ॥
हमहिं पठायो संयोगिनिने ❋ मोतिन थार देउ पहुँचाय ।
बैठि संयोगिनि है खिरकीमें ❋ सो तुम देखि लेउ महराज।
नजरि बदलि गइ पृथीराजकी ❋ संयोगिनि तन रहे निहारि॥
ऐंड लगाय दई घोडाके ❋ सतखंडा पर पहुँचे जाय ।
सूरति देखी पृथीराजकी ❋ पद्मिनि उठी भरहरा खाय॥
माला लैके संयोगिनिने ❋ पृथीराजको दइ पहिराय ।
हाथ जोरिके पद्मिनि बोली ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात॥
एक अंदेशा मोहिं आवत है ❋ जियरा सोचि २ घबराय ।
लश्कर भारी है कनवजको ❋ थोडी फौज तुम्हारे साथ ॥
कैसे जितिहौ तुम कनवजमें ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय
दियो भरोसा पृथीराजने ❋ प्यारी धीर धरो मनमाहिं ॥
मुँहरा मारि हैं हम जैचँदको ❋ तुमको दिल्ली दिहैं दिखाय ।
इतनी कहिके धीरज दीन्हों ❋ औ घोडा पर भये सवार ॥
चारि घरीको अरसा गुजरो ❋ अपनी फौज पहूँचे जाय ।
हुक्म देदिया सेनापतिको ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ॥
यहांकि बातैं तो यहँ छोंडो ❋ अब कनवजको सुनो हवाल
तुरत बुलायो सेनापतिको ❋ औ यह कही कनौजीराय॥
जल्दी सजवावो लश्करको ❋ मारू डंका देउ बजाय ।
इतनी सुनिके रायलंगरी ❋ लश्कर तुरत पहूंचा जाय ॥
हुक्म देदिया सब लश्करमें ❋ लश्कर डंका दियो बजाय ।
पहिले नगाडाके बाजत खन ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ॥
दुसरे नगाडामें जिनबन्दी ❋ तिसरे बांधि लिये हथियार॥

चौथे नगाडाके बाजत खन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय॥
चारि घरी केरे अरसामें ❋ पहुँचा समरभूमिमें जाय।
ढाढी करखा बोलन लागे ❋ घूमन लागे लाल निसान॥
दोनों लश्करके अन्तरमें ❋ रहिगा आध कोस मैदान।
हुक्म देदिया पृथ्वीराजने ❋ सुनलो हरीसिंह सरदार॥
इज्जत राखिलेउ दिल्लीकी ❋ मारौ फौज कनौजी क्यार।
इतनी सुनके हरीसिंहने ❋ अपनो घोडा दियो बढाय॥
राय लंगरीको ललकारो ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात।
डोला मँगावो तुम पद्मिनिको ❋ औ खेतनमें देउ धराय॥
ज्यहिकी जीति होय दंगलमें ❋ सो डोलाको लेय उठाय।
सुनी बात यह हरीसिंहकी ❋ देही अग्नि ज्वाल ह्वै जाय॥
राय लंगरीने ललकारो ❋ सुन लो हरीसिंह चौहान।
डोला मिलिबेको नाहीं है ❋ चाहे कोटिक करो उपाय॥
लडे न जितिहौ तुम कनवजमें ❋ नाहक प्राण गँवाये आय।
बातन बातन बतबढ ह्वैगो ❋ हल्ला तुरत दियो करवाय॥
खैंचि सिरोही लइ ज्वानननें ❋ खटखट चलन लगी तलवार
पैदलके सँग पैदल भिरिगे ❋ औ असवारनसे असवार॥
हौदाके सँग हौदा अभिरे ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत।
चले सिरोही दोनों दलमें ❋ सबके मारु मारु रट लाग॥
चारि घरी भारि चली सिरोही ❋ औ बहिचली रक्तकी धार।
चारि लाख तो पैदल गिरिगे ❋ घोडा गिरिगे आठ हजार॥
हाथी गिरिगे तहँ बारहसे ❋ दिल्लीवारेन दिये गिराय।
भजे सिपाही कनवजवारे ❋ अपने डारि डारि हथियार॥
झुके सिपाही दिल्लीवारे ❋ दोनों हाथ करैं तलवार।
भजत सिपाही अपने देखे ❋ राय लंगरी कही सुनाय॥

जौन सिपाही रणसे भागै ❋ ताके जीवनको धिरकार ।
नरक पडै सो जग दुख भोगै ❋ होवै नमकहरामी नाम ॥
ताते तुमको समझावत हौं ❋ कोइ न धरो पिछारी पाँव ।
समर खेतमें जो मरिजैहौ ❋ हुइहै युगन युगनलौं नाम ॥
खटिया परिके जो मरिजैहो ❋ कलिमें कोइ न लीहै नाम ।
जंग जीतिके जो घर चलिहौ ❋ तुम्हरी तलब दिहैं बढवाय ॥
दैके बढावा रजपूतनको ❋ सबको आगे दियो बढाय ।
धीरजसिंह बढे आगेको ❋ हरीसिंहसे कही सुनाय ॥
सम्हरो ठाकुर तुम घोडापर ❋ तुम्हरो काल पहूँचो आय ।
घोडा बढायो हरीसिंहने ❋ औ धीरजको दइ ललकार ॥
दोनौं शूरन झुरमुट ह्वइगो ❋ धीरज खैंचिलई तलवार ।
करो जडाका हरीसिंहपर ❋ ताने दीन्हीं ढाल अडाय ॥
तीनि सिरोही हनि हनि मारी ❋ बचिगो शूर पिथौरा क्यार ।
चौथी चोट करी धीरजने ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
सोचे धीरज अपने मनमें ❋ अब ना बाचिहैं प्राण हमार
जौन सिरोहीसे गज काटे ❋ औ घोडनके चारौं पाँव ॥
तौन सिरोही धोखा देगइ ❋ अब धौं कहा रची करतार ।
हरीसिंहने तब ललकारो ❋ धीरज खबरदार ह्वइ जाउ ॥
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अब लै लेते गाज हमार ।
चोट चलाई हरीसिंहने ❋ धीरज ढाल अडाई आय ॥
ढाल फाटिगइ गैंडा वाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय
शीश काटि लौ हरीसिंहने ❋ धीरज जूझिगये मैदान ॥
तीनि पहर भरि चली सिरोही ❋ संझाकाल रहो नियराय ।
सुनी खबरि जब राजा जैचंद ❋ धीरज जूझि गये रणमाहिं
शंका मानी तब राजाने ❋ मनमें सोच रहा बहु छाय ॥

बन्द लडाई भइ तेहि औसर ❋ सबने बन्द करे हथियार।
करो बसेरो राति भये पर ❋ भोरहिं उठे कनौजीराय॥
राय लंगरीको बुलवायो ❋ अरुयह हुक्म दियो फरमाय
डोला सजावो संयोगिनिको ❋ रणखेतनमें देउ धराय।
जबहीं आवैं दिल्लीवारे ❋ सबके मूँड लेउ कटवाय॥
हमा जमाको तुरत बुलायो तिनसे जैचँद कही सुनाय॥
खबरदार रहियो डोला पर ❋ रखियो लाज हमारी जाय।
जो कहुँ डोला दिल्ली जैहै ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय॥
खबरि भेजिदइ राजमहलमें डोला तुरत होय तैयार।
डोला सजिगो संयोगिनिको आयो समर खेत तत्काल॥
जितने शूर हते कनवजके ❋ सो डोलापर भये तयार।
यक हरिकारा दौरानि आयो ❋ पृथीराजसे कही सुनाय॥
डोला आयो है खेतनमें ❋ अब तुम खबरदार ह्वै जाउ।
इतनी सुनिकै दिल्लीपतिने ❋ अपने शूर लिये बुलवाय॥
हुक्म देदियो सब शूरनको ❋ अब डोलापर होउ तयार।
डोला जैहै जो दिल्लीको ❋ दूनी तलब दिहैं बढवाय॥
ऐसो समय नहीं मिलिहै फिरि ❋ रणमें खेलौ जूझ अघाय।
इतनी सुनिके सब शूरनने ❋ अपने बाँधि लिये हथियार
धावा करिदो सब शूरनने ❋ पहुँचे समर खेतमें जाय।
हरीसिंह बढिगे आगेको ❋ हमा जमासे कही सुनाय॥
डोला धरि देउ तुम खेतनमें ❋ जो जीतै सो लेय उठाय।
राय लंगरीने ललकारो ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात॥
कोनसो क्षत्री है दुनियाँमें ❋ जो यह डोला लेइ उठाय।
खेदिके मारौं मैं दिल्लीलों ❋ सबके शीश लेडँ कटवाय॥
बातन बातन बतबढ ह्वइगो ❋ ज्वानन खैंचि लई तलवारि.

हल्ला ह्वइगो दोनों दलमें ❋ क्षत्री बीररूप ह्वइ जायँ ॥
हमा जमा बोले क्षत्रिनसे ❋ क्षत्रिउ सुनौ हमारी बात ।
जान न पावैं दिल्लीवाले ❋ सबके मूँड लेउ कटवाय ॥
धावा करिदो सब क्षत्रिनने ❋ सबके मारु मारु रट लागि॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ खट खट चलन लगी तलवार
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै विलायत क्यार ।
तेगा चटकै बरदवानको ❋ कटि कटि गिरैं अरेवा ज्वान
कटि कटि शूर गिरैं धरतीपर ❋ उठि उठि रुंड करैं तलवारि
चारि घरी भरि चली सिरोही ❋ औ बही चली रक्तकी धार
कटे भुसुंडा तहँ हाथिनके ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार
कल्ला कटिगे हैं घोडनके ❋ ऐसी विषम चली तलवार
गोविन्द राजाने ललकारो ❋ है जो शूर पिथौरा क्यार ।
डोला धरि देउ संयोगिनिको ❋ चुप्पै लौटि कनौजै जाउ॥
इतनी सुनिकै हमा जमाने ❋ तुरतै खैंचि लई तलवारि ।
झुरमुट ह्वइगो तब दोउनको ❋ अपनी अपनी चोट चलाय
चोट चलाई हमा जमाने ❋ अरु गोविंदको दियो गिराय
जगो कबन्ध तहां गोविंदको ❋ बहुतक क्षत्री दियो गिराय
लीलको झंडा फिरो रुंडपै ❋ धरती गिरो रुंड तत्काल
हमा जमापै हरीसिंहने ❋ अपनो तेगा दियो चलाय
छूटि जनेवा गो तुरतै तब ❋ राय लंगरी पहुँचो आय ।
तब ललकारो हरीसिंहको ❋ तुम्हरो काल रहो नियराय
चोट आपनी तुम करि लीजो ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ
इतनी सुनिकै हरीसिंहने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार
करो जडाका जब समुहेपर ❋ ताने दीन्हीं ढाल अडाय ।
तीनि सिरोही हनि २ मारी ❋ राय लंगरी गये बचाय ॥

राय लंगरीने ललकारो ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात ।
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अब तुम खबरदार ह्वै जाउ ॥
इतनी कहिकै तेगा मारो ❋ हरीसिंहको दियो गिराय ।
देखि हकीकति राजा कुजर ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ॥
राय लँगरीको ललकारो ❋ काहे दीन्हों प्राण गँवाय ।
डोला जैहै यह दिल्लीको ❋ चुप्पे लौटि कनौजै जाउ ॥
इतनी सुनिकै राय लंगरी ❋ अपनो तेगा लियो निकारि।
करो जडाका तब कुजर पर ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय॥
चोट चलाई नृप कुंजरने ❋ राय लंगरिहिं दियो गिराय
सुनी खबरि जब राजा जैचँद ❋ मारो गयो लंगरी राय ॥
परो सनाका तब लश्करमें ❋ जैचँद सोचि सोचि रहिजायँ
चारि शूर कनवजके जूझे ❋ जूझे तीनि पिथौरा क्यार ।
बहुतक सेना गढ कनवजकी ❋ दिल्लीवालेन दई गिराय ।
क्षत्री बूडिगये लोहूसे ❋ डोला रक्त बरन ह्वै जाय ॥
कठिन लडाई भइ डालापर ❋ बिपता कछू कही ना जाय।
सोचि समुझिकै राजा जैचँद ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय
बजै नगाडा हमरे दलमें ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ।
हुक्म पायकै बजो नगाडा ❋ तुरते फौज भई तैयार ॥
तीनि लाख लश्कर सजवायो ❋ अपना चले कनौजीराय ।
चारि घरीको अरसा गुजरो ❋ पहुँचे समरभूमिमें जाय ॥
जैचँद बोले सब क्षत्रिनसे ❋ यारो रखियो धर्म हमार ।
जो कहुँ डोला दिल्ली जैहै ❋ बूडे सात साखिको नाम ॥
नमक हमारो तुम खायो है ❋ अब गाढेमें आवौ काम ।
पाँव पिछारूको जो धरिहो ❋ तो रजपूती जाय नशाय ॥
दियो बढावा सब क्षत्रिनको ❋ क्षत्री बीर रूप ह्वैजायँ ।

खबरि पहुँचिगइ पृथीराजको ❋ आये साजि कनौजीराय ॥
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ कान्हदेवको लियो बुलाय ।
यह कहि दीन्हीं उन कान्हरसे ❋ चाचा सुनो हमारी बात ॥
कठिन लडाई है मुर्चापर ❋ अब तुम खबरदार ह्वइ जाउ
साथमें आये राजा जैचँद ❋ भारी शूर कनौजीराय ॥
डोला जैहै जो कनउजको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
दागु लागि है चौहानीमें ❋ बुडिहै सात साखिको नाम
इतनी सुनिकै कान्हदेवने ❋ अपनो लश्कर दियो बढाय
बजो नगाडा दोना दलमें ❋ क्षत्रिन खैंचिलई तलवार ॥
बढे सिपाही कनउजवाले ❋ खटखट चलन लगी तरवार
एक शूर कनउजको कहिये ❋ जो पंजून कनौजी क्यार ॥
बडो शूरमा थो जैचँदको ❋ रणमें कठिन करै तलवार ।
ज्यों किसान खेतीको काटै ❋ कतरै जैस तँबोली पान ॥
कठिन लडाई भइ त्यहि अवसर ❋ अन्धाधुंध चली तरवार।
रंग बिरंगो डोला ह्वइगो ❋ औ बहिचली रक्तकी धार
पृथीराज कुंजरको टेरो ❋ औ यह बात कही समुझाय
कठिन लडाई है जैचँदकी ❋ अब गाढेमें आवो काम ॥
बडो भरोसो मोहिं तुम्हरो है ❋ सो तुम करो सामना जाय
इतनी सुनिकै कुंजर बरने ❋ अपना हाथी दियो बढाय॥
एक खेत जब डोला रहिगो ❋ जहँ पंजून शूर सरदार ।
कुंजर बोले पंजूनीसे ❋ अब तुम खबरदार ह्वइ जाउ
कैवर लीन्हों कुंजर बरने ❋ गाँसी सेर भरेकी खाय ।
मारो कैबर पंजूनीके ❋ सूखा निकरि गयो वा पार ॥
भारी शूर गिरो कनउजको ❋ कुंजर डोला लो उठवाय ।
पहुँचो डोला पृथीराजपै ❋ पिरथी हुक्म दियो करवाय॥

देर करनकी नाहिं ब्यरिया है ❀ डोला आगे देउ बढाय ।
डोला बाढिगो तब आगेको ❀ अपनो डंका दियो बजाय
जीतिको डंका जब बजवायो ❀ जयचँद गये सनाका खाय
आठ कोस जब डोला बढिगो ❀ जयचँद डोला घेरो जाय॥
आगे आगे पृथीराज हैं ❀ पाछे चले कनौजीराय ।
कबहुँक डोला जयचँद छीनै ❀ कबहुँक पिरथी लेयँ छिनाय
जौन शूर छीनै डोलाको ❀ राखै पाँच कोश पर जाय॥
कोश पचासक डोला बढिगो ❀ बहुतक क्षत्री गये नशाय ॥
लडत भिडत दोनों दल आवैं ❀ पहुँचे सोरोंके मैदान ।
राजा जैचँदने ललकारो ❀ सुनलो पृथीराज चौहान ॥
डोला लै जैहो चोरीसे ❀ तुम्हरो चोर कहै है नाम ।
डोला धरि देउ तुम खेतनमें ❀ जो जीते सो लेय उठाय ॥
इतनी बात सुनी पिरथीने ❀ डोला धरो खेत मैदान ।
हल्ला ह्वइगो दोनों दलमें ❀ तुरतै चलन लगी तलवार॥
झुरमुट ह्वइगयो दोनों दलको ❀ कोता खानी चलैं कटार ।
कोइ कोइ मारे बन्दूकनमे ❀ कोइ कोइ देय सेलको घाव
भाला छूटैं नागदौनिके ❀ कहुँ कहुँ कडा बीनकी मारु
जैचँद बोले सब क्षत्रिनसे ❀ यारो सुनलो कान लगाय॥
सदा तुरैया ना बन फूलैं ❀ यारो सदा न सावन होय ।
सदा न माता उरमें जनिहै ❀ यारो समय न बारम्बार ॥
जैसे पात टूटि तरवरसे ❀ गिरिकै बहुरि न लागै डार
मानुष देही यह दुर्लभ है ❀ ताते करो सुयशको काम ॥
लडिकै सन्मुख जो मरिजैहो ❀ ह्वै है जुगन २ लौं नाम ।
झुके सिपाही कनउजवाले ❀ रणमें कठिन करैं तलवार॥
अपनो पराओ ना पहिचानैं ❀ जिनके मारु मारु रट लाग

झुके शूरमा दिल्लीवाले ❋ दोनों हाथ लिये हथियार॥
खट खट खट खट तेगा बाजे ❋ बोले छपक छपक तलवार
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार
कठिन लडाई भइ डोलापर ❋ जहँ बहि चली रक्तकी धार
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ औ रण दुलहा चले बराय
शूर पैंतिसक पृथीराजके ❋ कनवजवारेन दिये गिराय॥
एक लाख जूझे जैचँदके ❋ दिल्लीवारेन दिये गिराय।
ऐसो समर भयो सोरोंमें ❋ अंधाधुंध चली तलवार॥
आठकोस पर डोला पहुँचो ❋ जीते जंग पिथौरा राय।
यक हरिकारा दौरत आवै ❋ रतीभानपर पहुँचो जाय॥
डोला लैगे दिल्लीवारे ❋ बहुतक क्षत्री भूमि गिराय।
सुनी खबरि जब रतीभानने ❋ गुस्सा गई देहमें छाय॥
हुक्म देदिया सब लश्करमें ❋ तुरतै फौज होय तैयार॥

रतीभानकी लडाई।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ जगदम्बाके चरण मनाय।
समर बखानौं रतीभानको ❋ यारो सुनियो कान लगाय
बजो नगाडा गढ कनउजमें ❋ क्षत्री सबै भये तैयार।
हाथी चढैया हाथिन चढिगये ❋ बाँके घोडनके असवार॥
लश्कर चलिभो रतीभानको ❋ डंका होन गोलमें लाग।
धावा करिकै गढ कनउजमें ❋ औ डोलाको घेरो जाय॥
राति सबेरो करि खेतनमें ❋ भोरहि उठे बीर रतिभान।
हुक्म देदिया सब क्षत्रिनको ❋ यारो खबरदार होइ जाउ॥
डोला जैहै जो दिल्लीको ❋ तो सब जैहै काम नशाय।
हाथी आयो रतीभानको ❋ हौदा धरो सोबरन क्यार॥

गद्दा परिगो मखमलवारो ❀ रेशम रस्सा दियो कसाय।
सुमिरन करिके नारायणको ❀ गुरु गणपतिके चरण मनाय॥
हाथी चढिगये रतीभानजी ❀ तबहीं अशगुन भयो अगार।
बोले पंडित रतीभानसे ❀ राजा सुनो हमारी बात॥
अशगुन ह्वैगो है समुहे पर ❀ अब तुम लौटि जाउ महराज।
काम तुम्हारो ना जैबेको ❀ इतनी मानो बात हमार॥
यह सुनि बोले रतीभानजी ❀ पंडित सुनो हमारी बात।
शगुन विचारैं बनिया बाटू ❀ जो धरि मौर बिआहन जायँ
क्या शगुन बिचारैं क्षत्रीबालक ❀ जो रण चढिक लोह चबायँ
पाँव पिछारू हम ना धरिहैं ❀ चाहे प्राण रहैं की जायँ॥

कुंडलिया।

साईं समो न चूकिये, खेलि शत्रुसों सार।
दाँव परे नहिं चूकिये, तुरत डारिये मार॥
तुरत डारिये मार नरद काची करि दीजे।
काची होय तो होय जीति जगमें यश लीजै।
कहि गिरधर कविराय युगन ऐसे चलि आई।
सो सौ सौहैं खाय शत्रुको मारिये साईं॥

डोला जैहै जो दिल्लीको ❀ बुडिहै सात साखिको नाम।
दाग़ु लागिहै रजपूतीमें ❀ औ जग ह्वैहै हँसी हमार॥
हाथी बढायो रतीभानने ❀ औ डोलाको घेरो जाय।
समुहे पहुँचे सो मुकुन्दके ❀ भारी जाय दई ललकार॥
डोला जैहै ना दिल्लीको ❀ चाहे मूँड मारि मरिजाउ॥
यह सुनि बोले मुकुन्द ठाकुर ❀ तुम सुनि लेउ कनौजीराय।
डोला लौटनको नाहीं है ❀ चाहे कोटिन करौ उपाय॥
यह सुनि बोले रतीभान तब ❀ ठाकुर सुनो हमारी बात।

डोला धरिदेउ रनखेतनमें ❀ जो जीतै सो लेय उठाय।
इतनी सुनिकै मुकुन्द ठाकुर ❀ डोला खेतन दियो धराय ॥
झुर्मुट ह्वैगो दोनों दलमें ❀ खटखट चलन लगी तलवार
रतीभान बोले मुकुन्दसे ❀ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
चोट चलाइ लेउ अपनी तुम ❀ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ।
इतनी सुनिकै मुकुन्द ठाकुर ❀ अपनो भाला लियो उठाय ॥
चोट चलाई रतीभानपर ❀ रतीभान गे चोट बचाय ।
खैंचि शिरोही लई मुकुन्दने ❀ लैकै रामचन्द्रको नाम ॥
करी जडाका तब चेहरापर ❀ बायें उठी गेंडकी ढाल ।
टूटि शिरोही गइ ठाकुरकी ❀ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
मुकुन्द सोचै अपने मनमें ❀ हमरो काल रहो नगिचाय।
जौन शिरोहीसे गज काटे ❀ औ घोडनके चारों पाँव ॥
तौन शिरोही धोखा देगइ ❀ हमपर रूठि गयो भगवान ॥
हाथी बढायो रतीभानने ❀ औ मुकुन्दसे कही सुनाय
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❀ अब लैलेउ गाज हमार ।
इतनी कहिकै रतीभानने ❀ अपनी खैंचि लई तलवार॥
चेहरा मारो त्यहि समुहेपर ❀ बायें उठी गेंडकी ढाल ।
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❀ गद्दी कटि मखमलकी जाय
कटि गइ कडियाँ हैं बख्तरकी ❀ उनको छूटि जनेवा जाय ॥
मुकुन्द जूझि गये डोलापर ❀ पिरथी मनमें गये घबराय॥
बडा शूरमा यहु मारो गो ❀ को गाढमें ऐहै काम ।
जितने शूर हते पिरथी सँग ❀ सबमें कही बीर चौहान ॥
डोला आयो जो फिरि जैहै ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ।
डोला छीनि लेउ जल्दीसे ❀ मारौ शूर कनौजी क्यार ॥
झुके शूरमा दिल्लीवारे ❀ सुनिकै हुकम पिथौरा क्यार।

झुरमुट होइगौ दोनों दलमें ❋ खटखट चलन लगी तलवार॥
क्या गति बरणौं त्यहि समयाकी ❋ विपता कछू कही ना जाय
रतीभानके रे मुहरापर ❋ कोई शूर न आडै पाँव॥
आठ कोस जब दिल्ली रहिगइ ❋ तहँपर बहुत चली तलवार।
चलै शिरोही जहँ मुठभेरी ❋ हा दैया गति कही न जाय॥
जौहर कीने रतीभानने ❋ मारे बडे बडे सरदार।
सोचैं पृथीराज तेहि अवसर ❋ अवधौं कहा करै करतार॥
बडो शूर यह रतीभान है ❋ क्यों ना राज करै जैचंद।
सोचत देखो पृथीराजको ❋ कान्हदेवने कही सुनाय॥
काहे सोच करो अपने मन ❋ तुमको कहा परी परवाह।
जबलौं प्राण रहैं देहीमें ❋ तबलौं लडौं शत्रुके साथ॥
इतनी कहिके कान्हदेवने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय।
जाय पहूँचे समर खेतमें ❋ भारी जाय दीन ललकार॥
जितने शूर हते दिल्लीके ❋ रतीभानने दिये गिराय।
देखि हकीकत कान्हदेवके ❋ गुस्सा गई देहमें छाय॥
कान्हर बोले रतीभानसे ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात।
डोला धरि देउ रणखेतनमें ❋ जो जीते सो लेइ उठाय॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखो कापर राम रिसायँ।
यह मन भाई रतीभानके ❋ डोला खेतन दियो धराय॥
हाथी बढाय दियो आगेको ❋ कान्हदेवसे कही सुनाय।
खबरदार रहियो समुहेपर ❋ तुम्हरो काल रहो नियराय
इतनी कहिके गुर्ज उठायो ❋ सो समुहेपर दियो चलाय।
ढाल अडाई कान्हदेवने ❋ जिनके अंग न आयो घाव॥
फिरि ललकारो रतीभानने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार।
करो जडाका जब समुहे पर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल॥

ढाल फाटिगइ गैंडावारी ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय
घाव आयगो तब मस्तकपर ❋ औ बहिचली रक्तकी धार॥
तब ललकारो कान्हदेवने ❋ पृथीराजसे कही सुनाय।
डोला लौटै जो कनवजको ❋ बुडि है सात साखिको नाम
दागु लागि है रजपूतीमें ❋ औ चौहानी जाय नशाय।
टाँके देदेउ तुम मस्तकमें ❋ तौ बैरीको देउँ गिराय॥
एक घरी केरे जीवनमें ❋ डोला दिल्लिहि देउँ पठाय।
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ करमें लीन्हीं लाल कमान॥
तीर खैंचिकै तुरतै मारो ❋ गाँसी झलकि रही त्रापार।
कान्हदेव तुरतै तब लौटे ❋ रतीभानपै पहुँचे आय॥
चली शिरोही तिन दोनोंकी ❋ औ बहि चली रक्तकी धार॥
मारि शिरोही रतीभानके ❋ उनको छूटि जनेवा जाय॥
जूझे रतीभान डोलापर ❋ पिरथी डोला दियो बढाय।
आई मूर्छा कान्हकुँवरको ❋ उनहूँ दीन्हें प्राण गँवाय॥
डोला पहुँचि गयो फाटकपर ❋ जैचंद डोला घेरो जाय।
चन्दभाट औ पिरथी रहिगे ❋ सिगरे जूझिगये सरदार॥
सोचि समझिकै पृथीराजने ❋ करमें लीन्हे लाल कमान।
हाथ जोरि संयोगिनि बोली ❋ स्वामी सुनो हमारी बात॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है ❋ जो दादापर डारो हाथ।
लाल कमान धरी पिरथीने ❋ जैचँद खाँडा लियो उठाय॥
देखि हकीकत संयोगिनिने ❋ हाथ जोरिके कही सुनाय।
बात हमारी अब तुम मानो ❋ ददुआ बारबार बलिजाउँ॥
तुमहिं मुनासिव यह नाहीं है ❋ जो राजा पर डारो हाथ।
इतनी सुनिकै राजा जैचँद ❋ मनमें सोचि समझि रहिजाय
चन्दभाट आगेको बढिगये ❋ औ जैचँदसे कही सुनाय।

जितने शूर हते दिल्लीके ❋ सो सब तुमने दिये गिराय
तुम्हरो दुसरिहा कोई नाहीं ❋ सो तुम सुनो कनौजीराय।
अब तुम छोडो पृथीराजको ❋ कीरति चली अगारू जाय
इतनी सुनिके राजा जैचँद ❋ कनउज कूच दियो करवाय
गइ संयोगिनि रंगमहलमें ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय॥
पृथीराज राजा जैचँदको ❋ साखो लिखिके दियो सुनाय
सुमिरन करिये नारायणको ❋ जो दीननपर रहत दयाल॥
भोलानाथ मनाय दिये मइँ ❋ अब महुबेको लिखौं हवाल

इति संयोगिनि स्वयंवर रतीभानकी लडाई संपूर्ण।

श्रीः ।

अथ महोबेकी लड़ाई ।

सुमिरन ।

सुमिरन करिकै नारायणको * अरु गणपतिके चरण मनाय
देवी गैये आदि भवानी * भूले अक्षर देहु बताय ॥
कोट काँगडेकी देवीको * सुमिरौं बार बार शिर नाय ।
जिह्वा बैठो मातु शारदा * जात काम सिद्धि ह्वइजाय ॥
धौलागिरि पर्वतकी देवी * निशिदिन पूजौं चरण तुम्हार
मोती लैकै बीच बीचमें * गूँथौं मोरमिरीको हार ॥
सो पहिरावौं जगदम्बेको * होउ सहाय राज दरबार ।
देवी लालता नैमिषारकी * मुम्बादेवी मुंबई क्यार ॥
विन्ध्याचलकी विंध्यवासनी * हिरदे करै ज्ञान उजियार ।
देश कामरूकी कामच्छा * सुमिरन करत जाहि संसार ॥
मातु मकटा हैं लखीमपुर * मन्दिर मातु शीतला क्यार
सिंह सवारी देवी गरजें * औ बैरीको करै संहार ॥
दर्शन कीन्हें श्रीदेवीके * जरि जरि पाप होत सब क्षार
पुनि मैं सुमिरौं श्रीगंगेजी * भागीरथी नाम संसार ॥
जो अस्नान करै नित प्रातहि * ताको तुरत होत निस्तार ।
छोंडि सुमिरनी अब आगे मैं * कहिहौं हाल महोबे क्यार ॥

सवैया ।

श्रीगिरिजापतिको विनवौं पुनि, मैं विनवौं गिरिजेश दुलारो ।
अजान पुत्र बली हनुमान, तुही सब भाँतिनसों रखवारो ॥
हर्षि हिये विनवौं सब देवन, भक्तन कष्ट सदा निरवारो ।
मै मतिमन्द यथा मतिसों, सबके हित गावत बीर पँवारो ॥

जेठ दशहराकी पर्बी पारि ❀ गंगा जाजमऊके घाट ।
देश देशसे मेला चलिभो ❀ बुडकी हेत गंगकी धार ॥
करिया बोला गढ माडोमें ❀ जो जम्बैको राजकुमार ।
एक बात तुमसे कहियतु हों ❀ दद्दुआ बार बार बलि जाउँ
जेठ दशहराकी पर्बी है ❀ बुडकी लेउँ गंगकी धार ।
है अभिलाषा यह हमरे मन ❀ दद्दुआ हुक्म देउ फरमाय॥
देश देशके राजा चलि भये ❀ गंगा जाजमऊके घाट ।
हमहूँ जैहैं जाजमऊमें ❀ करिहैं जाय गंग अस्नान ॥
दान दिहैं हम कछु विप्रनको ❀ जासों पाप दूरि ह्वैजायँ ।
इतनी सुनिकै जम्बै बोले ❀ बेटा मेरे लडैते लाल ॥
काम तुम्हारो ना जैबेको ❀ इतनी मानौ कही हमार ।
बारह वर्षको पैमा ह्वैगो ❀ कनउज दई न एक छदाम॥
जो सुनिपैहैं राजा जैचँद ❀ तुम्हरी कैद लिहैं करवाय ।
उहाँ ठकुरई है जैचँदकी ❀ भारी राज कनौजी क्यार॥
बात हमारी बेटा मानौ ❀ घरमें बैठि रहो हरगाय ।
हाथ जोरिकै करिया बोलो ❀ दादा सुनौ हमारी बात ॥
बैर तो तुमहींसे जैचँदको ❀ दद्दुआ मेरे बघेलेराय ।
तौनो बेटा मैं तुम्हरो हौं ❀ पैमा माफ लेउँ करवाय ॥
इतनी बात सुनी जम्बैने ❀ तुरतै हुक्म दियो फरमाय
करी तयारी तब करियाने ❀ फौज कटीली लई सजाय॥
आयो करिया रंगमहलको ❀ जहँपर हती बिजैसिनिरानि
बोली बिजैसिनि तहँ करियासे ❀ भैया सुनौ हमारी बात ॥
जो तुम जैयो जाजमऊको ❀ लैयो कछू निसानी मोहिं ।
उहाँसे करिया बदलति आवै ❀ अपने लश्कर पहुँचा आय
बजे नगाडा दुइसै जोडी ❀ बाजे तुरही औ कंडाल ।

कूच कराय दियो माडौसे ❋ पहुँचो जाजमऊके घाट ॥
बहुत दान दीन्हों विप्रनको ❋ औ गंगामें कीन असनान।
बात यादि आई बहिनीकी ❋ तब उठि चला करिंघाराय ॥
तुरतै पहुँचो सो बजारमें ❋ ढूँढत फिरै नौलखाहार।
तौलौं मिलिगये माहिलठाकुर ❋ सो करियासे लगे बतान ॥
लडिका ह्वैइके तुम राजाके ❋ ढूँढत फिरौ नौलखा हार।
तुमहिं हँसीको डर नाहीं है ❋ औ जम्बेके राजकुमार ॥
यह सुनि करियाबोलनलागो ❋ तुम सुनिलेउ माहिलपरिहार
सब बजारमें हम फिरि आये ❋ कहुँ ना मिलो नौलखाहार ॥
फिरिकै माहिल बोलन लागे ❋ ओ महराज करिंघाराय।
बात हमारी जो तुम मानौ ❋ हम बतलावें नौलखाहार ॥
नगर महोबा इक बस्ती है ❋ जहँपर बसैं चँदेलेराय।
तिन घर रानी इक मल्हना है ❋ सो वह बहिनी लगै हमारि॥
हार नौलखा वह पहिरे है ❋ चलिकै लूटिलेउ करवाय।
टूटे फाटे पडे चँदेले ❋ कोई फेंट बँधैया नाहिं ॥
यह मन भायगई करियाके ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
यहाँकि बातैं तौ यहँ छोंडो ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ॥
रहिमल टोंडर दस्सराज औ ❋ चौथे बच्छराज महराज।
ये रहवैया बकसर वाले ❋ चारो बीर बनाफर राय ॥
मीरा ताल्हन बनरस वाले ❋ तिन नौ पूत अठारह नाति।
अली अलामतिऔदरियाखाँ ❋ बेटा जानबेग मुलतान ॥
मियाँ बिसारति औ कल्लूखाँ ❋ कल्लनबेन और कल्याण।
कारो बाना कारो निसाना ❋ कारे घोडनके असवार ॥
शिरपर चीरा है मुगलानी ❋ मीरा ताल्हन राजकुमार।
जहाँ ठकुरई है जैचँदकी ❋ तहँपर भयो बखेडा आय ॥

वे फिरियादी कनउज चलिभये ❋ राजा जैचँदके दरबार।
जो रस्ता थी महुबे ह्वइके ❋ वे महुबेमें पहुँचे आय॥
पूँछन लागे हरिकारापर ❋ चारो बीर बनाफर राय।
हम सब जैहैं गढ कनउजको ❋ रस्ता हमहिं देउ बतलाय॥
तब हरिकारा पूछन लागो ❋ अपनो काम देउ बतलाय।
यह सुनि चारो बोलन लागे ❋ धूरे पै भयो बखेडा जाय॥
हम फिरियादी कनउज जह ❋ राजा जैचँदके दरबार।
फिरि हरिकारा बोलन लागो ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात॥
यह बस्ती है गढ महुबेकी ❋ यहँपर बसत रजा परिपाल।
बात बडी है परिमालेकी ❋ मानत जिनहिं कनौजी राय॥
भयो बखेडा जो धूरेपर ❋ जो लिखिदिहैं रजा परिमाल
सोइ फैसला तुम्हरो ह्वइहै ❋ जाते काम सिद्धि ह्वइ जाय॥
कही हमारी जो ना मनिहौ ❋ तुम्हरो काम होनको नाहिं।
बात मानिलइ हरिकाराकी ❋ द्वार गये चँदेले क्यार॥
खाली सिदरी परिमालेकी ❋ तहँ टिकिगहे बनाफरराय।
यकलँग ताल्हन बनरसवाले ❋ यकलँग पडे बनाफरराय॥
करिया आयो गढ महुबेमें ❋ वह जम्बैको राजकुमार।
जहँपर फाटक चन्द्रवंशको ❋ तहई पडे बनाफरराय॥
बोला करिया तब फाटकपर ❋ ओ रजपूतो बात बनाउ।
खबरि सुनावो चन्द्रवंशको ❋ औ मल्हनासे कहो सुनाय॥
हारनौलखा लै जल्दीसे ❋ हमरी नजरि गुजारै आय।
यह सुनि बोला बनरसवाला ❋ बोले तुरत बनाफरराय॥
तीनि रोजसे गढ महुबेमें ❋ हम सब परे परौने आय।
हाल हमारो ना जानो है ❋ हम परदेश रहत महराज॥
हुक्म दोदिया तब करियाने ❋ कछु क्षत्रिनसे कही सुनाय।

बजे कुल्हाडा या फाटकपर * औ धरतीमें देउ मिलाय ॥
महल लूटि लेउ परिमालेको * सिगरो गहनो लेउ उठाय ।
बजो कुल्हाडा तब फाटकपर * देखन लाग बनाफरराय ॥
मीरा ताल्हन और बनाफर * सो आपसमें लगे बतान ।
तीनि रोजसे गढ महुबेमें * खायो नमक चँदेले क्यार॥
सुखसे पानी पियो यहांपर * सो हाडनमें गयो समाय ।
हीनी ह्वइ है चन्द्रवंशकी * तौ जग ह्वइ है हँसी हमारि॥
दागु लागि है रजपूतीमें * औ क्षत्रीपन जाय नशाय ।
सबहुन मिलिके यह मत कीन्हों * प्राणनको दौ मोह बिसारि
खैंचि शिरोही यकलँग ह्वइके * चारों बीर बनाफर राय ।
एक ओरको ताल्हन पहुँचे * सूबा जौन बनारस क्यार॥
ताल्हन बोले सब बेटनसे * तुम सब सुनो हमारी बात ।
याही दिनको हम पालो है * अपनो हुनर देउ दिखलाय॥
काज पराये जो मरिजैहौ * पक्की कबर दिहौं चुनवाय ।
जंग जीतिहौ जो दंगलमें * ह्वइहै जुगन २ लौं नाम ॥
सीधा रस्ता है जन्नतका * तुमको कौन पडी परवाहि ।
इतनी सुनिलइ उन लडिकनने * अपनी खैंचि लई तलवार
बादल गरजै ज्यों भादोंमें * बिजली कडाकि २ रहिजाय
ऐसे गरजैं बनरसवाले * बनता बरन करी ना जाय ॥
सबमिलि झपटे त्यहि करियापर * जिनके मारु मारु रटलाग
गडबड परिगो गढ महुबेमें * बिपता कछू कही ना जाय ॥
जहां भीर देखैं करियाकी * तहँ घुसिपरैं बनाफर राय ।
मारि शिरोही चहला उठिगो * सब दल रेन बेन ह्वइजाय ॥
जौन रिसाला ताल्हन पैठैं * त्यहि धरतीमें देयँ गिराय ।
ऐसा काटा दल करियाका * जैसे खेती लुनैं किसान ॥

बडे लडैया बनरस वाले ❋ तहँपर बीतरहा घमसान ।
मूडनके तहँ ढेर लागिगे ❋ औ लोथिनपर लोथि दिखाय
करिया भागि गया माडौको ❋ नाहीं मिलो नौलखाहार ।
सुनी खबरि जब परिमालैने ❋ औ मल्हनाने सुनौ हवाल॥
परे परौने जो द्वारेपर ❋ तिनने राखी लाज हमारि।
आये चँदेल दरवाजे पर ❋ औ ठकुरनसे लगे बतान ॥
जो तुम होते ना महुबेमें ❋ तौ सब जाती लाज हमारि
धर्म हमारो तुमने राखो ❋ तुम्हरो जन्म धन्य संसार॥
इतनी कहिकै तब चन्देले ❋ अपने बँगला गये लिवाय।
खातिर करिकै उन सबहुनकी ❋ मालिक करो चँदेलेराय ॥
राजपाट औ धन दौलतिके ❋ मालिक भये बनाफरराय ।
फौजके मालिक ताल्हा सैयद ❋ सूबा जौन बनारस क्यार॥
मल्हना बोली परिमालैसे ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ।
व्याह करावो इन ठकुरनको ❋ लडिका जौन बनाफरराय ॥
तौ ये बने रहैं महुबेमें ❋ नाहीं कबहुँ जायँ परदेश ।
देवै ब्रह्मा दुइ बहिनी हैं ❋ लाडिका दस्सराज बच्छराज
व्याह रचावौ तिन दोनोंका ❋ तुम्हरे काम सिद्धि होइ जायँ
इतनी सुनिकै परिमालेने ❋ अपने नेगी लियो बुलाय॥
टीका मँगाय लियो जल्दीसे ❋ औ लडिकनको लिये बुलाय
दस्सराज औ बच्छराजको ❋ टीका तुरतै लियो चढाय॥
एकहि मडयेमें दोनोंकी ❋ भाँवरि तुरत लई करवाय ।
बिदा कराय लई बहुअनकी ❋ औ द्वारे पर पहुँचे आयँ ॥
जितनी रानी चन्द्रवंशकी ❋ सो द्वारेपर पहुँची आयँ ।
दोनौ बहुअनको सँग लीन्हों ❋ राखी रंगमहलमें जाय ॥
हार नौलखा मल्हना लैके ❋ सो देवैको दौ पहिराय ।

जौन नौलखाके लेनेको ❋ चढिके आयो करिंगाराय
औरो रानी चन्द्रवंशकी ❋ उनहूं हार दियो पहिराय॥
अनँद बधैया महुबे बाजे ❋ घर घर भयो मंगलाचार ।
फिरिके मल्हना बोलन लागी ❋ स्वामी सुनो हमारी बात ॥
स्याने लाडिका अरु बहुएँ हैं ❋ इनको महल देउ बनवाय ।
नहीं गुजारा इन महलनमें ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं
इतनी सुनिके चन्देलेने ❋ अपनो हुक्म दियो करवाय ।
महुबे केरे आधकोस पर ❋ दशहर पुरवा दियो बसाय ॥
सुन्दर महल सजे पुरवामें ❋ तहँ बसिगये बनाफरराय ।
उही सालमें आल्हा जन्मे ❋ हैं जो धर्मराज अवतार ॥
दस्सराजकी रनि दिवलासे ❋ आल्हा प्रगट भये संसार ।
बच्छराजकी रनि ब्रह्मासे ❋ श्री सहदेव लान अवतार॥
पांडवकुलमें जो तरवारिहा ❋ जगमें प्रगट भयो मलिखान।
ब्रह्मा जन्म लियो मल्हनासे ❋ है जो अर्जुनको अवतार ॥
रतीभानकी रनि तिलकासे ❋ पांडव नकुल केर औतार ।
लाखनि राना गढ कनउजमें ❋ जाको नाम प्रगट ससार ॥
वही सालकेरे अन्तरमें ❋ ढेबा आनि धरो औतार ।
रही गर्भमे दिवला रानी ❋ याधा भीमसेन औतार ॥
ऊदनि नामक गढ महुबेमें ❋ ह्वइहै प्रगट आय संसार ।
बच्छराजकी रनि ब्रह्माके ❋ आयो गर्भ माहिं सुलिखान
दस्सराज औ बच्छराज ये ❋ दोनों रहैं एकही साथ ।
नित नित जावें नगर महोबे ❋ मानें हुक्म चँदेले क्यार ॥
दोनों भाई समरथ होइगे ❋ निशिदिन करैं राजको काज
धनि धनि माया परमेश्वरकी ❋ अचरज होत देखि सब साज
पायँ पनहियाँ ना जिनके हैं ❋ तिनका प्रभू देत गजराज ।

यहाँकि बातें तो यहिं छोडौ ❋ अब आगेका सुनौ हवाल
यक दिन ताल्हन बोलनलागे ❋ तुम सुनि लेउ रजापरिमाल
हाल बतावौ तुम अपनो म्वाहिं ❋ क्यों ना हाथ गहौ हथियार
बोले राजा तब ताल्हनसे ❋ सय्यद सुनौ हमारो हाल ।
नगर चँदेरीके हम राजा ❋ बहुदिन करो राजको काज
भैया हमरो यक चन्द्राकर ❋ त्यहिहमसौंपिदियोसबराज
ब्याह कियो हम गढ महुबेमें ❋ सुनिके सुघर मल्हनदे रानि
इच्छा देखी रानि मल्हनाकी ❋ तब हम रहे महोबे आय ।
ससुर हमारे मालवन्त थे ❋ जिनके पुत्र माहिल परिहार
तिनहिं बसायो हम उरईमें ❋ महुबे कियो राजदरबार ।
भरतखण्डनें जितने योधा ❋ हमने जीति लिये तत्काल॥
बावनगढके राजा जीते ❋ जीते बडे बडे भूपाल ।
मार न खाई काहु बलीकी ❋ सिगरो हालि गयो संसार॥
रहा मुकाबिल ना कोइ योधा ❋ खाँडा सागर धरा पखार
अमर गुरूकी कसम खाय लो ❋ अब ना गहूँ हाथ हथियार
बहुत वर्ष बीते महुबेमें ❋ हम ना गहो हाथ हथियार।
माया परबल है ईश्वरकी ❋ सो प्रभु राखो धर्म हमार॥
तुमहिं पठायो परमेश्वरने ❋ तुमने राखी लाज हमार ॥
इतनी सुनिके सैयद बोले ❋ तुम सुनि लेउ रजा परिमाल
जहाँ पसीना गिरै तुम्हारो ❋ तहँ देदेउँ रक्तकी धार ।
ऐसे बात भई सैयदसे ❋ बहुते खुशी भये परिमाल॥
हाल सुनाऊँ अब आगेको ❋ यारो सुनियो कान लगाय।
मीरां ताल्हन बनरसवाले ❋ बेटा नाती संग लिवाय ॥
कोई कारज हित गये बनारस ❋ पाई खबरि माहिल परिहार
माहिल चलिभे तब उरईसे ❋ लिल्ली घोडी पर असवार

आठ रोजको धावा करिकै ❀ गढ माडोमें पहुँचे जाय ।
जहाँ कचहरी थी जम्बैकी ❀ माहिल उतरि परे हरगाय
करी बन्दगी तब जम्बैको ❀ घोडी थामिलई थनवार ।
आवो आवो उरई वाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
माहिल बोले तब राजासे ❀ तुम सुनि लेउ बघेलेराय ।
मीरा ताल्हन बनरस पहुँचे ❀ खाली पडा महोबा गाँव ॥
फेंट बँधैया तहँ कोइ नाहीं ❀ चलिकै लूटि लेउ करवाय
औसर चूके फिरि पछितैहौ ❀ आवै घडी न बारम्बार ॥
यह मन भाय गई करियाके ❀ औ महुबेको भया तयार ।
माहिल चलिभे गढ माडोसे ❀ औ उरईमें पहुँचे आय ॥
राजा जम्बैने ललकारो ❀ बेटा सुनो करिंघाराय ।
काम तुम्हारो ना जैवेको ❀ ना महुबे पर होउ तयार ।
तुमहिं लूटिबो ना सोहत है ❀ तुम राजनके राजकुमार ।
कही न मानी वा करियाने ❀ अपनो कूच दियो करवाय
आठ रोजको धावा करिकै ❀ गढ महुबेमें पहुँचो आय ।
आधिराति केरे अमलामें ❀ दशपुरवामें पहुँचो जाय ॥
सोवत बाँधो दस्सराजको ❀ बच्छराजको लियो बँधाय ।
महल लूटिलो उन दोउन को ❀ सिगरो गहनो लयो उठाय
हार नौलखा देवै पहिरे ❀ सोऊ तुरतै लियो छिनाय ।
माल खजाना चन्द्रवंशको ❀ सब लै लियो करिंघाराय
गज पचशावद दस्सराज को ❀ सो करियाने लियो खुलाय
लाखा पातुर दस्सराजकी ❀ घोडा पपीहा लियो मँगाय
जौन वस्तु देखी सबुहेपर ❀ सो लै गयो करिंघाराय ।
करी बीरता क्या करियाने ❀ चोरी करी महोबे माहिं ॥
लानति ऐसी रजपूतीपर ❀ तेगा बांधनको धिरकार ।

माल पराया जो कोउ ताकै ❋ चोरी करै पराई आय ॥
धोखा देवै जो काहूको ❋ ताको बार बार धिक्कार।
पर उपकार करै दुनियाँमें ❋ सबविधि सुखी करै नर नार
काम बनावै जो काहूको ❋ ताको जन्म धन्य संसार।
कारिया पहुँचो गढ माडोमें ❋ जीतिको डंका दियो बजाय
दस्सराज औ बच्छराजको ❋ पत्थर कोल्हू दयो पिराय।
शीश काटिकै दोउ भैयनको ❋ सो वरगदमें दयो टँगाय ॥
हार नौलखा देवै वारो ❋ पहिरै नित्य बिजैसिनि रानि।
नित उठि नाचै लाखा पातुर ❋ राजा जम्बैके दरबार ॥
गज पचशावद दस्सराजको ❋ तापर चढै करिंघाराय।
हियाँकि बातें तो यहँ छोडो ❋ अब महुबेको सुनो हवाल॥
राम बनावै सो बनि जावै ❋ बिगडी बनन २ बनिजाय
देवै ब्रह्मा दोनों रोवैं ❋ हा! दैयागति कही न जाय॥
सुनी खबरि जब परिमालेने ❋ तुरतै गिरे धरनि मुरझाय।
जितनी रानी चन्देलेकी ❋ सबने छाँडिदई डिडकार॥
मल्हना रानी रोवन लागी ❋ बिपता कछू कही ना जाय।
ददै हाँकै रनियाँ रोवैं ❋ कोई धीर धरैया नाहिं॥
कछुक दिनामें ताल्हन सैदय ❋ आये नगर महोबे माहिं।
सुनी हकीकत गढ महुबेकी ❋ सैयद गिरे मूर्च्छा खाय॥
हाय हाय करि रोवन लागे ❋ अब कहँ मिलैं धर्मके भाय
कहा बिगारो तिन कारिया को ❋ बिन तकसीर सतायो आय
धोखा दीन्हा त्यहि कायरने ❋ कारिया तेरो बुरो हुइजाय।
अब कहँ पैहैं हम भैयनको ❋ यह दुख दियो मोहिं करतार
धावा मारौं जो माडोपर ❋ तौ कछु काम बननको नाहिं
कठिन लडाई है माडोकी ❋ कोई शूर बचन को नाहिं॥
बारह कोसन बबुरी बन है ❋ औ लोहागढ कोट कराल।

कहा हकीकति बन्दूकनकी ❀ तोपनिशाना ना अनियाय॥
देवै बोली तब सैयदसे ❀ सैयद सुनो हमारी बात।
अब तुम पालो सब लडिकनको ❀ सिगरो दुःख देउ बिसराय
कबहूँ लायक लडिका ह्वइहैं ❀ माडो लिहैं बापके दावँ।
तबहीं चुरिया हम तोडैंगी ❀ मिटिहै तबहिं पेटको डाहु॥
सुनिकै बातैं रानि देवैकी ❀ सैदय धीर धरो मन माहिं।
तीनि महीनाके बीतेपर ❀ ऊदनि आनि धरो औतार॥
कछु दिन बीते रनि ब्रह्माके ❀ सुलिखे आनि धरो औतार।
देवै बोली तब बाँदीसे ❀ बाँदी सुनले बात हमारि॥
मुह ना देखो या लडिकाको ❀ जियतै याहि देउ फिकवाय।
रँडिया ह्वइकै बेटा जन्मा ❀ कहिहैं सबै नगर नर नारि
बाँदी बोली तब देवैसे ❀ रानी सुनो हमारी बात।
राजपाट धन सम्पति मिलिहै ❀ लडिका फेरि मिलनको नाहिं
पुत्र बडो फल है दुनियाँमें ❀ पालो याहि मेटि तकरार।
बहुतक समुझाया बाँदीने ❀ देवैके मन नाहिं समाय॥
कर्महीन यह बालक जन्मा ❀ याने डारो बाप मराय।
टारो टारो मेरे सम्मुहसे ❀ औ जंगलमें देहु फिकाय॥
फिरिकै बाँदी बोलन लागी ❀ रनियाँ बारबार बलिजाउँ।
बिरवा सींचत सब दुनियामें ❀ यह आगेको ऐहै काम॥
बडे प्यारसे याको पालो ❀ माडो लिहै बापको दावँ।
मनै हमारे ऐसी आवै ❀ ह्वइहैं सबै तुम्हारे काम॥
ताते तुमको समुझावति हौं ❀ रानी मानो बात हमारि।
फेकन योग्य नहीं यह बालक ❀ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं
बात न मानी यक देवैने ❀ औ बाँदीसे कही सुनाय।
हुक्म अदूली जो तू करिहै ❀ तेरो पेटु दिहौं फडवाय॥
जल्दी ले जा या लडिकाको ❀ औ सम्मुहसे जाउ पराय।

लडिका

हाथ जोरिके बाँदी बोली ❀ रानी सुनो हमारी बात।
बालक जन्मा रानि देवैने ❀ औ यह हमसे कही सुनाय
वनमें फेंको या लडिकाको ❀ हमको हँसिहै सकल जहान
रंडिया ह्वैके बालक जन्मा ❀ हमरे जीवनको धिरकार ॥
इतनी बात सुनी मल्हना ने ❀ तब राजाको लियो बुलाय
हाल बताया सब देवै को ❀ सुनते सुन्न भये परिमाल ॥
केहि मति मारी है देवै की ❀ क्या कहुँ अक्किल गई हेराय
विष्णु बडे हैं ज्यों देवनमें ❀ वेदन सामवेदको गान ॥
तैसेह पुत्र बडो दुनियांमें ❀ औ देहीमें नैन प्रधान।
छाती चौडी या लडिका की ❀ नैना हिरनाकी अनुहारि॥
ऊंचो माथो मुख सुन्दर है ❀ अच्छे लक्षण परें दिखाय।
शूरवीर ह्वैहै यह बालक ❀ रानी वचन करौ परमान॥
बहुत हेतसे याको पालो ❀ मनमें करो न सोच विचार
इतनी सुनिके मल्हना रानी ❀ मनमें बहुत खुशी होइजाय
लैके लडिका मल्हना रानी ❀ पालन करन लगी करि प्यार
एक दूधको ब्रह्मा पीवै ❀ दूजो पियैं उदयसिंह राय॥
दूध पिआवैं अमखुरवनसे ❀ दोनों पुत्र गोद बैठाय।
दिनदिन बढनलाग नर ऊदनि ❀ योधा भीमसेन औतार ॥
बहुत प्यारसे मल्हना पाले ❀ अमखुरवनसे दूध पिआय।
कछु दिन बीते चन्द्रवंशमें ❀ उपजा आय पुत्र रणजीत॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा ❀ ढेबा रणजित औ सुलिखान
यहि बिधि प्रकटे सातौ लडिका ❀ शोभा कछु कही ना जाय।
खेलत डोलें सब आँगनमें ❀ सबको मल्हना करे दुलार॥
आल्हा बोले रानि मल्हनासे ❀ मैं तरवारिहा पूत तुम्हार।
बोली मल्हना तब आल्हासे ❀ जुग जुग जियो लडैते लाल

सब तरवारिहा पूत हमारे ❀ पानी पिऔं उतारि उतारि
नितनित लाड करैं लडिकनको ❀ ह्वैके खुशी मल्हनदे रानि॥
सुन्दर सुन्दर कपडा लैके ❀ सो लडिकनको दये पहिराय
कडा सोबरनके पहिराये ❀ चीरा कलँगी दई बँधाय ॥
लै तरवारैं छोटी छोटी ❀ सो लडिकनको दई गहाय ।
इन्दा नाई चन्द्रवंशको ❀ ताको मल्हना पठयो बुलाय
नाई आयो जब महलनमें ❀ तब मल्हनाने कही सुनाय ।
तुम लै जावो इन लडिकनको ❀ जहँ दरबार चन्द्रसरदार ॥
संग लैलियो उन लडिकनको ❀ नाई गयो राज दरबार ।
जबहीं लडिका बँगला पहुँचे ❀ तुरतै उठ रजा परिमाल ॥
बहुत प्यारसे लै लडिकनको ❀ अपनी छाती लियो लगाय
दई मिठाई सब लडिकनको ❀ औ महलनको दियो पठाय
उठी कचहरी जब राजाकी ❀ महलन गये चँदेल राय ।
यक ललकार दई मल्हनाको ❀ रानी अक्किल गई तुम्हार॥
वंश नशैबेको लागी हो ❀ बँगलै लडिकन दियो पठाय
हाथ जोरिकै रानी बोली ❀ स्वामी सुनो हमारी बात ॥
दूध पूत नाहीं छिपिबेको ❀ नाहीं छिपै सम्पदा राज ।
अबहिं तो लडिका बँगला पहुँचे ❀ आगहिं खेलत फिरैं शिकार
यह सब लडिका समरथ होइहैं ❀ यकदिन प्रगट होयँ संसार ।
इतनी बात सुनी मल्हनाकी ❀ मनमें खुशी भये महराज॥
राम बनावै सो बनिजावै ❀ बिगडी बनत बनत बनिजाय
कछुक दिना बीते महुबेमें ❀ आये अमरनाथ महराज ॥
खबरि पहुँचिगइ रंगमहलमें ❀ आये अमर गुरू महराज ।
मल्हना दिवला ब्रह्मा रानी ❀ सब मिलि आय गई तत्काल॥
करि परिकर्मा अमरनाथकी ❀ सातों लडिका करे अगार
लडिका डारि दिये चरणोंमें ❀ हाथ जोरिकै कही सुनाय॥

शरण तुम्हारी सब लडिकाहैं ❋ जानो इनहिं आपनो दास ।
दाया करिके इन लाडिकनपर ❋ अपनो हाथ धरो महराज ॥
चारो ओर बसत बैरी हैं ❋ केहिविधि बनें हमारे काज ।
यह सुनि बोले अमरनाथजी ❋ रानी सुनो महोबे क्यार ॥
सोच त्यागि देउ तुम जियरासे ❋ सब विधि भला करे करतार
ये सब लडिका समरथ होइ हैं ❋ होइ हैं सबै तुम्हारे काम ॥
साखा चलि है बावनगढमें ❋ जिति हैं बडे बडे बलवान ।
इतनी कहिकै अमरगुरूने ❋ लडिका ठाढे करे अगार ॥
सूरति देखी उन लडिकनकी ❋ मनमें खुशी भये गुरुराय ।
पीठी ठोकी जब आल्हाकी ❋ तब यह कही गुरू महराज ॥
जगमें तुम्हरो साखा चलिहै ❋ होइहै जीति समरके माहिं ।
पीठी ठोकी फिर ऊदनिकी ❋ बोले अमरनाथ तत्काल ॥
वज्रकि देही या लडिकाकी ❋ जामें गडै नाहिं हथियार ।
हाथ फिराया नर मलिखे पर ❋ काया सबै वज्र होइ जाय ॥
हाथ बढावन लगे पाँवपर ❋ तब ब्रह्माने कही सुनाय ।
पाँव न छुइयो तुम चेलाके ❋ नहिं घटिजैहै धर्म हमार ॥
यह सुनि बोले अमरगुरूजी ❋ रानी सुनो बनाफर क्यार ।
सिगरी काया भई वज्रकी ❋ याके तलुअनमें है काल ॥
शस्त्र लागिहै जब तलुवामें ❋ तब ना बचे तुम्हारो लाल ।
फिर कर परसा ब्रह्मानँदपर ❋ सारा देह वज्र होइ जाय ॥
तुम्हरी बरोबरिको ताहर है ❋ नहिं दूजको वार बिसाय ।
हाथ फिराया फिरि सुलिखेपर ❋ काया वज्र रूप होइ जाय॥
तुम्हरी बरनी है धाँधूसे ❋ ना दूजेसे काल तुम्हार ।
फिर कर परसा नर ढेबापर ❋ औ रणजित पर फेरो हाथ ॥
वज्रकि काया करी गुरूने ❋ अपनी मढी पहुँचे जाय ।
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ ब्रह्मा रणजित औ सुलिखान

सातौ लडिका दिनदिन बाढैं ❋ खेलैं राजमहलके माहिं ।
करै चौकसी रानी मल्हना ❋ सबको देखि देखि खुश होय॥
राम बनावै सो बनिजाव ❋ बिगडी बनत बनत बनिजाय
सोई बनाई रघुनन्दन ने ❋ समरथ भये बनाफरराय ॥
ताल्हन सैयद बनरसवाले ❋ जो सब लडिकनके उस्ताद।
युक्ति बताई सब लरिबेकी ❋ दीन्हें अस्त्र शस्त्र सिखलाय
आल्हा मलिखे औ बचऊदनि ❋ चौथे ब्रह्मा राजकुमार ।
चारौ लडिका भये जोरावर ❋ जिनके बलको नाहिं सम्हार
मलिखे ऊदनिके समुहेपर ❋ बिरला शूर गहे हथियार ।
जो कोइ देखै इन लडिकनको ❋ मनमें बहुत खुशी होइजाय
फिर तदबीर करी मल्हनाने ❋ सातौं लडिका लिये बुलाय।
सात बछेडा बडी राशिके ❋ सो मँगवाये मल्हनदे रानि
घोडा करिलिया बडी राशिको ❋ सो आल्हाको दियो गहाय।
घोडा हरनागर बडी राशिको ❋ सो ब्रह्माको दियो गहाय ॥
घोडि कबुतरी बडी राशिकी ❋ सो मलिखेको दई गहाय ।
घोडा बेंदुला मल्हना लैकै ❋ सो ऊदनिको दो पकराय।
घोडा मनुरथा मल्हना लैकै ❋ सो ढेबाको दियो गहाय॥
घोडी हिरोंजिनि मल्हना लैकै ❋ सो सुलिखेको दई गहाय ।
घोडी हिरोंजिनि दुसरी लैकै ❋ सो रणजितको दइ पकराय
फिरि हँसि बोली मल्हनारानी ❋ लडिकौ सुनो हमारी बात ॥
भोर होत खन झाबर जैयो ❋ वनमें खेलियो जाय शिकार।
हिरना लैहै जो जंगलसे ❋ सो तरवारिहा पूत हमार ॥
भोर होतही सिगरे लडिका ❋ अपने घोडनपर असवार ।
जायकै पहुँचे सब झाबरमें ❋ बनमें खेलत फिरैं शिकार॥
तीनि पहर जंगलमें होइगे ❋ ना काहूको मिली शिकार ।
आल्हा मलिखे ब्रह्मा ढेबा ❋ रणजित और बीर मलिखान

ये सब लौटि गये महुबेको ❋ ठाढे ऊदनि करै विचार।
ना शिकार वनमें हम पाई ❋ क्याहिवैधि जैहों नगर महोब
तौलों हिरना यक जंगलसे ❋ रसबेंदुलके भजो अगार।
घोडा बेंदुलाको धरि दाबो ❋ औ हिरनाके परो पिछार॥
हिरना पहुँचो सो उरईमें ❋ औ बगियामें गयो समाय।
ऊदनि ढूंढ़ं वा हिरनाको ❋ बगिया गर्द दई करवाय॥
तब ललकारो तहँ मालीने ❋ ओ राजनके राजकुमार।
कौन देशके तुम ठाकुर हौ ❋ बगिया गर्द दई करवाय॥
जो सुनिपैहं माहिल ठाकुर ❋ तुम्हरो घोडा लिहैं छिनाय।
इतनी सुनिकै ऊदनि तडपे ❋ औ मालीसे कही सुनाय॥
देश हमारो नगर महोबो ❋ जहँपर बसत रजा परिमाल
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार॥
कौनसो क्षत्री है दुनियाँमें ❋ जो मेरो घोडा लेय छिनाय
इतनी कहिकै ऊदनि चलिभे ❋ औ महुबेकी पकरी राह॥
एक पहर केर अरसामें ❋ गढ महुबेमें पहुँचे आय।
दुसरे दिन सब लडिका चलिभे ❋ वनमें खेलन गये शिकार
हिरना मारो सबने मिलिकै ❋ सो मल्हनाके धरो अगार।
करैं सवारी सब घोडनपर ❋ नित २ खेलन जायँ शिकार
सुनि सुनि बातैं सब लडिकनकी ❋ बहुतै खुशी होयँ परिमाल
आल्हा ऊदनि मलिखे सुलिखे ❋ माडो लिहैं बापके दावँ॥
तीन लडाई आगे लिखिहों ❋ यारो सुनियो कान लगाय।
सुमिरन करिये नारायणको ❋ जो दीनन पर रहत दयाल॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ अब माडोको लिखौं हवाल

इति महोबेकी लडाई सम्पूर्ण।

श्रीः ।

अथ माडौकी लडाई ।

(आल्हा आदि शूरबीरोंका माडौपर चढाई करना.)

सुमिरन-दोहा ।

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सवैया ।

हे भगवन्त अनन्त बली जन, आपन कोरि विनै उर धारहु ।
मोह मदादि विकार महातम, शीघ्र कृपा करिके निरवारहु ॥
दासकि आश दयाकरिसारहु, आनिपरे सोइ संकट टारहु ।
आरत दीन पुकारत हों, जनको भवसागर पार उतारहु ॥
राम बामदिशि श्रीसीताजी ❋ सोहत लखन दाहिनी ओर ।
भरत शत्रुहन बाम बिराजत ❋ पाँचौ मूर्ति सोह इकठोर ॥
पग लटकाये रामचंद्रजी ❋ चापत चरण वीर हनुमान ।
सिंहासनपर हैं रघुनन्दन ❋ नित कल्यान करन यह ध्यान
सुयश सुनत श्रीरामचन्द्रको ❋ निशिदिन पवनपुत्र हनुमान ।
हो सब लायक सुर सुखदायक ❋ नायक सुभट बुद्धि आगार ॥
हे प्रभु तुम्हरे चरणकमलपर ❋ शिर धरि विनय करौं बहुबार ।
गावन चाहत गुण वीरनके ❋ बेडा खेइ लगावहु पार ॥
प्रात सुमिरिये नारायणको ❋ भोरहि लेउ रामको नाम ।
बहुरि सुमिरिये जगदम्बेको ❋ जाते होंय सिद्धि सब काम ॥
छोंडि सुमिरनी अब आगे मैं ❋ कहिहौं हाल करिंघा क्यार
जैसे मारो आल्हा ऊदनि ❋ औ जम्बैको कियो सँहार ॥

बदलो लैके अपने बापको ❋ माडो खोदि कराई ताल।
जीति बखान करौं आल्हाकी ❋ हितसे सुनौ वृद्ध अरु बाल॥
चारो जुगसे है चलि आई ❋ यह मर्याद प्रगट संसार।
जो कोउ मारत है काहूको ❋ ताको हनत आपु करतार॥
बिना बिचार किये रावणने ❋ बनमें हरी जानकी आय।
मारि गिरायो त्यहि रघुनन्दन ❋ औ सब दीन्हों वंश नशाय
बाली बानरको त्रेतामें ❋ मारो बिना हेतु रघुनाथ।
उसी बालिने व्याधरूप ह्वै ❋ बदलो लियो कृष्णके साथ
पिता पातकी जाको होवै ❋ ताको पुत्र कुढत दिन रात।
पुत्र पातकी होत जासुको ❋ ताको सभी गोत्र नशिजात
बिन कसूर मारे करियाने ❋ सोवत दस्सराज बछराज।
समय आयगो जब करियाको ❋ मारा गयो मेटि सब राज॥
सो सब आल्हा वर्णन करिहौं ❋ यारो सुनियो कान लगाय
भई लडाई गढ माडोमें ❋ जीते जंग बनाफरराय॥
गाँसी बखानों बघऊदनिकी ❋ औ तरवारि बीर मलिखान
शकुन बखानों मैं ढेवाको ❋ सैयद केर युद्ध घमसान॥
कछुक बखान करों ब्रह्माको ❋ जो महुबेको राजकुमार।
विजय बखान करों आल्हाकी ❋ नौसे झंडा चलत अगार॥
बारह बर्ष केर ऊदनि भे ❋ देही सबै सजैं हथियार।
घोडा बेंदुलाको मँगवायो ❋ तापर फाँदि भये असवार
जायके पहुँचे तब पनिघटपर ❋ विषधर उरईके मैदान।
पानी भरतीं जहँ पनिहारी ❋ तिनसों ऊदनि कही सुनाय
घोडा हमारो यह प्यासो है ❋ सो तुम पानी देउ पिआय
बोली बाँदी तब माहिलकी ❋ ओ परदेशी बात उनाउ॥
कौन गाँवके तुम ठाकुर हो ❋ अपनो नाम देउ बतलाय

इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात॥
नगर महोबा यक बस्ती है ❋ जहँपर बसैं रजा परिमाल।
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार॥
यह सुनि बाँदी बोलन लागी ❋ घोडे पानी पिऐहौं नाहिं।
माहिल राजाकी बाँदी हौं ❋ राजै खबरि सुनैहौं जाय॥
जो सुनि पैहैं माहिल ठाकुर ❋ तुम्हरो घोडा लिहैं छिनाय
कही हमारी ऊदनि मानौ ❋ चुप्पे लौटि महोबे जाउ।
इतनी सुनिकै ऊदनि जरिगे ❋ औ गुलेलको लियो उठाय
जितनी गागर थीं पनिघटपर ❋ ऊदनि फोरि दई तत्काल॥
हाँकि बछेरा ऊदनि चलिभे ❋ औ महुबेकी पकरी राह।
रोवति बाँदी गइ महलनमें ❋ औ माहिलसे कही सुनाय
माहिल ठाकुर तुम्हरे राजमें ❋ ऊदनि इज्जत लई हमारि।
जितनी गागर थीं कुँअटापर ❋ सो सब ऊदनि दई गिराय॥
सुनी बात सब यह बाँदीकी ❋ माहिल अग्निज्वाल होइजाय
लैकै कागद कलपीवारो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ॥
पहिले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पाछेसे लिखी जुहार।
लिखी हकीकत ता पाछूसे ❋ पढिया याहि चँदेलेराय॥
तुम्हरे घरके जो रहुआ हैं ❋ नित उठि रारि मचावत आय
ऊदनि लडिका जो तुम्हरे घर ❋ सो उरईमें उरझ्यो आय।
जितनी गागरि थीं पनिघटपर ❋ सो गुल्लनसों दई गिराय॥
उधम मचायो यहँ सखियनसँग ❋ सो तुम तुरत देउ समुझाय।
कबसे ऊदनि भये जोरावर ❋ कबसे कमर बँधी तरवारि।
टँगी खोपडिया दस्सराजकी ❋ माडो लेयँ बापको दाँव॥
चिट्ठी लिखिकै यह माहिलने ❋ सो धावनको दइ पकराय।
धावन चलिभो तब उरईसे ❋ औ महुबेमें पहुँचो जाय॥

जाय पहूँचो जब फाटक पर ❋ तब साँडिनीको दियो बिठाय
धावन उतरि परो जल्दीसे ❋ औ ड्योढीमें पहुँचो जाय॥
लगी कचहरी चन्देलेकी ❋ भारी लागि रहा दरबार।
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन ❋ तापर तपैं रजा परिमाल॥
सात कदमसे करी बंदगी ❋ धावन रहिगो माथ नवाय।
नजरि बदलि गइ चन्देलेकी ❋ औ धावन तन रहे निहारि॥
लैके पाती सो धावनने ❋ त्यहिं गद्दीपर दई चलाय।
पाती लैके परिमालेने ❋ आँकुइ आँकु नजरिकरिजाय
लई लेखनी कर कंचनकी ❋ उत्तर लिखो रजा परिमाल
चिट्ठी भेजत हौं उत्तरमें ❋ पढियो याहि माहिलपरिहार
जैसेइ लडिका ये हमरे हैं ❋ तैसेइ लडिका लगें तुम्हार
दोष न मानो इन लडिकनको ❋ इनकी माफ करो तकसीर
गागरि माँटीकी फोरी है ❋ कहु सोनेकी देउँ पठाय।
बात चलैयो ना माडोकी ❋ कलहा दस्सराजको लाल॥
जो सुनिपैहैं ऊदनि बाँकुडा ❋ तुरतै त्यारी लिहैं कराय।
जो चढिजैहैं गढ माडोको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय॥
बारी उम्मिरिके लडिका हैं ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय
पाती लिखिके परिमालेने ❋ सो धावनको दई गहाय॥
धावन चलिभो गढ महुबेसे ❋ औ उरईमें पहुँचो जाय।
लैके पाती चन्देलेकी ❋ सो माहिलको दई गहाय॥
खोलिके पाती माहिलबाँची ❋ मुँहसे कछू न आई बात।
तीनि महीनाके बीतेपर ❋ फिरिके ऊदनि भये सवार॥
घोडा बेंदुला नाचति आवै ❋ ऊदनि खेलत फिरैं शिकार।
मनमें आई बघऊदनिके ❋ औ उरईकी पकरी राह॥
एक पहर केरे अरसामें ❋ फुलबगियामें पहुँचे जाय।

जोडी मारी यक हिरनाकी ❋ बगिया गर्द गर्द होइजाय॥
देखि हकीकति माली चलिभो ❋ औ अभईतर पहुँचो जाय
कहीहकीकतित्यहिबागियाकी ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
ऊदनि आये हैं महुबेसे ❋ यहँ पर उधम मचायो आय
जोडी मारी है हिरनाकी ❋ बगिया गर्द दई करवाय ॥
अभई चलिभे तब दंगलसे ❋ औ ऊदनि तर पहुँचे आय
यक ललकार दई ऊदनिको ❋ क्यों तुम उधम मचायो आय॥
काहे बगिया गर्द कराई ❋ क्या कमबख्ती लगी तुम्हार
जल्दी चलेजाउ समुहेसे ❋ नाहिं घोडासे दिहौं गिराय
इतनी सुनते ऊदनि जरिगे ❋ नैना अग्निज्वाल होइजायँ
उतरि बेंदुलासे भुइँ आये ❋ औ अभई ढिग पहुँचे आय
डारि पेंच इक यकदस्तीको ❋ औ अभईको दियो गिराय
बाँह पकरिके झटका दीन्हों ❋ औ घोडापर भयो सवार
लैके जोडी सो हिरनाकी ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
यक हरकारा बदलति आवै ❋ औ माहिल तर पहुँचो आय
करी बन्दगी तब माहिलको ❋ औ बगियाको कहो हवाल
ऊदनि आये थे महुबेसे ❋ बागिया गर्द दई करवाय ॥
बाँह उखारी तिन अभईकी ❋ महुबे घोडा गये भगाय ।
इतनी सुनिके माहिल जरिगये ❋ औ बगियामें पहुँचे जाय॥
गोदी लैके उन अभई को ❋ औ नलकीमें दियो पौढाय।
सो पठवाइ दियो महलनको ❋ लिल्ली घोडी लई मँगाय ॥
कूदि बछेरी पर चढि बैठे ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
तीनि पहर केरे अरसामें ❋ गढ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
लगी कचहरी चन्देलेकी ❋ अजगर लागिरहा दरबार ।
जाय पहुँचे सो समुहे पर ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥

करी बन्दगी जब माहिलने ❀ तब हँसि कही रजा परिमाल
हाल बतावो तुम उरईको ❀ काहे बदन गयो मुरझाय ॥
बोले माहिल तब राजासे ❀ तुम सुनिलेउ चँदेलेराय ।
तुमने पालो है ऊदनिको ❀ दूजी करी हमारे साथ ॥
उरई केरी फुलबगियाको ❀ ऊदनि गर्द दिया करवाय ।
बाह उखारि दई अभईकी ❀ दाख छुहारे दिये उजारि ॥
कबसे जोगावर ऊदनि ह्वैगे ❀ कबसे बाँधि लिये हथियार
करिया आयो गढ माडौंसे ❀ जो जम्बै को राजकुमार ॥
दस्सराज औ बच्छराजकी ❀ तुरतै मुश्क लई बँधवाय ।
गज पचशावद लाखा पातुर ❀ घोडा पपीहा संग लिवाय
महल लूटिलो चन्द्रवंशको ❀ हार नौलखा लिये लुटाय ।
माल खजानाको ल लीन्हों ❀ माडौं गया करिंघाराय ॥
दस्सराज औ बच्छराजको ❀ पत्थर कोल्हू दियो पेराय ।
टँगी खोपडिया दस्सराजकी ❀ क्यों ना लेयँ बापको दाउँ॥
कबसे जोगावर ऊदनि ह्वैगे ❀ कबसे कमर धरी तलवारि
परिहैं समुहे जब करियाके ❀ तब सब होश बन्द होयजायँ
इतनी सुनिलइ जब माहिलकी ❀ बोले तुरत रजा परिमाल ।
जो नुक्सान करो ऊदनिने ❀ हरजा दुगुना दिहैं तुम्हार॥
चर्चा करिहो जो माडौंकी ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ।
जो सुनिपैहे उदनि बाँकुडा ❀ कलहापुन दिनलै क्यार ॥
त्यारी करिहै वह माडौंकी ❀ जो मरिबेको नाहिं डेराय ।
कान अवाज परी ऊदनिके ❀ तुरतै हाथ जोरि रहिजाय ॥
कौने मारो बाप हमारो ❀ को जम्बैको राजकुमार ।
कौन करिंघा है माडौंको ❀ ददुआ हाल देउ बतलाय ॥
टँगी खुपडिया कहँ दादाकी ❀ कौने कोल्हू दियो पेराय ।

करो बहाना तब राजाने ❋ औ ऊदनिको दियो जवाब
काठिन लडाई भइ पैरागढ ❋ तहईं जूझे बाप तुम्हार।
और नाम वाको सिलहट है ❋ वाही गढके हैं दुइ नाम।
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❋ तब माहिलसे कही सुनाय॥
चर्चा कीन्हीं जो माडौकी ❋ सो सब हाल देउ बतलाय
यह सुनि माहिल बोलन लागे ❋ तुम देवैसे पूँछो जाय।
हाल हमारो ना जानो है ❋ देवै हाल दिहै बतलाय॥
इतनी सुनिकै ऊदनि तडपे ❋ गुस्सा गई देहमें छाय।
छुटा पसीना सब देहीसे ❋ चोली खंड खंड हुइ जाय॥
छाय लालरी गइ नैननमें ❋ त्योरी चढी उदयासिंह क्वार
यक ललकार दई माहिलको ❋ मामा तेरो बुरो होइजाय॥
चर्चा करिकै गढ माडौकी ❋ फिरि कछु हाल बतायो नाहिं।
बदलो लैहौं अपने बापको ❋ तब जियराको डाह बुझाय।
मूड काटिकै मैं जम्बैको ❋ सो महुबेमें दिहौं टँगाय।
मारि शिशोहिन चहला करिहौं ❋ माडो खोदि करैहौं ताल॥
शीश काटि लैहौं करियाको ❋ माल खजाना लिहौं लुटाय।
इतनी कहिकै ऊदनि चालिभे ❋ मुखपर रही लालरी छाय॥
कपडा भीजिगये ऊदनिके ❋ पहुँचे रंगमहलमें आय।
जहाँ पै बैठी माता देवै ❋ तहँपर गये उदयसिंहराय॥
हाथ जोरिकै ऊदनि ठाढे ❋ माता देखि देखि रहि जाय
बोली देवै तब ऊदनिसे ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
छुटो पसीना क्यों देहसे ❋ क्यों मुख रही लालरी छाय
क्या काहूने कछु कहि दीन्हों ❋ या कहुँ भयो बखेडा जाय॥
हाल बतावो तुम जल्दीसे ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय।
इतनी कहिकै बांह पकरिलइ ❋ औ छातीसे लियो लगाय॥

कौन मुसीबत तुमपर परिगइ ❋ बेटा कहौ मर्मकी बात ।
इतनी सुनिके ऊदनि बोले ❋ माता बार बार बलिजाउँ ॥
हाल बतावो तुम साँचो मोहिं ❋ नाहीं पेटु मारि मरिजाउँ ।
को है राजा माडोवारो ❋ को जम्बैको राजकुमार ॥
कौने मारे बाप हमारे ❋ काको नाम करिंगाराय ।
टँगी खुपडिया है दादाकी ❋ हमरे जीवनको धिरकार ॥
इतनी बात सुनी देवैने ❋ मनमें गई सनाका खाय ।
देवै सोची तब अपने मन ❋ माहिल तेरो बुरो होइजाय ॥
वंश नशैवेको लागो है ❋ जो यह चर्चा दई सुनाय ।
सोचि समुझिके देवै बोली ❋ बेटा मेरे लडैते लाल ॥
बात न भावै म्वहिं काहूकी ❋ होनी होनहार होइजाय ।
कर्म लिखो फल सब भोगत है ❋ जो कछु हमरे लिखी लिलार
सो हम भोगि रहीं दुनियामें ❋ भावी प्रबल होत संसार ।
फिरिके ऊदनि बोलन लागे ❋ माता हम मनिवेके नाहिं ॥
साँप डसि गया माता हमको ❋ सो विष गया देहमें छाय ।
काढि कटारी लइ ऊदनिने ❋ सो छातीसे लई लगाय ॥
हाल बतैहौ ना माता तुम ❋ तौ मैं देहौं जान गँवाय ।
देखि हकीकति तब ऊदनिकी ❋ देवै हालु बतावन लागि ॥
रोवन लागी देवै माता ❋ नयनन बहै नीरकी धार ।
क्या गति बरणौं त्यहि समयाकी ❋ बिपता कछू कही ना जाय
कारिया आयो गढ माडोका ❋ जो जम्बैको राजकुमार ।
आइके पहुँचो गढ महुबेमें ❋ राजा चंद्रवंशके द्वार ॥
फाटक बन्द हते द्वारेके ❋ तहँई हते बनाफरराय ।
हार नौलखा माँगन लागो ❋ ना काहूने दियो जवाब ॥
तबहीं फाटक तोडन लागो ❋ तुरते बजन कुल्हाडा लाग ।

तुरत सलाह करी ताल्हनने ❋ चारो बीर बनाफरराय ॥
सब मिलि झपटे तब करियापर ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवार
मारिशिरोहिन चहला करिदिये ❋ ऐसी कठिन करी तरवारि
करिया भागि गयो माडोको ❋ नाहीं मिलो नौलखा हार ।
कछु दिन बीते माडौवारो ❋ फिरि चढि आयो करिंघाराय
आधी राति केरे अमलामें ❋ दशहर पुरवा लियो लुटाय
सोवत बाँधो तुम्हरे बापको ❋ औ चाचाको लियो बँधाय
हार नौलखा हमसे छीनो ❋ घोडा पपीहा लियो छोराय
लाखा पातुर तुम्हरे बापकी ❋ सो लेगयो करिंघाराय ॥
गज पचशावद तुम्हरे बापको ❋ तापर चढे करिंघाराय ।
बाँधि लेगयो सो दोनोंको ❋ सो माडोमें छोडो जाय ॥
पत्थर कोल्हूमें पिरवायो ❋ खोपडी बरगद दई टँगाय ।
जौन मुसीबत हमपर परिगइ ❋ सो कछु बिपति कही ना जाय
बारह वर्षसे मैं रंडिया हों ❋ चूरी एक उतारी नाहिं ।
जब क्यहुलायकलडिकाहोइहैं ❋ माडो लिहैं बापको दाउँ ॥
चुरी उतारिहौं तब सागरपर ❋ तौ छातीको डाहु बुझाय ।
इतनी सुनिलइ जब ऊदनिने ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
तडपे ऊदनि तब मातासे ❋ तुम सुनिलेउ दिवलदे माय ।
बदलो लेहौं मैं ददुआको ❋ माडो खोदि करैहौं ताल ॥
शीश काटिकै मैं करियाको ❋ औ जम्बैको शीश उतारि ।
सो टँगवाय दिहौं महुबेमें ❋ दूनी लूटि लिहौं करवाय ॥
वंश नशैहौं मैं करियाको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ।
इतनी सुनिकै देवै बोली ❋ बेटा मेरे लडैते लाल ॥
कही हमारी बेटा मानो ❋ घरमें बैठि रहो अरगाय ।
कठिन मवासी गढ माडौ है ❋ तुम पर मारु सही ना जाय ॥

बारह कोसको बबुरी बन है औ लोहागढ कोट कराल ।
जहँ गति नाहीं है मानुषकी ना काहूकी पार बसाय ॥
उमिरि तुम्हारी यह थोरी है रहि रहि मेरो प्राण घबराय ।
फिरिकै ऊदनि बोलन लागे माता सुनलो बचन हमार ॥
जबलौं बदला हम ना लीहैं ❋ मिटिहै नाहिं जिगरको घाउ ।
बात मानिहैं ना तुम्हरी हम ❋ चलिकै लिहैं बापको दाउँ ॥
देवै पहुँची लै ऊदनिको ❋ जहँ पर हती मल्हनदे रानि ।
बात सुनाई सब देवैने ❋ औ मल्हनासे कही सुनाय ॥
अब तुम हटकौ इन ऊदनिको ❋ हमरी कही न मानैं बात ।
मल्हना समुझावै ऊदनिको ❋ मैं बेटाकी लेउँ बलाय ॥
कछु दिन बीते पर समरथहोय ❋ माडौ लिऔ बापको दाउँ ।
अबहिं उमिरि तुम्हरी थोरी है ❋ काहे दीहौ प्राण गँवाय ॥
जीवन धन हौ तुम सब हमरे ❋ ताते मानो कही हमार ।
कठिन माड ❋ जहँ मानुषकी नाहिं बिसाय
बज्रकी देही है करियाकी ❋ जामें नाहिं गडै हथियार ।
इतनी बात सुनी ऊदनि तब ❋ दोनों हाथ जोरि रहिजायँ ॥
हँसी खुशीसे आज्ञा दैदेउ ❋ माता हम मनिबेके नाहिं ।
जो कछु बात कहौ माता तुम ❋ हमरे मनमें नाहिं समाय ॥
तुरत पठावो म्वहिं माडौको ❋ लडिकै लेउँ बापको दाउँ ।
यह सुनि मल्हनासोचनलागी ❋ अब मैं हुक्म देउँ फरमाय ॥
कही हमारी यह ना मनिहै कल्हा देवकुँवरिको लाल ।
हुक्म दैदिया तब मल्हनाने जुग जुग जीवौ पुत्र हमार ॥
बिजय पाइहौ गढ माडौमें जगमें होय तुम्हारो नाम ।
सवा लाखको कंकन लैके सो ऊदनिके दियो बँधाय ॥
पीठी ठोंकी रनि मल्हनाने माडौ लेउ बापको दाउँ ।

ऊदनि संग लिये देवैने ❋ औ आल्हातर पहुँची जाय ॥
सैयद बैठे थे तहँनापर ❋ उनसे देवै लगी बतान।
जेठ हमारे तुम लागत हौ ❋ हमरी बात सुनौ मन लाय ॥
ऊदनि विचले हैं माडौको ❋ हमरी कही न मानैं बात।
संगै जैयो तुम ऊदनिके ❋ माडौ जूझ खेलैयो जाय ॥
कठिन मवासी गढ माडौ है ❋ रहि रहि मेरो जिया घबराय
ऊदनि बोले तानि आल्हासे ❋ दादा जल्द होउ तैयार ॥
बदलो लेहौं मैं ददुआको ❋ तब जियराको डाहु बुझाय।
आल्हा बोले तब ऊदनिसे ❋ भैया अक्किल कहाँ तुम्हारि
थोडी उम्मिरिके हम सब हैं ❋ बदलो सहज मिलनको नाहिं
टँगी खुपडिया ज्यों दादाकी ❋ तैसइ खुपडी टँगै हमार ॥
ऊदनि तडपे तब आल्हासे ❋ दादा बोलो बात सम्हार।
जिनके लडिका समरथ होइगे ❋ क्यों ना लेयँ बापको दाउँ ॥
सात कोठरीमें ना बचिहैं ❋ जा दिन ऐहै काल हमार।
थोडी फौज देउ जल्दीसे ❋ माडौ कूच जाउँ करवाय ॥
तुम सब घरमें सुखसे बैठो ❋ इकला जाय करौं तलवार।
इतनी सुनिके मलिखे बोले ❋ ऊदनि धीर धरो मनमाहिं ॥
संघै चलिहौं मैं माडौ को ❋ चलिकै लिहौं बापको दाउँ।
शीश काटि लैहौं करियाको ❋ औ जम्बेको डारिहौं मारि ॥
नीव खोदिकै गढ माडौकी ❋ नदी नर्मदा दिहौं बहाय।
सोच करो ना कछु जियरामें ❋ औ माडौको होउ तयार ॥
ऊदनि मलिखे दोनों विचले ❋ औ माडौको भये तयार।
ऊदनि बोले तब सैयदसे ❋ चाचा सुनौ हमारी बात ॥
बाप हमारे स्वर्ग सिधारे ❋ तुम्हरी गोद गये बैठार।
देउ सलाह हमें चाचा तुम ❋ कैसे मिलै बापको दाउँ ॥

बडो भरोसो म्वहिं तुम्हरो है ❋ अब गाढेमें आवौ काम ॥
यह सुनि ताल्हन बोलन लागे ❋ बेटा सुनो उदयसिंह राय ।
जबलौं जीवै बनरस वाला ❋ तुमको कौन पडी परवाहि॥
कठिन मोरचा जहँपर देखौ ❋ तहँ सैयद को देउ बताय ।
जहाँ पसीना गिरै पूतको ❋ तहँ दैदेउँ रक्तकी धार ॥
इतनी बात सुनी सैयदकी ❋ ऊदनि बहुत खुशी होइ जायँ
बोले मलिखे तब ढेबासे ❋ भैया सगुन देउ बतलाय ॥
समरसार की पोथी लैकै ❋ ढेबा सगुन विचारन लाग ।
ढेबा बोलो तब मलिखेसे ❋ भैया सुनौ हमारी बात ॥
सगुन हमारो यह भाषत है ❋ माडौ काम सिद्ध होइजायँ ।
रूप बनावौ तुम जोगिनको ❋ माडौ मेवै लेउ पँजियाय॥
हालु जानि कै सब माडौको ❋ तुरतै लेउ बापको दाउँ ।
इतनी बात सुनी मलिखेने ❋ बहुतक थान लयँ मँगवाय
सो रँगवायं सब गेरूसे ❋ पाँच गुदरियाँ लईं सिलाय
हीरा मोती मूँगा लैके ❋ सो गुदरिनमाँ दिये टँकाय
कडा मुबरनके हाथन माँ ❋ टोपिन जडे जवाहिर लाल।
बाइस पर्तनकी गुदरी हैं ❋ जिनमें छिपे पाँच हथियार
कुंडल सोहत हैं काननमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय।
हाथ सुमिरनी सब जोगिनके ❋ मुँहसे राम राम रट लागि॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ पँचये सैयद भये तयार ।
बोले मलिखे तुनि आल्हासे ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
अलख जगावो गढ महुबेमें ❋ माँगो महल मल्हनदे क्यार।
महल चेतावौ फिरि माताको ❋ ना पहिचानै दिवलदे माय॥
तब हम जानि हैं अपने मनमें ❋ माडौ लिहैं बापको दाउँ ।
सुनिकै बातैं नर मलिखेकी ❋ सबके मनमें गईं समाय ॥

तब सारंगी सैयद लैलइ ❋ आल्हा डमरू लई उठाय ।
लौ इकतारा नर मलिखेने ❋ ढेबा खँझरी लई उठाय ॥
लई बाँसुरी बघऊदनि ने ❋ औ चलि भये एकही साथ
राग रागिनी गावन लागे ❋ जिनमें उठैं बीर बैताल ॥
ठुमरी टप्पा भजन रेखता ❋ जोगी गावैं राग मलार ।
धुरपद सोरठ औ तिल्लाना ❋ गजल पर्ज पर तोरैं तान॥
डगरत चलिभे पांचौ जोगी ❋ रंगमहल तर पहुंचे जाय ।
अलख जगाई दरवाजेपर ❋ सिगरे मोहिं गये नर नारि
सूरति देखी जब जोगिनकी ❋ बाँदी जौनि मल्हनदे क्यार
बोली बाँदी रनि मल्हनासे ❋ मैं रानीकी लेउँ बलाय ॥
पाँच योगिया ऐसे आये ❋ जिनके रूप न बरने जायँ ।
इतनी सुनिकै मल्हना चालिभइ ❋ दरवाजे पर पहुँची आय॥
रूप देखिके तिन जोगिनको ❋ मल्हना बहुत खुशी होइजाय
भिक्षा देकै मल्हना बोली ❋ योगियो हाल देउ बतलाय॥
कौन देशके तुम जोगी हौ ❋ काहे डारे मूड मुडाय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
धोखे न रहियो तुम जोगिनके ❋ हमरो नाम उदयसिंहराय ।
बदला लैहैं हम दादाको ❋ तासों डारो मूँढ मुँडाय ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ जुग जुग जिऔ लड़ैते लाल
अब हम जानी अपने मनमें ❋ माडौ लिहौ बापको दाउँ ॥
इतनी सुनिकै योगी चलिभे ❋ जहँपर महल दिवलदे क्यार।
तहँ पर पाँचो योगी पहुँचे ❋ महलन अलख जगावनलाग
कान अवाज परी देवैके ❋ तब लग बांदी कही सुनाय ।
पांच योगिया ऐसे आये ❋ मानो राम लखन औतार॥
इतनी सुनिकै देवै चालिभइ ❋ औ फाटक पर पहुँची आय।

रूप देखिकै तिन योगिनको देवै उनसे लगी बतान ॥
कौन देशसे तुम आये हौ योगिओ कहाँ तुम्हारो ठाँव
बहुत पियारे हमको लागौ योगिओ करो इहाँ बिसराम
लडिका हमरे सब लायक हैं तुम्हरी सेवा करैं बनाय।
यह सुनि ऊदनि बोलन माता सुनौ हमारी बात ॥
लडिका तुम्हरे हम लागत हैं कुंछा लिये रहिउ नौमास।
ना पहिचानो तुमने माता समुहे सैयद खडे तुम्हार ॥
रानि कुसलाकी माडौ सबै लिहैं पँजिआय
भेद जानिकै लोहागढ को माडौ खोदि करैहौं ताल ॥
यह सुनि देवै बहुत खुशी भइ औ हँसि कही दिवलदे माय
अब हम जानी अपने मनमें माडौ लिहौ बापको दाउँ॥
भुजबल पूजिदिये लडिकनके टीका करो दिवलदे माय।
पीठी ठोंकी सब लडिकन की जुग जुग जिओ लडैते लाल
ज्यों जल बाढै श्रीगंगामें तुम्हरी रण बाढै तलवार।
युद्ध देखिहैं गढ माडौको हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार॥
इतनी सुनिकै जोगी चलिभे औ लश्कर में पहुँचे जाय।
बाना बदलो तब क्षत्रीको तुरत नगडची लियो बुलाय
बीरा देकै सैयद बोले ❋ लश्कर डंका देउ बजाय।
बजे नगाडा गढ महुबेमें ❋ लश्कर सजे बनाफर क्यार
बरनी ह्वइ गइ गढ माडौकी ❋ अब ना राखौ देर लगाय।
बजो नगाडा तब महुबेमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
बोलि दरोगा तोपन वारो चीरा कलँगी दई इनाम।
तोपैं सजवावौ जल्दीसे औ चरखिनपर देउ चढाय
तोप कालिका को सजवाया तोप संकटा लई सजाय।
हनू हँकारनि गर्भ गिरावानि ❋ तोप भवानी लई सजाय॥

लपकनि चन्द्र झपकनि । दोनौ तोपैं लईं सजाय ॥
तडपनि तोप सजाई ❀ भैरौं तोप लई सजवाय ।
बुर्ज मरोरनि पर्बत ढावनि ❀ किला तुडावनि लई सजाय
तोप लक्षिमना को सजवाया ❀ बंबकि तोप लई सजवाय ।
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो चरखिनपर दई चढाय
बोलि दरोगा हाथिनवारो ❀ सोने कडा दिये डरवाय ।
हाथी सजवावो जल्दीसे ❀ जिनको सजत न लागे बार
हुक्म पायकै चला दरोगा ❀ हाथी सबै सजावन लाग।
वडे वडे हाथी सजवाये ❀ छोटे पर्वत की उनहार ॥
हाथी दुइदन्ता सजवाये ❀ औ इकदन्ता लये सजाय।
भौंरागज अंगद पंगद गज ❀ औ मलयागिरि लये सजाय
मैन कुंज धौलागिरि साजे ❀ भूरा हाथी लये सजाय ।
मकुना हाथी सब सजवाये ❀ मुडिया हौदा दये धराय ॥
डारिकै गद्दा मखमलवारे ❀ तिनपर हौदा दये धराय ।
जडे जवाहिर अम्बारिनमें ❀ झालरि लगी मोतियन क्यार
यक यक हाथी के हौदा में ❀ बैठे चारि चारि असवार ।
बोलि दरोगा घोडन वारो हाथन कडा दये डरवाय॥
घोडा साजि लेउ जल्दी मे ना अब राखौ देर लगाय।
हुक्म पाइकै चलो दरोगा ❀ घोडा तुरत सजावनलाग॥
कच्छी मच्छी घोडा साजे ताजी मुस्की लये सजाय ।
लक्खा गर्रा हरियल साजे पंचकल्यानी लये सजाय॥
सब्जा सुर्खा घोडा साजे औ दरियाई लये सजाय ।
श्यामकर्ण घोडा सजवाये औ मुखभंजन करे तयार॥
चौधरि चाल कबूतर साजे ❀ घोडा सपेदा लये सजाय ।
घोडा पचरंगा सब रंगा ❀ घोडी हिरौंजिनि करी तयार॥

केसरि डारि दई मेहदीमें ❋ चरौं सुम्म दये रँगवाय।
पूँछ रँगाई सब घोडनकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
धरि कठलानी तिन घोडनपर ❋ ऊपर जीन दये धरवाय।
दई लगामें तब कंचनकी ❋ औ चाँदीकी डारि रकाब॥
लगे बकसुआ हैं सोनेके ❋ औ रेशमके तंग कसाय।
लैले कलँगी मोतीचूरकी ❋ सो कल्हनपर दई धराय॥
डेढपहर केरे अरसामें ❋ सिगरी फौज भई तैयार।
मलिखे ऊदनि बदलनि आये ❋ औ लश्करमें पहुँचे आय॥
ऊदनि बोले सब क्षत्रिनसे ❋ भैया सुनो हमारी बात।
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भैया लगो हमार॥
काज हमारो अब अटको है ❋ सो गाढेमें आवो काम।
कठिन लडाई है माडोकी ❋ जहँपर जम्बैको है राज॥
जिनको प्यारी हो घर तिरिया ❋ सो सब छोरि धरौ हथियार
जिन्हैं पियारी परम भगौती ❋ सो सब चलौ हमारे साथ॥
जीतिके ऐहौ जो माडोमे ❋ दूनी तलब दिहौं बढवाय।
प्राणसे प्यारे हमको होइहौ ❋ हमरी बिपाति बटैहौ जाय॥
इतनी सुनिलइ जब क्षत्रिनने ❋ तब ऊदनिसे कही सुनाय।
निमक चँदेलेको खायो है ❋ सो हाडनमें गयो समाय॥
पाँव पिछारू हम ना धारि हैं ❋ देहैं जिअत तुम्हारो साथ।
जहाँ पसीना तुम्हरो गिरिहै ❋ तहँ दैदेयँ रक्तकी धार॥
इतनी कहिके सिगरे क्षत्री ❋ अपनी करन तयारी लाग।
पाँचो कपडा क्षत्रिन पहिरे ❋ पाँचो बाँधिलिये हथियार॥
पहिरे नीचेसे कपची बँद ❋ औ ऊपरसे कुलह कबार।
तिनके ऊपर बख्तर पहिरे ❋ जामें नाहिं गडे तलवारि॥
पगडी सुरखें हैं माथेपर ❋ ऊपर कुंडी लइ औंधाय।

साजिकै क्षत्री सब ठाढे भे ❋ शोभा बरन करी ना जाय ॥
ताल्हा सैयद बनरस वारे ❋ सोऊ सजिकै भये तयार ।
सजिकै ठाढे भे ब्रह्मानँद ❋ औ सजिगये बनाफरराय ॥
यकयक जिरहैं दुइदुइ बख्तरे ❋ कम्मर दुइ बाँधी तलवार ।
पहिरे जामा सब केसरिया ❋ औ माथेपर तिलक सुहाय ॥
सुर्ख पगडिया शिरपर सोहै ❋ औ कलँगीकी अजब बहार
साजिकै चलिभये सब जल्दीसे ❋ देविकि मठिया पहुँचे जाय
पूजन करिकै जगदम्बेको ❋ औ देवीको शीश नवाय ।
करिकै पूजा नीलकंठकी ❋ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार
करिकै बितनी जगरानीकी ❋ होय सहाय कालिका माय
पूजा करिकै सबियाँ चलिभये ❋ जहँ दरबार चँदेले क्यार ॥
जायकै पहुँचे सब राजापै ❋ दोनों हाथ जोरि रहिजाँय
आज्ञा दैदेउ अपने मुँहसे ❋ माडौ लेयँ बापको दाउँ ॥
पीठि ठोंकिदइ चन्देलेने ❋ तुम्हरे काम सिद्धि होइजायँ
बोले राजा सुनि आल्हासे ❋ बेटा बहुत रहेउ हुशियार ।
कठिन किला है लोहागढको ❋ जालिम बहुत करिंघा राय
जम्बै राजाके समुहे पर ❋ बिरला शूर गहै तलवार ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा सुनो हमारी बात ।
पाँव पिछारू हम ना धरिहैं ❋ चाहै धजी धजी उडिजाय
जीवत रहिहैं तो फिरि मिलिहैं ❋ ददुआ हुक्म देउ करवाय।
फिरिकै राजा बोलन लागे ❋ अब तुम सुनो युद्धकी बात॥
रीति नीतिसे जो कोउ बर्तै ❋ ताकी कबहुँ होय नहिं हार।
हाहा खातेको ना मारै ❋ ना तिरियापर डारै हाथ ॥
बालक बूढेको ना मारै ❋ ना भागेके परै पिछार।
पहिली चोट करै कबहूँ नहिं ❋ ना निर्बलपर करै प्रहार ॥

ताको मारै ना काहूविधि ❋ जाके पास नाहिं हथियार
पाँव पिछारूको न हटावै ❋ ताकी जीति होय सब काल
यही धर्म है सब क्षत्रिनको ❋ बर्तैं समरभूमिके माहिं।
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❋ तब राजासे कही सुनाय॥
यह सब बातें हम सब मनिहैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ।
इतनी कहिकै सत्रियां चलिभे ❋ औ मल्हनातर पहुँचे जाय
चरण लागिकै रनि मल्हनाके ❋ दोनों हाथ जोरि रहि जायँ
पीठी ठोकी रनि मल्हनाने ❋ औ लडिकनसे कही सुनाय॥
अबकी बिछुरे फिरि कब मिलिहौ ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ माता बचन करो परमान॥
आठ महीनाके बीतेपर ❋ नवयें ऐहौं नगर महोब।
इतनी सुनिकै मल्हना बोली ❋ तुम्हरे काम सिद्धि होइजायँ
चरण लागिकै ऊदनि चलिभे ❋ अपनी फौज पहूँचो जाय।
बोलि नगडचीको बीरा दो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय
बजे नगाडा गढ महुबेमें ❋ लश्कर चलै बनाफर क्यार
बजो नगाडा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुसियार॥
चोब नगाडाके बाजतखन ❋ लश्कर चला महोबे क्यार।
कूच कराय दियो माडोंको ❋ डंका होन गोलमें लाग॥
घोडी सिंहिनिपर सैयद हैं ❋ दाढी रही तोंदपर छाय।
घोडा करिलिया पर आल्हाहैं ❋ घोडी कबूतरी पर मलिखान
घोडा हरनागरपर ब्रह्मा हैं ❋ ढेबा मनुरथापर असवार।
घोडा बेंदुलापर ऊदनि हैं ❋ शोभा एक न बरनी जाय
संगे डोला रनि देवैको ❋ गढ माडौंको करो पयान
धावा करिकै राति दिनाको ❋ क्षत्रिन गिनी धूप ना छाँह
सत्रह दिनकेरे धावामें ❋ बबुरीबनमें पहुँचे जाय।

डेरा डारि दिये धूरेपर ❀ ऊँचे ठाढे करे निसान ॥
तंग छोरिदै सब घोडनके ❀ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
फेंटैं छुटिगईं सब क्षत्रिनकी ❀ अपने छोरिधरे हथियार ॥
तम्बू लागे बन्नातनके ❀ ऊपर धर्मध्वजा फहराय ॥
सुर्खी देखिपरै तँबुअनकी ❀ झंडन रही लालरी छाय ॥
तोपैं फैली तीनि कोसलौं ❀ पेटी भरी बरूदन क्यार ।
पैदल पारिगो तीनि कोसलौं ❀ तँबुअन रही लालरी छाय
घोडा बँधिगे तीनि कोसलौं ❀ भाला चमकिचमाकि रहिजाय
हाथी बँधिगे तीनि कोसलौं ❀ औ अडिगयो दाँतसे दाँत
बारह कोसी चौगिर्दामें ❀ झंडा गडो महुबियन क्यार
क्षत्री करैं रसोई ❀ कहुँ कहुँ मुद्गर रहे फिराय
पंडित पोथी बांचैं ❀ कहुँ कहुँ नाच कंचनिन क्यार
दश दिन बीतिगये डेरनमें ❀ यक दिन कही उदयसिंहराय
कौन नींद दादा सोवत हौ ❀ अब चढि लेउ बापको दाउँ
इतनी सुनिलइ जब आल्हाने ❀ तब ढेबाको लियो बुलाय ।
सगुन बतावौ ढेबा भैया ❀ कैसे मिलै बापको दाउँ ॥
पोथी लैके समरसारकी ❀ ढेबा सगुन बिचारन लाग ॥
बोले ढेबा तब आल्हासे ❀ दादा जल्दी होउ तयार ।
बाना बदलो तुम क्षत्रिनको ❀ जोगी बनौ बनाफरराय ॥
अलख जगावौ पहिले चलिकै ❀ तुम्हरो कामसिद्धिहोइजाय
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने ❀ तुरत गुदरियाँ लई मँगाय ॥
पाँचौ जोगी बने तहाँपर ❀ अपने बाजा लिये उठाय ।
तिलक लगायो रामानंदी ❀ देही लई बिभूति रमाय ॥
आल्हा ऊदनि ढेबा सैयद ❀ पँचये सजे बीर मलिखान ।
ब्रह्मानंद छोडे लश्करमें ❀ तिनसे आल्हा कही सुनाय ॥

कठिन देश है मारवाडको ❋ भैया बहुत रहेउ हुशियार।
पाँचौ जोगी डगरत चलिभे ❋ औ देवैतर पहुँचे जाय॥
आवत देखो जब जोगिनको ❋ देवै उठी भरहरा खाय।
थार सुबरनको मँगवायो ❋ चौमुख दियना धरो बनाय॥
आरति लैके देवै आई ❋ सब योगिनपर धरी उतारि।
माथ नायकै तब देवैके ❋ औ चलिबेको भये तयार॥
छोडि आसरा जिंदगानीको ❋ अपने मया मोह बिसराय।
पांचौ जोगी डगरत चलिभे ❋ अपने बाजा दिये बजाय॥
बजी सरंगी तब सैयदकी ❋ आल्हा डमरू दई बजाय।
बजो इकतारा नर मालिखेको ❋ ढेबा खँझरी दई बजाय॥
बजी बँसुरिया बघऊदनिकी ❋ गावन लागे राग मलार।
क्या गतिबरणों त्यहिसमयाकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय
जोगी लाँघिगये बबुरी बन ❋ औ फाटकपर उरके जाय।
बोले दरवानी जोगिनसे ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
कौन देशमे तुम आये हो ❋ आगे कहा तुम्हारो काम।
बोले आल्हा दरवानीसे ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात॥
हम रहवैया बंगालेके ❋ औ गोरखपुर कुटी हमारि।
आगे जैहैं हिंगलाजको ❋ फाटक जल्द देउ खुलवाय॥
खर्च निवारिगो है कम्मरसे ❋ सो हम भिक्षा माँगिहैं जाय।
बोलो हरकारा जोगिनसे ❋ बाबा धीर धरौ मनमाहिं॥
हुक्म पायकै हम राजाको ❋ फाटक तुरत दिहैं खुलवाय।
फिर हरकारा गो ड्योढीमें ❋ जहँ जम्बैको राजकुमार॥
राजा अनुपी जहँ बैठोथो ❋ तुरते करी बन्दगी जाय।
बोलो हरकारा अनुपीसे ❋ ओ महराज गरीबनेवाज॥
जोगी पांच खडे द्वारेपर ❋ जिनके रूप न बरने जायँ।

हुक्म जो पाऊँ महराजाको ❋ फाटक तुरत देउँ खुलवाय ॥
इतनी सुनिलइ दरवानीसे ❋ तब अनुपीने दियो जवाब ।
फाटक खोलि देउ द्वारेके ❋ औ जोगिनको लाउ लिवाय
गौ हरकारा तब द्वारेपर ❋ औ फाटकको दियो खुलाय
पाँचौ जोगी तब भीतरगे ❋ औ ड्योढीमें पहुँचे जाय ॥
समुहे अनुपीको देखतखन ❋ बायें करसे करी सलाम
गुस्सा होइके अनुपी बोले ❋ इन जोगिनको देउ निकारि
हैं बेअक्किल यह जोगी सब ❋ इन बायें कर करी सलाम ।
इतनी सुनिके ऊदनि तडपे ❋ औ अनुपीसे कही सुनाय ॥
ध्यान तुम्हारा कहँ राजा है ❋ कछु तौ मनमें करो बिचार ।
जौन हाथसे जपैं सुमिरनी ❋ नित उठि लेयँ रामको नाम
तौन हाथसे करैं बन्दगी ❋ हमरो जोग भंग होय जाय ।
दहिने बैठे थे टोडरमल ❋ सो अनुपीसे लगे बतान ॥
मुँहना लागौ इन जोगिनके ❋ ना इनको तुम लेउ सराप ।
अपने कर्तबमें पक्के हैं ❋ इनपर तेज रहो है छाय ॥
देखि तमासा लेउ इनको तुम ❋ औ भिक्षाको देउ मंगाय ।
इतनी सुनिके अनुपी बोले ❋ जोगियो कर्तब देउ दिखाय
सुनतै जोगी बहुत खुशी ह्वै ❋ अपने बाजा दिये बजाय ।
बजी खंजरी तहँ ढेबाकी ❋ बँसुरी बजी उदयसिंह क्यार
बजो इकतारा नर मालिखेको ❋ आल्हा डमरू दई बजाय ।
बजी सरंगी तब सैयदकी ❋ दाढी रही तोंदपर छाय ॥
नाचे ऊदनि त्यहि समयापर ❋ अनुपी मोहि मोहि रहिजाय
डारि मोहनी दइ बंगलामें ❋ तब अनुपीने कही सुनाय ॥
बहुत पियारे बाबा लागो ❋ कछु दिन यहँपर करो मुकाम ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ राजा सुनो हमारी बात ॥

आजु रमानो तुम्हरो बँगला भोरहिं हमहिं रमानी बाट।
बहता पानी रमता जोगी को ठीक ठिकाना नाहिं॥
पक्के जोगी जो कतबके तिनको कौन सके बिरमाय।
भिक्षा मँगिहैं हम माडोमें ❀ जैहैं हिंगलाज महराज॥
इतनी बात सुनी जोगिनकी ❀ अनुपी तोडा लये मँगाय।
सो पकराय दिये जोगिनको ❀ मनमें बहुत खुशी होइजायँ
चालिभये जोगी तब बँगलासे औ माडोकी पकरी राह।
पहर एकको अरसा गुजरो औ फाटकपर पहुँचे जाय
अलख जगाई दरवाजेपर तब दरवानी दियो जवाब
कहाँसे आये औ कहँ जैहो बाबा हाल देउ बतलाय॥
जोगी बोले दरवानीसे ठाकुर सुनो हमारी बात।
देश हमारा बंगाला है आगे हिंगलाजको जायँ॥
बोलो दरवानी योगिनसे योगिऔ बारबार बलिजाउ
चारि महीना चौमासा लौं बाबा यहाँ करो बिसराम॥
धुनी रमाय देउ फाटकपर ठाढे खिदमत करौं तुम्हारि
इतनी सुनिके ऊदनि बोले ठाकुर अक्किल गई तुम्हारि
रमता जोगी बहता पानी इनको कौन सके बिरमाय।
हम सब जइ हिंगलाजको होवे घरी घरी पर ब्यार॥
खर्चा घटनेपर यहँ आये फाटक जल्दी देउ खुलाय
भिक्षा मँगिहैं गढ माडोमें भोरहि कूच जायँ करवाय
इतनी सुनिके दरवानीने तुरते फाटक दियो खुलाय।
डगरत चालिभये पाँचा योग बवन बजारिया पहुँचे जाय
गावत नाचत जोगी आये जोगी चले बजार बजार।
लगी दुकानै हलवाइनकी बनियनकी लगी बजार
साहूकार बजाज जौहरी दूकानै तँबोलिन

सजी दुकानैं गोटावारी बडे बडे उमराव ॥
डारि मोहिनी दइ बजारमें बहुतन करिदइ बंद दुकान
सुनै रागिनी जो जोगिनकी बाजा सुनै योगियन क्यार
मोहित होइगे नर नारी सब ❋ घरकी सुधि बुधि दई बिसारि
तिरियाँ मोहीं गढ माडौकी ❋ देखत रूप जोगियनक्यार
कोई देवै छल्ला मुँदरी ❋ काहू माला दइ पहिराय ।
साल दुशाला काहू दीन्हें ❋ काहु आरसी दई उतारि ॥
नाचत गावत जोगी चालिभ औ पनिघट पर पहुँचे जाय
पानी भरतीं जो पनिहारीं ❋ सो सब मोहिं मोहिं रहिजायँ
कोई वडाको फाँसत रहिगइ ❋ कोई कुवाँ रही लरकाय ।
पानी भरनो भूलि गइं सब ❋ तनकी सुधिबुधि दई बिसारि
रूपा बाँदी रानि कुसलाकी ❋ सो पनिघटपर पहुँची आय
बाँदी मोहिगई रानीकी ❋ देखो रूप जोगियन क्यार
डेढपहर कुअँटापर होइगो ❋ सिगरो प्यास मरे रनिवास
कछु सुधि आई तब बाँदीको ❋ बाँदी रंगमहलको जाय ॥
कुसला रानीने ललकारो ❋ बाँदी तेरो बुरा होइजाय ।
डेढ पहर कुअँटापर लागी ❋ सिगरो प्यास मरो रनिवास
क्या काहूसे आँखी लागी ❋ क्या बाँदी कहुँ करो भतार ।
देर लगाई क्यों कुअँटापर सो तू हमें देय बतलाय ॥
हाथ जोरिकै बाँदी बोली रानी सुनो हमारी बात ।
पाँच जोगिया ऐसे आये जिनको रूप न बरनो जाय
उमिरि बीतिगइ मोरि माडोमें अस जोगी ना परे दिखाय
सबै रागिनी जोगी गावैं शोभा कछु कही ना जाय॥
एक जोगिया ऐसो नाचै जैसे वनमें नचै पुछारि ।
कुसला बोली तब बाँदीसे रूपा आकिल कहाँ तुम्हारि

रूपकि अगरी मोरि बेटी है ❀ ऐसो रूप नाहिं संसार ।
बोली बाँदी हाथ जोरिके ❀ रानी बचन करो परमान ॥
ऐसे सुन्दर वे योगी हैं ❀ मानहुँ राम लखन औतार ।
मुख नरियारे सुरति साँवरे ❀ नैना हिरनाकी अनुहार ॥
हुक्म तुम्हारो रानी पाऊँ ❀ अबहीं उनको लाउँ बुलाय ।
हुक्म देदिया तब रानीने ❀ बाँदी गई योगियन पास ॥
दोउ कर जोरे बाँदी बोली ❀ योगियो सुनो हमारी बात ।
तुम्हरो बुलौआ है महलनमें ❀ महलन करो तमासा आय ॥
भिक्षा पैहो मुँह माँगी तुम ❀ जल्दी चलो हमारे साथ ।
इतनी बात सुनी जोगिनने ❀ मनमें बहुत खुशी होइजायँ ॥
जोई रोगीके मन भावै ❀ सोई बैद बताई आय ।
संगै चालिभये पाँचो जोगी ❀ औ ड्योढीमें पहुँचे आय ॥
बोली बाँदी तब जोगिनसे ❀ जोगिउ पैयाँ परों तुम्हार ।
कछुक विलमिजाउ दरवाजेपर ❀ महलन खबरि देउँ पहुँचाय
बाँदी चालिगइ महलनको ❀ जोगी ठाढे पँवारि दुआर ।
घोडा पपीहा गजपचशावद ❀ सो आल्हाके परो निगाह ॥
यादि आयगइ तब आल्हाको ❀ आल्हा तुरत गये पहिचानि
तुरतै आल्हा रोवनलागे ❀ तब ऊदनिने कही सुनाय ॥
कौने कारण दादा रोवो ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❀ भैया सुनो हमारी बात ॥
गज पचशावद यह दादाको ❀ सो हम लियो तुरत पहिंचान
घोडा पपीहा है चाचाको ❀ तापर चढत करिंघाराय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❀ दादा हुक्म देउ फरमाय ।
फाँदि सवार होउँ घोडापर ❀ औ लश्करमें राखों जाय ॥
तुरतै सैन करी मलिखेने ❀ ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि

चोर कहैहो तुम दुनियाँमें ❋ जो घोडाको लिहो चुराय ॥
उहि दिन चढियो या घोडापर ❋ जेहि दिन लेउ बापको दाँव
पाँचौ जोगी आगे बढिगये ❋ दुसरे फाटक पहुँचे जाय ॥
पत्थर कोल्हू तहँपर देखो ❋ पेड बरगदा परो दिखाय ।
टँगी खुपडिया जो बरगदमें ❋ सो आल्हाने लइ पहिंचानि
बुर्ज एक देखो तहँई पर ❋ तापर सूखि रही हडवार ।
जोगी पहुँचे जब समुहेपर ❋ आभा बोलि उठी तत्काल ॥
हमरे बेटा जोगी ह्वइगये ❋ हमरो छुटो भरोसा आज।
हम यह जानी थी अपने मन ❋ लडिके गया दिहैं करवाय॥
कबहुँक समरथ लडिका होइहैं ❋ माडौ लिहैं हमारो दाउँ ।
यह सुनि आल्हा रोवन लागे ❋ तहँपर छाँडिदई डिडकार ॥
लौटिके ऊदनि देखन लागे ❋ औ आल्हासे लगे बतान ।
अब क्यों रोवतहो दादा तुम ❋ साँचो हाल देउ बतलाय ॥
कौन जनावरकी खोपरी है ❋ जो बर्गदमें परे दिखाइ ।
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❋ तुम सुनि लेउ लहुरवा भाय
टँगी खोपरिया है दादाकी ❋ औ चाचाकी परत दिखाइ ।
यही हडावर है बुर्जीपर ❋ जो कोल्हूमें दई पेराय ॥
राजा जम्बै औ करियाने ❋ बरगद खोपडी दई टँगाय ।
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❋ औ बरगद तर पहुँचे जाय ॥
झपटि खोपरी ऊदनि पकरी ❋ औ छातीसे लई लगाय ।
रोयके ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
बदलो लीन्हें बिन ना जैहैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ ।
खोपडी मिलिहैं कीखुपडिनमें ❋ की सागरमें दिहैं बहाय ॥
बोली आभा दस्सराजकी ❋ धनि धनि मेरे लडेते लाल ।
अब हम जानी अपने मनमें ❋ हमरी गया दिहो करवाय ॥

तौलौं बाँदी दाखिल होइगइ ❀ औ जोगिन तर पहुँची आय।
रोवत देखौ जब जोगिनको ❀ तब जोगिनसे कही सुनाय॥
काहे रोवतहो जोगिऔ तुम ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय।
तुम हौ लडिका केहु राजाके ❀ चलिके रूप छिपायो आय
खबरि सुनेहौं मैं राजाको ❀ सबको पेटु दिहौं फरवाय।
मलिखे बोले तब बाँदीसे ❀ बाँदी लौटि जीभि मुँह दाबु
भूत चुरेलैहैं बरगद पर ❀ आभा बोलि २ रहिजायँ।
छोटे जोगीको डरलागो ❀ सो यह रोय रोय रहि जाय॥
बाँदी बोली तब जोगिनसे ❀ तुम्हरो चित्त गयो भरमाय।
दस्सराज औ बच्छराजकी ❀ करिया लायो मुस्क बँधाय
पत्थर कोल्हू तिनहिं पिरायो ❀ बरगद खोपरी दई टँगाय।
आल्हा ऊदनि मलिखे सुलिखे ❀ तिनको नाम रटत दिनराति
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ बाँदी सुनो हमारी बात।
हम ना जैहैं अब महलनमें ❀ जो सुनि लिहैं बघेले राय॥
पत्थर कोल्हूमें पिरवैहैं ❀ नाहक लैहैं जान हमार।
इतनी सुनिकै बाँदी बोली ❀ जोगिऔ बचन करौ परमान
कछू न डरपो अपने मनमें ❀ जोगिऔ बारबार बलि जाउँ
दियो दिलासा तिन जोगिनको ❀ जोगी रंगमहलको जायँ॥
रंगमहल देखो जम्बैको ❀ जोगी बहुत खुशी होइजायँ।
मलयागिरिकी लगी खिरकियाँ। चन्दन महकि महकि रहिजाय
जहाँ झकोर लेय झँझरिनसे ❀ सुन्दर मन्द सुगन्ध बयारि।
हंस हिलोर लेयँ सागरपर ❀ औ छज्जनपर नाचैं मोर॥
खम्भा लागे रतन जडाऊ ❀ छौनी मोरपंखकी लागि।
रंगबिरंगे सतखंडा हैं ❀ बनता बरन करी ना जाय॥
करी खबरि तब यह बाँदीने ❀ जोगी आये पँवरि दुआर।

परदा करिके रानी बैठी ❀ औ जोगिनतन रही निहारि॥
तब ललकारो रानी कुशला ❀ बाँदी तेरो बुरो होइजाय ।
कैसे जोगी तू लै आई ❀ तेरो पेटु दिहौं फरवाय ॥
छल करि लाई तू जोगिनको ❀ ये ना योगी परैं दिखाय ।
ये तौ लडिका केहु राजनके ❀ इन छल करो यहाँपर आय
चौंडी छाती इन जोगिनकी ❀ मारू सिंह बरन करिहांव ।
गोरवा जिनके चढा उतारू ❀ नयनन रही लालरी छाय॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ रानी सुनौ हमारी बात ।
मूखा परिगो देश हमारे ❀ बारे मरिगे बाप हमार ॥
बिकल हमारी माता होइगइ ❀ बेंचो हमहिं जोगियन हाथ
रूप बिधाता हमको दीन्हों ❀ सो हम कहाँ छिपावैं जाय॥
इतनी सुनिकै रानी बोली ❀ यह तुम हमैं कहौ समुझाय
हीरा मोती लाल जवाहिर ❀ सो गुदरिनमाँ परत दिखाय
कौन देशमें गुदरी पाई ❀ सो तुम साँची देउ बताय ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❀ औ रानीको दियो जवाब ॥
हम सब चालिभे बंगालेसे ❀ औ कनउजमें पहुँचे आय॥
बहुत खुशी होइ राजा जैचँद ❀ पाँचौ गुदडी दई बनाय ।
कडा मूबरनके हाथनमाँ ❀ सो डरवाये कनौजीराय ।
बोली रानी तब जोगिनसे ❀ जोगिउ बचन करौ परमान
नाच दिखावौ अब हियनापर ❀ अब ना राखो देर लगाय ।
डमरू बाजो तब आल्हाको ❀ बाजी बेन बीर मलिखान॥
बजी सरंगी तहँ सैयदकी ❀ खँजरी ढबा दई बजाय ।
बजी बँसुरिया बघऊदनिकी ❀ शोभा एक न बरनी जाय॥
राग रागिनी गावन लागे ❀ ऊदनि तान सुनावन लाग
डारि मोहनी दइ महलनमाँ ❀ सिगरो मोहि गयो रनिवास

फिरिकै ऊदनि नाचन लागे ❋ जैसे बनमें नचै पुछारि ।
परदा लौटा तब रानीने ❋ औ जोगिनकोदेखनलागि॥
हार नौलखा रानी पहिरे ❋ सो ऊदनिकी परो निगाह ।
मोह आयगो तब ऊदनिको ❋ हिचकीबँधीउदयसिंहक्यार
सुरखी आयगई मुखडापर ❋ नैनन रही लालरी छाय ।
कुहनी मारी तब सैयदने ❋ औ सैननसे कही बुझाय ॥
रारि मचैहो जो हियँनापर ❋ तुम्हरी जान बचैगी नाहिं
ना कोइ घोडा है चढिबेको ❋ ना है फौज कटीली साथ
गुस्सा रोकिलेउ जल्दीसे ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय
देखि खोपरी ऊदनि रोये ❋ नयनन बही नीरकी धार॥
बोली रानी तब जोगिनसे ❋ जोगिउ भेद देउ बतलाय ।
छोटा जोगी क्यों रोवत है ❋ खोपरी देखि देखि रहिजाय
इतनी सुनिकै सैयद बोले ❋ रानी सुनिलेउ बचन हमार
टँगी खोपडी है बरगदपर ❋ औ जो सूखि रही हडवार
भूत चुरैले हैं द्वारेपर ❋ आभा बोलि बोलिरहिजाय
देखि इकौकाति छोटा जोगी ❋ मनमें बहुत गया घबराय
डरके मारे यहु रोवत है ❋ रानी बचन करो परमान ।
किसकी खोपडी हैं बरगदपर ❋ कैसे सूखिरही हडवार ॥
इतनी सुनिकै रानी बोली ❋ जोगिओ हाल देउँ बतलाय
करिया बेटा इकदिन चढिगो ❋ महुबे लूटि मचाई जाय ॥
गज पचशावद घोडा पपीहा ❋ लाखापातुर संग लिवाय
दस्सराज औ बच्छराजको ❋ लायो बाँधि करिंवाराय ॥
पत्थर कोल्हूमें पेरवायो ❋ खोपडी बरगद दई टँगाय
टँगी हडावर है उनहींकी ❋ आभा बोलि २ रहिजाय ॥
जो कोउ क्षत्री महुबे होवे ❋ सोई आय इनहिं लैजाय ।

गंगाजीमें इनहिं सिरावै ❋ तहँई पिंडा देय बनाय ॥
गया करै जो इन दोउनकी ❋ तबहीं तुरत मुक्ति ह्वै जाय
काहे डरपि गयो जोगी यह ❋ द्वारे कछू भरम है नाहिं ॥
अब तुम नाच करौ महलनमाँ ❋ तुमको कौन परी परवाह ।
बाजा बजाये तब जोगिनने ❋ नाचन लगे उदयसिंहराय॥
तान मरोरा ऊदनि गावैं ❋ महलन दई मोहनी डारि ।
नचै बेंदुलाको चढवैया ❋ रनियाँ मोहि २ रहिजायँ॥
तीनि घरीभरि ऊदनि नाचे ❋ रानी बहुत खुशी ह्वै जाय
चौकी डरवाई चन्दनकी ❋ औ जोगिनसे कही सुनाय
जोगिऔ बैठो तुम चौकिनपर ❋ अपनो हाल देउ बतलाय
कहाँसे आये औ कहँ जैहो ❋ तुम्हरो गुरू कौन महराज॥
कौन तपस्या खंडित ह्वै गइ ❋ बारे डारे मूँड मुडाय ।
बोल सुहावन ऊदनि बोले ❋ औ रानिनको दियो जवाब॥
हम रहवैया बंगालेके ❋ औ गोरखपुर कुटी हमारि।
गोरखनाथ गुरू हमरे हैं ❋ अब हम हरद्वारको जायँ॥
हरद्वारकी बुडकी लैकै ❋ जैहैं हिंगलाज महरानि ॥
दर्शन करिकै तहँ देवीके ❋ आगे सेतबंधको जायँ ।
कोइ तपस्या नहिं खंडित है हम नितलेयँ रामको नाम
तीरथ तीरथ नित घूमत हैं हमको कौन पडी परवाहि
फिरिकै रानी पूँछन लागी जोगिउ मानो बात हमार
चारि महीना चातुरमासा सुखसे करो यहाँ बिसराम
करिया बेटा जो हमरो है ❋ ठाढो खिदमति करै तुम्हारि
बिजमा बेटी जो हमरी है ❋ ठाढी तुमपर करै बयारि ॥
जब तुम जैहो गढ माडोसे ❋ छकडन माया दिहौं भराय
भूखे होवो राजपाटके ❋ तो हम राज देयँ दिखलाय

ब्याहके भूखे जोगी होवो ❋ तौ हम ब्याह देयँ करवाय।
इतनी सुनिकै मलिखे तडपे ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि॥
हम बंगालेके जोगी हैं ❋ हमको कहा ब्याहसे काम।
पापकि बातैं रानी बोलौ ❋ नाहीं हमहिं राजकी चाह॥
रमता जोगी बहता पानी ❋ इनको कौन सकै बिरमाय।
आजु रमानो महल तुम्हारो ❋ भोरहिं हमैं रमानी बाट॥
इतनी कहिकै जोगी चलिभे ❋ रानी चरण गईं लपटाय।
हाथ जोरिकै रानी कुशला ❋ तिन जोगिनसे लगी बतान
तनिक बिलमिजाउ दरवाजेपर ❋ अबहीं भिक्षा देउँ मँगाय।
मोती मँगवायो रानीने ❋ सो थारीमें लिये धराय॥
सो दैदीन्हें तिन जोगिनको ❋ जोगिऔ तीनि जन्मलौं खाउ
मूठी यक मोतिनकी लैकै ❋ ऊदन नथुनन लई लगाय॥
मोती सूँघे उदनि बाँकुडा ❋ भोरे बने उदयसिंहराय।
कौन रूखमें यह लागत फल ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय॥
देखि हकीकति रानी सोची ❋ हा बिधना गति कही न जाय
बारे बारे जोगी ह्वइगये ❋ अपने डारे मूँड मुडाय॥
फल नाहीं यह काहु रूखके ❋ इनको मोती कहै जहान।
इतनी सुनते ऊदनि तडपे ❋ मोती सबै दये त्रिथराय॥
यह मोती हमका ना चहिये ❋ इनका लगत चोर बटमार।
देउ निसानी कछु रानी तुम ❋ जैसी दई तिलकदे रानि॥
तिलका रानी गढ कनउजकी ❋ ताने दियो नौलखाहार।
हार नौलखा रानी देहो ❋ तुम्हरो लेहैं नाम जहान॥
यह सुनि रानी सोचन लागी ❋ जामें लगे नाहिं कछु दाम।
लूटिमें पायो यह हरवा है ❋ सो जोगिनको दिहौं इनाम
नाम बखानिहैं जोगी हमरो ❋ औ यश छाय रहै संसार।

सोचिकै रानी बोलन लागी ❀ जोगिउ पैयाँ परौं तुम्हार ॥
कछुक ठहरिजाउतुममहलनमाँ ❀ मैं बेटीको लेउँ बुलाय ।
देखि तमाशा बेटी लेवै ❀ तब हम दिहैं नौलखाहार ॥
इतनी कहिकै रानी कुशला ❀ तब बाँदीसे कही सुनाय ।
जल्द बुलाइ लाउ बेटीको ❀ बेटी देखि तमाशा लेइ ॥
इतनी सुनिकै बाँदी चलिभइ ❀ औ बेटीतर पहुँची जाय ।
बिजमा सोवै सतखंडापर ❀ बाँदी तुरत जगायो जाय ॥
हाथ जोरिकै बाँदी रहिगइ ❀ औ बेटीसे लगी बतान ॥
तुमहिं बुलायो है रानीने ❀ महलन भयो तमाशा आय
पाँच जोगिया ऐसे आये ❀ जिनके रूप न बरने जायँ ।
मनमें समुझि गई बेटी तब ❀ आये महल उदयसिंहराय ॥
बीरा बनायो पाँच पानको ❀ बिजमा तुरत कियो सिंगार
लैके बीरा बिजमा उतरी ❀ औ मातातर पहुँची आय ॥
मोहित ह्वैगइ बिजमा बेटी ❀ देखत रूप जोगियन क्यार।
तुरतै बीरा दो ऊदनिको ❀ ऊदनि बीरा लयो चबाय ॥
बिजमा बेटी देखन लागी ❀ अपनी तिरछी नजरि मिलाय
नैन बाण लागे ऊदनिके ❀ ऊदनि गिरे भूमि मुरझाय ॥
मूर्च्छा आयगई बिजमाको ❀ सोऊ गिरी भरहरा खाय ।
देखि हकीकति कुशला रानी ❀ तुरतै अग्निज्वाल ह्वैजाय ॥
रूप देखिकै मेरि बेटीको ❀ जोगी गिरा तडाका खाय ।
एको जोगी यह नाहीं हैं ❀ हैं यह छलिया राजकुमार॥
उठिजा बाँदी तू जल्दीसे ❀ औ करियाको लाउ बुलाय।
मूँड कटैहौं इन जोगिनको ❀ औ कोल्हूमें दिहौं पिराय॥
इतनी सुनते मालिखे तडपे ❀ औ रानीसे कही सुनाय ।

जो मारिजैहै छोटो जोगी ❀ महलन आगी दिहौं लगाय
अबहीं शाप दिहौं महलनमें ❀ तुरतै राज्यभग ह्वैजाय।
इतनी सुनतै रानी कॉंपी ❀ औ जोगिनसे लगी बतान
काहे मूर्च्छा भइ जोगीको ❀ सो तुम हमहिं देउ समुझाय
बात बनाई तब ढेबाने ❀ औ रानीको दियो जवाब॥
बीरा दीन्हों जो बेटीने ❀ तामें दई तमाकू डारि।
लागि तमाकू गइ जोगीको ❀ तब गिरिपरो भूमि मुरझाय
मूर्च्छा जागी जब ऊदनिकी ❀ तुरतै उठे उदयसिंहराय।
मूर्च्छा जागी जब बिजमाकी ❀ तब रानीने कही सुनाय॥
पीक तमाकूकी लागतखन ❀ जोगी गिरो भूमि महराय।
तुम क्यों भूमि गिरी मूर्छित होइ ❀ अपनो हाल देउ बतलाय॥
बोली बिजमा तब मातासे ❀ माता सुनो हमारी बात।
बारे उम्मिरिके जोगी हैं ❀ इन क्यों डारो मूड मुड़ाय
रूप देखिके इन जोगिनको ❀ हमरे सोच गयो उर छाय।
पाँवखसकिगयोतबसिढियनसे ❀ हम गिरि परीं भूमि महराय
सुनी बात जब यह रानीने ❀ तब जोगिनसे कही सुनाय।
करो तमाशा फिरि जोगिउ तुम ❀ औ बेटीको देउ दिखाय॥
इतनी सुनिलइ जब जोगिनने ❀ अपने बाजा दियो बजाय।
गावन लागे सब जोगी मिलि ❀ फिरिकै तान सुनावन लाग
तान मरोरा ऊदनि गावैं ❀ महलन दई मोहिनी डारि।
जितनी तिरियाँ महलन बैठी ❀ सो सब मोहि मोहि रहिजायँ
काहू दीन्हें छल्ला मुँदरी ❀ काहू हरवा दियो उतारि।
मूँगा मोती काहू दीन्हें ❀ काहू माल दियो पहिराय॥
कुशलारानी मोहित होइके ❀ दीन्हों तुरत नौलखा हार।
चलिभये जोगी तब महलनसे ❀ तुरतै उठी बिजैसिनिरानि

पहुँचे जोगी जब खिरकीके ❀ जहँपर बिजमा खड़ी अगार
बाँह पकरिलइ त्यहि ऊदनिकी ❀ सतखंडापर पहुँची जाय ॥
बिछो पलँग रहै जहँ अंटापर ❀ तापर ऊदनि दिये बैठारि।
बैठत बिजमा बोलन लागी ❀ तुम महुबेके राजकुमार ॥
नाम तुम्हारो उदयसिंह है ❀ तुम छल करो यहाँपर आय
अबहिं बुलैहौं मैं भैयाको ❀ डारिहै तुमहिं जानसे मारि॥
बोले ऊदनि तब बिजमासे ❀ रानी अक्किल गई तुम्हारि।
कितनेउँ ऊदनिकी सूरतिके ❀ हैं कितनेहु सुरति हमारि ॥
कहँपर देखो तुम ऊदनिको ❀ सो तुम साँची देउ बताय।
इतनी सुनिकै बिजमा बोली ❀ तुम सुनिलेउ महोबियाज्वान
अभई लड़िका जो माहिलको ❀ ताको सिरउँज भयो बिआहु
तुम बरातमें तहँ आये थे ❀ बाँधे शीश बैंजनी पाग ॥
हमहूँ न्योते गईं तहाँपर ❀ देखो तुमहिं उदयसिंहराय।
मड़ये भीतर हम ठाढ़ी थीं ❀ तुमहूँ गये तहाँ नगिचाय॥
मारी कुहनी तुम छातीमें ❀ चोली गई हमारी टूटि।
सूरति देखी तब तुम्हरी हम ❀ औ अपने मन कियो बिचार
ब्याह होय मेरो ऊदनि सँग ❀ नाहीं रहौं जन्मभरि क्वाँरि
बहुत बर्त साधे तुम्हरे हित ❀ हमरे हिये बसो दिन राति॥
क्यों नहिं तुमको मैं पहिचानौं ❀ स्वामी मेरे उदयसिंहराय।
इतनी सुनिकै ऊदनि हँसिकै ❀ औ बिजमासे कही सुनाय
अब हम जानो रानी बिजमा ❀ तुमने हमैं लियो पहिचान।
तुम्हरे कारन योगी हुइकै ❀ हम माड़ोमें पहुँचे आय ॥
यह सुनि बिजमा बोलनलागी ❀ अबहीं भाँवरि लेउ डराय।
ऊदनि बोले तब बिजमासे ❀ प्यारी धीर धरो मनमाहिं॥
ब्याह न करिहैं हम चोरीसे ❀ ना हम करैं चोरको काम।

जो तुम ब्याह करो चाहौ तौ ❀ सखियाँ हाल देउ बतलाय॥
बदलो लेहैं हम दादाको ❀ त्यहिदिन होय तुम्हारो ब्याह
बिजमा बोली तब ऊदनिसे ❀ गंगा करौ हमारे साथ ॥
होय भरोसो तब हमरे मन ❀ तुमको हाल देउँ बतलाय।
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❀ अपनी खैंचिलई तलवारि।
कसम खायलइ तुरतै ऊदनि ❀ रानी बचन करौ परमान।
बिना ब्याहके जो तोहि छाँडौं ❀ तौ म्वहिं लौटि भगौती खाय
इतनी सुनिलइ जब बिजमाने ❀ मनमें बहुत खुशी होइजाय
सुनौ हाल अब गढ माडौको ❀ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं
कठिन किला है लोहागढका ❀ जहँपर जम्बै बाप हमार।
बिना सुरंग जो नाहिं टूटनको ❀ चाहै कोटिन करौ उपाय ॥
किला दूसरो झाँसीगढ है ❀ जहँपर तपै करिंघाराय।
बारहदरी कठिन बैठक है ❀ जहँपर सूरज भाइ हमार ॥
तोप लगावो तुम बबुरीबन ❀ तुम्हरो कामसिद्ध होइजाय।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❀ अब तुम हुक्म देउ फरमाय
हेरत बाट खडे सब ह्वइहैं ❀ द्वारे खडे बनाफरराय।
यह सुनि बिजमा बोलनलागी ❀ तुरतै भोजन करौं तयार ॥
भोजन करिलेउ सतखंडापर ❀ औ फिरि सेज देउँ बिछवाय
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❀ औ बिजमाको दियो जवाब
क्वाँरे भोजन जो हम जीमैं ❀ क्वाँरे धरैं सेजपै पाँव।
हाथ जो डारैं हम तिरियनपर ❀ तौ सब क्षत्रीधर्म नशाय ॥
डाहु बुझैहै तब छातीको ❀ जब हम लिहैं बापको दाँव।
तबहिं ब्याह करि हैं तुम्हरे सँग ❀ धरिहैं तबहिं सेजपर पाँव॥
धीरज राखो अपने मनमें ❀ पूरन होइहै काम तुम्हार।
इतनी कहिकै ऊदनि चलिभये ❀ औ द्वारेपर पहुँचे आय ॥

आल्हा मलिखे ढेबा सैयद　　हेरैं बाट उदयसिंह क्यार ।
आल्हा बोले तब मलिखेसे　　भैया सुनो हमारी बात ॥
ऊदनि बिछुर गये महलनमें　　ताको करिहौ कौनु उपाय।
इतनी कहतै ऊदनि पहुँचे　　आल्हा बहुत खुशी होइजायँ
बोले आल्हा तब ऊदनिसे　　भैया हाल देउ बतलाय ।
काहे देर लगी अंटापर　　ताको भेद कहो समुझाय॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे　　दादा बनिगो काम हमार
बेटी बिजमा जो जम्बैकी　　देखत हमहिं गई पहिंचानि
ब्याह करनको हमसे बोली　　गंगा हमसे लइ उठवाय ।
भेद बतायो तब बिजमाने　　माडौ लेउ बापको दाउँ ॥
तब ललकारो उन आल्हाने　　ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि
ब्याहु जो करिहौ तुम बैरीघर　　तौ सब जैहैं काम नशाय॥
जब सुधि ऐहै भाइ बापकी　　डारिहै तुमहिं जानसे मारि।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले　　काहे करो वृथा तुम बात ॥
ब्याहु न होइहै यह बैरी घर　　दादा धीर धरो मनमाहिं ।
बदलो लेबे हम आये हैं　　नाहीं हमहिं ब्याहसे काम ॥
ऐसे बात करत सब चलिभये　　औ लोहागढ पहुँचे जाय ।
फौज कटीली लोहा गढकी　　देखी सबै बनाफरराय ॥
तोपें जितनी थीं तहँनापर　　सो सब देखीं दृष्टि पसारि ।
फाटक देखो लोहागढको　　शोभा कछु कही ना जाय॥
पानया साते खंदक तेहरे　　ऊपर गर्भ गिरावन तोप ॥
ऐसो फाटक आल्हा देखो　　तब आपुसमें लगे बतान ॥
कठिन किला है लोहागढको　　कैसे मिलै बापको दाउँ ॥
ऊदनि बोले तब आल्हासे　　दादा धीर धरो मनमाहिं ।
मरजी होई जो नारायणकी ❀ माडो लिहैं बापको दाउँ ॥

जोगी आये जब ड्योढीपर ❋ अपने बाजा दिये बजाय॥
बोलो दरवानी जोगिनसे ❋ बाबा हाल देउ बतलाय।
कहाँसे आये औ कहँ जैहो ❋ सो तुम हमहिं कहो समुझाय
मलिखे बोले दरवानीसे ❋ है गोरखपुर कुटी हमारि।
हम तो आये बंगालेसे ❋ आगे हरिद्वारको जायँ।
भिक्षा मँगिहैं हम राजासे ❋ फाटक जल्दी देउ खोलाय
इतनी सुनिकै दरवानीने ❋ फाटक तुरत दियोखोलवाय
जोगी चलिभये तब भीतरको ❋ औ बँगलाढिग पहुँचे जाय
लगी कचहरी तहँ जम्बैकी ❋ भारी लागि रहा दरबार॥
अलख जगाई तहँ जोगिनने ❋ अपनी तान सुनावन लाग
नजरि बदलिगइ तब जम्बैकी ❋ औ जोगिनतन रहे निहारि
रूप देखिकै तिन जोगिनको ❋ तुरतै हुकम दियो फरमाय।
जल्दी लावो इन जोगिनको ❋ यहँपर करैं तमाशा आय॥
गो हरकारा तब जोगिनपै ❋ बाबा चलो हमारे साथ।
तुमहिं बुलायो है राजाने ❋ अपनो नाच देउ दिखलाय॥
इतनी सुनते जोगी चलिभये ❋ पहुँचे जहाँ राजदरबार।
मचियाके सँग मचिया रगडै ❋ मोढा रगडि रगडि रहिजाय॥
बडे बडे क्षत्री बँगला बैठे ❋ टिहुना धरे नग्न तलवार।
राजा जम्बैके दहिनेपर ❋ बैठो बीर करिंघाराय॥
सोने सिंहासन राजा बैठे ❋ ऊपर चौंर ढुरैं गजगाह॥
पांच हाथ ऊँचा सिंहासन ❋ तापर तपै बघेलाराय॥
जोगी पहुँचे जब समुहेपर ❋ बायें करसे करी सलाम।
गुस्सा राजा जम्बै होइकै ❋ हरकारासे कही सुनाय॥
टारो समुहेसे जोगिनको ❋ इन बायें कर करी सलाम
इतनी सुनते ऊदनि तडपे ❋ औ राजासे लगे बतान॥

जौन हाथसे जपैं सुमिरनी ❀ नित उठि लेयँ रामको नाम
तौन हाथसे करैं बन्दगी ❀ हमरो योग भंग होइजाय ।
यह सुनि राजा जम्बै बोले ❀ जोगिउ सांचो ज्ञान तुम्हार
सांचो गुरुके तुम चेला हौ ❀ साँचो हाल देउ बतलाय ॥
कहँपर गुदडी तुमने पाई ❀ जिनमें जडे जवाहिर लाल ।
कडा सुबरनके कहँ पाये ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❀ तुम सुनिलेउ बघेलेराय ।
डगरत आये हम कनवजमें ❀ जहँ दरबार कनौजी क्यार
करो तमाशा हम बँगलामें ❀ मोहित भये कनौजीराय ॥
कडा सुबरनके हाथनमाँ ❀ सो जैचँदने दिये डराय ॥
पांच गुदरिया उन बनवाई ❀ हम पांचोंको दई इनाम ।
तब फिरि जम्बै बोलन लागे ❀ औ जोगिनसे लगे बतान ॥
एक अँदेशा है हमरे जिय ❀ सोऊ हाल देउ बतलाय ।
दाग बनो सबके माथेपर ❀ मानहुँ बँधत बैंजनी पाग ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ राजा सुनौ हमारी बात ।
माँगिकै कनउज महुबे आये ❀ जहँपर बसत रजा परिमाल
करो तमाशा हम महुबेमें ❀ मोहित भये चँदेलेराय ।
दई बाँसुरी यह सोनकी ❀ सो हम तुरते दई बजाय ॥
आल्हा ऊदनि दुइ भैया हैं ❀ जो मरिबेको नाहिं डेरायँ ।
देखि तमाशा तिन दोउनने ❀ चीरा कलँगी दई इनाम ॥
चारि महीना चातुरमासा ❀ सागर डेरा दिये डराय ।
पाग बैंजनी शिरपर बाँधी ❀ रहिके चारिमास महराज ॥
सोई दाग परो माथेपर ❀ राजा बचन करो परमान ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❀ अब तुम नाच देउ दिखलाय
बजी सरंगी तब सैयदकी ❀ डमरू आल्हा दई बजाय ।

बजो इकतारा नर मलिखेको ❋ ढेबा खँजरी दई बजाय ॥
बजी बाँसुरी बघऊदनिकी ❋ शाभा एक न बरनी जाय ।
थामि बाँसुरी लइ ऊदनिने ❋ अपनी तान सुनावन लाग॥
राग रागिनी ऊदनि गाई ❋ बँगला दई मोहिनी डारि ।
ऊदनि नाचैं त्यों बँगलामें ❋ जैसे बनमें नचै पुछारि ॥
जितने क्षत्री वहँ बैठे थे ❋ सो सब मोहिगये तत्काल।
कोई देवै शाल दुशाला ❋ मोहनमाला देइँ इनाम ॥
कंठा मुँदरी तोडा लैके ❋ क्षत्री देन लगे त्यहि काल ।
जो कोउ देन लगे जोगिनको ❋ जोगी तुरत देइँ लौटारि ॥
हम नहिं भूंखे हैं दौलतके ❋ जाको छीनिलेयँ बटमार ।
चौकी मँगवाई राजाने ❋ सो जोगिनको दई डराय ॥
बैठो जोगी तुम चौकीपर ❋ औ सब हालु देउ बतलाय ।
कौन देशसे तुम आवतहौ ❋ आगे कौन देशको जाउ ॥
किसके चेला तुम जोगी हो ❋ अपनी कुटी देउ बतलाय ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ राजा सुनो हमारी बात ॥
देश हमारा बंगाला है ❋ औ गोरखपुर कुटी हमारि।
गोरख नाथ गुरू हमरे हैं ❋ अब हम हरिद्वारको जायँ ॥
बुडकी लेहैं गंगाजीकी ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ।
बोले जम्बे फिरि जोगिनसे ❋ जोगिऔ करो हियाँ बिसराम
जो कछु खर्चा तुम्हरो लागिहै ❋ सो सब देहैं तुमहिं मँगाय ।
इतनी कहिकै राजा जम्बै ❋ सोने कलँगी दई इनाम ॥
बोले ऊदनि तब राजासे ❋ तुम सुनि लेउ बघेलेराय ।
आजु रमानो तुम्हरो बँगला ❋ भोरहिं हमहिं रमानी बाट॥
बहता पानी रमता जोगी ❋ इनको कोनु सकै बिरमाय।
फिरिकै ऊदनि बोलन लागे ❋ राजा सुनिलेउ अर्ज हमारि

लाखा पातुर जो तुम्हरी है ❋ ताको नाच देउ दिखलाय।
सुनी खबरिया हम काशीमें ❋ तब यह शहर मँझायो आय॥
नीके गावै नीके नाचै ❋ मानौ इन्द्रअप्सरा नारि।
बात मानिके तब जम्बैने ❋ लाखा पातुर लई बुलाय॥
बाजो तबला ब्रजबासिनको ❋ ठाढी भई साजि सब साज।
बजी सरंगी तब बँगलामें ❋ औ गति लगी मँजीरन क्यार
लाखा पातुर नाचन लागी ❋ औ फिरि तान सुनावन लागि
क्या गतिबरणौं त्यहि औसरकी ❋ जोगी बहुत खुशी ह्वै जायँ
लाखा पातुर नाचति आई ❋ जब जोगिनतर पहुँची आय
बोले ऊदनि तब आल्हासे ❋ दादा मानौ वचन हमार॥
लाखा पातुर है महुबेकी ❋ ताको दिहौ नौलखाहार।
यह सुनि आल्हा हटकन लागे ❋ ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि॥
देखि जो पैहै राजा जम्बै ❋ सबकी कैद लिहै करवाय।
हटकी मानी ना ऊदनिने ❋ तुरत नौलखा दियो गहाय॥
हाल जानिलियो तब लाखाने ❋ हरवा तुरत लियो पहिचानि।
सूरति देखी जब सैयदकी ❋ तब अपने मन कियो विचार॥
ये तौ लडिका हैं महुबेके ❋ माडौ लिहैं बापको दाउँ।
करो इशारा लाखापातुर ❋ तुम सब कूच जाउ करवाय॥
जानि जो पैहै राजा जम्बै ❋ अबहीं तुमहिं लिहैं बँधवाय।
समुझि इशारा गे सब जोगी ❋ ऊदनि तुरतै दियो जवाब॥
लेहैं बदलो हम ददुआको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय।
बारह बरस रहिउ माडौ तुम ❋ अब महुबेको होउ तयार॥
इतनी कहिकै जोगी चलिभै ❋ फाटक निकरि गये वा पार।
लाखा पातुर हार छिपावै ❋ नाचै भाव बताय बताय॥
आँचर उडो जबहिं लाखाको ❋ हरवा चमकि चमकि रहिजाय

हरवा देखिलियो राजाने ❀ तब लाखासे कही सुनाय ॥
है यह हरवा गढ महुबेको ❀ पायो कहाँ नौलाखाहार ।
यह सुनि लाखा पातुर बोली ❀ औ राजासे लगी बतान ॥
बारह बरसे भईं माडोमें ❀ कबहुँ न मिलो नौलखाहार ॥
राह चलन्ते जोगी आये ❀ सो देगये नौलखाहार ॥
इतनी सुनते परले ह्वैगइ ❀ जम्बे बहुत गये घबराय ।
बोले जम्बे तब करियासे ❀ बेटा तनिक महललौं जाउ ॥
हार नौलखा जल्दी लावो ❀ हमरी नजरि गुजारो आय ।
इतनी सुनते करिया चलिभो ❀ खटकत जाय भुजनपर ढाल
जूता लपेटा मरकत आवे ❀ जाको चलत न लागे बार ।
जहँपर बैठी कुशला रानी ❀ आयो तहाँ करियाराय ॥
सूरत देखी जब बेटाकी ❀ तुरते उठी कुशलदे रानि ।
लई बिजनियाँ कर फूलनकी ❀ सो करिया पर करै बयारि ॥
पूँछन लागी तब करियासे ❀ बेटा हाल देउ बतलाय ।
कौन कामको तुम आये हो ❀ सो तुम साँची देउ बताय ॥
करिया बोलो हाथ जोरिके ❀ औ मातासे कही सुनाय ।
हमको भेजा है दादाने ❀ लावो जाय नौलखा हार ॥
करो बहाना तब कुशलाने ❀ औ करियासे कही सुनाय ।
हरवा टूटिगयो कछु दिनसे ❀ सो पटवाघर दियो पठाय ॥
बोलो करिया तब कुशलासे ❀ टूटो हार देउ मँगवाय ॥
खाय सनाका गइ रानी तब ❀ मनमें बहुत गई घबराय ।
बोली कुशला तब करियासे ❀ बेटा कछू कही ना जाय ॥
पाँच योगिया ऐसे आये ❀ जिनके रूप न बरणे जायँ ।
करो तमाशा तिन जोगिनने ❀ महलन दई मोहनी डारि ।
हार नौलखा हमसे माँगो ❀ हमने हरवा दियो उतारि ॥

भारी भूल भई हमसे यह ❋ हमरी मति मारी भगवान।
यह अनहोनी हमसे होगइ ❋ ताको अब ना कछू उपाय॥
इतनी बात सुनी करियाने ❋ मनमें गयो सनाका खाय।
उहाँसे करिया बदलाति आयो ❋ औ जम्बैतर पहुँचो आय॥
हाल बतायो सब हरवाको ❋ तब राजाने कही सुनाय।
अबहीं बेटा तुम चलि जावो ❋ औ जोगिनको लावो बाँधि।
जोगी नाहीं वे भोगी हैं ❋ केहु राजनके राजकुमार।
घर घर माडौ उन पँजियाई ❋ औ सब लश्कर लियो मँझाय
करियाचालि भयो तब बँगलासे ❋ पचपेंडनकी पकरी राह।
तीनि घरीको अरसा गुजरो ❋ औ जोगिनतर पहुँचो जाय॥
तुरत अवाज दई जोगिनको ❋ जोगिऔ सुनो हमारी बात।
तुमहिं बुलायो है राजाने ❋ अबहीं चलो हमारे साथ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ हमरो बचन करो परमान।
हुक्म नहीं है गुरु हमरेको ❋ जो हम धरैं पिछारू पाँव॥
सुनतै करिया राहुट होइगा ❋ गुस्सा गई देहमें छाय।
यक ललकार दई करियाने ❋ अपनी खैंचिलई तलवार॥
पाँव जो धरिहो तुम आगेको ❋ तो हम दिहैं जानसे मारि।
इतनी सुनते ऊदनि तडपे ❋ अपनी खैंचिलई तलवार॥
देखि हकीकति मलिखे जरिगये ❋ उनहूँ खैंचिलई तलवार।
मलिखे खैंचत ढेबा खैंची ❋ औ करियाको घेरो जाय॥
धोखे न रहियो तुम जोगिनके ❋ मारौं राज्यभंग ह्वइजाय।
सोचो करिया अपने मनमें ❋ ये महुबेके राजकुमार॥
मुँह जो लगिहौं इन जोगिनके ❋ हमरो प्रान बचैगो नाहिं।
उनहीं पांयन करिया लौटो ❋ औ बँगलामें पहुँचो आय॥
हाथ जोरिके करिया बोलो ❋ ददुआ सुनो हमारी बात।

धोखे रहियो ना जोगिनके ❋ वे महुबेके राजकुमार ।
गुस्सा होइके उन जोगिनने ❋ हमपर खेंचलई तलवार ॥
इतनी बात सुनी जम्बैने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ।
बोले जम्बै तब सूरजसे ❋ बेटा लश्कर लेउ सजाय ॥
आये महोबिया हैं माडोमें ❋ सबके मूँड लेउ कटवाय ।
इतनी सुनिकै सूरज चलिभै ❋ अपनी फौज सजावन लाग
राम बनावे सो बनिजावे ❋ बिगरी बनत २ बनिजाय ।
हियाँकि बातें तौ हियई रहिं ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ॥
डगरत आये पाँचौ जोगी ❋ औ बबुरीबन पहुँचे आय ।
जहँपै तँबुआ रानि देवैको ❋ हेरै बाट जोगियन क्यार ॥
तौलौं जोगी दाखिल होइगे ❋ देवै बहुत खुशी होइजाय ।
थार सुबरनको मँगवायो ❋ तामें चौमुख दियना बारि ॥
करी आरती सब लडिकनपर ❋ औ तँबुवनमें पहुँचे जाय ।
बोले ऊदनि तब मातासे ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
घर घर माडो हम पंजिआई ❋ औ महलनमें पहुँचे जाय ।
देखि तमाशा कुशलारानी ❋ हमको दियो नौलखाहार ॥
तुम्हरो हरवा माता लैके ❋ हम लाखाको दियो गहाय ।
कोट मँझायो हम लोहागढ ❋ देखी फौज बघेले क्यार ॥
यक तकरार भई करियासे ❋ सो समुदंसे गयो त्रराय ।
खबरि पहुँचिगइ है जम्बैको ❋ आये यहाँ महोबिया ज्वान
इतनी बात कही देवैसे ❋ फिर ढेबासे कही सुनाय ।
पाँजि देखिहैं अब नदीकी ❋ भैया चलो हमारे साथ ॥
इतनी कहिके ऊदनि चलिभये ❋ औ ढेबाको संग लिवाय ।
नदी नर्मदा पर चलिआये ❋ औ धोबिनसे लगे बतान ॥
पाँजि बताई देउ नदीकी ❋ तब धोबिनने कही सुनाय ।

पाँच खेत पश्चिमको हटिकै ❀ सीधे उतारि जाउ वा पार॥
इतनी सुनिकै दोनों चलिभये ❀ पहुँचे पाँच खेतपर जाय ।
नदी मँझाई तहँ दोउदनने ❀ सो कम्मरसे परी दिखाय॥
लग्गी गाडि दई बाँसनकी ❀ अपनो चीन्हा दियो बनाय।
ध्वजा बाँधिकै उन बाँसनमें ❀ औ चलिभये लहुरवा भाय॥
चारि घरी केरे अरसामें ❀ अपने तँबुअन पहुँचे आय ।
बैठे आल्हा जेहि तम्बूमें ❀ ऊदनि जाके करी सलाम॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❀ दादा सुनो हमारी बात ।
नदी नमर्दा जहँ थाही है ❀ तहँ हम चीन्हा दियो बनाय
फौज उतारि लिहैं जल्दीमे ❀ अब आगेको करो विचार।
बारह कोसमें बबुरी बन है ❀ चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय
राह न सूझिपरै काहूको ❀ कैसे जायँ फौज असवार ।
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❀ बबुरी बनको देउ कटाय ॥
चन्दन बढईको बुलवावो ❀ नौसै बढई संग लिवाय ।
हुक्म पायकै तबऊदनिने ❀ चन्दन बढई लियो बुलाय॥
नौसै बढई संग लीन्हे ❀ औ बबुरी बन पहुँचे जाय ।
बजो कुल्हाडा बबुरी बनमें ❀ तब ऊदनिने कही सुनाय ॥
कहुँ कहुँ बिरवा छोडत जैयो ❀ बैठा जहाँ करैं बिसराम ।
सैयद बोले सब लडिकनसे ❀ बढई देहैं देर लगाय ॥
जाय पहूँचो बबुरी बनमें ❀ जल्दी काटि करो खरिहान।
सिगरे लडिका उठि ठाढे भे ❀ बहुतक उठे महोबिया ज्वान
खाँडा लीन्हों केहु क्षत्रीने ❀ काहू तेगा लियो उठाय ।
लियो गँडासा केहु क्षत्रीने ❀ औ बबुरीबन पहुँचे जाय॥
झुके महोबिया बबुरीबनमें ❀ लै बजरंगबलीको नाम ।
सवापहर केरे अरसामें ❀ सब बन काटि करो खरिहान॥

कहुँ कहुँ बिरवा काटत छोंडे ❋ घेहा करिहैं जहां मुकाम ॥
खबरि सुनाई नुनि आल्हाको ❋ सब बबुरीबन दियो कटाय।

अनूपी व टोंडरमलकी ऊदनिसे लडाई।

संझा तारनि तुमका गैये ❋ घर घर दिया जलायो आय।
डगरत गौवें घर घर आईं ❋ उडिउडि पंछिन लीन्ह बसेर
बेटा अनुपी जो जम्बैको ❋ रणमें एक शूर सरदार।
लगी कचहरी जहँ अनुपीकी ❋ भारी लागि रहा दरबार॥
दहिने बैठे तहँ टोंडरमल ❋ बैठे बडे बडे सरदार।
रेख उठन्ते क्षत्री बैठे ❋ टिहुना धरे नाँगि तलवार॥
मचियाके सँग मचिया रगडै ❋ मोढा रगडि रगडि रहिजायँ
इक हरकारा दौरति आयो ❋ सो टोंडरपुर पहुँचो आय॥
अनुपी बैठो जो समुहेपर ❋ धावन तहां गयो नियराय।
करी बन्दगी हरकाराने ❋ औ अनुपीसे कही सुनाय॥
आये महोबिया बबुरीबनमें ❋ सिगरो जंगल दियो कटाय।
इतनी सुनते अनुपी जरिगये ❋ गुस्सा गई देहमें छाय॥
तुर्त नगडचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय।
बजे नगाडा मेरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार॥
तोप दरोगाको बुलवायो ❋ औ यह हुकम दियो फरमाय
बडि बडि तोपें अष्टधातुकी ❋ सो चरखिन पर देउ चढाय
हुक्म पायकै चलो दरोगा ❋ तोपें सबै सजावन लाग।
हनू हँकारनि किला गिरावनि ❋ भैंरों तोप लई सजवाय॥
बुर्ज मरोरनि औ घनगर्जनि ❋ तोप संकटा लई सजाय।
सूर्य लपकनि चन्द्र झपकनि ❋ किला धसकनि लई सजाय
बिजुलीतडपनि पर्वत फाटिनि ❋ तोप लक्ष्मना करी तयार।

बडि बडि तोपैं टोंडरपुरकी ❋ सो सब साजिभईं तैयार ॥
हाथिनवालेको बुलवायो ❋ सिगरे हाथी करो तयार ।
हुक्म पायकै चलो दरोगा ❋ हाथी सबै सजावन लाग ॥
सिंगलद्वीपी हाथी साजे ❋ मकुना हाथी लिये सजाय ।
धौलागिरि हाथी सजवाये ❋ हाथी भूरा लिये सजाय ॥
मैनकुंज मलयागिरि साजे ❋ भौंरा हाथी करे तयार ।
अंगदगिरि पंकदगिरि साजे ❋ कजरी बनके करे तयार ॥
हाथी मदमाते सजवाये ❋ खूनी हाथी लिये सजाय ।
हाथी यकदन्ता सजवाये ❋ औ दुइदन्ता लिये सजाय ॥
जितने हाथी टोंडरपुरके ❋ सो सब साजि भये तैयार ।
डारिकै गद्दा इन हाथिनपर ❋ रेशमरस्सा दिये कसाय ॥
हौदा धरिगे हैं चाँदीके ❋ ऊपर कलश सुवरन क्यार ।
यक यक हाथीके हौदामें ❋ बैठे चारि चारि असवार ॥
कहँलग बरनौं मैं हाथिनको ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
घोडनवालेको बुलवायो ❋ सिगरे घोडा करो तयार ।
हुक्म पायकै चलो दरोगा ❋ घोडा सबै सजावन लाग ॥
गर्रा भर्रा पचकल्यानी ❋ रसकी मुसकी करे तयार ॥
घोडा काबुली सब सजवाये ❋ औ दरियाई लिये सजाय ।
भुइँ लोटन कुम्मैत बछेरा ❋ सब्जा घोडा करे तयार ॥
चितला नकुला घोडा साजे ❋ औ जलपातुर लिये सजाय
ताजी तुर्की हरियल सुर्खा ❋ लक्खा कुंजा लिये सजाय ।
घोडा सबरंगा सजवाये ❋ अर्बी घोडा लिये सजाय ।
जितने घोडा टोंडरपुरके ❋ सो सब साजि भये तैयार ॥
धरि कठलानी इन घोडनपर ❋ ऊपर जीन दिये धरवाय ।
लगे बकसुआ हैं सोनेके ❋ रेशम तंग दिये खिंचवाय ॥

डारि रकाबें चाँदीवारी ❋ औ कंचनकी लगी लगाम।
कहँलग बरनौं मैं घोडनको ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
फिर सब क्षत्री साजन लागे ❋ जिनका सजत न लागै बार।
जितना गहना रजपूतीका ❋ क्षत्रिन पहिरि लियो तत्काल
बजो नगाडा टोंडरपुरमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार।
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्रीन धरे रकाबन पायँ।
चौथे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री निकरे बाग मारोरि॥
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❋ कोऊ गजरथपर असवार।
लश्कर चलिभयो टोंडरपुरसे ❋ तोपैं चलीं फौजके साथ॥
पहिया ढुरकें इन तोपनके ❋ करकत जायँ सेंदुरियाबान।
राजा अनुपी साजन लागो ❋ जो जम्बैको राजकुमार॥
करि अस्नान ध्यान पूजाकरि ❋ धोती पहिरि पोतियाक्यार
सुमिरन करिकै श्रीगणपतिको ❋ लै बजरंगबलीको नाम॥
लंग चढाई रेशमवारी ❋ जामें नाहिं गडै हथियार।
सब्ज बनाती अनुपी पहिरे ❋ ताके ऊपर कुलह कबार॥
झिलम साबरी तापर पहिरे ❋ जामें गडै नाहिं हथियार।
ताके ऊपर बख्तर पहिरे ❋ जामें सेल्ह बिलौंचा खाय॥
टोप झलरिहा धरि माथेपर ❋ गोली लगत चीप होइजाय।
अगल बगलमें दुइ पिस्तौलैं ❋ बायें और गैंडकी ढाल।
भाला सोहै नागदोनिको ❋ दहिने सिंहिनिमूठि कटार॥
छप्पन छुरियाँ कम्मर बाँधे ❋ कलहा दुइ बाँधे तलवार।
लाल कमनियाँ मुलतानीकी ❋ जोडी कडाबीनकी बाँधि॥
घोडा सुर्खाको सजवायो ❋ तापर अनुपी भयो सवार।
दहिने सजिगे हैं टोंडरमल ❋ घोडा सब्जापर असवार॥

लश्कर आवे यहु अनुपीको ❋ डंका होत गोलमें जाय ।
पहर एकको अरसा गुजरो ❋ पहुँची फौज समर मैदान ॥
राम बनावें सो बनिजावे ❋ बिगडी बनत बनत बनिजाय
यहाँकि बातैं तौ यहँ छोडौ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ॥
सुनी खबरियाँ बघऊदानिने ❋ आई फौज बघेले क्यार ।
घोडा बेंदुलाको सजवायो ❋ ऊदनि फाँदि भये असवार ॥
घोडा मनुरथा पर ढेबा चढि ❋ दोनों चले एकही साथ ।
जायके पहुँचे दोउ लश्करमें ❋ तुरतै डंका दौ बजवाय ।
बजो नगाडा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्रिन धरे रकाबन पाँय ॥
चौथे डंकाके बाजतखन ❋ लश्कह चला बनाफरक्यार ।
नदी नमर्दा पर लश्कर सब ❋ पहुँचा चारि घरीमें जाय ॥
परो उतारा है नदी पर ❋ लश्कर उतरि गयो वा पार
चारि घरीके अरसामें ❋ पहुँची फौज समर मैदान ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो तीस खेत मैदान ।
घोडा बेंदुलाको चढवैया ❋ रानी देवकुँवरिको लाल ॥
घोडा बढायो त्यहि आगेको ❋ औ अनुपीपे पहुँचो जाय ।
समुहे देखो जब ऊदनिको ❋ तब अनुपीने दियो जवाब
कौन देशके तुम ठाकुरहो ❋ काहे धुरे दबायो आय ॥
काहे बबुरीबन कटवायो ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
नगर महोबा यक बस्ती है ❋ जहँपर बसैं चँदेलेराय ।
तिनके घरके हम लडिकाहैं ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
हम कटवायो है बबुरी बन ❋ माडौ लिहैं बापको दाउँ ।

इतनी सुनते अनुपी जरिगे ❋ औ ऊदनिसे लगे बतान ।
ऊदनि लौटि जाउ महुबेको ❋ काहे काल रहो नियराय ॥
प्राण बचाय जाउ जल्दीसे ❋ इतनी मानो कही हमारि ।
ऊदनि बोले तब अनुपीसे ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बदलो लेहैं हम माडौमें ❋ तब हम जैहैं कूच कराय ।
जो जो चीजें हमको चहिये ❋ सो सब तुरत देउ मँगवाय ॥
तौ हम लौटि जायँ महुबेको ❋ नाहीं खबरदार होइजाउ ।
घोडा पपीहा महुबेवालो ❋ लाखापातुर देउ मँगाय ॥
हार नौलखा गज पचशावद ❋ सो तुम तुरत देउ मँगवाय।
रानी विजमाको डोला सजि ❋ लावो शीश करिंघा क्यार
मुश्क बाँधिके तुम जम्बेकी ❋ हमरी नजरि गुजारो आय
इतनी बात सुनी ऊदनिकी ❋ अनुपी अग्निज्वाल होइजाय
अनुपी बोले टोंडरमलसे ❋ भाई खबरदार होइजाउ ।
जान न पावें महुबेवाले ❋ सबकी कटा देउ करवाय॥
बत्ती दैदेउ सब तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउ उडाय ।
इतनी सुनते टोंडरमलने ❋ तुरत खलासी लियो बुलाय
हुक्म दैदियो टोंडरमलने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
हुक्म पायके चलो खलासी ❋ थैली लई बरूदन क्यार ॥
थैली डारी बारूदनकी ❋ ऊपर गोला दिये डराय ।
रंजक भरिके बत्ती देदइ ❋ धुवना रहो स्वर्ग मँडराय॥
लौटे ऊदनि अपने दलमें ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय
बत्ती दैदेउ मोरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउ उडाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुवना रहो स्वर्गमें छाय ।
छाय अँधेरिया गइ दशहू दिशि ❋ अब कछु रहो ठिकाना नाहिं
अररर अररर गोला छूटें ❋ सरसर परी तीरकी मार ।

सननन सननन गोली छूटैं ❋ कह कह करैं अगिनियाँ बान
दोनों फौजनके संगममें ❋ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ।
जेहि हाथकि गोली लागै ❋ दलमें डोंकि २ रहिजाय ॥
जौन ऊँटके गोला लागै ❋ सो गिरिपरै चकत्ता खाय ।
गोला लागै जेहि घोडाके ❋ चारौ सुम्म गर्द ह्वै जाय ॥
गोला लागै जेहि क्षत्रीके ❋ ताकी त्वचा स्वर्ग मडराय
गोला जाँजिरहा जेहिकै लाग ❋ ताके हाड मांस छुटिजायँ
बंबको गोला जेहिके लागै ❋ सो लत्ताअस जाय उडाय ।
बानको डंडा जेहिके लागै ❋ ताके दुइ खंडा होइ जायँ ॥
भारी गोला ज्यहिके लागै ❋ मानौ गिरह कबूतर खाय ।
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ कोई कुँवर न टारै पाउँ ॥
तोपैं धैंधैं लाली होइगईं ❋ तिनपर हाथ धरा ना जाय
चढी कमनियाँ पानी ह्वै गईं ❋ चुटकिनके गै मांस उडाय ॥
तोप रहकला पीछे छाँडे ❋ रहिगयो चारि कदम मैदान
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
साँगैं चलन लगीं दोनोंदल ❋ ऊपर बर्छिनकी दइ मारु ।
छूटे पिचका हैं लोहुनके ❋ औ बुबकारिन बोलैं घाव ॥
हौदा भारिगे तहँ लोहूसे ❋ औ चुचुआत फिरैं असवार
बूडि जुलुफियाँ गईं लोहूसे ❋ चरबी अंग गई लपटाय ॥
भारी मारु भई बर्छिनकी ❋ भारी भई साँगकी मारु ।
टूटिकै भाला दुइ खंडा भये ❋ लदुआ कटि बर्छिनके जायँ
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगयो डेढ कदम मैदान
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खटखट चलन लगी तलवार
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार
तेगा चटक बर्दवानके ❋ काटि कटि गिरैं केसरिहा ज्वान

पैदल अभिरिगये पैदलसँग ❀ औ असवारनसे असवार।
हौदा मिलिगे हैं हौदन सँग ❀ हाथिन अडो दाँतसे दाँत॥
बारह कोसीके गिरदामें ❀ चारो ओर चलै तलवार।
पैदल गिरिगे पैग पैगपर ❀ उनके दुदुइ पैग असवार॥
रेख उठंते क्षत्री कटिगे ❀ तिन घर तिरियन कौन हवाल
हाथी डारे बिसे बिसेपर ❀ छोटे पर्वतकी उनहार॥
कटे भुसुंडा जिन हाथिनके ❀ धरती गिरें करौंटा खाय।
कटिगे कल्ला जिन घोडनके ❀ सो गिरिपरें भूमि भहराय॥
कटि भुजदंडें रजपूतनकी ❀ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार
डारी ढालें जो लोहूमें ❀ मानो कछुआसी उतरायँ॥
पगिया डारी जो लोहूमें ❀ मानों ताल फूल उतरायँ।
परे दुशाला हैं लोहूमें ❀ मानों नदी परो सेवार॥
हैं बन्दूकें जो लोहूमें ❀ मानों नाग रहे मन्नाय।
डारे घैहा हैं खेतनमें ❀ जिनके प्यास प्यास रटलागि
मोहर कटोरा पानी है गयो ❀ रणमें कोइ न पूछे बात।
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदनि कहें सुनाय सुनाय॥
जीतिके चलिहो जो महुबेको ❀ दूनी तलब दिहौं करवाय।
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❀ तुम सब भैया लगो हमार॥
झुके सिपाही महुबेवारे ❀ दोनों हाथ करें तलवार॥
तीनि लाखसे अनुपी आयो ❀ रहिगयो डेढ लाख असवार
भगे सिपाही मारवाडके ❀ अपने डारि डारि हथियार।
गोल फूटिगो भर्रा परिगयो ❀ लश्कर अनी बिकल होइ जाय
कोऊ रोवै माइ बापको ❀ कोऊ लडिकनको चिल्लाय।
कोऊ रोवै घर तिरियाको ❀ बेडा कौन लगै है पार॥
लंबी धोतिनके पहिरैया ❀ तिन नारेनकी पकरी राह।

छोंडि नौकरी हम अनुपीकी ❋ बनमाँ बीँचि लकडियाँ खाब
भेडहा आये हैं महुबेसे ❋ सो मनइनके करैं अहार ।
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय ॥
भाँग उतरिगइ भंगेडिनकी ❋ गाँजावाले गये बराय ।
अफीमी रणके भीतर ❋ पलकैं उघारि उघारि रहिजायँ
के सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारुमारु रटलागि ।
भगत सिपाही अनुपी देखे ❋ अपनो घोडा दियो बढाय॥
जहां बेंदुलाको चढवैया ❋ अनुपी तहाँ पहूँचे जाय ।
बोले अनुपी तब ऊदनिसे ❋ नाहक प्राण गँवाये आय ॥
अबहूँ लौटिजाउ महुबेको ❋ इतनी मानो कही हमारि ।
यह सुनि ऊदनि बोलनलागे ❋ बेटा सुनो बघेल कयार ॥
ऊदनि लौटनके नाहीं हैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ ।
बदला लैके अपने बापको ❋ महुबे कूच जायँ करवाय ॥
इतनी सुनतै अनुपी जरिगे ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
नौ नौ रुपियाके नौकर हैं ❋ काहे कटादिहौ करवाय ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ दुइमें एकु आँकु रहिजाय ।
यह मनभाई बघऊदनिके ❋ तब अनुपीने कही सुनाय ॥
पहिली चोट करो ऊदनि तुम ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ अनुपी सुनो हमारी बात ॥
वंश हमारे यहै रीति है ❋ आगे कुला कुला व्योहार ।
चोट अगारी हम ना मारैं ❋ ना भागेके परैं पिछार ॥
बालक बूढेको ना मारैं ❋ ना तिरियापर डारैं हाथ ।
ना हम मारैं गौ ब्राह्मणको ❋ ताते करो चोट तुम आय ॥
इतनी सुनिके तब अनुपीने ❋ अपनी खैंचि कमनियाँ हाथ
गाँसी खावे सरभरेकी ❋ तापर फोंक जमावन लाग ॥

खैंचि कमनियाँ भुजदंडनपर ❋ दियरा डारि उदैसिंहक्यार
कैबर छाँडो जब सम्मुहेपर ❋ ऊदनि लीन्हीं चोट बचाय
साँग उठाई फिरि अनुपीने ❋ सो ऊदनिपर धमकी जाय।
घोडा बेंदुला दहिने होइगयो ❋ नीचे साँगि गिरी अरराय
देखि हकीकति अनुपी बोले ❋ अबहूँ मानौ कहा हमार।
चुप्पे लौटिजाउ महुबेको ❋ नाहक देहौ प्राण गँवाय॥
इतनी सुनते ऊदनि हँसिकै ❋ औ अनुपीको दियो जवाब
धर्म क्षत्रियनके नाहीं हैं ❋ रणमें धरें पिछारू पाँव॥
वार तीसरि अनुपी करिलेउ ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ।
गुस्सा ह्वइकै तब अनुपीने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार
करो जडाका बघऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल।
तीनि शिरोही गहि गहि मारीं ❋ ऊदनिकेनहिंआयो घाव॥
टूटि शिरोही गइ अनुपीकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय
तबहीं अनुपी सोचन लागे ❋ हमरो काल रहोनियराय॥
आजु शिरोही धोखा देगइ ❋ हमरे प्राण बचनके नाहिं।
ऊदनि बोले तब अनुपीसे ❋ अनुपी खबरदार ह्वइजाउ
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अबकचलोहियादेखुहमारि
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ लै बजरंगबलीको नाम॥
करो जडाका तब अनुपीपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल।
ढाल फाटिगइ गैंडावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय
छूटि जनेवा गयो अनुपीको ❋ अनुपी गिरे भूमि महराय॥
देखि हकीकति टोंडरमलने ❋ भारी जाय दई ललकार।
सम्हरो ऊदनि तुम घोडापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नागिचाय
गुर्ज उठायो टोंडरमलने ❋ भारी जायदई ललकार॥
घोडा बेंदुला ऊपर उडिगयो ❋ नीचे गिरो गुर्ज अरराय।

खैंचि शिरोही लइ टोंडरने ❋ सो ऊदनिपर दई चलाय॥
तीनि शिरोही टोंडर मारी ❋ उनकी टूटि शिरोही जाय
खाली मूठि हाथ जब रहिगइ ❋ टोंडर गये सनाका खाय ॥
आजु शिरोही धोखा देइगइ ❋ हमरो काल पहूँचो आय ।
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❋ औ टोंडरको दियो गिराय
मुश्क बाँधिलइ टोंडरमलकी ❋ औ ढेबासे कही सुनाय ।
यह है बँधुआ गढ माडोका ❋ यहि लश्करमें देउ पठाय ॥
बँधुआ लैके ढेबा चलिभा ❋ औ बबुरी बन पहुँचे जाय
बारहदरी गये ऊदनि तब ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय
पहिलि लडाई गढ माडोंकी ❋ सो हम लिखिकै दई सुनाय
दुसरी लडाई सूरजमलकी ❋ यागे सुनियो कान लगाय

सूरजमलकी लडाई ।

सुमिरण करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरणमनाय
आदिसरस्वतिकोसुमिरनकरि ❋ माता कंठ बिराजो आय ।
सांझ सुमिरिये जगदम्बेको ❋ भोरहि लेउ रामको नाम॥
भोलानाथ जपौ निशिवासर ❋ जाते होय ग्रन्थ सरनाम ।
बिधवा ह्वैके पान चबावै ❋ नैहर तिरिया करे सिंगार
ज्यहिकिसानघरबैरनदीपक ❋ त्यहि घरकुशलकरैकरतार
बारहदरी कि सुन्दर बैठक ❋ बारहदरी प्रगट संसार ।
लगी कचहरी सूरजमलकी ❋ अजगर लागि रहा दरबार
यक हरकारा बदलति आयो ❋ बारहदरी पहूँचो आय ।
करी बन्दगी सूरजमलको ❋ औ सब हालुसुनायोआय
लश्कर आयो गढ महुबेसे ❋ औ बबुरीबन पहुँचो आय
आल्हा ऊदनि दुइ भैया हैं ❋ तिन बबुरीबनदियोकटाय

भई लडाई बबुरी बनमें ❀ सिगरो लश्कर गयो बिलाय
अनुपी जूझिगये खेतनमें ❀ चालिके लाश लेउ उठवाय
ऊदनि बाँधि लियो टाडरको ❀ औ लश्करमें दियो पठाय
इतनी सुनिके सूरज जरिगये ❀ नैना अग्निज्वाल होइजायँ
हुक्म देदिया तब जल्दीसे ❀ लश्कर तुरत होय तैयार ।
बजो नगाडा तब लश्करमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
गलिन गलिन घूमे हरकारा ❀ औ ललकार देय कोतवाल
क्षत्रिउ त्यार होउ जल्दी तुम ❀ अपने बाँधि बाँधि हथियार
इतनी सुनतै सब क्षत्रिनने ❀ अपने बाँधिलिये हथियार ।
अपने अपने सब घोडनपर ❀ क्षत्री निकरे बाग मरोरि ॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो चरखिनपर दई चढाय
जितनी तोपैं थीं सूरजकी ❀ सो सब साजि करी तैयार
जितने हाथी थे सूरजके ❀ सब पर हौदा धरे बनाय ।
जितने घोडा घुडशालामें ❀ काठी एक साथ खिंचजाय
जितने पैदल थे लश्करमें ❀ कमरैं एक साथ खिंचजायँ।
मारू डंकाके बाजत खन ❀ सिगरी फौज भई तैयार ॥
चलिभयो लश्कर सूरजमलको ❀ शोभा कछू कही ना जाय।
कोउ कोउ घोडा हंसचालपै ❀ कोउ कोउ मंदचालपै जाय
कोइ २ पबियन कोइ रोहानन ❀ कोउ २ तितुर चालपै जाय।
बाग फिरावैं कोइ दुलकिनपर ❀ कोऊ हिरन चालपै जाय ॥
हंस चालपै मोर चालपै ❀ कोऊ चाल सागमानि जाय।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❀ कोऊ गजरथपर असवार॥
खरखर खरखरते रथ दौरैं ❀ रब्बा चलैं पवनके साथ ।
पहिया दुरकैं तिन तोपनके ❀ कर्कत जायँ सेंदुरिया बान
करी तयारी सूरजमलने ❀ घट गंगाजल लिये मँगाय ।

कारि अस्नान ध्यान ड्योढीमें ❋ धोती पहिरि पोतियाकेरि॥
डारि आसनी रेशमवाली ❋ सूरज बैठिगये हरगाय।
चन्दन रगरो मलयागिरिको ❋ सोने कटोरा धरो उतारि॥
पूजन करिकै गणनायकको ❋ लेकै महादेवको नाम।
चन्दन दीन्हों निज मस्तकपर ❋ भुजदंडनपर लियो लगाय
लंग चढाय लई रेशमकी ❋ जामें गड़ै नाहिं हथियार।
पहिले पहिरे वस्त्र बनाती ❋ ताके ऊपर कुलह कबार॥
तेहिपर पहिरे झीलम अपनी ❋ जामें टूटिजाय तलवार।
ताके ऊपर बख्तर पहिरे ❋ जामें मेल नाहिं अनियाय
टोप झलरिहा धरि माथेपर ❋ गोली लगत चीप होइ जाय
बारह छुरियाँ कम्मर बाँधे ❋ कलहा दुइ बाँधे तलवारि॥
अगल बगल पर दुइ पिस्तौलैं ❋ दहिने सिंहिनि मूठ कटार।
भाला सोहै नागदौनिको ❋ बायें ओर गैंडकी ढाल॥
जोडी बाँधे कडाबीनकी ❋ गोली टकाभरकी खाय।
लेकै पटुका कम्मर बाँधै ❋ कम्मर तीनि तीनि बलखाय
लाल कमनियाँ है मुल्तानी ❋ गाँसी डेढसेरकी खाय।
सजिकै सूरजमल ठाढे भे ❋ मानौं इन्द्र अखाडे जायँ॥
हरियल घोडा सूरजमलको ❋ तापर फाँदिभये असवार।
घूमें झंडा दरियाइनके ❋ लश्कर रही लालरी छाय॥
सूरज बोले सब क्षत्रिनसे ❋ यारो सुनियो कान लगाय
नमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाडनमें गयो समाय॥
पाँव पिछारू तुम ना धरियो ❋ रणमें राखियो धर्म हमार।
बोले क्षत्री सूरजमलसे ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात॥
गंगा कीन्हीं सब हिंदुनने ❋ औ तुर्कनकी उठी कुरान।
हम ना भागि हैं रणसमुहसे ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ॥

लश्कर आयो सूरजमलको ❋ औ खेतनमें पहुँचो आय।
बाजन लागी है रणमोहरि ❋ बाजै तुरही औ कंडाल॥
ढाढी करखा बोलनलागे ❋ क्षत्री बीररूप होइ जायँ।
लास पडी थी जहँ अनुपीकी ❋ सूरज हुआँ पहूँचे जाय
उतारि बछेराते भुइँ आये ❋ औ अनुपीको लियो उठाय
लाश लेटाय दई नलकीमें ❋ सो माडौको दई पठाय॥
फांदि बछेरापर चढिबैठे ❋ औ मुर्चापर पहुँचे जाय।
आध कोसको टप्पा रहिगयो ❋ सूरज घोडा दियो बढाय॥
सिंहकि गरजनि सूरज गरजे ❋ भारी जाय दई ललकार।
कौनसो क्षत्री चढिआयो है ❋ ज्यहि बबुरीवन दियो कटाय
कौने मारो है अनुपीको ❋ औ टोंडरको लियो बँधाय।
कौन शूरमा है महुबेको ❋ सो सम्मुहे होइ देइ जवाब॥
कान अवाज परी ऊदनिके ❋ अपनो घोडा दियो बढाय।
बोले ऊदनि सूरजमलसे ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात॥
हम चढिआये हैं महुबेसे ❋ हम बबुरीवन दियो कटाय।
हमने मारो है अनुपीको ❋ औ टोंडरको लियो बँधाय॥
हमहिं शूरमा हैं महुबेके ❋ हमरोइ उदयसिंह है नाम।
बदला लेहैं अपने बापको ❋ माडो खोदि करैं हैं ताल॥
इतनी सुनिके सूरज जरिगे ❋ देही अग्निज्वाल होइजाय।
गुस्सा होइके सूरज बोले ❋ औ यह हुक्म दीन फरमाय॥
बत्ती दैदेउ मेरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउँ उडाय।
जान न पावैं महुबेवाले ❋ सबकी कटा देउँ करवाय॥
झुके खलासी तोपनवाले ❋ सो तोपनपर पहुँचे जाय।
लैके थैली बारूदनकी ❋ सो तोपनमें दई डराय॥
गोला डारिदिये तोपनमें ❋ घुम्मा मारैं बारम्बार।

रंजक धरिदइ तब प्यालनमें ❋ बत्ती ऊपर देउ लगाय ॥
धुआँ उडानो आसमानलौं ❋ दलमें रही अँधेरिया छाय ।
हुक्म देदिया बघ ऊदनिने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ अब कछु रहो ठिकाना नाहिं
अररर अररर गोला छूटैं ❋ कह कह करैं अगिनियाँ बान
सननन सननन गोली छूटैं ❋ सरसर परी तीरकी मारु ।
गोला पहुँचै तीनि कोसलौं ❋ गोली आध कोसलौं जाय॥
मारैं तीरन जे कमनैता ❋ गोलिन मारैं बरकन्दाज ।
चढी कमानिया गाँसी लागै ❋ मूखी निकरि जाय वा पार॥
एक पहरभरि गोला बरसो ❋ कोइ रजपूत न टारै पाँव ।
तोपैं धैंधैं लाली होइगईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ
मारु बन्द भइ तब तोपनकी ❋ पैदल पलटन बढी अगार ॥
लइ बन्दूकैं तब क्षत्रिनने ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
रिमझिम रिमझिम गोली बरसैं ❋ मानौ मघा बूँद झरिलाय॥
बरैं पलीता बन्दूकनके ❋ दागैं कडाबीन हथियार ॥
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ सो गज तीनि कदम हटि जाय
गोली लागै जौन ऊँटके ❋ सो गिरिपरै भूमि भहराय ॥
गोली लागै ज्यहि घोडाके ❋ सो गिरिपरै चकत्ता खाय ।
गोली लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरिपरै तुरत मैदान ॥
काल नहीं जिनको रणभीतर ❋ उनके गोली ना नगिचाय ।
जिनका काल लिखा खेतनमें ❋ समुहे लगै निशाना जाय ॥
तीनि घरी बन्दूकैं बाजीं ❋ ज्वानन हाथ सुस्त पडजायँ
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगयो डेढ कदम मैदान॥
हल्ला होइगयो रणखेतनमें ❋ क्षत्रिन खैंचिलई तलवार ।
खट खट खट खट तेगा बाजे ❋ बोले छपक छपक तलवार॥

चल जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान
पैदलके सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनसे असवार।
हौदाके सँग हौदा अभिरे ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत॥
सात कोसलों चलै शिरोही ❋ रणमें बीति रहा घमसान।
पैदलके सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनते असवार॥
बिसे बिसेपर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार।
कल्ला कटि गये जिन घोडनके ❋ धरती गिरैं करौंटा खाय॥
कटि भुजदंडै रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन केर।
घेहा डारे जे रणभीतर ❋ तिनके प्यास प्यास रट लागि
हलुके घायनके सहिजादे ❋ उठि उठि फेरि करैं तलवार।
शूर सिपाही समुहे जूझें ❋ कायर लै लै भगे परान॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय।
चारि लाखसे सूरज आये ❋ रहिगे दुई लाख असवार॥
घोडा बेंदुलाको चढवैया ❋ ऊदनि कहै पुकारि पुकारि।
नमक चँदेलेको खायो है ❋ सो हाडनमें गयो समाय॥
भागि न जैयो कोइ खेतनसे ❋ रखियो धर्म चँदेले क्यार।
रणके समुहेसे जो भगिहौ ❋ बुडिहै सात साखिको नाम
मानुष देही यह दुर्लभ है ❋ यारो जन्म न बारंबार।
समुहे लडिके जो मरिजैहौ ❋ ह्वै है जुगन जुगनलों नाम॥
जैसे पात टूटि तरुवरसे ❋ गिरिके बहुरि न लागै डार
जो मरिजैहौ खटिया परिके ❋ कोउ न नाम लिहैं संसार॥
बदला मिलि है जो दादाको ❋ दूनी तलब दिहौं बढवाय।
दियो बढावा जब ऊदनिने ❋ क्षत्री बीररूप ह्वै जायँ॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि।

घोडा बढायो बघऊदनिने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि
जैसे भेडहा भेडिन पैठे ❋ औ बन सिंह बिडारै गाय
तैसे झपटा उदनि बांकुडा ❋ सब दल रेनबेन होइजाय ॥
जैसे पान तँबोली कतरै ❋ जैसे खेती लुनै किसान ।
तैसेइ ऊदनि दलमें पैठे ❋ क्षत्रिन काटि करो खरिहान
वर्षाऋतुमें ज्यों जल बरसै ❋ त्यों रण बहै रक्तकी धार ।
बडे लडैया महुबेवाले ❋ रणमें काठिन करैं तलवार ॥
भगे सिपाही मारवाडके ❋ अपने डारि डारि हथियार।
भगत सिपाही मूरज देखे ❋ अपनो घोडा दियो बढाय॥
मूरज ललकारो ऊदनिको ❋ ठाकुर सुनौ महोबे बयार ।
नौकर चाकर जे क्षत्री हैं ❋ काहे डारि हो मूँड कटाय ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ दुइमें एकु आँकु रहिजाय।
यह मनभाई बघऊदनिके ❋ तब मूरजने कही सुनाय॥
चोट आपनी ऊदनि करिलेउ ❋ नाहीं मरग बैठि पछिताउ।
बोले ऊदनि तब मूरजसे ❋ पहिली चोट करत हम नाहिं
चोट आपनी मूरज करिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ।
लई कमनियाँ तब मूरजने ❋ गाँसी डेढ सेरकी खाय ॥
फोंक जमाई कैबर लैके ❋ औ गांसीको लियो चढाय
खैंचि कमनियाँ भुज दंडनपर ❋ तीबा मरमर होय कमान॥
हिकरा डारिकै तब ऊदनिको ❋ समुह छांडि कैबरी दीन ।
घोडा बेंदुला दहिने होइगयो ❋ बचिगयो दम्मरराजको लाल
साँग उठाई तब मूरजने ❋ औ ऊदनि पर दई चलाय।
घोडा बेंदुला ऊपर उडिगयो ❋ नीचे साँग गिरी अरराय ॥
बोले मूरज तब ऊदनिसे ❋ ऊदनि लौटि महोबे जाउ।
कही हमारी ऊदनि मानौ ❋ काहे देहौ प्राण गँवाय ॥

हँसिके ऊदनि बोलन लागे ❋ बेटा सुनौ बघेले क्यार ।
घोडा पपीहा हार नौलखा ❋ गज पचशावद देउ मँगाय॥
डोला देदेउ तुम बिजमाको ❋ लावौ शीश करिंघा क्यार
तौ हम लौटिजायँ महुबेको ❋ भोरहि कूच जायँ करवाय
इतनी कहते परले होइगइ ❋ सूरज अग्निज्वाल होइजाय
खैंचि शिरोही लइ सूरजने ❋ औ ऊदनि पर गरवी जाय
ढाल अडाई बघ ऊदनिने ❋ उनकी टूटि शिरोही जाय ।
होश बन्द भये तब सूरजके ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय॥
सोचैं सूरज अपने मनमें ❋ हमरो काल पहूँचो आय ।
जौन तेगसे हम गज काटे ❋ औ घोडनके काटे पाँव ॥
सोइ शिरोही धोखा देगइ ❋ अब ना बचिहैं प्राण हमार
दाबे बेंदुला ऊदनि आये ❋ औ सूरजसे कही सुनाय॥
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्हीं ❋ अब तुम खबरदार होइजाउ
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ औ सूरजपर दई चलाय ।
करो जडाका जब समुहेपर ❋ बायें उठी गेंडकी ढाल ॥
ढाल फाटिगइ सूरजमलकी ❋ चाँदी फूल गिरे भहराय ।
सूरज गिरिगे तब घोडासे ❋ सबदल रनबेन होइजाय॥
जूझे सूरज रणखेतनमें ❋ जीते जंग उदयसिंहराय ।
दुसरि लडाई यह माडौकी ❋ सो हम लिखिके दई सुनाय
तिसरि लडाई है करियाकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय

करियाकी लडाई ।

कुण्डलिया ।

मनमें धीरज धारिके, कीजे जप तप दान ।
लावे मन समुझायके, पदसरोजका ध्यान ॥

पदसरोजका ध्यान मान यह बचन हमारा ।
भवसागर नहिं अन्त कृष्णका लेय सहारा ॥
नारायण धारि ध्यान अरे मन चेत पियारा ।
भजै नहीं हरिनाम मूढ डूबै मझधारा ॥

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
लिखौं लडाई अब करियाकी ❋ यारो सुनौ त्यागि सबकाम
यक हरकारा बदलति आवै ❋ अपनी सँडिनीपर असवार
जहाँ कचहरी थी करियाकी ❋ अजगर लागिरहा दरबार॥
रेख उठंते क्षत्री बैठे ❋ टिहुना धरे नगिनि तलवार
नचैं कंचनी वा बँगलामें ❋ पहुँचो तहाँ शुतर असवार
साँकर खैंचत सँडिनी बैठी ❋ धावन उतरि परो अरगाय
समुहे पहुँचो जब करियाके ❋ धावन करी बंदगी जाय ॥
नजरि बदलिगइ तब करियाकै ❋ धावन हाथ जोरि रहिजाय
अर्ज गुजारी तब धावनने ❋ तुम सुनिलेउ करिंघाराय॥
आये महोबिया हैं महुबेसे ❋ सब बबुरीबन दियो कटाय
अनुपी ठाकुर रणमें जूझे ❋ टोंडर बाँधि लिये मैदान॥
सूरजमल जूझे खेतनमें ❋ तिनकी लाश लेउ उठवाय
बडे लडैया हैं महुबेके ❋ तिन करिदई बंशकी हानि
इतनी बात सुनी करियाने ❋ सिगरी देह गयी थर्राय ।
होश वन्द भये तब करियाके ❋ मनमें गयो सनाका खाय॥
धीरज धरिकै फिरि अपने मन ❋ तुरतै उठा करिंघाराय ।
चलिभयो करिया तब ड्योढीसे ❋ सिगरी सभा उठी भहराय
जुता लपेटा मकैत आवै ❋ खटकत जाय भुजनपर ढाल
बोलि नगडचीको बीरा दै ❋ सोने कडा दिये डरवाय ॥
बजै नगारा मेरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ।

तोप दरोगाको बुलवायो ❋ सिगरी तोपैं लेउ सजाय ॥
हाथिनवालेको बुलवायो ❋ हाथी सबै लेउ सजवाय ।
घोडनवालेको बुलवायो ❋ घोडा सिगरे लेउ सजाय॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुसियार ।
डेरन डेरन खबरैं होइगईं ❋ क्षत्री करन तयारी लाग ॥
गद्दा डारि दिये हाथिनपर ❋ रेशम रस्सा दिये कसाय ॥
ताके ऊपर हौदा धरिदिये ❋ हाथी साजि भये तैयार ॥
धरि कठनाली सब ऊँटनपर ❋ बलबल करैं साँडिया ठाढ ।
जीन धरायदिये घोडनपर ❋ ऊपर तंग दिये कसवाय ॥
गद्दा डारे मखमलवाले ❋ औ चाँदीकी डारि रकाब ।
जितना गहना रजपूतीका ❋ क्षत्री पहिरि भये तैयार ॥
बजे नगाडा बारह जोडी ❋ बाजैं तुरही औ कंडाल ।
शाहाबादी दुइ भैया हैं ❋ रंगा बंगा शूर पठान ॥
बोला करिया उन दोउनते ❋ तुम सुनिलेव हमारी बात ।
आये महोबिया महुबेवाले ❋ सबकी कटादेउ करवाय ॥
लश्कर लूटि लेउ महुबेको ❋ तुम्हरी लूटिमाफ होइजाय
पारसपूजा है महुबेमें ❋ लोहा छुअत सोन होइजाय
सोऊ लूटि लेव महुबेते ❋ जल्दी साजि होउ तैयार ।
इतनी सुनिकै दोनों चलिभये ❋ अपने घोडा लिये सजाय
कूदि सवार भये घोडनपर ❋ रंगा बंगा शूर पठान ।
हुक्म करायो तब करियाने ❋ हथि पचशावद करौ तयार
घोडा पपीहाको सजवावौ ❋ संगै कोतल चलै हमार ।
एक घरीको अरसा गुजरो ❋ दोनों साजिभये तैयार ॥
करी तयारी तब करियाने ❋ यहु जम्बैको राजकुमार ।
सोने चौकी तब डरवाई ❋ औ गंगाजल लियो मँगाय

कारि अस्नान ध्यान जल्दीसे ❋ धोती पहिरि पोतियाक्यार
डारि आसनी रेशमवाली ❋ तापर बैठ करिंघाराय ॥
पूजन करिकै गणनायकको ❋ करिकै इष्टदेवको ध्यान ।
सुमिरन करिकै हनूमानको ❋ माथे चन्दन लियो लगाय
पहिरि पैजामाँ मिसरूवालो ❋ जामा पहिरि दुदामी क्यार
बाँधो पटुका कसि कम्मरमें ❋ दहिनें लीन्हों घुरासि कटार
अगल बगलमें दुइ पिस्तौलैं ❋ बायें भुजा गैंडकी ढाल ।
तेगा बाँधे बर्दवानको ❋ भाला नागदौनिको हाथ॥
टोप झलरिया धरि माथेपर ❋ ऊपर कुंडी लइ औंधाय ।
साजि करिंघा जब ठाढो भयो ❋ मानों इन्द्र आखडे जायँ॥
हथि पचशाबद सजिकै आयो ❋ घोडा पपीहा पहुँचो आय।
सिढी लगाई मलयागिरिकी ❋ औ हौदापै पहुँचो जाय ॥
पहिलो पाँव धरो हौदामें ❋ समुहे भई तडाका छींक ।
अपने पंडितको बुलवायो ❋ औ यह कही करिंघाराय॥
साइति देखो तुम जल्दीसे ❋ समुहे भई छींक ठहनाय ।
पंडित बोले तब करियासे ❋ बेटा सुनो बघेले क्यार ॥
सगुन बिगरिगयो है हाथीपर ❋ ताते लौटि जाउ महराज ।
घात चंद्रमा पीछे परिगयो ❋ समुहे दृष्टि शनीचरकेरि ॥
राहु बारहें है गोचरमें ❋ अठयें परी बृहस्पति आय
बिरवा सींचेउ तुम बब्बुरको ❋ अब फल मिलै कहाँते आम
बिन अपराध जाय महुबेमें ❋ मारे दस्सराज बछराज ।
शीश काटिकै दोउ भैयनके ❋ सो बरगदमें दियो टँगाय ॥
आधी राति केरे अमलामें ❋ महुबे लूटिलई करवाय ।
नितउठिकोसैंतिनकीतिरिया ❋ कीन्हों बिना बिचारे काम
ताते तुमको हम हटकतहैं ❋ चाहो कुशल करिंघाराय ।

घरमें बैठिरहो चुपके होय ❋ काहे प्राण गँवैहौ जाय ॥
इतनी बात सुनी पण्डितसे ❋ तब करियाने दइ ललकार।
पंडित ओट होउ आगेसे ❋ तुम्हरो काल रहो नियराय॥
हम तो लडिका हैं क्षत्रिनके ❋ हमको कहा सगुनसे काम ।
सगुन विचारें बनियाँ बाह्मन ❋ नित उठि करें बनिज ब्यौपार
सगुन विचारै क्या क्षत्री होय ❋ जो रण चढिकै लोह चबाय
इतनी कहिकै हाथी ऊपर ❋ चढिकै चलो करिंघाराय ।
मारू डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर चला करिंघाक्यार
दबाति अँधेरिया दलमें आवै ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
धूरि उडानी आसमानलौं ❋ चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय
हुरकें पहिया जिन तोपनके ❋ रब्बा चलें पवनके साथ ॥
खरखर खरखर ते रथ दौरें ❋ करकत जायँ मदुरिया बान
भागी लश्कर मारवाडको ❋ तहँ पैदलका नाहिं सुमार ॥
चारि घरी केर अरसामें ❋ पहुँचा समरभूमिमें जाय ।
लश्कर आयो गढ महुबेको ❋ सो खेतनमें पहुँचो आय ॥
करिया पहुँचो समरभूमिमें ❋ औ सूरजपै पहुँचा जाय ।
उतारिकै हाथीते भुइँ आवा ❋ औ सूरजको लियो उठाय ॥
लाश धराय दइ नलकीमें ❋ औ माडोको दियो पठाय ।
फिरिकै चढिगयो पचशावदपर ❋ करिया हाथी दियो बढाय
करिया गरजै तब हौदामाँ ❋ ज्यों घन गाजि गाजि रहि जाय
यक ललकार दई करियाने ❋ क्याहि बबुरीबन दियो कटाय
किसने मारो है अनुपीको ❋ औ सूरजको दियो गिराय
कौन शूर है गढ महुबेको ❋ सो समुहे होइ देय जवाब ॥
घोडा बढायो तब ऊदनिने ❋ औ करियाको दियो जवाब ।
हम कटवायो है बबुरीबन ❋ औ अनुपीको दियो गिराय

हमहीं मारो है सूरजको ❋ हमहीं शूर महोबे क्यार ।
लानति तुम्हरी रजपूतीपर ❋ तेगा बँधिबेको धिरकार ॥
चोरी करी जाय महुबेमें ❋ सोवत बाँधे बाप हमार ।
बदला लैहैं हम दादाको ❋ माडौ खोदि करैहैं ताल ॥
जो गति कीन्हीं तुम महुबेमें ❋ सो गति करौं तुम्हारी आज।
करहु बीरता अब समुहेपर ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ॥
इतनी सुनतै परले होइगइ ❋ करिया आग्निज्वाल होइ जाय
तुरत खलासीको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय
बत्ती दैदेउ मेरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउँ उडाय ।
फौज लूटिलेउ गढ महुबेकी ❋ तुम्हरी लूटि माफ होइजाय॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ तुरतै बत्ती दई लगाय ।
ऊदनि लौटे अपने दलमें ❋ तोपन बत्ती दइ लगवाय ॥
धुआँ उडानो आसमानलौं ❋ सविता रहे धुंधिमें छाय ।
चहुँदिशि गोला छूटन लागे ❋ कह कह करैं अगिनियाँ बान
सननन सननन गोली छूटैं ❋ सर सर परी तीरकी मारु ।
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि २ रहिजाय ॥
गोला लागै जौन ऊँटके ❋ सो गिरिपरै धरनि भहराय ।
गोला लागै ज्यहि घोडाके ❋ चारो सुम्म गर्द ह्वइजाय ॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सीधा स्वर्गलोकको जाय ।
गाँसी लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सूलौ निकरि जाय वापार॥
पहर एक भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन होइजायँ ।
हाथ न धरोजाय तोपनपर ❋ तोप लडाई परी पछार ॥
दोनों लश्करके अन्तरमें ❋ रहिगयो पाँच पैग मैदान ।
साँग उठाई सब क्षत्रिनने ❋ साँगैं चलन लगीं तत्काल॥
छूटैं पिचक्का जहँ लोहूके ❋ औ बबुकारिन बोलैं घाव ।

चारि घरीभरि बजो सौंगडा ❋ भारी बही रक्तकी धार
शेर बचा पिस्तौल तमंचा ❋ ओरो कडाबीनकी मारु
कठिन लडाई भइ मुरचापर ❋ दलमें रही लालरी छाय ॥
घोडा बेंदुला नाचत आवे ❋ ऊदनि कहैं सुनाय सुनाय।
भाजि न जैयो कोउ समुहेसे ❋ यारो रखियो धर्म हमार ॥
पाँव पिछारू जो तुम धरिहो ❋ बुडिहै सात साखिको नाम
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भैया लगो हमार
सदा तोरैया ना बन फूलै ❋ यारो सदा न जीवन होय।
सदा न माता उरमें धारे ❋ यारो जन्म न बारम्बार ॥
पानी देदे रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढाय
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ अपनी खैंचि २ तलवार ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहि गयो डेढ कदम मैदान
बढे सिपाही माडोवाले ❋ अपनी खैंचिलई तलवार॥
खटखट खटखट तेगा बाजे ❋ बोलै छपक छपक तलवार
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै विलायत क्यार
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटि २गिरैं सुघरुआ ज्वान
छाती मिलिगइ तहँ छातीसे ❋ हौदा हौदाते मिलिजाय ॥
पैदल मिलिगये हैं पैदलते ❋ औ असवारनते असवार।
चलै सिरोही दोनों दलमें ❋ क्षत्रिन मारु मारु रट लाग
कल्ला कटिगे हैं घोडनके ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार
कटे भुसुंडा हैं हाथिनके ❋ औ लोथिनपर लोथि देखायँ
बडे लडैया महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवार।
क्षत्री भीजिगये लोहूते ❋ औ बहिचली रक्तकी धार
कोऊ रोवत हैं लरिकनको ❋ कोई पुरिखनको चिल्लायँ
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ औ रणदुलहा चले बराय॥

लम्बी धोतिनके पहिरैया ❀ तिन नारेनकी पकरी राह ।
भगत सिपाही करिया देखे ❀ अपनो हाथी दियो बढाय॥
खोलि जँजीर दई हाथीकी ❀ औ हाथीते कही सुनाय ।
निमक हमारो तुम खायो है ❀ सो हाडनमें गयो समाय ॥
मारि भगावो सब लश्करको ❀ अब गाढेमें आवो काम ।
जल्दी बाँधिलेउ ऊदनिको ❀ ऐसो समय मिलनको नाहिं
शाहाबादी रंगा बंगा ❀ तिनते करिया कही सुनाय
थोरी उमिरिया है ऊदनिकी ❀ न्यहिं करिदई वंशकी हानि
जान न पावै कोउ महुवेको ❀ सबके मूँड लेउ कटवाय ।
इतनी सुनते रंगा बंगा ❀ अपने घोडा दिये बढाय॥
करिया बढिगयो तब आगेको ❀ हाथी लश्कर गयो समाय
फेरी साँकरि पचशावदने ❀ औ क्षत्रिनको काटन लाग
साँकरि मारै ज्यहि घोडाके ❀ त्यहि धरतीमें देय गिराय ।
मारै साँकरि जिन क्षत्रिनके ❀ सो गिरिपरैं भूमि भहराय॥
बिचलो हाथी दलके भीतर ❀ लश्कर तिडीबिडी ह्वैजाय ।
हटे सिपाही महुवेवाले ❀ कोइ न धरै अगारू पाँव ॥
बोला करिया तब ऊदनिसे ❀ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ।
कही हमारी अबहूँ मानो ❀ नाहक देहो प्राण गँवाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलनलागे ❀ तुम सुनिलेउ करियाराय ।
हार नौलखा लाखापातुर ❀ सो तुम हमहिं देउ मँगवाय
हथि पचशावद खाली करिदेउ ❀ घोडा पपीहा देउ गहाय ।
शीश काटिकै नृप जम्बैको ❀ हमरी नजरि गुजारो आय॥
डोला साथ करौ बिजमाको ❀ तौ हम लौटि महोबे जायँ।
बदला लैहैं हम ददुआको ❀ तब छातीको डाहु बुझाय
बिना कामके हम ना जैहैं ❀ चाहैं प्राण रहैं की जायँ ।

इतनी सुनतै करिया तड़पो ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
ऊदनि सम्हारिजाउ घोड़ापर ❋ तुम्हरो काल पहूँचो आय ।
चोट आपनी ऊदनि करिलेउ ❋ नाहीं मरग बैठ पछिताउ॥
बोले ऊदनि तब करियासे ❋ तुम सुनिलेउ करिंघाराय ।
बालक बूढेको ना मारें ❋ ना तिरियापर डारें हाथ ॥
हा हा खातेको ना मारें ❋ ना भागेके परें पिछार ।
चोट अगारू हम ना खेलें ❋ ना हम धरें पिछारू पाँव ॥
चोट आपनी करिया करिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ।
इतनी बात सुनी करियाने ❋ अपनी लीन्हीं सांग उठाय
सो धरि धमकी बघऊदनिपर ❋ ऊदनि बदलि पैंतरा जाय।
चोट बचायलई फुर्तीसे ❋ बचिगा उदयासिंह बलवान॥
गुर्ज उठायो तब करियाने ❋ सो ऊदनिपर दियो चलाय
घोड़ा बेंदुला दहिने ह्वैगयो ❋ नीचे गिरो गुर्ज अरराय ॥
ऊदनि झपटे तब करियापर ❋ घोड़ा बेंदुला दियो बढाय।
करो जडाका यक हौदापर ❋ छतुरी टूक टूक ह्वैजाय॥
देखि हकीकति करिया राजा ❋ औ हाथीते कही सुनाय।
जल्दी बाँधिलेउ ऊदनिको ❋ राखो धर्म बघेले क्यार ॥
दाबि बेंदुला ऊदनि आये ❋ औ करियाको दइ ललकार
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अब लैलेउ हमारी गाज ॥
सांग उठाई तब ऊदनिने ❋ औ करियापर दई चलाय
पहिले मारो पीलवानको ❋ दूजे हनो कुलफबरदार ॥
तिसरी चोट करी हौदापर ❋ सो हौदामें गई समाय ।
साँग धमकी तब करियापर ❋ करिया गिरो भरहरा खाय॥
होश रहा नहिं कछु देहीमें ❋ मूर्च्छित भयो करिंघाराय।
गुस्सा आई तब हाथीको ❋ अपनी साँकर दई घुमाय ॥

साँकरि फेरत ऊदनि गिरिगे ❋ ना देहीकी रही सँभार ।
घोडा बेंदुला थरथर काँपै ❋ देखत हाल उदयसिंहक्यार।
आध घडीको अरसा गुजरो ❋ कछु कछु भयो चेत तनमाहिं
जगी मूर्च्छा बघऊदनिकी ❋ तब घोडापर भये सवार ॥
साँकरि फेरी फिरि हाथीने ❋ औ ऊदनिको दियो गिराय
ऊदनि गिरतै परले होइगइ ❋ घोडा भगो उदयसिंह क्यार
तुरतै बाँधिलियो ऊदनिको ❋ अब कोउ धीर धरैया नाहिं।
फौजैं भागिगइं महुबेकी ❋ हाथी खडा खेत रहिजाय॥
रुपना बारी दौरनि आयो ❋ औ बबुरीबन पहुँचो जाय।
लगी कचहरी जहँ आल्हाकी ❋ तम्बू जहाँ दिवलदेक्यार ॥
करी बन्दगी जब रुपनाने ❋ आल्हा पूछो हाल हवाल ।
खबरि सुनावो तुम लश्करकी ❋ औ सब हाल देउ बतलाय॥
हाथ जोरिके रुपना बोलै ❋ तुम सुनिलेउ बनाफरराय।
साँकरि फेरी पचशावदने ❋ औ ऊदनिको लीन्हों बाँधि
बिचलो हाथी महुबेवालो ❋ लश्कर भगो महोबेक्यार ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❋ ऊदनि अकिले दिये पठाय॥
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❋ औ सैयदते कही सुनाय ।
करो चढाई अब माडोकी ❋ जल्दी फौज लेउ सजवाय॥
बोले आल्हा फिरि मलिखेते ❋ भैया जल्द होउ तैयार ।
ऊदनि बँधिगये हैं माडोमें ❋ हम तुम चलिकै लयँ छोडाय
तुरत नगडचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दिये डरवाय ।
बजै नगाडा मेरे दलमें ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बजो नगाडा तब लश्करमें ❋ क्षत्री करन तयारी लाग ।
पहिले नगाडामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार॥
तिसरे नगाडाके बाजतखन ❋ क्षत्री फाँदिभये असवार ।

चौथे नगाडाके बाजतखन ❀ लश्कर चला बनाफरक्यार॥
रुपना दौरो तब देवैतर ❀ औ यह हाल सुनावन लाग।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❀ अकिले ऊदनि दिये पठाय॥
ऊदनि बाँधिगे हैं माडोमें ❀ लश्कर तिडी बिडी होइजाय।
देवै सोची तब अपने मन ❀ यह बल नाहिं करिघाक्यार॥
हथि पचशावद जोहर कीन्हें ❀ बाँधे मेरे उदयसिंहराय।
तौलौं मलिखे गे देवैतर ❀ मलिखे हाथ जोरि रहिजायँ॥
कही हकीकति बघऊदनिकी ❀ मैं चाचीकी लेउँ बलाय।
हथि पचशावद साँकल फेरी ❀ औ ऊदनिको लियो बँधाय
घोडा बेंदुला रणसे भागा ❀ अब हाथीसे कहा बसाय।
हम सब खपिजावें माडोमें ❀ पगिया बन्द बचैगो नाहिं॥
चाची भेंटि लेउ जल्दीमे ❀ अब हम मिलें सरगमें आय
यह सुनि देवै बोलन लागी ❀ बेटा सावधान होइ जाउ॥
हथिपचशावद है महुबेको ❀ हमने सेवा करी बनाय।
दोहरे गातिब हमने दीन्हे ❀ देखत हमहिं लिहै पहिचानि
हाल सुनेहैं हम पिछलो जब ❀ साँकरि तबहिं फिरै है नाहिं।
संग तुम्हारे हमहूँ चलिहैं ❀ तुम कछु करौ न सोच बिचार
इतनी कहिके रनिदेवैने ❀ अपनी नलकी लई मँगाय।
थार सुबरनको मँगवायो ❀ तामें आरति लई सजाय॥
रोरी अक्षत मेवा लैके ❀ करिके इष्टदेवको ध्यान।
चढी पालकीपर देवै तब ❀ औ माडोकी पकरी राह॥
चलिभे मलिखे तब तम्बूसे ❀ घोडी कबुतरी लई मँगाय।
बोले मलिखे तब घोडीसे ❀ हमरी बात सुनो मनलाय॥
तुमको पालो है मल्हनाने ❀ बहुते सेवा करी बनाय।
माह महेला तुमको दीन्हे ❀ औ सावनमें कडुवा तेल॥

कठिन मारु है गढ माडौंकी ❋ अब असमयमें आवौ काम।
इतनी सुनतै घोडी कबुतरी ❋ समुहे रहिगइ माथ नवाय ॥
सुम्म उठाये आसमानको ❋ फिरि हटि धरो अगारू पाँव
हालु जानिलौ तब मलिखेने ❋ तुरतै फाँदि भये असवार ॥
घोडाकरिलिया त्यारकरायो ❋ आल्हा फाँदि भये असवार ।
ताला सैयद बनरसवाले ❋ घोडी सिंहिनपर असवार ॥
घोडा मनुरथाको सजवायो ❋ देवा फाँदि भयो असवार ।
घोडा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मानँद असवार ॥
सुमिरन करिकै महादेवको ❋ मनियाँ सुमिरि महोबेक्यार !
घोडी बढाई नर मलिखेने ❋ औ लश्करमें भये अगार ॥
सबसे पहिले देवैरानी ❋ सो हाथीपै पहुँची जाय ।
तुरतै उतरि परी पलकीते ❋ औ हाथीते कहो सुनाय ॥
क्या तू भूलगया महुबेको ❋ भूला अबहिं रजा परिमाल ।
क्या तू भूला रानि देवैको ❋ जो अब तेरे खडी अगार ॥
निमक हमारा तूने खाया ❋ औ पचशावद बात बनाउ ।
ऊदनि बेटा मोहि रँडियाको ❋ तूने बाँधिलिया मैदान ॥
तुम्हें मुनासिब यह नाहीं है ❋ मैं हाथीकी लेउँ बलाय ॥
ज्यहिदिनकरियाधोखाकरिकै ❋ औ दशपुरवा लिया लुटाय
हार नौलखा लाखापातुर ❋ घोडा पपीहा लिया खुलाय ।
तुमको साथ लियो करियाने ❋ तुम दुश्मनकी करी सहाय ॥
वंश नशैबेको लागे हो ❋ तुमको भारी लगे सराप ।
बदला लेने लडिका आये ❋ अपनो लेन बापका दाउँ ।
टँगी खोपडियाँ हैं राजाकी ❋ हमहूँ चुरी उतारी नाहिं ॥
काहू लायक लडिका होइहैं ❋ माडो लिहैं बापको दाउँ ॥
सो तुम बाँधिलियो ऊदनिको ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं

याही दिनको हम पाला था ❋ की गाढेमें ऐहो काम ॥
तेहिसे तुमको समुझावतिहौं ❋ तुम बेटनकी करो सहाय।
जीतिकै चलिहौ जो महुबेको ❋ दूनो रातिब दिहौं बढाय ॥
निमक हरामी अब ना करियो ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय
बातें सुनिकै रानि देवलाकी ❋ हाथी तुरत गयो पहिचानि
शरम खायकै पचशावदने ❋ साँकरि दई भूमिपर डारि।
राम बनावैं सो बनिजावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय
यहाँकि बातें तौ यहँ छोडो ❋ अब करियाको सुनो हवाल
मूर्च्छा जागी जब करियाकी ❋ हौदा उठो भरहरा खाय ॥
बँधो देखिकै बघ ऊदनिको ❋ मनमें बहुत खुशी होइजाय।
जब कछु होश भयो ऊदनिको ❋ ऊदनि सोचि सोचिरहिजाय
बँधो देखिकै अपने मनमें ❋ ऊदनि बहुत गये घबराय।
तौलौं दलमें मलिखे पहुँचे ❋ घोडी कबुतरी दई बढाय ॥
जहँपर हाथी रहै करियाको ❋ तहँपर गये बीर मलिखान।
गरजे मलिखे तब घोडीपर ❋ केहि रजपूत लियो औतार
कौने बाँधा है ऊदनिको ❋ सो समुहे होइ देय जवाब।
इतनी सुनिकै करिया बोलो ❋ औ मलिखेको दियो जवाब
हमने बाँधो है ऊदनिको ❋ हम रजपूत लियो औतार।
उमिरि तुम्हारी यह थोरी है ❋ ताते लौटि महोबे जाउ ॥
जो गति कीन्ही दस्सराजकी ❋ सो गति करों उदयसिंह क्यार
इतनी बात सुनी करियाकी ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
बोले मलिखे तब करियाते ❋ तुम सुनिलेउ करिंगाराय।
लाखापातुर घोडा पपीहा ❋ सो तुम हमहिं देउ मँगवाय
हार नौलखाको मँगवावो ❋ डोला देउ बिजैसिनिक्यार
हाथि पचशावद खाली करि देउ ❋ अबहीं सबै रारि मिटि जाय

नातर जीवत ना छोडूँगा ❀ सबके शीश लिहौं कटवाय।
बदला लैहैं हम दादाको ❀ चाहे प्राण रहैं की जायँ॥
सुनतै गरजा माडौवाला ❀ जाको नाम करिंघाराय।
चोट आपनी मलिखे करिलेउ ❀ नाहीं सरग बैठि पछिताउ
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❀ पहली चोट करत हम नाहिं
आपनी तुम करिलीजो ❀ मनके मेटि लेउ अरमान॥
सुनतै करिया साँग उठाई ❀ सो मलिखेपर दई चलाय।
घोडी कबुतरी दहिने होइगइ ❀ नीचे गिरी साँग अरराय॥
तेगा लैके तब करियाने ❀ सो मालिखेपर दियो झुकाय
ढाल उठाई नर मलिखेने ❀ अपनी लीन्हीं चोट बचाय
बोले मालिखे तब करियासे ❀ अब तुम खबरदार होइ जाउ
ऐंड लगाई तब घोडीके ❀ औ मस्तीक अडाये पाँव॥
करो जडाका यक हौदामें ❀ छतुरी टूक टूक होइ जाय।
डंडा कटिगयो है हौदाको ❀ सोने कलश गिरो अरराय॥
गदगद गदगद करै महावत ❀ हाथी बैठि खेतमें जाय।
सूंडि लपेटि लई हाथीने ❀ औ दाँतनमें लई दबाय॥
मलिखे पहुँचे तब ऊदनिपै ❀ औ ऊदनिको दियो छुडाय।
रुपना लायो घोडा बेंदुला ❀ ऊदनि फांदि भये असवार॥
चढिगे मलिखे तब घोडीपर ❀ दोनों तुरत भये तैयार।
तौलौं लश्कर गढ महुबेको ❀ पहुँचो समरभूमिमें आय॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवार
फौज देखिकै गढ महुबेकी ❀ करिया बहुत गयो घबराय
देखि हकीकत पचशाबदकी ❀ सोचन लाग करिंघाराय।
धोखा दीन्हों है हाथीने ❀ अब हम करि हैं कौन उपाय
घोडा पपीहा जो कोतल रहै ❀ सो मँगवायो करिंघाराय।

कूदि बछेरापर चढि बैठो ❋ वह जम्बैको राजकुमार ॥
देवै पहुँची तब हाथीपै ❋ औ गजमस्तक पूजन लागि ।
करो रोचना रनि देवैने ❋ औ आरती उतारन लागि ॥
बोली देवै फिरि हाथीसे ❋ हथि पचशावद बात बनाउ ।
तुमका सौंपति हौं लडिकनको ❋ रखियो धर्म चँदेले क्यार ॥
बोली देवै तब आल्हासे ❋ अब हाथीपर होउ सवार ।
तुम्हरे दादाको हाथी है ❋ मनमें करो न सोच विचार ॥
इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ तब हाथीपै पहुँचे जाय ।
चरण लागिके महतारीके ❋ ले बजरंगबलीको नाम ॥
आल्हा चढिगे पचशावदपर ❋ औ हौदामें बैठे जाय ।
बोले आल्हा सब क्षत्रिनसे ❋ यारो रखियो धर्म हमार ॥
जीतिके चलिहौ जब माडौते ❋ दूनी तलब दिहौं बढवाय ।
इतनी बात सुनी क्षत्रिनने ❋ क्षत्री वीररूप ह्वैजायँ ॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारुमारु रट लागि ।
चले शिरोही मानाशाही ❋ औ बूँदीकी असल कटार ॥
चले जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चले विलायत क्यार ।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुवा ज्वान
भगे सिपाही माडवारके ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
बडे लडैया महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं सुनाय सुनाय ।
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❋ यारो रखियो धर्म हमार ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भैया लगो हमार ।
जीतिकेचलिहौजबमहुबेको ❋ सोने कडा दिहौं डरवाय ॥
बढे सिपाही महुबेवाले ❋ रणमें काठिन करैं तलवार ।
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जो रणदूलहा चले बराय ॥

घोड़ा बेंदुला ऊदनि दाबो ❋ औ करियापै पहुँचे जाय ।
बोले ऊदनि तब करियाते ❋ तुम सुनिलेउ करिंयाराय ॥
चोटआपनीतुम अबकरिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ।
इतनी बात सुनी करियाने ❋ तब रंगाते कही सुनाय ॥
थोरी उम्मिरिको ऊदनि है ❋ याको देहु जानते मारि ।
इतनी सुनिकै रंगा बोलो ❋ औ ऊदनिते लगो बतान ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ रणमें खेलौ जूझ अघाय ।
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ औ रंगाते कही सुनाय ॥
चोट आपनी रंगा करिलेउ ❋ नाहीं सरग बैठि पछिताउ ।
खैंचि शिरोही लइ रंगाने ❋ सो ऊदनिपर राखी जाय ॥
चेहरा मारो जब ऊदनिको ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ।
तीनिशिरोहीगहिगहि मारी ❋ ऊदनिके नहिं आयो घाव ॥
टूटि शिरोही गइ रंगाकी ❋ रंगा मनमें सोचन लाग ।
ऊदनि ललकारो रंगाको ❋ अब तुम खबरदार होइ जाउ
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ सो रंगापर राखी जाय ।
रंगा गिरिगयो जब धरतीमें ❋ तब बंगाने दयो जवाब ॥
सम्हरो ऊदनि तुम घोड़ापर ❋ तुम्हरो काल पहूँचो आय ।
घोड़ा बढ़ायो तब ढेबाने ❋ औ बंगाको दियो जवाब ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ दुइमें एकु आँकु रहिजाय ।
यह मन भाय गई बंगाके ❋ बंगा खैंचि लई तलवारि ॥
चेहरा मारो जब ढेबाको ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ।
टूटि शिरोही गइ बंगाकी ❋ बंगा सोचि सोचि रहिजाय ॥
जौन शिरोहीते गज काटे ❋ औ घोड़नके चारौ पाँव ।
सोइ शिरोही धोखा देगइ ❋ हमरो काल रहो नियराय ॥
बोलो ढेबा तब बंगाते ❋ अब तुम खबरदार होइजाउ ।

चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अब लैलेते गाज हमारि ॥
खैंचि शिरोही ढेबा लीन्हीं ❋ औ बंगापर राखी जाय।
करो जडाका जब चेहरापर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
ढाल फाटिगइ गैंडावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय
बारह कडियाँ कटि बख्तरकी ❋ बंगा गिरो भरहरा खाय ॥
बगा जूझि गयो खेतनमें ❋ करिया सोचि २ रहिजाय।
रंगा बंगा दोनों जूझे ❋ को गाढेमें ऐहै काम ॥
करिया पहुँचो तब ढेबापर ❋ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय।
चोट बचाई तब ढेबाने ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
लट्टुआ लागिगयो घोडाके ❋ घोडा तीनि पैग हटिजाय।
देखि हकीकति बघ ऊदनिने ❋ अपनो घोडा दियो बढाय
खैंचि शिरोही ऊदनि लीन्हीं ❋ सो करियापर राखी जाय।
बायेंसे घोडा दहिने ह्वइगो ❋ करिया लैगा चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो तब करियाने ❋ औ ऊदनिपर दियो चलाय।
चोट बचाई बघ ऊदनिने ❋ नीचे गिरो गुर्ज अरराय ॥
लगो लपेटा रसबेंदुलके ❋ घोडा पाँच कदम हटिजाय।
बाढिगै ऊदनि तब आगेको ❋ औ मलिखेते कही सुनाय ॥
बरनी तुम्हरीको करिया है ❋ नाहक राखी देर लगाय।
मारि गिरावौ यहि खेतनमें ❋ दादा मोरे बीर मलिखान ॥
इतनी बात सुनी मलिखेने ❋ अपनी घोडी दई बढाय।
यक ललकार दई करियाको ❋ बेटा सुनौ बघेले क्यार ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखें कापर राम रिसायें।
यह मन भाय गई करियाके ❋ अपनी लई कमनियाँ हाथ ॥
फोंक जमाई सिंदोहीकी ❋ गाँसी गजबेलीकी लागि।
खैंचि कमनियाँ भुजदंडनपर ❋ समुहे छोंडि कैबरी दीन्ह ॥

घोडी हटिगइ नर मलिखेकी ❀ उनको राखिलियो भगवान
साँग उठाई तब करियाने ❀ औ मलिखेपर दई चलाय॥
बायें घोडी दहिने ह्वैगइ ❀ नीचे गिरी साँग अरराय।
खैंचि शिरोही लइ करियाने ❀ सो मलिखेपर राखी जाय॥
घोडी उडिगइ तब ऊपरको ❀ बचिगइ चोट करिंघा क्यार
करिया सोचै अपने मनमें ❀ ये क्षत्री हैं बुरी बलाय॥
बोले मलिखे तब कारिया ते ❀ तुम्हरो काल रहो नियराय।
शस्त्र तुम्हारे सब झूँठे हैं ❀ हम ना रखैं ऐस हथियार॥
बोला करिया तब मलिखेते ❀ काहे बहुत करौ अभिमान।
अबकी उचौनी तुम ना बचिहौ ❀ तुम्हरो काल पहूँचो आय
हँसिकै ज्वाब दियो मलिखेने ❀ तुम सुनिलेउ करिंघाराय।
पुष्य नक्षत्र माहिं जन्माहौं ❀ औ गुरु परी बारहें आय॥
और देवताकी गिनती क्या ❀ शंका करौं कालकी नाहिं।
चोट आपनी फिरिकै करिलेउ ❀ नाहीं सरग बैठि पछिताउ
इतनी बात सुनी करियाने ❀ अपनो कडाबीन लै हाथ।
कल धरि दाबी कडाबीनकी ❀ समुहे गोली दई चलाय॥
गोली झेली नर मलिखेने ❀ तुरतै लगत चीप ह्वइजाइ।
तब ललकारो नर मलिखेने ❀ अब तुम सावधान ह्वइजाउ
खैंचि शिरोही लइ मलिखेने ❀ लै बजरंगबलीको नाम।
सुमिरन करिकै नारायणको ❀ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार
चेहरा मारो तब करियाको ❀ औ धरतीमें दियो गिराय।
उतरे ऊदनि तब घोडाते ❀ औ चेहराको लियो उठाय॥
जायकै पहुँचे तुनि आल्हापै ❀ यह ऊदनिने कही सुनाय।
बैरी मारिदियो खेतनमें ❀ देखो शीश करिंघा क्यार॥
कूच करायो जब महुबेते ❀ तब मल्हनाने कही सुनाय॥

अबके बिछुरे तुम कब ऐहौ ❋ बेटा हमहिं देउ बतलाय॥
तब हम अवधि बदी मल्हनासे ❋ ऐहैं लौटि मास नवमाहिं।
अवधि बीतिगइ गढ माडौमें ❋ हेरत हुइहै बाट हमारि॥
धीरज देन हेत मल्हनाके ❋ दादा शीश देउ पहुँचाय।
शीश देखिके यहु करियाको ❋ धीरज धरैं रजा परिमाल
इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ तब रुपनाको लियो बुलाय
बोले आल्हा तब रुपनासे ❋ तुम महुबेको होउ तयार॥
शीश करिघाको लै जावो ❋ धीरज धरैं मल्हनदे रानि।
लौटिके ऐओ तुम जल्दीसे ❋ औ सब खबरि सुनैयो आय
हुक्म पायके रुपना चलिभो ❋ औ महुबेकी पकरी राह।
राम बनावैं सो बनिजावै ❋ बिगरी बनतबनतबनिजाय
हियाँकि बातें तौ हिंय छोडो ❋ अब महुबेको सुनौ हवाल
अवधिबीतिगइजब आवनकी ❋ मल्हना बार बार पछिताय
तिलका मल्हना दोनों रानी ❋ दिन दिन बाट हेरि घबरायँ
राति राति भरि करैं अँदेशा ❋ दिनभरि खडे खडे ह्वइजाय
यकदिन ठाढी मल्हना रानी ❋ हेरै बाट लडिकवन क्यार
तौलौं माहिल दाखिल ह्वइगे ❋ औ मल्हनापै पहुँचे जाय
बोले माहिल तब मल्हनासे ❋ काहे बदन गयो कुम्हिलाय
कौन अँदेशा है जियरामें ❋ बहिनी हमहिं देउ बतलाय
इतनी सुनिके मल्हना बोली ❋ बीरन सुनौ हमारी बात।
नवयें महीनाको सब कहिगये ❋ ताको एक बरस होइजाय
लडिका लौटे ना माडौते ❋ रहि रहि मेरोजियाघबडाय
बहुतक सेयों मैं लडिकनको ❋ तिनकीखबरिमिलीकछुनाहिं
इतनी सुनतै माहिल बोले ❋ बहिनी कछू कही ना जाय
यक हरकारा गढ माडौका ❋ सो उरईमें पहुँचो आय॥

एक मुकाम करो बगियामें ❋ हमने पूछो हाल हवाल ।
कही हकीकति हरकाराने ❋ सब खपिगये बनाफरराय ॥
कोई न बचिहै अब महुबेमें ❋ फिर दुख नींद पहूँची आय
सुनी खबरि जब यह मल्हनाने ❋ भुईंमें गिरी तडाका खाय ॥
तिलका गिरिगइ रंगमहलमें ❋ अब कछु रहा ठिकाना नाहिं
मल्हना तिल्काके रोवत खन ❋ सिगरो रोय उठो रनिवास
हाय बिधाता यह कैसी भइ ❋ अब कहँ मिलिहैं पूत हमार
महुबो घर घर सूनो होइहै ❋ जबहीं बैरी करहिं चढाय ॥
फेंटा बँधैया कोउ नाहीं है ❋ औ कोउ धीर धरैया नाहिं
सुनी खबरि जब चन्देलेने ❋ तुरतै गिरे भूमि महराय ॥
लडिका चढिगे गढ माडोको ❋ होनी कोई मिटैया नाहिं ।
बहुत बिलाप करो राजाने ❋ सबने छाँडिदई डिडकार ॥
बिपदा परिगइ है महुबेमें ❋ रानी रोवै जार बेजार ।
बोले माहिल तब मल्हनासे ❋ बाहिनी धीर धरो मनमाहिं
लिखी बिधाताकी को मेटै ❋ जो कछु होनहार ह्वैजाय
देउतिलांजलिअबलाडिकनको ❋ घरमें बैठिरहो मनमारि ॥
इतनी कहिके माहिल चलिभे ❋ औ उरईकी पकरी राह ।
तौलौं रुपना महुबे पहुँचो ❋ जहँ दरबार चँदेले क्यार ॥
तहाँ पालकी जाय उतारी ❋ औ राजाको करी सलाम ।
नजरि बदलिगइ परिमालैकी ❋ औ रुपनासे कही सुनाय ॥
हाल बतावो तुम माडोको ❋ रहि रहि मेरो जिया घबडाय।
बदी उडानी है लडिकनकी ❋ साँचो हाल देउ बतलाय ॥
तुम शिरलायेक्यहिलडिकाको ❋ सो तुमहमहिंदेउ दिखलाय
इतनी सुनिकै रुपना बोलो ❋ ऐसी न कहो चँदेलेराय ॥
सिगरे लडिका कुशल क्षेम हैं ❋ माडो लेत बापको दाउँ ।

चारिहु लडिका जो जम्बैके ❋ मारे खेत बनाफरराय ॥
मूंड काटिकै यहु करियाको ❋ सो हमरे सँग दियो पठाय ।
इतनी सुनते उठे चँदेले ❋ औ पलकीपे पहुँचे जाय ॥
शीश देखिलो जब करियाको ❋ बहुते खुशी भये परिमाल।
बोले राजा तब रूपनासे ❋ पलकी रंगमहल लैजाउ ॥
तनिक देर करिहौ हियँनापर ❋ रानी पेटु मारि मरिजाय ।
इतनी सुनतै रुपना चलिभो ❋ तुरत पालकी लई उठाय ॥
पलकी पहुँची जब फाटकपर ❋ सो मल्हनाके परी निगाह ।
देखो खूनभरी पलकी जब ❋ मल्हना गिरी धरनि मुरझाय
हाथ जोरिकै रुपना बोलो ❋ माता सावधान ह्वइ जाउ ।
कुशल क्षेमसे सब लरिका हैं ❋ माडौ लियो बापको दाउँ॥
जल्दी उठिकै माता बैठी ❋ देखो शीश करिंघा क्यार ।
कान अवाज परी मल्हनाके ❋ सुनतै उठी भरहरा खाय॥
शीश देखिलो जब करियाको ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वैजाय
खबरि सुनाई यह झूँठी तुम ❋ माहिल तेरो बुरो ह्वइजाय॥
बोली मल्हना फिरि रुपनासे ❋ महलन करें रसोई त्यार ।
सो तुम जेईं लेउ जल्दीसे ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
हाथ जोरिकै रुपना बोला ❋ माता हम रुकिबेके नाहिं ।
जौलों हम ना माडो जेहैं ❋ तौलौं सब जेहैं घबराय ॥
चलती बेरा यह कहि दीन्ही ❋ आल्हा ऊदनि औ मलिखान
इनहीं पायँन रूपन ऐयो ❋ सबकी खबरि सुनैयो आय ॥
तोहिते भोजन हम ना करिहैं ❋ माता हुकम देउ हम जायँ ।
इतनी कहिकै रुपना चलिभो ❋ औ माडोकी पकरी राह ॥
हियाँकि बातें तो हियँ छोडो ❋ अब माडोको सुनो हवाल।
सुनी खबरि जब यह जम्बैने ❋ करिया जूझो पुत्र हमार ॥

आय मूर्च्छा गइ जम्बैको ❋ ओ गिरिपरे धरनि भहराय
क्यागति बरणौं राजसभाकी ❋ बिपदा कछू कही ना जाय
मूर्छा जागी जब राजाकी ❋ सोचन लगे बघेलेराय ।
पूत कपूत होय जो कुलमें ❋ बंटाधार होय परिवार ॥
पूत सपूप होय दुनियाँमें ❋ आवै मात पिताके काम ।
गडवा खोदै जो काहूको ❋ ताके लिये कूप तैयार ॥
जैसी करनी तैसी भरनी ❋ है यह बात प्रगट संसार ।
सोचत सोचत राजा जम्बै ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
आवत देखो जब राजाको ❋ रानी उठी भरहरा खाय ।
हाथ बिजनियाँ लै फूलनकी ❋ सो राजापर करै बयारि ॥
रानी पूँछै तब राजासे ❋ स्वामी हाल देउ बतलाय ।
काहे मुखडा झूरो परिगो ❋ काहे सोच रहा है छाय ॥
बोले राजा तब रानीसे ❋ हमसे कछू कही ना जाय ।
चारौं बेटा रणखेतनमें ❋ महुबेवालेन दिये गिराय ॥
वंश नशाय गयो हमारो सब ❋ अब हम करि हैं कौन उपाय
ऊदनि लडिका दस्सराजको ❋ सबसे छोटो राजकुमार ॥
बडो लडैया सो लडिका है ❋ त्यहिं करिदई वंशकी हानि
सिगरो लश्कर मारि गिरायो ❋ हथि पचशावद लियो छुडाय
बडे लडैया हैं महुबेके ❋ बेडा कौन लगै है पार ।
उडन बछेडा हैं सबहुँनके ❋ ना काहूकी पार बसाय ॥
इतनी बात सुनी रानीने ❋ तब राजासे कही सुनाय ।
नाहक मारो दस्सराजको ❋ खोपरी बगर्द दई टँगाय ॥
हाथ दैदिया जेहि बाँबीमें ❋ क्यों ना डसे कालिया नाग
बातें करिकै राजा रानी ❋ दोनों गिरे मूर्छा खाय ॥
हाय हाय करि रानी रोई ❋ अब कहँ मिलिहैं पूत हमार ।

यह दुख देखो जब बिजमाँने ❀ मनमें सोचि सोचि रहिजाय
राजा रानी जहँ मूर्छित हैं ❀ बिजमा तहाँ पहूँची जाय।
धरिज राखो अपने जियमें ❀ अब हम करिहैं कछू उपाय
भारी खटका है ऊदनिको ❀ सो हम खटका दिहैं मिटाय
कैद करिलिहौं मैं ऊदनिको ❀ तुम्हरो काम सिद्धि होइजाय
दियो दिलासा यह राजाको ❀ औ चालि भई बिजैसिनि रानि
जादूवाली पुडिया लैके ❀ पहुँची तुरत फौजमें जाय॥
मर्दकी सूरति बिजमा होइगइ ❀ जादू गुटका लियो दबाय।
भैरोंवाली पुडिया लैके ❀ सो आल्हा पर दई झुकाय
नजरि बंदभइ तब आल्हाकी ❀ औ फिरि जीभ बन्द होइजाय
लैकै पुडिया नारसिंहकी ❀ सो मलिखेपर दई चलाय॥
बन्द जबान भई मलिखेकी ❀ औ फिरि भूलि गया सब ज्ञान
बीर महमदाकी पुडिया लै ❀ नर ढेबा पर राखी जाय॥
नजरि बन्दभइ तब ढेबाकी ❀ ना कछु सूझिपरै त्यहि ठौर
डारि मसानी सब लश्करमें ❀ सबको देखिपरै आँधियार॥
पुडिया लैकै यक जादूकी ❀ सो ऊदनि पर दई झुकाय
मेढा करि लो वघ ऊदनिको ❀ झारखंडमें राखो जाय॥
गुरू झिलमिलाकी मठियामें ❀ मेढा बाँधिदियो तत्काल।
बिजमा बोली तब बाबासे ❀ मैं लाई हौं चोर चुराय॥
चोर महोबेको भारी है ❀ तासे बहुत रह्यो हुशियार।
इतनी कहिकै बिजमा चालिभइ ❀ पहुँची रंगमहलमें जाय॥
जादू फेरिलियो लश्करसे ❀ जादू उतरिगई तत्काल।
जबहीं होश भयो आल्हाको ❀ तब मलिखेसे लगे बतान॥
काहे मलिखे यह कैसी भइ ❀ ऊदनि नाहीं परत दिखाय
इतनी सुनिकै नर ढेबासे ❀ यह मलिखेने कही सुनाय

सगुन बतावौ ढेबा भैया ❀ कहँ हरिगयो लहुरवा भाय
सगुन बिचारो तब ढेबाने ❀ औ मलिखेको दियो जवाब
बिजमा बेटी जो जम्बैकी ❀ ताने हरे उदयसिंहराय।
मेढा करिलिया है जादूसे ❀ झारखंडमें राखो जाय॥
गुरू झिलमिलाकी मठिया है ❀ तहँई बँधो लहुवरा भाय।
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❀ औ ढेबासे लगे बतान॥
जतन बतावौ ढेबा भैया ❀ कैसे मिले लहुरवा भाय।
यह सुनि ढेबा जतन बताई ❀ जोगिन गुदरी लेउ मँगाय॥
इतनी सुनिकै नर मलिखेने ❀ जोगिन गुदरी लई मँगाय।
बाना बदलो नर ढेबाने ❀ जोगी बने बीर मलिखान
रामानन्दी तिलक लगायो ❀ अंग बिभूती लई रमाय।
गुदरी पहिरि लई दोनोंने ❀ इक इक लई सुमिरनी हाथ
डमरू लैलेइ नर ढेबाने ❀ बँसुरी लई बीर मलिखान।
दोनों चलिभे झारखंडको ❀ औ मठियामें पहुँचे जाय॥
गुरू झिलमिलाके समुहेपर ❀ जोगिन अलख जगाई जाय
डमरू बाजी नर ढेबाकी ❀ बँसुरी बजी बीर मलिखान
राग रागिनी गावन लागे ❀ जोगिन दई मोहनी डारि।
गुरू झिलमिला बोलन लागे ❀ औ जोगिनसे लगे बतान
कौन देशसे तुम आयेहो ❀ आगे कौन देशको जाउ।
कौन गुरूके तुम चेलाहो ❀ सो सब हाल देउ बतलाय
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❀ बाबा सुनौ हमारी बात।
देश हमारो बंगाला है ❀ औ गोरखपुर कुटी हमारि
गुरु गोरख हैं गुरू हमारे ❀ आगे हरद्वारको जायँ।
राह बताय देव बाबा तुम ❀ सीधे हरद्वारको जायँ॥
गुरू झिलमिला बोलनलागे ❀ जोगिउ राह दिहौं बतलाय

करो तमाशा तुम मठियामें ❋ फिरि हम रस्ता दिहैं बताय॥
इतनी सुनिकै दोनों जोगी ❋ अपने बाजा दिये बजाय।
भाँति भाँतिके राग सुनाये ❋ बाबा बहुत खुशी ह्वइजायँ॥
मलिखे नाचैं वा मठियामें ❋ शोभा कछू कही ना जाय।
मोहित ह्वइकै बाबा बोले ❋ जोगिऔ यहाँ करो बिसराम
डेरा डारि देउ मठियामें ❋ नित उठि सेवा करौं तुम्हारि
मलिखे बोले तब बाबासे ❋ बाबा बोलौ वचन सम्हार॥
रमता जोगी बहता पानी ❋ इनको कौन सकै बिरमाय॥
जल्दी भिक्षा बाबा लावौ ❋ औ तुम रस्ता देउ बताय।
इतनी सुनिकै बाबा बोले ❋ फिरिकै हमहिं सुनावौ तान
तान सुनाई तब जोगिनने ❋ बाबा मोहि मोहि रहिजायँ।
बोले बाबा तब जोगिनसे ❋ अब तुम नाच देउ दिखलाय
जो कुछ मँगिहो सो हम देहैं ❋ अपनो कर्तब देउ दिखाय॥
इतनी सुनतै देवा मलिखे ❋ दोनों तान सुनावन लाग।
ध्रुपद धनाश्री औ तिल्हाना ❋ गजल पर्ज पर तोरैं तान॥
गुरूझिलमिला बहुतखुशीह्वइ ❋ दोउ जोगिनसे कही सुनाय।
माँगो माँगो तुम मठियामें ❋ जो कछु इच्छा होय तुम्हारि॥
मेढा माँगो तब मलिखेने ❋ बाबा सुनत गयो घबराय।
यह तो मेढा है बिजमाको ❋ सो तो हम देवेके नाहिं॥
यह सुनि देवा बोलन लागे ❋ बाबा बिगडी बात तुम्हारि।
कहिकै बदलतिहो बाबा तुम ❋ तुम्हरो योग भंग ह्वैजाय॥
बाबा मनमें कायल ह्वैगये ❋ खोलिकै मेढा दियो पकराय
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ बाबा सुनो हमारी बात॥
चेला करि हैं या मेढाको ❋ बाबा मानुष देउ बनाय।
इतनी सुनिकै गुरू झिलमिला ❋ अपनी झोरी लई उठाय॥

डारिकै जादू वा मेढापर ❋ मानुष करो लहुरवा भाय ।
तीनों चलिभे तब मठियासे ❋ बघऊदनिने कही सुनाय ॥
जबहीं सुनि है रानी बिजमा ❋ फिरिकै जादू दिहै चलाय ।
बात मानिलेउ मलिखेदादा ❋ याको डारो जानसे मारि ॥
विषको पुड़िया यहु बाबा है ❋ अब ना राखो देर लगाय ।
इतनी बातसुनी मलिखेने ❋ ओ मठियामें पहुँचे जाय ॥
गुरू झिलमिलाने फिर पूँछो ❋ अब क्यों मठी मँझाई आय ॥
बोले मलिखे तब बाबासे ❋ हमको पानी देउ पियाय ॥
गुरू झिलमिला गड़ुवा लैकै ❋ ओ कुअँटापर पहुँचे जाय ।
पानी भरनलगे बाबा जब ❋ मलिखे मारि दई तलवारि ॥
शीशकाटिलियोउनबाबाको ❋ जादू झोरी लई उठाय ।
डगरत चलिभे तीनों जोगी ❋ ओ लश्करमें पहुँचे आय ॥
आल्हा देखो जबऊदनिको ❋ तुरतै छाती लियो लगाय ।
कहीहकीकतिनर मलिखेने ❋ आल्हा बहुत खुशी है जाय ॥
बोलेऊदनिसुनिआल्हासे ❋ दादा सुनो हमारी बात ।
तोप लगावो अब लोहा गढ ❋ ओ फाटकको देउ गिराय ॥
यहसुनिआल्हाबोलनलागे ❋ भैया धीर धरो मनमाहिं ।
करी सलाह तहाँ आल्हाने ❋ यक हरकारा देउ पठाय ॥
बिना लड़ाई जो कारज होय ❋ तो क्यों लड़ें बघेले साथ ।
बैर हमारो था करियासे ❋ सो खेतनमें दियो गिराय ॥
वंश नशाय दियो जम्बैको ❋ अब क्यों रारि बढावें जाय ॥
हार नौलखा लाखा पातुर ❋ ओ खोपरिनको देइ पठाय ।
तो हम लौटिजायँ महुबेको ❋ काहे भंग करैं सब साज ॥
इतनी सुनिकै ताल्हन बोले ❋ है यह ठीक तुम्हारी बात ॥
जल्दी भेजि देउ धावनको ❋ पूरन होय तुम्हारो काम ॥

इतनी सुनते तुनि आल्हाने ❀ अपनो हुक्म दियो फरमाय
जल्दी आवै हरकारा यक ❀ सो जम्बैपै दिहैं पठाय ॥
यह मन भाय गई सबहीके ❀ यक हरकारा लियो बुलाय
राम बनावैं सो बनिजावै ❀ बिगरी बनत २ बनिजाय

जम्बैकी लड़ाई।

सुमिरन करिकै श्रीगणपतिको ❀ औ गिरिजाके चरणमनाय
लिखौं लड़ाई अब जम्बैकी ❀ यारो सुनियो कान लगाय
यक हरकारा दाखिल ह्वै गयो ❀ जहँ दरबार बनाफरक्यार
कागज लेकै कलपीवालो ❀ अपनो कलमदान लै हाथ
लिखी हकीकति तब आल्हाने ❀ पढियो याहि बघेलेराय।
होवै इच्छा जो लड़नेकी ❀ तो तुम लड़ौ हमारे साथ ॥
रारि मिटावनकी इच्छा होय ❀ तो तुम सुनो हमारी बात॥
हार नौलखा लाखा पातुर ❀ डोला साजिबिजैसिनक्यार ॥
बावन बचुका पश्मीनाके ❀ हमरी नजरि गुजारो आय।
खोपरी लावो हमरे बापकी ❀ औ आधीनी करो बनाय ॥
दूजी करिहौ जो हमरे सँग ❀ पगिया बन्द बचैगो नाहिं।
चिट्ठी लिखिकै यह आल्हाने ❀ सो धावनको दई गहाय ॥
धावनचलिभयोतबलश्करसे ❀ औ माडौमें पहुँचो जाय।
जहाँ कचहरी थी जम्बैकी ❀ धावन उतरि परोअरगाय॥
बडे बडे क्षत्री बँगला बैठे ❀ अजगर लागिरहा दरबार।
बात बनाफरकी होती रहै ❀ सबपर रही उदासी छाय ॥
धावन पहुँचि गयो समुहेपर ❀ औ जम्बैको करी सलाम।
सात पैगसे कुनस करिकै ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरिबदलिगइतबजम्बैकी ❀ पाती तुरते लई उठाय।

खोलिकै पाती जम्बै बाँची ❋ मनमें बहुत खफा ह्वैजाय
तुरत बुलायो तब पंडितको ❋ साइति हमैं देउ बतलाय।
तोप लगैहौं लोहागढमें ❋ महुबेवालेन दिहौं उडाय॥
इतनी सुनिकै पंडित बोले ❋ गिनिकै मीन मेष बतलाय
साढे साती पडी शनीचर ❋ अठयें पडी बृहस्पति आय
अब ना बचिहौ रणखेतनमें ❋ समुहे काल विराजो आय
करौ मित्रता तुम आल्हासे ❋ जो माँगैं सो देउ पठाय॥
भलो तुम्हारो है यार्हीमें ❋ इतनी मानो कही हमारि।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ पंडित सुनो हमारी बात॥
यकदिन मरना है सबहीको ❋ खटिया परिकै मरै बलाय।
सन्मुख रणमें हम मारि जैहैं ❋ होइहै जुगन जुगनलौं नाम
डोला माँगति हैं बेटीको ❋ ओछी जाति बनाफर केरि।
अहीं टुकरहा परिमालेके ❋ ओ चंदेले केर गुलाम॥
दागु लागि है रजपूतीमें ❋ हमरो जियत मरन होइजाय
जीवत डोला हम ना देहैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ॥
इतनी कहिकै राजा जम्बै ❋ फिरि पातीको लिखो जवाब
लिखी हकीकति यह जम्बैने ❋ पढियो याहि बनाफरराय
जीवत डोला हम ना देहैं ❋ नाहक रारि बढाई आय।
चुप्पे लौटिजाउ महुबेको ❋ नाहीं लिहौं मूँड कटवाय॥
जो गति कीन्हीं दस्सराजकी ❋ सो गति करौं तुम्हारी आय
ताते लौटिजाउ जल्दीसे ❋ इतनी मानो कही हमार॥
पाती लिखिदइ यह जम्बैने ❋ ओ धावनको दई गहाय।
चला साँडिया गढ माडौते ❋ ओ लश्करमें पहुँचो आय
जहाँ कचहरी थी आल्हाकी ❋ समुहे धावन गो नगिचाय
करी बन्दगी तुनि आल्हाको ❋ पाती गही दई चलाय॥

काढि कतरनीते बँद काटो ❋ कोरो कागद दियो चलाय ।
पाती बाँची जब आल्हाने ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
तुरत नगडचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय ।
बजे नगारा हमरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
तोप दरोगाको बुलवायो ❋ सिगरी तोपें करो तयार ।
हाथिनवालेको बुलवायो ❋ हाथी सिगरे होयँ तयार ॥
घोडनवालेको बुलवायो ❋ घोडा सबै लेउ सजवाय ।
हुक्म मानिकै चलो दरोगा ❋ लश्कर सबै सजावन लाग
जितनी तोपें थीं महुबेकी ❋ सो चरखिनपर दई चढाय ।
जितने हाथी थे महुबेके ❋ हौदा एक साथ धरिजायँ ॥
जितने घोडा थे लश्करमें ❋ काठी एक साथ खिंचजाय ।
बजो नगाडा जब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्रिन बाँधि लिये हथियार
दुसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्रिन धरे रकाबन पायँ॥
हाथी चढैया हाथिन चाढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ।
तिसरे नगाडाके बाजत खन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय
हाथी सजवायो पचशावद ❋ तापर आल्हा भये सवार ।
घोडी सिंहिनि सजिकै आई ❋ सैयद फाँदिभये असवार ॥
घोडी कबूतरी त्यार कराई ❋ मलिखे फाँदि भये असवार।
घोडा बेंदुलाको सजवायो ❋ ऊदनि फाँदि भये असवार
घोडा मनुरथा सजिकै आयो ❋ ढेबा फाँदिभयो असवार ॥
तीनि घडीको अरसा गुजरो ❋ लोहागढमें पहुँचो जाय ॥
हुक्म दोदियो तब आल्हाने ❋ जल्दी तोपें देउ लगाय ।
बत्ती देदेउ सब तोपनमें ❋ लोहागढको देउ उडाय ॥
यक हरकारा दौराति आयो ❋ ओ जम्बैतर पहुँचो आय ।

काहे गाफिल तुम बैठेहो ❋ चढिके आये बनाफर राय॥
फाटक घेरलियो आल्हाने ❋ अब लडिबेको होउ तयार।
इतनी बात सुनी जम्बैने ❋ सुनते उठे भरहरा खाय॥
हुक्म देदिया तब जम्बैने ❋ सिगरी तोपैं देउ चढाय।
बत्ती देदेउ सब तोपनमें ❋ महुबेवालेन देउ उडाय॥
इतनी सुनते झुके खलासी ❋ सिगरी तोपैं दई चढाय।
बत्ती देदईं तब तोपनमें ❋ धुअँना रहो सरगमें छाय॥
दगी सलामी आल्हा दलमें ❋ तोपन बत्ती दई लगाय।
धुवाँ उडानो आसमानलों ❋ चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय
गोला चलनलगे दोऊ दल ❋ अंधाधुंध कहो ना जाय।
ओलाके सम गोला बरसैं ❋ मानो मघा बूँद झरिलाय॥
खलभल परिगो दोनों दलमें ❋ क्षत्री गिरैं भूमि भहराय।
तकि तकि गोला मलिखे मारैं ❋ लोहा गढमें ना अनिआय॥
गोला छूटैं लोहागढसे ❋ कोऊ कुँवर न आडे पाँव।
गोला लागै लोहागढमें ❋ तुरतै टूक टूक होइजाय॥
तीनि पहर भरि गोला छूटे ❋ चुटकिनके गे माँस उडाय।
तोपैं धंधैं लाली होइगईं ❋ औ लोहागढ टूटा नाहिं॥
कन्ने झरिगये सब तोपनके ❋ तोप दरोगा दियो जवाब।
मोरे भरोसे तुम रहियो ना ❋ यहँ तोपनकी नाहिं बसाय॥
सुनते आल्हा सोचन लागे ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय।
जितनी लकडी हैं बबुरीबन ❋ सो छकडनमें लेउ मँगाय॥
सो भरवाय देउ खन्दकमें ❋ नीचे सुरंग देउ लगवाय।
इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ तब यह हुक्म दियो फरमाय
लावो झाँखर बबुरीबनते ❋ औ खंदकमें देउ डराय।
दीन्हों हुक्म सफर मैनाको ❋ जल्दी देवो सुरग लगाय॥

इतनी सुनते लोहागढमें ❋ तुरतै सुरँग लगावन लाग ।
झाँखर आये बबुरीबनसे ❋ सो खंदकमें दिये डराय ॥
पीपा भरि भरि बारूदनके ❋ सो सुरंगमें दिये झुकाय ।
बत्ती देदइ जब बरूदमें ❋ सीसो पिघलि २ रहिजाय ॥
उडी दिवालैं लोहागढकी ❋ मट्टी आसमान उडिजाय ।
तोपें गिरिगइँ तब ऊपरसे ❋ मलिखे धावा दियो कराय ॥
क्षत्री पहुँचि गये फाटकपर ❋ सबने खैंचि लई तलवार ।
जितना लश्कर था फाटकपर ❋ सो सब काटि करो खारिहान
लोहागढ फाटक माडौको ❋ सो धरतीमें दियो मिलाय ।
रैयत रोवै गढ माडौको ❋ करिया तेरो बुरो ह्वइजाय ॥
आपु नशाय गयो अपने गुन ❋ औ रैयतको दियो बिगार ।
काल आयगयो अब जम्बैको ❋ बैठी नाँ दई उडाय ॥
खलभल परिगयो सब रैयतमें ❋ सबके भूलिगये अवशान ।
बढे सिपाही महुबेवाले ❋ फाटक निकरि गये वा पार
आगे आगे पैदल बढिगये ❋ पीछे पीछे चलैं सवार ।
ताके पीछे हाथिन वाले ❋ तोपैं आगे दईं बढाय ॥
सैयद कूदे अली अली करि ❋ हिंदू कूदि परे कहि राम ।
ऐसे कूदे गढ माडोमें ❋ जैसे लंकामें हनुमान ॥
दौरत आया यक हरकारा ❋ सो जम्बैनर पहुँचा जाय ।
खबरि सुनाई तब जम्बैको ❋ ओ महराज बघेलेराय ॥
सुखसे बैठेहो बँगलामें ❋ अब दुख नींद पहूँची आय ।
धावा करिदियो है आल्हाने ❋ लोहा फाटक दियो गिराय
इतनी सुनते परलै होइगइ ❋ जम्बै बहुत गये घबराय ।
तुरते जम्बै उठि ठाढे भये ❋ सिगरी सभा उठी महराय ॥
हुक्म देदिया तब जम्बैने ❋ सिगरी फौज होय तैयार ।

डंका बाजै हमरे दलमें ❋ लश्कर सजत न लागै बार ॥
बजो नगाडा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार॥
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फाँदिभये असवार ।
हाथी चढैया हाथिन चढिगै ❋ बाँके घोडनके असवार ॥
कोउनालकिनकोउपालकिन ❋ कोऊ गजरथ पर असवार ।
चौथे डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर चला बघेले क्यार ॥
राजा जम्बै करी तयारी ❋ औ गंगाजल लियो मँगाय ।
करि अस्नान लियो राजा तब ❋ चन्दन चौकी लई मँगाय ॥
पूजन करिकै गणनायकको ❋ करिकै इष्टदेवको ध्यान ।
चन्दन रगरो मलयागिरिको ❋ औ माथेमें लियो लगाय ॥
जामा पहिरि लियो जल्दीसे ❋ ऊपर बखतर लियो लौटाय
टोप झलम्हिा धरि माथेपर ❋ ऊपर कुंडी लइ औंधाय ॥
बारह छुरियाँ कम्मर बाँधी ❋ जम्बै दुइ बाँधी तलवारि ।
दुइ पिस्तौलें अगल बगलपर ❋ बायें सिंहिनि मूठि कटार॥
जितने शस्तर रजपूतीके ❋ जम्बै साजिभये तैयार ।
भौंरानँद हाथी मजवायो ❋ लेकै रामचन्द्रको नाम ॥
सिढियनसिढियनजम्बैचढिगे ❋ औ हौदामें बैठे जाय ॥
हाथी चलिभयो तब जम्बैको ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
दोनों सेना एक मिल होइगई ❋ खटखटचलनलगी तलवारि
चलै दुधारा दक्खिनवाला ❋ कोताखानी चलै कटार ॥
खाँडा बाजै रणके भीतर ❋ गोली चलै दनाक दनाक ।
कहँलग बरनौं मैं त्यहि औसर ❋ रणमें चलैं सबै हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ सबके मारु मारु रट लागि
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि॥

नौकर चाकर तुम हमरे ना ❋ तुम सब भैया लगो हमार ।
जीतिके चलिहो जो महुबेको ❋ सोने कडा दिहौं डरवाय ॥
दियो बढावा बघऊदनिने ❋ क्षत्री बीररूप होइ जायँ ।
जैसे लडिका गवडी खेलैं ❋ गिनि गिनि धरैं अगारू पाँय
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तरवारि ।
जम्बै बढिगे तब आगेको ❋ औ ऊदनिको दइ ललकार
कौन सूरमा है महुबेको ❋ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब ।
घोडा बढायो तब ऊदनिने ❋ दुइ मर्म्ताक अडाये पाँव ॥
सोने कलशा जो हौदाके ❋ सो ऊदनिने दिये गिराय ।
रिसहा होइके तब ऊदनिपर ❋ जम्बै लीन्हों गुर्ज उठाय॥
गुर्ज चलायो बघऊदनिपर ❋ घोडा पाँच कदम हटिजाय।
लगो चपेटा एक घोडाके ❋ घोडा खडो खडो थर्राय॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदाने ❋ सो जम्बैपर दई चलाय ।
चोट बचाई तब जम्बैने ❋ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय॥
लगो चपेटा तब घोडाके ❋ सो समुहेते गयो बराय ।
राजा जम्बैकी डपटनि में ❋ लश्कर तिडी बिडी ह्वइजाय
क्षत्री हटिगे सब समुहेते ❋ कोऊ कुँवर न आडै पाँव ।
अकिले जम्बैकी धमकिनमें ❋ भागन लगे महोबिया ज्वान
ऊँचे खाले भागन लागे ❋ औ नारेनकी पकरी राह ।
बाँधि लँगोटा कोउ कोउ क्षत्री ❋ देही अंग विभूति रमाय ॥
हमें न मरियो हमें न मरियो ❋ हम भिक्षाके माँगनहार ।
भिक्षा माँगन हम आये थे ❋ तौलौं चलन लगी तलवारि
जो क्षत्रिनकी ढालैं गिरिगइँ ❋ तिनकी लई बचुकिया बाँधि
प्राणपियारे जिन क्षत्रिनके ❋ काँधे लई बचुकिया डारि ॥
हमें न मरियो हमें न मरियो ❋ हम ढालनके बेचनहार ।

ढालैं बेचन हम आये थे ❋ तौलौं चलन लगी तलवारि
कोऊ लरिकनको रोवत हैं ❋ कोऊ पुरिखनको चिल्लाय॥
कठिन लडाई भइ जम्बै सँग ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
देखि हकीकति तब जंबैकी ❋ मलिखे घोडी दई बढाय ।
बोले मलिखे सुनि आल्हासे ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
जौहर कीन्हे हैं जंबैन ❋ सब दल रेनबेन ह्वइजाज ।
हमरी बरनीको नाहीं है ❋ लेतूँ तुरत जँजीरन बाँधि ॥
तुम्हरी बरनीको जंबै है ❋ दादा लेउ जँजीरन बाँधि ।
इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय॥
लै जँजीर तुरते आल्हाने ❋ पचशावदको दइ पकराय ।
साँकरि फेरी जब हाथीने ❋ सब दल रेनबेन ह्वइजाय ॥
भगे सिपाही माडौ वाले ❋ अपने डारि डारि हथियार।
भगत सिपाही जंबै देखे ❋ अपनो हाथी दियो बढाय॥
जंबै बोले तब आल्हाते ❋ सुनिलेउ दस्सराजके लाल।
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखैं कापर राम रिसायँ ॥
चोट आपनी आल्हा करिलेउ ❋ नाहीं सरग बैठि पछिताउ।
बोले आल्हा तब जंबैते ❋ तुम सुनिलेउ बघेले राय॥
चोट अगाऊ हम ना खेलैं ❋ ना भागेके परैं पिछार ॥
हाहा खातेको ना मारैं ❋ नाहीं हुकम चँदेले क्यार ।
चोट आपनी राजा करिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ।
इतनी सुनिकै तब जंबैने ❋ करमें लीन्हीं लाल कमान॥
तीर निकासे यक तरकसते ❋ सो हौदापर दियो जमाय।
बाण चलाय दियो सम्मुहे पर ❋ आल्हा लेगे तीर बचाय ॥
साँगि चलाई तब जंबैने ❋ आल्हा हाथी दियो हटाय ।
बाचिगे आल्हा तब हौदामें ❋ नीचे गिरी साँग अरराय ॥

पाँच कदम जब आल्हा रहिगे ❋ तब जम्बैने कही सुनाय।
दूबा बचिगै हो आल्हा तुम ❋ अबहूं लौटि महोबे जाउ॥
आल्हा ज्वाब दियो जम्बैको ❋ तुम सुनिलेउ बघेले राय।
पाँव पिछारू हम ना धरि हैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ॥
तिसरी उचौनी औरो करिलेउ ❋ नाहीं सरग बैठि पछिताउ।
इतनी सुनिकै तब जम्बैने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
चेहरा मारो जब आल्हाको ❋ आल्हा दीन्हीं ढाल अडाय।
तीनि शिरोही जम्बै मारी ❋ तुरतै टूटि गई तलवारि॥
देखि हकीकति राजा जम्बै ❋ मनमें गये सनाका खाय।
आजु शिरोही धोखा देगइ ❋ हमरो काल पहूँचो आय॥
तब ललकार दई आल्हाने ❋ अब तुम सावधान होइजाव।
इतनी कहिकै सुनि आल्हाने ❋ अपनी लीन्हीं ढाल उठाय॥
औझड मारी तब जल्दीमें ❋ तुरत महावत दियो गिराय।
गिरत महावत परलै ह्वइगइ ❋ जम्बै लइ कटारी काढि॥
हौदा मिलिगयो है हौदासँग ❋ हाथिन अडो दांतसे दांत।
चारि घरी भरि चली कटारी ❋ मनमें कोउ न मानै हारि॥
हाथी पचशावदसे बोले ❋ आल्हा मंडलीक अवतार।
बैरी समुहे यह ठाढो है ❋ ताको लेउ जंजीरन बांधि॥
चालिकै भेंटो परिमालेमे ❋ मैं हाथीको लेउँ बलाय।
फेरी साँकरि तब हाथीने ❋ तुरतै हौदा दियो गिराय॥
आल्हा बाँधिलियो जम्बैको ❋ लश्कर भगो बघेले क्यार।
बहुत खुशी ह्वै महुवेवाले ❋ जीतिको डंका दियो बजाय
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ ताला सैयद संग लिवाय।
जहाँ खजाना रह जम्बैको ❋ तहँ सब गये महोबिया ज्वान
जौन सिपाही थे पहरापर ❋ सबकी कटा दई करवाय।

सिगरे छकडा लश्कर वाले ❋ सो जोतवाये बनाफर राय॥
कुलुफ तोरिकै तब आल्हाने ❋ माल खजाना लियो लदाय।
लूटि कराई गढ माडौमें ❋ तुरतै छकडा दिये जोताय ॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ बबुरी बनको दई पठाय ।
हाथी घोडा रथ लुटवाये ❋ औ सब लूटिलिये हथियार॥
लूटि मारिकै लोहागढसे ❋ आल्हा रंगमहलको जायँ।
बोले आल्हा हरकारासे ❋ तुम माताको लाउ लिवाय॥
धावन चलिभयो तब जल्दीसे ❋ बबुरी बनमें पहुँचो जाय ।
जहँ पर माता देवै बैठी ❋ धावन हाथ जोरि रहिजाय
तुमहिं बुलायो है आल्हाने ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ ।
तुरत पालकी तब मँगवाई ❋ देवै तापर भई सवार ॥
चली पालकी रनि देवैकी ❋ औ द्वारेपर पहुँची जाय ।
आल्हा उतरिपरे हाथीते ❋ औ देवैतर पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि तब माताते ❋ रानी कुशलै लेउ बुलाय ।
देवै बोली तब बाँदीते ❋ तुम रानीको लाउ बुलाय॥
बाँदी आई तब कुशलापै ❋ औ रानीते कही सुनाय ।
तुमहिं बुलायो है देवैने ❋ द्वारे चलौ हमारे साथ ॥
सुनत खबरिया रानी कुशला ❋ मनमें गई सनाका खाय ।
होश बन्द भये तब रानीके ❋ दोनों हाथ जोरि रहिजाय॥
बोली कुशला तब ऊदनिते ❋ तुम समरत्थ उदैसिंह राय ।
हाथ न डारियो तुम तिरियनपर ❋ इतनी मानो कही हमारि
बोले ऊदनि तब कुशलाते ❋ माता सुनौ करिंघा क्यार ।
हाथ मेहिरियनपर ना डारैं ❋ ना भागेके परैं पिछार ॥
बैर हमारो रहे करियाते ❋ सो हम खेतन दियो गिराय।
चीरा कलँगी मेरे बापकी ❋ डोला साजि बिजैसिनक्यार॥

हार नौलखा लाखा पातुर ❋ सो तुम तुरत देउ मँगवाय।
बावन बचुका पश्मीनाके ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय॥
जो कछु माँगौ बघ ऊदनिने ❋ सो सब रानी दियो मँगाय
आल्हा चलिभे तब कोल्हुनपै ❋ डोला सग दिवलदे क्यार॥
यक ओर डोला है कुशलाको ❋ संगै चले महोबिया ज्वान।
पेंड बरगदाको जहँ ठाढो ❋ तहँपर गये बनाफर राय॥
झपटि खोपरी ऊदनि लीन्ही ❋ सोने थार लियो मँगवाय।
आरति सजवाई थारमें ❋ तामें खोपरी लई धराय॥
मलिखे आल्हा बैला बनिगे ❋ ऊदनि कातरदियो फिराय।
ढेबा बहादुर लै जम्बैको ❋ पत्थरकोल्हू दियो दबाय॥
रानी कुशला देखे ठाढी ❋ राजा जम्बै दिये पिराय।
शीश काटिकै तब जम्बैको ❋ सोउ थार दियो धरवाय॥
बोली आभा दस्सराजकी ❋ जुगजुगजियो लड़ैते लाल।
डाहु बुझाय गयो छातीको ❋ बैरी कोल्हू दियो पिराय॥
गया हमारी अब तुम करिकै ❋ खोपरी गंगा देउ सिराय।
बोली आभा तब जम्बैकी ❋ सुनिलेउ दस्सराजके लाल
वंश नाश हमरो तुम कीन्हो ❋ कोउ पानी दिवैया नाहिं॥
खोपरी हमरी तुम गंगामें ❋ दाया करिकै देउ सेराय॥
हालु देखिकै रानी कुशला ❋ तुरतै गिरी भूमि भहराय।
देखि हकीकति ऊदनि बोले ❋ रानी सुनो बघेले केरि॥
जैसी करनी तैसी भरनी ❋ है यह जाहिर सकल जहान
गडहा खोदे जो काहूको ❋ ताके लिये कुवाँ तैयार॥
कछु अपराध नहीं हमरो है ❋ मनमें समुझि लेहु महरानि।
जो जो देखो तुम आँखिनते ❋ सो सब कर्म करिंघाक्यार
धर्मकि माता हो हमरी तुम ❋ बैठी राज करौ गढमाहिं।

जो कोउ बैरी तुमहिं सतावै ❋ तुरतै खबरि दिऔ पहुँचाय
हम चढि ऐहैं गढ महुबेते ❋ औ बैरिनको दिहैं भगाय।
ऐसो धीरज ऊदनि देकै ❋ रनिकुशलाको दोसमुझाय॥
लैकै डोला रनि बिजमाँको ❋ राखो महल दूसरे आय ।
ऊदनि बोले तब आल्हासे ❋ दादा सुनो हमारी बात ॥
बात हारिगये हम बिजमाते ❋ हमने गंगा लई उठाय ।
खंभ गडावो रंगमहलमें ❋ भाँवरि तुरत लेउ डरवाय॥
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❋ ना बैरीघर करैं बियाहु ।
जब सुधि करिहै अपने घरकी ❋ तुमको दिहै जानसे मार ॥
मनमें समुझि लेउ ऊदनि तुम ❋ याको देउ जानते मारि ।
बोले ऊदनि तब आल्हासे ❋ दादा बचन करौ परमान॥
हाथु न डारिहैं हम तिरियापर ❋ रणमें झूंठि परै तलवार ।
बोले आल्हा तब मलिखेते ❋ तुम बिजमाँको डारो मारि॥
इतनी बात सुनी मलिखेने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
करो जडाका रनिबिजमापर ❋ तुरतै छूटि जनेवा जाय ॥
बिजमा बोलीतबघायल ह्वइ ❋ तुम सुनि लेउ उदैसिंह राय
हमने जानी थी अपने मन ❋ कछुदिनकरिहैं भोगविलास
सोतुमधोखादियोअधबिचमें ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
जो तुम मरते अपने करसे ❋ तो छुटि जातो दुःख हमार॥
जेठ हमारे मलिखे लागत ❋ तुम सुनिलेव हमारो शाप ।
मारे जैहो तुम धोखेते ❋ जहँ ना ह्वइहैं भाइ तुम्हार ॥
जैसी कीन्ही तुम हमरेसँग ❋ तैसी होय तुम्हारे साथ ।
सुनिसुनिबातैंयह बिजमाँकी ❋ मोहमें फँसे उदैसिंहराय ॥
बाँह पकरिकै तब ऊदनिने ❋ औ बिजमाते कही सुनाय ।
अबकीबिछुरीतुमकबमिलिहो ❋ साँची हमैं देउ बतलाय ॥

यह सुनिविजमाबोलनलागी ❃ स्वामी सुनौ हमारी बात ।
हम अब जन्म लिहैं नरवरगढ ❃ औ फुलवा होय नाम हमार
काबुल जैहौ जब घोडन हित ❃ तब फिरि हुइहै भट हमारि
इतनी बात कहत विजमाँने ❃ तुरतै दीन्हें प्राण गँवाय ॥
लास उठाय लई ऊदनिने ❃ सो नदीमें दई बहाय ।
हथि पचशावद त्यार खडा था ❃ आल्हा तापर भये सवार ॥
घोडि कबुतरीपर मलिखे हैं ❃ सैयद सिंहिनिपर असवार ।
घोडा मनुरथापर ढेबा है ❃ देव पलकीपर असवार ॥
घोडा बेंदुलापर ऊदनि है ❃ लाखापातुर सग लिवाय ।
चली सवारी गढ माडौते ❃ औ बबुरीवन पहुँचे आय ॥
जहँपर तम्बू रहै ब्रह्माको ❃ तहँ सब उतरि परे अगाय ।
शूर सिपाही महुबेवाले ❃ तिनको आल्हा लियो बुलाय
काहुइ दीन्हों शाल दुशाला ❃ काहुइ दियो मोतियन हार ।
काहुक कडा दिये सोनेके ❃ चीरा कलँगी दई इनाम ॥
तलब बढाय दई काहूकी ❃ काहुइ मुहरैं दई इनाम ।
हाथ जोरिके मलिखे ऊदनि ❃ रनि देवैते कही सुनाय ॥
करिहैं गया जाय दादाकी ❃ माता हुक्म देउ फरमाय ।
हुक्म पायकै तब देवैको ❃ ऊदनि और बीर मालिखान ॥
कूच कराय दियो जल्दीते ❃ दोनों गया करनको जायँ ।
लश्करचलिभयोतुनिआल्हाको ❃ औ महुबेकी पकरी राह ॥
कछुक दिना मारगमें बीते ❃ महुबो धुरो दबायो जाय ॥
रुपना बारीको आल्हाने ❃ गढ महुबेमें दियो पठाय ॥
खबरि सुनावो तुम राजाको ❃ आये जीति बनाफर राय ।
रुपना चलिभयो तब जल्दीते ❃ अपनी घोडीपर असवार ॥
जायके पहुँचो तब ज्वाढमें ❃ जहँ दरबार चंदेले क्यार ।

करी बन्दगी परिमालैको ❀ औ लश्करको कह्यो हवाल ॥
जीतिके आवत हैं माडौते ❀ आल्हा आदि शूर सरदार ।
हमहिं पठायो है आगेको ❀ जल्दी खबरि सुनावन काज ॥
ठाढी मल्हना है अटापर ❀ हेरै बाट बनाफर केरि ।
कोश दुइकते झंडा देखे ❀ रानी सोचि २ रहिजाय ॥
केहिकोलश्करयहचढिआयो ❀ रहि गयो एक कोस मैदान ।
पचशावद हाथी पहिचानो ❀ ब्रह्मानँदको लौ पहिचानि ॥
आल्हा ठाकुर सुलखे ढेबा ❀ औ सैयदको लौ पहिचानि ।
तुरतै उतरी सतखंडाते ❀ औ सब सखियाँ लईं बुलाय
साजि आरती मल्हना रानी ❀ लागी करन मंगलाचार ।
तौलौं आई फौज कटीली ❀ जयको डंका दियो बजाय ॥
दगी सलामी गढ महुबेमें ❀ आये जीति बनाफर राय ।
आल्हा ब्रह्मा सुलिखे उतरे ❀ दरवाजेपर पहुँचे आय ॥
चरण लागिके रानि मल्हनाके ❀ सो माथेमें लिये लगाय ॥
हाथ पकारिके रानी मल्हना ❀ लडिकन छाती लियोलगाय
करी आरती सब लरिकनपर ❀ माथे टीका दियो लगाय ।
कुशल क्षेम पूछी सबहीकी ❀ तब आल्हान दियो जवाब॥
सब प्रताप माता तुम्हरो है ❀ माता लियो बापको दाँव ।
चारों बेटा राज दुलारे ❀ सो खेतनमें दिये गिराय ॥
राजा जम्बैको कोल्हूमें ❀ जियते समुह दियो पेराय ।
सुनतै रानी बहुत खुशी हुइ ❀ पीठीपर दो हाथ फिराय ॥
बोली मल्हना तब लरिकनते ❀ जुग जुग जिवौ लडैते लाल
आल्हा ब्रह्मा सुलिखे ढेबा ❀ पँचयें सैयद संग लिवाय ॥
पाँचौ पहुँचे तब बँगलामें ❀ जहँ दरबार चँदेले क्यार ।
करी बन्दगी परिमालेको ❀ दोनों हाथ बाँधि रहिजायँ ॥

सबहि बिठायो चन्देलेने ❋ औ सब पूँछो हाल हवाल ॥
हाल बतायो सब आल्हाने ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय।
हुक्म देदिया तब राजाने ❋ घर घर होंय मंगलाचार ॥
अनँद बधैया महुवे बाजी ❋ बाजा बजन लगे चहुँओर ।
भिक्षुक याचक सिगरे आये ❋ बहुतक सोना दियो लुटाय
गयाते लौटि मलिखे ऊदनि ❋ दिवला तिलका भईं तयार
चुरी उतारीं तिन सागरपर ❋ औ महलनमें पहुँची आयँ ॥
इतनी लडाई भइ माडौमें ❋ सो हम लिखिकै दई सुनाय।
सिरसा गढ छीनो पारथमे ❋ आगे सुनियो कान लगाय
समय समय पर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ रामको नाम
सीताराम मनाय हिये महँ ❋ सुमिरौ कृष्णचन्द्र घनश्याम

इति माडौकी लडाई समाप्त ।

श्रीः ।

सिरसाकी पहिली लडाई ।

मलिखान विजय ।

सुमिरनी–गजल ।

प्रथम गणराज पदपंकज मनाऊँ, मनोरथ सर्वदा सुख सिद्ध पाऊँ
गले वैडूर्य माला रक्तचन्दन, मुकुट मस्तकपै उपमा कैसे गाऊँ
खडीं सब ऋद्धि सिद्धी हाथ जोडे, मैं सोनेका चँवर तुमपर ढुलाऊँ
करूँ पूजा वचन मन क्रम तुम्हारी चरणरज प्रेमसे शिरपर चढाऊँ
तुम्हीं हो सिद्धिदाता जक्तमें एक, तुम्हारा द्वार तजि किस द्वार जाऊँ
करौ इस दासपर अपने कृपा तुम, फतेह सिरसा सभाको लिख सुनाऊँ

लागत भादौंकी तिथि आठैं ॥ शुभदिन आनि परो बुधवार
आधी राति केरे अमलामें ॥ चन्दा उदय भयो त्यहि बार
समय सुहावन अति मनभावन ॥ पावन जगत रूप कल्यान।
मथुरामाहिं रूप गुणसागर ॥ प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान ॥
अस्तुति कीन्हीं सब देवन मिलि ॥ जयजय कृपासिंधु करतार
जब जब भीर परत भक्तनपर ॥ तब तब आय लेत अवतार
तुम्हरी लीला सब जग जाहिर ॥ जानत सकल वृद्ध अरु बाल
घट घट वासी अविनाशी हो ॥ गो द्विज रक्षक दीनदयाल
निज लीला करि सब सुख देहौ ॥ हरिहौ सकल भूमिको भार
रक्षा करि हौ निज भक्तनकी ॥ ह्वैहै प्रगट सुयश संसार ॥
करि अस्तुति सब देव सिधारे ॥ माया प्रबल कृष्ण घनश्याम
द्वार कपाट खुले त्यहि अवसर ॥ सोये द्वारपाल त्यहि याम
श्रीवसुदेव देवकी दोनौं ॥ बन्धनमुक्त भये तत्काल ।

प्रगटि रूप समुझाय बात सब ❋ विहरन लगे कृष्ण है बाल॥
लखि शिशुरूप मातुपितु दोनों ❋ बँधिगये मोहपाशके जाल।
कठ लगाय लियो बालकको ❋ विस्मय विवश चूमि मुखलाल
देवकिसुता मोहवश बोली ❋ सुनिये सौम्यरूप भरतार।
कीजै यत्न वेगि बालकहित ❋ जासों बचै बाल सुखसार॥
तब वसुदेव चले कृष्णहि लै ❋ वर्षत मन्द मन्द जल धार।
यमुना निकट गये जेहि अवसर ❋ उमडी तहाँ नीरकी धार॥
कृष्णचरण परशनहित यमुना ❋ उमडी विकल चित्त वसुदेव
चरण बढायो कृष्णचन्द्र तब ❋ घटि गो नीर जानि पद भेव
यमुना पार उतारि गोकुलमें ❋ पहुँचे तात सहित सुरराय।
यशुदा निकट देखि कन्या तहँ ❋ हर्षित चित्त भये मनमायँ॥
लई बालिका तेहि अवसरमें ❋ तुरते भवन फिरे वसुदेव।
आय पहूँचे तब मथुरामें ❋ जान्यों नाहिं काहुने भेव॥
तुरतै कन्या रोवन लागी ❋ पाई खबर कंस नरराय।
आय पहूँच्यो असुरराज तहँ ❋ लीन्ही झपटि सुता रिसियाय
पटकन चाह्यो ताहि शिलापर ❋ सो उडि गई तुरत आकाश
उत श्रीकृष्णचन्द्र गोकुलमें ❋ प्रगटे मनहुँ चन्द्र परकाश॥
भई बधाई तहँ घरघरमें ❋ सो मैं कहँलग करौं बखान।
नन्द यशोदादिक नर नारी ❋ फूले अंग नाहिं समियान॥
लीला करि करि नित गोकुलमें ❋ प्रभुने मात पितहि सुख दीन
व्रजमंडलके लोग लुगाई ❋ हुइगये कृष्ण भक्त लवलीन
श्रीवृन्दावन धाम विहारी ❋ वनवन धेनु चराई आप।
श्रीगोपाल सन्त हितकारी ❋ हारी सकल जगत सन्ताप॥
मारि पूतना हति सकटासुर ❋ बक अरु तृणावर्तको मार।
गर्व नशायो इन्द्रदेवको ❋ यक अँगुरीपर धरो पहार॥

केशी व्योमासुर वृषभासुर ❋ मारे कंस आदि खलराज ।
रक्षा कीन्हीं पांडव कुलकी ❋ सारथि बने भक्तके काज ॥
कृष्णचन्द्र छबि परम मनोहर ❋ शारद सुयश कहत सकुचाय
कोटि काम उपमा लघु लागत ❋ केहि विधि बरणि सकै कविराय
सागर सुयश अगम यदुनन्दन ❋ मम मति मशकरूप अज्ञान
शेष शम्भु विधि पार न पावत ❋ मैं करि सकौं कौन गति गान
छोडि सुमिरनी अब आगे मैं ❋ वरणौं सुयश वीर मलिखान
सिरसा छीनि लियो पारथसे ❋ करिकै युद्ध घोर घमसान॥
रावप्रताप प्रगट जिमि दिनकर ❋ पर्वत पाप होत जरि छार ।
तिमि परिमाल प्रताप प्रगट जग ❋ निर्बल मानिगये सुनि हार
राम नाम शत मूरि सजीवन ❋ हरिजन अमर होत जपि नाम
उत्तर गगन पंथको निरखो ❋ ध्रुवकी ज्योति दिपति सुरधाम
रामभक्त जलमें नहिं डूबत ❋ अग्नि न सकति रोम लगि जारि
जन प्रहलाद भक्ति बल उबरो ❋ दहकत अग्नि भई फुलवारि॥
रामचन्द्र अरु भरत लालजी ❋ लक्ष्मण शत्रुदमन सुत चारि ।
जबसे प्रगटे अवधपुरीमें ❋ दशरथ अभय भये शरधारि॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा ❋ ढेबा आदि वीर भयकाल ।
जबसे उपजे गढ महुबेमें ❋ जगिगये भाग रजा परिमाल
धन्य भाग माता कौशल्या ❋ जिनके पुत्र भये भगवान ।
धन्य कुक्षि रानी तिलकाकी ❋ जन्मे प्रबल वीर मलिखान
पुत्र सुपुत्र जने देवैने ❋ प्रगटो देशराजको नाम ।
कुलदीपक तिलकाने जायो ❋ उमँगे वत्सराज सुरधाम ॥
मंगल मोद बढे दुख नाशे ❋ महुबो नगर बनो सुरधाम ।
पवन रूप है शोभा लहरी ❋ पुनि परिमाल भये सरनाम
जबसे जन्म लियो तिलकासे ❋ बल निधि शूर वीर मलिखान ॥

शंका बढन लगी महुबेकी ❀ काँपन लगे सुभट बलवान॥
धर्मपुत्र राजाने समुझो ❀ सेयो प्राण तुल्य निजधाम।
नयन ओट पलभरि नाहिं राखो ❀ मुखलखिसकलविसारेकाम
तरुण अवस्थाने मधु प्यायो ❀ फडकन लगी भुजा मलिखान
तरुवर मलन लगो चरणनसे ❀ रणमें हनन लगो बलवान ॥
यौवनरूप सिंधुमें उमँगो ❀ पकडी मौजरूप तलवार।
गिरिवर डील महा अभिमानी ❀ खसके परे शस्त्र शर डारि॥
बालक वयासि गई ऊदनिकी ❀ आई तरुण अवस्था धाय।
भुजबल उठन लगो रिउनीमें ❀ पकडन लगो सिंह बन जाय
निर्भय वीर उदयसिंह उपज्यो ❀ जन्मो अमरसिंह मलिखान
संपाति लाय भरी महुबेमें ❀ लैलै महाबलिनसों मान॥
जित दोउ वीर समरको गवनें ❀ भागें हाँक सुनत महिपाल।
ऐसे नग महुबेमें उपजे ❀ जगमें अहो भाग परिमाल॥
जैसे नाना रामचन्द्रके ❀ योधा अंगदादि हनुमान।
तैसे ही परिमाल भूपके ❀ बलनिधि उदयसिंह मलिखान॥
बडबड नामी वीर बहादुर ❀ जिनकी हती जगतमें धाक।
अनी जोरि ऊदनिसे अटके ❀ ह्वैगये समरभूमिमें खाक॥
कृपारूप जगदीश्वर चितये ❀ नित नव बढन लगे परिमाल
सुभट वीर सेना धन सम्पति ❀ बाढन लगी पाय शुभकाल
गढपति शूर वीर भट योधा ❀ राजा राज कुँवर सरदार।
छत्रपती रणधीर बहादुर ❀ हाजिर रहन लगे दरबार॥
कनक कोट पर झंडा लहरें ❀ सोहत चित्र विश्व भगवान।
ऊपर नामा चन्देलेको ❀ नीचे उदयसिंह मलिखान॥
सुख समेत नाना विधि सम्पति ❀ महुबे भोगि रहे परिमाल।
परजा सुखी सुखी पशु पक्षी ❀ योधा सुभट बजावें ताल॥

सुर मुनि ऋषी ज्ञाननिधि भाषत ❋ दर्शत प्रगट जगतमें बात ।
जापर दया होत भगवतकी ❋ दुर्लभ काज सुलभ दिखलात
गोपद रूप अगम निधि लागत ❋ दहकत अग्नि होत फुलवारि
मृत्यु मात सम अमृत पियावति ❋ विन रणकियेभजतारिपुहारि
जैसे इन्द्रपुरी मनभावनि ❋ सब सुखखानि लेउ पहिचानि
तैसेइ धन्य धरणि महुबेकी ❋ भट निर्मोह वीरकी खानि॥
कंचन भवन विविधरँग रचना ❋ अद्भुत इन्द्र मनोहर जाल ।
रत्नजटित सिंहासन शोभित ❋ बैठे न्याय करें परिमाल ॥
आजु दया है परिमाले पर ❋ श्रीसच्चिदानन्द भगवान ।
शूलहु सुमन होत हाथनमें ❋ दर्शत लाल छुवत पाषान॥
पारस पूजा चन्देलेघर ❋ लोहा छुवत सोन ह्वै जाय।
महिमा जिनकी सब जग जानें ❋ केहिविधि बरनिसके कविराय
लगी कचहरी त्तुनि आल्हाकी ❋ भारी लागि रहा दरबार ।
पाँच हाथ ऊँचा सिंहासन ❋ तापर तपै शूर सरदार ॥
बारह द्वारीके बँगला हैं ❋ तेहर द्वारीके दलान ।
खंभ अठासीकी बैठक है ❋ चौविमकी चौपाल बखान॥
एक अलँग पर ताला सैयद ❋ बैठा एक ओर मलिखान ।
एक अलँगपर ढेबा बैठा ❋ यक लँग उदयचन्दबलवान
नचै कंचनी वा बँगलामें ❋ शाभा कछू कही ना जाय।
वाहि समैयाके औसरमें ❋ मलिखे उठा चित्त हर्षाय॥
उतरि सिंहासनसे भुइँ आया ❋ बोला हाथ जोरि मलिखान
एक बात तुमसों कहियतु हौं ❋ दादा मंडलीक बलवान ॥
बहुत दिनासे वनवेलिनमें ❋ हम नहिं खेलन गये शिकार
हुक्म तुम्हारो जो मैं पाऊँ ❋ तो घोडीपर होउँ सवार ॥
गुस्सा ह्वैके तब आल्हाने ❋ नरमलिखेसे कही सुनाय।

पडी तबाही गढ माडौकी ❋ अबतक भया होश कछु नायँ
है तू जालिम भैया मलिखे ❋ तेरा कोइ न पावे पार ।
कोइ तो मारै है शेरनको ❋ तू वीरनके करै शिकार ॥
उछल बछेरी पर उड लागे ❋ पहुँचे क्षार समुंदर पार ।
रारि मचावै केहु सौंवतसे ❋ जो दिन रात चलै तलवार ॥
फिरि ना बचि हैं महुबेवारे ❋ मारे जायँ सकल सरदार ।
तापर ज्वाब दियो मलिखेने ❋ दादा मंडलीक अवतार ॥
पहिली गारी पर ना बोलूँ ❋ ना दूजी पर करौं बिगार ।
तीजी गारी पर ना छोंडूं ❋ मुखमें धांसि देउँ तलवार ॥
हुक्म देदिया तब आल्हाने ❋ मालिखे तुरत भया तैयार ।
घोडी कबुतरीको सजवाया ❋ तापर फाँदि भयो असवार ॥
एंड लगाई जब घोडीके ❋ घोडी आसमान उडि जाय
सर सर सर सर छुटी बछेरी ❋ जैसे कला कबूतर खाय ॥
सिरसा गढकेरे जंगलमें ❋ घोडी उतरि परी तेहि काल ।
जहाँ शिकार करत वन डोले ❋ पारथ नाम पिथौरा लाल ॥
हिरण एक घेरा पारथने ❋ सो मलिखेकी परी निगाह ।
झपटि गिराया नर मलिखेने ❋ तब पारथने करी निगाह ॥
लौटि गर्दना नाहरकेसा ❋ सो मलिखे घई रहा निहार
बोला पारथ नर मलिखेसे ❋ ओ राजनके राजकुमार ॥
कौन देशके तुम बासी हौ ❋ आगे कहा तुम्हारो नाम ।
हमरी सीमाके अन्तरमें ❋ तुम्हरो यहाँ कौन सो काम ॥
क्यों शिकार हमरी तुम मारी ❋ क्या कमबख्ती लगी तुम्हार
बडी दूरिसे हम लाये थे ❋ सो तू हमरी हनी शिकार ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❋ तो समुद्रसे जाउ बराय ।
छोंडि शिकार देउ हमरी तुम ❋ नाहीं तेगा देउँ चलाय ॥

इतनी सुनिकै मलिखे तड़पा ❀ औ पारथसे कही सुनाय ।
यह सीमा है गढ महुबेकी ❀ तू है कौन देशका राय ॥
बारह कोसनके गिरदेमें ❀ हमने तुझे लखा कहुँ नायँ ।
अब तू आया कौन काज हित ❀ सो तू हमहिं देय बतलाय॥
पटिया नाहीं तेरे बापकी ❀ जो चलि आयो हमारे गावँ ।
सिंहा बिचरत हैं या वनमें ❀ यामें गीदडका क्या काम॥
इतनी सुनिलइ जब पारथने ❀ बोली गई करेजे पार ।
बोला पारथ तब मलिखेसे ❀ सुनले सच्चा वचन हमार ॥
यह है सीमा मेरे बापकी ❀ जो हैं शब्दबेधि चौहान ।
गढ दिल्लीपति पृथीराज हैं ❀ जिनको जानत सकल जहान
यहाँका राजा वच्छराज था ❀ जो महुबेका राजकुमार ।
जा दिन मरिगा वच्छराज नृप ❀ सिरसा भया बिना सरदार
तबहीं राजा पृथीराजने ❀ यह दिल्लीमें लिया मिलाय।
सिरसा गढका यह जंगल है ❀ सिरसा तीनि कोस रहिजाय
यहँपर राज हमारो कहिये ❀ पारथ नाम पिथौरा लाल ।
सीमा नाहीं यह तुम्हरी है ❀ नाहीं राज रजा परिमाल ॥
इतनी बात सुनी पारथकी ❀ तब हँसि कही वीर चौहान
भली बताई पारथ ठाकुर ❀ हौ तुम धन्य वीर चौहान॥
मैं हूँ बेटा वच्छराजका ❀ औ मलिखान हमारो नाम।
सिरसा गढ है मेरे बापको ❀ तहँ तुम कियो आपनो धाम
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❀ खाली करौ सिरसवाँ गाँव।
इतनी बात सुनी मलिखेकी ❀ तब पारथने दियो जवाब ॥
होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❀ तौ तुम खाली लिहौ कराय।
कौन हौसिला तुम राखतहौ ❀ जो सिरसाको लेउ छिनाय
बोले मलिखे तब पारथसे ❀ तुम सुनिलेउ धनी चौहान।

खाली सिरसा मैं करवाऊँ ❋ तौ मेरो नामवीरमलिखान
कितिक साहिबी पृथीराजकी ❋ जो हमरा गढ लियो दबाय
दई चुनौती सोमेश्वरकी ❋ जिनके पुत्र पिथौरा राय॥
जो तुम खैर आपनी चाहौ ❋ खाली करिदेउ गाँव हमार
खाली करिहौ ना सिरसा जो ❋ तो लैलेउँ तेगकी धार ॥
आठ दिनोंमें खाली करिदेउ ❋ नातर दिल्ली लिहौं छिनाय
तख्त लौटिकै बादशाहको ❋ दिल्ली गर्द दिहौं करवाय ॥
इतनी सुनतै पारथ जरिगा ❋ औ मलिखेमें कही सुनाय
ऐसो शूर कहूँ नाहिं देखौं ❋ जो सिरसाको लेय छिनाय॥
बातन बातन बतबढ हैगा ❋ औ बातनमें बाढी रार ।
गुस्सा हुइकै तब पारथने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार॥
हिरना धरिदेउ तुम हियँनापर ❋ चुप्पै लौटि महोबे जाउ ।
नाहीं चोट आपनी करिलेउ ❋ क्योंफिरिमूर्खगवाँटिपछिताउ
मलिखे बोले तब पारथसे ❋ बेटा सुनौ पिथौरा क्यार ।
चोट अगाऊ हम नाहिं खेलैं ❋ नहिं भागेके परैं पिछार ॥
पैर पिछारूको नहिं राखैं ❋ ना तिरियापर करैं हथ्यार
चोट आपनी पारथ करिलेउ ❋ ना कछु मनमें करौ विचार
फूलिकै पारथ गरगज हुइगा ❋ अपनी म्यान करी तलवार
साँगि उठाई मन पक्केकी ❋ जो चिंतामणि गढी लुहार
चेहरा डटिकै नर मलिखेको ❋ ऊपर साँगि धमकी आय ।
बायेंसे घोडी दहिने हुइगइ ❋ नीचे साँगि गिरी अरराय
गुर्ज उठायो तब पारथने ❋ सो मलिखेपर दियो चलाय
घोडी उडिगइ आसमानको ❋ तुरतै गुर्ज भूमि गिरिजाय॥
शंका मानी तब पारथने ❋ औ फिरि खैंचि लई तलवार
दांत बत्तीसौंको धरि दाबे ❋ औ मलिखेपर दीन्ही झार

ढाल उठाय दई मलिखेने ❋ ताकी लीन्हीं चोट बचाय
तीनि वार पारथने कीन्हें ❋ मलिखे तीनौं लियो बचाय
होश बिगारि गये तब पारथके ❋ मनमें गया सनाका खाय ।
सोचै पारथ अपने मनमें ❋ है यह बडा वीर रणराय ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखेने ❋ औ पारथसे कही सुनाय ।
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ लीजे हमरी चोट बचाय ॥
यह कहि चोट करी मलिखेने ❋ पारथ दीन्हीं ढाल अडाय
ढाल फाटिगइ गैंडावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय
घोडा भागि चला पारथका ❋ ना रोकेसे रुकी लगाम ।
पारथ भागि गया सिरसाको ❋ मलिखे गया आपने गाम॥
पारथ सोचै अपने मनमें ❋ औ पलँगापर करै विचार ।
रैनि समैया नींद न आई ❋ बोली तासु पद्मिनी नार ॥
स्वामी निधडकतुम सोवत थे ❋ जैसे विपिन माहिं मृगराज
कौन आपदा तुमपर परिगइ ❋ स्वामी नींद न आई आज
बोला पारथ तब रानीसे ❋ तुम सुनिलेउ पद्मिनी नार
सिरसा केरे तीनि कोसपर ❋ हम वन खेलन गयेशिकार
आज मिलाप भया वैरीसे ❋ निंदिया कूच गई करवाय ।
बहुत दिना सुखसे सोये हम ❋ अब दुख नींद पहूँची आय
मलिखे बेटा बच्छराजका ❋ ताने हमरी हनी शिकार ।
सिरसा माँगे अपने बापका ❋ जाकी कठिन चलै तलवार
आठ दिनाकी मुहलति देके ❋ हमरो घोडा दियो भगाय
बडो लडैया महुबेवारो ❋ सिरसा खाली लिहै कराय
इतनी बात सुनी रानीने ❋ मनहीं मनमें गइ मुरझाय ।
पोच पुरुषकी तिरिया जैसे ❋ अपने मनहीं मनपछिताय
यहांकि बातें तो यहँ छांडौ ❋ अब महुबेका करौं बखान ।

जहाँ कचहरी सुनि आल्हाकी ❋ तहँपर गया वीर मलिखान
हाथ जोरिकै मलिखे बोले ❋ दादा मंडलीक अवतार।
न्यारा किला हमहिं बतलावौ ❋ न्यारा बँगला फौज हमार॥
तापर ज्वाब दियो आल्हाने ❋ मैं भैयाकी लेउँ बलाय।
हम तौ तावे परिमालेके ❋ वो सरदार चँदेले राय॥
तुम चलि जावौ गढ महुबेको ❋ राजा चन्द्र वंश दरबार।
जो कोइ गढिया देयँ चँदेले ❋ तामें जाय रहौ सरदार॥
इतनी सुनि लइ नर मलिखेने ❋ मनमें सोचि सोचि रहिजाय
फिरिके मलिखे बोलन लागे ❋ चाचा सुनौ तलंसीराय॥
जा दिन मरिगये पिता हमारे ❋ तुम्हरी गोद गये बैठाय।
छोटी गढिया हमको मिलिजा ❋ ऐसी जतन देउ बतलाय॥
इतनी सुनिकै ताल्हन बोले ❋ बेटा सुनौ वीर मलिखान।
सीम दवाई दिल्लीपतिने ❋ जो हैं पृथ्वीराज चौहान॥
सिरसा गढ तुम्हरे चाचाका ❋ सो पिरथीने लियो दबाय।
अपना सिरसा जाकर लेलो ❋ चाहै रारमार बढ जाय॥
अब तुम जावौ गढ महुबेमें ❋ औ राजासे कहौ सुनाय।
जाय मांगियो तुम कोइ गढिया ❋ तुमको देयँ चँदेले राय॥
जोई रोगीके मन भावै ❋ सोई वैद बताई आय।
कूदि बछेरी पर चढ बैठा ❋ औ महुबेमें पहुँचा जाय॥
जुरी कचहरी चन्देलेकी ❋ बैठे बडे बडे उमराय।
क्या छबि वरणौं वा बँगलाकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय
मलिखे पहुँचि गये बँगलामें ❋ लेकै रामचन्द्रको नाम।
पांच पैगसे शीश झुकाया ❋ औ ढिग जाकर किया प्रणाम
सूरति देखी जब मलिखेकी ❋ क्षत्री सोचि सोचि रहि जायँ
सब मुख देखि रहे मलिखेको ❋ बँगला सूनसान हो जाय॥

नजरि बदलि गइ चन्देलेकी ❀ देखा बच्छराजका लाल ।
हाथ पकरिकै लै गोदीमें ❀ लौ बैठाय रजा परिमाल॥
बोले राजा नर मलिखेसे ❀ बेटा मेरे लडैते लाल ।
कौन आपदा तुमपर परिगइ ❀ जो मुरझाय रहे यहि काल
हाथ फेरिकै पुनि पीठीपर ❀ बोले वचन प्रेम रससानि ।
रे मलिखान वीर भटनागर ❀ बलनिधि सुयश बुद्धिकीखानि
राज बढायो तैं महुबेको ❀ सम्पति भरी भवनमें लाय
कंचन कोट धाम रचि डारे ❀ यशकी ध्वजा स्वर्ग लहराय
बहु रण विषम युद्ध हम कीन्हें ❀ निरखे विविध भांति मैदान।
शूर वीर क्षत्री भट जाँचे ❀ गरजे समरभूमिमें ज्वान ॥
तोसौं नर निशंक नहिं देखौं ❀ मैं मथि चुको सकल संसार
धन्यवाद बलको क्या भाषौं ❀ है सहदेव केर औतार ॥
एक जीभ अगणित यश तेरे ❀ बरणौं कौन यत्न करि तात।
कुलदीपक कीरति सिरजो ❀ तोसों सुभग भये पितु मात
इन्द्रलोक लग पदवी धरिदइ ❀ करिदये छत्रपती परिमाल
ममहित त्यागि प्राण पन हारा ❀ निशिदिन रही शीश पर ढाल
जो सुत तोहिं समर्पण करिदेउँ ❀ अपना माल मुल्क तन प्राण
फिरि कोई पूछै मेरे मनसे ❀ तोसे उऋण नाहिं मलिखान
दल गढ राज धाम धन संपति ❀ जो तोहिं वस्तु जहां दिखलाय ।
आजु माँगि ले राजद्वारमें ❀ कहिदेउँ एवमस्तु हर्षाय ॥
मैं क्या देउँ आप उठि लैले ❀ जो प्रिय लगै राज धन धाम
सकल वस्तु सन्मुख यह दर्शति ❀ फिरि क्या लाभ बताये नाम
सारे सोच हमारे मिटिगये ❀ जबसे तुम पकडी तलवार ।
समरथ लडिका जिनके हुइगे ❀ पुरिखन कहा रही दरकार॥
हाथ जोरि मलिखे शिर नायो ❀ बोलो दीन वचन बिलखाय

लज्जित करत नाथ मलिखेको ❋ अवगुण कहत सुयश दिखलाय
जो यह राज सुयश मम भाषत ❋ सो इस योग्य कहाँ मलिखान
मैं तो अधम कूर कायर खल ❋ निरखत समर तजत धनु बान
मैं रणमाहिं विजय नहिं पाई ❋ भाषौं सत्य बात महराज ।
केवल नाथ प्रताप आपके ❋ मोसे बने समरमें काज ॥
मैं यह नाथ सकल विधि जानौं ❋ जो तुम सुयश कहत हर्षाय
पितारूप सुतको मन राखत ❋ मोपै दया करत हित लाय
कोइ आपदा हमपर नाहीं ❋ चाचा चहिये दया तुम्हार ।
हाथ धरे राखौ पीठीपर ❋ जामों होवै भला हमार ॥
यह क्या कहत आजु मलिखेसे ❋ मोसे माँगु राज धन धाम
अति आश्चर्य सुनत मन व्यापै ❋ किसके करे कहा हम काम
आप कौन अरु को है मलिखे ❋ किसको राज पाट धन धाम
किसकी वस्तु किसे लै सौंपत ❋ क्या कहि पुत्र लजावो नाम
किसको देत राज धन सम्पति ❋ क्या जिय नाहिं विचारो तात
आजु पवन उलटी क्यों लहरत ❋ अनुचित कहत दयानिधि बात
विलग न मानो राजसभामें ❋ तो मैं अर्ज करौं महराज ।
वृथा उमिरि हमने सब खोई ❋ निष्फल भये सकल जगकाज
तुम तो कहत हते भवननमें ❋ हमको सकल पुत्र यकतार ।
आजु प्रगट हमको यह दर्शत ❋ हम हैं और वृक्षकी डार ॥
क्या तुम पुत्र गिनो ब्रह्माहिको ❋ हमको और गिनो नरनाथ
जो तुम उऋण होत दुनियाँमें ❋ धारि कछु वस्तु हमारे हाथ
नाथाहि पिता भ्रात ब्रह्माको ❋ मल्हनै गिनो दासने मात ।
तुमहूँ हमें पुत्र सम मानो ❋ सो क्या अहै स्वप्नकी बात
तुमतो उऋण भये मलिखेसे ❋ जगमें युवा वयस पहुँचाय
हमसे कहो कौन व्रत साधैं ❋ तुमसे उऋण होयँ नरराय ॥

तन मन प्राण आदि मलिखेके ❀ आवैं महाराजके काम ।
नाथ हेतु यह शिरलागि जावै ❀ तौ मैं जीति जाउ सुरधाम॥
जैसे आजु नाथहित वर्तत ❀ तैसेइ सदा रहौं प्रतिपाल ।
मैं प्रतिकार सकल भारि पाये ❀ आगे नाथ करौ जनि ख्याल
शीश उठायो परिमालेने ❀ बोले हाथ पकरि समुझाय।
पितहि जानि हमसे कछु लैलेउ ❀ मेरो पुत्र चित्त शिथिलाय
हाथ जोरि चरणन शिर नायो ❀ उठिकै अर्ज करी मलिखान
युग युग जियो इन्द्रपद भोगौ ❀ जबलग स्वर्ग दिपैं शशि भान
अर्ज करत शंका मन व्यापत ❀ चुपके रहत चित्त घबराय ।
ताते हाथ जोरि शिर नावत ❀ मेरी खता माफ ह्वै जाय ॥
इन भुजसे दल गढ संहारे ❀ जीते महाबलिनके राज ।
सो फैलाय वस्तु क्या मांगौं ❀ का विधि तजौं जगतकी लाज
माल मुल्क राजनके लूटे ❀ हरि धन द्रव्य राज इक साथ
अर्पण करदिये महाराजके ❀ तिनपर नाथ धरौं क्या हाथ
आपुहि नाथ न्याव निरवारो ❀ जो मैं सौंपि चुक्यों धन धाम
इस जिह्वासे फिरि क्या मांगौं ❀ क्या मैं कुटिल होउँ सरनाम
जबलग आप राजपर बैठे ❀ महुबे भोग करौ सुखसाज।
जब जगत्यागि स्वर्गको गवनौ ❀ ब्रह्मा भ्रात करै यह राज ॥
मैं नाहिं भाग लेत भ्राताको ❀ जिसको गिनौं प्राण आधार
कछु मति नाथ कहौ मलिखेसे ❀ क्यों शिर लेत अयशको भार
हां जो दया करत मलिखेपर ❀ बारंबार कहत महराज ।
तो इक अर्ज करत स्वामीसे ❀ राखियो हाथ गहेकी लाज
सुनतहि महाराज उठि बोले ❀ करि अति प्रेम प्रीति हितप्यार
जौन मनोरथ जियमें राखै ❀ कहिदे आजु राज दरबार॥
बचन सुनतमलिखेउठिबोल्यो ❀ दोउकरजोरिचरणशिरनाय

इच्छा प्रगट करत स्वामीसे ❀ सुनतै दया लहरि ह्वै जाय ॥
सिरसा गढ जो मेरे बापको ❀ जो पिरथीने लिया दबाय ।
हुक्म तुम्हारो जो मैं पाऊँ ❀ तौ पारथसे लेउँ छिनाय ॥
मारि भगाऊँ मैं पारथको ❀ सिरसा फेरि करौं आबाद ।
किला बाँधि धुरपै अडि बैठौं ❀ तुम्हरी करौं राज मरजाद ॥
चौकी ह्वै जाय गढ महुबेकी ❀ धुर पर पडे रहैं बलवान ।
जब दल सिंधु झुकै दिल्लीसे ❀ पहले लहरि लेय मलिखान ॥
इतनी बात सुनी मलिखेकी ❀ राजा सोचि सोचि रहिजाय।
जो मैं हुक्म देउँ सिरसाको ❀ भारी भूप पिथौरा राय ॥
होय लडाई जो सिरसा पर ❀ तौ सब वंश तहाँ खपि जाय ।
कही हमारी जो मानै यह ❀ ताते याहि देउँ समुझाय ॥
बहुतै समुझाया राजाने ❀ औ छातीसे लिया लगाय ।
हाथ फेरि पीठीपर बोले ❀ बेटा तुम्हैं कौन परवाय ॥
कहो तो महुबा खाली करदूँ ❀ कहु जगनेरी करूँ तुम्हार ।
कहो बसादूँ किला कलिंजर ❀ कहु पटनाको देहुँ सम्हार ॥
तुम मति अटको पृथ्वीराजते ❀ सदा सदाको बैर बँधाय ।
जीवत हारि नाहिं मिटनेकी ❀ बेटा सभी फौज खप जाय ॥
हाथ जोरिकै मलिखे बोला ❀ तुम सुनिलेउ चन्द्र सरदार ।
हँसी खुशीसे आज्ञा दैदो ❀ मनमें करौ न शोच विचार ॥
सिरसा जीति लेउँ पारथसे ❀ जल्दी हुक्म देउ फरमाय ।
किला बनाऊँ मैं धूरेपर ❀ बैठौं जाय भूमि अपनाय ॥
जिससे उत्तर धुर कनवजको ❀ दक्षिण मदन सिंहकी ठाउँ ।
पश्चिम धूरो है दिल्लीको ❀ आज्ञा देउ तुरत चढि जाउँ ॥
चौकी होवै गढ महुबेकी ❀ धुरपर पडे रहैं बलवान ।
जब दल सिंधु झुकै दिल्लीसे ❀ पहले लहरि लेय मलिखान ॥

इतनी बात कही मलिखेने ❋ सुनते सुन्न भये परिमाल ।
आल्हा मनमें सोचन लागे ❋ ऊदनि तकन लगो जिमि व्याल
आल्हा ऊदनिचलि आये थे ❋ बातें सुननवीर मलिखान ।
नृपके एक ओर बैठे थे ❋ बैठे ब्रह्मानन्द बलवान ॥
शूर वीर भट कोइ न बोले ❋ को भरिसकै कालकी साख ।
विषधर छुअत भालको जानो ❋ योद्धा उदयसिंहकरि माख ॥
भूमि काट लो चौहाननकी ❋ धुरपर किला लेउ बनवाय ।
इर्द गिर्दके गढ संहारौ ❋ सिरसा गाँव लेउ अपनाय ॥
तोपैं साजि धरौ रिउनीपै ❋ झंडा गाडि देउ हर्षाय ॥
जो कोइ निरखै गढ दिल्लीको ❋ लहरत राजध्वजा दिखलाय
अपनो तिलक आप करि बैठो ❋ धारौ छत्र लाल जड़वाय ॥
निर्भय राज करौ सुख सोवौ ❋ कथा करि नेके पिरथी गाय
पर इक सीख सुनौ ऊदनिकी ❋ राखौ दूत सदा दुइ चारि ।
जो मगविचारि पवन गति काटैं ❋ दामिनि रूप चलैं हुंकारि ॥
हाजिर बने रहैं मजलिसमें ❋ सन्मुख खडे रहैं तैयार ।
निरखत दिशा रहैं दिल्लीकी ❋ परखत रहैं नगन गुन्वार ॥
जब दल उमडै गढ दिल्लीसे ❋ आवत जानें धनी चौहान ।
अन्धकार दुनियाँमें लागै ❋ चहुँलग नमुझि परै सुन्सान ॥
तब वे दूत पवन गति गवनें ❋ ना मगमध्य करें जलपान ।
खबरि सुनावैं गढ महुबेमें ❋ गढमें घिर जात मलिखान ॥
तौ भटशूर वीर महुबेके ❋ उडिके जाय परैं तत्काल ।
आल्हा ऊदनि ब्रह्मा ढेबा ❋ शिरपर बनैं भ्रातके ढाल ॥
यह भी बात प्रगट सब दर्शोहि ❋ को को गहैं विपतिमें हाथ ।
को को वीर प्राणके अगरे ❋ जो शिर देहिं तुम्हारे साथ ॥
एक बात जिह्वा पर आवै ❋ पै कछु खौफ खाय रुकि जाय

जो तुम खता माफ करिडारौ ❋ तौ मैं अर्ज करौं शिर नाय ॥
कारि मदमान चुप्प मत रहियो ❋ फिर गढ सहित धूरिहुइजाउ
समाचारजल्दीलिखिभेजियो ❋ चूके समय स्वर्ग पछिताउ ॥
जैसेइ वचन सुने ऊदनिके ❋ लागे हृदय मध्य जिमि बान
क्रोधअग्नि तनमें उठि भभकी ❋ बोल्यो नजरि जोरि मलिखान
कायर खबरि करत संकटमें ❋ सायरसिंह तकै नहिं आस।
रे मनहीन समर लखि काँपैं ❋ रणसे शूर करहिं क्या त्रास
क्या भय चिंता नर मलिखेको ❋ जो दल साजि चढें चौहान
शब्दवेधि क्या काहु न आवै ❋ क्या परवाहि वीर मलिखान
सिंहहि विरत सुने वन भीतर ❋ कबहुँ न विरत सुने खर स्यार
शूरहि कदन सुने रण गटमें ❋ कटन न सुने चोर बटमार ॥
बडबड सुभट वीर नर उपजे ❋ सबको कियो कालने ग्रास।
मैं क्या वस्तु सकल तनुधारी ❋ इक दिन लेहिं स्वर्गमें वास
तुमहीं कहो अमर को रहिगे ❋ जो जग प्रगट भये तनुधारि।
मृत्युगरल किसको नहिं व्यापो ❋ जगमें रहत कौन नर नारि
दुख सुख रोग विपति रणपीडा ❋ यह सब बने स्वर्गके बाट।
देखु वीर जगसे सुरपुरको ❋ निशिदिन रमत पाटके पाट
विलग न मानो राजसभामें ❋ तौ मैं कहूँ उदयचँद राय।
संकट परे कौन नहिं लरजै ❋ को नहिं शरण तकै भयखाय
नाम लेत लज्जा मन व्यापै ❋ रोकत जीभ क्रोध उमगाय।
तुमहीं वीर चित्तमें शोचो ❋ इक लँग सत्य वृथा जचिजाय॥
कौन हितू है गढ महुवेमें ❋ मैं नहिं धरी शीश पै ढाल।
सबकी विपति लई मलिखेने ❋ अब कोउ वीर बजावो गाल
बंदि छुडाई भट वीरनकी ❋ कूदो विपति अग्निमें साथ।
जो कोइ डूबो दुख सागरमें ❋ मैं उठि गहे भँवरके हाथ ॥

जे नर शरण तकत मलिखेकी ❋ उनकी आश लखै मालिखान
व्यर्थहि क्षीर दियो माताने ❋ क्यों नहिं गरल करायो पान
सुत मंत्री परिवार सनेही ❋ संकट परे करत मोहिं यादि
विपत परे तिनकी मग हेरौं ❋ तौ मैं जन्म गँवायों बादि॥
लज्जित हुइ ऊदन शिर डारो ❋ आल्हा शिथिल भये सकुचाय
क्रोधवन्त मलिखेको निरखो ❋ बोले महाराज समुझाय ॥
जो तू कहत प्रगट सब दरशै ❋ भाषत सत्य परस्पर बात।
पर मैं पितारूप तोहिं बरजों ❋ सुन यह बात कान धरि तात
कठिन दाँव है शब्दभेदिको ❋ सागर अगम कटक चौहान
भीषण युद्ध करैं दिल्लीके ❋ तू मति छेंड करै मलिखान
किला बाँधि धुरपै मति बैठे ❋ कहनो मानु पुत्र हठ त्यागु।
अँगुली आप करतु बाँबीमें ❋ रे डसिलेहि कालिया नागु॥
सागर अगम कटक दिल्लीको ❋ इकलँग मगर रूप चौहान।
क्यों तू आप भँवरमें कूदत ❋ पार न पाय सकै मलिखान॥
बार बार तोकों मैं बरजों ❋ मति करु काल बलीसे माख
तू मैं क्या सिगरे सुत भ्राता ❋ होवें समरभूमिमें राख॥
वचन सुनत मलिखे तब बोल्यो ❋ जानि गइ नाथ चित्तकी बात
कारण समुझि लियो मलिखेने ❋ जो तुम हुक्म देत सकुचात
स्वामी आप चित्त यह सोचत ❋ जो यह छेंड करै मलिखान
आपु मरै तो क्या भय चिंता ❋ हमरो नाश करै सुत प्रान॥
जब दल उमहैगो दिल्लीसे ❋ पकडै शब्दबेधि धनु बान।
विपति भार मेरे शिर आवै ❋ छीजै कटक सुभट मदमान
यह संशय जियमें जनि लावो ❋ मैं नाहिं देहुँ त्रास कछु नाथ।
संकट परे तुम्हें नहिं हेरौं ❋ यह प्रण नाथ प्राणके साथ
पृथीराज क्या शिव चढि आवैं ❋ अर्जुन धनुषबाण ले हाथ

अपने गढकी समरभूमिमें ❋ मैं नहिं लडौं बधु लै साथ ॥
शीश डारि राजा मन सोचे ❋ उलझे सीख देत मलिखान
बेढब बात बढति मजलिशमें ❋ क्या कर्तव्य विश्व भगवान
हाथ पकारि हियमें लपिटायो ❋ बोले वचन प्रेममें सानि ।
दुबिधा भरम सकल सुत ताजिदे ❋ मेरी सीख सुधा सम जानि
जो मैं प्राण गिनौं ब्रह्माको ❋ तौ तोहिं शीश गिनौं मलिखान
तू सुत अधिक पुत्र ब्रह्मासे ❋ घटकी निरखि रहे भगवान
जो हठ करि ब्रह्मा गज माँगै ❋ खर नहिं देहुँ चढनके काज ।
तू सुत नेक कहै जिह्वासे ❋ तौ देदेउँ सम्पदा राज ॥
सो तू राज पाट नहिं चाहत ❋ आज्ञा माँगि रहो प्रियलाल
जो अनहित तोसों मैं करतो ❋ देतो हुक्म सुनत तत्काल ॥
राज देत तुमको नहिं अटकों ❋ फिरि क्यों हुक्म देत सकुचाउँ
राज पाट धन दल गढ कैसे ❋ तोपै प्राण सहित बलिजाउँ
फिरिकै राजा बोलन लागे ❋ सुनिले पुत्र वीर मलिखान
तू नहिं बिलग पुत्र मन तनसे ❋ तेरे सग हमारे प्रान ॥
एक बिसे तोको दुख व्यापै ❋ हमको बीस बिसे प्रिय लाल
बाल खसतु तेरो सुनि पावैं ❋ मेरे शीश विराजे काल ॥
हम इस योग कहाँ पृथिवीपर ❋ जो तू शरण गहै मलिखान
जो तेरो आपुहि मुख निरखत ❋ आगम सांचि जपत भगवान
तू मत टेरिये दुख संकटमें ❋ पर मैं कहे देत प्रियलाल ।
समर होत कानन सुनि पाऊं ❋ शिरपर ढाल बनौं तत्काल
चरण पकड तब मलिखे बोले ❋ है कहँ महाराजको ध्यान ।
जब तुम ढाल शीशपर बैठे ❋ फिरि क्या फिकर करै मलिखान
तुम सब योग पिता परमानंद ❋ जगके छत्र सुयशके भान ।
जबलग काल मनुज तन नाशै ❋ राखै अमर तुमहिं भगवान

हम कछु कही आप कछु समझे ❀ सीधी बात जँची जिय माख
बाल अबुद्धि भाषि नहिं जानौं ❀ मेरे कौन वचनकी साख ॥
तुम तौ दया करत मलिखेपै ❀ बहुविधि सीख देत लखि हानि
मैं मति मन्द एक नहिं समुझौं ❀ औगे अनल हेतु दुख मानि
यह मति नाथ चित्तमें जानियो ❀ इसको बहुत भयो मदमान
बात न सुनै वचन नाहिं मानै ❀ आज्ञा भंग करै मलिखान
काविधि मैं किसकी क्यामानौ ❀ मोको नाथ कहाँ अखत्यार
वही बात हिरदैमें व्यापंति ❀ जो कछु कर्म रची करतार ॥
तुम तो वही पिता परिमाल ❀ मैं सोइ पुत्र वही हित भाय
पर वह पवन जगतसे उडि गइ ❀ स्वामी शीख पेश नहिं जाय
जो मैं नाथ वचन नाहिं मानत ❀ मरजी गिनौ विश्व भगवान
त्रिविगति समुझि हुकम दै डारौ ❀ अपनेकाज लगौमलिखान
शीश फेरि राजा फिरि बोले ❀ तू खुद पुत्र करै विष पान।
काल कर्म औ जगदीश्वरको ❀ मिथ्या दोष देत मलिखान
तू यह भाषि कहो मजलिशमें ❀ जो दल साजि चढें चहुँआन
अकिले लडौं कुमक नहिं चाहौं ❀ चाहै दूरि होयँ तन प्रान
विश्वासे तरुवर करवाये ❀ निशिदिन क्षीर कराये पान
वस्त्र शस्त्र तनमें सजवाये ❀ सो अब करन लगे मदमान
हाथ बांधि उठिकै पद पकडे ❀ बोलो दीन वचन मलिखान
कौन बात स्वामी मन शोचत ❀ किससे कौन करे मदमान
तुम प्रतिपाल पिता मलिखेके ❀ मलिखे पुत्र तुम्हारो नाथ।
क्या पदवी जगमें नशि जावै ❀ जो तुम शरण पसारौ हाथ
पर मैं सत्य चरण गहि भाषौं ❀ कलि मरजाद जगतव्यवहार
जो कोइ आप भँवरमें कूदै ❀ ताको कौन करे निस्तार ॥
मैं खुद अग्निकुंडमें कूदौं ❀ आपुहि धरौं शीशपर गाज।

काल्हिनिरखिशरणभजिमाँगों ❋ तौ कत रमै जगतकी लाज
करि विष पान सुधाको दौडौं ❋ तौ मोहिं जगत कहै मतिवाम
समर नाधि शरणागत आवौं ❋ यहिसे भलो गमन सुरधाम
माँझधारमें मैं कूदत हौं ❋ कोउ नहिं नाव लगैयो आनि
वनमें छेंडत हौं सिंहनको ❋ कोउ माति ढाल अँडयो आनि
प्रज्वलित अग्निकरत मैं आपुइ ❋ क्यों कोइ और बुझावे आनि
जानि मानि मैं विष पीवत हौं ❋ क्यों कोइ सुधा पियावे आनि
पौरुष जाँचि लियो भुजबलको ❋ आशा देखि लई भगवान।
संकट शिला शीशपै धरि लइ ❋ तौ यह अर्ज करी मलिखान
वयसि गँवाई सिवकाईमें ❋ कबहुँ न चरण गहे हठ ठानि
आजु वचन स्वामीसे मांगों ❋ आज्ञा देहु टहलुआ जानि
सुनि परिमालविलखिपुनि बोले ❋ आज्ञा देत वीर सकुचाउ
अबहूँ मानु पुत्र हठ तजि दे ❋ रे मत लेइ सिरसमा गाउँ
श्वास साधि मलिखे बोले पुनि ❋ तुमतो कहत हते महराज।
जो तू कहे पुत्र सो पावे ❋ ताकी करो दयानिधि लाज
कही प्रथम जो तुम मजलिशमें ❋ जो तू लेहि राज धन माल
जौन बस्तु मुखसे सुत मांगे ❋ हितसे सौंपि देउँ तत्काल ॥
सत्य वचन सुरनर मुनि भाषें ❋ कहनी सहज जगतमें बात
करनि कठिन होती दुनियाँमें ❋ रहनी गिनौ कालकी घात
किसको कौन देहि धन संपति ❋ किसके कौन सँभारे काज
मुखसे कहन आपको दुर्लभ ❋ कब दै सकत सम्पदा राज
गहिरी श्वास लई राजाने ❋ विधिके हाथ लिखे सब काज
लाभु न जानि परो बर्जनमें ❋ बोले राम सुमिरि महराज ॥
जाउ पुत्र हम आज्ञा देदी ❋ लडिके लेउ सिरसमा जा
गणपति सुमिरि सिंहसम गवनो ❋ धुरपर किला बनावो जा

भय मति मनियो शब्द बेधिसे ❋ रण नाधि कोट बनावो डाटि
रे सुत इन्द्रधाम रचि डारिये ❋ चहुँलग विपिन विकटको काटि
कमर खींचि धनु बाण उठावो ❋ बेटा करो सुयशको काम
ऐसो नाथ नथो पृथिवीपर ❋ होवै बत्सराजको नाम ॥
आज्ञा श्रवण करी मलिखेने ❋ उमँगो सिंधुरूप हरषाय ।
मीन दीन जिमि शुभ जल पावै ❋ तिमि सुख लहे मनोरथ पाय
दौडि चरण राजाके पकडे ❋ बहुवाधि विनय करी शिर नाय
धर्मरूप तुम पितु परमानँद ❋ मोहिं सुख भो प्रभु आज्ञा पाय
संशय निधि मनमें लहरतुहो ❋ डूबे जात हते मम प्रान ।
आज्ञा नाव नाथकी ह्वै गइ ❋ जगमें उबरि गयो मलिखान
बाँह पकरि तब नर मलिखेकी ❋ बोले भूप शीश धरि हाथ॥
सदा पुत्र जगमें सुख भोगो ❋ निशिदिन रहे वीरता साथ
लै धनु बाण आप पकडायो ❋ बोले महाराज करि ध्यान ।
सन्मुख चन्द्र लग्न दिगद्वारी ❋ करिजा आजुगमन मलिखान।
जो धन माल शस्त्र दल चाहे ❋ निर्भय भाषु राजदरबार ।
जौन वस्तु तोको सुत चहिये ❋ तेरे संग करौं तैयार ॥
सुनि पद पकडि कही मलिखेने ❋ जबसे दया करी महराज ।
नाथ मनोरथ सब भरिपाये ❋ बनिगे सकल दासके काज
दयासिंधु मोहिं कछु नहिं चहिये ❋ यह धनुबान हतो दरकार
सो तुम सौंपि चुके मलिखेको ❋ फिरि क्या अर्ज करौं दरबार
इतनी कहि राजहिं शिर नायो ❋ दुर्गे सुमिरि गह्यो धनु बान
भेंटभांटिकै सब भ्रातनको ❋ तहँते गमन कियो मलिखान
जायके पहुँचा रग महलमें ❋ मल्हनाचरण शीशधरि माथ
कीन्ह प्रणाम भँवर मलिखेने ❋ ठाढो भयो जोरि दोउ हाथ
कही हकीकति सब मलिखेने ❋ आज्ञा दई मल्हनदे रानि ।

तहँते चलि भा वीर बांकुडा ❋ माता चरण छुए मन मानि
कही हकीकाति सब मातासे ❋ तिलकासोचिसमुझिसकुचाय
आज्ञा दीन्हीं सुत अपनेको ❋ भुजबल पूजिदिये हर्षाय ॥
चरण पूजिके जगदम्बेके ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार
कूदि बछेडीपर चढि बैठा ❋ इकला चला शूर सरदार ॥
बाल वयसके मित्र सनेही ❋ जुरि मिलि सकल एकसौ सात
अस्त्र शस्त्र ले धुरपे भेंटे ❋ बोले हाथ पकडि सुनु तात
जन्मे संग साथ नित खेले ❋ इकाढिग बैठि गँवाई राति।
हम घर रहैं आपु वन गवनैं ❋ अनुचितबातमित्रदिखलाति
प्रीति पंथमें हम लुटि बैठे ❋ जबसे लियो हाथमें हाथ ॥
भामिनिभवनसकलधनत्यागैं ❋ पर नहिं तजैं आपको साथ
संग चलहिं संगहि संग बैठें ❋ संगहि करें समर संग्राम।
संग शीश रणमें कटवावें ❋ संगहि मित्र चलैं सुरधाम॥
भुजापकडिमालिखेहँसिबोल्यो ❋ मैंने उऋण करे सब यार।
यारो लौटि जाउ महुबेको ❋ क्यों वनमाँझ फिरोगे ख्वार
कठिन पन्थ है नर मलिखेको ❋ जाकी बाट तेगकी धार।
काल सिंह पद पद पर गर्जत ❋ दुर्लभ समुझि परै निस्तार
क्योंतुमसाथविपिनकोगवनो ❋ तजितातजगोतकुटुँबपरिवार
मैंतो आप अग्निमें कूदत ❋ तुम मति होउ संगमें छार॥
जो जगदीश प्राण नहिं नाशै ❋ जगमें मिलन होय बहुबार
जो कहुँ काल आय लै गवनो ❋ तो भाइ स्वर्ग मिलैं लाचार
हाथ जोरि सबने शिर नायो ❋ बोले सजल नयन बलवान
अनुचित बात कहत जिह्वासे ❋ हमको लाजलगैमलिखान
सुखमें संग सदा मिलि बैठे ❋ दुखमें दूरिबसहिंतोहिंत्यागि
परगट प्यार गुप्तमें अनहित ❋ ऐसी लगै प्रीतिमें आगि॥

किसकीप्रीतिरीतिहितकिसको ❋ कैसी लोकलाज है नाथ।
धर्मपन्थमें हम बिचरत हैं ❋ को खल जात तुम्हारे साथ
हम चोला तुम प्राण हमारे ❋ फिरिभाइकहोबीरमलिखान
कौन यत्न है संसारीमें ❋ जो तन रहे मित्र विन प्रान
बहु विधि सीख दई समुझाये ❋ बर्जे बहुत भांति मलिखान
कोउ नहिं मित्रभवनको गवनो ❋ आगे बढे खींचि धनु बाण
जुरिमिलिसकलवीरभटगवने ❋ जैसे सिंह जात तरीय।
मदनरूप घोडन पर लहरैं ❋ मानौ सिंधु हिलोरा खात
इहिविधि गवनकियोमलिखेने ❋ अब महुबेको सुनो हवाल
सखियाँ बैठे थे बँगलामें ❋ बोले बिहँसि रजापरिमाल
सिरसा गढके सर करनेको ❋ इकलागयाभँवरमलिखान
जो कहुँ मलिखे मारो जैहै ❋ हमको हाँसि है सकल जहान
जिनका भैया ऐसा टारिगा ❋ तिनके बैठनको धिरकार।
फौज सजाय लेउ जलदीसे ❋ औ सिरसा पर होउ तयार
सुनिकैं बोला बनरसवाला ❋ तुम सुनिलेउ चँदेले राय।
जबतक जीवै ताला सैयद ❋ तुमको कौन पडी परवाय
तोप दरोगाको बुलवाया ❋ सुबरन कडा दियो डरवाय
बडि बडि तोपैं जो महुबेमें ❋ तिनको तुरत लेउ सजवाय
हाथी वारेको बुलवाया ❋ सिगरे हाथी लेउ सजाय।
घोडावारेको बुलवाया ❋ घोडा सभी लेउ सजवाय॥
तुरत नगडर्चीको बुलवाया ❋ लश्कर डंका देउ बजाय।
बजो नगाडा गढ महुबेमें ❋ लश्कर गये उदयसिंह राय
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढाय
जितनी तोपैं तुपखानेमें ❋ सो सजवाईं उदयसिंह राय
हाथी साजे कजरी बनके ❋ जो फौजनके रहत अगार

फौज बिडारन हाथी साजे ❋ औ गजभूरा करे तयार ॥
संकलद्वीपी हाथी साजे ❋ सुबरन हौदा लिये धराय ।
जितने हाथी थे महुबेमें ❋ ऊदनि सबै लिये सजवाय ॥
कच्छी मच्छी घोडा साजे ❋ ताजी तीनि पांय ठहराय ।
हरियल मुश्की पचकल्यानी ❋ घोडा सबै लिये सजवाय ॥
चौधर चाल कबूतर साजे ❋ औ दरियाई लिये सजवाय ।
लकवा गर्रा और कुमैता ❋ समुदा घोडा लिये सजाय ॥
श्यामा कुंजा तुर्की साजे ❋ अबलख घोडा लिये सजाय
सुन्दर टांगन और सपेदा ❋ औ सबरंगा लिये सजाय ॥
बलख बुखारेसे आये थे ❋ सो सजवाये उदयसिंह राय ।
जीन सुनहरी तिन धरवाये ❋ रेशम तंग दिये कसवाय ॥
भई तयारी अब फौजनकी ❋ यारो सुनलो कान लगाय ।
खुलिगये ताले आमखासके ❋ क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहले पहिरी लाल कुरतियाँ ❋ ताके ऊपर कुलह कबार ।
ताके ऊपर सोना संकर ❋ जामें नाहिं गडै तलवार ॥
ऐसा बख्तर पहिरि सिपाही ❋ जामें साँगि बिलौंचा खाय ।
टोप झिलमिला धरि माथेपर ❋ ऊपर कुंडी लइ लौटाय ॥
छप्पनछुरियां हनि हनिबाँधी ❋ औ गुजराती हने कटार ।
अगल बगल पर दुइ पिस्तौलें ❋ दहिने दुइ झूमैं तलवार ॥
लई कमनियाँ मुलतानीकी ❋ औ बूँदीकी असल कटार ।
सजिकै गहना रजपूतीका ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ।
पहले डंकाके बाजतही ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
दुसरे डंकाके बाजत खन ❋ सिगरे फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ।
कोइ नालकिन कोइ पालकिन ❋ कोई गज रथ भये सवार ॥

हाथी पचशावद सजवाया ❋ तापर आल्हा भये सवार।
ताला सैयद बनरसवाला ❋ घोडी सिंहिनिपर असवार॥
घोडा मनुरथा पर ढेबा है ❋ घोडी हिरौंजिनि पर मुलिखान
घोडा बेंदुला त्यार कराया ❋ तापर उदयसिंह बलवान॥
बोले ऊदनि सब क्षत्रिनसे ❋ यारो सुनियो कान लगाय।
पाँव पिछारूको ना धरियो ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय॥
पाँव पिछारू जो तुम धरिहौ ❋ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय।
इतनी सुनिके क्षत्री बोले ❋ तुम सुनिलेउ उदयसिंह राय
रोम रोममें सेला लागै ❋ लागै तिल तिलपर तलवार।
अंगुल अंगुल गोली लागै ❋ नाहीं डारैं पैर पिछार॥
निमक जो खाया चन्देलेको ❋ सो बोटिनमें गया समाय।
बोटी कटि कटि गिरैं खेतमें ❋ ना हम धरैं पिछारू पायँ॥
कूच नगाडाको बजवावौ ❋ सिगरी फौज चलै तत्काल।
इतनी सुनते सब क्षत्रिनसे ❋ उमँगो दस्सराजको लाल॥
कूच नगाडाको बजवाया ❋ लश्कर कूच दिया करवाय।
धौंसा बाजि रहा लश्करमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
दबति अँधिरिया दलमें जावे ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय॥
धूरि उडानी आसमानलौं ❋ सूरज रहे धुंधिमें छाय।
नौसे झंडा दलमें सोहैं ❋ लश्कर रही लालरी छाय।
राह पकरिलइ गढ सिरसाकी ❋ डंका होत गोलमें जाय॥
हाथी चलते चाल लहरुआ ❋ घोडे सुघर हिरनकी चाल।
छमछम छमछम बजै पैंजनी ❋ दमकै अष्टधातुकी नाल॥
लहर लहर लहरैं सब वल्लम ❋ झंडन रही लालरी छाय।
फौजें चली जायँ मल्हुबेकी ❋ शोभा वरनि करी ना जाय॥
यहाँकि बातैं तौ यहँ छाँडो ❋ अब मलिखेको सुनो हवाल।

घोडी कबुतरीको चढवैया ❋ बाँका बच्छराजका लाल॥
चलत चलत बाइनपुर पहुँचे ❋ जहँ धुर लगा सिरसवाँ जान
सब भट उतरिपरे घोडनते ❋ सीमा पूजि करैं जलपान ॥
तीनि पहर धुरपर सब लोटे ❋ फिरि उठि सुभट भये असवार
पवनवेग घोडा हंकारे ❋ ह्वैगये विल्ह नदीके पार ॥
तीनि कोश जब सिरसा रहिगा ❋ तहँपर उतरि परे मलिखान
डेरा डारि दिये तहँना पर ❋ संगै उतरि परे बलवान ॥
रात्रि बिताय प्रात उठि बैठे ❋ विधिवत जाय करी अस्नान
अस्त्र धोय मंत्रन करि शोधे ❋ शुचि ह्वै करो इष्टको ध्यान
माता चरण हृदयमें धारे ❋ सुमिरे बच्छराज महराज।
हे मम पिता स्वर्गवासी तुम ❋ रखियो बिंदु अंशकी लाज॥
सुमिरन करिमल्हनहि शिर नायो ❋ सुमिरे प्रेमसहितपरिमाल
फिरि हँसि हेरि कही गणपतिसों ❋ रखियो लाज गौरिके लाल
सब पुरवासी गढ महुबेके ❋ सेवें भ्रात सहित परिवार।
सब अस्मरण करे मलिखेने ❋ उनको शीश नाय बहुबार॥
लैके कागद कलपीवाला ❋ अपनी कलम दवात सम्हाल
पहले लिखिके सरनामाको ❋ फिरि पारथको लिख्यो हवाल
इच्छा तुम्हरी जो लडनेकी ❋ अपना खेत बुहारो आय।
नाहीं मनसा जो लडिबेकी ❋ सिरसा खाली देउ कराय॥
किला हमारा हमको देदो ❋ नातर आय युद्ध मैदान।
बल पौरुष अपनो दिखरावो ❋ तुमपर आय गये मलिखान
या विधि अंक लिखे चिठियामें ❋ ऊपर दीन्हीं मोहर लगाय
बन्द लिफाफामें तुरतै करि ❋ औ धामनको दई गहाय॥
धामन चलिभा गढ सिरसाको ❋ औ गढियामें पहुँचा जाय।
बडे बजारनमें आया जब ❋ नगरी देखि देखि रहि जाय

हीरनकी तहँ ढेरी लगरहिं ❋ औ मुहरनके बकस भराय।
धामन मनमें मगन होगया ❋ फूले अंग नाहिं समियाय॥
जा दिन टूटेगा गढ सिरसा ❋ इन ढेरिनको लेउँ उठाय।
देखत देखत धामन पहुँचा ❋ औ बँगलामें उरको जाय॥
लगी कचहरी जहँ पारथकी ❋ बैठे बडे बडे बलवान।
बारह द्वारीके बँगला हैं ❋ तेरह द्वारीके दलान॥
खंभ अठासीकी बैठक है ❋ चौविस खंभ बनी चौपाल।
पांच हाथ ऊंचा सिंहासन ❋ तापर तपै पिथौरा लाल॥
कीमख्वाबके फर्श बिछे हैं ❋ तिनपर अतरनके छिरकाव।
सीसी चटक रहीं बँगलेमें ❋ औ खुशबोइन उडै गुलाब॥
देश देशके क्षत्री बैठे ❋ बनता वरण करी ना जाय।
खिंचे सपिंडारे बँगलामें ❋ मुरली अधर मरोडा खाय॥
जोडी बाजै अलगोजनकी ❋ औ मुरचंग बजैं दो चार।
नचैं कंचनी वा बँगलामें ❋ लाडिका नचैं भगतुअन क्यार
तहँ हरकारा दाखिल ह्वैगा ❋ लेके नारायणको नाम।
पांच कदमते मुजरा कीन्हा ❋ धोरे जाकर करी सलाम॥
चिठिया डारि दई गद्दी पर ❋ धामन रहिगा माथ नवाय।
नजरि बदलि गइ तब पारथकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय॥
पाती बांचत परले ह्वैगइ ❋ गुस्सा गई देहमें छाय।
लौटि जवाब लिखा चिठियाका ❋ मलिखे सावधान हो जायँ
कठिन मवासी गढ सिरसाकी ❋ सीधे किला मिलैगो नायँ
जंग जीतिकै सिरसा लेलो ❋ जाको देय शारदा माय॥
चिठिया देदी चोपदारको ❋ सो ले चला शुतर असवार
तौलौं लश्कर गढ महुबेको ❋ पहुँचो आय विल्हके पार॥
उठी निगाह भँवर मलिखेकी ❋ औ लश्कर घहँ रहा निहार

झंडा देखे गढ महुबेके ❋ मनमें खुशी भया सरदार ॥
जहँ था तंबू नर मलिखेको ❋ लश्कर तहाँ पहूँचो जाय ॥
तनिगे तंबू धुरखेतनमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
बड बड तम्बू गढ महुबेमें ❋ जिनकी छुटि रहि जर्द कनात
झडा गडि गये हैं खेतनमें ❋ जिनकी लाल ध्वजा फहरात
हाथी बँधिगये हथिखानेमें ❋ घोडा लगे थानसे जाय ।
कमरैं खुलिगईं सब ज्वाननकी ❋ सबने डेरा दिये लगाय ॥
लगी कचहरी तुनि आल्हाकी ❋ अजगर लागि रहा दरबार ।
आल्हा मलिखे ऊदनि ढेबा ❋ बैठे बडे बडे सरदार ॥
तौलौं धामन दाखिल ह्वैगा ❋ औ दरबार पहूँचा जाय ।
सात कदमसे करी वन्दगी ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती आल्हा बाँची ❋ आँकुइआँकुनजारिकरिजाय ।
बाँचि सुनाई नर मलिखेको ❋ मलिखे अग्निज्वाल ह्वै जायँ
तोप दरोगाको बुलवाया ❋ औ यह हुक्म दीन्ह फरमाय ।
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ मो चरखिन पर देउ चढाय
सबै दरोगोंको बुलवाया ❋ जलदी फौज करो तैयार ।
बजो नगाडा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिन पर दई चढाय ।
लगे मोरचा धुरखेतनमें ❋ कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
यहाँ कि बातैं तौ यहँ छाँडौ ❋ आगे हाल सुनौ मनलाय ।
राम बनावे सो बनिजावे ❋ बिगडीबनतबनतबानिजाय
बोला पारथ रजपूतनसे ❋ मैं क्षत्रिनकी लेउँ बलाय ।
जितनी तोपैं हैं गढियामें ❋ सब चरखिन पर देउ चढाय

जितने हाथी हथखानेमें ❀ मुंडा हौदा देउ धराय ।
जितने घोडा घुडशालनमें ❀ काठी एक संग पडजायँ ॥
पैदल पलटन जितनी कहिये ❀ सो सब सजिके होय तयार ।
अब चढि आये महुबेवारे ❀ दिन औ रात चलै तलवार ॥
नमक जो खाया चौहाननका ❀ सो हाडनमें गया समाय ।
पावँ पिछारू जो कोइ धरिहै ❀ ताको तुरत दिहौं उडवाय
सुनते सबके होश बन्द भे ❀ क्षत्री कानमें बतरायँ ।
कहाँके जन्मे कहँ पैदा भे ❀ कहँ खंवीर झुलम्मे आय ॥
कहाँकि भीर कहाँ पर आई ❀ बँगला सूनसान ह्वैजाय ।
जो जो नाम सुनै मलिखेका ❀ तिनकी बँधी फेंट खुलि जाय
जो कोइ नाम सुनै ऊदनिका ❀ करसे छूटि परै तलवार ।
डौंडी पिटगइ गली गलीमें ❀ कूँचे और बजार बजार ॥
बहुतक कायर सटकन लागे ❀ लुटिया लै झाडेको जायँ ।
लानति ऐसी नोकरिया पर ❀ अपनी बेंचि लकरिया खायँ
यह गति होरहि सब क्षत्रिनकी ❀ कायरसहमिसहमिरहिजायँ
दहशत गालिब है पारथकी ❀ डरते कान हिलावत नायँ॥
डंका बाजो सब लश्करम ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाक बाजत खन ❀ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❀ बाँके घोडनपर असवार ।
जितनीं तोपें थीं गढियामें ❀ सो चरखिन पर दई चढाय ।
सो बढवाय दई आगेको ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
जितनी फौज हती पारथकी ❀ दो घंटेमें भई तयार ।
हाथी साजिगया पारथका ❀ होदा बीच भया असवार॥
जा दिशि मारैं थीं तीरनकी ❀ ता दिशि ढालैं लईं अडाय ।

जा दिशि मारैं बन्दूकनकी ❋ लोहे तवा लिये जड़वाय ॥
कूचको डंका बाजन लागो ❋ लश्कर कूच दीन्ह करवाय
चारि घडीकेरे अरसामें ❋ अपना खेत बुहारा आय ॥
लगे मोरचा अब तोपनके ❋ कछु तारीफ करी ना जाय।
हुक्म देदिया तब पारथने ❋ तोपन आगी देउ लगाय ॥
इतनी सुनिकै उठे खलासी ❋ औ तोपन पर पहुंचे जाय।
बत्ती देदइ इन तोपनमें ❋ धुँअना रहो सरग मँडराय॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ रणमें होन लाग घमसान।
अरररररररर गोला छूटैं ❋ कड़कड़ करैं अगिनियाँ बान
सननन सननन गोली छूटैं ❋ सररर परी तीरकी मारु ॥
दोनों फौजनके संगममें ❋ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ॥
गोला लागे जेहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय
गोला लागे जौन ऊँटके ❋ दलमें गिरै चकत्ता खाय ॥
गोला लागे जिन घोडनके ❋ चारों सुम्म गर्द ह्वै जायँ।
गोला लागे जिन क्षत्रिनके ❋ तिनकी त्वचा सर्ग मँडराय
बंबको गोला जिनके लागे ❋ तिनके हाड मांस छुटि जायँ
गोला जँजिरहा जिनके लागे ❋ सो लत्तासे जायँ उडाय ॥
छोटी गोली जिनके लागे ❋ मानों गिरह कबूतर खायँ।
बानको डंडा जिनके लागे ❋ तिनके दुइ खंडा हुइजायँ ॥
तोपैं धैंधें लाली हुइगई ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ।
चढी कमनियाँ पानी हुइगई ❋ चुटाकिनके गे मांस उडाय ॥
तोप रहकला पीछे छाँडे ❋ लंबे बन्द करैं हथियार।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगे पाँच पैग असवार ॥
साँगें चलन लगीं दोनों दल ❋ ऊपर बर्छिनकी दइ मार
छुटैं पिचका जे लोहुनके ❋ जहँ बहि चली रक्तकी धार॥

बूड़ि जुलफियाँ गईं क्षत्रिनकी ❋ चर्बी अंग गई लपटाय ।
मानहुँ टेसू वनमें फूले ❋ ऐसी रही लालरी छाय ॥
हौदा भरि गये जे लोहूसे ❋ औ चुचुआत फिरैं असवार
चारि घरी भरि बजो साँगडा ❋ भारी भई साँगकी मार ॥
भाला टूटिके दोना है गये ❋ सबियाँ हारि मानिगये ज्वान
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो डेढ कदम मैदान ॥
खैंचि शिरोही रजपूतन लइ ❋ नंगी चलन लगी तलवार ।
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै विलायत क्यार॥
खट खट खट खट तेगा बाजे ❋ बोलै छपक छपक तलवार ।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ औ बूँदीकी असल कटार ॥
पैदलके सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनसे असवार ।
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❋ ऊपर पेश कब्जकी मार ॥
पैग पैगपर पैदल गिरि गये ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ।
बिसे बिसे पर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
कल्ला कटिगये जिन घोडनके ❋ धरती गिरैं भरहरा खाय ।
कटैं भुशुंडा जिन हाथिनके ❋ धरणी गिरैं करौंटा खाय ॥
काटि भुजदंडैं रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार
पडे दुशाला हैं लोहुनमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार ॥
पगिया डारीं जे लोहुनमें ❋ मानों ताल फूल उतराँय ।
ढालैं डारी हैं लोहूमें ❋ यारो कछुआसी उतराँय ।
पडी बँदूकैं हैं लोहूमें ❋ मानौ नाग रहे मन्नाय ॥
घेहा डारे रणमें लोटैं ❋ दलमें मारुइ मारु सुहाय ।
मुर्चन मुर्चन नचै कबुतरी ❋ मलिखे कहैं पुकारि पुकारि।
नोकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भैया लगौ हमार ॥
पाँव पिछारीको नाहिं धरियो ❋ नाहिं सब जैहैं काम नशाय।

सिरसा गढ जो हमको मिलिहै ❀ सबकी तलब दिहैं बढवाय॥
दियो बढावा सब क्षत्रिनको ❀ मलिखे आगे दिये बढाय।
झुके सिपाही महुबेवारे ❀ अपनो मया मोह बिसराय॥
दोनों हाथन करें शिरोही ❀ अरु आगेको पाँव बढाय।
बढि बढि हाथ करैं महुबेके ❀ मारु मारु रट रहे लगाय॥
जैसे भिडहा भेंडिन पैठे ❀ जैसे सिंह बिडारे गाय।
सुआ सुपारी जैसे कतरै ❀ त्योंदल काटिके दियाबिछाय
फौजके क्षत्री भागन लागे ❀ पारथ गया सनाका खाय।
बडे लडैया महुबेवारे ❀ जिनसे कछू पेश ना जाय॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❀ जे रण दुलहा चले बराय।
भेष बदलिके क्षत्री भागें ❀ औ दैया गति कही न जाय॥
आधे ज्वान कटे पारथके ❀ तिनसे आध महोबे क्यार।
तलुआ उखडे चौहाननके ❀ रणमें मानि गये सब हार॥
जा दिन गरजा नर मलिखेहै ❀ अपना किया रिसाला त्यार
छुटे कबूतर ज्यों दडबेसे ❀ औ वनमेंसे छुटे पुछार॥
ऐसे छूटे महुबे वारे ❀ घोडा हिरन डाक भरमार।
तोप मोरचा छीनि लिया है ❀ सबिया छीनि लिये औजार
फौजें भागि गईं सिरसाको ❀ तबहीं सूर्य अस्त हो जायँ।
इकला पारथ रथ खेतनमा ❀ अब कोइ धीर धरैया नाय॥
खाय शिकस्तगया पारथ तब ❀ जीते जंग बनाफर राय।
पारथ भागि गया सिरसाको ❀ मनमें बहुत गया घबराय॥
इत सब क्षत्री महुबेवारे ❀ अपने डेरनको चलि जायँ।
कमरें खोलि दईं ज्वाननने ❀ अपनी करी रसोई जाय॥
भोर होतही पारथ ठाकुर ❀ मनमें सोचि समुझि सकुचाय
चिट्ठी भेजी गढ दिल्लीको ❀ दादा सुनो पिथौराराय॥

आये महुबिया महुबेवारे ❀ सब दल कटा दियो करवाय।
मारि भगाया सब लश्करको ❀ अबकोई नहिं चलत उपाय॥
कुमक आपनी दादा भेजो ❀ नातर सिरसा लिहैं छिनाय।
इहि विधि चिट्ठीलिखिपारथने ❀ सो दिल्लीको दई पठाय॥
चिठिया पहुँची पृथ्वीराजपै ❀ पाती बाँचि गये खिसियाय
चौंडा धाँधूको ललकारा ❀ चन्दन बेटा लिया बुलाय।
हुक्म सुनाय दिया तीनोंको ❀ जलदी लश्कर लेउ सजाय
भई लडाई गढ सिरसा पर ❀ पारथ हारि गया रणमायँ॥
करो चढाई अब जल्दीसे ❀ महुबो गर्द देउ करवाय।
इतनी सुनतै चौंडा धाँधू ❀ चन्दन उठे भरहरा खाय॥
तुरत नगडचीको बुलवायो ❀ सोने कडा दियो डरवाय।
डंका देदेउ मेरे लश्करमें ❀ जल्दी फौज लेउ सजवाय॥
बजो नगाडा गढ दिल्लीमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार।
पहले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बाँधि लिये हथियार॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री फाँदि भये असवार।
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❀ बाँके घोडनके असवार॥
साठि शूर औ सोलह साँवत ❀ आठों धवल भये तैयार।
हाथी इकदन्ता सजवाया ❀ तापर चौंडा भया सवार॥
भौंरानंद गजपर धाँधू है ❀ चन्दन सब्जापर असवार॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❀ बाँके घोडन पर असवार।
सात लाख लश्कर दिल्लीको ❀ तुरतै कूच दिया करवाय॥
धूरि उडानी आसमानलों ❀ सूरज रहे धुंधिम छाय।
नौसे जोडी बजैं नगाडा ❀ नौसै धौंसा बजत अगार॥
नौसे झंडा चले अगाडू ❀ जिनको चलत न लागै बार।
बावन झंडा हैं निशानके ❀ डंका होत गोलमें जाय॥

तुर तुर तुर तुर तुरही बाजै ❋ डफला अलग रहा बन्नाय॥
फिरि मन सोचे पृथ्वीराज नृप ❋ इक हरकारा लिया बुलाय।
पाती लिखदइ धीरसिंहको ❋ जो रणशूरवीर नरराय ॥
पहले लिखिके सरनामाको ❋ लिखिदो समाचार समुझाय
भई लडाई गढ सिरसामें ❋ जीते जग बनाफर राय ॥
पारथ हारि मानि सिरसासें ❋ पाती हमाहिं दई पहुँचाय।
कुम्मक भेजी हम दिल्लीसे ❋ लश्कर सात लाख चढवाय॥
तुमहूँ भाई हमरे लागत ❋ अपनी फौज लेउ सजवाय।
जलदी पहुँचि जाउ सिरसापर ❋ महुबो लूटिलेउ करवाय ॥
इहि विधि पाती राजा लिखिके ❋ सो धामनको दइ पकराय।
धीरसिंह सरदार कहावे ❋ ताको पाती दीजो जाय ॥
ऐसा वीर नहीं पृथिवीपर ❋ तासे आय करे तकरार।
पाती लेके धामन पहुँचा ❋ औ धीरजके धरी अगार ॥
पाती बाँची धीरसिंहने ❋ अपनो लश्कर लियो सजाय
जाय पहूँचा गढ सिरसामें ❋ जहँपर फौज पिथौराराय ॥
दोनों फौजें सिरसा पहुँचीं ❋ पारथ बहुत खुशी ह्वै जाय।
सुनी खबरिया यह आल्हाने ❋ धीरजसिंह पहूँचा आय ॥
बडो शूरमा धीर कहावे ❋ तासों कछू पेश ना जाय।
फिरि कछु सोचे आल्हा ठाकुर ❋ ताको बल लेहौं अजमाय॥
घोडा पपीहा त्यार कराया ❋ तापर फाँदि भये असवार।
घोडा डारि दिया दुलकी पर ❋ जो रोकेसे नाहिं सम्हार ॥
उतसे धीरज सौंवत आवे ❋ अपने हाथी पर असवार।
धीरज पूँछैं पीलवानसे ❋ आगे आवत कौन सवार ॥
तौलौं आल्हा समुहे पहुँचे ❋ तब धीरजने कही सुनाय।
घोडा बचाय लेउ समुहेसे ❋ जल्दी घोडा लेउ हटाय ॥

बोले आल्हा तब धीरजसे ❋ ठाकुर सुनौ बात मन लाय।
कद्दर घोडा यह हमरो है ❋ ताते हाथी लेउ हटाय ॥
इतनी सुनते धीरसिंहके ❋ गुस्सा गई देहमें छाय।
साँगि उठाई मन पक्केकी ❋ सो आल्हापर दई चलाय॥
चोट बचाई तब आल्हाने ❋ नीचे साँगि गिरी अरराय ।
दुसरी साँगि लई धीरजने ❋ सो आल्हापर दई चलाय॥
साँगि पकारिलइ तब आल्हाने। सो धीरज ना सके छुडाय ।
हौदा गिरन लगो हाथीको ❋ धीरज छाँडिदई खिसियाय॥
उतरे धीरज तब हाथीसे ❋ औ आल्हासे कही सुनाय।
कौन शूरमा तुम राजा हौ ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
नगर महोबा यक बस्तीहै ❋ जामें बसैं रजा परिमाल।
तिनके घरमें हम उपजे हैं ❋ राजा दस्सराजके लाल॥
नाम हमारो सुनि आल्हा है ❋ सुनिये धीरसिंह सरदार।
तुम्हरे मिलबेको आये थे ❋ सो तुम मिले मोहिं मगझार॥
बहुत खुशी हमरो मन ह्वइगो ❋ जो तुम मिले आज महराज।
इतनी बात सुनी धीरजने ❋ बहुतै खुशी भयो शिरताज॥
धनिधनि आल्हातुमकोकहिये। धनिधनि दस्सराज भूपाल।
ऐसे शूरवीर महुबेमें ❋ क्यों नहिं राज करैं परिमाल॥
करी मित्रता तब धीरजने ❋ तुम सबलायक मित्र हमार।
बोले आल्हा तब धीरजसे ❋ तुम सुनिलेउ शूर सरदार॥
करी अदावत पृथ्वीराजने ❋ हमरो सिरसा लियो दबाय।
उनसे सिरसा हम माँगा था ❋ सो उन दीन्हीं फौज चढाय
तुम समुझाय देउ पारथको ❋ हमरो सिरसा देइँ गहाय।
दसदस रुपयाके नौकर हैं ❋ काहे कटा दिहैं करवाय॥
इतनी सुनिके धीरज बोले ❋ तुम सुनिलेउ बनाफरराय।

मनके बढ़िया दिल्लीवाले ❋ सो हटकेमे मानि हैं नायँ ॥
हमहिं पठाओ थो कुम्भकको ❋ हम नहिं चाहत हारि तुम्हार
करी मित्रता है हम तुमसे ❋ अब तुम होगये मित्र हमार
जंग जीतिकै सिरसा लेलो ❋ अपनो कब्जा लेउ कराय।
इतनी कहिकै धीरज चलिभे ❋ अपने लश्कर पहुँचे जाय
तुरत बुलाय लियो पारथको ❋ सब विधिताहिकहीसमुझाय
कही न मानी तेहि धीरजकी ❋ औ लश्करमें पहुँचो आय
बजो नगाडा गढ सिरसामें ❋ क्षत्री सबै भये तैयार।
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडन पर असवार॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दईं चढाय
इक हाथीपर पारथ चढिगा ❋ इकपर चढा चौंडियाराय
इक हाथीपर धाँधू चढिगा ❋ इकपर है चन्दन सरदार।
इक हाथीपर धीरज सावँत ❋ अपने कसि लीन्हें हथियार
जाय पहूँचे रणखेतनमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय
मारू बाजा बाजन लागे ❋ आल्है खबरि पहूँची आय
फौज सजाई तब ऊदनिने ❋ क्षत्री सबै भये तैयार।
पाँचौ वस्तर पाँचौ शस्तर ❋ पंजा गही ढाल तलवार॥
फौज कटीली महुबे वारी ❋ रणखेतनमें उतरी आय।
रणके बाजे बाजन लागे ❋ अपने मुर्चा दियो लगाय।
पारथ बोला सब योधनसे ❋ सुनियो वीर बनाफरराय॥
एक एकसे होय लडाई ❋ अन्धाधुन्ध होयगी नायँ।
धर्म युद्ध खेतनमें करलो ❋ जाको देइ विष्णु करतार॥
जो कोउजीतिजायसिरसाको ❋ सो गद्दीका हो सरदार।
यह मन भाय गई आल्हाके ❋ तब पारथसे कही सुनाय॥
यही बात हमको भाई है ❋ अभिरो एक एकसे आय।

पारथ मलिखेकी बरनी भइ ❋ चन्दन उदयसिंह जुटि जायँ
धीरजकी बरनी ताल्हनसे ❋ आल्हा और चौंडिया राय
धांधू ढेबाकी बरनी है ❋ ऐसे जुटे समर मैदान ॥
अपने अपने शस्त्र चलावैं ❋ ताकैं दाँव घात बलवान ।
बाल खिलारी महुबे वारे ❋ औ छलबालिया पट्टेबाज ॥
अष्टधातुकी काया जिनकी ❋ नाहिं हथियार गडैं महराज
ताल्हा सैयदके चेले हैं ❋ सो काहूका शस्त्र न खायँ ॥
एक पहरतक भई लडाई ❋ शोभा बरनि करी ना जाय।
पहली लडाई भइ साँगिनकी ❋ दूजी भाला लट्टूदार ॥
तिसरी लडाई भइ नेगाकी ❋ चौथी मारु भई तलवार ।
पँचई लडाई पेशकब्जकी ❋ छठी लडाई चली कटार॥
ताके पाछे कुश्ती होगइ ❋ ज्यादा काह करूं तकरार ।
पारथ हारिगया मलिखेसे ❋ जीता जंग भँवर मलिखान
चन्दन हारा बघ उदानिसे ❋ जीता उदयसिंह बलवान॥
धीरज हारि गया ताल्हनसे ❋ ऐसा पडा हारका दाँव ।
चौंडा हारा तुनि आल्हासे ❋ धाँधू ढेबासे तेहि ठाँव ॥
मलिखे गरजा धुरखेतनमें ❋ जैसे सिंह विपिनके मायँ ।
रिसलदारको वेगि बुलाया ❋ अब क्यों राखी देर लगाय॥
जितने घोडा हैं लश्करमें ❋ एकै संग छुटैं असवार ।
पैदल पलटनकी बरणी है ❋ औ तोपनको करौ अगार॥
आगे आगे चलैं रिसाले ❋ जिनसे पैदल पलटन जाय
ताके पाछे तुपखाना हैं ❋ जिनके पहिया सरकत जायँ
घोडा चलें जात चालोंसे ❋ तेगा चमकि चमकि रहि जायँ
भाला घुमावैं नागदोनिके ❋ जिनमें उडत चिडी बिंधजाय
साँगैं चमकि रहीं दलभीतर ❋ नंगी चमकि रहीं तलवार ।

झुके सिपाही महुबे वारे ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवार
इक मोहरेपर शोभा सुनरा ❋ इक पर चिन्तामणी लुहार।
इक मोहरे पर कल्लूमुंशी ❋ इकपर नवल शूर सरदार॥
इक मोहरे पर ताला सैयद ❋ जो है बनरसका सरदार।
इक पर डटिगा ढेबा बहादुर ❋ इकपर मंडलीक अवतार॥
इक मोहरे पर बच्छराजका ❋ मारामार करै मलिखान।
इक मोहरेपर दस्सराजका ❋ कलहा उदयासिंह बलवान॥
सारी पलटन और रिसाले ❋ एकै बार झुकाये जाय।
पड पड पड पड होती आवै ❋ ज्वानन मार मार सोहाय॥
तड तड तड तड तासे बाजैं ❋ जंगी ढोलरहे झहनाय।
शंख तुरी रणसिंहा बाजैं ❋ भैरों मदन जहां वहराय॥
रिमझिम रिमझिम गोली बरसैं ❋ सननन नीरकैर वममान।
बान अगिनियाँ छूटन लागे ❋ दलको भूनत भार ममान॥
तीर कमनियाँ जो मुलतानी ❋ कारी नागिनसी मन्नायँ।
जैसे साँप बिलोंमें जावैं ❋ त्यों ज्वाननके अंग समायँ॥
चले शिरोही मानासाही ❋ ओ बूँदीकी असल कटार।
चले जुनब्बी ओ अहिगर्वी ❋ ऊना चले विलायत क्यार॥
चलै सकेला पानीपतका ❋ खपरी झारि झारि परत अगार।
खट खट खट खट तेगा बाजे ❋ बोले छपक छपक तलवार
कल्हा कटि गये हैं घोडनके ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार
काटि काटि शीश गिरैं धरतीपर ❋ उठि उठि रुंड करैं तलवार
उतते बढिगे दिल्लीवारे ❋ इतसे बढे बनाफरराय।
दोनों सेना इक मिल हुइ गईं ❋ ना तिलपरो धरनिमें जाय
ज्यों सावनमें छुटै फुहारा ❋ भादों बरसै मेघमलार।
मलिखे ऊदनिके मोहरापर ❋ विरला शूर गहै तलवार॥
हाथी पचशावद आल्हाका ❋ जो दल काल रूप बलवान

साँकर फेरै दलके भीतर ❋ क्षत्रिन काटि करै खरिहान॥
धावा पडगये बन्नाफरके ❋ अब कोइ बीर न परै अगार
केहिकी जननी नाहर जन्मा ❋ जो समुहे पकरै हथियार ॥
सर सर सर सर छुटैं लच्छेग ❋ ज्यों बनमेंसे छुटैं बिजार ।
ऐसे छूटैं महुबे वारे ❋ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
देखत हल्ला चौंडा पडगया ❋ सारे भाजि गये चौहान ।
छूटी फौजैं महुबे वारी ❋ फाटक घेरि लिया मलिखान
आल्हाने तौ हाथी हूला ❋ जोहिका रूप हुआ बिकराल
फेंके संकल जब खेतनमें ❋ क्षत्री भागे जायँ तत्काल॥
फाटक तोडा गढ सिरसाका ❋ धसिगा किला माहिं मलिखान
ऐसे कूदे महुबे वारे ❋ जैसे लंकमाहि हनुमान ॥
लूटि मचाय दई सिरसामें ❋ लूटन लागे हाट बजार ।
बनियाँ रोवें मारि दुहत्ती ❋ मूडी धुनैं सभी सहुकार ॥
जबहीं नाम सुने मलिखेका ❋ रोवत बाल बन्द हुइ जाय।
हाथ जोरिके बनियाँ बोले ❋ हा रणजीत बनाफरराय ॥
पहले रैयति थी पारथकी ❋ अब तुम हमरे हो सरदार ।
काहे लूटत अपनी रैयति ❋ हम सब तावेदार तुम्हार ॥
इतनी सुनिलइ नरमलिखेने ❋ दीन्हीं लूटि बन्द करवाय ।
सब सिरसा काबूमें करिके ❋ अपनो कब्जा लियो बिठाय
पारथ भागि गया दिल्लीको ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ।
हाथ जोरिके पारथ बोला ❋ दादा सुनो शूरसरदार ॥
जल्द सजाय लेउ लश्करको ❋ औ सिरसापर होउ तयार ।
हमरी सिरसा हमहिं दिलावो ❋ तुम सब लायक बाप हमार
इतनी सुनिके पिरथी बोले ❋ बेटा सुनो बात मनलाय ।
छोटी गढिया वह सिरसा है ❋ कछु दिन धीर धरो मनमायँ
मनके बढिया महुबे वारे ❋ केहु खातिरमें लावत नाहिं ।

दाँव लगैगा केहु समया पर ❋ लेबे जंग जीति रणमाहिं ॥
पारथ बैठि रहा दिल्लीमें ❋ अब सिरसाको सुनो हवाल।
जाय कचहरी दाखिल ह्वैगो ❋ राजा वच्छराजको लाल ॥
करी सजावट गढ सिरसाकी ❋ सुबरण कलश दिये टँगवाय।
बिछे गलीचा हैं मखमलके ❋ ऊपर टँगी चाँदनी जाय ॥
करी कचहरी मलिखे ठाकुर ❋ भेंटैं देन लगे धनवान ।
अपनी कृपा करी नारायण ❋ सिरसा बसे बीर मलिखान॥
बोले तालहन तब मलिखेसे ❋ बेटा सुनो बात मन लाय ।
अब तुम राज करो सिरसामें ❋ पालो प्रजा पुत्र समताय ॥
जितना लश्कर तुमको चहिये ❋ सो तुम लेउ भँवर मलिखान
फिर हम जावैं गढ महुबेको ❋ बोला तुरत बीर बलवान ॥
बारह पलटन बीस रिसाले ❋ दल तुपखाने देउ छुडाय ।
कल्लू मुंशी शोभा सुनरा ❋ चिंतामणि लुहार रणराय ॥
जो जो मांगा नर मलिखेने ❋ सो सो दिया तलंसीराय ॥
त्यारी करि दइ गढ महुबेकी ❋ जयका डंका दियो बजाय ॥
आल्हा ऊदनि ढेवा बहादुर ❋ महुबे पहुँचि गये तत्काल ।
सुनी खबरि जब यह राजाने ❋ बहुतै खुशी भये परिमाल ॥
बजी बधाइ गढ महुबेमें ❋ औ विप्रनको दीन्हें दान
इहिविधि जीतिलियो सिरसागढ ❋ नामी भये बीर मलिखान
किला सिरसवाँ नर मलिखेने ❋ नये सिरेसे दिया बसाय ॥
करी सजावट सब नगरीकी ❋ चौपडहाट दीन्ह सजवाय ।
फिर इक नया किला बनवाया ❋ सुन्दर रत्न जटित सबधाम
नाना भवन विविध रँग रचना ❋ मानहु इन्द्रकेर सब ठाम॥
चौंसठि बुर्ज चारि नवखंडी ❋ जिनपे बैठि स्वर्ग दिखलाय
चारिहु ओर हाट अति सोहैं ❋ लखिमनमोहि मोहि रहिजाय
कंचन कलश धरे कँगुरनपर ❋ रविकी किरण प्रकाशीआनि।

दुइ दुइ लाल जडे तिन ऊपर ❋ रविशशि झिपन लगे द्युतिमान
को यश बरणिसकै धरणीमें ❋ मानहु इन्द्रलोक दिखलाय।
पवन रूप मन्मथ जहँ लहरै ❋ चूमें कलश अप्सरा आय ॥
न्यारे राजभवन शतखंडा ❋ न्यारी न्याय निवारणशाल॥
सबपै कलश धरे सुवरणके ❋ लोरैं माथ माथमें लाल ॥
अथल अगम खाईके निरखत ❋ डूबो जात लज्जि पाताल ।
खाई क्या गढकी रखवारी ❋ लहरैं बदन पसारे व्याल ॥
जो कोइ जन तटपै लखि निरखै। मूझन लगै स्वर्ग पाताल ।
चकित धरणि आकाश निहारे ❋ रस गति समुझि परै भवजाल
तीनि द्वार गढके रखवाये ❋ तिनपै वज्र लगे हैं डाटि ।
रक्षा हेत द्वार वीरनने। धरिदिये द्वारशिखर गिरिकाटि॥
उत्तर द्वारा गढ कनवजको ❋ पूरब सिम्त महोबे नाम ।
सिंह पौरि पश्चिमको द्वारा ❋ जाके परे राज सुखधाम ॥
पुर रखवारे जहँ तहँ डोलैं ❋ लीन्हे अस्त्र शस्त्र बहु भांति।
इहि विधिगढ नवीनकी शोभा ❋ वर्णन करत चित्त सकुचाति
जगमें सदा रीति चलि आई ❋ अब लग वर्ति रहे व्योहार ।
जाकी बात बनत लखिपावै ❋ ताकी ओर होय संसार ॥
बडबड सुभटवीर नरकेहरि ❋ जिनकी हती समरमें धाक ।
तिन भजि शरण गही मलिखेकी।प्रण तजि डारि सुयशपैखाक
देश देशके वीर बहादुर ❋ विन रणत्यागित्यागिनिजवास
आपुहि आनिबसे सिरसामें ❋ मनसे बने वीरके दास ॥
एक एकसे अधिक कन्हैया ❋ भरती भये फौजमें आय ।
जो रण सुनत शस्त्र गहि विहँसे।जिमि हँसिपरै रंक धनपाय॥
युवा वयसके नर अभिमानी ❋ मनमें भरे फिरैं उरमान ।
निशिदिन बाटलखैं दिल्लीकी ❋ कबलग जगे धनी चौहान॥
इहि विधि बहुत वीरभट आये ❋ सबको धीर दई चुपकारि।

आपुहि आनिभरे लश्करमें ❀ उमँगन लगे खींचि तलवारि
सिंह आनि सिंहनमों मिलि गये ❀ ताकन लगे वधिकके प्रान
हंस हंस मिलि नभ उडि बैठे ❀ अब नहिं चलैं भीलके बान
पारब्रह्म हरिकी गति निरखौ ❀ क्या संयोग करे इकसार।
कीच कीचमें लय हुइ बैठे ❀ जलसे जाय मिलै जलधार
गति नहिं जानिपरै भगवतकी ❀ पलमें पलटि देहि संसार।
क्षणमहँ विश्व क्षार करि डारै ❀ माया प्रबल विश्व आधार॥
मलिखे बैठे अमन चैनसे ❀ इक दिन दूत करो तैयार।
विनय पत्र महुबेको भेजो ❀ इहि विधि लिखो प्रेम व्योंहार
हे प्रतिपाल पिता चन्देले ❀ तुमको विनय करों शिरनाय।
युग युग जिओ अटलपद भोगो ❀ जबलगिसिंधुअगमलहराय
जो मैं चरण परसि महुबेमें ❀ तुमसे विदा भयो महराज।
केवल नाथ प्रताप आपके ❀ बनिगये सकल दासकेकाज
रण तो नथे विघ्न बहु उपजे ❀ पर जय कुशल करी भगवान
गढ गंभीर विपिनमें बनिगो ❀ सिरसा माहिं मिलाओं आन
अब यह विनय करों चरणनमें ❀ अंगीकार करो हे व्याल।
जननी औ मम मित्र कुटुंबी ❀ सिरसहि भेजि देउ तत्काल
समाचार परमानँद पाये ❀ हर्षित करो इष्टको ध्यान।
फिरि यश कहन लगे मलिखेके ❀ नरने मेटि लिये अरमान
फिरि उठि राजमहलमें आये ❀ सबको टेरि कही हर्षाय।
समाचार मलिखेके आये ❀ वनमें कोट लियो बनवाय॥
यहि पश्चात देखि शुभ सायति ❀ राजा साजि वाजि सुखपाल
तिलका औ सब मित्र कुटुंबी ❀ सिरसहि भेजि दिये तत्काल
कुशल क्षेम सिरसामें पहुँची ❀ माता उतरि परी सुखधाम।
निवासके शतखंडा पर ❀ रानी जाय भई निष्काम॥
तिलका माता बहुत खुशी भइ ❀ धनि मलिखान लडैते लाल

मंत्री खुशी सुखी पुरवासी ❋ मिटि गये सकल संकटा जाल
शूरवीर गढ पति भट योधा ❋ मंत्री राजकुँवर सरदार ।
बुद्धिवान सज्जन गुणसागर ❋ हाजिर रहन लगे दरबार ॥
राजा शशि नवैं मलिखेको ❋ गढपति वाजुदेहिं शिर नाय
जो कोइ शिरसासे शिर फेरहिं ❋ वे शिर धुनैं स्वर्गमें जाय ॥
चहुँ लग धाक भई मलिखेकी ❋ बलनिधि शूरवीर थर्रांय ।
वैरी नाम सुनत तनु त्यागैं ❋ योधा दृष्टि देखि घबरायँ॥
हितू हँसे मंत्री सुख भोगे ❋ परजा खुशी सुखी नर नारि
चोर चुगुल यमपुरको गमिगे ❋ वैरी ब्यारि भये पुनहारि ।
पक्षी कलि करें जंगलमें ❋ मधुरी पवन चले सुखवारि
मन चाहे नभमे जल वरमें ❋ वन वन फूलि रही फुलवारि
बलिपुरगढ पडियलऔविपगढ ❋ जीतकेगढमें लिये मिलाय
पूरणकला भई मलिखेकी ❋ गढपति मिलनलगेभगपाय
जितनी कला बढे मलिखेकी ❋ उतनोहिं दिपै रजा परिमाल
तेगा विदित होय सिरसाको ❋ गरुई होय महोवे ढाल ॥
ज्यों ज्यों सुयश बढे मलिखेको ❋ त्यों त्यों महाराजगरु आयँ
नित नव हुक्ख बढे महुबेमें ❋ मल्हना पुत्र सहित हर्षायँ॥
क्यों नहिं खटक मिटे हिग्दैसे ❋ क्यों नहिं नाथ होयँ निष्काम
चौकी वानिगइ गढ महुबेकी ❋ जबसे लिया सिरसवाँ गाम
माख करत थे जो महुबेमे ❋ जिनसे जरत हते परिमाल
बीनि बीनि मलिखे ऊदनिने ❋ कर्दैलीथि खींचिके खाल
जोधा थकित करे ऊदनिने ❋ बलनिधिशिथिलकरेमलिखान
चहुँ लग देश पहटकरि डारो ❋ इक लँग शून्य परे मैदान॥
तोंवी ले तोमर वन विचरे ❋ हरिपद भजन लगे करि छाप
ज्ञान बुद्धि मनसे रमकरि गये ❋ जब सुनि परी ध्यानमें टाप
सौ सौ कोश भजे सोलंखी ❋ उडिगे सिन्धुपार परिहार ।

अर्गल छाँडिगये नरगौतम ❋ पानी डारि गये पम्मार ॥
जैसवार झीने मन परिगे ❋ रणमें डारि गये धनुबान।
वैस अवस्था गतकरि बैठे ❋ खटका करन लगे चौहान॥
बडे बडे समर करे ऊदनिने ❋ पकडो धनुष वीर मलिखान
भाग बली हैं चन्देलेके ❋ सबमें विजय दई भगवान॥
छब्बिस गढ ऊदनिने जीते ❋ छब्बिस विजय करे मलिखान
अभय चित्त राजा ह्वै बैठे ❋ मनसे उतरि गये चौहान ॥
दल गढ सुभट बढे राजाके ❋ मनमें उपजि गये मदमान।
पैसा तोरि लियो दिल्लीको ❋ बिसरो खौफ धनी चौहान
समय निहारो शब्द बांधेने ❋ निरखे भागवन्त परिमाल।
तेजवान दोनों भट जाने ❋ रहिगे पीठि ग्वैंठि जिमि व्याल
सकल लडाइ नरमलिखेकी ❋ जो हम लिखें यहाँ मनलाय
पुस्तक बहुत बढे आल्हाकी ❋ तासों पूरण करी सुनाय ॥
ऊदनि मलिखेको पुरुषारथ ❋ सो कहँलग मैं करों बखान
ताते यह संक्षेप सुनायों ❋ सज्जन लेहिं आप सब जान
पहली लडाई यह सिरसाकी ❋ सो हम लिखिके दई सुनाय
जैसे व्याह भयो आल्हाको ❋ राजा नैपाली घर जाय ॥
नैनागढमें भई लडाई ❋ सो आगे लिखि दिहैं सुनाय
समय पाय तुम आल्हा गावो ❋ सुमिरो नित्य राम रघुराय

इति सिरसागढकी पहली लडाई संपूर्ण ।

श्रीः ।

अथ नैनागढकी लडाई ।

(आल्हाका व्याह.)

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
व्याह सुनावौं मैं आल्हाको ❋ यारो सुनौ छोडि सब काम
राजा नैपाली नैनागढ ❋ ज्यहि घर अमर ढोल घहराय
है बरदानी इन्द्रदेवको ❋ जो मरिबेको नाहिं डेराय ॥
ताकी बेटी सुनवाँ कहिये ❋ जाने जादू पढे बनाय ।
रूपकि अगरी बेटी सुनवाँ ❋ शोभा कछू कही ना जाय
नितनितखेलकरैसखियनसँग ❋ एकदिनसखियनकहीसुनाय
बारह वर्ष केर उम्मिरि भइ ❋ तुम्हरो कहूँ न करो विवाहु
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❋ या धनहीन भये महराज ।
इतनी बात सुनी सुनवाँने ❋ मनमाँ बहुत गई खिसियाय
तुरतै पहुँची रंगमहलमें ❋ माता लीन्हीं कठ लगाय ।
पूँछन लागी सो सुनवाँते ❋ बेटी हाल देउ बतलाय ॥
कौन सोचु है तुम्हरे जियमें ❋ सो सब हमहिं देउ समुझाय
हाथ जोरिकै सुनवाँ बोली ❋ माता सुनो हमारी बात ॥
ताना देतीं सखी सहेली ❋ क्यों ना तुम्हरो भयो विवाहु
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❋ या धनहीन भये महराज ॥
रानी बात सुनी बेटीकी ❋ अपने मनमें सोचन लागि
व्याह योग बेटी यह ह्वैगइ ❋ जल्दी याको करैं विवाह ॥

दियो भरोसा तब राननिने ❋ बेटी धीर धरौ मनमाहिं ।
ब्याह तुम्हारो जल्दी होइहै ❋ अबहीं टीका दिहौं पठाय ॥
राजा आये रंगमहलमें ❋ तब राननिने कही सुनाय ।
बारहवर्ष केरि बेटी भइ ❋ ताको जल्दी करौ बिवाह ॥
तुमहिं हँसौआको डर नाहीं ❋ अबहीं टीका देउ पठाय ।
इतनी बात सुनी राजाने ❋ तब रानीते कही सुनाय ॥
धीरज राखो अपने मनमें ❋ जल्दी टीका दिहैं पठाय ।
इतनी कहिकै राजा चलिभये ❋ औ दरबार पहुँचे जाय ॥
लैकै कागज कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ।
लिखी हकीकति नैपालीने ❋ सब टीकाको लिखो हवाल
अमरढाल है हमरे घरमें ❋ मेना सुनत अमर ह्वै जात ।
कठिन लडाई है जोगाकी ❋ औ भोगाकी है तलवारि ॥
जंग जीतिकै बेटी ब्याहै ❋ सो हमरे घर करै बिवाह ।
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ चारो नेगी लिये बुलाय ॥
तीनि लाखको टीका लैके ❋ सो चारोंको दो सौंपाय ।
होय जो क्षत्री उत्तम कुलको ❋ सो टीकाको लेइ चढाय ॥
अच्छे वर टीका लै जैयो ❋ एक न जैयो नगर महोब ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ सो हम तुमहिं दियो बतलाय
इतनी सुनिकै नेगी चलिभये ❋ बिजया बेटा संग लिवाय ।
पहिले पहुँचे गढ दिल्लीमें ❋ टीका फेरि दियो चौहान ॥
तहँते पहुँचे गढ कनउजमें ❋ जैचँद टीका दियो फिराय ।
देश देशमें टीका पहुँचो ❋ सबने टीका दो लौटाय ॥
लौटिके नेगी गे नैनागढ ❋ औ राजाते कही सुनाय ।
देश देशमें हम फिरि आये ❋ टीका कोइ कबूलै नाहिं ॥
इतनी बात सुनी राजाने ❋ मनमें बहुत गये शरमाय ।

रचो स्वयंबर तब राजाने ❀ धूरे डंका दियो धराय ॥
यह प्रण कीन्हों नैपालीने ❀ जो कोउ डंका देइ बजाय।
त्यहि राजाघर बेटी ब्याहों ❀ खबरैं देश देश ह्वै जायँ ॥
राजा आये देश देशके ❀ औ नैनागढ पहुँचे आय।
तम्बू लागि गये हैं धूरेपर ❀ झडन रही लालरी छाय ॥
नजरि गुजारी सब राजनने ❀ औ राजाने कही सुनाय।
तुम्हरी बराबरिके हम नाहीं ❀ जो तुम्हरे घर करैं बिवाह॥
सदा सहायक हम तुम्हरे हैं ❀ सो तुम जानिलेउ महराज।
राम बनावें तौ बनिजावै ❀ बिगरी बनत बनत बनि जाय
हाल सुनौ अब रानि सुनवाँका ❀ सुनवाँ मनमें करै विचार।
या तो ब्याह होय आल्हा सँग ❀ नातर रहिहौं सदा कुँवारि।
कागद लीन्हों कल्पीवालो ❀ अपनो कलमदान लै हाथ।
लिखी हकीकति बघऊदनिको ❀ पढियो याहि उदैसिंह राय
टीका भेजो हमरे बापने ❀ सब राजनने दो लौटाय।
हम प्रण कीन्हों यह अपने मन ❀ देवर मानौ बचन हमार ॥
कीनौ ब्याह होय आल्हा सँग ❀ ना दूजे सँग होय विवाह।
तुम सब लायक हौ महुबेमें ❀ भाँवरि आय लेउ डरवाय॥
बाना राखे हौ क्षत्रीका ❀ औ तरवारि रहेकी लाज।
खबरि न लीहौ जो हमरी तुम ❀ तौ रजपूतीको धिरकार ॥
यातो ब्याहो तुम भैयाको ❀ या घर छोरि धरो हथियार
यहिविधिपाती सुनवाँलिखिकै ❀ सो डोरामें दई बँधाय ॥
सुआ निकारि लियो पिंजराते ❀ औ तोतासे कही सुनाय।
पाती दीजौ तुम ऊदनिको ❀ यह कहि पाती दई बँधाय॥
जल्दी जावो गढ महुबेको ❀ हमरो कारज देउ बनाय।
इतनी सुनिकै सुअना चलिभो ❀ औ महुबेकी पकरी राह ॥

तीन दिनाको धावा करिकै ❀ गढ महुबेमें पहुँचो जाय ।
सुअना उतरो फुलबगियामें ❀ बैठो एक वृक्षपर जाय ॥
वही समैया फुलबगियामें ❀ आये तहाँ उदैसिंह राय ।
बैठो देखो यक तोताको ❀ पाती बँधी कंठके माहिं ॥
बोले ऊदनि तब तोताते ❀ सुअना हमें देउ बतलाय ।
कौन देशसे तुम आयेहो ❀ आगे कौन देशको जाउ ॥
जो तुम आये होउ महुबेमें ❀ तो तुम चलो हमारे साथ ।
छोटे भैया हम आल्हाके ❀ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
इतनी सुनिकै सुअना उतरो ❀ औ ऊदनितर पहुँचो जाय ।
देखी पाती जबऊदनिने ❀ तापर पढो आपनो नाम ॥
पाती खोली तब ऊदनिने ❀ औ सुनवाँको पढो हवाल ।
बहुतखुशीहुइऊदनिचलिभये ❀ औ तोताको साथ लिवाय
जहां कचहरी परिमालेकी ❀ तहँ पर गये उदैसिंह राय ।
करी बन्दगी परिमालेको ❀ तुरतै पाती दई गहाय ॥
मलिखे बैठे तहँ दहिने पर ❀ पाती पढी राजा परिमाल ।
पढिकै पाती चन्देलेने ❀ सो गद्दीतर लई दबाय ॥
ताल्हा सैयद ढेवा बहादुर ❀ आल्हा आदि शूर सरदार ।
बडे बडे क्षत्री बँगला बैठे ❀ सो राजातन रहे निहारि ॥
हँसिकै मलिखे बोलन लागे ❀ दद्दुआ हाल देउ बतलाय ।
कहाँकि पाती यह आई है ❀ जा गद्दीतर लई दबाय ॥
बोले राजा तब मलिखेते ❀ बेटा सुनो हमारी बात ।
पाती आई नैनागढते ❀ रानी सुनवाँ दई पठाय ॥
टीका भेजो सब राजनके ❀ काहू व्याह कबूलो नाहिं ।
तब यह पाती गढ महुबेमें ❀ सुनवाँ लिखिकै दई पठाय ॥
अमरढोल है नैपालीके ❀ लडिका कठिन करैं तलवारि

कठिन मवासी नैनागढ है ❋ ताते हाल सुनायो नाहिं ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ तुमको जानत सकल जहान
तुमहिं हँसौआको डर नाहीं ❋ दादा अक्किल कहाँ तुम्हारि
ब्याहु फेरिहौ जो महुबेते ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि ।
दागु लागि है रजपूतीमें ❋ जो यह ब्याह दिहौ लौटाय ॥
इतनी बात कही मलिखेने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
करौ तयारी नैनागढकी ❋ औ आल्हाको रचौ बिवाह ॥
इतनी बात सुनी राजाने ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
जायके पहुँचे रंगमहलमें ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय ॥
पाती आई नैनागढते ❋ रानी सुनवाँ दई पठाय ।
ब्याह लिखो है वा पातीमें ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
कठिन लडाई नैपालीकी ❋ ज्यहि घर अमरढोल घहराय
जोगा भोगा दोनों लडिका ❋ जिनकी जगजाहिर तलवारि
देश देश टीका फिरि आयो ❋ काहु ब्याह कबूलो नाहिं ।
मलिखे ऊदनि दोनों लडिका ❋ अपनी त्यारी दई कराय ॥
तुम समुझाय देउ दोनोंको ❋ नाहिं सब जैहैं काम नशाय
इतनी सुनिकै मलिखे ऊदनि ❋ दोनों लडिका लिये बुलाय
बोली मल्हना तिन दोनोंते ❋ बेटा मानौ कही हमारि ।
कठिन मवासी नैनागढ है ❋ जहँपर अमरढोल घहराय ॥
लडि न जितिहौ नैपालीते ❋ तासे बैठि रहौ अरगाय ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
आल्हा ब्याहनको रहिहैं ना ❋ यहु दिनु कहिबेको रहिजाय
जो हम बैठि रहैं महुबेमें ❋ बूडै सात साखिको नाम ॥
अमर नहीं है कोउ दुनियाँमें ❋ माता समुझि लेउ मन माहिं
ब्याह रचै हैं हम आल्हाको ❋ चाहैं प्राण रहैं की जाहिं ॥

हँसी खुशीते आज्ञा दैदेउ ❋ माता हम मनिबेके नाहिं ।
इतनी सुनिकै मल्हना सोची ❋ मनि है नाहिं बात मलिखान
बोली मल्हना तब मलिखेते ❋ तुम्हरो काम सिद्धि होयजाय
दिवला तिलकाको बुलवायो ❋ औ सब सखियाँ लई बुलाय
सब मिलि मंगल गावन लागीं ❋ तब पंडितको लियो बुलाय
चूडामणि पंडित जब आये ❋ तिनसों मल्हनापूछनलागि
साइति देखो तुम पत्रामें ❋ तबहीं तेल देयँ चढवाय ।
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ सब सामान करौ तैयार ॥
तेल चढावो तुम आल्हाको ❋ अबहीं साइति लेउ सधाय
ऊदनि बोले नर ढेबाते ❋ भैया सगुन देउ बतलाय ॥
समरसारकी पोथी लैकै ❋ ढेबा सगुन विचारन लाग ।
काम तुम्हारो पूरन होइहै ❋ जल्दी फौज लेउ सजवाय॥
मल्हना रानी नेग करावे ❋ सखियाँ करैं मंगलाचार ।
वेदी रचवाई आँगनमें ❋ मोतिन चौक दई पुरवाय॥
चूडामणि पंडित तहँ बैठे ❋ गौरि गणेश दिये पुजवाय।
नारद रानी परिमालेकी ❋ सो मंडपमें पहुँची आय ॥
तुरत बुलाय लियो आल्हाको ❋ औ चौकीपर दियो बिठाय
सात सुहागिन मिलि आल्हाको ❋ मडये तेल दियो चढवाय
न्हछुर होनलाग मंडपमें ❋ नेगी झगरि झगरि रहिजायँ
सबको नेग दियो रानीने ❋ औ मुँह माँगो दियो इनाम
कपडा पहिराये आल्हाको ❋ तुरत पालकी लई मँगाय ।
आल्हा बैठिगये पलकीमें ❋ दूलह बने बनाफर राय ॥
चली पालकी तुनि आल्हाकी ❋ औ कुँअटापर पहुँची जाय
बैठी देवै जब कुँअटापर ❋ तब मल्हनाने कही सुनाय॥
हमने पालो है आल्हाको ❋ हमहीं कुँवा बिये हैं जाय ।

यह कहि मल्हना गइ कुँअटापर ❀ औ दोउपायँ दियेलटकाय
पहिली भाँवरि पग धरतेखन ❀ आल्हा मल्हनै लियो उठाय
प्राणदान माता हम दीन्हें ❀ राखौ धीर मल्हनदे माय॥
दई अशीश तबहिं मल्हनाने ❀ जुग जुग जियौ लडैते लाल
चरण लागिकै रानि मल्हनाके ❀ आल्हा माथे लियो लगाय
चरण छुये दिवला तिल्काके ❀ सब रानिनको कियो प्रणाम
कूदि पालकीपर चढ़ि बैठे ❀ पलकी चली बनाफर क्यार
पलकी पहुँची जब लश्करमें ❀ मलिखे डंका दो बजवाय ।
लैकें कागद कल्पीवालो ❀ अपनो कलमदान लै हाथ
सिद्धिश्री नारायण लिखिकै ❀ ऊदनि पाती लिखी बनाय
लिखी बन्दगी रानि सुनवाँको ❀ तापाछे ते लिखो हवाल ॥
तुमहिं बियाहन आल्हा आवत ❀ मौजी धीर धरो मनमाहिं
बिना ब्याहके हम नहिं लौटें ❀ चाहे प्राण रहें की जायँ ॥
ऐसी पाती ऊदनि लिखिकै ❀ तुरतै दई कंठमें बाँधि ।
सुआ उडानो तब महुबेते ❀ नैनागढ़की पकरी राह ॥
राम बनावै तौ बनिजावै ❀ बिगरी बनत बनत बनिजाय
ऊदनि पहुँचे फिरि लश्करमें ❀ तोप दरोगा लियो बुलाय॥
हुकम देदिया बघ ऊदनिने ❀ सिगरी तोपैं लेउ सजाय ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो चरखिनपर देउ चढ़ाय॥
बोलि दरोगा घोडनवालो ❀ चीरा कलँगी दई इनाम ।
अच्छे घोडा गढ महुबेके ❀ सिगरे साजि करो तैयार ॥
जीन धरावौ सब घोडनपर ❀ रेशम तंग देउ कसवाय ।
हाथिनवालेको हुलवायो ❀ तासों ऊदनि कही सुनाय
बडी राशिके जितने हाथी ❀ सो सब साजि करौ तैयार।
हाथी एकदंता सजवावौ ❀ औ दुइदन्ता लेउ सजाय॥

मैनकुंज भौंरागिरि कहिये ❋ मकुना हाथी लेउ सजाय ।
धौलागिरि हाथी सजवावो ❋ भूरा हाथी लेउ सजाय ॥
मुडिया हौदा तुम कसवावो ❋ चारों ओर चलै तलवारि ।
इतनी सुनिके चलो दरोगा ❋ सिगरे हाथी करे तयार ॥
डारे गद्दा मखमल वाले ❋ ऊपर हौदा दिये कसाय ।
यक यक हाथीके हौदामें ❋ बैठे चारि चारि असवार ॥
बडी राशिके जितने घोडा ❋ सो सब साजिभये तैयार ।
लक्खा गर्रा घोडा साजे ❋ औ कुम्मैत भये तैयार ॥
हरियल मुश्की घोडा सजिगे ❋ पचकल्यानी भये तयार ।
अर्बी तुर्की औ तातारी ❋ सब्जा सुर्खा भये तयार ॥
पूँछ रँगाय दई घोडनकी ❋ औ सब जेवर दै पहिराय ।
धरि कठनाली तिन घोडनपर ❋ ऊपर जीन दिये कसवाय ॥
चारि घरी केरे अरसामें ❋ लश्कर साजि भयो तैयार ।
हाथी चढैया हाथिन चढिगये ❋ बांके घोडनके असवार ॥
मलिखे ढेबा ताला सैयद ❋ चौथे ऊदनि संग लिवाय ।
जहाँ कचहरी चन्देलेकी ❋ तहँपर करी बन्दगी जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा हुक्म देउ फरमाय ।
हाथ फेरिदियो तब पीठीपर ❋ तुम्हरो काम सिद्धि होइजाय
करो तयारी नैनागढकी ❋ औ आल्हाको करौ बिवाह
इतनी सुनिकै चारों लौटे ❋ अपनी करन तयारी लाग ॥
ताला सैयद बनरसवाले ❋ घोडी सिंहिनि पर असवार
घोडी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढ बीर मलिखान ॥
गजपचशावद घोडा करिलिया।सो सजवायो बीर मलिखान
घोडा हरनागर सजवायो ❋ तापर जगनिक भये सवार॥
घोडा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ।

मन्ना गूजर महुबेवालो ❋ सो बरातको भयो तयार ॥
जानबेग सुल्तान बहादुर ❋ अली अलामति औ दारियाय
अपने घोडनपर चढि बैठे ❋ लैके खुदानबीको नाम ॥
मारू डंकाके बाजतही ❋ सबने कूच दियो करवाय ।
राह पकरिलइ नैनागढकी ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
सात रोजको धावा करिकै ❋ नैनागढमें पहुँचे जाय ।
तीनि कोस नैनागढ रहिगयो ❋ अपने डेरा दिये डराय ॥
पाँच कोसलौं लश्कर परिगयो ❋ तँबुअन रही लालरी छाय।
फंटैं छुटिगइँ रजपूतनकी ❋ अपने खोलिधरे हथियार ॥
हौदा उतरिगये हाथिनके ❋ घोडन जीन दिये उतराय
चढी रसुइयाँ उमरायनकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय
ऊदनि मलिखे दोनों चलिभे ❋ औ बागनमें पहुँचे जाय ।
जहँपर डंका नैपालीको ❋ ऊदनि डंका दियो बजाय
चोब नगाराके बाजतखन ❋ धावन कूच दियो करवाय।
जाय पहूँचा नैपालीपै ❋ झुकिकै करी बन्दगी जाय
कही हकीकति त्यहि डंकाकी ❋ ओ महराज गरीब नेवाज।
आई बरायत काहु देशकी ❋ चोब नगारा दियो बजाय ॥
इतनी बात सुनी राजाने ❋ अपने लरिका लिये बुलाय।
हुक्म देदिया तब जल्दीसे ❋ जल्दी खबरि सुनावो आय
कोनसो राजा चढि आयोहै ❋ कौने डंका दियो बजाय।
इतनी सुनतै लरिका चलिभये ❋ औ बागनमें पहुँचे जाय ॥
ऊँचे चढिकै देखन लागे ❋ भारी लश्कर परो दिखाय।
देखि हकीकति लडिका लौटे ❋ नैपालीपै पहुँचे आय ॥
जोगा भोगा बिजया बेटा ❋ तीनों खबरि सुनावन लाग।
लश्कर डारो पाँच कोसलौं ❋ तँबुअन रही लालरी छाय॥

आई बरात कोई राजाकी * कोसन झंडा परैं दिखाय ।
हियाँ कि बातैं तो हियँ छाँडो * अब आगेको सुनौ हवाल ॥
ऊदनि बोले नर मलिखेते * दादा सुनौ हमारी बात ।
कौन नींदमें तुम सोवतहौ * जल्दी पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडितको * सो तम्बूमें पहुँचे आय ।
खोलि पत्तरा देखन लागे * अच्छी साइति दई बताय ॥
रुपनाबारीको बुलवावो * ऐपनवारी देउ पठाय ।
इतनी सुनतै नर मलिखेने * रुपना बारी लियो बुलाय ॥
हुक्म देदिया तब रुपनाको * ऐपनवारीको लैजाउ ।
बोलेउ रुपना तब मलिखेने * हम ना मूड कटै हैं जाय ॥
कठिन मारु है नैपालीकी * हमते मारु सही ना जाय ।
इतनी सुनतै ऊदनि तड़पे * रूपन अक्किल गई तुम्हारि ॥
मुखतें हीनी तुम बोलत हो * हमरे सुनिबेको धिरकार ।
भाई व्याहनको रहि हैं ना * यहु दिन कहिबेको रहिजाय ॥
एपनवारी तुम लेजावो * जल्दी कूच जाउ करवाय ।
तुमको नेगी हम समुझें ना * घरके भैया लगौ हमार ॥
यह सुनि रुपना बोलन लागो * घोड़ा करोलिया देउ मँगाय ।
पाग बैंजनी हमको दैदेउ * औ आल्हाकि ढाल तलवार
जो जो चाह्यो त्यहि रुपनाने * सो सब तुरतै दियो मँगाय ॥
करी तयारी तब रुपनाने * ऐपनवारी लई मँगाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठो * नैनागढमें पहुँचो जाय ।
ठाढे दरवानी द्वारेपर * सो रुपनाते लगे बतान ॥
कौन देशते तुम आये हौ * आगे कौन देशको जाउ ।
रुपना बोलेउ दरवानीते * तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
नगर महोबा इक वस्ती है * जहँ पर बसैं रजा परिमाल ।

तहँते व्याहन आल्हा आये ❋ रूपनबारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ हमरो नेग देउ मँगवाय ।
खबरि सुनावो तुम राजाको ❋ नेगी ठाढो पवँरि दुवार ॥
यह सुनि बोलेउ दरवानी तब ❋ अपनो नेगु देउ बतलाय ।
बोलो रुपना दरवानीते ❋ तुमहूँ सुनिलेउ नेग हमार ॥
चलै शिरोही यहँ द्वारेपर ❋ औ बहिचलै रक्तकी धार ।
इतनी सुनते गयो दरवानी ❋ औ राजासे कही सुनाय ॥
बारी आयो है महुबेको ❋ ऐपनवारी लीन्हें ठाढ ।
नेग आपनो वह माँगत है ❋ द्वारे बहै रक्तकी धार ॥
इतनी सुनते नैपालीके ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
जोगा भोगाको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बाँधिकै लावो तुम बारीको ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय ।
तौलौं रुपना दाखिल ह्वइगो ❋ औ गद्दीपै पहुँचो जाय ॥
नजरि बदलिगइ नैपालीकी ❋ औ रुपना तन रहे निहारि ।
करी बन्दगी तब रुपनाने ❋ ऐपनवारी दई चलाय ॥
तब नैपाली बोलन लागे ❋ औ रुपनाते पूँछन लाग ।
कौन देशते तुम आये हो ❋ अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोल्यो रुपना तब राजाते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
हम तो आये हैं महुबेते ❋ रुपना बारी नाम हमार ॥
आल्हा आये हैं व्याहनको ❋ ऐपनवारी दई पठाय ।
नेग हमारो जल्दी चहिये ❋ सो तुम हमहिं देउ मँगवाय ॥
इतनी सुनते नैपालीके ❋ नैना अग्निज्वाल ह्वइजायँ ।
बडे बडे क्षत्री बँगला बैठे ❋ टिहुना धरे नग्न तलवार ॥
बोले नैपाली क्षत्रिनते ❋ याको देउ जानते मारि ।
जान न पावै यह द्वारेते ❋ तुरतै मूंड लेउ कटवाय ॥

बैठे क्षत्री यक हजार जहँ ❋ सो सब उठे भरहरा खाय।
खैंचि शिरोही क्षत्रिन लीन्हीं ❋ तुरतै चलन लगी तलवारि
पूरन ठाकुर पटनावालो ❋ ताने लीन्ही गुर्ज उठाय।
गुर्ज धमक्को जब रुपनापर ❋ रुपना लैगयो चोट बचाय॥
साँग उठाई जो रुपनाने ❋ सो पूरनपर दई चलाय।
लगो चपेटा तब पूरनके ❋ पूरन गिरे भरहरा खाय॥
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार
खौंचि शिरोही लइ रुपनाने ❋ बारी कठिन करै तलवारि॥
जाय पहूँचो जब गद्दीपै ❋ ऐपनवारी लई उठाय।
ऐंड लगाय दई घोडाके ❋ घोडा निकरि गयो वा पार
रुपने घेरो सब क्षत्रिनने ❋ द्वारे चलन लगी तलवारि
रंग बिरंगो रुपना ह्वइगो ❋ घोडा रक्त बरन ह्वइजाय॥
क्षत्री भागि गये आगेते ❋ रुपना निकरि गयो वा पार
देखि तमाशा यह बारीको ❋ नैपालीने कही सुनाय॥
नेगी जालिम है महुबेको ❋ अकिले करी कठिन तलवार
जिनके नेगी ऐसे जालिम ❋ तिन क्षत्रिनते कहा बिसाय
यह सुनि जोगा भोगा बोले ❋ दादा धीर धरौ मन माहिं।
जितने आये हैं महुबेते ❋ सबकी कटा दिहैं करवाय॥
यह कहि जोगा भोगा चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय।
बोलि दरोगा तोपनवालो ❋ सोने कडा दियो डरवाय॥
बाडि बाडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर देउ चढाय
हाथिनवालेको बुलवायो ❋ चीरा कलँगी देइ इनाम॥
हाथी सजवावौ जल्दीते ❋ औ लडिबेको होउ तयार।
घोडनवालेको बुलवायो ❋ सिगरे घोडा लेउ सजाय॥
बजे नगारा हमरे दलमें ❋ क्षत्री सजिकै होयँ तयार।

डंका बाजो नैनागढमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्रिन बाँधि लिये हथियार
पहले नगारामें जिन बन्दी ❀ दुसरे बाँधिलिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्रिन धरे रकाबन पायँ ।
चन्द्रवंश राठौर भदावर ❀ औ परिहार गुटैया टार ॥
सूरजवंशी औ रघुवंशी ❀ क्षत्री सबै भये तैयार ।
कछवाहे पँवार यादव सब ❀ औ काबुलिया भये तयार ॥
बूंदीवाले हाडावाले ❀ औ गहलोत गौर चौहान ।
मारवाडके सजे सिपाही ❀ तोमरवंशी भये तयार ॥
जितने क्षत्री नैनागढके ❀ सो सब साजिभये तैयार ।
तोपें सजिगइँ नैनागढकी ❀ सो आगेको दईं जुताय ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❀ जोगा भोगा चले अगार ।
झंडा घूमैं दरियाइनके ❀ घूमत जावैं लाल निसान ॥
लश्कर पहुँचि गयो धूरेपर ❀ मुर्चा बन्दी दई कराय ।
राम बनावें तो बनिजावैं ❀ बिगरी बनत बनत बनिजाय
यहाँकि बातें तो यहँ छांडो ❀ अब आगेको सुनौ हवाल ।
रंग बिरंगो रूपना देखो ❀ तब हँसि कही बीर मलिखान
कैसी गुजरी दरवाजेपर ❀ रूपन हाल देउ बतलाय ।
इतनी सुनिकै रुपना बोलो ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात
कठिन लडाई नैपालीकी ❀ हमते कछू कही ना जाय ।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार
जबहीं नाम सुनो मछुबेको ❀ फाटक बन्द दियो करवाय
झुके सिपाही नैनागढके ❀ आमाझोर चली तलवारि ॥
काम तुम्हारो हम करि आये ❀ दहिने भई शारदा माय ।
अब क्यों गाफिल तुम बैठेहो ❀ शिरपर फौज पहुँची आय ॥

बोले ऊदनि नर मलिखेते ❋ दादा सावधान होइजाउ ॥
फौज आयगइ नैनागढकी ❋ अब लरिबेको होउ तयार ॥
तुरत नगडचीको बुलवायो लश्कर डंका देउ बजाय।
बजो नगारा तब लश्करमें क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी दुसरे बाँधि लिये हथियार।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
चौथे डंकाके बाजतही ❋ लश्कर चला महोबे क्यार।
घोडी कबुतरी त्यार खडी थी ❋ मलिखे फाँदि भये असवार
घोडा बेंदुला त्यार कराया ❋ ऊदनि फाँदि भये असवार
चारि घरीको धावा करिकै ❋ रणखेतनमें पहुँचे जाय ॥
दोनों फौजनके अंतरमें ❋ रहिगो आध कोस मैदान।
घोडा बढाय दियो ऊदनिने ❋ औ जोगापै पहुँचे जाय ॥
मूरति देखी जब ऊदनिकी ❋ तब जोगाने कही सुनाय।
कौन देशते तुम आये हो ❋ आगे कहा तुम्हारो नाम ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ औ जोगाको दियो जवाब।
नगर महोबा इक बस्ती है ❋ जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार।
भाई व्याहनको आये हैं ❋ तुरतै भाँवर देउ डराय ॥
इतनी सुनतै जोगा जरिगये ❋ गुस्सा गई देहमें छाय।
ऊदनि लौटिजाउ महुबेको ❋ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
व्याह न होइहै हियँ आल्हाको ❋ ओछी जाति बनाफर राय।
धोखे रहियो ना माडौंके ❋ जहँ लेलियो बापको दाँव ॥
कठिन मवासी नैनागढ है ❋ सबके लेहौं शीश कटाय।
कुशल आपनी जो तुम चाहो ❋ अपनो कूच जाउ करवाय
इतनी बात सुनी जोगाकी ❋ तब हँसि कही उदैसिंह राय

बढिके बातैं तुम बोलत हो ❃ नाहक रारि करत बिन काज
रारि बढे हौ जो हमरे सँग ❃ सबकी कैद लिहौं करवाय
डंड बाँधिके नैपालीकी ❃ सातौ भौंवरि लिहौं डराय॥
बिना बियाहे हम ना जैहैं ❃ चाहे प्राण रहैं की जायँ।
सुनते जोगा गुस्सा होइके ❃ अपनो हुक्म दियो फरमाय
बत्ती दैदेउ मेरि तोपनमें ❃ इन पाजिनको देउँ उडाय।
जान न पावैं महुबेवाले ❃ सबकी कटा देउँ करवाय॥
इतनी सुनते झुके खलासी ❃ औ तोपन पै पहुँचे जाय।
लैके थैली बारूदनकी ❃ सो तोपनमें दई झुकाय॥
गोला डारिदिये तोपनमें ❃ ऊपर रंजक दई धराय।
दैदइ बत्ती उन तोपनमें ❃ धुँअना रहेउ सरगमें छाय॥
लौटे ऊदनि अपने दलमें ❃ तोपन बत्ती दइ लगवाय।
दगी सलामी दोनों दलमें ❃ चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय
तोपैं छूटीं दोनों दलमें ❃ गोला चलन लाग तत्काल
अररर अररर गोला छूटैं ❃ कड कड करैं अगिनियाँ बान
सननन सननन गोली छूटैं ❃ सरसर परी तीरकी मारु।
दोनों फौजनके अंतरमाँ ❃ अंधाधुंध तोपकी मारु॥
गोला लागै ज्याहि हाथीके ❃ दलमें डोंकि डोंकि रहिजाय
गोला लागै जौन ऊँटके ❃ सो गिरि परै चकत्ता खाय
गोला लागै जिन घोडनके ❃ सो गिरिपरैं भूमि भहराय।
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❃ तिनकी त्वचा सरग मँडराय
बंबको गोला जिनके लागै ❃ तिनको लगै ठिकाना नाहिं
गोला जंजिरहा जिनके लागै ❃ तिनके हाड मांस छुटि जायँ
छोटी गोली जिनके लागै ❃ मानो गिरह कबूतर खाय।
बानको डंडा जिनके लागै ❃ तिनके दुइ खंडा ह्वइजायँ॥

चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ कोइ रजपूत न टारै पाँव ।
तोपैं धैंधैं लाली होइगईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ
चढी कमनियाँ पानी होइगईं ❋ चुटकिनके गे मांस उडाय
तोप रहकला पीछे छाँडे ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगा पाँच कदम मैदान।
साँगैं चलन लगीं दोनों दल ❋ ऊपर बाँछिनकी दइ मारु ॥
छुटे पिचक्का जहँ लोहुनके ❋ औ बुबकारिन बोलैं घाव।
बूडि जुलफियाँ गईं लोहूते ❋ सबौ अंग गई लपिटाय ॥
हौदा भरिगये सब लोहुनते ❋ औ चुचुआत फिरैं असवार
तीनि घरी भरि बजो साँगडा ❋ भारी भइ बछिनकी मारु॥
भाला टूटिके दोना ह्वैगे ❋ लटुआ कटि बाँछिनके जायँ
यहाँ लडाई पाछे परिगइ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल॥
दोनों फौजनके अंतरमें ❋ रहिगयो डेढ कदम मैदान।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवार
खटखट खटखट चले शिरोही ❋ बोले छपक छपक तलवार
चले जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार
तेगा चटक बर्दवानका ❋ कटिकटिगिरैंसुघरुआज्वान
पैदल अभिरे तहँ पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❋ हाथिन अडो दाँतसे दांत ।
आठ कोसकेरे गिरदामें ❋ चारों ओर चलै तलवार ॥
पैदल गिरिगये पैग पैगपर ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ।
रेख उठन्ते क्षत्री गिरिगये ❋ उन तिरियनघर कौनहवाल
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ।
कटिगये कल्ला जिन घोडनके ❋ धरती गिरैं करौंटा खाय ॥
कटि भुजदंडैं रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार

पगिया डारीं जो लोहूमें ❋ मानौ ताल फूल उतरायँ ॥
परे दुशाला जे लोहूमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार ।
ढालैं डारी हैं लोहूमें ❋ मानौ कछुआसी उतरायँ
परी बँदूकैं हैं लोहूमें ❋ मानौ नाग रहे मन्नाय ।
डारे घैहा रणमें लोटैं ❋ जिनके प्यास प्यास रटलागि
मोहर कटोरा पानी ह्वैगो ❋ रणमें कोइ न पूँछे बात ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रटलागि
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भैया लगौ हमार
काम हमारो पूरन ह्वैहै ❋ दूनी तलब दिहौं बढवाय ।
दैदै पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढाय

कुण्डलिया ।

कीजे रणमें आयके, यारो युद्ध अघाय ।
दुश्मनको हानि डारिये, आगे धरिये पाँय ॥
आगे धरिये पाँय मोह मनमें नहिं कीजे ।
रणमें करि संग्राम पाँव पाछे नहिं दीजे ॥
हितसों करिके ध्यान शूरता यही बिचारो ।
रणते कायर भगें शूर भागें नाहिं यारो ॥ १ ॥

बढे सिपाही महुबेवाले ❋ अपना मया मोह बिसराय
भगे सिपाही नैनागढके ❋ अपने डारि डारि हथियार ॥
ऊंचे खाले कायर भागे ❋ औ रनदुलहा चले बराय ।
कोऊ रोवत है लडिकनको ❋ कोऊ पुरिखनको चिल्लाय
कोऊ रोवै घर तिरियनको ❋ अबहीं लाये गौनवाँचार ।
तीनि लाखते जोगा आयो ❋ रहिगयो डेढ लाख असवार
भगत सिपाही जोगा देखो ❋ तब भोगाते कही सुनाय ।

खबरि सुनावो तुम राजाको ❋ रहिगयो डेढ लाख असवार॥
डेढ लाख क्षत्री रण जूझे ❋ मल्हुबेवालेन दिये गिराय।
इतनी सुनते भोगा झपटेउ ❋ औ नैनागढ पहुँचो जाय॥
जहाँ कचेहरी नैपालीकी ❋ भोगा हाल सुनावन लाग।
बड़े लडैया मल्हुबेवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि॥
तीनि लाख लश्कर हम लैगे ❋ रहिगे डेढ लाख असवार।
डेढ लाख जूझे रणभीतर ❋ मल्हुबेवालेन दिये गिराय॥
दश हजार मल्हुबेके जूझे ❋ ऐसी कठिन करी तलवार।
सुनवाँ बहिनीके कारणते ❋ सिगरी फौज गई बिछाय॥
ब्याह जो ह्वैहै कहुँ आल्हासँग ❋ कोइ न पियै घडाको पानि
इतनी बात सुनी राजाने ❋ तब भोगाको दियो जवाब॥
धीरज राखौ अपने जियमें ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय।
राजा उठिकै गये महलनमें ❋ औ लै आये ढोल उठाय॥
अमर ढोल लै दइ भोगाको ❋ यह दल माहिं बजावौ जाय।
मूर्च्छा जगिहैं सब शूरनकी ❋ तुम्हरो कामसिद्धि होइजाय।
लैकै ढोल गयो भोगा तब ❋ औ लश्करमें पहुँचो जाय॥
ढोल बजाय दई भोगाने ❋ क्षत्री उठे भरहरा खाय॥
सुनते घैहा उठि ठाढे भये ❋ जिनके मारु मारु रटलागि।
हल्ला करि दियो तब जोगानेखट खट चलन लगी तलवार॥
झुके सिपाही नैनागढके ❋ बाढि बढि धरैं अगारी पाँव।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ संझाकाल रहो नियराय॥
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❋ दादा सुनौ हमारी बात।
एक बात अनहोनी होइगइ ❋ ताको करिहौ कौन उपाय॥
गिरे सिपाही फिरि उठि बैठत ❋ हमते लडन लगत तत्काल।
लडे हमारे कछु ना होइ है ❋ ताते मुर्चा देउ हटाय॥

कछु विचारकरिकैफिरिलडिहैं। अपनो मतलब लिहैं बनाय।
हुक्म फेरिकै बघऊदनिने ❋ अपनो मुर्चा दियो हटाय॥
लश्कर लौटिपरो महुबेको ❋ औ डेरनपर पहुँचो जाय।
सोचि समुझिकै बघऊदनिने ❋ नैनागढकी पकरी राह॥
जहाँ महल है रानि सुनवाँका ❋ पहुँचे तहाँ उदयसिंहराय।
सुनवाँ ठाढी सतखंडापर ❋ सो ऊदनितन रही निहारि॥
सुरति साँवरे मुख नरियारे ❋ नैना हिरनाकी उनहार।
घोडा बेंदुला नाचत आवै ❋ शिरपर बँधी बैंजनी पाग॥
महल तरे ऊदनि आये जब ❋ सुनवाँ तुरत गई पहिचानि।
जूझको कंकन करमें देखो ❋ औ सब लक्षण लिये मिलाय॥
सिढियनसिढियनसुनवाँउतरी। औ खिरकीपै पहुँची आय।
सुनवाँ रानी पूछन लागी ❋ देवर हाल देउ बतलाय॥
बोले ऊदनि तब सुनवाँते ❋ भौजी सुनौ हमारी बात।
लिखिकै पाती हमको भेजी ❋ आवो साजि उदयसिंहराय॥
फौज नशावनको लागी हो ❋ तुम करिदिहो बंशकी हानि।
जौन सिपाही हम मारत हैं ❋ सो उठि लडत हमारे साथ॥
गिरे सिपाही क्यों उठि बैठत ❋ सो सब हाल देउ बतलाय।
भेद बताय देउ लश्करका ❋ नाहिं सब जैहै काम नशाय॥
तापर ज्वाब दियो सुनवाँने ❋ देवर सुनौ उदयसिंह राय।
धोखे रहियो ना माडौंके ❋ जहँ लैलियो बापको दाँव॥
कठिन मवासी नैनागढ है ❋ जहँ पर अमरढोल घहराय।
अम्मर ढोल सुनै जो क्षत्री ❋ गिरिकै उठै भरहरायाय॥
वह वरदान दियो इन्दरने ❋ यह हम भेद दियो बतलाय।
पार न पैहौ तुम नैनागढ ❋ तुमको जतन देउँ बतलाय॥
भोर होतही देवी पूजन ❋ पैहौ अमरढोल लै साथ।

माली होइके मठिया ऐयो * तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय
इतनी सुनतै ऊदनि लौटे * औ लश्करमें पहुँचे आय।
बोले ऊदनि नर मलिखेते * दादा सुनौ बीर मलिखान
नैनागढमें हम ह्वइ आये * सुनवाँ हाल दियो बतलाय
राति गुजारि गइ जब लश्करमें * भोरहि उठे उदय सिंहराय॥
घोडा बेंदुलापर चढि बैठे * औ मठियापै पहुँचे जाय।
माली बनिगे ऊदनि बांकुडा * घोडा पीछे दियो बँधाय॥
लैकै डलिया कर फूलनकी * बैठे सम्हरि उदयसिंह राय।
यहि विधि पहुँचे उदनिबाँकुडा * अब सुनवाँको सुनौ हवाल
सुनवाँ उतरी भोर होत ख्वन * पहुँची रंगमहलमें जाय।
रानी देखो जब बेटीको * पूछन लागी हाल हवाल॥
कौन कामको तुम आई हो * सो तुम हाल देउ बतलाय
बोली सुनवाँ तब मातासे * माता सुनौ हमारी बात॥
पूजन जैहौं मैं देवीको * अम्मरढोल देउ मँगवाय।
सुनतै रानी बोलन लागी * ढोल न दैहैं बाप तुम्हार॥
यह सुनि सुनवाँ तुरतै बोली * माता वचन करौ परमान।
ढोल न पैहौं जो पूजनको * तौ मैं पेटु मारि मरिजाउँ॥
इतनी सुनतै रानी चलिभइ * औ राजापै पहुँची जाय।
हाथ जोरिकै रानी बोली * स्वामी सुनौ हमारी बात॥
देवी पूजन बेटी जैहै * अम्मर ढोल देउ मँगवाय।
बोले राजा तब रानीते * अम्मर ढोल मिलनको नाहिं
तब फिरि रानी बोलन लागी * हमरे वचन करौ परमान।
जो ना देहौ अमरढोल तुम * बेटी दैहै जान गँवाय॥
तीनि घरी पूजामें लागि हैं * नाहक रारि बढावत आय।
ढोल मँगाय देउ जल्दीते * जामें दोउ धर्म रहिजायँ॥

बात मानि लइ तब राजाने ❋ अम्मर ढोल दियो मँगवाय।
ढोलक लैकै रानी आई ❋ औ सुनवाँको दई गहाय ॥
बहुत खुशी ह्वइ सुनवाँ बेटी ❋ अपनी सखिया लईं बुलाय
देवी पूजन सुनवाँ चलिभइ ❋ औ मठियामें पहुँची जाय ॥
ढोल बजावत सुनवाँ आई ❋ बैठे जहाँ उदयसिंह राय ।
करो इशारा तब ऊदनिको ❋ अम्मर ढोल दई धरवाय ॥
पूजा करनलगी मठियामें ❋ ऊदनि ढोलक लई उठाय ।
कूदि बछेरापर चढि बैठे ❋ औ लश्करमें पहुँचे आय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❋ दादा मेरे वीर मलिखान ।
अमर ढोल यह हम लै आये ❋ अब ना राखौ देर लगाय ॥
कूच कराय देउ लश्करको ❋ गुजरै घरी घरीपर ब्यार ।
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❋ तुरत नगडची लिये बुलाय॥
डंका बाजै मेरे लश्करमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चाढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ।
ऊदनि चाढिगये रस बेंदुलपर ❋ घोडी कबुतरीपर मलिखान
ताल्हा सैयद हैं सिंहिनिपर ❋ ढेबा मनुरथापर असवार ।
जगनिक चाढिगये हरनागर पर ❋ औ लश्कर सँग भये तयार
रूपन बारी महुबेवाले ❋ घोडा पपीहा पर असवार ।
मन्ना गूजर जो महुबेको ❋ सोऊ साथ भयो तैयार ॥
सब दल सजिगौ महुबेवालो ❋ डका होन गोलमें लाग ।
मारू डंकाके बाजत खन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय॥
फौज पहूँची जब खेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दई कराय ।

चलो साँडिया रण खेतनते ❋ औ नैनागढ पहुँचो जाय
खबरि सुनाई नैपालीको ❋ लश्कर खेत पहूँचो आय
इतनी सुनते नैपालीने ❋ अपने बेटा लिये बुलाय ॥
पटनावालो पूरन राजा ❋ ताको तुरत लियो बुलवाय।
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❋ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
जान न पावैं कोउ महुबेको ❋ तुरतै कूच जाउ करवाय ।
जोगा भोगा बिजया बेटा ❋ चौथे पूरन संग लिवाय ॥
हुक्म पायके चारौं चालिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय॥
बजै नगारा नैनागढमें ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले नगारामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
तीनौं लरिका नैपालीके ❋ अपने घोडनपर असवार ।
राजा पूरन संग चालिभये ❋ लश्कर कूच दियो करवाय॥
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें ❋ जोगा घोडा दियो बढाय ।
जोगा बोले आगे बढिकै ❋ भारी जाय दई ललकार॥
कौन शूरमा चढि आयो है ❋ सो समुहे होइ देइ जवाब ।
ऊदनि बढिगै तब आगेको ❋ औ समुहे हुइ दियो जवाब
हमीं सूरमा चढि आये हैं ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ।
ब्याहन आये हम भैयाको ❋ सो तुम भाँवरि देउ डराय॥
रारि बढावो ना आगेको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ।
इतनी सुनते जोगा जारिगये ❋ नैना अग्नि ज्वाल होय जायँ
बोलेउ जोगा बघ ऊदानिते ❋ ऊदानि लौटि महोबे जाउ ।
धोखे रहियो ना माडौंके ❋ जहँ लैलियो बापको दाउँ॥

जितने आये हो महुबेते ❀ सबकी कटा दिहौं करवाय
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
बिना बियाहे हम ना जैहैं ❀ चाहै प्राण रहैं की जायँ ।
बातन बातन बतबढ ह्वइगयो ❀ औ बातनमें बाढी रारि ॥
हुक्म सुनाय दियो जोगाने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
मारि भगावौ इन पाजिनको ❀ सबकी कटा देउ करवाय॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ तुरतै बत्ती दइ लगवाय ।
ऊदनि लौटे तब लश्करमें ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ धुँअना रहो सरग मँडराय
गोला चलन लगे दोनों दल ❀ अन्धाधुध तोपकी मारु ॥
तीनि घरी भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ।
तोपैं छोडिदई क्षत्रिनने ❀ जिनपर हाथ धरो ना जाय
दोनों सेना यक मिल ह्वइगईं ❀ ज्वानन हाथ गही तलवारि
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ खटखट चलन लगी तलवारि
पैदल अभिरिगये पैदल सँग ❀ औ असवारनते असवार ।
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❀ हाथिन अडो दाँतसे दाँत॥
पैदल गिरिगये पैग पैगपर ❀ उनके दुदुइ पैग असवार ।
हाथी गिरिगये बिसे बिसे पर ❀ छोटे पर्वतकी अनुहार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि।
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥
बोले ऊदनि त्याहि रूपनाते ❀ भैया बहुत रहेउ हुशियार ।
ताल्हा सैयद बनरसवाले ❀ तिनसे ऊदनि कही सुनाय
सावधान मुर्चा पर रहियो ❀ चाचा रखियो धर्म हमार ।
ऊदनि बोले फिरि ढेबाते ❀ भैया रह्यो बहुत हुशियार॥
मामा जगनिकते फिरि बोले ❀ मामा सावधान होइजाउ ।

काठिन लडाई नैनागढकी ❋ मामा रखियो धर्म हमार ॥
ढेबा दबिगयो तब उत्तरको ❋ सैयद दक्खिनको दबिजायँ
जगनिक पहुँचि गये पश्चिमको ❋ मन्ना पूरुबको दबिजाय ॥
मन्ना गूजर रूपन बारी ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
मलिखे ठाकुरकी धमकिनमें ❋ सब दल रेनबेन ह्वइजाय ॥
जौन गोल होइ मलिखे निकरैं ❋ तहँपर काटि करैं खरिहान
नचै बेंदुला बघ ऊदनिको ❋ भाला नागदौनिको हाथ ॥
क्यागतिबरणौंत्यहिअवसरकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय
बाइस हौदा खाली करिकै ❋ घोडा बेंदुला दियो बढाय॥
जायकै पहुँचे तब जोगा पर ❋ औ ऊदनिने कही सुनाय ।
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ देखैं कापर राम रिसायँ ॥
यह मन भायगई जोगाके ❋ तब ऊदनिते लगो बतान ।
तुम परदेशी हौ नैनागढ ❋ पहली चोट करो तुम आय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ जोगा सुनौ हमारी बात ।
पहली उचौनी हम ना खेलैं ❋ ना भागेके परैं पिछार ॥
चोट चलाय लेउ अपनी तुम ❋ मनके मेटि लेउ अरमान ।
इतनी सुनतै तब जोगाने ❋ करमें लीन्हीं लाल कमान
तानि कमनियाँ भुजदंडन पर ❋ समुहे कैबर दियो चलाय ।
घोडा बंदुला दहिने ह्वइगयो ❋ कैबर निकारि गयो वा पार॥
बचिगे ऊदनि रस बेंदुल पर ❋ जोगा लीन्हीं साँग उठाय ।
सो धारि धमकी बघ ऊदनिपर ❋ ऊदनि लैगये चोट बचाय॥
बोले जोगा तब ऊदनिते ❋ ऊदनि सुनौ हमारी बात ।
चुप्पे लौटिजाउ महुबेको ❋ अबहूँ मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ हम ना धरैं पिछारू पाँव ।
चोट आपनी औरौ करिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ॥

इतनी बात सुनी जोगाने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि ।
करो जडाका जब ऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
तीनि शिरोही जोगा मारी ❋ ऊदनि लीन्हीं चोट बचाय
कावा दैकै बघ ऊदनिने ❋ अपनो भाला दियो चलाय
लगो चपेटा तब घोडाके ❋ घोडा पाँच कदम हटिजाय
यह गति देखी जब जोगाकी ❋ तब भोगाने दियो जवाब ॥
सम्हरौ ऊदनि तुम घोडापर ❋ तुम्हरो काल रहो नियराय।
मलिखे आयगये समुहेपर ❋ औ भोगाको दियो जवाब
खबरदार घोडापर बैठौ ❋ तुमपर रहेउ काल मँडराय ।
इतनी सुनतै भोगा जरिगे ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
करो जडाका जब समुहेपर ❋ मलिखे लेगे चोट बचाय ।
गुर्ज उठाय लियो मलिखेने ❋ सो भोगापर दियो चलाय॥
लगो चपेटा तब घोडाके ❋ घोडा बीस कदम हटिजाय।
दाबे बेंदुला ऊदनि आये ❋ औ मलिखेते कही सुनाय॥
हाथ चलैयो ना भोगापर ❋ नहिं कछु काम बनैगो नाहिं
नेगु करैहै को मडयेपर ❋ ताते मानौ बात हमारि ॥
इतनी बात सुनी ऊदनिकी ❋ तब हटिगये वीर मलिखान
घोडी बढाय दई आगेको ❋ समुहे गोल गये समुहाय ॥
मलिखे ऊदनि दोनों बिचले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि।
भगे सिपाही नैनागढके ❋ अपने डारि डारि हथियार॥
तीनि लाख लश्कर जोगाको ❋ रहिगये एक लाख असवार।
कठिन लडाई भइ धूरेपर ❋ औ बहिचली रक्तकी धार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय ।
भागो लश्कर नैपालीको ❋ महुबेवाले परे पिछार ॥
जोगा भोगा सोचन लागे ❋ अब लश्करको भयो बिनाश।

दोनों चलिभये नैनागढको ❋ औ दरबार पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी नैपालीको ❋ औ लश्करको कहो हवाल।
बडे लडैया महुबेवाले ❋ सब दल काटिकरो खरिहान
लश्कर भागिगयो खेतनते ❋ ताको करिहो कौन उपाय।
इतनी सुनिकै नैपाली तब ❋ मनमें बहुत गये घबराय ॥
चलिभये राजा फिरि ड्योढीते ❋ आम खास में पहुँचे जाय।
देखि कोठरी तब राजाने ❋ अमरढोल ना परी दिखाय॥
देखि हकीकति राजा सोचैं ❋ मनमें गये सनाका खाय।
राजा लौटिपरे बँगलाको ❋ औ लारिकनते कही सुनाय ॥
चोरी ह्वैगइ अमरढोलकी ❋ सो लैगयो बनाफर राय।
चलिभयो राजा तब बँगलासे ❋ देवीकि मठी पहूँचो जाय ॥
पूजा करिकै जगदम्बाकी ❋ औ फिरि होमदियो करवाय।
शीश चढावनके हित राजा ❋ अपने मनमें कियो विचार॥
आभा बोली तब देवीकी ❋ राजा धीर धरो मनमाहिं।
ढोलक पाई तुम इन्दरते ❋ सो हम ढोलक दिहैं मँगाय॥
इतनी सुनिकै राजा लौटे ❋ औ दरबार पहूंचे आय।
देवी पहुँची इन्द्रलोकमें ❋ औ वह ढोलक माँगनलागि॥
बोले इन्दर तब देवनते ❋ अबहीं मृत्युलोकको जाउ।
अमरढोल लावो जल्दीते ❋ हमरी नजरि गुजारो आय ॥
देव झपटिगये मृत्युलोकको ❋ लाये अमरढोल तत्काल।
बोले इन्दर तब देवीते ❋ देवी सुनो हमारी बात ॥
आल्हा अम्मर हैं दुनियाँमें ❋ यह बर दियो शारदामाय।
काम नशैहैं सब आल्हाके ❋ जो अब ढोलक दिहो गहाय॥
हुक्म देदियो यह इन्दरने ❋ औ देवनसे कही सुनाय।
ढोलक फोरि देउ जल्दीते ❋ जामें दुओ धर्म रहिजायँ ॥

देवी चलिभइ इन्द्रलोकते ❋ औं, मठियामें पहुँची आय ।
सपना दीन्हों नैपालीको ❋ इन्दर ढोलक दई फुराय ॥
करौ लडाई तुम कोईबिधि ❋ अपनो कारज लेउ बनाय ।
भोर होतखन नैपालीने ❋ अपनो कलमदान मँगवाय ॥
लैकै कागद कलपीवालो ❋ अरिनन्दनको लिखो हवाल ।
पहले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पाछेते लिखी जोहार ॥
तेहिते पाछे लिखी हकीकति ❋ याको पढियो चित्त लगाय ।
नगर महोबा इक बस्ती है ❋ जहँपर बसत रजा परिमाल ॥
तहँते आल्हा ब्याहन आये ❋ ओछी जाति बनाफर राय ।
जो कहुँ ब्याह होय आल्हासँग । तौ रजपूती जाय नशाय ॥
जल्दी आवौ सुन्दर बनते ❋ सबकी कटा देउ करवाय ।
बडे लडैया हैं महुबेके ❋ जिनते हारि गई तलवारि ॥
यहिविधि चिट्ठी राजा लिखिकै ❋ सो धावनको दई गहाय ।
लैकै पाती धावन चलिभयो ❋ औ सुन्दर बन पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी अरिनन्दनकी ❋ धावन उतारिपगो अरगाय ।
करी बन्दगी अरिनन्दनको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरि बदलिगइअरिनन्दनकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ।
खोलिकै पाती राजा बाँची ❋ आँकुइ आँकु नजरिकै जाय ॥
तुरत नगडचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय ।
बजो नगाडा तब लश्करमें ❋ क्षत्री तुरत भये हुसियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्रिन धरे रकाबन पायँ ॥
हाथी चढैया हाथिन चाढिगये ❋ बाँके घोडनपर असवार ।
पैदल सजिगये सुन्दरबनके ❋ जिनके सजत न लागी बार ॥
चौथे डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।

करी तयारी तब अरिनन्दन * घट गंगाजल लियो मँगाय
करि अस्नान ध्यान शंकरको * पूजी बहुरि शारदा माय।
चन्दन दीन्हों निज माथेपर * भुजदंडनमें लियो लगाय
लंग चढाई रेशमवाली * जामें तेग नाहिं अनियाय
बारह छुरियाँ कम्मर बाँधे * कलहा दुइ बाँधै तलवारि
अगल बगलपर दुइ पिस्तौलें * दहिने सिहिनि मूठि कटार
भाला सोहै नागदौनिको * बायें ओर गैंडकी ढाल॥
अपनो हाथी त्यार करायो * औ अरिनन्दन भयो सवार
लश्करचलिभयो अरिनन्दनको * नैनागढकी पकरी राह॥
तीनि दिना मारगमें लाये * औ धुरेपर पहुँचे आय।
लश्कर उतारि परो नदीपर * अपने डेरा दिये लगाय॥
नावें भेजिदई नदीपर * तिनपर नाच दियो करवाय
वही समैया आल्हा आये * नदी करनहेत असनान
नचैं कंचनी तहँ नावनपर * जिनकी शोभा कही न जाय
तान मनोहर तिनकी सुनिकै * आल्हा निकट पहूँचे जाय
मूरति देखी अरिनन्दनने * तब आल्हाते पूछन लाग।
कहाँके बासी तुम ठाकुर हौ * आगे काह तुम्हारो नाम॥
बोले आल्हा अरिनन्दनते * तुम सुनिलेउ हमारी बात।
हम रहवैया हैं महुबेके * जहँपर बसत रजा परिमाल
तिनके घरमें हम उपजे हैं * राजा दस्सराजके लाल।
नाम हमारो सब जानत है * आल्हा नाम प्रगट संसार
इतनी बात सुनी अरिनन्दन * तब आल्हाते लगे बतान।
नगर महोबामें पारस है * लोहा छुवत सोन ह्वइजाय
बडे प्रतापी चन्देले हैं * तुम्हरो नाम जगत सरनाम
हियाँ नावपर तुम चढिआवो * देखौ नाच कंचनिन क्यार

इतनी सुनिकै आल्हा चढ़िगै ❋ राजा चौकी दई डराय।
बैठिकै आल्हा देखन लागे ❋ सुन्दर नाच कंचनी क्यार
देखि दुचित्तो जब आल्हाको ❋ राजा नाव दई खुलवाय।
मारो धक्का मल्लाहनने ❋ लागी जाय नाव वा पार
कैद कराय लई आल्हाको ❋ सुन्दरबनकी पकरी राह।
बहुत देर आल्हाको ह्वइगइ ❋ ऊदनि सोचि सोचि रहिजायँ
तौलौं रुपना आय पहूँचो ❋ ताते ऊदनि पूँछन लाग।
आल्हा दादाको कहँ छाँडेउ ❋ सो तुम हमाहिं देउ बतलाय
इतनी सुनिकै रुपना बोलेउ ❋ हमते कछू कही ना जाय।
जो अग्निनन्दन सुन्दरबनके ❋ सो नदी पर पहुँचे आय॥
नावैं लगवाईं नदीमें ❋ तिनपर नाच दियो करवाय
आल्हा निकट गये नावनके ❋ अग्निनन्दनने लियो बुलाय
ऊँची चौकी तिन डरवाई ❋ आल्हा बैठिगये अरगाय।
देखि दुचित्ता जब आल्हाको ❋ राजा नाव दई खुलवाय॥
पार लागिगइ जब नौका वह ❋ आल्है कैद लियो करवाय
कूच कराय दियो अग्निनन्दन ❋ सुन्दर बनको गयो लिवाय
मलिखे सोचैं अपने मनमें ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय।
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❋ अबहीं कैद लेयँ छुड़वाय॥
ऊदनि बोले तब मलिखेते ❋ दादा धीर धरौ मनमाहिं।
तुरत बुलाय लियो ढेबाको ❋ भया सगुन देउ बतलाय॥
खोलि पत्तरा ढेबा बोलेउ ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय
रूप बनावौ सौदागरको ❋ घोड़ा बेंदुला लेउ सजाय।
घोड़ा करेलियाको सजवावो ❋ औ सुंदरबन जाउ लिवाय
करौ बहाना तुम बेंचनको ❋ आल्है लैयो संग लिवाय॥
इतनी सुनतै उदनि बाँकुड़ा ❋ घोड़ा करेलिया लियोमँगाय

घोडा बेंदुलाको मँगवाया ❀ औ कठलानी दई धराय ॥
तंग खिंचाय दिये रेशमके ❀ सुन्दर जीन दिये कसवाय।
डारि रकाबैं दइँ चाँदीकी ❀ बारन मोती दिये पुराय ॥
कलँगी लैकै मोतीचूरकी ❀ सो धरवाई उदैसिंह राय।
डारि हमेलैं दइँ कन्ठनमें ❀ माथे हीरा दियो धराय ॥
झूलैं डारि दईं मखमलकी ❀ शोभा कछू कही ना जाय॥
रूप बनायो सौदागरको ❀ ऊदनि कूच दियो करवाय॥
चारि दिना मारगम बाते ❀ सुन्दर वनमें पहुँचे जाय।
लगी कचहरी अरिनन्दनकी ❀ अजगर लागिरहा दरबार॥
ऊदानि पहुँचे जब फाटकपर ❀ दरवानीने कही सुनाय।
कौन देशके तुम बासी हो ❀ औ है कहा तुम्हारो काम॥
बोले ऊदनि दरवानीते ❀ राजै खबरि सुनावौ जाय।
यक सौदागर है घोडनको ❀ अच्छे घोडा लेउ खरीदि॥
इतनी सुनतै दरवानीते ❀ राजै खबरि सुनाई जाय।
सौदागर आयो घोडनको ❀ सो तुम देखि लेउ महराज॥
ऐसे घोडा हम ना देखे ❀ जिनको रूप न बरनो जाय
इतनी सुनतै दरवानीते ❀ अरिनन्दनने कही सुनाय
जल्दी भेजौ तुम घोडनको ❀ सौदागरको देउ पठाय।
सुनते लौटा दरवानी तब ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय॥
ओ सौदागर काबुल वाले ❀ जल्दी घोडनको लै जाउ।
ऊदानि चलिभये ले घोडनको ❀ बीच कचहरी पहुँचे जाय॥
देखे घोडा अरिनन्दनने ❀ ओ सौदागर बात बनाउ।
मोल बतावौ इन घोडनको ❀ साँचे दाम देउ बतलाय ॥
ऊदनि बोले तब राजाते ❀ राजा सुनौ हमारी बात।
बडे मोलके ये घोडा हैं ❀ अबहीं मोल बतैहैं नाहिं ॥

पहिले फेरि लेउ घोडनको ❋ इनकी चाल लेउ पहिचानि॥
तबहीं कीमति मालुम हुइहै ❋ सो तुम जानिलेउ महराज ।
इतनी बात सुनी अरिनन्दन ❋ तब क्षत्रिनको लियो बुलाय
चाल दिखावो इन घोडनकी ❋ हमरे समुहे देउ फिराय ॥
जो क्षत्री समुहे पर आवै ❋ सो घोडनको देखि डराय ।
ज्वाब दैदियो सब क्षत्रिनने ❋ हमते ये फिरिबेके नाहिं ॥
बोले उदनि तब राजाते ❋ राजा बचन करो परमान ।
घोडा लाये हम काबुलते ❋ बेंचे पाँच महोबे माहिं ॥
दुइ घोडा झुन्नागढ बेंचे ❋ ये उडिजायँ पवनके साथ ।
होय ज्वान झुन्नागढको ❋ या कोउ होय महोबियाज्वान
तेहि बुलवावो यहि समया पर ❋ सो घोडनको लेय फिराय
इतनी सुनतै अरिनन्दनने ❋ तब आल्हाको लियो बुलाय
औ यह हुक्म दियो आल्हाको ❋ घोडा फेरि दिखावो आय ।
कैद माफ तुम्हरी करिदेहै ❋ जो तुम चालदेउ दिखलाय
इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ सुमिरेउ कृष्णचन्द्र भगवान
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ ले बजरंगबलीको नाम ॥
कूदि बछेरापर चढि बैठे ❋ ऊदनि करो इशारा आय ।
ऊदनि चढिगये रसवेंदुलपर ❋ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार
ऍड लगाय दई घोडनके ❋ फाटक निकरि गये वा पार
धावा मारो एक दिनाको ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी नर मलिखेको ❋ औ ऊदनिने कही सुनाय ।
करो तयारी अब लडिबेकी ❋ दादा भाँवरि लेउ डराय ॥
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❋ तुरत नगरची लियो बुलाय
बजे नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर सबै होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।

पहले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्रिन धरे रकाबन पायँ ।
हाथी चढैया हाथिन चढि गये ❋ बाँके घोडनके असवार ॥
घोडा बेंदुला पर ऊदनि हैं ❋ घोडी कबुतरीपर मलिखान।
हथिपचशावद त्यार करायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोडा हरनागरपै जगनिकहैं ❋ ढेबा मनुरथा पर असवार ।
घोडा करेलिया पर सुलिखेहैं ❋ सैयद सिंहिनि पर असवार॥
मन्ना गूजर महुबेवालो ❋ सोऊ तुरत भयो तैयार ।
रुपना बारी महुबेवालो ❋ घोडीहिरौंजिनिपरअसवार
मारू डंकाके बाजत खन ❋ लश्कर चला बनाफरक्यार ।
बोले ऊदनि सब क्षत्रिनते ❋ यारो सुनो हमारी बात ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भैया लगो हमार ।
जीतिक चलिहो जब महुबेको ❋ सबकी तलब दिहैं बढवाय॥
दियो बढावा सब क्षत्रिनको ❋ औ आगेको दियो बढाय ।
लश्कर पहुँचो रणखेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
खबरि सुनी जब नैपालीने ❋ तीनों लरिका लिये बुलाय ।
जल्दी लश्कर तुम सजवाओ ❋ महुबेवारेन देउ भगाय ॥
जोगा भोगा बिजया बेटा ❋ तीनों लश्कर पहुँचे जाय ।
हुक्म दे दियो तब लश्करमें ❋ डंका तुरत दियो बजवाय ॥
बजो नगारा नैनागढमें ❋ क्षत्री होनलगे तैयार ।
मारू डंकाके सुनते खन ❋ क्षत्री साजि भये तैयार ॥
तीनों लरिका नैपालीके ❋ तुरते घोडन भये सवार ।
पूरन राजा पटना वालो ❋ अपने हाथी पर असवार ॥
लश्कर चलिभयो नैनागढको ❋ औ खेतनमें पहुँचो जाय ।
आगे बढिके जोगा बोलो ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥

कूच कराय जाउ महुबेको ❋ नाहक दहौ प्राण गँवाय ।
बोले ऊदनि तब जोगाते ❋ जल्दी भाँवरि देउ डराय ॥
कही हमारी जोगा मानो ❋ नाहक रारि बढावत आय ।
इतनी सुनिकै जोगा बोलेउ ❋ यहँपर ब्याह होनको नाहिं॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ अपनो कूच जाउ करवाय ।
इतनी सुनतै ऊदनि तडपे ❋ औ जोगा को दियो जवाब॥
ब्याहिकै जैहैं नैनागढते ❋ हमरो नाम उदैसिंहराय ।
हमहैं लडिका दस्सराजके ❋ रानी देवकुँवरिके लाल ॥
बातन बातन बतबढु ह्वइगयो ❋ औ बातनमें बाढिगइ रारि ।
जोगा लौटि परो लश्करमें ❋ तोपन बत्ती दइ लगवाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ गोला चलनलगे तत्काल ।
अररर अररर गोला छूटैं ❋ गोली मन्न मन्न मन्नाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ।
मारु बन्दभइ तब तोपनकी ❋ क्षत्रिन खैंचिलई तलवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजे ❋ सर सर परी तीरकी मारु ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही नैनागढके ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
भगत सिपाही जोगा देखे ❋ अपनो घोडा दियो बढाय॥
जोगा बोलेउ तव ऊदनिते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
शूर जुझायेते का पैहौ ❋ हम तुम खेलैं जूझ अघाय ॥
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ।
चोट आपनी जोगा करिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ॥
इतनी बात सुनी जोगाने ❋ तुरतै लीन्हीं लाल कमान ।
हिकरा डटिकै बघ ऊदनिको ❋ सम्मुह छौंडि कबरी दीन्ह ॥
घोडा बेंदुला दहिने होइगयो ❋ कैबर निकरि गयो वा पार ।

भाला लैके फिरि जोगाने ❋ बघ ऊदनिपर दियो चलाय
बचिगा बेटा दस्सराजका ❋ जागा खाचि लइ तलवारि ।
चोट चलाई जब ऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ जोगाकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ।
जोगा सोचै अपने मनमें ❋ हमरो काल रहा नियराय ॥
ढालकि अवझड ऊदनि मारी ❋ औ जोगाको दियो गिराय
भुजा पकरिकै त्यहि जोगाकी ❋ ऊदनि लियो जँजीरन बाँधि
देखि हकीकति यह भोगाने ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ।
घोडी दाबे मलिखे आये ❋ औ भोगाते कही सुनाय ॥
खबरदार घोडापर रहियो ❋ तुमपर आयगयो मालिखान ।
इतनी सुनतै भोगा ठाकुर ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जडाका नर मलिखेपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल
तीनि शिरोही भोगा मारी ❋ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय
ढालकि औझड मालिखे मारी ❋ औ भोगाको दियो गिराय
दंड बाँधिलइ तब भोगाकी ❋ तुरतै कैद लई करवाय ॥
यह गति देखी जब बिजयाने ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ।
ढेबा आयगयो समुहेपर ❋ औ बिजयाते कही सुनाय ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखैं कापर राम रिसायँ ।
इतनी सुनिकै तब बिजयाने ❋ तुरतै खैंचिलई तलवारि ॥
सो धरि धमकी नर ढेबापर ❋ ढेबा दीन्हीं ढाल अडाय ।
तीनि शिरोही बिजया मारी ❋ उनकी टूटिगई तलवारि ॥
बिजया सोचै अपने मनमें ❋ हमरो काल रह्यो नियराय
ढालकि औझड ढेबा मारी ❋ औ बिजयाको दियो गिराय
मुश्क बाँधिकै त्यहि बिजयाकी ❋ तुरतै कैद लई करवाय
देखि हककिति पूरन राजा ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ॥

तौलौं जगनिक दाखिल ह्वइगये ❋ औ पूरनको घेरचो जाय
सम्हरिकै बैठो तुम हाथीपर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नगिचाय
घोडा बढाय दियो जगनिकने ❋ दुइ मस्तीक अडाये पाँव ॥
करो जडाका इक हाथीपर ❋ मारि महावत दियो गिराय
देखि तमाशा पूरन राजा ❋ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय॥
सोधरि धमकेउ उनजगनिकपर ❋ जगनिक लैगे चोट बचाय
घोडा बढायो फिरि जगनिकने ❋ औ हौदापर पहुँचे जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ जगनिकने ❋ सो हौदामें दियो चलाय ।
चोट बचाय लियो पूरनने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ॥
कलशा गिरिगये अम्बारीके ❋ सोने फूल गिरे झन्नाय ।
गाफिल करिकै उन पूरनको ❋ जगनिक लीन्हों कैद कराय
चारों बँधिगये जब खेतनमें ❋ लश्कर रैन बैन होइजाय ।
लश्कर लौटि परो आल्हाको ❋ औ डेरापर पहुँचो जाय ॥
जीति देखिकै सुनि आल्हाको ❋ माहिल उरईके परिहार ।
लिल्ली घोडीपर चढि बैठे ❋ नैनागढकी पकरी राह ॥
जहाँ कचहरी नैपालीकी ❋ माहिल तहाँ पहूँचे जाय ।
उतरि बछेरीते भुँइ आये ❋ नैपालीको करी सलाम ॥
नजरि बदालि गइ नैपालीकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ।
आवो आवो उरईवाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
माहिल बोले तब राजाते ❋ हमते कछू कही ना जाय ।
बड शूर हैं महुबेवाले ❋ तिनको कोउ जितैया नाहिं
बाँधे लडिका सब तुम्हरे उन ❋ औ पूरनको लियो बँधाय ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ ताते ब्याह मुनासिब नाहिं
जतन बतावैं हम तुमको अब ❋ सो तुम मानिलेउ महराज ।
करि आधीनी तुम आल्हाते ❋ लावो अपने संग लिवाय ॥

क्षत्री बैठारो कोठरिनमें ❋ सबके शीश लेउ कटवाय॥
इतनी सुनिलइ नैपालीने ❋ तब चालिबेको भये तयार।
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ नेगी लीन्हें संग लिवाय॥
चलिभयो राजा नैनागढ़ते ❋ आये जहाँ बनाफर राय।
तहँ नैपाली पूछन लागे ❋ औ क्षत्रिनते कही सुनाय॥
कौनसो तम्बू है आल्हाको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
रुपना बारी बोलन लागेउ ❋ नैपालीते कही सुनाय॥
ऊचा तम्बू है आल्हाको ❋ झंडा लाल बरन फहराय।
चोपदार द्वारेपर ठाढ़े ❋ तहँ तुम चले जाउ महराज॥
तब नैपाली गयो तम्बूमें ❋ औ आल्हाको करी जोहार
मूरति देखी नैपालीकी ❋ आल्हा चौकी दई डराय॥
करी अधीनी नैपालीने ❋ धनि धनि दस्सराजके लाल
धन्य भाग्य रानी देवेके ❋ जहँ तुम आनिलियो औतार
धन्य भाग्य हैं परिमालेके ❋ जिन घर तुम समान सरदार
धनि धनि नगर महोवा कहिये ❋ प्रगटे जहाँ बनाफरराय॥
धन्य भाग्य हमरी बेटीके ❋ ऐसे शूर मिले वर आय।
अबहीं साइति है ब्याहेकी ❋ देवा लग्न करो तुम ब्याह॥
होयँ घरैया जो तुम्हरे कोउ ❋ सो सब चलें हमारे साथ।
बातें सुनिके नैपालीकी ❋ तुरते कही बीर मलिखान॥
डंका बाजे हमरे दलमें ❋ लश्कर साजि होय तैयार।
बोले नैपाली मलिखेते ❋ तुम सुनिलेउ बनाफरराय
काम नहीं है तहँ लश्करको ❋ अकिले आल्हे देउ पठाय।
तुरते भाँवरि कारि आल्हाकी ❋ अबहीं बिदा दिहौं करवाय
इतनी सुनिके ऊदनि बोले ❋ तुम घटि करौ हमारे साथ
सुनते राजा नैपालीने ❋ तुरतै गंगा लई उठाय॥

सांची मानिलई आल्हाने ❋ अपनी त्यारी दई कराय।
मलिखे सुलिखे ऊदनि ढेबा ❋ मन्ना गूजर भयो तयार॥
रुपना बारी ताल्हन सैयद ❋ अपनी त्यारी दई कराय।
चारौं नेगी सग लिवाये ❋ आल्हा पलकी भये सवार
चली पालकी जब आल्हाकी ❋ जोगा भोगा दिये छोडाय।
बिजया बेटा औ पूरनकी ❋ तुरतै कैद दई छुटवाय॥
आठ घरौआ औ सब नेगी ❋ नैनागढमें पहुँचे आय।
जाय पहूँचे दरवाजेपर ❋ तब नैपाली कही सुनाय॥
मँडओ गाडि देउ आँगनमें ❋ चारौं नेगी लेउ बुलाय।
इतनी सुनि जोगा भोगाने ❋ सिगरे नेगी लिये बुलाय॥
मँडवा गडवायो आँगनमें ❋ सखियाँ करैं मंगलाचार।
पंडित वेद उचारन लागे ❋ ब्याहकि बेदी लई बनाय॥
करी सलाहैं नैपालीने ❋ सब लरिकनको लियो बुलाय
दुइ हजार क्षत्री बुलवाये ❋ सो कोठरिनमें दिये छिपाय
भयो बुलौवा जुनि आल्हाको ❋ सब मडयेतर पहुँचे जाय।
फाटक बन्द भयो द्वारेको ❋ तुरतै ब्याह होन तब लाग॥
पहिली भाँवारिके परतै खन ❋ जोगा खैंचि लई तलवारि।
करो जडाका जब आल्हापर ❋ मलिखे दीन्हीं ढाल अडाय
दुसरी भाँवारिके परतै खन ❋ भोगा खैंचिलई तलवारि।
चोट चलाई तब आल्हापर ❋ ऊदनि दीन्हीं ढाल अडाय
तिसरी भाँवारिके घूमत खन ❋ बिजया खैंच लई तलवारि।
कीन्ही चोट जबहिं आल्हापर ❋ ढेबा लैगयो चोट बचाय॥
घाव न आयो कछु आल्हाके ❋ दहिने भई शारदा माय।
चौथी भाँवारिके परतै खन ❋ राजा जादू लियो उठाय॥
जादू डारिदियो सबहिनपर ❋ सबके होश बन्द ह्वैजायँ

सुनवाँ सोच करै अपने मन ❀ अब सब जैहैं काम नशाय॥
बीर महमदावाली पुरिया ❀ सो सुनवाँने दई चलाय।
भई लडाई तब जादूकी ❀ भाँवारि फिरी बनाफर राय॥
बोली सुनवाँ बघ ऊदानिते ❀ अबहीं बिदा लेउ करवाय।
सुनत ऊदनि रुपने बोलेउ ❀ भया सुनो हमारी बात॥
पलकी लावौ दरवाजेते ❀ अबहीं बिदा लेयँ करवाय।
सुनते रुपना गयो द्वारेपर ❀ तुरत पालकी लाओ लिवाय
सुनवाँ बैठिगई पलकीमें ❀ राजा हल्ला दियो कराय।
जान न पावैं महुबेवाले ❀ सबके शीश लेउ कटवाय॥
क्षत्री निकरिपरे कोठारिनते ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवार
बहुत लडाई भइ आँगनमें ❀ औ बहिचली रक्तकी धार॥
बडे लडैया महुबेवाले ❀ बहुतक क्षत्री दिये गिराय।
बहुतक भागिगये समुहेते ❀ अपने डारि डारि हथियार॥
जोगा भोगा औ बिजयाकी ❀ मुश्कें बाँधि लईं तत्काल।
चली पालकी रानि सुनवाँकी ❀ तीनों भैया बढे अगार॥
धावा करि दियो नेपालीने ❀ अपनो लश्कर संग लिवाय।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❀ खटखट चलन लगी तलवार
आठौ शूर महोबेवाले ❀ तहँपर कठिन करी तलवारि।
सबके पीछे आल्हा रहिगये ❀ ऊपर परी गुर्जकी मारु॥
पहुँचे नैपाली आल्हापै ❀ अपनी जादू दई चलाय।
कैद कराय लियो आल्हाको ❀ औ क्षत्रिनते कही सुनाय॥
हाथ चलैयो ना आल्हापर ❀ तीनों लडिका बँधे हमार।
आल्है बाँधिलेउ बदलेमें ❀ चुगल दहक देउ डरवाय॥
ऐसे दहक परे आल्हा तब ❀ अब लश्करको सुनो हवाल
ऊदनि बोले नर मलिखेते ❀ दादा करिहो कौन उपाय॥

पता नहीं है कहुँ भैयाको ❋ ताको अब कछु करौ उपाय।
भयो बुलौआ तब ढेबाको ❋ भैया सगुन देउ बतलाय॥
भया लश्करमें नाहीं हैं ❋ सो कहँ मिलिहैं देउ बताय।
खोलिकै पत्रा ढेबा देखो ❋ औ मलिखेते कही सुनाय॥
आल्है बाँधो नैपालीने ❋ चुंगलदहक दिया डरवाय।
जाय छुडावौ सौदागर बनि ❋ अपने घोडा लेउ सजाय॥
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❋ तब सुनवाँते कही सुनाय।
बाप तुम्हारे गगा करिकै ❋ फिरि घटि करी हमारे साथ
बोली सुनवाँ तब ऊदनिते ❋ हमहू चलैं तुम्हारे साथ।
घोडाकरिलियाको सजवावौ ❋ औ साजलेउ बेंदुला घ्वाड
खोज लगैहैं हम बालमकी ❋ तुम्हरोकामसिद्धि होइजाय
घोडा बेंदुला त्यार करायो ❋ ऊदनि फाँदि भये असवार॥
घोडा करिलिया कोतलल्कै ❋ संगै सुनवैं लियो लिवाय।
जाय पहूँचे नैनागढमें ❋ औ मालिन घर करा मुकाम
सुनवाँबोलीत्यहिमालिनिते ❋ पोहपा सुनो हमारी बात।
हाल हमारो कोउ जानै ना ❋ पहुँचो राजद्वारमें जाय॥
देखिकै आवौ तुम बालमको ❋ हमको खबरि सुनावौ आय
बोली मालिनि रनि सुनवाँते ❋ अबहीं तुमहिं देउँ बतलाय॥
शीशमहलमेंआल्हामिलिहैं ❋ पहुँचो गूजरि रूप बनाय।
इतनी सुनतै रनि सुनवाँने ❋ गूजरि रूप धरो तत्काल॥
धरी दहेंडी तब माथेपर ❋ औ महलनमें पहुँची जाय।
सूरति देखी जब गूजरिकी ❋ तब आल्हाने कही सुनाय॥
बहुत पियारी हमको लागी ❋ दहीको मोल देउ बतलाय।
बोली सुनवाँ तब आल्हाते ❋ गढ चित्तौर है देश हमार॥
मोहन राजाकी बेटी हौं ❋ तुम्हरी कैद लिहौं छोंडवाय।

देउ निशानी तुम हमको कछु ❋ आय छुडे हैं बापु हमार ॥
इतनी सुनतै काढि अँगूठी ❋ सो सुनवाँको दइ पकराय ।
पहिरि मुँदरियासुनवां चलिभइ । औ मालिनिघर पहुँची जाय
बोला सुनवाँ बघ ऊदनिते ❋ देवर सुनो हमारी बात ॥
जल्दी पहुँचो शीशमहलमें ❋ दोनों घोडा साथ लिवाय
ऊदनि चलिभये सौदागर बनि ❋ शीशमहल पै पहुँचे जाय ।
जबहीं पहुँचे दरवाजेपर ❋ दरवानीने कही सुनाय ॥
कौन देशते तुम आये हो ❋ यहँपर कौन तुम्हारो काज
बोले ऊदनि दरवानीसे ❋ गढ काबुल है देश हमार ॥
घोडा लाये हैं बेंचनको ❋ राजै खबरि सुनावो जाय ।
गयो दरवानी तब भीतरको ❋ औ घोडनको कह्यो हवाल
राजा आये दरवाजेपर ❋ ऊदनि करी बन्दगी आय ।
देखी सूरति जब घोडनकी ❋ राजा मोहि मोहि रहिजायँ
ऊदनि बोले तब राजाते ❋ ओ महराज गरीबनेवाज ।
चाल देखिकै इन घोडनकी ❋ पीछे कीमति लेउ चुकाय ॥
इतनी सुनिकै नैपालीने ❋ बहुतक क्षत्री लिये बुलाय ।
चाल दिखाय देउ घोडनकी ❋ तब क्षत्रिनने दियो जवाब ॥
बहुते चंचल ये घोडा हैं ❋ हमरे फेरनके हैं नाहिं ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ राजा सुनो हमारी बात ॥
बडे चढैया हैं दिल्लीके ❋ या महुबेके राजकुमार ।
होय जो क्षत्री इनमें कोऊ ❋ सो घोडनको दिहै फिराय
इतनी सुनतै नैपालीने ❋ आल्है तुरत लियो बुलवाय
चाल दिखाय देउ घोडनकी ❋ तुम्हरी कैद माफ होइजाय
देखि इशारा बघ ऊदनिको ❋ आल्हा बहुत खुशी ह्वइजायँ
कूदि बछेरापर चढिबैठे ❋ औ तँबुअनकी पकरी राह

चार घरीके तब अरसामा ❀ तँबुअन बीच पहूँचे जाय ।
सुनी खबरिया रानि सुनवाँने ❀ तँबुअन गये बनाफर राय ॥
कूच कराय दियो जल्दीते ❀ औ लश्करमें पहुँची आय ।
जोगा भोगा औ बिजयाकी ❀ तुरतै मुश्क दई खुलवाय ॥
धीरज दैकै उन तीनोंको ❀ आल्हा बहुत कीन्ह सन्मान
बहुत खुशी ह्वइ जोगा भोगा ❀ बिजया ठाकुर करी सलाम
तीनों चलिभये नैनागढको ❀ पहुँचे चारि घरीमें जाय ।
हाल सुनायो नैपालीको ❀ कलहा दस्सगजको लाल ॥
बडे लडैया महुबेवाले ❀ सातौ भाँवरि लईं डराय ।
शूर प्रगट भये हैं महुबेमें ❀ क्यों ना राज्य करैं परिमाल
राम बनावे तौ बनिजावे ❀ बिगरी बनत बनत बनिजाय
हियाँकि बातैं तौ हियँ छोडौ ❀ अब आल्हाको सुनौ हवाल
आल्हा बोले बघ ऊदनिते ❀ भैया कूच देउ करवाय ।
आज्ञा सुनिकै उदयसिंहने ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
डेरा उखारि गये धूरते ❀ जीतिको डंका दियो बजाय ।
धावा करिकै सात रोजमें ❀ महुबो धुरो दबायो जाय ॥
रोज आठवें मदनताल पर ❀ सबने डेरा दियो डराय ।
फँटैं छुटि गईं रजपूतनकी ❀ महुबे खबरि दई पहुँचाय ॥
रुपना बारी महुबे आयो ❀ दरवाजे पर पहुँचो जाय ।
ठाढी मल्हना जहँ ड्योढी पर ❀ हेरै बाट लरिकवन क्यार ॥
तौलौं रुपना दाखिल ह्वइगो ❀ हाथ जोरिकै कही सुनाय ।
कठिन लडाई भै नैनागढ ❀ भारी बही रक्तकी धार ॥
जंग जीतिकै सब लरिकनते ❀ सातौं भाँवरि लईं डराय ।
काम बनिगयो नैनागढमें ❀ माता सब परताप तुम्हार ।
बिदा कराय लई सुनवाँकी ❀ संगे डोला लियो खँदाय ॥

आइ बरायत मदनताल पर ❀ आगे खबरि दई पहुँचाय ॥
इतनी सुनिकै रानी मल्हना ❀ मनमें बहुत खुशी ह्वै जाय
खबरि फैलिगइ रंगमहलमें ❀ आये व्याहि बनाफर राय
करी तयारी रानी मल्हना ❀ सखियाँ करैं मंगलाचार।
उनहीं पाँयन रुपना लौटो ❀ औ बगनमें पहुँचो आय ॥
खबरि सुनाई रंगमहलकी ❀ महलन होत मंगलाचार।
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❀ चूड़ामनिको लियो बुलाय
साइति देखौ घर जैबेकी ❀ अब पल पलपर होत अन्यार
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❀ अबहीं डोला देउ पठाय ॥
साइति नीकी है जैबेकी ❀ अब ना गरखौ देर लगाय।
भई तयारी सुनि आल्हाकी ❀ पलकी साथ सुनवँदे केरि
आइ पालकी रनि सुनवाँकी ❀ हाथी खड़ा बनाफर क्यार
करी तयारी रनि मल्हनाने ❀ देवै ब्रह्मा लई बुलाय ॥
साजि आरती मल्हना रानी ❀ चौमुख दियना धरो बनाय
बारह रानी परिमालैकी ❀ सो लै थार पहूँचीं आय ॥
भयो बुलौआ तब आल्हाको ❀ संगै चली सुनवँदे रानि।
परछनि कीन्ही रनि मल्हनाने ❀ ऊपर आरति लई उतारि ॥
सुनवाँ आल्हाको सँग लैकै ❀ सो महलनमें गरवे जाय।
आल्हा पाँव छुये मल्हनाके ❀ औ माथेमें लिये लगाय ॥
देवै ब्रह्माके पद छुइकै ❀ सबके चरन छुये मनलाय।
बजी बधाई गढ महुबेमें ❀ घर घर भयो मंगलाचार॥
सुनवाँ रानीने मल्हनाके ❀ हितते चरण छुये तब आय
भेंटमें दीन्हों कर कंगन यक ❀ मल्हना दियो नौलखा हार
मुख दिखराईमें रानिन सब ❀ बहु आभूषण दिये उतारि।
परजा झगरैं गढ महुबेके ❀ सबको मल्हना दियो इनाम

ऊदनि पहुँचि गये लश्करम ❋ सबको खिलतैं दईं बँटाय ।
दगी सलामी गढ महुबेमें ❋ आये जीति बनाफर राय ॥
आदर करिकै सब राजनको ❋ ऊदनि बिदा दइ करवाय ।
जितने राजा आये बराती ❋ अपने देश पहुँचे जाय ॥
ऐसे ब्याह भयो आल्हाको ❋ सो हम लिखिक दियो सुनाय
साँच झूँठ परमेश्वर जानै ❋ पै हम सांची लिखी बनाय
ब्याह सुनैहैं अब मलिखेको ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ।
समय समयपर आल्हा गावो ❋ नित उठिलेउ नाम भगवान

इति नैनागढकी लड़ाई समाप्त ।

श्रीः ।

मलिखानका ब्याह ।

अथ पथरीगढ (कसौंदी) की लडाई ।

दोहा ।

भोलानाथ मनाय उर, धारि हिये घनश्याम ।
ब्याह लिखौं मलिखानको, जो सहाय सियराम ॥ १ ॥

इतनी बेरिया अब क्या गैये ❋ शारद किसको लीजे नाम ।
आदिभवानीके गुण गैये ❋ जाते होयँ सिद्धि सब काम ॥
मातुसरस्वतिको सुमिरनकरि ❋ ले बजरंगबलीको नाम ।
बीर पँवारो मैं गावतहौं ❋ होउ सहाय राम बलधाम ॥
पथरीगढ औ बिसहिनिकहिये ❋ तिसरो कोट कसौंदी नाम ।
तीनि नाम हैं एक नगरके ❋ ब्याहे तहाँ बीर मलिखान ॥
तहँको राजा गज राजा है ❋ शंका करै कालकी नाहिं ।
श्यामा भगतिनि गज राजाघर ❋ जो जादूमें बुरी बलाय ॥
घोडा अगिनियाँ गजराजाको ❋ जो फौजनको देय भगाय ।
गजमोतिनि बेटी राजाकी ❋ जाको रूप न बरनो जाय ॥
सो है चन्द्रमुखी मृगनैनी ❋ शोभा अंग अंग रहि छाय ।
बारह बर्ष केरि गजमोतिनि ❋ नितसखियनसँगखेलनजाय
यकदिनखेलनहितसखियनसँग ❋ फुलबगियामें पहुँचीजाय
एक सखी उनमेंते बोली ❋ बेटी सुनो बिसेनक्यार ॥
तुमहो बेटी गज राजाकी ❋ है परतापी बाप तुम्हार ।
बहुत पियारी हो माताकी ❋ तुम्हरो कीन्हों नाहिंबिवाह ॥
तुम्हरे सँगकी जे सखिया हैं ❋ ब्याही सबै गई ससुरारि ।

क्या धनहीने भये गजराजा ❋ या कुल घटो बिसेने क्यार ॥
इतनी बात सुनी गजमोतिनि ❋ मनमें बहुत गई खिसियाय ।
संगछोडिदियोसबसखियनको ❋ औ माता ढिग पहुँचीआय
आवत देखो जब माताने ❋ बेटिहि लीन्हों कंठ लगाय ।
देखि अनमनी गजमोतिनिको ❋ तब माताने कही सुनाय ॥
काहे बेटी तुम अनमानिहौ ❋ सो सब हाल देउ बतलाय ।
बोली गजमोतिनि मातासे ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
संग सहेली जो हमरी हैं ❋ हमपर करैं हँसौआ आय ।
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❋ जो तुम्हरो नहिंकरतविवाह॥
इतनी बात सुनी माताने ❋ मनमें सोचि सोचि रहिजाय।
दियो दिलासा तब बेटीको ❋ अबहीं टीका दिहौं पठाय ॥
राजा आये रंगमहलमें ❋ तब रानीने कही सुनाय ।
बारह वर्षकि बेटी हुइगइ ❋ क्यों नाहीं कहुँ करो विवाह॥
टीका भेजिदेउ बेटीको ❋ इतनी मानौ बात हमारि ।
इतनी सुनिकै राजा चलिभये ❋ औ दरबार पहूँचे जाय ॥
सूरज बेटाको बुलवायो ❋ चारो नेगी लिये बुलाय ।
टीका बेटीको ले जावो ❋ केहु राजाको देउ चढाय ॥
एक न जैयो नगर महोबे ❋ जहँपर बसैं बनाफर राय ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ कोइ न पियै घडाको पानि॥
दागु लागि है रजपूतीमें ❋ बुडिहै सात साखिको नाम।
इतनी कहिकै राजाने ❋ सब सामान लियो मँगवाय॥
पाँच पालकी नब्बे रजरथ ❋ अच्छे घोडा एक हजार ।
साल दुशाला मोहनमाला ❋ चीरा कलँगी दइ सौंपाय ॥
थार मँगायो यक सोनेका ❋ कीमखाबके थान मँगाय ।
तोडा लैकै दुइ मोहरनके ❋ सोउ थारमें दियो धराय ॥

टीका लक ता।ने लाखको * सो ...... ॥
टीका लैकै नेगी चलिभये * सूरज बेटा संग लिवाय ॥
करी बन्दगी गजराजाको * औ दिल्लीकी पकरी राह ।
सात रोज मारगमें बीते * तब दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
राति बसेरा करि बागनमें * भोरहि करन तयारी लाग ।
तीनि घरीको अरसा गुजरो * औ फाटक पर पहुँचो जाय ॥
बोला दरबानी सूरजते * अपनो हाल कहौ समुझाय ।
कहाँते आये औ कहँ जैहौ * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
यह सुनि सूरज बोलन लागे * राजै खबरि देउ पहुँचाय ।
पथरीगढते सूरज आये * गज राजाके राजकुमार ॥
टीका लाये हैं बहिनीका * सो टीकाको लेउ चढाय ।
उनहीं पायन गयो दरबानी * राजै खबरि सुनाई जाय ॥
भयो बुलौआ तब सूरजको * सो दरबार पहुँचे जाय ।
करी बन्दगी पृथीराजको * पाती गद्दी दई चलाय ॥
पाती बाँची पृथीराजने * तुरते पाती दइ लौटाय ।
ब्याहु न करिहैं हम पथरी गढ * ना हम फौज कटैहैं जाय ॥
ज्वाब पायकै सूरज चलिभये * औ कनउजमें पहुँचे जाय ।
लगी कचहरी जहँ जयचँदकी * बैठे बडे बडे सरदार ॥
पाती दीन्हीं सूरजमलने * जयचँद पाती बाँचन लाग ।
पाती फेरि दई जयचँदने * ना बिसहिनिमें रचैं बिवाह ॥
काठिन मवासी कोट कसौंदी * जहँ पर तपैं बिसेने राय ।
श्यामा भगतिनि जादू फेकै * लश्कर सुन्न मान ह्वइजाय ॥
फौज हमारी ना मारू है * ना कुपियारो पुत्र हमार ।
पाती लैकै सूरज लौटे * औ उरई की पकरी राह ॥
भेंट होइगै बघ ऊदनिते * ऊदनि खेलन गये शिकार ।

राह चलन्ते सूरज देखे ❋ ऊदनि तुरत लियो पहिचानि
हँसिकै ऊदनि पूछन लागे ❋ ठाकुर हाल देउ बतलाय।
कौन कामको तुम आये हो ❋ साँचो हाल कहो समुझाय॥
करो बहाना तब सूरजने ❋ आये करन गंग असनान।
बोले ऊदनि तब सूरजते ❋ चारों नेगी संग तुम्हार॥
बात बतावो तुम साँची अब ❋ नाहक बात बनावत आप।
यह सुनि सूरज बोलन लागे ❋ टीका लिये बाहिनिको जात
देश देशमें हम फिरि आये ❋ टीका कोउ कबूलै नाहिं।
अब हम जैहैं गढ उरईको ❋ जहँ पर बसैं महिल परिहार॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ सूरज सुनो हमारी बात।
लरिका तुमको हम बतलावैं ❋ सो तुम टीका देउ चढाय॥
बेटा कहिये बच्छराजके ❋ जिनको नाम बीर मलिखान
टिका चढावो तुम महुबेमें ❋ जहँपर बसैं रजा परिमाल॥
तापर ज्वाब दियो सूरजने ❋ ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि।
हुक्म नहीं है रज राजाको ❋ ओछी जात बनाफर राय॥
नगर महोबे हम ना जैहैं ❋ हटको हमहिं विसेने राय।
इतनी बात सुनी सूरजकी ❋ ऊदनि अग्निज्वाल ह्वैजायँ॥
चन्द्र वंशके चन्देले हैं ❋ ना कुलहीन रजा परिमाल।
खोटी बातैं क्यों बोलत हो ❋ हमको जानत सकल जहान॥
आल्हा ब्याहे नैनागढमें ❋ हैं नैपाली ससुर हमार।
अब ना हीनी मुखते कहियो ❋ टीका महुबे देउ चढाय॥
बात हमारी सूरज मानो ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय।
यह सुनि सूरज सोचन लागे ❋ टीका महुबे देयँ चढाय॥
बिना चढाये जो हम जैहैं ❋ तौहू बात बनैगी नाहिं।
ब्याह तो करना है काहू घर ❋ देखैं नगर महोबा जाय॥

चलिभये सूरज तब ऊदनिसँग ❋ पहुँचे नगर महोबे आय।
शोभा देखी गढ महुबेकी ❋ सूरज खुशी भये मनमाहिं॥
लगी कचहरी परिमालेकी ❋ भरमाभूत लगा दरबार।
ताल्हा सैयद बनरसवाले ❋ आल्हा और बीर मलिखान
ब्रह्मा ढेबा सुलिखे बैठे ❋ बैठे बडे बडे सरदार।
मोढाके सँग मोढा रगडैं ❋ टिहुना रगडि रगडि रहिजाय
ऊदनि पहुँचि गये सूरज सँग ❋ राजै करी बन्दगी जाय।
करी बन्दगी सूरजमलने ❋ पाती गद्दी दई चलाय॥
खोलिकै पाती राजा बाँची ❋ औ गद्दीतर लई दबाय।
बोले आल्हा तब राजाते ❋ दादा हाल देउ बतलाय॥
कौन देशकी यह पाती है ❋ काहे पाती लई दबाय।
बोले राजा तुनि आल्हाते ❋ बेटा सुनौ हमारी बात॥
यह है चिट्ठी गढ बिसाहिनिकी ❋ गज राजाने दई पठाय।
टीका आयो है बिसाहिनिते ❋ को बिसाहिनिमें करै बिवाह॥
बात हमारी बेटा मानौ ❋ टीका तुरत देउ लौटाय।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा कहँ है ध्यान तुम्हार॥
दुनिया मारि उड़ीना मारों ❋ बाजौ सेतबंद लौं टाप।
अटक पारलौं झंडा गाडो ❋ जीते खुरासान गुजरात॥
धुर दक्खिनते औ काबुललग ❋ बाजी टाप बेंदुला क्यार।
घरमें आयो टीका फेरैं ❋ तो रजपूती जाय नशाय॥
तुमहिं हँसौआको डर नाहीं ❋ तुमको जानत सकल जहान
टीका लौटनको नाहीं है ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ॥
ब्याह रचाय लेउ मलिखेको ❋ टीका तुरत लेउ चढवाय।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ औ ढेबाते कही सुनाय॥
शगुन बताय देउ जल्दीते ❋ ढेबा शगुन बिचारन लाग।

खोलि पत्तरा ढेबा देखो ❋ औ राजाते लगेउ बतान ॥
काम तुम्हारो पूरन होइहै ❋ अबहीं टीका लेउ चढाय ।
इतनी सुनतै पारिमालैने ❋ अपनो हुक्म दियो करवाय
करौ तयारी रंगमहलमें ❋ टीका चढै बीर मलिखान ।
खबरि पहुँचि गइ रंगमहलमें ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वैजाय
करी तयारी रानि मल्हनाने ❋ लागे होन मंगलाचार ।
आँगन लिपवायो गोबरते ❋ मोतिन चौक दई पुरवाय ॥
कलश धराय दियो सोनेको ❋ चन्दन चौकी दई डराय ।
देवै ब्रह्मा दोनों आई ❋ पंडित वेद उचारन लाग ॥
भयो बुलौआ तब सूरजको ❋ बैठे चौक बीर मलिखान ।
पूजा होनलगी गणपतिकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
पग परछाले तब सूरजने ❋ माथे रुचना दियो लगाय ।
बीरा दीन्हों सूरजमलने ❋ चाब्यो तुरत बीर मलिखान
सोने चांदीको गहनो लै ❋ सब नेगिनको दियो गहाय
ऊदनि पहुँचे रंगमहलमें ❋ सोनको डब्बा लाये उठाय
चारों नेगी जो सूरजके ❋ तिनको गहना दो पहिराय ।
गहना बचिगयो जो डब्बामें ❋ सो नेगिनको दो पकराय ॥
बाकी नेगी जो बिसहिनिके ❋ तिनको गहना दियो बँटाय
यह गति देखी जब सूरजने ❋ मनमें खुशी भये सुख पाय
बोले सूरजमल पंडितते ❋ ब्याहाकि साइति देउ बताय
साइति देखी चूडामणिने ❋ माघ महीना दियो बनाय ॥
शुक्लपक्ष तेरसि तिथि नीकी ❋ होवै ब्याह बीर मलिखान ।
सुनिकै साइति सूरज चलिभये ❋ औ बिसहिनिकी पकरी राह
सुनी खबरि जब यह माहिलने ❋ टीका चढो बीर मलिखान
लिल्ली घोडीको मँगवायो ❋ तापर फाँदि भये असवार ॥

राह पकरि लइ पथरीगढकी ❋ पहुँचे आठ दिनामें जाय ।
जहाँ कचहरी गज राजाकी ❋ पहुँचे तहाँ महिल परिहार ॥
उतरिकै लिल्लीते भुइँ आये ❋ बोडी थामि लई थनवार ।
करी बन्दगी गज राजाको ❋ तब राजाकी परी निगाह ॥
आवौ आवौ उरई वाले ❋ ऊंची चौकी दई डराय ।
हाल बताय देउ उरईको ❋ अपनी कुशल देउ बतलाय
यह सुनि माहिल बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ बिसेने राय
कुशल क्षेम है गढ उरईमें ❋ बैठे राज्य करैं महराज ॥
एक बात अनहोनी ह्वैगइ ❋ सो सुनिलेउ बिसेने राय ।
टीका चढिगौ गढ महुबेमें ❋ सूरजमलने दियो चढाय ॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ कोइन पियै घडाको पानि।
बात होतिरहै गज राजाते ❋ तौलों सूरज पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी जब सूरजने ❋ तिनते राजा कही सुनाय ।
कहाँ चढायो तुम टीकाको ❋ बेटा हाल देउ बतलाय ॥
बोले सूरज तब राजाते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
टीका चढाओ हम महुबेमें ❋ जहँ परिमाल चन्द्र सरदार
बोले राजा तब सूरजते ❋ बेटा अक्किल गई तुम्हारि ।
कही हमारी तुम ना मानी ❋ जल्दी टीका लेउ फिराय॥
ब्याह जो ह्वैहै गढ महुबेमें ❋ तौ रजपूती जाय नशाय ।
यह सुनि सूरज बोलन लागे ❋ ददुआ हाल देउँ बतलाय॥
देश देशमें हम फिरि आये ❋ काहू टीका चढायो नाय ।
चारि कोसको फेरु खायकै ❋ हम उरईकी पकरी राह ॥
राह चलंते ऊदनि मिलिगये ❋ पूछन लागे हाल हवाल ।
करो बहाना हम बहुतेरा ❋ ऊदनि जानि गये सब हाल
टीका चढवायो ऊदनिने ❋ टीका अब फिरिबेको नाहिं

बडे लडैया हैं महुबेके ❀ दादा धीर धरौ मनमाहिं ॥
जबहींव्याहन बिसहिनिआवैं ❀ तबहीं लीजौ शीश कटाय
दियाँकि बातैं तौ हियँ छाँडौ ❀ अब आगेको सुनौ हवाल
माहिल लौटिपरे उरईको ❀ पहुँचे आठ रोजमें आय ।
लाग महीना माघ मासको ❀ महुबे होन तयारी लाग ॥
न्यौता भेज्यो सब राजनको ❀ राजा दस्सराजके लाल ।
रूपन राजा सिरँउजवाले ❀ औ जयचंद कनौजी राय॥
न्योता भेज्यो नैनागढमें ❀ राजा नैपाली दरबार ।
न्योता भेज्यो गढ दिल्लीको ❀ जहँपर बसैं बीर चौहान ॥
न्यौता भेज्यो गढ उरईको ❀ जहँपर बसैं महिल परिहार
न्यौता भेज्यो बौरीगढमें ❀ राजा बीरसाह दरबार ॥
न्योता भेजिदियो पत्यउजको ❀ जहँपर राजा मदनगोपाल
न्योता पहुँच्यो जिन राजनके ❀ सो महुबेमें पहुँचे आय ॥
लश्कर परिगयो सब बागनमें ❀ झंडन रही लालरी छाय ।
कोऊ परिगयो कनवां खेरे ❀ कोऊ खजुहागढ मैदान ॥
कोऊ परिगयो मदनतालपर ❀ कोउ बैरागी नालेपै आय ।
घोडा बेंदुलापर ऊदनि चढि ❀ सब राजनको मिले अगार
आदर भाव करो सबहीको ❀ फिरि महुबेमें पहुँचे आय ।
समाचार राजाते कहिकै ❀ अपनी करन तयारी लाग
बोलि नगरचीको बीरा दै ❀ सोने कडा दियो डरवाय।
डका बाजे गढ महुबेमें ❀ लश्कर साजि होय तैयार
बोलि दरोगा तोपन वालो ❀ मोतिन माला दई इनाम ।
बडि २ तोपनको सजवाओ ❀ सो आगेको देउ जुताय॥
बोलि दरोगा घोडन वाले ❀ चीरा कलँगी दई इनाम ।
बडे बडे घोडनको सजवावौ ❀ औ बरातको होउ तयार ॥

जितने घोडा सुघर चालके ❋ सो सब साजि करौ तैयार।
जीन सोनहले धरि घोडनपर ❋ रेशम तंग देउ कसवाय ॥
पूंछ रंगाय देउ केसरिते ❋ औ मेंहदीते सुम्म रंगाय।
डारि हमेलें दउ कल्लन पर ❋ माथे कलँगी देउ धराय॥
बोलि दरोगा हाथिनवालो ❋ मोहन माला दई गहाय।
बडी राशिके जे हाथी हैं ❋ सो बरातको लेउ सजाय॥
करो तयारी तुम जल्दीते ❋ दीन्हों हुक्म शूर सरदार।
डंका बाज्यो गढ महुबेमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार॥
बोले ऊदनि सब क्षत्रिनते ❋ यारौ सुनौ हमारी बात।
जिनहिं पियारी घर तिरिया हैं ❋ सो सब तलब लेउ घर जाउ
जिनहिं पियारी परम भगौती ❋ सो सब चलौ हमारे साथ
यहु दिन कहिबेको रहि जैहै ❋ होइ है ब्याह वीर मलिखान
ब्याह रचायो पथरीगढमें ❋ चालिहै राति दिना तलवारि
कठिन मोरचा है बिसहिनिका ❋ है गुजरात देश सरनाम॥
जितने क्षत्री थे तरवारिहा ❋ सो सब सजन लगे तत्काल
जितने कायर थे लश्करमें ❋ सो सब घरको भये तयार॥
ऊदनि लौटे रंगमहलको ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय।
करौ तयारी अब माता तुम ❋ सिगरे नेग करौ तत्काल॥
सखी बुलाई रनि मल्हनाने ❋ महलन होय मंगलाचार।
चौक पुराय दई आँगनमें ❋ चन्दन चौकी दई डराय॥
पंडित वेद उचारन लागे ❋ औ मलिखेको लियो बुलाय
चंदन चौकीपर बैठायो ❋ तुरतै तेल दियो चढवाय॥
झगरो नाऊ जब मल्हनाते ❋ मल्हना पुरवा दियो इनाम
करिकै उबटन तब नाऊने ❋ गंगाजलते दियो अन्हवाय
भयो बुलौआ फिरि दरजीको ❋ ताने कपडा दिये पहिराय।

मोर बाँधिकै रनि मल्हनाने ❋ सबको नेग दियो मँगवाय॥
आइ पालकी दरवाजेपर ❋ बैठे जाय बीर मलिखान ।
चली पालकी दरवाजेते ❋ औ कुँअटा पर पहुँची जाय
देवै ब्रह्मा संगै चालिभई ❋ आगे चली मल्हनदे रानि।
बारह रानी चन्देलेकी ❋ सोऊ साथ भई तैयार ॥
मोहन लरिका बीरसाहको ❋ लीन्हें गोद बीर मलिखान
भाँवरि परनलगीं कुअँटापर ❋ ब्रह्मा रही पाँव लटकाय ॥
पहिली भाँवरिके पग धरतै ❋ तब धरि बहियाँ लियो उठाय
बाग लगैहों तुम्हरे नामकी ❋ माता धीर धरौ मन माहिं॥
चरण लागिकै सब काहूके ❋ मलिखे माथे लिये लगाय।
हाथ फेरि दियो रनि मल्हनाने ❋ जुग जुग जिऔ लड़ैते लाल
मलिखे बैठिगये पलकीमें ❋ मल्हना रंगमहलको जाय।
देवै ब्रह्मा बारह रानी ❋ सब मिलिगई महलयकसाथ
मलिखे पहुँचिगये लश्करमें ❋ लश्कर सजा महोबे क्यार
हथिपचशावद त्यार करायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❋ ऊदनि फाँदि भये असवार
घोड़ा मनुरथापर ढेबा है ❋ घोड़ी हिरोंजिनि पर सुलिखान
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मानन्द सवार ।
खुनखुन कोरी मदन गड़ारिया ❋ मन्ना गूजर भयो तयार ॥
जितने शूर हते महुबेके ❋ सो बरातको भये तयार ।
घोड़ी कबुतरी नर मलिखेकी ❋ सोऊ कोतल चली अगार
जितने भूप बराती आये ❋ सो सब चले चित्त हर्षाय ।
राह पकरिलइ पथरीगढ़की ❋ डंका होन गैलमें लाग ॥
आठ रोज मारगमें बीते ❋ बिसादिनि आठ कोस रहिजाय
डेरा डारे तब धूरेपर ❋ ऊँचे तम्बू दिय लगाय ॥

फूटैं खुलिगइँ रजपूतनकी ❋ क्षत्री करन रसोईं लाग ।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ अब पंडितको लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ चूडामणिको ❋ पंडित साइति दई बताय ।
ऐपनवारी तुम पठवावौ ❋ तुम्हरो काम सिद्ध ह्वैजाय ॥
इतनी सुनिकै बघ ऊदनिने ❋ रुपना बारी लियो बुलाय ।
ऐपनावारी तुम लै जाओ ❋ तब रुपनाने दियो जवाब ॥
कठिनमारुहै गढबिसहिनकी ❋ हम ना शीश कटैहैं जाय ।
बोले ऊदनि तब रुपनाते ❋ भैया घटिगौ ज्ञान तुम्हार
तुमको नेगी हम समझैं ना ❋ तुम तो भैया लगो हमार ।
यहु दिनु कहिबेको रहिजैहै ❋ ह्वइहै ब्याह बीर मलिखान॥
अबना हीनीतुम कहियो कछु ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
बोलेउ रुपना तब ऊदनिते ❋ घोडी कबुतरी देउ मँगाय ॥
ढाल मँगाय देउ जल्दीते ❋ औ तलवारि बीर मलिखान ।
जो जो माँगेउ रुपना बारी ❋ सो ऊदनिने दियो मँगाय ॥
कूदि बछेरीपर चढि बैठो ❋ ऐपनवारी लई उठाय ।
सब हथियार बाँधि रुपनाने ❋ गढ बिसहिनकी पकरी राह॥
चारि घरी के अरसामें ❋ सो फाटक पर उरको जाय।
बोल्यो दरवानी रुपनाते ❋ सुनु परदेशी बचन हमार ॥
कौन देशमा घर तुम्हरा है ❋ यहपर काह तुम्हारा काज।
तापर ज्वाब दियो रुपनाने ❋ रूपन बारी नाम हमार ॥
हम रहवैया हैं महुबेके ❋ ब्याहन आये बीर मलिखान
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ राजै खबरि सुनावौ जाय ॥
नेगु हमारो जल्दी भेजौ ❋ म्वहि बरातको होत अब्यार
बोला दरवानी रुपनाते ❋ अपनो नेगु देउ बतलाय ॥
रुपना बोलेउ दरवानीते ❋ जल्दी खबरि देउ पहुँचाय ।

नेगु हमारो यहै होत है ❋ द्वारे कठिन चलै तलवारि ॥
इतनी सुनिकै दरवानीने ❋ राजै खबरि सुनाई जाय ।
नेगी आयो है महुबेते ❋ माँगत खडा आपनो नेगु॥
ऐपनवारी लीन्हे ठाढो ❋ रूपन बारी नाम बताय ।
नेग बतावत है अपनो यह ❋ द्वारे कठिन चलै तलवारि॥
इतनी सुनिकै गज राजाने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ।
हुक्म सुनाय दियो सूरजको ❋ बेटा सुनो हमारी बात ॥
बारी आयो है महुबेते ❋ ताको लेउ जँजीरन बाँधि।
सूरज चलिभये तब द्वारेको ❋ तौलों रुपना पहुँचो आय॥
करी बन्दगी गज राजाको ❋ ऐपनवारी दई चलाय ।
नेगु हमारो जल्दी देदेउ ❋ हमको पलपल होत अब्यार
गुस्सा ह्वइकै गज राजाने ❋ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ।
मूँड काटिलेउ या बारीको ❋ देखौ कहूँ भागि ना जाय॥
इतनी सुनतै मानसिंहने ❋ तुरतै दीन्हो गुर्ज चलाय ।
घोडी कबुतरी दाहिने होइगई ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
भाला लैकै तब रुपनाने ❋ मानसिंह पर दियो चलाय।
धरती गिरिगये मानसिंह तब ❋ लाग्यो घाव शीशमें आय॥
नोक चलाई त्यहि भालाकी ❋ ऐपनवारी लई उठाय ।
ऐंड लगाई तब घोडीके ❋ फाटक निकरि गयो बापर॥
रुपनै घेरो दरवाजे पर ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि।
चली शिरोही तहँ रुपनापर ❋ रुपना कठिन करै तलवारि॥
तीनि घरीभरि चली शिरोही ❋ रुपना लालबरन ह्वइजाय
कठिन लडाई भइ द्वारे पर ❋ औ बहिचलि रक्तकी धार॥
ऐंड लगाय दई घोडीके ❋ औ बरातमें पहुँचो जाय।
आवत देखो जब रुपनाको ❋ ऊदनि गये सनाका खाय॥

नेरे आयगयो रुपना जब ❋ तब हँसि कही उदयसिंह राय
कैसी गुजरी दरवाजे पर ❋ कस लाल बरन दिखराउ ॥
घाउ आयगयो क्या देहीमें ❋ सो सब हाल देउ बतलाय।
रुपना बालउ तब ऊदनिते ❋ द्वारे कठिन चली तलवारि
हमैं भगवती दाहिन ह्वइगइ ❋ हम करि आये काम तुम्हार
मारि भगाया सब क्षत्रिनको ❋ द्वारे बही रक्तकी धार ॥
यह गति देखी जब माहिलने ❋ लिल्ली घोडी भये सवार।
जाय पहूँचे गढ बिसहिनिमें ❋ जहँ दरबार बिसेने क्यार
लिल्ली घोडीते भुइँ आये ❋ घोडी थामि लई थनवार।
करी बन्दगी गज राजाको ❋ माहिल रहिगे माथ नवाय
नजरि बदलिगइ गज राजाकी ❋ औ माहिलते लगे बतान।
हाल बतायदेउ अपनो तुम ❋ औ उरईको कहो हवाल ॥
बाले माहिल गज राजाते ❋ राजा सुनो हमारी बात।
ब्याह न करियो तुम मलिखेसँग ❋ ओछी जाति बनाफर राय
ब्याह जा ह्वइहै गढ महुबेमें ❋ बुडिहै सात साखिको नाम
दागु लागिहै रजपूतीमें ❋ कोउ न पियै घडाको पानि
बडे लडैया हैं महुबेके ❋ शंका करत कालकी नाहिं।
लडे न जितिहो तुम लरिकनते ❋ कलहा देव कुँवरिके लाल
ज्यहिकी लडकी नीकी देखैं ❋ जोरावरिते करैं विवाह।
बात हमारी राजा मानौ ❋ तौ हम तुमहिं देयँ बतलाय
जाय टिकावो पथरीगढमें ❋ जहँ ना गडे मेख भुइँ माहिं
बिष घोरवावो तुम शर्बतमें ❋ सो जल्दीते देउ पठाय ॥
पियतै क्षत्री सब मरिजैहैं ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय
इतनी सुनिकै गज राजाने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
भली बताई माहिल ठाकुर ❋ हमसब मानी बात तुम्हारि

शरबत घोरवावौ जल्दीते ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय
यह सुनि शरबतको घोरवायो ❋ चारौ नेगी संग लिवाय ।
सूरज चलिभये गढ बिसहिनिते ❋ औ बरातमें पहुँचे जाय ॥
कहँपर तम्बू है आल्हाको ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय ।
सूरज पूछो दरवानीते ❋ दरवानीने दियो बताय ॥
सूरज पहुँचे जब तम्बूमें ❋ चारौ नेगी संग लिवाय ।
करी बन्दगी पुनि आल्हाको ❋ औ शरबतको दियो धराय
बोले सूरजमल आल्हाते ❋ पथरीगढको होउ तयार ।
तहँ जनवासा तुम सबको है ❋ अपने तम्बू देउ लगाय ॥
इतनी सुनतै मलिखे ठाकुर ❋ बघ ऊदनिको संग लिवाय
घन लैलीन्हों अपने करमें ❋ ऊदनि मेखैं लईं उठाय ॥
मेखैं गाड़ीं पथरी गढमें ❋ अपने तम्बू दिये तनाय ॥
बोले सूरज तब आल्हाते ❋ शरबत सबको देउ बटाय ॥
इतनी सुनिकै पुनि आल्हाने ❋ सोने कटोरा लिये मँगाय
जबहीं शरबत आल्हा माँग्यो ❋ समुहे छींक भई ठहनाय
भयो बुलौआ तब ढेबाको ❋ भैया सगुन देउ बतलाय ।
ढेबा बोलो तब आल्हाते ❋ शरबत सबै देउ फिकवाय
जहर मिलायो यह शरबत है ❋ दादा बचन करौ परमान।
इतनी सुनिक बघ ऊदनिने ❋ अपनो कुत्ता लियो बुलाय
थोरा शर्बत ऊदनि लैकै ❋ सो कुत्ताको दियो पिलाय।
शरबत पियतै कुत्ता गिरिगो ❋ ऊदनि शरबत दियो फैंकाय
मारि भगाये चारौ नेगी ❋ औ सूरजते कही सुनाय ।
बटिहा राजाके लरिका हौ ❋ है घटि करी हमारे साथ ॥
लौटे सूरज तब बराततै ❋ औ झुन्नागढ पहुँचे जाय ।
जहां कचहरी गज राजाकी ❋ सूरज नैकै करी सलाम ॥

बोल सूरज गज राजाते ❋ दादा कछू कही ना जाय।
बडे सगुनियाँ महुबेवाले ❋ शरबत खंदक दियो फेंकाय॥
मख गाडि दई पथरीगढ ❋ औ नेगिनको दियो भगाय।
सूरज बात करन ना पाये ❋ तौलौं माहिल पहुँचे आय॥
तब गजराजा पूँछन लागे ❋ अब तुम जतन देउ बतलाय।
बोले माहिल तब राजाते ❋ राजा बचन करौ परमान॥
लडे न जितिहौ तुम आल्हाते ❋ ताते करौ अधीनी जाय।
बिनती करिकै लरिका लावौ ❋ औ खंदकमें देउ डराय॥
इतनी सुनिकै गज राजाने ❋ मोहरन तोडा लियो मँगाय।
कूच करायो गढ बिसहिनिते ❋ औ बरातमें पहुँचे जाय॥
करी अधीनी गज राजाने ❋ दीन्हीं नजरि सामुहे जाय।
हाथ जोरि बोले गज राजा ❋ हमरे कुला यही ब्यौहार॥
लरिका अकेला तुम भिजवावो ❋ मातौ भाँवारि देउँ डराय।
बोले मलिखे तब आल्हाते ❋ दादा कछु छल परै दिखाय॥
ऊदनि बोले तब बुअनापर ❋ जो छल करिहैं साथ हमार।
गर्द कराय दिहौं बिसहिनिको ❋ मारौं राज्य भंग ह्वइजाय॥
लई शिरोही तब मलिखेने ❋ औ चलिबेको भये तयार।
बोले गजराजा मलिखेते ❋ यह हथियार संग ना जाय॥
देश हमारे यहै रीति है ❋ सो तुम सुनौ बनाफर राय।
गंगाजल भरि कलश मँगायो ❋ सो आल्हाने दियो धराय॥
जहर मिलायो शर्बत भेज्यो ❋ ताते नाहिं रह्यो इतबार।
गंग उठाई गज राजाने ❋ औ आल्हाते लगे बतान॥
जो कोउ घाटि करै तुम्हरे सँग ❋ ताको लौटि भगौती खाय।
इतनी सुनतै गुनि आल्हाने ❋ तुरत पालकी लई मँगाय॥
मलिखे बैठि गये पलकीमें ❋ सो गजराजा चले लिवाय।

चारि घरीको अरसा गुजरो ❋ पलकी भीतर पहुँची जाय॥
हुक्म देदियो गजराजाने ❋ फाटक बन्दी देउ कराय ।
हुक्म होतही फाटक लगिगये ❋ अहनी ताले दिये डराय ॥
चौक चाँदनी पलकी पहुँची ❋ तब क्षत्रिनते कही सुनाय ।
जान न पावै महुबे वालो ❋ याको शीश लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनिकै सब क्षत्रिनने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि।
मलिखे सोचैं अपने मनमें ❋ इन घटि करी हमारे साथ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
बांसु निकारिलियो पलकीको ❋ मलिखे दई बांसकी मारु ॥
मलिखे ठाकुर बांसन मारैं ❋ क्षत्री रेनबेन होइजायँ ।
देखि हकीकति गजराजा तब ❋ दोनों हाथ जोरि भे ठाढ ॥
देश हमारे यहै रीति है ❋ द्वारे चलै कठिन तलवारि ।
बोले मलिखे गज राजाते ❋ तुम छल करी हमारे साथ॥
छलिकै हमको तुम लै आयो ❋ यहँ पर मारु दई करवाय ।
करी अधीनी फिरि राजाने ❋ औ मलिखेते कही सुनाय॥
रीति हमारे कुल ऐसी है ❋ डंड बांधिकै होय विवाह ।
ऐसे कहिकै गंगा कीन्ही ❋ औ मलिखेको लियो बँधाय
चली पालकी नर मलिखेकी ❋ पहुँची सिंह पँवरिपर जाय ।
चन्दन खंभा जहँ गाडा था ❋ तामें मलिखे दिये बँधाय॥
हरे बांस आये बगियाते ❋ बांसन मारु दई करवाय ।
जामा पहिरे रहैं देहीमें ❋ सो सब टूकटूक ह्वइ जाय॥
बांस पैठिगयो तब पीठीमें ❋ औ बहिचली रक्तकी धार ।
बांदी देख्यो सत खंडाते ❋ गजमोतिनिते कही सुनाय॥
लरिका छलिकै यहँ लै आये ❋ बांसन मारु दई करवाय ।
बाप तुम्हारे बैरी ह्वइगये ❋ जो घटि करत तुम्हारे साथ ॥

जा बरातमें गंगा कीन्हीं ❋ लाये साथ बीर मलिखान।
इतनी सुनिकै बेटी चलिभइ ❋ आई जहाँ बँधे मलिखान॥
बोली बेटी गज राजाते ❋ बँधुवा कौन देशको आय।
काहे बांसन मार करावत ❋ ददुआ हाल देउ बतलाय॥
यह सुनि बोले गज राजा तब ❋ यह है बँधुवा ऋणी हमार।
पैसा मागे सात बरसको ❋ ताते दई बाँसकी मारु॥
कंकन देखेउ जब हाथमा ❋ बेटी तुरत गई पहिचानि।
बोलनलागी गजमोतिनि तब ❋ दादा सुनौ हमारी बात॥
ये तो स्वामी हमरे आहीं ❋ तुम ना करौ सोचि यह काम।
मुश्कखोलिदेउमोरेबालमकी ❋ ददुआ बार बार बलिजाउँ॥
बात सुनी जब यह मलिखेने ❋ अपने मनमें गये लजाय।
गुस्सा आय गयी देहीमें ❋ फरकी भुजा बीर मलिखान
भुजबल मसके नर मलिखेने ❋ कडियां टूकटूक ह्वैजायँ॥
खंभउखारिलियोमलयागिरि ❋ औ क्षत्रिनपै पहुँचे जाय।
खैंचि शिरोही क्षत्रिन लीन्ही ❋ महलन कठिन चलै तलवारि
मलिखे खंभा ज्याहिके मारै ❋ सो गिरि परै भूमिमें जाय।
क्षत्री भागिगये आगेते ❋ अकिले खडे बीर मलिखान
बोले राजा हाथ जोरिकै ❋ तुम समरत्थ बनारफर राय॥
नेगु आपनो हमने पायो ❋ अबहीं भाँवरि देउँ डराय।
खंभा धरिकै मलयागिरिको ❋ औ पलकीमें बैठे जाय॥
फिरिकै धोखा दे राजाने ❋ मलिखेकी लइ दंड बँधाय॥
दहक एक रहै जो द्वारेपर ❋ तामें तुरतै दियो डराय।
यह गति देखी जब बांदीने ❋ गजमोतिनिते कही सुनाय॥
बालम तुम्हरे खंदक डारे ❋ ताको अब कछु करौ उपाय।
बोली गजमोतिनि बांदीते ❋ चलिकै हमहिं देहु बतलाय॥

कौने खन्दकमें बालम हैं ❋ यह सुनि बांदी दियो जवाब
शीश महलके पीछे खंदक ❋ तेलिया नाम कहत संसार ।
दिवसगुजरिगयोज्योंत्योंकरिकै ❋ संझाकाल रह्यो नियराय
आधी रातिकेरे अमलामें ❋ गजमा भोजन किये तयार
सो धरवाय लिये थारीमें ❋ औ गंगाजल लियो धराय
जाय पहूँची गजमोतिनि तब ❋ जहँपर परे बीर मलिखान ।
रेशम रस्सा लै गजमोतिनि ❋ सो दाहकमें दयो लटकाय
बोली गजमोतिनि मलिखेते ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ।
जल्दी निकरो तुम खंदकते ❋ अपनी लावो फौज सजाय॥
दादा हमरे बैरी ह्वैगये ❋ तुमको खंदक दियो डराय
स्वामी भोजन में लाईहौं ❋ सो तुम जेइँ लेउ ज्योंनार ॥
यहसुनिमलिखे बोलन लागे ❋ रानी सुनौ हमारी बात ।
बटिहा राजाकी बेटी हौ ❋ ज्यहि बटि करी हमार साथ
तुम क्यों आईहौ दाहकपर ❋ नाहक रूप दिखायो आय
इतनी बात सुनी बेटीने ❋ तब मलिखेते लगी बतान ॥
हमव्रतकठिनकियेतुम्हरेहित ❋ करिहौं ब्याह तुम्हारे साथ ।
नातरु क्वांरी रहौं जन्मभरि ❋ या में पेटु मारि मरिजाउँ ॥
जल्दीनिकरोअबस्वामीतुम ❋ औ यह जेयँलेउ ज्योंनार ।
बोले मलिखे तब रानीते ❋ रानी बात सुनौ धरि ध्यान
तुम्हरे काढे जो हम निकरैं ❋ तौ रजपूती जाय नशाय ।
चोरा चोरी हम ना निकरैं ❋ ना हम करैं चोरको काम॥
क्वांरे भोजन हम ना करिहैं ❋ नहिं रजपूती धर्म नशाय ।
जो तुम रानी हमको चाहौ ❋ आल्है खबरि देउ पहुँचाय
यहसुनिचलिभइगजमोतिनितब ❋ औपत्थरकोदियोसरकाय
आई गजमोतिनि महलनमें ❋ सतखंडापर पहुँची जाय ॥

लैकै कागद कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ।
पहिले लिखिकै सरनामाको ❋ फिरि आल्हाको लिखी सलाम
लिखी हकीकति गजमोतिनिने ❋ तुम सुनिलेउ बनाफर राय
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❋ अकिलो भैया दियो पठाय
हियँ छल कीन्हों बाप हमारे ❋ चुंगल दहक दीन डरवाय ।
सुखकी निंदिया तुम सोवतहौ ❋ खंदक बालम परे हमार ॥
जल्दी आवौ तुम बराततै ❋ औ भैयाको लेउ निकारि ।
लिखी हकीकति गजमोतिनिने ❋ अपनी मालिनि लई बुलाय
करी अधीनी गजमोतिनिने ❋ मालिनि सुनौ हमारी बात ।
बिपति सतावै सब काहूको ❋ मालिनि बिपति परै संसार॥
बिपता परिगै है हमपर यक ❋ सो तुम कारज करौ हमार ।
चिट्ठी लै जावो बरातमें ❋ सो आल्हाको देउ गहाय ॥
मालिनि बोली गजमोतिनिते ❋ बेटी सुनौ हमारी बात ।
फाटक बन्दी है बिसहिनिमें ❋ कैसे जायँ बनाफर पास ॥
इतनी सुनिकै बेटी बोली ❋ तुमको जतन देउँ बतलाय ।
करौ बहाना दरबानीते ❋ औ यह कहियो बात बनाय
हम हैं मालिनि गजमोतिनिकी ❋ बगिया फूल लेनको जायँ
इतनी सुनिकै मालिनि चलिभइ ❋ औ फाटकपै पहुँची जाय
चिट्ठी लीन्हीं गजमोतिनिकी ❋ सो जूरामें लई छिपाय ।
सूरति देखी जब मालिनिकी ❋ तब सूरजने कही सुनाय ॥
यहै खबरुआ है बरातको ❋ तुरतै लूटि लेउ करवाय ।
इतनी सुनतै क्षत्री झपटे ❋ औ मालिनिको लूटन लाग
काहू लूट्यो गरेको हरवा ❋ काहू माला लई निकारि ।
काहू लूट्यो मुँदरी छल्ला ❋ काहू कपडा लिये उतारि ॥
यह गति देखत मालिनि रोई ❋ औ सूरजते कही सुनाय ।

हम तो मालिनिं गजमोतिनिकी ❋ बगिया फूल लेनको जायँ
अबहीं कहिहौं मैं बेटीते ❋ सूरज लूटि लई करवाय।
इतनी सुनिकै सूरज सोचे ❋ बहिनी देहै कठिन सराप ॥
सोचि समुझिकै गहनो फेन्यो ❋ फाटक तुरत दियो खुलवाय
तुम ना कहियो गजमोतिनिते ❋ की सूरज लइ लूटि कराय
इतनीसुनिकै मालिनि चलिभइ ❋ औ बरातमें पहुँची जाय।
जहँ पर तम्बू है माहिलको ❋ मालिनि तहां पहुँची जाय॥
मालिनि आवत माहिल देखे ❋ तब मालिनिते पूछन लाग।
कौने तुमको यहँ भेज्यो है ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
मालिनि बोली तब माहिलते ❋ आल्है खबरि सुनैहैं जाय।
कौनसो तम्बू है आल्हाको ❋ सो तुम जल्दी देउ बताय ॥
माहिल बोलो तब मालिनिते ❋ हमहीं आल्हा हैं सरनाम।
हाल बताय देउ मलिखेको ❋ औ बिवाहको कहौ हवाल॥
खोलो जरा तब मालिनिने ❋ तुरतै पाती दई गहाय।
पाती बाँची जब माहिलने ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइजायँ॥
लैकै चाबुक माहिल राजा ❋ तब मालिनिको मारन लाग
तुम ना कहियो यह काहूते ❋ ऊभे परे बीर मलिखान ॥
जल्दी लौटि जाउ बिसाहिनिको ❋ नाहीं दिहौं जानते मारि
रोवत रोवत मालिनि चलिभै ❋ तौलौं मिले उदयसिंहराय ॥
ऊदनि बोले तब मालिनिते ❋ काहे बिलखिबिलखिरहिजाउ
हाल बताय देउ जल्दीते ❋ तब मालिनिने कही सुनाय
आये महोबिया महुबेवाले ❋ ब्याहन हेत बीर मलिखान।
छलिकै लरिका राजा लैगये ❋ वहँपर डड दई बँधवाय ॥
मारु करायदई बांसनकी ❋ फिरि खंदकमें दियो डराय।
रोयकै पाती लिखिगजमोतिनि ❋ लिखिकै हमको दई गहाय

सो छिनवाय लई आल्हान ❋ हमपर मारु दइ करवाय।
इतनी सुनिकै ऊदनि जरिगये ❋ औ मालिनिते लगे बतान॥
कौनसो तम्बू है आल्हाको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
लौटी मालिनि तब ऊदनि सँग ❋ औ माहिलको दियो बताय
देखो ठाढे हैं आल्हा वे ❋ इनहीं मारु दई करवाय।
बोले ऊदनि तब माहिलते ❋ मामा अक्किल गइ तुम्हारि
काहे मालिनिको मारो तुम ❋ काहे पाती लई छिनाय।
बात बनाई तब माहिलने ❋ औ ऊदनित कही सुनाय॥
कछु अपराध नहीं हमरो है ❋ भैया समुझि लेउ मनमाहिं
मालिनि टेरत यह आवति रहै ❋ मलिखे ऊभे दिये डराय॥
जो सुनि पावत कोउ बिसहिनिका ❋ पाती लेतो तुरत छँडाय
खबरि पहुँचती ना आल्हापै ❋ तौ ना बनतो काम तुम्हार
ताते पाती हमने छीनी ❋ सो यह लेउ उदयसिंहराय
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ मामा जान कम तुम्हार॥
लावौ पाती तुम जल्दीते ❋ हम सब लेहैं काम बनाय।
पाती दीन्हीं तब माहिलने ❋ ऊदनि लीन्हीं हाथ पसारि
 पाती तब माहिलते ❋ औ चलिभये उदयसिंहराय
पहुँचे ऊदनि तब आल्हा ढिग ❋ मालिनि अपन सग लिवाय
करो इशारा जब मालिनिको ❋ मालिनि पाती दइ गहाय।
खोलिकै पाती आल्हा बाँची ❋ मनमें गये सनाका खाय॥
ऊदनि बोल तब आल्हाते ❋ दादा हाल देउ बतलाय।
कैसी पाती यह आई है ❋ काहे सोच रह्यो मन छाय
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❋ भैया कछू कही ना जाय।
घटिहा राजा गज राजा है ❋ झूँठी गंगा लई उठाय॥
छलिके मलिखेको सँग लैके ❋ बांसन मारु दइ करवाय।

डंड बाँधिकै नर मालिखेकी ❋ चुंगल दहक दीन डरवाय॥
पाती भेजी गजमोतिनिने ❋ औ मालिनिको दियो पठाय
इतनी सुनिक नुनि आल्हानें ❋ तुरतै गहना लियो मँगाय॥
सो दैदीन्हों त्यहि मालिनिको ❋ औ यह कही बनाफर राय
तुम कहि दजिौ गजमोतिनिते ❋ सातौं भाँवरि लिहैं डराय
धीरज राखो अपने मनमें ❋ आवत साजि बनाफर राय
चलिभइ मालिनि तब बराततें ❋ औ बिसहिनिमें पहुँची जाय
खबरि सुनाई गजमोतिनिको ❋ बर्टा धीर धरौ मनमाहिं ।
गहना दीन्हों माहि आल्हाने ❋ औ यह कही बनाफर राय
यह कहियौ गजमोतिनिते ❋ सातों भाँवरि लिहैं डराय ।
यांकि बात तौ हिय छाँडा ❋ अब आगेको सुनो हवाल
बोले आल्हा बघ ऊदनिते ❋ लश्कर तुरत लेउ सजवाय।
हुक्म पायकै ऊदनि चलिभय ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय॥
तुरत नगडचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय।
बज नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर साजि होय तैयार॥
डंका बाज्यो तब लश्करम ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार
तिसरे नगारके बाजतखन ❋ क्षत्रिन धरे रकाबन पायँ ।
हाथी चढैया हाथिन चढिगये ❋ बाँके घोडनके असवार ॥
चौथे डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर चला बनाफर क्यार
ढाढी करखा बोलत आवैं ❋ घूमत आवैं लाल निशान
दबति अंधेरिया दलमें आवै ❋ हाहाकारी बीतत जाय।
यक हरकारा बदलत आयो ❋ गजराजापै पहुँचो जाय॥
हाथ जोरिकै बोलन लाग्यो ❋ राजा सुनौ हमारी बात।
लश्कर आयो है महुबेको ❋ सो तुम खबरदार ह्वइजाउ॥

आल्हाने।

इतनी सुनतै गज राजाने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय॥
फिरि बुलवायो कांतामलको ❋ मानसिंहको लियो बुलाय
हुक्म देदियो तिन तीनोंको ❋ जल्दी फौज लेउ सजवाय।
जितने आये हैं महुबेके ❋ सबके मूँड लेउ कटवाय।
इतनी सुनिकै तीनों चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कडा दियो डरवाय
डंका बाजे मेरे लश्करमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार॥
बजो नगारा गढ बिसहिनिमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार।
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हाथियार॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार।
लश्कर चलिभयो गढ बिसहिनिको ❋ डंका होन गोलमें लाग
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगयो आठ खेत मैदान।
घोडा बढाय दियो सूरजने ❋ आगे जाय दई ललकार॥
कौनसो क्षत्री चढि आयो है ❋ सो सम्मुहे ह्वइ देइ जबाब।
ऊदनि बढिगये तब आगेको ❋ औ सूरजको दियो जबाब॥
हम चढि आये हैं महुबेते ❋ हमरो नाम उदयसिंह राय।
बटिहा राजाके लरिका हौ ❋ झूँठी गंगा लई उठाय॥
छलिकै लैगये नर मलिखेको ❋ औ खंदकमें दियो डराय।
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं थी ❋ जो छल करो हमारे साथ॥
भलो आपनो जो अब चाहौ ❋ सातौं भाँवरि देउ डराय।
जो ना मनिहौ कहा हमारो ❋ मरिहौ राज्य भंग ह्वइजाय॥
तख्त लौटिकै गज राजाको ❋ सबकी मुश्कैं लिहौं बँधाय।
बातन बातन बतबढ ह्वइगौ ❋ औ बातनमें बाढी रारि॥
गुस्सा ह्वइकै सूरज बोले ❋ मानसिंहते कही सुनाय।

जान न पावैं महुबेवाले ❋ सबकी कटा देउ करवाय॥
हल्ला ह्वैगयो सब लश्करमें ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ खट खट चलन लगी तलवारि
पैदल अभिरिगये पैदल सग ❋ औ असवारनते असवार ।
चारि घरी तहँ चली शिरोही ❋ औ बहिचली रक्तकी धार
बडे लडैया महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रट लागि ॥
पैदल गिरिगये पैग पैग पर ❋ दुइ दुइ पैग गिरे असवार ।
हाथी गिरिगये बिसे बिसे पर ❋ छोटे पर्वतकी अनुहारि ॥
कल्ला कटिगये हैं घोडनके ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार
मुर्चा हटिगो गज राजाको ❋ लश्कर रैन बैन ह्वैजाय ॥
सूरज भागि चले लश्करते ❋ गज राजापै पहुँचे जाय ।
हाथ जोरिकै सूरज बोले ❋ ददुआ सुनौ हमारी बात॥
बडे लडैया गढ महुबेके ❋ जो मारिबेको नाहिं डेरायँ ।
लश्कर भागि गयो बिसहिनिको ❋ सब दल रैन बैन ह्वैजाय
इतनी बात सुनी राजाने ❋ अपना उठे भरहरा खाय ।
तोप दरोगाको बुलवायो ❋ बीरा कलँगी दियो इनाम॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर देउ चढाय
हुक्म पायकै चला दरोगा ❋ सिगरी तोपैं लईं सजाय ॥
सो पठवाय दईं आगेको ❋ औ मुर्चा पर पहुँचे जाय ।
मुर्चाबन्दी तब करवाई ❋ औ क्षत्रिनते कही सुनाय॥
मारि भगावौ तुम लश्करको ❋ मारौ खेदि महोबिया ज्वान
जान न पावैं कोउ महुबेको ❋ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
निमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाडनमें गयो समाय ।
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❋ यारौ रखियो धर्म हमार ॥

झुके खलासी बिसहिनिवाले ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ।
धुआँ उडानो आसमानलौं ❋ सविता रहे धुंधिमें छाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ।
गोला छूटैं दोनों दलमें ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
अररर अररर गोला छूटैं ❋ गोली मन्न मन्न मन्नाय ।
एक पहर भरि गोला बरसो ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ॥
तोपें धैं धैं लाली ह्वइगइँ ❋ कीन्ही बन्द तोपकी मारु ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि
झुरमुट होइगयो दोउ लश्करमें ❋ बाढिकै चलन लगी तलवारि
खटखट खटखट तेगा बाजै ❋ बोलै छपक छपक तलवारि॥
चलै जुनब्बी औ गुजरानी ❋ औ बूँदीकी असल कटार ।
चलै शिरोही मानाशाही ❋ ऊना चलै विलायत क्यार॥
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान
तीनि लाख लश्कर बिसहिनिको । रहिगे डेढ लाखसब ज्वान
देखि हकीकत सूरज ठाकुर ❋ अपनो घोडादियो बढाय ।
बोले सूरज तब ऊदनिते ❋ तुम सुनिलेउ उदैसिंहराय॥
शूर जुझायेते का पैहौ ❋ हम तुम खेलैं जूझ अघाय ।
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ अपनो घोडा दियो बढाय॥
बोले ऊदनि सूरजमलते ❋ अपनी चोट करो तुम आय।
इतनी सुनिकै सूरज ठाकुर ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि॥
करो जडाका जब ऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ।
तीनि शिरोही गहि गहि मारी ❋ ऊदनि लैगये चोट बचाय॥
ऊदनि बोले तब सूरजते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
चोट तुम्हारी हम सहिलीन्ही ❋ अब लैलेउ हमारी श्याल्ह॥
यह कहि गुर्ज लियो ऊदनिने ❋ औ सूरजपर दियो चलाय।

लगो चपेटा तब घोड़ेके ❋ सूरज घोड़ा दियो भगाय॥
देखि हकीकति कांतामलन ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय।
खैंचि शिरोही लइ कांतामल ❋ सो ऊदनि पर दई चलाय॥
ढाल अड़ाय दई ऊदनिने ❋ तुरतै लीन्हीं चोट बचाय ।
भाला लैकै बघ ऊदनिने ❋ कांतामल पर दियो चलाय॥
लगो चपेटा कांतामलके ❋ अपनो घोड़ा गये भगाय ।
ढेबा बढ़िगयो तब आगेको ❋ मानसिंहपै पहुँचो जाय ॥
बैठे मानसिंह हौदामें ❋ ढेबा दीन्हीं साँग चलाय ।
घाव आय गयो मानसिंहके ❋ मुर्चा हटो विसेने क्यार ॥
सूरज आये गज राजापै ❋ हाथ जोरिकै कही सुनाय ।
बडे शूरमा हैं महुबेके ❋ जिनते कछू न पार बसाय॥
इतनी सुनिकै गज राजा तब ❋ मनमें बहुत गये घबराय ।
श्यामा भगतिनि पहँ राजागये ❋ औ सब हाल सुनायो जाय
ब्याह जो ह्वैइहै गढ महुबेमें ❋ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ ताते जादू देउ चलाय ॥
जितने आये हैं महुबेते ❋ सब पर देउ मोहिनी डारि ।
इतनी सुनिकै श्यामाभगतिनि ❋ सूरजमलको संग लिवाय॥
श्यामा चलिभइगढबिसहिनिते ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय।
जहँपर लश्कर था महुबेको ❋ श्यामा जादू लियो उठाय ॥
डारि मशान दियो लश्करमें ❋ सबके होश बन्द ह्वइ जायँ।
ढेबा बचिगयो त्यहि लश्करमें ❋ सो आल्हापै पहुँचो जाय॥
हाल सुनायो सब लश्करको ❋ औ जादूको कह्यो हवाल ।
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❋ औ ढेबाते कही सुनाय ॥
जल्दी जाओ तुम महुबेको ❋ सुनवें लावौ संग लिवाय ।
इतनी सुनते ढेबा चलिभो ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥

तीनि रोजको धावा करिकै ❋ महुबे बीच पहूँचा जाय ।
देवै ठाढी थी द्वारेपर ❋ सो ढेबाते लगी बतान ॥
हाल बतावौ तुम बरातको ❋ औ लश्करको कहौ हवाल ।
यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ हमते कछू कही ना जाय॥
श्यामा भगतिनि जादू डारी ❋ लश्कर सुन्नमान होइजाय।
कान अवाज परी सुनवाँके ❋ सो ढेबापै पहुँची आय ॥
पूँछन लागी सो ढेबाते ❋ देवर हाल देउ बतलाय ।
लाल बरात कहाँ तुम छाँडी ❋ औ कहँ छाँडि कटीली फौज
इतनी सुनतै ढेबा बोलो ❋ भौजी सुनौ हमारी बात ।
श्यामा भगतिनि जादू कीन्ही ❋ लश्करके गये होश उडाय॥
सुन्नमान लश्कर सब ह्वइगो ❋ ऊभे परे बीर मलिखान ।
अकिले तम्बूम आल्हा हैं ❋ तुम्हरी यादि करैं महराज॥
करौ तयारी तुम जल्दीते ❋ औ तुम चलौ हमारे साथ ।
इतनी सुनतै सुनवाँ चलिभइ ❋ देवीकि मठी पहुँची जाय ॥
पूजन करिकै जगदम्बाको ❋ अपनो शीश चढावन लागि
आभा बोली तब देवीकी ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वै जाय
अमृत दीन्हों जगदम्बाने ❋ यह लैजाउ सुनवँदे रानि ।
अमृत छिडाकि दिहौ लश्करमें ❋ उठिहै फौज बनाफर क्यार
अमृत लैकै सुनवाँ लौटी ❋ जगदम्बेको शीश नवाय ।
सुनवाँ आई रनि देवैं पहँ ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय
चरण लागिकै निज सासुनके ❋ औ चलिबेको भई तयार ।
घोडा पपीहाको सजवायो ❋ तापर सुनवाँ भई सवार ॥
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार
कूच कराय दियो महुबेते ❋ नर ढेबाको संग लिवाय ॥
तीनि दिनाको धावा करिकै ❋ पथरीगढमें पहुँची जाय ।

करी बन्दगी सुनि आल्हाको ❋ औ यह सुनवाँ लगी बतान ॥
काम तुम्हारो पूरन ह्वइहै ❋ स्वामी धीर धरौ मनमाहिं।
अमृत लैकै सुनवाँ चलिभइ ❋ औ लश्करमें पहुँची आय॥
जहँ पर लश्कर रहै महुबेको ❋ तहँ पर अमृत दियो डराय।
मुर्च्छा जागी सब लश्करकी ❋ जागे उदयसिंह बलवान॥
ऊदनि आये गनि सुनवाँपै ❋ तुरतै चरण छुये मन लाय।
हथि पचशावद त्यार करायो ❋ तापर आल्हा भये सवार॥
धावा करि दो गढ बिसाहिनिको ❋ सबके मारु मारु रट लागि
यक हरकारा बदलत आयो ❋ औ राजाते कह्यो हवाल॥
लश्कर आयो है आल्हाको ❋ जल्दी लश्कर लेउ सजाय।
इतनी सुनतै गज राजाने ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय
लश्करसजवायो बिसहिनिको ❋ ज्यहिकोसजतनलागीब्यार
बजो नगारा तब बिसाहिनिमें ❋ क्षत्री साजि भये तैयार ॥
मानसिंह सूरज कांतामल ❋ तीनों साजि भये तैयार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ मूर्चापर पहुँचे जाय ॥
हुक्म दै दियो सूरजमलने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
दगीं सलामी दोनों दलमें ❋ लश्कर रही अँधेरिया छाय
गोला छूटैं दलके भीतर ❋ अब ना सूझै अपन बिरान
बीस कदमके तहँ अन्तरमें ❋ गोला चलै दनाक दनाक॥
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ मानौं चोर सेंध दैजाय ।
गोला लागै जौन ऊटके ❋ सो गिरिपरै चकत्ता खाय॥
गोला लागै ज्यहि घोडाके ❋ चारौं सुम्म गर्द ह्वइजायँ ।
गोला लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरिपरै करौंटा खाय॥
गोला जाँजिरहा जिनके लागै ❋ तिनके हाड मांस छुटि जायँ
बबको गोला जिनके लागै ❋ सो लत्ता अस जायँ उडाय ॥

चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ अंधाधुंध तोपकी मारु ।
तोपैं धैं धैं लाली ह्वइगईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ
मारु बन्द भइ तब तोपनकी ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अंधाधुंध चली तलवारि ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ भारी बही रक्तकी धार ।
पैगपैग पर पैदल गिरिगये ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसेपर हाथी गिरि गये ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रट लागि
भगे सिपाही झुन्नागढके ❋ अपने डारि डारि हथियार
यह गति देखी जब सूरजमल ❋ अपनो घोडा दियो बढाय
समुहे देखो बघ ऊदनिको ❋ तिनते सूरज कही सुनाय
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ देखैं कापर राम रिसायँ ।
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ अपनो घोडा दियो बढाय
खैंचि शिरोही सूरजमलने ❋ बघ ऊदनिपर दई चलाय
तीनि शिरोही सूरज मारी ❋ ऊदनि लीन्हीं चोट बचाय ।
टूटि शिरोही गइ सूरजकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय॥
धोखा देके तब सूरजको ❋ दहिने गये उदयसिंह राय ।
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❋ सूरज गिरे भूमि महराय ॥
उतारि बेंदुलाते भुइँ आये ❋ औ सूरजको लियो बँधाय
देखि हकीकति कांतामलने ❋ आगे घोडा दियो बढाय
खैंचि शिरोही लइ जल्दीते ❋ सो ऊदनिपर राखी जाय
ढाल अडाई उदयसिंहने ❋ तीनों चोटें लई बचाय ॥
गाफिल करिकै कांतामलको ❋ ऊदनि लीन्हीं डंड बँधाय
कांता बँधते परले ह्वैगइ ❋ लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वइजाय
खबरि सुनी जब गज राजाने ❋ दोनों बेटा बँधे हमार ।

राजा चलिभे तब ड्योढीते ❋ औ भगतिनिपै पहुँचे जाय
हाल सुनायो सब लश्करको ❋ श्यामा जादू लियो उठाय
जादू लैकै श्यामा चलिभइ ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय ॥
घोडा अगिनियां त्यार करायो ❋ औ गज राजा भये सवार
फौज सजाय लई अपनी सब ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
दाबे घोडा राजा आये ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
कौने बाँधे पुत्र हमारे ❋ सो समुह ह्वइ देइ जवाब ॥
बोले ऊदनि गज राजाते ❋ राजा सुनौ हमारी बात ।
हमने बाँधे पुत्र तुम्हारे ❋ हमरो उदयसिंह है नाम ॥
धुर दक्खिनते सेतबन्धलौं ❋ बाजी टाप बेंदुला क्यार ।
दतिया मारि उडैशा मारो ❋ सो सब जानत सकल जहान
झंडा गाड्यो अटकपारलौं ❋ मारयो राज्य कमायूँ क्यार
पेशावर मुलतान जो कहिये ❋ बूंदी थहर थहर थर्राय ॥
सांझ होतही मेवातिनकी ❋ तिरिया हनि हनि देयँ केवार
आवत ह्वइहै ऊदनि ठाकुर ❋ ठाढे महल लिहैं लुटवाय
गर्व न राख्यो केहु राजाको ❋ हमको जानत सब संसार ।
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❋ मातौं भाँवरि देउ डराय ॥
दूजी करिहौ जो हमरे सँग ❋ मरिहौ राज भंग ह्वइजाय ।
बिना बियाहे हम ना जैहैं ❋ सो तुम वचन करौ परमान
इतनी सुनते राजा जरिगये ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
बोले गज राजा ऊदनिते ❋ क्या कमबख्ती लगी तुम्हारि
बढि बढि बातैं तुम मारतहौ ❋ अबहीं मूंड लिहौं कटवाय
ताते लौटि जाउ महुबेको ❋ दोनों लरिका देउ छोंडाय
बोले ऊदनि तब राजाते ❋ तुम सुनि लेउ बिसेने राय
जेहिकी बिटिया अच्छी ह्वावै ❋ जोराजोरी करैं बियाहु ॥

रीति हमारे यह चलि आई ❋ ताते मानो कही हमार ।
रारि बढैहौ जो राजा तुम ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय॥
बातन बातन बतबढ ह्वइगयो ❋ औ बातनमें बाढी रारि ।
हुक्म देदियो राज राजाने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी झुन्नागढके ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ।
धुआँ उडानो आसमानलों ❋ सविता रहे धुंधिमें छाय ॥
गोला छूटे दोनों दलमें ❋ सरसर परी तीरकी मारु ।
सननन सननन गोली छूटें ❋ कड़ कड़ करैं अगिनियाँ बान
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपें लाल बरन ह्वइजायँ ।
मारु बन्द भइ तब तोपनकी ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भैया लगौ हमार॥
भागि न जैयो कोउ समुहेते ❋ नहिं क्षत्रीपन जाय नशाय
सन्मुख लरिकै जो मरिजैहौ ❋ ह्वै हैं जुगन जुगनलों नाम
खटिया परिकै जो मरिजैहौ ❋ जगमें कोउ न लैहै नाम ।
जीतिकै चलिहौ जो महुबेको ❋ दूनी तलब दिहौं बढवाय ॥
दैदै पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढाय,
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रट लागि
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खट खट चलन लगी तलवारि
पैदलके सँग पैदल भिरिगये ❋ औ असवारनते असवार ॥
चलै शिरोही मानासाही ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटि कटि गिरैं केसरिहा ज्वान
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहिचली रक्तकी धार ।
भगे सिपाही राज राजाके ❋ सब दल रैन बैन ह्वै जाय ॥
बोले राजा तब श्यामाने ❋ भगतिनि सुनो हमारी बात ।

करतब अपनो तुम दिखलावो ❋ अपनो जादू लेउ चलाय ॥
अगिनिकि पुड़िया लइ श्यामाने ❋ सो लश्कर पर दई चलाय
बोले ऊदनि तब सुनवाँते ❋ श्यामा आगि दई बरसाय ॥
पानीकि पुड़िया ले सुनवाँने ❋ सो लश्करमें दई चलाय ।
अगिनि शांत भइ सब लश्करकी ❋ श्यामा गई मनाको खाय
तकि तकि जादू श्यामा मारै ❋ सुनवाँ जादू देय उड़ाय ।
चिल्हिया बनिगइ श्यामा भगतिनि। सुनवाँ बाज बनी तत्काल
दोनों उड़ि गइँ आसमानको ❋ दोऊ लड़न लगीं त्यहि काल
एक घरी तहँ भइ लड़ाई ❋ फिरि उड़ि गिरीं धरनिपर आय
बोली सुनवाँ तब ऊदनितै ❋ श्यामहि देउ जानतै मारि ।
बोले ऊदनि तब सुनवाँते ❋ भौजी सुनो हमारी बात ॥
हाथ जो डारि है हम तिरियापर ❋ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय
ऊदनि उतरि रसबेंदुलते ❋ औ श्यामापै पहुँचे जाय ॥
जूरा काटि लियो भगतिनिको ❋ जादू सबै झूंठ परि जाय ।
देखि हकीकति यह राजाजा ❋ घोड़ा अगिनियाँ दियो बढ़ाय
पूंछ घुमाई जब घोड़ाने ❋ लश्कर जरन लग्यो तत्काल
बोली सुनवाँ तब ऊदनितै ❋ देवर मानो बात हमारि ॥
पूँछ काटि लेउ या घोड़ाकी ❋ तौ सब काम सिद्धि ह्वै जायँ
धोखा देकै तब राजाको ❋ ऊदनि लीन्हीं पूँछ उड़ाय ॥
पूँछ कटि गई जब घोड़ाकी ❋ राजा बहुत गये घबराय ।
घोड़ा अगिनियाँ श्यामा भगतिनि ❋ दोनों भये तेजते हीन ॥
सुमिरन करिकै रामचंद्रको ❋ लैकै महादेवको नाम ।
घोड़ा बढ़ाय दियो राजाने ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
लई कमनियाँ राज राजाने ❋ कैबर खैंचि लियो अरगाय ।
फोंक जमाई सिंदोहीकी ❋ औ राजबोलिकि गाँसी लागि

खैंचि कमनियाँ भुजदंडनपर ❋ तीवा मरमर होय कमान ।
छाती डटिकै तब आल्हाकी ❋ समुहे छाँडि कैबरी दीन्ह ॥
हथि पचशावद दहिने ह्वैगो ❋ कैबर निकरि गयो वा पार ।
खैंचि शिरोही राज राजा तब ❋ सो आल्हा पर दई चलाय॥
ढाल अडाय दई आल्हाने ❋ तापर भयो जडाका जाय ।
टूटि शिरोही गइ राजाकी ❋ राजा मनमें गये सकाय ॥
तोलौं ऊदनि बदलति आये ❋ औ आल्हाने कही सुनाय ।
तुम्हरी बरनीको राजा है ❋ याको लेउ जँजीरन बाँधि॥
लैकै सांकल तब आल्हाने ❋ पचशावदको दइ पकराय।
बाँधिलेउ तुम गज राजाको ❋ गज पचशावद बात बनाइ ।
साँकल फेरी तब हाथीने ❋ औ राजाको दियो गिराय॥
दंड बाँधिलइ तब आल्हाने ❋ औ हौदामें दियो कसाय ।
कूच कराय दियो लश्करते ❋ औ फाटक पर डंके जाय॥
जीतिको डंका तब बजवायो ❋ गजराजाते कही सुनाय ।
कौने दाहकमें मलिखे है ❋ सो तुम जल्दी देउ बताय ।
हाथ जोरि बोले गज राजा ❋ हमहीं चलिकै दिहैं बताय ॥
संग लैलियो गज राजाको ❋ औ खंदकपै पहुँचे जाय ।
पत्थर टारिदियो ऊसको ❋ रसमरस्सा दियो लटकाय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❋ दादा सुनो वीर मलिखान ।
जल्दी निकरौ तुम दाहकते ❋ अबहीं भाँवरि लिहो डराय॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय ।
भारी घाय लगे देहीमें ❋ लोह जँजीरन कसे बनाय॥
कैसे निकरैं हम ऊसेते ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
बोले ऊदनि तब मलिखेते ❋ दादा सुनो हमारी बात ॥
पुष्य नक्षत्तरमें जन्मे हो ❋ बरहें परी बृहस्पति आय ।

यकसौ कुंजरको बल राखे ❋ शंका तुमहिं कालकी नाहिं॥
मुखते हीनी तुम बोलतहौ ❋ क्या बल घटो बीर मलिखान
इतनी सुनतै भुजबल मसके ❋ साँकल तोरि दई मलिखान॥
उछलिकै आये तब ऊभेपर ❋ औ आल्हाको करो प्रणाम।
बिनती कीन्हीं गज राजाने ❋ औ आल्हाते कही सुनाय॥
मुश्क छोरि देउ तुम लरिकनकी ❋ अबहीं भाँवरि देउँ डराय।
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने ❋ सबकी कैद दई छुडवाय॥
गंगा उठवाई तीनोंते ❋ औ पंडितको लियो बुलाय।
साइति पूँछिलई सोरिनकी ❋ राजा करन तयारी लाग॥
माहिल पहुँचे गज राजापै ❋ नैके करी बन्दगी जाय।
बोले माहिल गज राजाते ❋ राजा मानो कही हमारि॥
ब्याह जो करिहौ गढ महुबेमें ❋ बुडिहै मान सारिको नाम
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ हम यक जतन देई बतलाय॥
जितने घरोआ हैं महुबेके ❋ तिनको मडये लेउ बुलाय।
शूर छिपावो तुम कोठरिनमें ❋ सबके शीश लेउ कटवाय॥
यह मन भाई गज राजाके ❋ तुरँत मडवा दियो गडाय।
शूर बुलाये गज राजाने ❋ सो कोठरिनमें दिये छिपाय॥
चौक पुराय दई आँगनमें ❋ ऊँची चौकी दई डराय।
कलश धराय दियो सोनेको ❋ औ सूरजको लियो बुलाय॥
बोले राजा सूरजमलसे ❋ जल्दी तुम बरातको जाउ।
जितने घरोआ हैं महुबेके ❋ सो लरिका सँग लावो जाय॥
सूरज चलिभये तब ड्योढीते ❋ औ पथरीगढ पहुँचे जाय।
बैठे आल्हौ जहँ तम्बुमें ❋ सूरज नैके करी सलाम॥
बोले सूरज तब आल्हाते ❋ हमरे कुलका यहै ब्योहार।
जितने घरोआ हैं महुबेके ❋ सो सब चलैं हमारे साथ॥

इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ अपनी करन तयारी लाग ।
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ सुलखे बाँधिलिये हथियार
मोहन बेटा बीरशाहको ❋ जो बौरीगढको सरदार ॥
लाखनि ब्रह्मा जोगा भोगा ❋ जगनिक बाँधिलिये हथियार
बारह क्षत्री तुरतै सजिगये ❋ ताल्हन सजे बनारस क्यार
सबै घरोआ घोडन चढिगये ❋ पलकी चढे बीर मलिखान
चली पालकी पथरीगढते ❋ औ द्वारेपर पहुँची जाय ।
उतरि सवारिनते भुइँ आये ❋ बारहु शूर महोबे क्यार ॥
भयो बुलौआ तब मडयेको ❋ सब मडयेतर पहुँचे जाय ।
मलिखे बैठिगये चौकीपर ❋ पंडित वेद उचारन लाग ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ लागे होन मंगलाचार ।
आई गजमोतिनि मडयेतर ❋ पंडित गांठिदई जुरवाय ॥
होम कराय दियो पंडितने ❋ भांवरि परन लगीं तत्काल ।
पहिली भांवरिके परतै खन ❋ सूरज खैंचिलई तलवारि ॥
चोट चलाई नर मलिखेपर ❋ ऊदनि दीन्हीं ढाल अडाय
दुसरी भाँवरि मलिखे घूमें ❋ कांतामल दइ तेग चलाय ॥
ढाल अडाई तब सुलिखेने ❋ औ बचिगये बीर मलिखान
तिसरी भांवरिके परतैखन ❋ क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि ॥
चली शिरोही वा मडयेमें ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
टूक टूक मडयेके ह्वैगये ❋ क्षत्री भगे बिसेने क्यार ॥
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ दादा खंभ लेउ गडवाय ।
भाँवरि चारौं जो बाकी हैं ❋ सोऊ अबहीं लेउ डराय ॥
मडओ गाडो तब सौगनको ❋ ढालन मडवा दियो छवाय ।
चारों भाँवरि जो बाकी रहैं ❋ घूमें तुरत बीर मलिखान ॥

चला शिरोही फिरि मडयेतर ❋ चर्बी खंभ गई लपिटाय ।
चुनरी भीजिगई लोहूते ❋ मलिखे रक्त बरन होइजाय॥
एक हजार शूर बिसहिनिके ❋ नौसे जूझिगये त्यहिकाल ।
एक सो जोधा बाकी रहिगे ❋ सो खिरकिनते गये बराय॥
कांतामल औ सूरजमलकी ❋ आल्हा डंड लई बँधवाय ।
मुश्क बाँधिकै गज राजाकी ❋ सातौ भाँवरि लई डराय ॥
बोले ऊदनि गज राजाते ❋ अब तुम भात लेउ बनवाय
भातक गरजी हम क्षत्री सब ❋ महलन भोजन होय तयार॥
इतनी कहिकै ऊदनिचलिभये ❋ सब शूरनको संग लिवाय ।
उठी पालकी नर मलिखेकी ❋ जनवासेकी पकरी राह ॥
सबमिलिपहुँचिगयेपथरीगढ ❋ जान्यो हाल माहिल परिहार
लिल्ली घोडीपर चढि बैठे ❋ औ बिसहिनिकी पकरी राह
जहां कचहरी गज राजाकी ❋ पहुँचे उरईके परिहार ।
करी बन्दगी गज राजाको ❋ तब राजाने कही सुनाय ॥
बडे शूरमा हैं महुबेके ❋ जिनते हारिगई तलवारि ।
सातौ भाँवरि उन डरवाईं ❋ दोनों बेटा लिये बँधाय ॥
भात खानको अब वे कहिगये ❋ सो कछु जतन देउ बतलाय
बोले माहिल तब राजाते ❋ तुम सुनिलेउ बिसेने राय॥
जो वे कहिगये भात खानको ❋ सबको काल रह्यो नियराय
विनती करिकै तुम आल्हाते ❋ लावो साथ बरोआ ज्वान
बिन हथियार साथ लै आवो ❋ सबके मूँड लेउ कटवाय ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ धनि धनि उरईके परिहार ॥
भली बताई माहिल ठाकुर ❋ हमने मानी बात तुम्हारि ।
तुरतै भात त्यार करवायो ❋ महलन भई रसोई त्यार ॥

शूर बुलाये गज राजाने * दोहरे तेगा दिये बँधाय ॥
सो बैठारि दिये कांठरिनमें * जनवासेको भये तयार ।
संग लै लियो सब नेगिनको * औ बरातमें पहुँचे जाय ॥
जहँ पर तम्बू था आल्हाको * पहुँचे तहाँ त्रिसेने राय ।
लगी कचहरी तुनि आल्हाकी * अजगर लागि रहा दरबार
एक अलँग ताल्हन सैयद हैं * बैठ एक ओर मलिखान ॥
एक अलँग पर ढेबा बहादुर * यक लँग उदयसिंह बलवान
एक अलँग पर लाखनि राना * जिनके लाखनके ब्यौहार
एक अलँग ब्रह्मानँद बैठे * मानहुँ इंद्रदेव सरदार ॥
जगनिक बैठे जगनेरीके * जोगा भोगा औ सुलिखान
मोहन बैठे बौरी गढके * बैठ बड़े बड़े बलवान ॥
नचै कंचनी वा समयापर * शोभा कछू कही ना जाय।
जबहीं झोंक देत नैननकी * क्षत्रिन लगत कामके बान॥
तीनि हाथ ऊँचा सिंहासन * तापर तपै बनाफर राय।
तोलों पहुँचि गये गज राजा * औ आल्हाको करी सलाम
नजरि बदलि गइ तुनि आल्हाकी * ऊँची चौकी दइ डराय।
तुरतै बैठिगये गज राजा * तब आल्हाने कही सुनाय ॥
कौन कामको तुम आये हौ * सो तुम हमहिं देउ बतलाय
बोले गज राजा आल्हाते * हमरे कुला यहै ब्योहार ॥
जितने शूर गये भौंरिनमें * उतनेइँ भात खानको जायँ ।
त्यार रसोई है महलनमें * सब उठि चलैं हमारे साथ॥
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने * सब शूरनते कही सुनाय ।
करो तयारी अब चलिबेकी * चालिके जेइँ लेउ ज्योंनार ॥
बारहु शूर उठे एकै संग * अपने बाँधि लिये हथियार ।

तब गज राजा बोलन लागे ❀ दुबिधा छोडि देउ महराज॥
बिन हथियार चलौ हमरे सँग ❀ हमरे कुला यहै ब्यौहार।
अब हम दूजी कछु करिहैं ना ❀ मानौं साँचे बचन हमार॥
हौ समरत्थ सबै लरिका तुम ❀ धनि रजपूत लिये औतार।
गडुआ लैके गंगा जलको ❀ बारह शूर भये तैयार॥
चली पालकी नर मलिखेकी ❀ सिगरे शूर चले यक साथ।
जाय पहुँचे दरवाजे पर ❀ तुरतै पलकी धरी उतारि॥
उतरे मलिखे तब पलकीते ❀ औ मडयेमें पहुँचे जाय।
लैलै गडुआ कर सोनेको ❀ सब चौकामें बैठे जाय॥
करी चौकसी गज राजाने ❀ फाटक बन्द दिये करवाय।
डारि पत्तलैं दई राजाने ❀ उनपर भात दियो परसाय॥
नेग मँगाय दियो गज राजा ❀ सोने कंगन रतन जड़ाय।
कौर उठायो जब मलिखेने ❀ राजा हल्ला दियो कराय॥
क्षत्री निकारिपरे कोठारिनते ❀ अपनी लिये हाथ तलवारि।
दोखि हकीकति ऊदनि बोले ❀ घटिहा भूप बिमेना गाय॥
बिन हाथियार संग निज लाये ❀ औ घटि करी हमारे साथ।
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❀ लै बजरंगबलीको नाम॥
बारहु शूर उठे महुबेके ❀ गडुआ हाथमें लियो उठाय
गडुआ मारै ज्यहि क्षत्रीकै ❀ सो गिरिपरै धरनि भहराय॥
चारि घरी भारि गडुअन मारा ❀ चौकी पाटा लिये उठाय।
बड़े खिलारी महुबेवाले ❀ सब क्षत्रिनको दियो गिराय
बचे बचाये क्षत्री भागे ❀ मडये बही रक्तकी धार।
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❀ दादा सुनौ हमारी बात॥
भात न छाँडो पतरिन परको ❀ बैठिकै जेंइ लेउ ज्यौनार।

इतनी सुनिकै बारहु क्षत्री * लोथिन ऊपर बैठे जाय ॥
भातु खान लागे सबही मिलि * शोभा कछू कही ना जाय।
देखि हकीकति गजमोतिनिने * निज मातातें कही सुनाय॥
लड़िकै जिति हैं ना दादा अब * तातें जल्द देउ समुझाय ।
बड़े लड़ैया हैं महुबेके * माड़ो लियो बापको दाउँ॥
जंग जीतिकै नैनागढमें * सातों भाँवरि लईं डराय ।
इतनी सुनिकै रानी चलि भइ * औ राजापै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिकै रानी बोली * स्वामी मानो बात हमारि ।
बड़े लड़ैया महुबेवाले * इनतें तुम जीतनके नाहिं ॥
सोच करो ना कछु जियरामें * बेटी बिदा देउ करवाय ।
इतनी बात सुनी राज राजा * औ आल्हापै पहुँचे जाय॥
बोले राजा सुनि आल्हातें * हमरी चूक माफ ह्वैजाय ।
करौ तयारी अब बरातकी * अबहीं बिदा देउँ करवाय॥
यह सुनि ऊदनि उठि ठाढे भये * फाटक बंद दियो खुलवाय
शूर बारहों चलि बिसहिनितें * पथरीगढमें पहुँचे जाय ॥
हुक्म दै दियो सब लश्करमें * अब महुबेको होउ तयार ।
तोलौं नाई राज राजाको * सो आल्हापै पहुँचो आय॥
हाथ जोरिकै नाई बोलेउ * तुम सुनि लेउ बनाफर राय
हुक्म दियो है राज राजाने * तुरत पालकी देउ पठाय ॥
बिदा कराय देउँ बेटीकी * अब ना राखौं देर लगाय ।
इतनी सुनिकै तब ऊदनिने * गहनेको डब्बा लियो मँगाय
संग पालकी लै बराततें * बिसहिनि गढकी पकरी राह
गई पालकी दरवाजेपर * ऊदनि डब्बा लियो उठाय॥
जितने नेगी राज राजाके * सबको गहनो दो पहिराय ।

भई तयारी गजमोतिनिकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
सिगरे गहने बेटी पहिरे ❋ अंग अंगम सजे बनाय।
रूपाके अगरीसो गजमोतिनि ❋ तापर भूषण लिये रचाय॥
साजिकै ठाढी भइ गजमोतिनि ❋ मानो लक्ष्मी सजी बनाय
भेंटन लागी निज मातातै ❋ भेंटी बहुरि सहेलिन साथ
शीश नायकै गजराजाको ❋ औ पलकीमें बैठी जाय।
सुमिरन करिकै गजमोतिनिको ❋ सखियाँ गय गय रहिजायँ
चली पालकी गजमोतिनिकी ❋ औ बगतमें पहुँची जाय।
आइ पालकी जनवासेम ❋ आल्हा हुक्म दियो फरमाय
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ महुबेको होउ तयार॥
इतनी सुनिकै बच ऊदनिने ❋ लश्कर हुक्म दियो करवाय
कूच कराय दियो फौजनको ❋ औ महुबेको भये तयार।
आये भिखारी गढ बिसहिनिके ❋ ऊदनि मोहरे दई लुटाय॥
चले महोबिया गढ बिसहिनिते ❋ औ महुबेकी पकरी राह।
आठरोज मारगमें बीते ❋ महुबा धुरो दबायो जाय॥
रूपना बारीको बुलवायो ❋ सो आगेको दियो पठाय।
मल्हना रानी अंटा ठाढी ❋ हेरै बाट बरायत केरि॥
तौलौं रूपना दाखिल ह्वैगा ❋ दोनों हाथ जोरि रहिजाय
बोली मल्हना तब रूपनाते ❋ बेटा हाल देउ बतलाय॥
कैसी गुजरी पथरीगढमें ❋ सो सब हाल कहो समुझाय
रूपना बोलेउ तब मल्हनाते ❋ माता सुनो हमारी बात॥
चटिहा राजा बिसहिनिवालो ❋ बहु छल करो बनाफर साथ
पुण्य तुम्हारे दहिने ह्वैगो ❋ आये ब्याहि बीर मलिखान
करो तयारी अब परछनिकी ❋ बहुअर जल्दी लेउ उतारि।

इतनी बात सुनी मल्हनाने * मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय॥
देवै ब्रह्माको बुलवायो * बारहु रानी लई बुलाय।
सखियाँ बुलवाईं महुबेकी * लागे होन मंगलाचार॥
थार सुबरनको मँगवायो * चौमुख-दियना लियो बराय
करी तयारी रानि मल्हनाने * औ रुपनाते कही सुनाय॥
जल्दी भेजिदेउ पलकीको * महलन त्यारी लेउ कराय।
रुपना चलिभयो तब बरातको * औ ऊदनिपै पहुँच्यो जाय
रुपना बोलेउ बघ ऊदनिते * जल्द पालकी देउ पठाय।
चली पालकी गजमोतिनिकी * औ द्वारेपर पहुँची जाय॥
आई बरायत जब महुबेमें * झंडन रही झालरी छाय।
मल्हना रानी द्वारे आई * देवै ब्रह्मा संग लिवाय॥
बारह रानी चंदेलेकी * सोऊ द्वारे पहुँची आय।
सखियाँ मंगल गावन लागीं * परछनि होनलगी तत्काल
बहू उतारि लई मल्हनाने * रंग महलमें गई लिवाय।
नेगचार कीन्हों सबने मिलि * दान दक्षिणा दई बँटाय॥
सखिनै पाँव छुये मल्हनाके * सो माथेमें लिये लगाय।
देवै ब्रह्माके पद छुइकै * सबके चरण छुये मनलाय
बजी बधाई गढ महुबेमें * घर घर भयो मंगलाचार।
परजा झगरैं गढ महुबेके * सबको मल्हना दियो इनाम
ऊदनि पहुँचि गये लश्करमें * सबको खिलतैं दईं बँटाय।
दगी सलामी गढ महुबेमें * आये जीति बनाफर राय॥
जितने बराती महुबे आये * सबको मिले उदयसिंह राय
आदर कारिकै सब राजनको * ऊदनि बिदा दियो करवाय
सबै बराती जो राजा थे * अपनो कूच दियो करवाय
जितने बराती थे महुबेके * अपने घरन पहूँचे जाय॥

ऐसे व्याह भयो मलिखेको ❋ सो हम लिखिकै दियो सुनाय
साँच झूँठ परमेश्वर जानै ❋ पै हम सांची लिखी बनाय
नित उठि सुमिरौं शिवशंकरको ❋ करिहैं भोलानाथ सहाय।
सुनौ सुनावौ यह आल्हा तुम ❋ बाढै ज्ञान बुद्धि सरसाय ॥
लिखौं हकीकति बैरीगढकी ❋ ज्यहिबिधिऊदनि भयेतयार
चौथी लाये चन्द्रावलिकी ❋ ज्यहिबिधिआयेउदयसिंहराय
समय समयपर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ।

इति मलिखानका व्याह समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

अथ चन्द्रावलिकी चौथी ।

बौरीगढ़की लड़ाई ।

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहें गणेश ।
पाच देव रक्षा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

सवया ।

जाहि मनाय बनाय प्रपंच, विरंचि रच्यो विरच्यो जगतीको ।
विष्णु करें प्रतिपालन लालन, पाय महाय अलक्ष्य गतीको ॥
शंकर सृष्टि सँहारत ता बल, फर्क न आवत एक रतीको ।
ध्यान करों त्यहि सारमतीको, उदार मती शिरी पारवतीको॥
लगत महीना शुभ भादोंका * तिथि अष्टमी और बुधवार।
मथुरा माहिं रूप गुण आगर * लीन्हों कृष्णचन्द्र अवतार॥
आधी राति समय मन भावन * पावन रूप काल कल्यान ।
भक्त उबारन हेत जगतमहँ * प्रगटे कृष्णचंद्र भगवान ॥
माया प्रगट करी स्वामीने * लीला करी भक्तके काज ।
महिमा प्रभुकी सब जग जाहिर * जानत सकल देव शिरताज
चरित अनूपम कृष्णचंदके * गावत साधु संत मनलाय ।
पावत भक्ति सुखद यदुवरकी * हितकरि जगत माहिं हर्षाय॥
लगा महीना जब सावनका * घर घर परे हिंडोला आय ।
हानलाग त्योंहार तीजको * सखियाँ गावें राग मलार ॥
ठाढी मल्हना सत खंडापर * अपने मनमहँ करै विचार ।
सुधि नहिं पाई चन्द्रावलिकी * घरंघरे बिटियाँ आइँ बुलाय
जबते ब्याहि गई चन्द्रावलि * तबते मिली नाहिं म्वहिं आय

सोच करत थी मैं अपने मन ❋ समरथ लरिका होयँ हमार ॥
चौथी लैहैं चन्द्रावलिकी ❋ तब हम मिलिहैं हाथ पसारि ।
अस विचारिकै मल्हना रानी ❋ लै लै नाम चन्द्रावलि क्यार ।
रोवन लागी सतखंडापर ❋ तौलौं आये उदैसिंह राय ।
कान अवाज परी ऊदनिके ❋ ऊदनि हाथ जोरि रहि जायँ
बोले ऊदनि रनि मल्हनाते ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
कौन बातको माता रोवौ ❋ सो तुम हमहिं कहौ समुझाय ॥
करो बहाना तब मल्हनाने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
घरघर बिटिया सावन गावैं ❋ अपनो करैं तीज त्यौहार ॥
हमरे घरमाँ कोउ उपजी नाहिं ❋ करती आज तीज त्यौहार ।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ अपनी लई कटारी काढि ॥
पेटु मारि अबहीं मरिजैहौं ❋ नाहीं साँची देउ बताय ।
कहिकै बेटी चन्द्रावलि है ❋ को है बीरशाह महराज ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ बेटा मेरे लडैते लाल ।
बहिनितुम्हारीयक चन्द्रावलि ❋ सो बौरीगढ गई बिवाहि ॥
जबते ब्याहिगई चन्द्रावलि ❋ काहू बिदा कराई नाहिं ।
कोउ न उपजो अस महुबेमें ❋ जो बेटीको लावै लिवाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ माता हमहिं बतायो नाहिं ।
कैसे ब्याह भयो बहिनीको ❋ सो सब हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ बेटा मेरे लडैते लाल ।
उमिरि तुम्हारी तब थोरी रहै ❋ ताते तुमहिं बतायो नाहिं ॥
बहिनि तुम्हारी चन्द्रावलिजो ❋ जाको रूप कह्यो ना जाय ।
खबरि फैलि गइ देश देशमें ❋ बेटी सुघर चँदेले केरि ॥
ऐसी सुन्दरि है चन्द्रावलि ❋ मानो प्रगट पद्मिनी नारि ।
राजा बीरशाह बौरीको ❋ लश्कर साथ लाय दियँआय

एक कोसपर डेरा कीन्हों * चिट्ठी महुबे दई पठाय।
लिखी हकीकति बीरशाहने * पढियो याहि चँदेले राय॥
बेटा ब्याहन हम आये हैं * तुम बेटीको करो बिवाह।
ऐसी पाती पढी चँदेले * तुरतै हमहिं लियो बुलवाय
हाल सुनायो सब पातीको * औ फिरि पूछी उचित सलाह
सो सुनि ज्वाब दियो हमने तब * स्वामी सुनो हमारी बात॥
करिहौ ब्याह कोउ राजाके * आखिर बेटी रहै न क्वाँरि।
स्यानी बेटी है अपने घर * ताते मानहुँ बात हमारि॥
उत्तम कुल है बीरशाहको * यादव वंश बीर बिख्यात।
बेटा सुन्दर इन्द्रसेन है * बेटी ब्याहि देउ महराज॥
पारसपूजा है तुम्हरे वर * दायज देउ उचित सुख पाय
बात हमारी सुनि राजाने * अपनो कलमदान ले हाथ
लिखी हकीकति बीरशाहको * पढियो याहि यादवा राय।
नाम हमारो तुम जानत हो * जगमें विदित राजा परिमाल
बडे बडे क्षत्री हम जीते हैं * सबकी हारि गई तलवारि।
जब हम जानी अपने मनमें * सन्मुख कोउ लडैया नाहिं
तब हम खाँडा धरि समुद्रमें * मानी अमर गुरूकी आनि
नहिं हथियार छुवैं रणमें हम * हमरे मित्र सकल सरदार॥
करिया आयो माडो वाला * आधीरातिजानिन्याहिकाल।
सोवत बाँध्यो दस्सराजको * बच्छराजको लियो बँधाय॥
पुनि लुटवायो दशपुरवा सब * ना विपदाकी रही सुमार।
निबल जानिकै गढ महुबेको * तुमहूँ लश्कर लाये सजाय
करी चढाई जब बौरीगढ * तब तुम कहाँ हते महराज।
मित्र बने तहँ बाप तुम्हारे * सोतुमहमहिंभूलिगयेआज
लिख्यो ब्याह जो तुम पातीमें * सो तुम सुनौ यादवा राय।

बेटी स्यानी है हमरे घर ❋ सो हम देहैं ब्याह रचाय ॥
धीरज राखौ अपने मनमें ❋ ह्वइ है ब्याह पद्मिनी क्यार।
यहिबिधिपातीलिखिराजाने ❋ औ धावनको दई गहाय ॥
धावन चलिभयो तब जल्दीते ❋ बीरशाह पै पहुँचो जाय ।
पाती दीन्हीं बीरशाहको ❋ सो लै तुरतै बांचन लाग ॥
पढी हकीकति जब पातीकी ❋ मनमें बहुत गये शरमाय ।
ज्वाबलिख्योफिरिबीरशाहने ❋ पढियो याहि चँदेले राय ॥
जो तकसीर भई हमते कछु ❋ सो तुम माफ करौ महराज।
करौ तयारी अब जल्दीते ❋ जासों होय व्याहको काज ॥
पढी हकीकति चन्देलेने ❋ बहुतै खुशी भये परिमाल ।
करी तयारी तब व्याहकी ❋ घर घर भयो मंगलाचार ॥
खबरि भेजि दइ बीरशाहको ❋ सोऊ करन तयारी लाग ।
सजी बरायत इन्द्रसेनकी ❋ आई चंद्रवंशके द्वार ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ पंडित वेद उचारन लाग ।
नेग योग ह्वइ व्याह भयो तब ❋ बेटी बिदा दई करवाय ॥
उमिरि तुम्हारी तब थोरी थी ❋ लरिका सबै रहे लाचार ।
कठिन यादवा बौरीवाले ❋ ताते हाल बतायो नाहिं ॥
देख्यो नाहीं हम बेटीको ❋ बारह बरस भई यहि काल।
सो सुधि आई म्वहिं बेटीकी ❋ तब हम रोय उठीं लै नाम॥
यहसुनिऊदनि बोलन लागे ❋ माता सुनौ हमारी बात ।
बिदा करबेको हम जैहैं ❋ हमको खर्चा देउ मँगाय ॥
मल्हना बोली तब ऊदनिते ❋ बेटा मानौ कही हमारि ।
बैरी तुम्हरे देश देश हैं ❋ नाहक रारि बढैहौ जाय ॥
काम तुम्हारो ना जैबेको ❋ कोई चुगुली करि है जाय ।
यह सुनिबोलेबबऊदनितब ❋ माता सोच देउ बिसराय ॥

तुम्हारी हम ना मनि हैं ❋ ताते त्यारी देउ कराय।
बिदा करै हैं हम बहिनीकी ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ॥
इतनी कहिकै ऊदनि चलिभये ❋ औ परिमाल कचेहरी जायँ
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा सुनौ हमारी बात॥
खर्च मँगाय देउ हमको तुम ❋ मैं बौरीगढ होउँ तयार।
बिदा करैहौं मैं बहिनीकी ❋ घरपर आय करै त्यौहार॥
इतनी बात सुनी ऊदनिकी ❋ तब राजाने कही सुनाय।
काम नहीं है कछु जैबेको ❋ बेटा मानौ बात हमारि॥
चाह नहीं है हमैं बिदाकी ❋ ना बेटीने काम हमार।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा हम मनिबेके नाहिं॥
बिदा करैं हैं हम बहिनीकी ❋ अबहीं खर्च देउ मँगवाय।
तो मैं बेटा देबे वालो ❋ तुरते बिदा लेउँ करवाय॥
इतनी सुनिकै राजा चलिभये ❋ औ मल्हनापै पहुँचे जाय।
सूरति देखी जब राजाकी ❋ मल्हना उठी भरहरा खाय॥
बोले राजा तब मल्हनाते ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि।
हाल बतायो तुम बौरीको ❋ ऊदनि एक न मानत बात॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात।
पारस पूजा तुम्हरे घरमें ❋ लोहा छुवत सोन ह्वै जाय॥
दौलति चहिये सब काहूको ❋ सो तुम तहाँ देउ पहुँचाय।
बिदा करिदैहैं बौरीवाले ❋ राजा मानौ बात हमारि॥
सुनी बात जब रनि मल्हनाकी ❋ राजाके मन गई समाय।
त्यारी करिदइ परिमालेने ❋ साठि पालकी दई सजाय॥
अस्सी गजरथ चालिस हाथी ❋ सुन्दर घोडा एक हजार।
बारह तोडा मोहरनवाले ❋ बीस दुशाला औ रूमाल॥
सवा लाखकी चीरा कलँगी ❋ सो ऊदनिको दई गहाय।

सात लाखकी सब सामग्री ❀ सो ऊदनिको दइ सौंपाय ॥
बावन मटुका मल्हना साजे ❀ तिनपर रंगाति दई कराय।
बोले राजा तब ऊदनिते ❀ पृथीराजते मिलियो जाय ॥
पहले जैयो तुम दिल्लीको ❀ जैसी कहैं बीरचौहान।
तैसी करियो तुम बौरीमें ❀ यह सुनि चले उदैसिंहराय॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❀ चारौं नेगी संग लिवाय।
घोडा बेंदुलाको सजवायो ❀ ऊदनि फांदि भये असवार॥
करी बन्दगी परिमालको ❀ औ दिल्लीकी पकरी राह।
ताही औसर माहिल आये ❀ लिल्ली घोडाके असवार॥
हाल बतायो ना काहूने ❀ माहिल सबते पूछन लाग।
अहिरको लरिका यक उरईको ❀ जाको महुबे भयो विवाह॥
तौलो मिलिगो सो माहिलको ❀ तान हाल कह्यो समुझाय।
सुनिकै माहिल तुरत चलिभये ❀ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
खबरि पठाइ गैह पाहिलते ❀ लिखिकै हाल उदैसिंह राय
तौलो माहिल दाखिल ह्वैगये ❀ पृथीराजको करी सलाम
मूरति देखी जब माहिलकी ❀ ऊंची चौकी दई डराय।
आवो बैठो उरई वाले ❀ यह हँसि कही पिथौरा राय
माहिल बोले पृथीराजते ❀ तुम सुनिलेउ बीर चौहान।
करी सलाहै चन्देलेन ❀ दिल्ली चलिकै लेउ लुटाय॥
पहिले भेजो है ऊदनिको ❀ एहै बहुरि बीर मलिखान।
करो बहाना बौरीगढको ❀ सो तुम मानो बात हमारि॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❀ ऐसि न कहो महिल परिहार
काहे दिल्ली वे लुटवै हैं ❀ उनको कौन परी परवाहि ॥
क्या तकसीर करी उनकी हम ❀ काहे दिल्ली लिहैं लुटाय।
जब तुम आवतहौ दिल्लीकी ❀ तब तुम झूंटी कहत बनाय॥

यह सुनि मनमें कायल ह्वइकै ❋ औ चलि भये महिल परिहार
राह पकरि लइ बौरीगढकी ❋ अब ऊदनिको सुनौ हवाल
ऊदनि पहुँचे गढ दिल्लीमें ❋ बागमें डेरा दियो डराय।
जब सुधि पाई पृथीराजने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय॥
बोले पृथीराज सूरजते ❋ तुम ऊदनिको लावो लिवाय
यह सुनि चलिभयेतबसूरजमल ❋ औ बागनमें पहुँचे जाय॥
जहँपर डेरा था ऊदनिको ❋ तहँ सूरजमल पहुँचे जाय।
करी बन्दगी सूरजमलने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय॥
तुमहिं बुलायो है राजाने ❋ सो तुम चलो हमारे साथ।
इतनी सुनिकै ऊदनि चालेभे ❋ पृथीराजपै पहुँचे जाय॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ दोनों हाथ जोरि रहिजाय।
नजरि बदलिगइ पृथीराजकी ❋ तुरतै छाती लियो लगाय॥
कहांकि त्यारी करी उदैसिंह ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय।
बोले ऊदनि पृथीराजते ❋ हम बौरीको भये तयार॥
बिदा करैहैं हम बहिनीकी ❋ यह सुनि कही पिथौरा राय
जालिम राजा है बौरीको ❋ ताते लौटि मह्होबे जाउ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ राजा हम मनिवेके नाहिं।
बिदा न करि हैं चंद्रावलिकी ❋ तौ हम बौरी लिहैं लुटाय॥
बिदा करे हैं हम बहिनीकी ❋ चाहौ प्राण रहैं की जायँ।
यह सुनि पृथीराज सोचे मन ❋ ऊदनि कही न मनिहैं बात
चीरा कलँगी सवा लाखकी ❋ पृथीराजने लई मँगाय।
सो दैदीन्हों तब ऊदनिको ❋ यह बौरीमें दीजो जाय॥
बिदा करि दिहैं चन्द्रावलिकी ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय
खबरि सुनी जब रानि अगमाने ❋ तब ऊदनिको लियो बुलाय
सखियाँ ठाढीं जो महलनमें ❋ सो ऊदनिनन रहीं निहारि।

चरन लागिकै रनि अगमाके ❋ ऊदनि माथे लिये लगाय॥
बोली अगमा बघ ऊदनिते ❋ तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय
कठिन यादवा बौरीवाले ❋ तुमते मारु सही ना जाय ॥
ताते मानौ कही हमारी ❋ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
बिदा करैहैं हम बहिनीकी ❋ तब हम लौटैं नगर महोब।
बिदा न करिहैं बीरशाह जो ❋ मरिहौं राज भंग ह्वइजाय॥
यह सुनि अगमा सोचन लागी ❋ कलहा दस्सराजको लाल ।
यहु ना मनिहै कही हमारी ❋ याको नाम उदैसिंह राय॥
लहर पटोरे सवा लाखकी ❋ रनि अगमाने लई मँगाय ।
सो पकराय दई ऊदनिको ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
भेंट दीजियो यह समधिनिको ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय
चरण लागिकै रानि अगमाके ❋ तुरतै चले उदैसिंह राय ॥
कई रोजकी मंजिल करिकै ❋ बौरीगढमें पहुँचे जाय ।
आधकोस जब बौरी रहिगइ ❋ अपनो डेरा दियो लगाय॥
कागद लैकै कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ।
लिखी हकीकति बघ ऊदनिने ❋ पढियो बीरशाह महराज ॥
सिद्धिश्री नारायण लिखिकै ❋ ता पाछते लिखी जोहार ।
लिखी हकीकति फिरि चौथीकी ❋ औ महुबेको लिखो हवाल
बिदा करावन हम आये हैं ❋ बघ ऊदनि है नाम हमार ।
ऐसी पाती ऊदनि लिखिकै ❋ सो धावनको दई गहाय ॥
धावन चलिभो पाती लैकै ❋ बौरीगढमें पहुँचो जाय ।
लगी कचेहरी बीरशाहकी ❋ धावन नैकै करी सलाम ॥
पाती धरि दई त्यहिं गद्दीपर ❋ सो राजाने लई उठाय ।
खोलिकै पाती राजा देखी ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय॥

जोरावर लरिका बुलवायो ❋ औ पातीको कह्यो हवाल ।
जबते ब्याह भयो महुबेमें ❋ सुधि नहिं लई काहुने आय॥
लरिका आयो है महुबेते ❋ जाको नाम उदैसिंहराय ।
जल्दी लावौ तुम ऊदनिको ❋ सुनि जोरावर भयो तयार ॥
लरिका चलिभयो बीरशाहको ❋ औ ऊदनि पै पहुँचो जाय।
करी तयारी बीरशाहने ❋ अपनो बँगला लियो सजाय॥
जैसी पगिया रहै राजाकी ❋ तैसी सबको दई बँधाय ।
इकरँग कलँगी सबके शिरपर ❋ बीरशाहने दई लगाय ॥
एक उमिरिया सब काहूकी ❋ एकै बाना लियो बनाय ।
ना पहिचान होय राजाकी ❋ यहिविधि बँगला सज्यो बनाय
इक हरकारा दौरति आयो ❋ औ ऊदनिते लगो बतान ॥
लरिका आयो बीरशाहको ❋ सो तुम उठिकै करौ जोहार।
ऊदनि उठिकै तुरतै आये ❋ जोरावरको करी जोहार ।
बोले जोरावर तब ऊदनिते ❋ तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय॥
तुमहिं बुलायो है राजाने ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ ।
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❋ घोडा बेंदुला लियो सजाय॥
कूदि बछेरापर चढि बैठे ❋ औ चलिभये उदैसिंहराय ।
जहाँ कचेहरी बीरशाहकी ❋ अपनो घोड नचायो जाय॥
क्षत्री देखिरहे ऊदनि तन ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
रूप सांवरो वय ऊदनिको ❋ नैना हिरनाकी उनहार ॥
मोहित ह्वैगये सब क्षत्रीतहँ ❋ कोउ न आँखी सकै मिलाय।
ऊदनि देखो वा बँगलाको ❋ औ क्षत्रिन तन रहे निहारि।
एकै उम्मिरिके क्षत्री सब ❋ सोहै पाग शीश यकसार ।
एकै तुर्रा एक निशाना ❋ एकै रंग क्षत्रियन क्यार ॥
ऊदनि सोचैं अपने मनमें ❋ धोखा दियो यादवा राय।

जानि प्रताप देखि राजाको ❋ ऊदनि तुरतै करी सलाम ॥
चिट्ठी लैकै परिमालैकी ❋ सो गद्दीपर दई चलाय ।
जो सामान गये लै ऊदनि ❋ सो राजाके धरो अगार ॥
देखी सामा जब चौथीकी ❋ राजा बहुत खुशी ह्वइजाय ।
पाती बाँची परिमालैकी ❋ आँकुइ आँकु देखि सुखपाय
हृदय लगाय लियो ऊदनिको ❋ औ यह कही यादवा राय ।
सुधि बिसराय दई बौरीकी ❋ कबहुँ न आये हमरे देश ॥
चौथी पाई हम राजी भये ❋ धीरज धरो उदयसिंहराय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ राजा सुनो हमारी बात ॥
मटुका लाये हम चौथीके ❋ महलन अबहिं देउ पठवाय ।
बोले राजा जोरावरते ❋ महलन खबरि देउ पहुँचाय ॥
इतनी सुनिकै जोरावरने ❋ महलन खबरि दई करवाय ।
सखियाँ बुलवाईं राजाने ❋ महलन होय मंगलाचार ॥
नगर सजायो बीरशाहने ❋ सिगरी गलियाँ दई सजाय ।
वन्दनवारी घर घर बँधिगईं ❋ द्वारे द्वारे कलश भराय ॥
जहँ तहँ बाजा बाजन लागे ❋ नौबत झरन लगी नृप द्वार ।
बजैं नगारा गलियारेनमाँ ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
भयो बुलौआ बघ ऊदनिको ❋ महलन चले उदैसिंहराय ।
घोडा बेंदुला नाचत जावै ❋ संगै चलो काफिला जाय ॥
सुनी खबरि जब चन्द्रावलिने ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय ।
ऊदनि निकसैं जौन गली ह्वइ ❋ तहाँ गलीचा बिछे अगार ॥
फूल बरसिरहे तहँ ऊपरते ❋ सखियाँ रहीं अबीर उडाय ।
अतरगुलाबनकी झरिलागी ❋ छज्जन रही लालरी छाय ॥
छुटैं पिचका रँग केशरिके ❋ गलियाँमहाकिमहाकिरहिजायँ
सुन्दर रूप देखि ऊदनिको ❋ तिरिया मोहि मोहिरहिजायँ ।

धनि धनि कहिये इनकी माता ❋ ज्यहिकी कोखिलियो औतार
शोभा देखी बौरीगढ़की ❋ ऊदनि बहुत खुशी ह्वइजायँ
धीरे धीरे चलैं उदयसिंह ❋ औ द्वारेपर पहुँचे जाय।
दगी सलामी दरवाजेपर ❋ शोभा एक न बरणी जाय
रंगमहलके दरवाजेपर ❋ ऊदनि घ्वाड नचायो जाय
रानी आई बीरशाहकी ❋ लीन्हें थार सोबरन क्यार
भुजबल पूजे तब ऊदनिके ❋ तुरत आरती धरी उतारि।
उतरे ऊदनि रस बेंदुलते ❋ औ रानीके समुहे आय॥
चरण लागिकै महरानीके ❋ सो माथेते लिये लगाय।
लहर पटोरे ऊदनि लैकै ❋ सो रानीके धरी अगार॥
मटुका लैकै सब चौथीके ❋ सो ऊदनिने धरे अगार।
जो सामान गये ले ऊदनि ❋ सो समुहे सब दियो धराय
सोने चाँदीको गहनो लै ❋ सो नागिनको दियो बँटाय
बाकी गहना ऊदनि लैकै ❋ सो रानीको दो पकराय॥
बाकी नेगी रहे होयँ जो ❋ तिनको दीजै आपु बँटाय।
नेगी खुशी भये बेरीके ❋ औ तारीफ करन सब लाग
युग युग जीवो ऊदनि ठाकुर ❋ ऐसो कबहुँ न मिल्यो इनाम
चन्द्रावलि आई तुरते तहँ ❋ औ ऊदनिको गइ लपिटाय
हाल पूछिकै बघ ऊदनिको ❋ पूंछी कुशल महोबे केरि।
तौलौं माहिल दाखिल ह्वइगये ❋ जो परिहार गोंटैया टार॥
जहाँ कचहरी बीरशाहकी ❋ माहिल तहाँ पहूंचे जाय।
उतरि बछेरीते भुइँ आये ❋ औ राजाको करी सलाम॥
नजरि बदलिगइ बीरशाहकी ❋ ऊंची चौकी दई डराय।
आवो बैठो उरईवाले ❋ अपनो हाल कहो समुझाय
बोले माहिल तब राजाते ❋ हमते कछू कही ना जाय।

बात बिगरिगइ गढ महुबेमें ❋ गुस्सा भये रजा परिमाल
आल्हा ऊदनिको महुबेते ❋ चन्देलेने दियो निकारि ।
तब खिसियाने दोनों भैया ❋ औ बोरीको कियो पयान॥
ऊदनि आये हैं तुम्हरे घर ❋ तुरते लेहैं बिदा कराय ।
लैकै जैहैं चन्द्रावलिको ❋ अपनी दासी लिहैं बनाय
दागु लागि है तुम्हरे कुलमें ❋ ताते मानो बात हमारि ।
बिदा न करियो तुम ऊदनिसँग ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय
जानते मारो तुम ऊदनिको ❋ औ खंदकमें देउ गिराय ।
बात मानिलइ बीरशाहने ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय
होय रसोई जो ऊदनिको ❋ तामें जहर दियो मिलवाय
भई रसोई रंगमलमें ❋ सबमें जहर दियो मिलवाय
भयो बोलोआ बघ ऊदनिको ❋ ऊदनि बांधि लिये हथियार
इन्द्रसेन बोले ऊदनिते ❋ ऊदनि छोरि धरो हथियार
दुसरी करि हैं ना तुमते हम ❋ नाहक बांधिलिये हथियार
यह सुनि ऊदनि सीधे मनते ❋ अपने छोरि धरे हथियार॥
गडुआ लैलियो एक हाथमें ❋ औ चलिभये उदैसिंह राय
ऊदनि पहुंचे जब चौकामें ❋ औ भोजनको भये तयार॥
सातों बेटा बीरशाहके ❋ सोऊ तहां पहुँचे आय ।
चन्द्रावलि बैठी खिरकीमें ❋ सो ऊदनितन रही निहारि
करो इशारा चन्द्रावलिने ❋ ऊदनि समुझि गये मनमाहिं
थारा बदलो इन्द्रसेनको ❋ इन्द्रसेन तब कही सुनाय॥
काहे बदलो थार हमारो ❋ तब यह कही उदयसिंह राय
देश हमारे यहै रीति है ❋ बहनोईको बदलैं थार ॥
इतनी सुनते सातों बेटा ❋ तुरतै अग्निज्वाल ह्वइजायँ
गडुआ सातों झपटे ❋ औ ऊदनिको मारन लाग

ऊदनि उठिकै गडुआ लीन्हों ❋ तिनकी चोट बचावन लाग
चोट बचाई बघ ऊदनिने ❋ महलन गडबड दियो मचाय
सातौं बेटा घायल कीन्हें ❋ तब सब मनमें गये लजाय।
हल्ला ह्वइगौ तब महलनमें ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि॥
ऊदनि गडुवा ज्यहिके मारैं ❋ त्यहि धरतीमें देयँ गिराय।
बज्राकि देही है ऊदनिकी ❋ ऊदनि भीमसेन औतार॥
कलहा बेटा दस्सराजको ❋ काहू भांति न मानै हारि।
गडुवा छांडिदियो ऊदनिने ❋ औ यक पाटा लियो उठाय
पाटन मारैं ऊदनि ठाकुर ❋ क्षत्री रेन बेन ह्वइजायँ।
देखि हाल यह चन्द्रावलिने ❋ अपने पतिकी लै तलवारि॥
सो दै दीन्हीं बघ ऊदनिको ❋ ऊदनि मनमें कियो बिचार
जो हम मारैं या तेगाते ❋ तौ रजपूती धर्म नशाय॥
तेगा डारि दियो ऊदनिने ❋ बीचमें घिरे उदैसिंह राय।
सातौं बेटा बीरशाहके ❋ तिनने धोखा दियो बनाय॥
बांधि जँजीरन लियोऊदनिको ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय
शिला धरिदियो यक ऊपरते ❋ पोहपा मालिनि देखै ठाढि॥
मालिनि पहुँची सतखंडापर ❋ चन्द्रावलिते लगी बतान।
ऊदनि बँधिगे हैं महलनमें ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय॥
सुनी हकीकति चन्द्रावलिने ❋ मनमें बहुत गई घबराय।
भोजन त्यार करे चन्द्रावलि ❋ सो थारामें दिये धराय॥
रेशम रस्सा लै चन्द्रावलि ❋ औ दाहकपर पहुँची जाय।
टारि पिहानियां त्यहि ऊपरकी ❋ रेशम रस्सा दौ लटकाय॥
निकरौ भैया तुम चुंगलते ❋ भोजन करौ उदैसिंह राय।
बोले ऊदनि चन्द्रावलिते ❋ बहिनी मानौ बात हमारि॥
खबरि भेजि देउ तुम महुबेको ❋ ऊभे परे उदैसिंह राय।

तुम्हरे काढे जो हम निकरैं ❋ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
भोजन करिहैं ना खंदकमें ❋ जल्दी खबरि देउ पहुँचाय ।
इतनी सुनिकै चन्द्रावलि गइ ❋ सतखंडापर पहुँची जाय॥
सोचन लागी अपने मनमें ❋ कैसे खबरि देउँ पहुँचाय ।
करि बिचार तब चन्द्रावलिने ❋ औ यक पाती लिखी सुधारि
लिख्यो हाल सब बघ ऊदनिको ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
अकिले भेजदियो ऊदनिको ❋ सो ऊभेमें दियो डराय ॥
हीरा मनि तोताको लैकै ❋ पाती गरे दई बँधवाय ।
बोली चन्द्रावलि सुअनाते ❋ तोता सुनौ हमारी बात ॥
पाती लैकै महुबे जावो ❋ औ माताको दीन्ह्यो जाय
माता हमरी मल्हना रानी ❋ जो हैं महुबेकी महरानि ॥
सुआ उडानो गढ बौरीते ❋ माहिल देखि गये पहिचानि
चालिभये माहिल बौरीगढते ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
सुअना पहुँच्यो नरवरगढमें ❋ औ बगियामें पहुँचो जाय
माहिल देखो जब सुअनाको ❋ तब राजापै पहुँचो जाय॥
करी बन्दगी झुकि नरपतिको ❋ राजा चौंकी दई डराय ।
आवो आवो उरईवाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
बोले माहिल तब राजाते ❋ बैठे राज करौ महराज ।
बस्तु एक देखी उत्तम हम ❋ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय
तोता आयो एक बगियामें ❋ सो पकराय लेउ महराज ।
ताहि पठाय देउ महलनमें ❋ पै यह जल्दी करौ उपाय॥
हुक्म देदियो तब नरपतिने ❋ मकरंदीते कही सुनाय ।
जल्दी जावो फुलवगियामें ❋ औ तोताको लेउ पकराय॥
चालिभये मकरंदी बँगलाते ❋ एक बहेलिया लियो बुलाय
तोता पकरायो मकरँदने ❋ औ महलनमें दियो पठाय

माहिल चलिभै नरवरगढते * औ उरई की पकरी राह।
तोता पहुँचो जब महलनमें * रानी देखि खुशी ह्वैजाय॥
पाती खोली सो रानीने * औ सब हाल पढो मनलाय।
हालु जानिकै बघ ऊदनिको * पाती तुरत दई बँधवाय॥
बोली रानी त्यहि तोताते * जल्दी जावो नगर महोब।
खबरि जनावो रनि मल्हनाको * नहिं सब जैहैं काम नशाय
इतनी सुनतै सुआ उडानो * औ महुबेमें पहुँचो जाय।
ठाढी मल्हना शतखंडापर * हेरै बाट उदैसिंह केरि॥
सुअना पहुँच्यो रनि मल्हनापै * तब मल्हनाने कही सुनाय।
कहांकि पाती तोता लाये * सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
यह कहि मल्हना पाती खोली * औ पातीको पढो हवाल।
बोली मल्हना तब सुअनाते * चन्द्रावलिते कहियो जाय॥
लश्कर आवत है महुबेते * तुरतै विदा लिहैं करवाय।
इतनी कहिकै पाती लिखिकै * सो सुअनाके गरे बँधाय॥
सुआ उडानो तब महुबेते * बौरीगढकी पकरी राह।
मल्हना बुलवायो रुपनाको * औ यह हुकम दियो फरमाय
जल्दी जावो तुम सिरसाको * औ मलिखेको लावो बुलाय
उनहीं पायँन रुपना चलिभो * औ सिरसामें पहुँचो जाय॥
करी बन्दगी नर मलिखेको * हाथ जोरिकै कही सुनाय।
तुमहिं बुलायो है मल्हनाने * अबहीं चलो हमारे साथ॥
घोडी कबुतरी त्यार कराई * मलिखे फांदि भये असवार।
चारि घरी मारगमें बीते * औ महुबेमें पहुँचे आय॥
उतरि बछेरीते भुइँ आये * औ मल्हनापै पहुँचे आय।
चरण लागिकै रनि मल्हनाके * सो माथेमें लिये लगाय॥
पाती भेजी जो चन्द्रावलि * सो मल्हनाने दइ पकराय।

पाती बांची जब मलिखेने ❋ तब मल्हनाते लगे बतान ॥
माता जैहैं हम बौरीगढ ❋ लैहैं चौथी तुरत लिवाय ।
मलिखे चलिभे तब महलनते ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी पुनि आल्हाको ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय
हाल सुना जब यह आल्हाने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ॥
बोले आल्हा नर ढेबाते ❋ भैया सगुन देउ बतलाय ।
सगुन बिचारो तब ढेबाने ❋ औ आल्हाते कही सुनाय॥
रूप जोगियनको धारो तुम ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वैजाय।
इतनी सुनिके पुनि आल्हाने ❋ जोगिन गुदरी लई मँगाय ॥
हुक्म दैदियो नर मलिखेको ❋ सिगरी फौज लेउ सजवाय।
इतनी सुनिके मलिखे चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय
तुरत नगडचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दिये डरवाय ।
बजै नगारा गढ महुबेम ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधिलिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोडा हरनागर सजवायो ❋ ब्रह्मानन्द भये असवार ।
घोडी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढे बीर मलिखान॥
घोडा मनुरथा त्यार करायो ❋ तापर ढेबा भयो सवार ।
बडि बडि तोपें अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दई जोताय ॥
मारू डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर चला महोबे क्यार ।
पाँचरोज मारगमें बीते ❋ गढ दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दियो बागनमें ❋ मलिखे घोडी दई बढाय ।
पहुँचे मलिखे गढ दिल्लीमें ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार॥

उतरि बछेरीते भुइँ आये ❋ घोडी थामि लई थनवार।
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ सन्मुख जाय बीर मलिखान
सूरति देखी जब मलिखेकी ❋ तब पिरथीने कही सुनाय।
आवो बैठो सिरसावाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
ऊँची चौकी उन डरवाई ❋ बैठे तुरत बीर मलिखान।
मलिखे बोले पृथीराजते ❋ राजा सुनौ हमारी बात॥
बिदा करावन गे ऊदनि जब ❋ बौरीगढमें पहुँचे जाय।
घाटि करी तहँ बीरशाहने ❋ ऊदनि खंदक दिये डराय॥
हुक्म तुम्हारो जो होवै म्वहिं ❋ बौरी गर्द देउँ करवाय।
कुम्मक अपनी हमको देदेउ ❋ अबहीं कूच जाउँ करवाय॥
इतनी बात सुनी पिरथीने ❋ तब सूरजको लियो बुलाय।
बोले पृथीराज सूरजते ❋ बेटा सुनो हमारी बात॥
जल्दी त्यार होउ बौरीको ❋ संगै जाउ फौज लै साथ।
चौंडा ब्राह्मणको बुलवायो ❋ तासों पिरथी कही सुनाय॥
संगै जावो तुम मलिखेके ❋ बीरशाहते कहियो जाय।
बिदा कराय देयँ आल्हासँग ❋ नाहिं सब जैहैं काम नशाय
इतनी सुनिकै चौंडा चलिभो ❋ सूरजमलको संग लिवाय॥
हथि यकदंतापर चौंडा चढि ❋ सूरज सब्जा पर असवार।
फौज सजाय लियो जल्दीते ❋ अपनो कूच दियो करवाय।
दोनों लश्कर संगै चलिभे ❋ औ बौरीकी पकरी राह॥
सात रोजको धावा करिकै ❋ बौरी धुरा दबायो जाय।
तीनि कोस जब बौरि रहिगइ ❋ मलिखे डेरा दियो डराय॥
फेंटैं छुटिगइ रजपूतनकी ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि।
जीन उतरिगइ सब घोडनकी ❋ क्षत्री करन रसोई लाग॥
फिरि बिश्राम किये सबहीने ❋ भोरहि उठे बीर मलिखान।

बोले मलिखे सुनि आल्हाते ❋ दादा गुदरी लेउ मँगाय ॥
रूप बनावो अब जोगिनको ❋ औ ऊदनिको लेउ छुडाय।
हुक्म दै दिया तब आल्हाने ❋ चारो गुदरी लईं मँगाय ॥
गुदरी पहिरि लईं चारौंने ❋ अपने बाजा लिये उठाय।
लई बँसुरिया ब्रह्मानँदने ❋ डमरू लियो बीर मलिखान
लियो यकतारा सुनि आल्हाने ❋ खँझरी ढेबा लई उठाय ।
डगरत चलिभे चारौं जोगी ❋ औ बौरीकी पकरी राह ॥
जोगी आये जब फाटकपर ❋ दरवानीने दियो जवाब ।
कहाँते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
बोले मलिखे दरवानीते ❋ फाटक जल्द देउ खुलवाय।
देश हमारा बंगाला है ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
भिक्षा माँगिहैं हम बौरीमें ❋ गढमें अलख जगैहैं जाय।
इतनी सुनतै दरवानीने ❋ तुरतै फाटक दियो खोलाय
जोगी चलि भये तब आगेको ❋ अपने बाजा दिये बजाय।
गावत चलिभये चारौं जोगी ❋ रैयत मोहि मोहि रहिजाय
रूपके आगर जोगी देखे ❋ सब अपने मन करें विचार
बडे तेजसी ये जोगी हैं ❋ इनको धन्य वर्डा औतार॥
काहू दीन्हें साल दुशाला ❋ मोहन माला दई इनाम ।
जोगी पहुँचे दरवाजेपर ❋ अपनी अलख जगावन लाग
केसरि बाँदी जो रानीकी ❋ सो जोगिन तन रही निहारि
मोहित ह्वइकै केसरि बाँदी ❋ महरानीपै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिकै बाँदी बोली ❋ रानी सुनो हमारी बात ।
चारि जोगिया ऐसे आये ❋ जिनके रूप न बरने जायँ
नीके गावैं नीक बजावैं ❋ सो तुम देखिलेउ महरानि।
हुक्म दै दियो तब रानीने ❋ जोगिन अबहीं लाउ बुलाय

उनहीं पाँयन बाँदी आई ❋ औ जोगिनते कही सुनाय।
तुमहिं बुलायो है रानीने ❋ महलन करौ तमाशा आय॥
जोगी चलिभये रंगमहलको ❋ औ ड्योढी पर पहुँचे जाय।
रानी आई दरवाजे पर ❋ देखो रूप जोगियन क्यार ॥
संग सहेली जो रानीके ❋ सो सब मोहि गईं तत्काल।
बोली रानी तब जोगिनते ❋ जोगिऔ नाच देउ दिखलाय
बजी बँसुरिया तब ब्रह्माकी ❋ ढेबा खँझरी दई बजाय ।
बजो यकतारा नुनि आल्हाको ❋ डमरू बजी बीर मलिखान
राग रागिनी गावन लागे ❋ गावन लागे राग मलार ।
मोहित ह्वइके रानी बोली ❋ जोगियौ सुनौ हमारी बात॥
डेरा डारिदेउ महलनमें ❋ नित उठि सेवा होय तुम्हारि।
बोले मलिखे तब रानीते ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि॥
बहता पानी रमता जोगी ❋ इनको कौन सकै बिरमाय।
आज रमानी यह ड्योढी है ❋ हमको भोर रमानी बाट ॥
सुनी खबरि जब चन्द्रावलिने ❋ तब बाँदी से कही सुनाय ।
सासुल हमरीते कहियो यह ❋ जोगिन यहाँ देयँ पहुँचाय॥
हमहूँ देखि हैं आजु तमाशा ❋ हमरो जन्म सुफल ह्वइजाय।
बाँदी चलिभइ चन्द्रावलिकी ❋ औ रानीपै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिकै बाँदी बोली ❋ रानी मानौ बात हमारि ।
बहू देखि है आजु तमासा ❋ सो जोगिनको रही बुलाय॥
यह सुनि रानी बोलन लागी ❋ जोगिउ सुनौ हमारी बात ।
देखि तमासा बहुअर लेवै ❋ अब तुम बाँदीके सँगजाउ॥
इतनी सुनिकै जोगी चलिभये ❋ चन्द्रावलिपै पहुँचे जाय ।
देखो चन्द्रावलि जोगिनको ❋ औ जोगिनते कही सुनाय॥
रूप तुम्हारो नहिं जोगिनको ❋ तुम राजनके राजकुमार ।

कैसे कैसे तुम जोगी हो ❀ साँचो हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि मलिखे बोलनलागे ❀ चन्द्रावलिते कही सुनाय ।
रूप विधाता हमको दीन्हों ❀ सुखते भजन करत दिन रात ॥
करो तमाशा हम कनउजमें ❀ जयचँद खुशी भये तत्काल।
गुदरी बनवाई राजाने ❀ फिरि हम महुबे पहुँचे जाय ॥
करो तमासा जब महुबेमें ❀ जहँपर बसैं रजा परिमाल ।
मल्हना रानी बहुत खुशी ह्वै ❀ सोने कडा दिये डरवाय ॥
यह सुनि बोली चन्द्रावलि तब ❀ मल्हना माता लगै हमारि।
ब्रह्मा भैया हमरे लागैं ❀ जोगिउ मानो बात हमारि॥
जब तुम जैयो नगर महोबे ❀ तहँपर खबरि सुनैयो जाय।
बिदा करावन ऊदनि आये ❀ ऊदनि उभे दिये डराय ॥
तिनहिं छुडावन आल्हा आवैं ❀ आवैं संग बीर मलिखान ।
भैया आवैं ब्रह्मानँद यहँ ❀ औ ऊदनिको लेयँ छोडाय॥
यह सुनि बोले मलिखे तुरते ❀ बहिनी सुनो हमारी बात ।
ब्रह्मा ठाढे हैं समुहेपर ❀ आल्हा समुहे खडे तुम्हार ॥
ढेबा बहादुर है समुहपर ❀ हमरो नाम कहत मलिखान।
कौने दाहकमें ऊदनिहैं ❀ बहिनी हमहिं देउ बतलाय ॥
चन्द्रावलि बोली मलिखेते ❀ बीरन सुनो हमारी बात ।
खंदक एक महलके पीछे ❀ तामें परे उदैसिंहराय ॥
इतनी सुनते जोगी चलिभये ❀ औ खंदकपै पहुँचे जाय ।
खंदक देखि गये लश्करमें ❀ तहँते सुरँग खुदावन लाग ॥
सुरँग खुदायो बघ ऊदनिलग ❀ तुरते ऊदनि लिये निकारि।
ऊदनि पहुँचे जब लश्करमें ❀ झुकिके आल्है कियो प्रणाम
मलिखे ढेबा औ ब्रह्माको ❀ कियो प्रणाम जोरि दोउहाथ
दगी सलामी फिरि लश्करमें ❀ तुरते नाच होन तब लाग ।

बोले मलिखे तब आल्हाते ❋ दादा जल्द होउ तैयार।
इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ तुरतै हुक्म दियो करवाय॥
डंका बाजे हमरे दलमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार।
डंका बाज्यो तब लश्करमें ❋ क्षत्री करन तयारी लाग॥
पहले डंकामें जिनबंदी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार।
तिसरे नगाराके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदिभये असवार॥
मारू डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय
हाथि पचशावद त्यार करायो ❋ तापर आल्हा भये सवार॥
घोडी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चले वीर मलिखान।
घोडा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मानंद सवार॥
घोडा मनुरथा त्यार करायो ❋ तापर ढेबा भयो सवार।
सब्जा घोडाको सजवायो ❋ तापर सूरज भये सवार॥
हाथी यकदन्ता सजवायो ❋ तापर चढा चौंडिया राय।
लश्कर चालिभयो महुबेवालो ❋ डंका होन गोलमें लाग॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दई जोताय।
चारि घरीके तब अरसामें ❋ बैरीगढको घेरो जाय॥
खबरि पहुँचिगइ बीरशाहको ❋ लाये फौज बनाफर राय।
इतनी सुनते बीरशाहने ❋ सातों बेटा लिये बुलाय॥
बोले बीरशाह लरिकनते ❋ जल्दी खबरि सुनावो आय
कौन शूरमा चढि आयो है ❋ ताको तुरत लेउ बँधवाय॥
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❋ औ लरिबेको होउ तयार।
इतनी सुनते सातों चालिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय॥
हुक्म दैदियो अपने दलमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार।
बजो नगारा बौरीगढमें ❋ क्षत्री तुरत भये तैयार॥
लश्कर त्यार भयो बौरीको ❋ डंका होत गोलमें जाय।

लश्कर चलिभयो गढ बौरीको ❋ औ खेतनमें पहुँचो जाय॥
थोडे क्षत्री सूरज लीन्हें ❋ जोरावरको संग लिवाय।
जायकै पहुँचे दोउ आगेको ❋ भारी जाय दई ललकार॥
कौनसो क्षत्री चढि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब।
घोडी बढाई मलिखे ठाकुर ❋ औ समुहे होय दियो जवाब
हम चढि आये हैं महुबेते ❋ हमरो नाम बीर मलिखान
बिदा करावन ऊदनि आये ❋ तुमने कैद लई करवाय॥
तुम तो हमरे बहनोई हौ ❋ क्यों घटि करी हमारे साथ
कैद छोंडिदेउ तुम ऊदनिको ❋ औ फिरि बिदा देउ करवाय
रारि बढावत हो नाहक तुम ❋ हमरे बचन करो परमान।
बोले सूरज तब मलिखेते। ठाकुर सुनो हमारी बात॥
बिदा न करि हैं हम तुम्हरे सँग ❋ चाहै लाखन करो उपाय।
इतनी सुनतै मलिखे तडपे ❋ गुस्सा गई देहमें छाय॥
बोले मलिखे सूरजमलते ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात।
बिदा न करिहौ जो बहिनीकी ❋ मरिहौ राजभंग होइ जाय
लूटि करैहौं मैं बौरीको ❋ हमको जानत सकल जहान
गुस्सा ह्वइकै तब सूरजने ❋ लश्कर हुक्म दियो करवाय
बत्ती देदेउ मोरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउँ उडाय।
इतनी सुनतै उठे खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुवना रह्यो सरग मडराय।
अररर गोला छूटन लागे ❋ कहकह करें अगिनियांबान
कैबर छूटैं सररर सररर ❋ गोली चलै सनाक सनाक।
क्या गति बरणों त्यहिसमैयाकी ❋ क्षत्रिन मारुमारुरटलागि
तीनि घरीलों भई लडाई ❋ सबने खैंचिलई तलवारि।
खट खट तेगा बाजन लागो ❋ बोलै छपक छपक तलवारि

चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ मानाशाही चलै कटार ॥
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार।
पैदल अभिरिगये पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार ॥
भारी मारु होय दोऊ दल ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुवा ज्वान
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❋ हाथिन अडो दाँतते दाँत ॥
दोनों लश्कर यकमिल ह्वइ गये ❋ सबके मारु मारु रटलागि
बढे सिपाही महुबेवाले ❋ अपनो मया मोह बिसराय
भगे सिपाही बौरीगढके ❋ मनमें बहुत गये घबराय।
झुके महोबिया दलमें बिचले ❋ मुर्चा हटो यादवन क्यार ॥

अथ राजकुमारोंकी लडाई।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ जगदम्बाके चरण मनाय।
लिखौं लडाई अब मलिखेकी ❋ अभिरे कुँवर यादवाराय ॥
भगे सिपाही बौरीगढके ❋ सूरज घोडा दियो बढाय।
जायकै पहुँचे नर मलिखेपै ❋ औ मलिखेने कही सुनाय॥
कही हमारी मलिखे मानो ❋ अबहूँ लौटि महोबे जाउ।
बोले मलिखे सूरजमलते ❋ तुम बहनोई लगौ हमार ॥
कैद छोडि देउ तुम ऊदनिकी ❋ बहिनिकि बिदा देउ करवाय
तौ हम लौटि जायँ महुबेको ❋ इतनी मानो कही हमारि ॥
गुस्सा ह्वइकै तब सूरजने ❋ अपनी लीन्हीं साँग उठाय।
सो धरि धमकी नर मलिखेपर ❋ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय
खैंचि शिरोही लइ सूरजने ❋ औ मलिखेपर राखी जाय।
चोट बचाई नर मलिखेने ❋ औ सूरजसे कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोडापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय।
खैंचि शिरोही मलिखे लीन्हीं ❋ आल्हा-हाँथी दियो बढाय

बोले आल्हा नर मलिखेते ❋ इनकी कैद लेउ करवाय।
हाथ चलैयो ना सूरजपर ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय॥
ढालकि औझड मलिखे मारी ❋ औ सूरजको दियो गिराय।
कासि भुजदंडै सूरजमलकी ❋ मलिखे लियो जँजीरन बाँधि
हाल देखि यह जोरावरने ❋ अपनो घोडा दियो बढाय।
यक ललकार दई मलिखेको ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
करो जडाका जब मलिखेपर ❋ मलिखे दीन्हीं ढाल अडाय
चोट बचाई जोरावरकी ❋ अपनी घोडी दई बढाय॥
ढालकि औझड मलिखे मारी ❋ जोरावरको लियो बँधाय।
इक हरकारा दौरत आयो ❋ बीरशाहते कही सुनाय॥
दोनों बेटा तुम्हरे बाँधिगे ❋ लश्कर रेन बेन ह्वइजाय।
इतनी सुनतै बीरशाहने ❋ इन्द्रसेनको लियो बुलाय॥
फौज सजाय लेउ अपनी तुम ❋ महुबेवालेन देउ भगाय।
इतनी सुनतै इन्द्रसेनने ❋ अपने भैया संग लिवाय॥
हुक्म देदियो निज लश्करमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ सिगरी सेना भई तयार॥
मारू डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर चला यादवन क्यार
चारि घरीकि तब अरसामें ❋ रणखेतनमें पहुँचे जाय॥
घोडा बढायो इन्द्रसेनने ❋ भारी जाय दई ललकार।
कौनसो क्षत्री चाढि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब॥
कौने बाँधो है भैयनको ❋ कोहिके जमे करेजे बार।
घोडी बढाई तब मलिखेने ❋ औ समुहे ह्वइ दियो जवाब
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ तुम बहनोई लगो हमार।
घर घर बिटिया नैहर जावैं ❋ सावनमास जानि त्योहार॥
बिदा करावन ऊदनि आये ❋ सो तुम ऊभे दिये डराय।

कैद छोंडदेउ तुम ऊदनिकी ❋ बहिनिकि बिदा देउ करवाय
तौ हम लौटिजायँ महुबेको ❋ अबहीं रारि सबै मिटिजाय
यह सुनि बोले इन्द्रसेन तब ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
बिदा तुम्हारे संग न ह्वइहै ❋ चाहे लाखन करौ उपाय।
गुस्सा ह्वइके मलिखे बोले ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ ॥
बिदा कराये बिन ना जैहैं ❋ हमरो नाम बीर मलिखान
नाम हमारो तुम जानत हौ ❋ ना हम धरैं पिछारू पाँव ॥
गर्द कराय दिहौं बौरीको ❋ गढमें आगी दिहौं लगाय।
बिदा न करिहौ जो बहिनीकी ❋ मारौं राज भंग ह्वइजाय ॥
गुस्सा ह्वइकै इन्द्रसेनने ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय
मारि उडावौ इन पाजिनको ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
इतनी सुनिकै झुके खलासी ❋ औ तोपनपै पहुँचे जाय।
बत्ती दैं दइ सब तोपनमें ❋ धुअना रह्यो सरग मँडराय॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ चहुँदिशि रही अँधेरियाछाय
अररर गोला छूटन लागे ❋ सननन परी तीरकी मारु॥
मननन मननन गोली छूटैं ❋ कहकहकरैं अगिनियाँ बान
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ अंधा धुंध तोपकी मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली ह्वइगइँ ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ
बंद लडाई भइ तोपनकी ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगो तीनि कदम मैदान।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खट खट चलनलगीतलवारि
चलै कटारी बूँदीवाली ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटिगिरैंकेसारिहाज्वान
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहिचली रक्तकी धार।
बढे सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रटलागि

भगे सिपाही बौरीवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
दाबे बेंदुला ऊदनि आये ❋ समुहे गोल गये समुहाय ॥
भगत सिपाही मोहन देखे ❋ अपनो घोडा दियो बढाय
जायकै पहुँचे बघ ऊदनिपै ❋ भारी जाय दई ललकार ॥
खबरदार रहियो घोडापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय
इतनी बात कही मोहनने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
करो जडाका जब समुहेपर ❋ ऊदनि दीन्हीं ढाल अडाय
तीनि शिरोही मोहन मारी ❋ ऊदनिके नहिं आयो घाव
भाला मारो तब ऊदनिने ❋ सो घोडाके लाग्यो जाय ।
घोडा गिरिगो तुरत धरनिपर ❋ औ मोहनको लियो बँधाय
मोहन बाँधे जब ऊदनिने ❋ जगमनि खैंचि लई तलवारि
तौलों ढेबा समुहे आयो ❋ औ जगमनिते कही सुनाय
खबरदार रहियो घोडापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो मँडराय
चेहरा मारो तब जगमनिने ❋ ढेबा लेगयो चोट बचाय ॥
ढालकि औझडते ढेबाने ❋ औ घोडाते दियो गिराय ।
तुरतबँधायलियो जगमनिको ❋ औ लश्करमें दियो पठाय॥
मोती पूरन दोनों भैया ❋ सोऊ बाँधे उदैसिंह राय ।
भैया बँधिगये इन्द्रसेनके ❋ मनमें गये सनाका खाय ॥
बोले इन्द्रसेन क्षत्रिनते ❋ यारो राखो धर्म हमार ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भैया लगो हमार
मारो लश्कर गढ महुबेको ❋ तौ रजपूती धर्म तुम्हार ॥
देके पानी रजपूतनको ❋ औ आगेको दियो बढाय
झुके सिपाही बौरीगढके ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
देखि हाल यह नर मलिखेने ❋ अपनी घोडी दई बढाय ॥
चौंडा ब्राह्मण जहाँ ठाढ था ❋ पहुँचे तहाँ बीर मलिखान ।

बोले मलिखे तब चौंडाते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
कैद कराय लेउ जल्दीते ❋ कोऊ ज्वान भागि ना जाय।
हाथी बढायो तब चौंडाने ❋ समुहे गोल गयो समुहाय ॥
सांकल लैकै यकदंताको ❋ चौंडा ब्राह्मण दई गहाय।
हाथी बिचलो चौंडावालो ❋ काटन लाग फौजके ज्वान॥
भगे ज्वान सब बौरीवाले ❋ ऊँचे खाले चले बराय।
यह गति देखी इन्द्रसेन जब ❋ मनमें बहुत गये घबराय ॥
सुखी घोडा दाबे आये ❋ औ मलिखेपै पहुँचे आय।
बोले इन्द्रसेन मलिखेते ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ॥
इतनी कहिकै नर मलिखेपर ❋ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय।
चोट बचाई इन्द्रसेनकी ❋ औ बचिगये बीर मलिखान
भाला मारो इक मलिखेने ❋ मो घोडाके गयो समाय।
पैदल रहिगये इन्द्रसेन जब ❋ तब मलिखेने लियो बँधाय॥
सातौ बेटा वीरशाहके ❋ बँधिगये समरखेत मैदान ॥

अथ वीरशाहकी लडाई।

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम।
लिखौं लडाई बीरशाहकी ❋ यारो सुनो छोंडि सब काम॥
इक हरकारा दौरत आयो ❋ बीरशाहपै पहुँचो आय।
खबरि सुनाई बीरशाहको ❋ सातौ बेटा बँधे तुम्हार ॥
सुनत खबरिया परल ह्वइगइ ❋ राजा गये सनाका खाय।
डंका वालेको बुलवायो ❋ औ यह हुकम दियो फरमाय॥
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार।
डंका बाज्यो तब सेनामें ❋ क्षत्री सजन लगे तत्काल ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार।

तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
भूरा हाथीको मँगवायो ❋ राजा ताहि सजावन लाग ।
हौदा धरिदो त्यहिं हाथीपर ❋ रेशमरस्सा दियो कसाय ॥
कलश सोबरनके हौदामें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
तुरत सवार भये राजा तब ❋ लश्कर कूच दियो करवाय॥
एक पहरको अरसा गुजरो ❋ औ खेतनमें पहुँचे जाय ।
मुर्चाबन्दी उन करवाई ❋ औ हाथीको दियो बढाय॥
निकट पहुँचे बीरशाह जब ❋ तब राजाने कही सुनाय ।
कौने बाँधो है लरिकनको ❋ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब ॥
इतनी सुनते नर मलिखेने ❋ अपनी घोडी दई बढाय ।
करि प्रणाम हँसिकै मलिखेतब ❋ बोले सुनहु यादवा राय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ नाहक गारि करत महराज ।
बिदा करावन ऊदनि आये ❋ तुम खंदकमें दियो डराय॥
नहीं मुनासिब थी तुमको यह ❋ जो घटि करी हमारे साथ ।
अबहूँ तुम्हरो कछु बिगरो नाहिं । बाहिनिकी बिदा देउकरवाय
कैद छोंडि देउतुम ऊदनिकी ❋ तौ सबगारि अबाहिं मिटिजाय
बोले बीरशाह मलिखेते ❋ लरिकन कैद देउ छुडवाय॥
चुप्पै लौटि जाउ महुबेको ❋ इतनी मानौ कही हमार ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ राजा सुनौ हमारी बात ॥
बिदा न करिहौ जो बहिनीकी ❋ बौरी गर्द दिहौं करवाय ।
विना बिदाके हम ना लौटैं ❋ चाहो प्राण रहैं की जायँ ॥
तौलौं बाढिगयो चौंडा ब्राह्मण ❋ सो राजाते लगे बतान ।
यह कहि दीन्हीं पृथीराजने ❋ तुरतै बिदा देयँ करवाय ॥
कही हमारी जो ना मनिहौ ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
इतनी सुनिके राजा बोले ❋ ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥

बिदा न करिहैं हम आल्हासँग ❋ चाहै लाखन करौ उपाय।
चौंडा बोल्यो तब राजाते ❋ है यह हुक्म पिथौरा क्यार॥
कही न मानैं बीरशाह जो ❋ बौरी गर्द देउ करवाय।
इतनी सुनतै बीरशाहकी ❋ देही अग्निज्वाल ह्वइजाय॥
हुक्म देदियो तब राजाने ❋ तोपन बत्ती दई लगाय॥
हुक्म पायके उठे खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय॥
छाय अँधेरिया गइ लश्करमें ❋ धुअना रह्यो सरग मँडराय।
दगीं सलामी दोउ फौजनमें ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय॥
अररर गोला छूटन लागे ❋ सर सर परी तीरकी मारु।
गोला छूटैं सननन सननन ❋ कह कह करैं अगिनियाँ बान
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ मानों चोर सेंधि दैजाय।
गोला लागै जौन ऊँटके ❋ सो गिरिपरै चकत्ता खाय॥
गोला लागै जिन घोडनके ❋ चारों सुम्म गर्द ह्वइजायँ।
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❋ सो लत्ता अस जायँ उडाय
बंबको गोला जिनके लागै ❋ तिनके हाड मांस छुटिजायँ
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❋ तिनके दुइ खंडा ह्वइजायँ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ अंधाधुंध तोपकी मारु।
तोपैं धैंधैं लाली ह्वइगइँ ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ॥
तोप लडाई पाछे परिगइ ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार।
दोनों फौजैं यक मिल ह्वइगइँ ❋ रहिगो तीनि कदम मैदान॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खट खट चलन लगी तलवारि
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार॥
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुवा ज्वान
चारौं बयारियनको ससका है ❋ अंधाधुंध चलै तलवार॥
घैहा डारे रणके भीतर ❋ जिनके प्यास प्यास रटलागि

पैदल अभिरे तहँ पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार ॥
हौदा मिलिगये हैं हौदा सँग ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत ।
हाहाकारी रनम बीतै ❋ कोऊ रँधो भात ना खाय ॥
चहला उठिगये हैं चींबनक ❋ औ बहचली रक्तकी धार ।
ढालै डारी हैं लोहूमें ❋ मानो कछुआसी उतरायँ ॥
पगिया डारी हैं लोहूमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
एक ओरको ऊदनि दबिगे ❋ दबिगे एक ओर मलिखान
एक ओर ढेवा दबिगो ❋ सबके मारु मारु रटलागि ॥
भगे सिपाही बीरशाहके ❋ जे रणदुलहा चले वगाय ।
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ गाँजावाले चले वगाय ॥
झुके अफीमी रणके भीतर ❋ पलकें उघरैं औ गहिजायँ ।
लंबी धोतिनके पहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी गाह ॥
देखि हकीकति यह लश्करकी ❋ राजा गये सनाका खाय ।
गुस्सा ह्वइके बीरशाहने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय
जहँपर मुर्चा था मलिखेका ❋ राजा तहाँ पहूँचे जाय ।
यह ललकार दई मलिखेको ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ
इतनी कहिकै बीरशाहने ❋ अपना भाला लियो उठाय
भाला मारो नर मलिखेके ❋ मलिखे लैगे चोट बचाय ॥
मलिखे बढिगे तुनि आल्हापे ❋ औ आल्हा ते कही सुनाय।
तुम्हरी बरनीको राजा है ❋ तुरते बाँधिलेउ यहि काल ॥
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ।
जाय पहूँचे बीरशाहपे ❋ औ राजाको करी जोहार ॥
आल्हा बोले बीरशाहते ❋ राजा सुनो हमारी बात ।
कही हमारी राजा मानो ❋ चौथी कि बिदा देउ करवाय

कैद छोंडि देउ तुम ऊदनिकी ❋ नाहक रारि करत महराज
यह सुनि बोले बीरशाह तब ❋ तुम सुनिलेउ बनाफर राय
धोखे रहियो ना माडौके ❋ जहँ लैलियो बापको दावँ
भागे बचिहौ ना महुबेलग ❋ ताते लौटिजाउ तत्काल॥
आल्हा बोले तब गुस्सा ह्वइ ❋ हम ना धरैं पिछारी पाव।
धर्म क्षत्रियनके नाहीं हैं ❋ जो समुहेते जायँ बराय॥
बिदा करैहैं हम बहिनीकी ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ।
इतनी सुनतै बीरशाहन ❋ अपनो भाला दियो चलाय
चोट बचाई जुनि आल्हाने ❋ बीरशाह लियो गुर्ज उठाय।
चोट चलाई तब आल्हापर ❋ आल्हा हाथी दियो बढाय
आल्हा बचिगे तब हौदामें ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय।
हाथी बढायो तब आल्हाने ❋ हौदा हौदा ते मिलिजाय॥
लई कटारी बीरशाहने ❋ सो आल्हापर दई चलाय।
चोट बचाय लई आल्हाने ❋ आल्हाके नाहिं आयो घाव॥
टक्कर मारी पचशावदने ❋ औ अम्बारी दई गिराय।
आल्हा उतरे निज हौदाते ❋ औ राजाको लियो बँधाय॥
राजा बँधते परले ह्वइगइ ❋ लश्कर रैन बेन ह्वइजाय।
झुके महोबिया तब आगेको ❋ बौरीगढमें पहुँचे जाय॥
धावन भेजो एक डेरनपर ❋ ब्रह्मानँदको लियो बुलाय।
आल्हा बोले ब्रह्मानँदते ❋ गढमें आगी देउ लगाय॥
इतनी सुनिकै बीरशाहने ❋ तब आल्हाते कही सुनाय।
किसको लरिका यहु ठाढो है ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय॥
आल्हा बोले तब राजाते ❋ राजा सुनो हमारी बात।
यहु है लरिका परिमालैको ❋ रानि मल्हनाने दियो पठाय
बिदा करावन यहु आयो है ❋ सो तुम रारि मचाई आइ।

रानी भेजा था ऊदनिको ❋ सो तुम कैद लई करवाय ॥
इतनी सुनतै राजा बोले ❋ माहिल तेरो बुरो ह्वइजाय।
लाग हमारी कछु नाहीं है ❋ हम सब त्यारी दई कराय॥
तौलौं माहिल उरईवाले ❋ तिन यह हमते कही सुनाय
गुस्सा ह्वइकै परिमालैने ❋ आल्हा ऊदनि दिये निकारि
मन खिसियाने ऊदनि आये ❋ तुरतै लेहैं बिदा कराय ।
बिदा जो करिहौ तुम बहुअरकी ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
बिदा कराय महोबे जैहैं ❋ अपनी दासी लिहैं बनाय ।
गगा कीन्हीं माहिल ठाकुर ❋ तब हम मानिलियो सतिभाउ
कैद कराई हम ऊदनिकी ❋ औ ऊभेमें दियो डराय ।
बात हमारी अब तुम मानौ ❋ लरिकन कैद देउ छुडवाय॥
बिदा करि दिहैं हम बहुअरकी ❋ हमरे बचन करौ परमान ।
धोखा ह्वइगयो है हमते यहु ❋ माहिल आय बिगारो काम
होनी प्रबल होत दुनियामें ❋ माया कठिन बिश्व भगवान
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❋ सबकी कैद दई छोडवाय॥
राजा पहुँचे जब महलनमें ❋ तब रानीने कही सुनाय ।
बडे लडैया हैं महुबेके ❋ स्वामी मानौ बात हमार ॥
बिदा कराय देउ बहुअरकी ❋ काहे रारि करत महराज ।
गरुये नातेके लरिका हैं ❋ जिन घर पारसको अधिकार
बात मानिकै यह रानीकी ❋ राजा त्यारी दई कराय ।
आल्हा ऊदनि ब्रह्मानँदको ❋ ढेबा औ़र बीर मलिखान ॥
सबको बुलवायो राजाने ❋ औ आदरते लियो बिठाय ।
सातौं बेटा बीरशाहके ❋ सोऊ आय मिले तत्काल॥
हँसी खुशीते सब भेंटे तहँ ❋ शोभा एक न बरनी जाय।
साजि आरती तब रानीने ❋ परछनि करी बहूकी आय॥

चन्द्रावलि बैठी पलकीमें ❋ तुरत निछावरि दई कराय
उठी पालकी चन्द्रावलिकी ❋ औ डेरनपर पहुँची जाय।
चले महुबिया तब बौरीते ❋ जीतिको डंका दियो बजाय
कछुक दिनाको धावा करिकै ❋ पहुँचे गढ महुबेमें जाय।
सुनी खबरि जब मल्हना रानी ❋ बारहु रानी साथ लिवाय॥
साजि आरती दरवाजे पर ❋ ठाढी करैं मंगलाचार।
आई पालकी दरवाजे पर ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वैजाय
जाय उतारो चन्द्रावलिको ❋ औ महलनमें गई लिवाय।
बजी बधाई तब घरघरमें ❋ महुबे दगन सलामी लागि
इतनी लडाई भइ बौरीमें ❋ सो हम लिखिकै दई सुनाय
साँच झूँठ परमेश्वर जानै ❋ पै हम साँची लिखी बनाय
आगे लिखिहौं मैं ब्रह्माको ❋ दिल्लीमाहिं ब्याहको साज
जैसे ब्याह भयो बेलासँग ❋ यारो सुनो छोडि सब काम
समय समयपर आल्हा गावो ❋ नित उठिलेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति चन्द्रावलिकी चौथी व बौरीगढकी लडाई समाप्त॥

॥ श्रीः ॥

अथ दिल्लीकी लडाई ।

ब्रह्मानंद और बेलाका विवाह ।

दोहा–भोलानाथ मनाय उर, सीताराम सहाय ।
ब्रह्मानँदको ब्याह अब, लिखौं सुअवसर पाय ॥ १ ॥

सवैया ।

काहेको भूल्यो फिरै भटको कहुँ, अंत नहीं तुव काज सरैगो ।
रोज खुशामद लोगनकी करि, कोउ न हीयाकि पीर हरैगो ॥
कयलासके नायक दायक हैं, तुम ताहि भजो दुख दूरिबहैगो
औघटघाट लगावत हैं सोइ, पार्वतीपति पार करैगो ॥ २ ॥

मैं पद बन्दों शिवशंकरके ❋ ज्यहिशिरगंगचन्द्रमाभाल
भोलानाथ नाम जग जाहिर ❋ धारे कंठ मुंडकी माल ॥
शीघ्र प्रसन्न होत सेवकपर ❋ जगमें महादेव सरनाम।
म्वहिं बरदान देहु गौरीपति ❋ काहिहौं शूरबीर संग्राम ॥
राजा दुर्योधन कलियुगमें ❋ प्रगटे पृथीराज ह्वइ नाम ।
भइ द्रौपदी बेला ह्वइकै ❋ प्रगटी पृथीराज घरआय॥
अर्जुन प्रगटे गढ महुबेमें ❋ जगमें ब्रह्मानँद सरनाम ।
बेटा कहिये परिमालैके ❋ रानि मल्हनाके राजकुमार
पृथीराजकी रानि अगमाते ❋ बेला आनि धरो अवतार
क्या छबि बरनौं मैं बेलाकी ❋ जाको रूप न बरनो जाय
पूर्णचन्द्रमाके सम आनन ❋ शोभा अंगअंग रहिछाय ।
गजगामिनी सुघर मृगनैनी ❋ बोलै मनहुँ कोकिला बैन॥
नित नितखेलन लगी सखिनसँग ❋ खेलै खेल प्रेमके साथ ।

बारह बरस केरि उम्मिरिमें ❀ बेला सजै कियो सिंगार ॥
एक सखी बोली बेलाते ❀ बेटी सुनौ पिथौरा केरि ।
बहुत पियारी तुम राजाको ❀ रानि अगमाकी बहुत पियारि
जितनी सखियां तुम्हरे सँगकी ❀ तिन सबको ह्वइगयो बिवाह
क्यों नहिं ब्याह भयो तुम्हरोकहुँ ❀ क्या कुलहीने बाप तुम्हार
बात सुनी जब यह सखियनते ❀ बेला मनमें गई लजाय ।
संग छाँडिके सब सखियनको ❀ रंगमहलमें पहुँची जाय ॥
आवत देखो जब बेटीको ❀ अगमा लीन्हों कंठ लगाय ।
देखि अनमनी जब बेटीको ❀ रानि अगमाने कही सुनाय ॥
काहे अनमनि तुम बेटीहौ ❀ सो म्वहिं हाल कहौ समुझाय
बेला बोली तब धीरेते ❀ माता सुनौ हमारी बात ॥
जितनी सखियाँ हमरे सँगकी ❀ हमते करें हँसौआ आय ।
तुम्हरे सँगकी जितनी सखियाँ ❀ तिन सबको ह्वइगयो बिवाह
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❀ जो तुम्हरो नहिं करो बिवाह।
इतनी बात सुनी रानीने ❀ बेटिहि कंठ लियो लपटाय ॥
दियो दिलासा तब बेलाको ❀ बेटी धीर धरौ मनमाहिं ।
टीका भेजि दिहैं जल्दीते ❀ तुरतै देहौं ब्याह रचाय ॥
यह कहि अगमा उठि ठाढीभइ ❀ अपनो गडुआ लियोउठाय
जाय पहूँची महराजापै ❀ औ पलका पर बैठी जाय ॥
आदर करिकै पृथराजने ❀ महरानीते कही सुनाय ।
कौन कामको तुम आई हौ ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ॥
हाथ जोरिकै रानी बोली ❀ स्वामी सुनौ हमारी बात ।
ब्याहन योग्य भई बेटी अब ❀ ताको अब कहुँ करौ बिवाह ॥
टीका भेजिदेउ जल्दीते ❀ इतनी मानौ बात हमारि ।
यह सुनि राजा बोलन लागे ❀ रानी बचन करौ परमान ॥

टीका भेजिदिहैं अबहीं हम ❋ प्यारी धीर धरौ मनमाँहि ।
इतनी कहिकै राजा चलिभये ❋ पहुँचे आय राज दरबार ॥
चौंडा ब्राह्मणको बुलवायो ❋ औ ताहरको लियो बुलाय ।
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ चारौं नेगी लिये बुलाय ॥
सिगरो हाल कह्यो राजाने ❋ औ ताहरको संग लिवाय ।
राजा पहुँचे रंगमहलमें ❋ टीका क्यार कियो सामान॥
थार सुबरनको मँगवायो ❋ औ नारियल लियो मँगवाय
साल दुशाला औ गहने सब ❋ मोहरन तोडा लियो मँगाय
कीमखाबके थान मँगाये ❋ हीरा मोती लिये मँगाय ।
अस्सी गजरथ साठि पालकी ❋ अच्छे घोडा एक हजार ॥
सब सामान मँगाय प्रेमते ❋ तीनि लाखको करो तयार ।
ताहर चौंडा औ नेगिनको ❋ सब सामान दियो सौंपाय॥
कागद लैकै कलपीवालो ❋ अपनो कलम दान लै हाथ।
सिद्धिश्री नारायण लिखिकै ❋ ता पाछेते लिखी जोहार ॥
चारौं नेगी ताहर बेटा ❋ चौंडा ब्राह्मण संग पठाय ।
सब सामग्री तीनि लाखकी ❋ सो टीकामें दई पठाय ॥
प्रथम लडाई है द्वारेकी ❋ मँडये कठिन चलै तलवारि ।
करन कलेवा लरिका एहैं ❋ तब हम लेहैं शीश कटाय ॥
जो मंजूर होय जाको यह ❋ सो टीकाको लेय चढाय ।
याहि विधि पाती पृथीराजने ❋ लिखिकै बन्द दई करवाय॥
चिट्ठी सौंपि दई ताहरको ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय।
धर्म नीति यह जग जाहिरहै ❋ कीजै ब्याह बरोबरि माहिं ॥
ताते तुमको समुझावतहौं ❋ टीका जानि चढैयो जाय ।
सबके टीका तुम लै जैयो ❋ एक न जैयो नगर महोब ॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ सो तहँ बसत बनाफरराय।

इतनी बात सुनी ताहरने ❋ है जो कर्णक्यार अवतार॥
चौंडा ब्राह्मणको संग लैके ❋ चारौं नेगी संग लिवाय।
कूच कराय दियो दिल्लीते ❋ औ चौंडाते कही सुनाय॥
लरिका क्वाँरे हैं झुन्नागढ ❋ गजराजाको राजकुमार।
सुयश प्रगट है गजराजाको ❋ तहँई टीका देइँ चढाय॥
इतनी कहिकै ताहरमलने ❋ झुन्नागढकी पकरी राह।
सात रोजकी मंजिल करिकै ❋ पहुँचे झुन्नागढमें जाय॥
लगी कचहरी गजराजाकी ❋ ताहर सनुहे पहुँचे जाय।
करी बन्दगी जब राजाको ❋ तब राजाने लियो बिठाय॥
समाचार पूँछो ताहरते ❋ अपनो हाल देउ बतलाय।
कौन काजहित इत आये हो ❋ सो तुम हमहिं कहोसमुझाय॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ राजा वचन करौ परमान।
हम हैं लरिका पृथीराजके ❋ दिल्ली नगर हमारो धाम॥
ब्याह काजहित हम आयेहैं ❋ औ ताहर है नाम हमार।
खोलिकै पाती टीका वाली ❋ सो गद्दी पर दई चलाय॥
पाती बाँची गजराजाने ❋ आँकुइ आँकुनजरिकोरजायँ।
पढी हकीकति जब नीचेकी ❋ पढतै मनमें गये डेराय॥
पाती फेरिदई राजाने ❋ औ ताहरते कही सुनाय।
चाह नहीं है हमहिं ब्याहकी ❋ ना हम शीश कटैहैं जाय॥
इतनी सुनतै ताहर लौटे ❋ अपनो कूच दियो करवाय।
जाय पहूँचे नरवरगढमें ❋ औ नरपतिको करी सलाम॥
पाती दीन्हीं तब राजाको ❋ राजा पढिकै दई फिराय।
ब्याहु न करिहैं हम दिल्लीमें ❋ नाहीं हमैं ब्याह दरकार॥
ताहर चलिभये तब नरवरते ❋ औ बूँदीमें पहुँचे जाय।
टीका फेरि दियो गंगाधर ❋ ताहर बहुत गये शरमाय॥

देश देश टीका फिरिआयो ❀ काहू ब्याह कबूल्यो नाहिं ।
ताहर बोले तब चौंडाते ❀ ब्राह्मण सुनौ हमारी बात ॥
बेला बैरिनि हमको ह्वैगइ ❀ नाहीं मिलो तासु बरजोग ।
हम तुम चलिहैं अब उरईको ❀ जहँपर बसतमहिलपरिहार ॥
जहँ बतलैहैं माहिल ठाकुर ❀ तहँ हम टीका दिहैं चढाय ।
यह कहि ताहर चौंडा चलिभये ❀ औ उरईकी पकरी राह ॥
आठ दिनाकी मैजलि करिकै ❀ औ उरईमें पहुँचे जाय ।
लगी कचहरी जहँ माहिलकी ❀ ताहर उतरिपरे अरगाय ॥
करी बन्दगी जब माहिलको ❀ तब माहिलने कही सुनाय ।
आवो बैठो दिल्ली वाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कौन काम तुम्हरो अटकोहै ❀ काहे बदन रह्यो मुरझाय ।
इतनी सुनिकै ताहर बोले ❀ औ माहिलते लगे बतान ॥
काह बतावौं मामा माहिल ❀ हमते कछू कही ना जाय ।
चारि मास मारगमें बीते ❀ बेला बैरिनि भई हमारि ॥
देश देशमें हम फिरि आये ❀ काहू टीका चढायो नाहिं ।
अब कहुँ लरिका हमहिं बतावौ ❀ तहँ हम टीका देयँ चढाय
बोले माहिल तब ताहरते ❀ लरिका लायक देयँ बताय ॥
राजा अजैपाल कनउजमें ❀ जिनको उदय अस्तलौं राज
तिनको बेटा रतीभान है ❀ जानैं जिनहिं सकल संसार ।
लाखानिराना तिनको बेटा ❀ जेहि घर लाखनको ब्योहार
टीका चढावो तुम लाखनिको ❀ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वैजाय
इतनी सुनिकै ताहर चलि भये ❀ औ कनउजकी पकरी राह
तीनि रोजकी मैजलि करिकै ❀ गढ कनउजमें पहुँचे जाय ।
ताहर पहुँचे जब ड्योढीपर ❀ दरवाननि दियो जवाब ॥
कहाँते आये औ कहँ जैहौ ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय

बोले ताहर दरवानीते ❋ राजै खबरि सुनावो जाय ॥
टीका लाये हम दिल्लीते ❋ सो राजा घर दिहैं चढाय ।
इतनी सुनिकै दरवानीने ❋ राजै खबरि सुनाई जाय ॥
भयो बुलौआ तब ताहरको ❋ ताहर तहाँ पहूँचे जाय ।
करी बन्दगी महराजाको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरि बदलि गइ तब जैचँदकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ।
ताहर बैठिगये चौकी पर ❋ राजा पाती लई उठाय ॥
पाती बाँची जब जैचँदने ❋ तब ताहरते कही सुनाय ।
चाह नहीं है हमहिं ब्याहकी ❋ टीका कहूँ चढावो जाय ॥
ब्याह न करि हैं हम दिल्लीमें ❋ ना हम शीश कटै हैं जाय ।
इतनी सुनिकै ताहर चलिभये ❋ मनमें बहुत गये शरमाय ॥
कूच कराय दियो कनउजते ❋ औ उरईकी पकरी राह ।
तीनि कोस जब उरई रहिगइ ❋ तब बगियामें करो मुकाम ॥
तहाँ पहूँचे मलिखे ठाकुर ❋ वनमें खेलन गये शिकार ।
भेंट ह्वइगई तहँ ताहरते ❋ पूँछन लगे बीर मलिखान ॥
कौन कामको तुम आये हौ ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
करो बहाना तब ताहरने ❋ झूँठी बात बनावन लाग ॥
हम तो गये रहैं गंगाजी ❋ कीन्हीं जाय गंग अस्नान ।
बोले मलिखे तब ताहरते ❋ बेटा सुनौ पिथौरा क्यार ॥
तुम हौ लरिका बादशाहके ❋ काहे झूँठी कहत बनाय ।
नेगी चारि संग तुम्हरे हैं ❋ चौंडा ब्राह्मण संग तुम्हार ॥
सांचो हाल हमहिं बतलावो ❋ इतनी मानौ कही हमारि ।
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ हमरे बचन करौ परमान ॥
टीका लाये हम बहिनीको ❋ सो कोउ ब्याह कबूलै नाहिं
बोले मलिखे तब ताहरते ❋ पाती हमहिं देउ दिखलाय ॥

लैकै पाती टीका वाली ❋ सो चौंडाने दई गहाय ।
पाती बाँची तब मलिखेने ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय ॥
बोले मलिखे तब ताहरते ❋ ताहर सुनो हमारी बात ।
लरिका तुमको हम बतलैहैं ❋ ताको टीका देउ चढाय ॥
नगर महोबेके परिमालै ❋ तिनको ब्रह्मानन्द कुमार ।
पारसपूजा है जिनके घर ❋ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय ॥
टीका चढावो ब्रह्मानँदको ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ औ मलिखेने लगे बतान ॥
हुक्म नहीं है महाराजको ❋ हम ना जैहैं नगर महोब ।
मालिखे बोले तब ताहरते ❋ कारण हमहिं देउ बतलाय ॥
कौन बातको राजा हटको ❋ क्या कुलहीन चँदेले राय ।
चन्द्रवंश सुन्दरकुल जाहिर ❋ हैं नरनाह रजा परिमाल ॥
देश देशके राजा जीते ❋ जीते बडे बडे महिपाल ।
अमरनाथ गुरुकी आज्ञाते ❋ खाँडा सागर धरो पखारि ॥
इतनी सुनिकै चौंडा बोलो ❋ तुम सुनिलेउ बीर मलिखान
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ संगति करी ओछि परिमाल
दाग़ु लागिगयो चन्द्रवंशमें ❋ टीका लगो रजा परिमाल ।
इतनी सुनते मलिखे जारिगे ❋ नैना अग्निज्वाल ह्वइजायँ ॥
बोले मलिखे तब चौंडाते ❋ मुखते बोलो बात सम्हारि ।
क्या कमबख्ती लगी तुम्हारी ❋ जो तुम हीनी कही बनाय
आल्हा ब्याहे नैनागढमें ❋ नैपाली घर भयो विवाह ।
हमरो ब्याह भयो पथरीगढ ❋ जानत हमाहिं बीर चौहान ॥
मामा हमरे माहिल राजा ❋ जो हैं उरईके परिहार ।
कौन बातमें हम ओछे हैं ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
जो कछु धर्म कर्म क्षत्रिनमें ❋ तिनमें कौन कमी हममाहिं ।

पारथ जीतिलियो दंगलमें ❁ अपनो सिरसा लियो छुडाय
मोहरा मारो चौहाननको ❁ जानत हाल बीर चौहान।
अपन दुसारिहा हम राखो ना ❁ जो समुहे ह्वइ देइ जबाब॥
बडे बडे क्षत्री हमने जीते ❁ बाजी सेतबंदलौं टाप।
कही हमारी अब तुम मानौ ❁ टीका महुबे देउ चढाय॥
जैसे राजा पृथीराज हैं ❁ तैसेइ भूप रजा परिमाल।
सुन्दर लरिका ब्रह्मानँद है ❁ रणमें एक शूर सरदार॥
लायक तुम्हरे परिमालेहैं ❁ तिन घर टीका देउ चढाय।
जो नहिं मनिहौ बात हमारी ❁ तौ सब जैहैं काम नशाय॥
लौटिकै टीका यहु ना जैहै ❁ चाहौ प्राण रहैं की जायँ।
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❁ औ चौंडाते लगे बनान॥
देश देशमें हम ह्वइ आये ❁ काहू ब्याह कबूल्यो नाहिं।
ताते बात मानि मलिखेकी ❁ टीका महुबे देउ चढाय॥
यह मन भायगई चौंडाके ❁ चलिभौसाथवीर मलिखान
जाय पहूँचे गढ सिरसामें ❁ खातिर करी बीर मलिखान
तिनहिंटिकायदियोबँगलामें ❁ तुरत कबुतरी लई मजाय।
कूदि बछेरीपर चढि बैठे ❁ औ महुबेकी पकरी राह॥
एक पहरके तब अरसामें ❁ पहुँचे जाय राजदरबार।
उतरि बछेरी ते भुइँ आये ❁ घोडी थामिलई थनवार॥
करी बन्दगी चन्देलेको ❁ मलिखे हाथजोरि रहिजायँ।
हाथ पकरिकै चन्देलेने ❁ अपने पास लियो बैठाय॥
बहुत प्रीतिते राजा बोले ❁ बेटा कुशल कहौ समुझाय।
हाथ जोरिकै मलिखे बोले ❁ दादा चहिये दया तुम्हारि॥
बैठे राज करौं सिरसामें ❁ है सब कुशल छेम महराज।
एक बात मानो दादा तुम ❁ जोकछुअर्जकरौंयहिकाल॥

टीका आयो है ब्रह्माको ❋ सो जल्दीते लेउ चढाय ॥
यह कहि पाती दिल्लीवाली ❋ सो राजाको दई गहाय ।
पाती बाँची चन्देलेने ❋ आँकुइआँकुनजारि करिजायँ
बोले राजा तब मलिखेते ❋ तुम सुनिलेउ लडैते लाल
टीका फेरिदेउ दिल्लीको ❋ नाहीं हमहिं ब्याहकी चाह॥
ऐसो टीका हमहिं न चहिये ❋ लरिका कौन करै बलिदान ।
कठिन मारु है चौहाननकी ❋ हमने छोरि धरे हथियार ॥
खाँडा धरिदियो हम सागरमें ❋ रहिरहि मेरो प्राण घबराय ॥
यह सुनिमलिखेबोलन लागे ❋ दादा सुनो हमारी बात ।
टीका धरत जो लौटैहौ ❋ तौ जग ह्वैहै हँसी तुम्हारि॥
क्या कुलहीने चन्देलेहैं ❋ यह कहि हँसिहै सकल जहान
नाम तुम्हारो देश देशमें ❋ दादा समुझिलेउ मनमाहिं॥
अपनो सिरसा हमने छीनो ❋ धूरे किला लियो बनवाय ।
मोहरा मारो चोहाननको ❋ सब राजनको लो पँजियाय
टीका फेरिदेयँ धरत जो ❋ तौ क्षत्रापिन जाय नशाय ॥
हम ना फेरिहैं यह टीका अब ❋ चाहौ प्राण रहैं की जायँ ॥
दंड बाँधिकै महराजाको ❋ सातौ भाँवरि लिहौं डराय ।
ब्याहि जा लावें हम दिल्लीते ❋ तौ यह नाम बीर मलिखान
यह सुनि राजा बोलन लागे ❋ तुम रानीते पूंछो जाय ।
जो कछु भावै तुम्हरे मनमें ❋ सोई करौ लडैते लाल ॥
इतनी सुनिकै मलिखे चलिभे ❋ औ मल्हना पै पहुँचे जाय ।
आवत देख्यो जब मलिखेको ❋ मल्हना उठी भरहरा खाय ॥
हृदय लगायलियोमलिखेको ❋ औ मलिखेते कही सुनाय ।
सुरति बिसारि दई हमरी तुम ❋ नित उठि हेरौं बाट तुम्हारि
आवत देखौं जब काहूको ❋ आये मनहुँ बीर मलिखान

कुशल क्षेम अब गढ सिरसाकी ❋ बेटा हाल देउ बतलाय ॥
कौन कामको तुम आये हो ❋ सो सब हाल कहो समुझाय
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ माता हम पर दया तुम्हारि
कुशल क्षेम है गढ सिरसामें ❋ बैठे राज करौ महरानि ।
सुरति तुम्हारी हम ना भूले ❋ नित उठि पूछौं हाल तुम्हार
मिलति खबरिया है मोको नित ❋ माता बचन करौ परमान
इतनी कहिके नर मलिखेने ❋ पाती मल्हनै दई गहाय ॥
खोलिकै पाती मल्हना बाँची ❋ औ मलखेते लगी बतान ।
टीका फेरिदेउ अबहीं तुम ❋ इतनी मानो कही हमारि ॥
मलिखे बोले तब मल्हनाते ❋ माता बोलो बचन सम्हारि।
घरमें आया टीका फेरैं ❋ तो रजपूती धर्म नशाय ॥
होय हँसौआ देशदेशमें ❋ औ बदनामी होय तुम्हारि
मोहरा मरिहौं चौहाननको ❋ सातो भाँवरि लिहौं डराय
किला बनाया हम सिरसामें ❋ औ पारथको दिया भगाय
ब्याह रचैहैं हम ब्रह्माको ❋ हमरो नाम बीर मलिखान
कौन बातको डर माता है ❋ टीका जल्दी लेउ चढाय ।
तब समुझायो मंछुला रानी ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय
मलिखे माननके नाहीं हैं ❋ ताते हुक्म देउ फरमाय ।
तौलौं महलन ऊदनि आये ❋ औ मल्हनाको कियो प्रणाम
करी बन्दगी नर मलिखेको ❋ औ मलिखेते पूँछन लाग ।
कौन बात पूछत माताते ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय॥
पाती लैकै तब मलिखेने ❋ सो ऊदनिको दई गहाय ।
खोलिकै पाती ऊदनि बाँची ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय॥
बोले ऊदनि तब मल्हनाते ❋ माता त्यार करौ सामान ।
टीका चढाय लेउ जल्दीते ❋ माता मानो बचन हमार ॥

मल्हना बोली तब ऊदनिते ❋ टीका अबहिं देउ लौटाय ।
तडपे ऊदनि तब मल्हनाते ❋ माता अक्किल गई हिराय॥
तुमहिं हँसौआको डर नाहीं ❋ वरते टीका देयँ फिराय ।
टीका लौटनको नाहीं है ❋ चाहौ आसमान टरिजाय॥
जग जीतिकै गढ दिल्लीमें ❋ सातौ भाँवरि लेउँ डराय ।
ब्रह्मा ब्याहौं पृथीराजघर ❋ तौ मैं दस्सराजको लाल ॥
फिरिकै बोली मह्वुला रानी ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय।
तुम ना हटको बघ ऊदनिको ❋ यह ना मनिहैं कही तुम्हारि
रणक दुलहा यह ऊदनि हैं ❋ हैं नरनाह बीर मलिखान ।
काम तुम्हारो पूरन ह्वइ है ❋ ताते हुक्म देउ फरमाय ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ बेटा उदयसिंह मलिखान
जो कछु इच्छा होय तुम्हारी ❋ सोई करौ लडैते लाल ॥
इतनी सुनिकै नर मलिखेने ❋ रुपना बारी लियो बुलाय।
तुरत पठाय दियो सिरसाको ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय
जल्दी लैआवो ताहरको ❋ टीका जल्दी देयँ चढाय ।
हुक्म पायकै रुपना चालिभो ❋ औ सिरसामें पहुँचो जाय
बैठे सुलिखे थे बँगलामें ❋ तिनको रुपना करी सलाम
रुपना बोल्यो तब सुलिखेते ❋ तुम ताहरको देउ पठाय ॥
टीका चढिहै ब्रह्मानँदको ❋ यह कहि दई बीर मलिखान
इतनी बात सुनी रुपनाते ❋ सुलिखे उठे मरहरा खाय ॥
ताहर चौंडा औ नेगिनको ❋ तुरतै मह्वुवे दियो पठाय ।
बोले मलिखे इत मल्हनाते ❋ माता सुनहु हमारी बात ॥
नाम तुम्हारो जग जाहिर है ❋ पारस पूजाको अधिकार ।
ताहर बेटा पृथीराजको ❋ आवत ह्वइहै नगर महोब ॥
त्यारी करौ जल्द महलनमें ❋ सब सखियनको लेउ बुलाय

इतनी सुनतै रानि मल्हनाने ❋ घर घर खबारि दई पहुँचाय
त्यारी होन लगी महुबेमें ❋ घर घर होयँ मगलाचार।
कलश सोबरनके सजवाये ❋ सो द्वारेन पर दिये धराय॥
तुरत बुहारे गलियारे सब ❋ औ शतरंजी दई बिछाय।
ठौर ठौर पर बाजन बाजें ❋ नौबत झरन लगी त्यहिकाल
बन्दनवार बँधी घर घरमें ❋ गलियन इतर दियो छिरकाय
मल्हना सखिया बुलवाईं सब ❋ झारेंन दियो अबीर भराय
हाथ सोबरनकी पिचकारी ❋ छज्जन रही लालरी छाय।
भयो बुलाआ तब पंडितको ❋ सो महलनमें पहुँचे जाय॥
कलश मँगाय लियो सोनेको ❋ मोतिन चौक दई पुरवाय।
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
पंडित बुलवायो ब्रह्माको ❋ सो पाटापर बैठे आय।
दिवला तिलका दोनों रानी ❋ तिसरी बहिनि मल्हनदेरानि
बारह रानी चन्देलेकी ❋ सब मिलिकरैं मंगलाचार।
आल्हा ऊदनि ढेबा आये ❋ आये साजि बीर मलिखान
सब मिलि बैठिगये आँगनमें ❋ बैठ आय रजा परिमाल।
पंडित वेद उचारन लागे ❋ बन्दी सुयश बखानन लाग
ताहर चौंडा चारो नेगी ❋ सो महुबेमें पहुँचे आय।
ताहर आये जब गलियनमें ❋ वर्षा होन फूलकी लागि॥
अतर गुलाबनकी झरि लागी ❋ गलियाँमहकिमहकिरहिजायँ
छुटैं पिचक्का रँग केसरिके ❋ छज्जन रही लालरा छाय॥
रंग बिरंगे कपडा ह्वइगये ❋ ताहर खुशी भये मनमाहिं।
धनि धनि वस्ती यह महुबेकी ❋ जामें बसत चदेले राय॥
पारस पूजा है जिनके घर ❋ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय
ताहर आये दरवाजे पर ❋ तुरतै उतरि परे अरगाय॥

चारौ नेगी औ चौंडा सँग ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ।
नीचे ऊपर बघ ऊदनिने ❋ दीन्हें सात तवा धरवाय ॥
ताहर पहुँचे जब आँगनमें ❋ नेगाचार होन तब लाग ।
तीनि लाखको टीका लाये ❋ सो ताहरने दियो धराय ॥
रूप देखिके ब्रह्मानँदको ❋ ताहर बहुत खुशी ह्वइजायँ
पूजा करिके श्रीगणेशकी ❋ औ करि इष्टदेवको ध्यान॥
करो रोचना ब्रह्मानँदके ❋ माथे अक्षत दिये लगाय ।
तवा धरे जो बघ ऊदनिने ❋ तिनपर ताहर करी निगाह
साँग धमकी तब ताहरने ❋ सातौं तवा तोरि धँसिजायँ ।
ताहर बोले तहँ आँगनमें ❋ हमरे कुलमा यहै ब्योहार ॥
साँग उखारैं जो ब्रह्मानँद ❋ तौ हम बीरा देयँ खवाय ।
देखि हाल यह राजा सोचे ❋ मल्हना बहुत गई घबराय
बोली मल्हना नर मलिखेते ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
हमरे आगे तौ ऐसी भइ ❋ पाछे काह रची भगवान ॥
ऊदनि बोले तब मल्हनाते ❋ धीरज धरे होत सब काम ।
यह कहि ऊदनि उठि ठाढभये ❋ औ ताहरते लगे बतान ॥
छोटे भैया हम ब्रह्माके ❋ हम यह लेहैं सांग उखारि ।
इतनी कहिके बघ ऊदनिने ❋ तुरते लीन्हीं सांगि उखारि
ताहर बोले तब चौंडाते ❋ दादा सुनो हमारी बात ।
ऐसे योधा हैं जिनके घर ❋ क्यों नहिं राज करै परिमाल
यह कहि ताहर बीरा लैकै ❋ ब्रह्मानँदको दियो खवाय ।
ज्योंहीं बीरा लौ ब्रह्माने ❋ सनुहे भई तडाका छींक ॥
बोली मल्हना तब मलिखेते ❋ अबहीं टीका देउ फिराय ।
पुत्र हमारो क्वाँरो रहि है ❋ नाहीं हमहिं बहूकी चाह ॥
ऊदनि समुझायो मल्हनाको ❋ माता समुझि लेउ मनमाहिं

घरको आयो टीका फिरिहैं ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी हमारि॥
हम ना फेरिहैं अब टीकाको ❋ चाहै अशगुन होयँ हजार।
जब हम त्यार भये माँडौको ❋ पूजे भुजबल जबहिं हमार॥
माता सोचौ तुम अपने मन ❋ समुहे छींक भई ठहनाय।
तबहीं तुमने म्बाहिं हटकोथो ❋ हम लै आये बापको दाउँ॥
मनं नाहिं भाई यह मल्हनाके ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय।
पुत्र हमारो मारो जैहै ❋ ताते टीका देउ फिराय॥
इतनी सुनते नर मलिखेने ❋ अपनी लई कटारी काढि।
धरी कटारी तब छातीपर ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय॥
जो कछु टीका यहु फिरि जैहै ❋ अपने लिहौं कटारी मारि।
इतनी सुनिकै मल्हना बोली ❋ बेटा मेरे लडैते लाल॥
जो कछु तुम्हरे मनमें आवै ❋ सोई करौ वीर मलिखान।
ढोलक बजवाई मल्हनाने ❋ सखिया करैं मंगलाचार॥
जितने नेगी थे दिल्लीके ❋ गहना तिनहिं दियो पहिराय
बाकी गहना जितनो रहिगो ❋ सो चौंडाको दियो पकराय
नेगी और होयँ दिल्लीमें ❋ दीजो जाय चौंडिया राय।
नेगी बुलाये तब महुबेके ❋ ताहर गहना दियो इनाम॥
नेग निछावरि जबहीं ह्वइगइ ❋ तब ज्योंनार दई करवाय।
भयो बुलौआ फिरि पंडितको ❋ ब्याहकि साइति देउ बताय
माह बदी तेरसि भाँवरिकी ❋ अच्छी साइति दई सुनाय।
बोले ताहर तब राजाते ❋ आज्ञा देउ जायँ महराज॥
बहुत दिनाते हम घूमति हैं ❋ अब दिल्लीको करैं पयान।
आज्ञा देदइ तब राजाने ❋ ताहर उठिकै करी जुहार॥
सबको मिलिकै ताहर चलिभे ❋ नेगी ब्राह्मण संग लिवाय।
राह पकरिलइ गढ दिल्लीकी ❋ औ उरईमें पहुँचे जाय॥

आवत देखो जब ताहरको ❀ माहिल चौकी दई डराय ।
ताहर बैठे जब चौकीपर ❀ तब माहिलने कही सुनाय
टीका चढायो क्याहि राजाघर ❀ सो सब हाल कहो समुझाय
ताहर बोले तब माहिलते ❀ मामा सुनो हमारी बात ॥
कनउज पहुँचे हम टीकाले ❀ जैचंद तुरत कियो इनकार
तब हम आवत थे उरईको ❀ तौलों मिले वीर मलिखान
हमहिं संग लैगे महुबेको ❀ ब्रह्माको टीका लियो चढाय
इतनी बात सुनी माहिलने ❀ मनमें बहुत गये खिसियाय
चालिभये ताहर जब उरईते ❀ माहिल घोड़ी लई मँगाय।
कूदि बछेरी पर चढि बैठे ❀ औ दिल्लीकी पकरी राह ॥
पाँच रोजकी मैजलि करिकै ❀ पहुँचे जाय राज दरबार॥
करी वन्दगी पृथीराजको ❀ राजा चौकी दई डराय ॥
बोले राजा तब माहिलते ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
माहिल बोले तब राजाते ❀ हमते कछू कही ना जाय ॥
ताहर पहुँचे गढ महुबेमें ❀ तहँ पर टीका दियो चढाय
टीका फेरिलेउ महुबेते ❀ ओछी जाति बनाफर राय॥
तौलों ताहर चौंडा आये ❀ चरो नेगी संग लिवाय।
बोले पृथीराज चौंडाते ❀ ब्राह्मण अक्किल गई तुम्हारि॥
हमने हटकोथो महुबेको ❀ तँह तुम टीका आयो चढाय
फेरिकै लावो तुम टीकाको ❀ नाहिं सब जैहै मान नशाय॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❀ दादा सुनो हमारी बात ।
देश देशमें हम फिरि आये ❀ काहू ब्याह कबूलो नाहिं॥
चारिमास मारगमें बीते ❀ तौलों मिले बीर मलिखान
लरिका बतलायो मलिखेने ❀ राजा चंद्र वंश दरबार ॥
पारस पूजा है महुबेमें ❀ लोहा छुवत सोन ह्वैजाय ।

इन्द्र धाम सम सो बस्ती है ❋ जहँ पर तपत रजा परिमाल
तिनको लरिका ब्रह्मानँद है ❋ जाको रूप न बरनो जाय।
आल्हा ऊदनि जिनके घरमें ❋ जिनके बलको नाहिं सुमार
आल्हा ब्याहे नैपाली घर ❋ औ गज राजा घर मलिखान
मामा माहिल हैं उनहूंके ❋ फिरिक्याघाटिक्षत्रियनमाहिं
टीका लौटनको नाहीं है ❋ चाहै कोटिन करो उपाय।
जब बरात आवै दिल्लीको ❋ सबकी लीजो कैद कराय॥
इतनी सुनिके माहिल चलिभये ❋ औ उरईमें पहुँचे जाय।
राम बनावें तौ बनिजावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय
सुनौ हाल अब गढ़ महुबेको ❋ ज्यहिविधिरच्यो ब्याहकोसाज
माघ महीना जबहीं लाग्यो ❋ महुबे होन तयारी लागि॥
जितने राजा ब्यौहारी थे ❋ तिनको न्यौता दियो पठाय
लश्कर लैलै राजा आये ❋ औ महुबेमें पहुँचे आय॥
डेरा परिगये ठौर ठौरपर ❋ तँबुअन रही लालरी छाय
सुनी खबरि जब गढ़ माहिलने ❋ लिल्ली घोडी भये सवार॥
राह पकरिलइ गढ़ महुबेकी ❋ पहुँचे चारि घरीमें जाय।
उतरिकै दिल्लीते भुइँ आये ❋ औ मल्हनापै पहुँचे जाय॥
सूरति देखी जब माहिलकी ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वैजाय
माहिल बोले रानि मल्हनाते ❋ बहिनी बचन करो परमान।
अकिलो लरिका तुम लैआवो ❋ यह कहि दइ पिथौरा राय।
यह कहि दीन्ही पृथीराजने ❋ सातौ भांवरि दिहौं डराय॥
जो कहुँ अइहैं आल्हा ऊदनि ❋ ओछी जाति बनाफर राय
शीश काटिहौं उन दोउनके ❋ लरिका दिहौं जानते मारि
अकिलो लरिका जो लैऐहौ ❋ सातौ भांवरि दिहौं डराय।
बिदा कराय दिहौं बेटीको ❋ यह कहि पाती दई गहाय॥

झूँठी पाती दइ माहिलने ❋ बाँची तुरत मल्हनदे रानि ।
साँची बात मानि माहिलकी ❋ मल्हना पलकी लई मँगाय
ब्रह्मा बेटाको बुलवायो ❋ औ पलकीमें दियो बिठाय
संग करिदियो तब माहिलके ❋ औ माहिलते लगी बतान
तुमको सौंपतिहौं लरिकाको ❋ बीरन बहुत रहेउ हुशियार
चली पालकी ब्रह्मानँदकी ❋ संगै चले माहिल परिहार ॥
सुनी खबरिया जब ऊदनिने ❋ ब्रह्महि माहिल गये लिवाय
कूदि बेंदुलापर चढि बैठे ❋ औ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
जहँपर बैठी रानी मल्हना ❋ ऊदनि तहाँ गये नियराय ।
आवत देखो जब ऊदनिको ❋ मल्हना उठी भभ्हरा खाय ॥
चरण लागिकै रनि मल्हनाके ❋ ऊदनि माथे लियो लगाय ।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ माता अक्किल गई तुम्हारि ॥
ब्रह्मै भेजदियो माहिल सँग ❋ अगुआ कियो महिल परिहार
कटन मरनको आल्हा ऊदनि ❋ माहिल जेइँलेयँ जिवनार ॥
धोखा दैकै माहिल लैगे ❋ अब ना मिलिहै पुत्र तुम्हार
नाम हमारो सब राजनमें ❋ सो तुम खोई बात हमारि ॥
सबै बरायत महुबे रहिगइ ❋ अकिले ब्रह्मै दियो बठाय ।
हम ना ऐहैं अब महुबेको ❋ यह कहि चले उदैसिंह राय
मल्हना रानी देखत रहिगइ ❋ जिनको चलत न लागी ब्यार
ऊदनि पहुँचे दशपुरवामें ❋ सुनवाँ रानी पूँछन लागि ॥
कौनें अँदेशामें देवर हौ ❋ काहे बदन गयो कुम्हिलाय
बोले ऊदनि रनि सुनवाँते ❋ हमते कछू कही ना जाय ॥
काह बतावों मैं भौजीते ❋ अकिले माहिल गये बरात
माहिल आये गढ महुबेमें ❋ झूंठी बातें करीं बनाय ॥
सीख मानिकै रनि मल्हनाने ❋ ब्रह्मा संगै दिये पठाय ।

जन्मके बैरी माहिल मामा ❋ ताकत दावँ घात दिन राति
वंश नशावनको लागे हैं ❋ नित घटि करत हमारे साथ
सबै बराती महुबे रहिगये ❋ माहिल ब्रह्मै गये लिवाय॥
अब बरातको हम ना जैहैं ❋ ना महुबेते काम हमार।
यह सुनि सुनवाँ बोलन लागी ❋ देवर अक्किल कहाँ तुम्हारि
रानी मल्हना तुमको पालो ❋ अपने कुचको दूध पिलाय
मारे जैहैं जो ब्रह्मानँद ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि
बदनामी ह्वइ है सबहीविधि ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं
लाग नहीं है कछु मल्हनाकी ❋ यह छल कियो महिलपरिहार
कामु बिगारिहै जो मल्हनाको ❋ तुम्हरे जीवनको धिरकार।
बात हमारी देवर मानौ ❋ अबहीं कूच देउ करवाय॥
यह मन भाई बब ऊदनिके ❋ औ सुनवाँते कही सुनाय।
सीख तुम्हारी हमने मानी ❋ यह कहि चले उदैसिहराय
जायकै पहुँचे सो लश्करमें ❋ तुरतै डंका दियो बजाय।
डंका बाजो गढ महुबेमें ❋ क्षत्री तुरत भये हुशियार॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री साजि भये तैयार॥
कागद लीन्हों कल्पीवालो ❋ ऊदनि कलमदान लै हाथ
पाती लिखिदइ नर मलिखेको ❋ तामें सबियाँ लिखो हवाल
छलिकै माहिल ब्रह्मै लै गये ❋ घटिहा भूप महिल परिहार
जान न पावैं माहिल राजा ❋ तुरतै कैद लेउ करवाय॥
पाती लैकै धावन चलिभो ❋ आ सिरसामें पहुँचो जाय।
मलिखे बैठे सिंहासनपर ❋ धावन पाती दई गहाय॥
खोलिकै पाती मलिखे बाँची ❋ औ सुलिखेको लियो बुलाय
हाल बतायो सब सुलिखेको ❋ औ यह कही बीर मलिखान

माहिल लिये जात ब्रह्माको ❋ तिनकी कैद लेउ करवाय ।
इतनीसुनिकै सुलिखेचलिभये ❋ अपनो लश्कर लियो सजाय
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ रस्ताको घेरो जाय ।
आई पालकी ब्रह्मानँदकी ❋ लिह्री चढे महिल परिहार
सुलिखे मिलेजायँ माहिलको ❋ तुरतै करी बन्दगी जाय ।
बोले सुलिखे तब माहिलते ❋ मामा सुनो हमारी बात ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❋ जो घटि करी हमारे साथ।
अकिले ब्रह्माको सँग लीन्हों ❋ है यह कौन देशकी रीति॥
यह कहि डंड बाँधि माहिलकी ❋ लै फाटकपर दियो टँगाय।
पठै पालकी दइ सिरसाको ❋ महुवे खबरि दई पहुँचाय॥
सजी बरायत गढ महुबेमें ❋ सिरसा नेग होन सब लाग
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोडा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर ऊदनि भये स्वार ।
घोडा मनुरथा पर ढेबा है ❋ कोतल चलो करेलिया घ्वाड
सजी सवारी परिमालेकी ❋ औ महुबेते चली बरात ।
आल्हा आये जब सिरसामें ❋ औ फाटकपर परी निगाह
टँगो देखिकै तब माहिलको ❋ तुरतै मुश्क दई खुलवाय ।
माहिल राजा रोवन लागे ❋ सुलिखे इज्जत लई हमारि
अब ना जैहं हम बरातको ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय ।
मामा माहिल जो ना जैहैं ❋ तो को करिहै काम हमार॥
तब ढेबा समुझावन लागे ❋ मामा सुनो महिल परिहार
सोच करौ नहिं कछु जियरामें ❋ औ बरातको होउ तयार ॥
जो नहिं चलिहौ तुम बरातको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
बात मानिलइ तब माहिलनें ❋ औ बरातको भये तयार ॥
जितने वरोआ थे माहिलके ❋ सो ऊदनिने दै लौटाय ।

अकिले संग लियो माहिलको ❋ लश्कर कूच दियो करवाय
उठी सवारी ब्रह्मानँदकी ❋ झंडन रही लालरी छाय।
घोडी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढे बीर मलिखान॥
घोडीहिरौंजिनिको मजवायो ❋ तापर सुलिखे भये सवार।
सातदिनाको धावा करिकै ❋ दिल्ली निकट पहूँचे जाय॥
पाँचकोश जब दिल्ली रहिगइ ❋ तहँपर डेरा दिये लगाय।
फेंटें छुटिगईं रजपूतनकी ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि॥
जीन उतारि दिये घोडनके ❋ सब राजनने करो मुकाम।
नाच होन लागो तँबुअनमें ❋ तबला ठमकिठमकि रहिजाय
ऊदनि बोले तुनि आल्हाते ❋ अब विवाहको करो बिचार॥
जायकै पूँछौ तुम राजाते ❋ पहिले होय कौनसा काम।
इतनी सुनिकै आल्हा चलिभये ❋ पहुँचे जहाँ राजा परिमाल॥
करी बन्दगी चन्देलेको ❋ नव राजाने कही सुनाय।
कौन कामको तुम आये हो ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
बोले आल्हा परिमालैते ❋ दादा सुनो हमारी बात॥
पंडित अपनेको बुलवावो ❋ ब्याहकि साइति देयँ बताय।
भयो बुलौवा तब पंडितको ❋ सो तम्बूमें पहुँचे आय॥
खोलि पत्तरा देखन लागे ❋ ब्याह महूरत दियो बताय।
नीकी साइति दरवाजेकी ❋ ऐपनवारी देउ पठाय॥
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❋ रूपना बारी लियो बुलाय।
ऐपनवारी तुम लैजावो ❋ दिल्ली खबरि देउ पहुँचाय॥
यह सुनि रुपना बोलन लागो ❋ हम ना शीश कटैहैं जाय।
कठिन मवासी गढ दिल्ली है ❋ भारी मारु पिथौरा केरि॥
बोले ऊदनि तब रुपनाते ❋ रूपन अक्किल गई तुम्हारि।
ब्रह्मा ब्याहनको ना रहिहैं ❋ यहु दिनु कहिबेको रहिजाय॥

मुखते हीनी तुम बोलत हौ ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
तुमको नेगी हम समुझैं ना ❋ तुमतौ भैया लगौ हमार ॥
इतनी सुनिकै रुपना बोलो ❋ लावौ हमहिं ढाल तलवारि।
घोडा लावौ ब्रह्मावाला ❋ औ देदेउ बैंजनी पाग ॥
तौ हम चले जायँ दिल्लीको ❋ ऐपनवारी देयँ पठाय ।
जो कछु माँगो तहँ रुपनाने ❋ ऊदनि तुरत दियो मँगवाय॥
रुपना चलिभौ तब दिल्लीको ❋ ऐपनवारी लई उठाय ।
जाय पहूँचो जब फाटकपर ❋ दरवाननि कही सुनाय ॥
कहाँते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो नाम देउ बतलाय ।
बोलो रुपना दरवानीते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
आई बरायन ब्रह्मानँदकी ❋ जो महुबेके राजकुमार ।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ औ रूपन है नाम हमार ॥
खबरि सुनावो महराजाको ❋ हमरो नेग देयँ मँगवाय ।
बोलो दरवानी रुपनाते ❋ अपनो नेग देउ बतलाय ॥
सो बतलावैं हम राजाको ❋ तुम्हरी खबरि देयँ पहुँचाय ।
बोलो रुपना दरवानीते ❋ यह राजाते कहौ सुनाय ॥
बारी आयो है महुबेते ❋ माँगत नेग आपनो ठाढ ।
नेग हमारो यह बतावो ❋ द्वारे चलै कठिन तलवारि॥
यह सुनि चलिभौ दरवानी तब ❋ पहुँचो जाय राजदरबार ।
लगी कचहरी पृथीराजकी ❋ जो नरनाह बीर चौहान ॥
सोने सिंहासन पिरथी बैठे ❋ जामें जडे जवाहिर लाल ।
हीरा चमकैं भाँति भाँतिके ❋ कलँगी फहर फहर फहराय॥
गजभरि छाती पृथीराजकी ❋ औ नैननमें बरै मसाल ।
दुइ हजार क्षत्री तहँ बैठे ❋ बैठे बडे बडे सरदार ॥
देवी मरहटा दक्षिणवाला ❋ अंगद भूप ग्वालियर क्यार।

धाँधू बैठो राज सभामें ❀ ब्राह्मण शूर चौंडिया राय॥
बीर भुगन्ता रहिमत सहिमत ❀ भूरा मुग़ुल काबिली ज्वान
सातौ बेटा पृथीराजके ❀ बैठे तहाँ राजदरबार॥
ताहर गोपी सूरज चन्दन ❀ सर्दनि मर्दनि राजकुमार।
सतवाँ बेटा पारथ कहिये ❀ जो मरिबेको नाहिं डेराय॥
करी बन्दगी दरवानीने ❀ औ राजाते लगो बतान।
आई बरायत गढ महुबेते ❀ ऐपनबारी दई पठाय॥
बारी ठाढो है फाटकपर ❀ अबहीं नेग देउ पहुँचाय।
नेग आपनो वह्नु माँगत है ❀ द्वारे चलै कठिन तलवारि
इतनी सुनिकै दरवानीते ❀ गुस्सा भये बीर चौहान।
सूरज बेटाको बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय
बाँधि लैआवो वा बारीको ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय।
यह सुनि तुरतै सूरज चलिभये ❀ अलँगा परी ढाल तलवारि
दूर देखिकै रूपना बारी ❀ समुहे तुरत पहूँचो जाय।
करी बन्दगी पृथीराजको ❀ ऐपनबारी दई चलाय॥
रूपना बोलो महाराजते ❀ तुम सुनिलेउ बीर चौहान।
हम हैं बारी परिमालैके ❀ हमरो नेग देउ मँगवाय॥
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❀ तब ताहरते कही सुनाय।
जान न पावै महुबेवाला ❀ याको शीश लेउ कटवाय॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❀ ताहर हल्ला दियो कराय।
छाँडि आसरा जिंदगानीको ❀ रूपना खैंचिलई तलवारि॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❀ औ बहिचली रक्तकी धार
जितने क्षत्रिन रूपनै घेरो ❀ उतने धरती दिये गिराय॥
रूपना आयो पृथीराजपै ❀ अपनो भाला लियो निकारि
नोक ते तुरतै ऐपनवारी ❀ सो रूपनाने लई उठाय॥

नेग हमारो जो बाकी है ❋ सो भँवरिनमें लेहौं आय ।
इतनी कहिकै रुपना चलिभौ ❋ फाटक निकरि गयो वा पार
रुपनै घेरचो गलियारेनमें ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि।
देखि हाल यह रुपना बारी ❋ लै तलवारि पहूँचो जाय ॥
रुपना मारै ज्यहि क्षत्रीको ❋ सो गिरिपरै धरनि भहराय।
तीनि घरी भरि चली शिरोही ❋ गलियन बही रक्तकी धार॥
बाग मरोरी हरनागरकी ❋ रुपना निकरि गयो वा पार
रुपना पहुँचो जब फौजनमें ❋ देखो ताहि रजा परिमाल॥
खूनते बूडो रुपना बारी ❋ घोडा लाल बरन ह्वैजाय ।
पूछन लागे ऊदनि ठाकुर ❋ रूपन हाल देउ बतलाय ॥
कैसी गुजरी दरवाजे पर ❋ सो सब हाल कहौ समुझाय
रुपना बोल्यो तब ऊदनिते ❋ द्वारे चली काठिन तलवारि॥
दुइ हजार क्षत्रिनने घेरो ❋ खट खट चलन लगी तलवारि
मोहरा मारे रजपूतनको ❋ रुपनबारी लायो उठाय ॥
हाल सुनो जब यह माहिलने ❋ तब ऊदनिते कही सुनाय।
अबहीं जैहैं हम दिल्लीको ❋ औ राजाते कहिहैं जाय॥
करिकै नेग चार द्वारे सब ❋ मानो भाँवरि देउ डराय ।
इतनी कहिकै माहिल राजा ❋ लिल्ली घोडी भये सवार ॥
जायकै पहुँचे गइ दिल्लीमें ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार
उतरि बछेरीते भुइँ आये ❋ घोडी थामिलई थनवार ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ राजा चौकी दई डराय ।
आवो बैठो उरई वाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
माहिल बोले महाराजते ❋ तुम सुनिलेउ पिथौरा राय।
बडे लडैया हैं महुबेके ❋ तिनते आप जिति हौ नाहिं
सीस हमारी राजा मानो ❋ शर्वत अबहिं देउ पहुँचाय ।

जहर घोराय देउ शर्बतमें ❋ पियतै मरैं महोबिया ज्वान
बात तुम्हारी सब रहि जावै ❋ लाठी बिना साँप मरि जाय
बात मानिलइ पृथीराजने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
नेगी औ कहार बुलवाये ❋ तुरतै शर्बत दियो घोराय।
जहर घोराय दियो शर्बतमें ❋ नौसै गगरी दई भराय ॥
सूरज चलिभये अगवानीको ❋ औ बरातमें पहुँचे जाय।
तंबू पूँछो परिमालेको ❋ दरवाननि दियो बताय ॥
बैठे राजा तहँ गद्दीपर ❋ दहिने डटे बीर मलिखान।
करी बन्दगी सूरज मलने ❋ सिगरी बहिंगी दई धराय॥
बोले सूरज परि मालेते ❋ भेजो हमहिं बीर चौहान।
शर्बत लाये हम बरातमें ❋ सो क्षत्रिनको देउ बँटाय ॥
करो तयारी दरवाजेकी ❋ यह कहि दई बीर चौहान।
कियो इशारा तब मलिखेने ❋ ऊदनि बेलवा लियो मँगाय
हाथ कटोरा लो ऊदनिनें ❋ समुहे भई तडाका छींक।
ऊदनि सोचे तब अपने मन ❋ कोई कारन परै दिखाय ॥
ढेबा शगुनियाँको बुलवायो ❋ भैया शगुन देउ बतलाय।
बोलो ढेबा शगुन देखिके ❋ ऊदनि बचन करो परमान॥
जहर घुरो है या शर्बतमें ❋ क्षत्री पियत तुरत मरिजायँ।
शर्बत दीजो ना काहूको ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय॥
इतनी सुनते ऊदनि ठाकुर ❋ कुत्ता एक लियो बुलवाय।
शर्बत प्यायो तेहि कुत्ताको ❋ कुत्ता तुरत गयो मुरझाय ॥
गुस्सा ह्वइकै तब ऊदनिने ❋ सिगरो शर्बत दियो फेंकाय।
नेगी आये जो दिल्लीके ❋ तिनको ऊदनि मारन लाग ॥
नेगी भागे सूरज भागे ❋ पहुँचे गढ दिल्लीमें जाय।
करी बन्दगी बादशाहको ❋ औ बरातको कह्यो हवाल ॥

बडे शगुनियाँ हैं महुबेके ❋ जिनको शगुन न खालीजाय
तुमने शर्बत जो भेजा था ❋ सो खन्दकमें दियो फेंकाय
अब सब ऐहैं दरवाजेपर ❋ ताको अब कछु करो उपाय
बोले माहिल तब राजाते ❋ ओ महराज गरीब निवाज॥
सीख हमारी राजा मानो ❋ तौ हम जतन देइँ बतलाय।
बाँस गाडिदेउ दरवाजेपर ❋ ऊपर कलशा देउ धराय॥
जौंरा भौंरा मदमाते करि ❋ दोनों हाथी देउ छुडाय।
आवैं महोबिया जब द्वारेपर ❋ तब कहिदीजो बात सुनाय॥
हमरे कुलमें यहै रीति है ❋ सो तुम जानिलेउ ब्योहार।
द्वार चार पीछेते ह्वइहै ❋ पहिले हाथी देउ पछारि॥
कलश उतारि लेउ लग्गीते ❋ तौ हम भाँवरि देयँ डराय।
सीखमानिलइउन माहिलकी ❋ माहिल बहुत खुशी ह्वइजायँ
माहिल चलि भयेतबलिछीपर ❋ औ बरातमें पहुँचे जाय।
पृथीराज पहुँचे ड्योढी पर ❋ महलन खबरि दई करवाय
त्यारी होनलगी महलनमें ❋ पहुँचे महाराज तहँ जाय।
खम्भ मँगाये मलयागिरिके ❋ सो आँगनमें दिये गडाय॥
मडवा छायगयो पाननते ❋ सोने कलश दियो धरवाय।
चौकी डरवाई चन्दनकी ❋ सखियाँ लईं सबै बुलवाय॥
करी तयारी दरवाजेकी ❋ द्वारे लग्गी दई गडाय।
कलश सोबरनको तापर धारि ❋ हाथी मस्त लिये मँगवाय॥
सो छुडवाय दिये द्वारे पर ❋ जौंरा भौंरा जिनको नाम।
हियाँ कि बातैं तौ हियँ छांडों ❋ अब आगेको सुनो हवाल॥
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❋ दादा त्यारी लेउ कराय।
करो दुआरो ब्रह्मानँदको ❋ अब ना राखो देर लगाय॥
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❋ लश्कर हुकम दियो करवाय।

सजैं बराती सब जल्दीते ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
हौदा धरि दिये सब हाथिनपर ❋ घोडन जीन दिये धरवाय
ऊँटपालकीगजरथ सजिगये ❋ जिनको सजत न लागी ब्यार
यक यक हाथीके हौदापर ❋ चढिगे चारि चारि असवार
अपनी अपनी असवारिन पर ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ।
तोपैं जोतवाईं आगेको ❋ लश्कर कूच दीन करवाय ॥
चली पालकी ब्रह्मानँदकी ❋ झंडन रही लालरी छाय ।
झंडा घूमैं दरियायिनके ❋ बाजे तुरुही औ कंडाल ॥
बायें बेंदुलाको चढवैया ❋ दहिने चले बीर मलिखान।
पाछे पालकी चन्देलेकी ❋ संगहि मंडलीक अवतार ॥
सात कोसके चौगिर्दामें ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ।
धूरि उडानी आसमानलौं ❋ सविता रहे धुंधिमें छाय ॥
खबरि पहूँची पृथीराजको ❋ आवत फौज महोबे केरि ।
सातो बेटा तब बुलवाये ❋ देवी मरहटा लियो बुलाय ॥
पूरन राजा औ अंगदको ❋ चौंडा धाँधू लिये बुलाय ।
हुक्म दै दियो इन सबहीको ❋ लश्कर जल्दी करो तयार ॥
जितने राजा न्योते आये ❋ सब हाथिन पर भये सवार ।
सातो बेटा पृथीराजके ❋ सो घोडन पर भये सवार ॥
बजो नगारा गढ दिल्लीमें ❋ लश्कर तुरत भयो तैयार ।
पंडित बुलवायो राजाने ❋ द्वारे चौक दई पुरवाय ॥
घट भरवायो गंगाजलते ❋ सो द्वारे पर दियो धराय ।
पूजन करिकै श्रीगणेशको ❋ सब सामग्री दई धराय ॥
ताहर बेटाको बुलवायो ❋ सो अगवानी दियो पठाय ।
यक हरकाराको बुलवायो ❋ सो लश्करमें दियो पठाय ॥

पहुँचे ताहर जब बरातमें ❋ औ आल्हाको करी सलाम।
हमहिं पठायो अगवानीको ❋ अब द्वारेको होउ तयार।
जबहीं पहुँचे सब द्वारेपर ❋ तब ताहरने कही सुनाय॥
हमरे कुलम यहै रीति है ❋ सो सुनिलेउ बनाफरराय।
जो कोउ आवै दरवाजे पर ❋ पहिले हाथी देय पछारि॥
हाथी झूमैं जौंरा भौंरा ❋ देखत जिनहिं शूर डरिजात
साँकल फेरी द्वउ हाथिनने ❋ लश्कर रैन बेन ह्वइजाय॥
यक ललकार दई हाथीको ❋ झपटे तुरत बीर मलिखान।
दाँत पकरि धरती पर पटक्यो ❋ देखैं खडे बीर चौहान॥
सूँडि पकरिकै बघ ऊदनिने ❋ दुसरो हाथी दियो पछारि।
देखि हाल यह पृथीराज तब ❋ मनमें गये सनाका खाय॥

अथ दरवाजेकी लडाई।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
कहौं लडाई दरवाजेकी ❋ शारद मोको होउ सहाय॥
बोले ताहर आगे बढिकै ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात।
कलश उतारि लेउ लग्गीते ❋ तो हम द्वारो देयँ कराय॥
बोले मलिखे तब जगनिकते ❋ अबहीं कलशा लेउ उतारि।
यह सुनि जगनिक आगे बढिगे ❋ औ लग्गीपै पहुँचे जाय
ताहर बोले कमलापतिते ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात।
तुम्हरी बरनीके जगनिक हैं ❋ तुरते लेउ जँजीरन बाँधि॥
इतनी सुनते कमलापतिने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय।
बाढि ललकारो जगनायकको ❋ ठाकुर सावधान ह्वइजाव॥
हाथ चलै हो जो कलशा पर ❋ तो घोडाते दिहौं गिराय।
इतनी सुनते जगनिक तडपे ❋ अपनो घोडा दियो बढाय॥

जगनिक पहुँचे गये हौदापर ❋ औ मस्तीक अडाये पाँय।
मारि महाउत कमलापतिको ❋ सो धरती पर दियो गिराय॥
देखि हकीकति कमलापतिने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि।
चेहरा मारो जगनायकको ❋ जगनिक दीन्हीं ढाल अडाय
तीनि शिरोही गहि गहि मारी ❋ जगनायक लइ चोट बचाय
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ जगनिक खैंचिलई तलवारि
करो जड़ाका कमलापति पर ❋ कमला दीन्हीं ढाल अडाय
ढाल फाटिगइ गैंडा वाली ❋ गद्दी काटि मखमलकी जाय
बारह कड़ियाँ कटि बख्तरकी ❋ चाँदी फूल गिरे झहनाय।
घाव लागिगयो तब तोंदीमें ❋ कमला गिरे धरनि महराय
कमला जूझे दरवाजे पर ❋ ताहर मनमें गे घबराय।
रहिमत सहिमत जिन्सीवाले ❋ तिनने ताहर कही सुनाय।
मोहरा मारो जगनायकको ❋ औ द्वारेते देउ भगाय।
देखि हाल यह बघ ऊदनिने ❋ मन्ना गूजर लियो बुलाय॥
फिरि समुझायो नर ढेबाको ❋ भैया बहुत रहेउ हुशियार।
तुम्हरी बरनीके दोनों हैं ❋ भैया इनको देउ भगाय॥
खैंचि शिरोही लियो क्षत्रिनने ❋ खटखट चलनलगीतलवारि।
घेहा ह्वइकै दरवाजेते ❋ रहिमत सहिमत गये बराय
भगे सिपाही पृथीराजके ❋ द्वारे कठिन चली तलवारि।
हुक्म देदियो तब ताहरने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ तुरते आगी दई लगाय।
धुवाँ उड़ानो आसमानलौं ❋ द्वारे रही अँधेरिया छाय॥
चहुँदिशि गोला छूटन लागे ❋ गोली मन्न मन्न मन्नाय।
एक घरीलौं गोला छूटे ❋ क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि॥
सातौ बेटा पृथीराजके ❋ तिनहूँ खैंचि लई तलवारि।

खटखट खटखट तेगा बाजै ❋ बोलै छपक छपक तलवारि
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार।
तेगा चटकैं बर्दवानक ❋ कटिकटिगिरैंसुघरुआज्वान
दोनों फौजनके संगममें ❋ कोताखानी चलै कटार।
पैदल अभिरिगये पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❋ सबके मारु मारु रटलागि।
अँटके डंडा आम्बारिनके ❋ ऊपर पेश कब्जकी मारु ॥
चारि घरीभरि भइ लड़ाई ❋ औ बहि चली रक्तकी धार।
घैहा डारे जे लोहूमें ❋ तिनकेप्यासप्यासरटलागि
एक लाख क्षत्री दिल्लीके ❋ ऐसो कठिन भयो संग्राम।
ऊदनि पहुँचि गये लग्गीपै ❋ सोने कलशा लियो उतारि॥
बोले ऊदनि तब ताहरते ❋ औरौ रीति देउ बतलाय।
देखि हाल यह पृथीराजने ❋ द्वारेचार दियो करवाय ॥
नेग चार करिकै द्वारेको ❋ ब्याहकि जाइति दइ बिचराय
हालु जानिकै माहिल राजा ❋ पहुँचे पृथीराजपै जाय ॥
बोले माहिल उरई वाले ❋ तुम सुनिलेउ पिथौरा राय।
जो कहुँ ब्याह होय महुबेमें ❋ कोउ न पियै बड़ाको पानि
सीख हमारी राजा मानौ ❋ सोई करौ बीर चौहान।
यह कहि पठवो तुम बरातको ❋ हमरे कुला यहै ब्यौहार ॥
पहिले करिलेयँ समधोरा हम ❋ पाछे होय ब्याहको काम।
सबै बरौआ औ चन्देले ❋ तिनको अबहीं लेउ बुलाय
जबहीं आवैं महुबे वाले ❋ सबके मूंड लेउ कटवाय।
यह मन भायगई पिरथीके ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय॥
पहिले करिकै समधोरा हम ❋ पाछे देहैं ब्याह कराय।
इतनी सुनिकै ऊदनि चलिभये ❋ आये जहाँ रजा परिमाल ॥

हाल सुनायो समधोरेको ❋ तब उन पलकी लई मँगाय।
तुरत पालकी पर चढिबैठे ❋ औ द्वारेपर पहुँचे जाय ॥
गजभरि छाती पृथीराजकी ❋ औ नैननमें बरै मसाल।
तिनते कौन करै समधोरा ❋ क्यहि रजपूत लीन्ह औतार
सूरति देखी पृथीराजकी ❋ बोले ऊदनिते परिमाल।
उमिरि हमारी बूढी ह्वैगइ ❋ खाँडा सागर धरा पखारि ॥
है कछु धोखा समधोरेमें ❋ ताको अबहीं करौ उपाय।
इतनी सुनिकै ऊदनि चलिभे ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा सुनिलेउ बात हमारि।
नाहिं है मनसा समधोरेकी ❋ गे परिमाल सनाका खाय ॥
तौलौं आयगये मलिखे तहँ ❋ तिनने ऊदनि कह्यो हवाल।
बोले मलिखे तब आल्हाते ❋ दादा मंडलीक अवतार ॥
जेठो भैया बाप बरोबर ❋ तुम समधोरा करौ बनाय।
पान लगावो पृथीराजके ❋ अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनते तुनि आल्हाने ❋ हाथि पचशावद लियो मँगाय
सो सजवाय लियो जल्दीते ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोडा बेंदुलापर ऊदनि चढि ❋ घोडी कबुतरीपर मलिखान
तीनों चलिभये तब लश्करते ❋ औ द्वारेपर पहुँचे जाय ॥
समुहे पृथीराज ठाढे थे ❋ आल्हा उतरिपरे अरगाय।
भयो सामना शब्दवेधिते ❋ जो नरनाह वीर चौहान ॥
दही लगायो तब छातीमें ❋ ऊपर पान दिया चपकाय।
जोधा ठाढे जो द्वारेपर ❋ देखैं सबै तमाशा ठाढ ॥
छाती मिलाई जब दोनोंने ❋ धरती गिरो पशीना आय।
जाफ आयगइ तिन दोनोंको ❋ सोचे पृथीराज महराज ॥
बडे बली हैं महुबेवाले ❋ रानी देवकुँवरिके लाल।

पृथीराज बोले आल्हाते ❋ तुम सुनिलेउ बनाफर राय ॥
अबहिं चढावा तुम पठवावो ❋ जल्दी होय व्याहको काज ।
इतनी सुनिकै आल्हा चलिभो ❋ औ तम्बूमें पहुँचे जाय ॥
लौटे पृथीराज द्वारेते ❋ औ ड्यौढीमें पहुँचे जाय ।
बोले आल्हा नर मलिखेते ❋ अबहिं चढावा देउ पठाय ॥
डब्बा भेजिदेउ गहनेको ❋ व्याहके कपडा देउ पठाय ।
इतनी सुनिकै नर मलिखेने ❋ गहने कपडा लिये निकारि ॥
भयो बुलौआ तब रुपनाको ❋ सो तम्बूमें पहुँचो जाय ।
गहने कपडा दे रुपनाको ❋ औ सब हाल दियो बतलाय ॥
रुपना चलिभो डब्बा लैकै ❋ औ ड्यौढीमें पहुँचो जाय ।
गहनो सौंपिदियो नेगिनको ❋ सब सामान दियो पकराय ॥
लैकै गहना नेगी पहुँचे ❋ तुरतै रंगमहलमें जाय ।
भयो बुलौवा तब बेलाको ❋ सो मडयेतर पहुँची आय ॥
संग सहेली थीं बेलाके ❋ सो गहनेको देखन लागि ।
देखिकै गहनो बेला जरिगइ ❋ औ सब गहनो दो फैलाय ॥
बेला बोली एक सखीते ❋ गुस्सा रही देहमें छाय ।
गहनो लैकै जो आयो है ❋ ताको अबहीं लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौवा तब रुपनाको ❋ सो समुहेपर पहुँचो आय ।
हाथ जोरिकै रुपना ठाढो ❋ बेला तासों कही सुनाय ॥
कलियुगवालो गहनो लैकै ❋ व्याहन आये साजि बरात।
तुम यह कहौ जाय आल्हाते ❋ द्वापर गहनो देउ पठाय ॥
गहनो लावो हस्तिनापुरको ❋ चुरियाँ चूनरि देउ पठाय ।
तौ तौ व्याह होय दिल्लीमें ❋ नहिं सब लौटि महोबे जायँ
यह सुनि चलिभो रुपना बारी ❋ औ आल्हापै पहुँचो जाय ।
हाथ जोरिकै रुपना बोल्यो ❋ दादा अब कछु करो उपाय

जो जो गहना तुमने भेजा * सो बेलाने दयो फैलाय ।
गहनो माँगै द्वापर वालो * चुरियाँ चुनरी पठइ मँगाय
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर * दादा करिहो कौन उपाय ।
बोले आल्हा तब ऊदनिते * भैया धीर धरो मनमाहिं ॥
आल्हा चलिभयेझारखंडको * खाँडाबिजुलियालियोउठाय
जाय पहूँचे तब मंदिरमें * अस्तुति करी बनाफर राय
होम कियो श्रीजगदम्बाको * अपनो शीश चढावन लाग
हाथु पकरि लयो तब देवीने * औ आल्हाते लगी बतान॥
कौन काज हित शीश चढावो * सो तुम हमहिं देउ बतलाय
हाथ जोरिकै आल्हा बोले * माता धर्म तुम्हारे हाथ ॥
ब्याह करन हित ब्रह्मानँदको * हम दिल्ली लै गये बरात ।
बेला बेटी पृथीराजकी * सो गहनेको रही मँगाय ॥
द्वापर वालो गहनो माँगै * चुरियाँ चुनरी रहीं मँगाय।
इतनी सुनिकै देवी बोली * आल्हा धीर धरो मनमाहिं
बैठे रहो यहाँ मन्दिरमें * अबहीं ह्वैहै काम तुम्हार ।
इतनी कहिकै देवी चलिभइ * पहुँची इन्द्रलोकमें जाय ॥
बोली देवी तब इन्दरते * अटको काज चँदेले क्यार ।
बेला बेटी पृथीराजकी * है द्रोपदी केर अवतार ॥
गहनो मांगै वह द्वापरको * चुरियाँ चुनरी रही मँगाय ।
इतनी सुनिकै इन्द्रदेवने * तबबासुकिकोलियोबुलाय॥
गहनो लावो द्वापरवालो * तब बेलाको होय बिवाह ।
यह सुनि बासुकि गे पतालमें * सिगरो गहनो लाये उठाय॥
सो पकराय दियो देवीको * तबचलिभई अम्बिका माय।
आई देवी तब मन्दिरमें * आल्है गहनो दियो गहाय॥
चुरियाँ चूनरि द्वापरवाली * सो आल्हाको दइ पकराय ।

लैकै गहना आल्हा चलिभये ❋ औ बरातमें पहुँचे आय ॥
रुपना बारीको बुलवायो ❋ औ सब गहना दौ पकराय
गहना लैकै रुपना चलिभौ ❋ पहुँचो रंगमहलके द्वार ॥
गहनो पहुँचायो बेला पै ❋ बेला देखि खुशी ह्वइ जाय।
हँसि हँसि गहना बेला पहिरो ❋ पूरन ह्वइगौ काम हमार ॥
चलिभयो रुपना तब ड्योढीते ❋ औ बरातमें पहुँचो जाय ।
हाल कह्यो सब नुनि आल्हाते ❋ पूरन ह्वइगौ काम तुम्हार॥
सुनो हाल जब यह माहिलने ❋ अपनी घोडी लई मँगाय ।
कूदि बछेरी पर चढि बैठे ❋ पहुँचे जहाँ पिथौरा राय ॥
उतरि बछेरीते आगे चलि ❋ पृथीराजको करी सलाम ।
नजरि बदलि गइ पृथीराजकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठो उरईवाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोले माहिल तब राजाते ❋ अब तुम मानौ बात हमारि
होयँ बरौआ जो महुबेके ❋ सो मडये तर लेउ बुलाय॥
शूर बीर क्षत्री बुलवावो ❋ सो कोठरिनमें देउ छिपाय।
जबहीं आवैं महुबेवाले ❋ सबके मूड लेउ कटवाय ।
बात मानिकै पृथीराजने ❋ तब माहिलते कही सुनाय
भली बताई माहिल राजा ❋ रहिहै दोनों धर्म्म हमार ।
दुइ हजार क्षत्री बुलवायो ❋ सो महलनमें दिय छिपाय
मोती बेटाको बुलवायो ❋ ताते कही बीर चौहान ।
जल्दी जावौ तुम लश्करको ❋ औ आल्हाते कहियो जाय
जल्दी त्यार होउ मडयेको ❋ अबहीं भौंरि दिहैं डराय
हुक्म पायकै मोती चलिभै ❋ औ नेगिनको लीन्हें साथ
मोती पहुँचि गये लश्करमें ❋ औ आल्हापै पहुंचे जाय।
करी बन्दगी नुनि आल्हाको ❋ औ आल्हाते कही सुनाय

जितने घरौआ हैं महुबेके ❋ सो हमरे सँग होयँ तयार।
शका छोडिदेउ जियराकी ❋ सातौ भाँवरि देहौं डराय॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ लश्कर डका देउ बजाय।
गंगा कीन्हीं तब मोतीने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय॥
देश हमारे यहै रीति है ❋ आगे कुला कुला व्यौहार।
जितने घरौआ होयँ बराती ❋ सोई साथ होयँ तैयार॥
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने ❋ ब्रह्मानन्दहि लियो बुलाय।
पलकी मँगवाई ब्रह्माकी ❋ तापर ब्रह्मा भये सवार॥
सजे घरौआ सब बरातके ❋ जिनको सजत न लागी ब्यार
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ जिनको जानत सकल जहान
जोगा भोगा नैनागढके ❋ जिनकी जग जाहिर तलवारि
मोहन राजा बौरीवाले ❋ रणमें एक शूर सरदार॥
ताल्हन सैयद बनरसवाले ❋ जिनकी बेंडि बहै तलवारि।
राजा जगनिक जगनेरीके ❋ जिनको भाला प्रगट जहान
मन्ना गूजर महुबेवालो ❋ जो मारिबेको नाहिं डेराय।
यह दश शूर महोबेवाले ❋ तुरतै सजिकै भये तयार॥
अपने घोडनपर चढि बैठे ❋ अपने बाँधि बाँधि हथियार
चली पालकी ब्रह्मानँदकी ❋ संगै चले घरौआ ज्वान॥
जायकै पहुँचे फाटक भीतर ❋ मोती आगेको बढिजायँ।
मोती बोले पृथीराजते ❋ दादा सुनो हमारी बात॥
आई पालकी ब्रह्मानँदकी ❋ आये साथ घरौआ ज्वान।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ फाटक बन्द दियो करवाय
पहुँचि पालकी गइ ड्योढीमें ❋ ब्रह्मा उतरि परे अरगाय।
जाय पहूँचे जब मडयेतर ❋ पंडित अक्षत दिये छँडाय॥
नेग चार करिकै मडयेतर ❋ तुरतै बेलहि लियो बुलाय।

भयो गठिबन्धन बर कन्याको ❋ पंडित होम दियो करवाय
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ बन्दी सुयश बखानन लाग

अथ मडयेकी लडाई ।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ जगदम्बेके चरण मनाय ।
कहौं लडाई अब मडयेकी ❋ शारद मोको होउ सहाय ॥
भौंरी परन लगीं ब्रह्माकी ❋ पंडित वेद उचारन लाग ।
पहिली भाँवरिके परतैखन ❋ सूरज खैंचि लई तलवारि ॥
कियो जडाका ब्रह्मानँदपर ❋ जगनिक दीन्हीं ढाल अडाय
दुसरी भाँवरिके परतै खन ❋ चन्दन खैंचि लई तलवारि
करी चोट जब ब्रह्मानँदपर ❋ ढेवा लीन्हीं चोट बचाय ।
तिसरी भाँवरिके परतै खन ❋ सरदनि खैंचि लई तलवारि
चोट चलाई जब ब्रह्मापर ❋ मन्ना लीन्हीं चोट बचाय ।
चौथी भाँवरिके परतै खन ❋ मरदनि खैंचि लई तलवारि
करो जडाका ब्रह्मानँदपर ❋ जोगाने लइ चोट बचाय ।
भाँवरि पँचईके परतैखन ❋ गोपी चोट चलाई आय ॥
भोगा सारो जो आल्हाको ❋ ताने लीन्हीं चोट बचाय ।
छठई भाँवरिके परतै खन ❋ पारथ खैंचि लई तलवारि ॥
करो जडाका जब ब्रह्मापर ❋ ऊदनि दीन्हीं ढाल अडाय
सतईं भाँवरिके परतै खन ❋ ताहर खैंचि लई तलवारि ॥
करी चोट जब ब्रह्मानँद पर ❋ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय
हल्ला ह्वइगौ फिरि मडयेमें ❋ निकरे शूर कोठरियन केरि
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खटखट चलन लगी तलवारि
बडे लडैया महुबेवाले ❋ मडये खूब चली तलवारि ॥
जितने क्षत्री सन्मुख आये ❋ महुबेवालेन दिये गिराय ।

सातौ बेटा पृथीराजके ❋ सबने खैंचि लई तलवारि ॥
चारि घरीभरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार।
कपडा भीजिगये लोहूते ❋ बेला खूनते गई नहाय ॥
बिकट लडाई भइ मडयेमें ❋ सातौ बेटा लिये बँधाय।
सुनी खबरि जब पृथीराजने ❋ मनमें बहुत गये घबराय॥
चौंडा ब्राह्मण बोलन लागो ❋ द्रोणाचारजको अवतार।
छोटो लरिका देवैवालो ❋ जाको नाम उदैसिंह राय॥
बडो लडैया है बांको यहु ❋ ताने जौहर करे बनाय।
धीरज राखो अपने मनमें ❋ मारिहौं ताहि अबहिं तहँ जाय
इतनी कहिके चौंडा चलिभयो ❋ औ मडये तर पहुँचो जाय।
करी अधीनी तहँ चौंडाने ❋ औ आल्हाते कही सुनाय॥
हौ सब लायक देवैवाले ❋ सातौ भाँवरि लईं डराय।
बडे शूर हौ तुम महुबेके ❋ तुमते कोउ जितैया नाहिं॥
कैद छोंडिदेउ अब लरिकनकी ❋ पूरन ह्वइगो काम तुम्हार।
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने ❋ सबकी कैद दई छुडवाय॥
कैद छूटि गइ जब लरिकनकी ❋ तब चौंडाने कही सुनाय।
नेग जोग जो बाकी रहिगये ❋ सोऊ अबहिं लेउ करवाय॥
इतनी सुनिकै तब आल्हाने ❋ बाकी नेग लिये करवाय।
नाउनि आई पृथीराजकी ❋ सो आल्हाते लगी बतान॥
लरिका भेजिदेउ भीतरको ❋ जल्दी खाय कलेवा जाय।
अकिलो लरिका महलन जैहै ❋ है यह हुक्म पिथौरा क्यार॥
यह सुनि ऊदनि बोलनलागे ❋ हमरे कुला यहै ब्योहार।
दूलह संग जाय सहबाला ❋ जेंवैं तबहिं तीन ज्यौंनार॥
यहसुनिनाउनिमहलनचलिभइ ❋ ब्रह्मा ऊदनि संग लिवाय।
बिछे गलीचा रंगमहलमें ❋ तापर दोनों बैठे जाय॥

सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ पाई खबारि चौंडिया राय ।
लहँगा लुगरा चौंडा पहिरो ❋ चुरियाँपहिरिपोतिया क्यार
गहनोपहिरिलियोतिरियनको ❋ तुरतै लियो घूँघटा काढि ।
भेष जनानो चौंडा करिकै ❋ पहुँचो रंगमहलमें जाय ॥
जहर बुझाई इक छूरी लै ❋ सो कम्मरमें लई दबाय ।
जहँपर बैठे ऊदनि ब्रह्मा ❋ तहँ सखियनमें बैठो जाय॥
थार परोसो अगमा रानी ❋ सो दोनों पै दिये धराय ।
कौर उठायो जब ऊदनिने ❋ चौंडा दहिने हनी कटार ॥
घाव आयगयो तब ऊदनिकै ❋ धरती गिरे मूर्च्छा खाय ।
देखि हाल यह बघ ऊदनिको ❋ तुरतै चौंडा गयो घबराय॥
अगमा रानी रोवन लागी ❋ सिगरो रोय उठो रनिवास ।
मोह आयगयो ब्रह्मानँदको ❋ उनहू छाँडिदई डिंडकार ॥
रूप देखिकै तब ऊदनिको ❋ अगमा रोय रोय रहिजाय ।
चौंडा ब्राह्मण तुम मरिजैयो ❋ तुम पर परै इन्द्रकी गाज॥
धोखो दियो आय महलनमें ❋ चौंडा तेरो बुरो ह्वइजाय ।
जेहिको लरिका अस मारोगो ❋ कैसे जियै दिवलदे माय ॥
रोवत रोवत अगमा चलिभइ ❋ सतखंडा पर पहुँची जाय ।
रोवत देखो जब माताको ❋ तब बेलाने कही सुनाय ॥
कौने कारण माता रोवो ❋ सो म्वहिं हाल देउ बतलाय
बोली अगमा तब बेलाते ❋ हमते बिपति कही ना जाय
मारो ऊदनिको चौंडाने ❋ धारिकै भेप मेहरिया क्यार ।
घाटि करी त्यहिं धोखा दैकै ❋ नाहीं कियो मर्दको काम ॥
खबारि पहुँचि है जब देवैको ❋ अपनो पेटु मारि मरि जाय।
हनी कटारी है चौंडाने ❋ कैसे जियै उदयसिंह राय ॥
इतनी सुनतै बेला चलिभइ ❋ औ ऊदनि पै पहुँची जाय।

हालु देखिके बघ ऊदनिको ❋ बेला छुरिया लई निकारि॥
अपनी अँगुरी एक चीरिकै ❋ लोहू अपनो दियो चुवाय ।
घाव पूरिगो जब ऊदनिको ❋ मूर्च्छा जगी उदैसिंह क्यार
समुहे देखो रानि बेलाको ❋ ऊदनि चरण गये लिपटाय।
ऊदनि ब्रह्मा दोनों चलिभये ❋ औ पलकी पर भये सवार॥
चली पालकी ब्रह्मानँदकी ❋ औ बरातमें पहुँची जाय।
जहँ पर तम्बू चन्देलेको ❋ तहाँ पालकी धरी उतारि॥
ब्रह्मा ऊदनि दोनों उतरे ❋ औ राजाको करी सलाम ।
घाव दिखायो बघ ऊदनिने ❋ देखैं खडे बीर मलिखान ।
हाल सुनायो सब ऊदनिने ❋ सुनिकै खुशी भये परिमाल ।
मोहरन तोडा उन लुटवायो ❋ दहिन भई शारदा माय ॥
राजा बुलवायो आल्हाको ❋ औ आल्हाते कही सुनाय ।
साइति पूँछिलेउ पंडितते ❋ महुबे कूच देउ करवाय ॥
रुपनै भेजिदेउ दिल्लीको ❋ अवहीं विदा देयँ करवाय ।
भयो बुलौआ तब रुपनाको ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय
चलिभो रुपना तब लश्करते ❋ पहुँचो बीच कचेहरी जाय।
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ औ राजा ते लगो बतान ॥
हमहिं पठाया चन्देलेने ❋ औ यह कही रजा परिमाल।
साइति नीकी है अबहींकी ❋ जल्दी बिदा देयँ करवाय ॥
बोले पृथीराज रुपनाते ❋ हमरे कुला यहै व्योहार ।
गौनो देहैं साल बीच हम ❋ यह राजाते कहियो जाय॥
हैं सब लायक भूप चँदेले ❋ धनि धनि बीर बनाफर राय
जिन यह ब्याह करो दिल्लीमें ❋ यह सुनि रुपना करी सलाम
चलिभो रुपना गढ दिल्लीते ❋ औ लश्करमें पहुँचो जाय।
ज्वाब सुनायो पृथीराजको ❋ आल्हा हुकम दियो करवाय

मेख उखारि देउ तम्बुनकी ❋ लश्कर कूच देउ करवाय ॥
हुक्म पायकै भई तयारी ❋ जीतिको डंका दियो बजाय
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
रूपनै भेजिदियो महुबेको ❋ मल्हनै खबरि सुनाई जाय ।
सखियाँ बुलवाईं मल्हनाने ❋ महलन होय मंगलाचार ॥
आई बरायत गढ महुबेमें ❋ महुबे दगन सलामी लागि।
आई पालकी ब्रह्मानंदकी ❋ मल्हना आरति धरी उतारि
दान दक्षिणा और निछावरि ❋ सबको दीन्हीं तुरत बँटाय ।
जितने बराती राजा आये ❋ सबकी बिदा दई करवाय ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा ❋ सबको मिले जोरि द्रउ हाथ
चरण लागिकै महतारीके ❋ सो माथेमें लिये लगाय ॥
हाल बतायो सब दिल्लीको ❋ ऊदनि मल्हनै दो समुझाय
सालके भीतर गौनो ह्वइहै ❋ माता सब परताप तुम्हार॥
ऐसे ब्याह भयो ब्रह्माको ❋ सो हम लिखिके दियो सुनाय
ब्याह सुनै हैं अब ऊदनिको ❋ करिहैं भोलानाथ सहाय ॥

इति दिल्लीकी लडाई (ब्रह्माका ब्याह) सम्पूर्ण ।

॥ श्रीः ॥

अथ ऊदनिका ब्याह ।

नरवरगढ़की लडाई ।

दोहा—भोलानाथ मनाय उर, सीताराम सहाय ।
अब ऊदनिको ब्याह मैं, लिखौं सुअवसर पाय ॥ १ ॥

सवैया ।

रामको नाम बडो जगमें, सोइ रामको नाम रटै नर नारी ।
रामके नाम तरी सेवरी, बहु तारे अजामिलते खल भारी ॥
रामको नाम लियो हनुमान, हते बहु निश्चरलंक मँझारी ।
प्रेमते नेमते राम रटौ नित, रामको नाम बडो हितकारी ॥ २ ॥

कौने कारणको ब्रह्मा भे * कौने हेत विष्णु भगवान ।
कौने कारण श्रीशंकर भै * काहे प्रगट भये हनुमान ॥
क्यहि कारण अवतार रामको * कौने कारणको घनमाल ।
कौने हेत जग पावन देवता * कौने हेत अग्निकी ज्वाल ॥
कौने हेत भये धन्वन्तरि * काहे लीन्ह कृष्ण अवतार ।
कौने कारण श्रीगणेश भै * क्यहि हित चन्द्र देव संसार
जग उपजावनको ब्रह्मा भै * रक्षा करन हेत भगवान ।
जग संहारनहित शंकर भै * लंका जारनको हनुमान ॥
रावन मारन हेत राम भै * जल बरसावन हित घनमाल
सुख सरसावन पवन देवता * जग आनन्द अग्निकी ज्वाल
रोग नशावनको धन्वन्तरि * मारचो कंस कृष्ण भगवान ।
विघ्न नशावन हित गणेशजी * जिनको जानत सकल जहान
बाढि बढावनको समुद्रकी * निशिमें पूर्ण चन्द्रमा जान ।
ज्ञान बढनहित करै निरन्तर * हितसे इष्टदेवको ध्यान ॥

नगर महोबा इक बस्ती है ❋ जहँपर बसैं रजा परिमाल ।
शूर बीर प्रगटे महुबेमें ❋ आल्हा आदि बली औतार
बडे बडे योधा जगमें जीते ❋ जिनको नाम रजापरिमाल
बहुतक राजा मित्र बनाये ❋ बहुतक हने समर मैदान ॥
बावन किला जीति सर कीन्हें ❋ मानी हारि जगत भूपाल ।
मार न खाई केहु योधाकी ❋ सिगरे हारिगये महिपाल ॥
अपन दुसारिहा जब राखो ना ❋ खाँडा सागर धरा पखारि।
कसम खायलइ अमर गुरूकी ❋ अब ना गहौं हाथ हथियार
भूप युधिष्ठिर सो आल्हा भये ❋ ऊदनि भीमसेन बलवान ।
अर्जुन प्रगटे ब्रह्मानँद ह्वइ ❋ औ सहदेव बीर मलिखान
लगी कचहरी परिमालेकी ❋ बैठे बडे बडे बलवान ।
माहिल बैठे उरईवाले ❋ सो परिमालते लगे बतान॥
नाम तुम्हारो देश देशमें ❋ जानत तुमहिं सकल संसार
घोडा काबुलते मँगवावौ ❋ जो गाढेमें आवें काम ॥
कलश मँगाय लेउ सोनेको ❋ तापर बीरा देउ धराय ।
इतनी सुनते चन्देलेने ❋ तुरतै कलश लियो मँगवाय
पाँच पानको बीरा लैके ❋ सो कलशापर दियो धराय
है कोउ क्षत्री हमरे दलमें ❋ जो काबुलपर पान चबाय
भरी कचहरी क्षत्री बैठे ❋ सुनते सबै गये घबराय ।
कोऊ बीरा तन देखै ना ❋ नाहीं मसा तलक मन्नाय॥
तौलौं आये ऊदनि ठाकुर ❋ सो माहिलते लगे बतान ।
बीरा धरायो कौन कामको ❋ मामा हमहिं देउ बतलाय॥
बोले माहिल तब ऊदनिते ❋ तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय।
घोडा मँगवै हैं काबुलते ❋ राजा बीरा दियो धराय ॥
पान चबायो ना काहूने ❋ बहुतक क्षत्री गये बराय ।

तडापिकै ऊदनि गै बीरापै ❋ औ बीराको लियो उठाय॥
घोडा लैहैं हम काबुलते ❋ हमको खर्च देउ मँगवाय।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ तुम ना जाउ लडैते लाल॥
करत लडाई राइ चलत तुम ❋ सहजै तोप देत लगवाय।
चाह नहीं हमको घोडनकी ❋ नाहिं कछु अटको काम हमार
पान चबाय लियो ऊदनिने ❋ औ राजाते कही सुनाय।
नहीं धर्म है यह क्षत्रिनको ❋ जो हटि धरैं पिछारी पाँव॥
दुबिधा छाँडि देउ जियरेकी ❋ जल्दी खर्च देउ मँगवाय॥
इतनी सुनते चन्देलेने ❋ नर ढेबाते कही सुनाय।
कलहा लरिका देवै वाला ❋ यहु ना मनिहै कही हमार
तुमहूँ चले जाउ ऊदनि सँग ❋ इतनी मानो कही हमार।
देश परायेमें जैहो तुम ❋ कारिऔ नाहिं बखेडा जाय
मोहरें मँगवाईं राजाने ❋ चौदह खच्चर दिये भराय।
फिरि समुझायो बघऊदनिको ❋ बेटा बहुत रह्यो हुशियार॥
होनहार ढेबा सब जाने ❋ जोगिन गुदरी लई उठाय॥
ऊदनि ढेबा दोनों चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय।
डंका बजवायो लश्करमें ❋ अपनी फौज लई सजवाय
सुनी खबरियाँ जब मल्हनाने ❋ तुरतै ऊदनि लिये बुलाय।
बोली मल्हना बघ ऊदनिते ❋ बेटा हमहिं देउ बतलाय॥
कहाँकि त्यारी तुमने कीन्हीं ❋ सो तुम जल्दी कहौ सुनाय
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ भेजत हमहिं चँदेले राय॥
घोडा लैहैं हम काबुलते ❋ ढेबा जैहैं संग हमार।
हँसी खुशीते आज्ञा देदेउ ❋ तौ सब काम सिद्धि ह्वैजाय
हुक्म दैदियो तब मल्हनाने ❋ ऊदनि चालिभये माथनवाय
घोडा बेंदुलाको सजवायो ❋ ऊदनि तापर भये सवार॥

घोडा मनुरथाको सजवायो ❀ तापर ढेबा भयो सवार ।
कूच कराय दियो महुबेते ❀ दशपुरवामें पहुँचे जाय ॥
आल्हा समुझायो ऊदनिको ❀ तुम ना जाउ लहुरवाभाय ।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❀ दादा हम मनिबेके नाहिं ॥
बीरा चबाया हम काबुलको ❀ भेजो हमहिं रजा परिमाल।
आल्हा सोचैं अपने मनमें ❀ यहु ना मनिहै कही हमार॥
हुक्म दैदियो तब आल्हाने ❀ चलिभे ऊदनि माथ नवाय
देवै सुनवाँ दोनों हटकैं ❀ ऊदनि एक न मानी बात॥
सुनवाँ समुझायो ऊदनिको ❀ देवर बहुत रहेउ हुशियार ।
चरण लागिकै तब दोनोंके ❀ ऊदनि कूच दियो करवाय॥
सात रोजकी मंजिल करिकैं ❀ नरवर गढमें पहुँचे जाय ।
बोले ऊदनि तब ढेबाते ❀ आगे कौन शहर दिखलाय॥
करो बहाना तब ढेबाने ❀ नहिं कछु जानो हाल हमार
काम तुम्हारो यहँ नाहिं अँटको ❀ सीधे चले चलौ तुम राह॥
घोडा बढाय दियो ऊदनिने ❀ नरवरगढमें पहुँचे जाय ।
गाय चरावत हते बरदिया ❀ तिनते ऊदनि पूछन लाग॥
कौन शहर यह कयहि राजाको ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
बोले बरदिया तब ऊदनिते ❀ ओ परदेशी बात बनाउ ॥
नरवरगढ है नाम सहरको ❀ नरपति राजा को है राज ।
मौरँगगढ है नाम दूसरो ❀ याही शहर केर दुइ नाम॥
यह सुनि ऊदनि घोडा हाँको ❀ औ बागनमें करो मुकाम
आकिले ऊदनि चढि घोडापर ❀ आगे घोडा दियो बढाय॥
ऊदनि पहुँचे जब पनिघटपर ❀ पनिहारिन तन रहे निहारि
रूप देखिकै पनिहारिनको ❀ ऊदनि खुशी भये मनमाहिं
बोले ऊदनि पनिहारिनसे ❀ घोडे पानी देउ पियाय ।

यह सुनि बोली इक पनिहारिनि ❀ ओ परदेशी बात बनाउ
हम पनिहारिनि हैं फुलवाकी ❀ पानी घोडे पिये हैं नाहिं।
हँसी करतहौ क्यों हमते तुम ❀ अपने घोडा जाउ भगाय॥
हाल तुम्हारो राजा जानिहैं ❀ तुम्हरो घोडा लिहैं छिनाय।
बोले ऊदनि पनिहारिनिते ❀ काहे घोडा जायँ भगाय॥
काह बिगारो हम राजाको ❀ जो घोडाको लिहैं छिनाय।
ऐसो क्षत्री हम ना देखें ❀ हमते करै सामने बात॥
पानी अपनो रहनदेउ तुम ❀ घोडा लेहैं अनत पियाय।
रूप देखिकै बघ ऊदनिको ❀ सब पनिहारी रहीं लोभाय॥
यक पनिहारी बोलन लागी ❀ बहिनी मानो बात हमारि।
रूपको आगर यहु क्षत्री है ❀ केहु राजाको राजकुमार॥
देखि जो पावै फुलवारानी ❀ इनको तुरतै लेय टिकाय।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात॥
केहिकी बेटी फुलवा रानी ❀ सो तुम हमहिं कहौ समुझाय।
यह सुनि बोली पनिहारी इक ❀ ओ परदेशी बात बनाउ॥
फुलवा बेटी है राजाकी ❀ नित उठि फूलन तौली जाय
गुण अरु रूप शीलकी आगारि ❀ ज्यहि सुन्दरता कही न जाय
परी निगाह जबहिं ऊदनिकी ❀ फुलबगिया तन रहे निहारि।
पूँछन लागे ऊदनि ठाकुर ❀ यह फुलबगिया केहिकी आय
यह फुलबगिया है फुलवाकी ❀ ऊदनि तहाँ पहूँचे जाय।
उतारि बेंदुलाते बगियामें ❀ अपनी दई मेख गडवाय॥
घोडा बेंदुला बाँधिदियो तहँ ❀ तौलौं ढेबा पहुँचो आय
बोलेउ ढेबा तब ऊदनिते ❀ इतनी मानो कही हमार॥
काम नहीं कछु यहँ रहिबेको ❀ जल्दी मेख देउ उखराय।
जो सुनिपैहैं नरपति राजा ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय॥

घोडा लैबो मुश्किल ह्वइ है ❋ ताते कूच देउ करवाय ।
ढेबा समुझायो ऊदनिको ❋ मानी नाहिं उदैसिंह राय ॥
सोचि समझिकै ऊदनि बोले ❋ भोरहि कूच दिहैं करवाय ।
मोहर लैकै यक ऊदनिने ❋ सो ढेबाको दई गहाय ॥
रातिब लावौ तुम बजारते ❋ सो घोडनको देयँ खवाय ।
चलिभयो ढेबा तब जल्दीते ❋ तौलौं माली पहुँचो आय ॥
बगिया देखी जब मालीने ❋ तब ऊदनिते लगो बतान ।
दाख छुहारनकी बगिया है ❋ काहे गर्द दई करवाय ॥
खबरि जो पैहैं नरपति राजा ❋ तुमको तुरतै लिहैं बँधाय ।
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❋ अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ काहे राजा लिहैं बँधाय ॥
काह बिगारो हम नरपतिको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
तोडा एक लियो ऊदनिने ❋ सो मालीको दियो गहाय ॥
राति भरेकी मुहलति देदेउ ❋ भोरहिं जैहैं कूच कराय ।
बहुत खुशी ह्वइ माली बोल्यो ❋ अब तुम दसदिन करौ मुकाम
इतनी कहिकै माली चलिभो ❋ औ अपने घर पहुँचो जाय ।
मालिनि देखो जब मालीको ❋ तब मालीते पूँछन लागि ॥
काह भेंट पाइ राजाते ❋ जो तुम बहुत खुशी मनमाहिं
इतनी सुनते तोडा लैकै ❋ सो मालिनिको दियो गहाय ।
उमिरि बीति गइ नरवर गढमें ❋ ऐसो कबहुँ न पायो इनाम ॥
एक बटोही बगिया उतरो ❋ ताने तोडा दियो गहाय ।
तुमहूँ चली जाउ बगियालौं ❋ जाते करियो बात रिसाय ॥
गुस्सा देखि तुमहिं राजीकरि ❋ तुरतै तोडा दिहै गहाय ।
यह सुनि हिरिया तुरतै चलिभइ ❋ औ बगियामें पहुँची जाय ॥
रूप देखिकै बघ ऊदनिको ❋ मालिनि बहुत खुशी ह्वइजाय

बोली मालिनि तब ऊदनिते ❀ अपनो कूच जाउ करवाय ॥
दाख छोहारेनकी बगिया है ❀ तुमने गर्द दई करवाय ।
लैकै तोडा मोहरन वालो ❀ सो मालिनिको दियो गहाय
तब तौ मालिनि बोलन लागी ❀ औ ऊदनिते लगी बतान
कौन देशके तुम बासी हौ ❀ आगे काह तुम्हारो नाम ॥
ऊदनि बोले तब मालिनिते ❀ मालिनि सुनौ हमारी बात ।
देश हमारा नगर महोबा ❀ जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
छोटे भैया हम आल्हाके ❀ औ ऊदनि है नाम हमार ।
यह सुनि हिरिया पूँछन लागी ❀ ब्याहे कहाँ बनाफर राय॥
बोले ऊदनि तब मालिनिते ❀ नैनागढमें भयो विवाह ।
सुनवाँ भौजी हमरी लागै ❀ हमरे बचन करो परमान ॥
बोली हिरिया तब ऊदनिते ❀ सुनवाँ बहिनी लगै हमारि ।
एक साथ खेलीं हम दोनों ❀ आगे पीछे भयो विवाह ॥
हमरो ब्याह भयो नरवर गढ ❀ सुनवाँ पहुँची नगर महोबा
जैसे देवर हौ सुनवाँके ❀ तैसेइ देवर लगौ हमार ॥
मेख उखारि दई बगियाते ❀ हमरे घरपर करौ मुकाम ।
इतनी सुनिकै ऊदनि ठाकुर ❀ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय
जोई रोगीके मन भावै ❀ सोई बैद बताई आय ।
तौलौं ढेवा दाखिल ह्वइगौ ❀ ताते ऊदनि कह्यो हवाल॥
बोलो ढेबा तब ऊदनिते ❀ ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि
घोडा खरीदन तुम आये हौ ❀ जल्दी कूच देउ करवाय ॥
बोले ऊदनि तब ढेबाते ❀ दादा मानौ बात हमारि ।
रानी फुलवाको देखे बिन ❀ हम ना जैहैं साथ तुम्हार॥
इतनी कहिकै ऊदनि चलिभये ❀ औ मालिनिघर पहुँचे जाय
तीनि महीना भये मालिनिघर ❀ यकदिनऊदनि सोचनलाग

माया लाये जो महुबेते ❋ सो नरवरमें दई गँवाय ।
फुलवा देखनको पाई नाहिं ❋ ताको करिहैं कौन उपाय ॥
सोचि समझिकै बघ ऊदनिने ❋ नर ढेबाते कही सुनाय ।
फुलवा रानी देखि न पाई ❋ सिगरी माया दई गँवाय॥
जतन बतावौ कछु दादा तुम ❋ जाते होवै काम हमार ।
यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ हम यक जतन देयँ बतलाय
हार दुलरिया हिरिया गूँधै ❋ गूँधौ जाय चौलरा हार ।
इतनी सुनिकै ऊदनि चलिभये ❋ औ हिरिया पै पहुँचे जाय
बोले ऊदनि तब हिरियाते ❋ अबहीं तुम बजार लौ जाउ
खातिब लै आवौ घोडनको ❋ हम हरवाको करैं तयार ॥
चलिभइ मालिनि तब बजारको ❋ ऊदनि लीन्हों हार उठाय।
बिच बिच मोती ऊदनि गूँधे ❋ गूँधो तुरत चौलरा हार ॥
फूल केतकी बिच बिच गूँधे ❋ सुन्दर हार करो तैयार ।
आई मालिनि जब बजारते ❋ हरवा देखत कही सुनाय ॥
दुलरा हरवा हम नित गूँधैं ❋ तुमने गुँधो चौलरा हार ।
अब जो गूँधैं हम हरवाको ❋ तौ जैबेको होय अब्यार ॥
बोले ऊदनि तब मालिनिते ❋ तुम फुलवा ते कहियो जाय
बहनौतिनि हमरी यक आई ❋ ताने गुँधौ चौलरा हार ॥
इतनीसुनिकै हिरिया चलिभइ ❋ मनखंडा पर पहुँची जाय ।
फूलन तौलौ रानि फुलवाकौ ❋ औ पलका परदियो बिठाय
हरवा दीन्हों जब फुलवाको ❋ नैना अग्निज्वाल ह्वइ जायँ ।
बोली फुलवा तब मालिनिते ❋ तेरो डारिहौं पेटु फराय ॥
हार चौलरा कौने गूँधो ❋ करी गाँठी दियो बनाय ।
मोती गूँधे हैं हरवामें ❋ तुमको कहां मिले बतलाउ ॥
मर्दको हाथ लगो हरवामें ❋ साँचो हाल देउ बतलाय ।

हाथ जोरिकै मालिनिबोली ❋ हमरी खता माफ ह्वैजाय ॥
बहनौतिनि आई महुबेते ❋ ताने गुँधा चौलरा हार।
यह सुनि फुलवा बोलन लागी ❋ औ मालिनिते लगी बतान
बहिनि हमारी तुम लगती हौ ❋ वह बहनौतिनि भई हमारि
जल्दी लावो बहनौतिनिको ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय॥
इतनी सुनिकै हिरिया मालिनि ❋ मनमें गई सनाका खाय।
मालिनि चलिभइ सतखंडाते ❋ औ अपने घर पहुँची आय
हाल सुनायो बघ ऊदनिको ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय।
फुलवा बुलायो बहनौतिनिको ❋ सो अब केहिको जायँ लिवाय
बोलो ढेबा तब ऊदनिते ❋ अब तुम धरो जनानो भेष।
देखा चाहो जो फुलवाको ❋ तो तुम जल्द होउ तैयार ॥
मोहरैं पाँच दई ऊदनिने ❋ औ हिरियाते कही सुनाय।
चुरियाँ बिछियातुम लै आवो ❋ नथुनी लावो त्यार कराय॥
इतनी सुनिकै हिरिया चलिभइ ❋ औ सुनार पै पहुँची आय।
नथुनी बनवाई जल्दीते ❋ चुरियाँ बिछियाँ लियेखरीदि
आई हिरिया बघ ऊदानिपै ❋ लहँगा लुगरा लियो मँगाय।
लहँगा लुगरा ऊदनि पहिरो ❋ औ धारिलियो जनानो भेष
फुलवा रानीके देखिबेको ❋ ऊदनि डारी नाक छिदाय।
सब सिंगार कियो ऊदनिने ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
तुरत पालकी तब मँगवाई ❋ तापर चढे उदैसिंह राय।
चली पालकी बघ ऊदनिकी ❋ हिरिया मालिनि संगलिवाय
पहुँचि पालकी गइ महलनमें ❋ औ खिरकी पै दई धराय॥
उतारि पालकीते भुइँ आय ❋ घूघट लियो हाथ भरि काढि
आगे आगे मालिनि चलिभइ ❋ पाछे चले उदैसिंहराय ॥
मालिनि चढिगइ सतखंडापर ❋ संगे चढे उदैसिंह राय।

बोली फुलवा तब हिरियाते ❋ ना बहनौतिनि लाई लिवाय
बोली मालिनि तब फुलवाते ❋ मैं तो संगै लाई लिवाय ॥
समुहे ठाढी बहनौतिनि है ❋ सो तुम देखौ दृष्टि पसारि ।
हाथ भरेको घूँघट काढे ❋ दुलहिनि बने उदैसिंह राय॥
ठाढो देखो जब ऊदनिको ❋ तब फुलवाने कही सुनाय ।
महल जनानो यह हमरो है ❋ घूँघट काढे लियो निकारि॥
यह सुनि मालिनि बोलन लागी ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात।
लाज शरमकी यह गरुई है ❋ ताते घूँघट काढो आय ॥
इतनी सुनतै रनि फुलवाने ❋ चन्दन पिढिया दई डराय
आवौ बैठो या पिढिया पर ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
मनमें ऊदनि सोचन लागे ❋ औ हिरियाते लगे बतान ।
फुलवा बैठी है पलका पै ❋ हम जो नीचे बैठें जाय ॥
दागु लागिहै रजपूतीमें ❋ औ क्षत्री पन जाय नशाय ।
बोली हिरियाँ तब फुलवाते ❋ हमरी खता माफ ह्वैजाय ॥
राजा चदेले हैं महुबेके ❋ जिन घर पारसको अधिकार
उनकी बेटी यक चन्द्रावलि ❋ जाको रूप न बरनो जाय ॥
ताकी मालिनि यह बहनौतिनि ❋ संगै खेलै पंसासार ।
संगै बैठें इक पलकापर ❋ ताते पास लेउ बैठार ॥
इतनी सुनिकै फुलवा हटिगइ ❋ औ सिरहाने बैठी जाय ।
पाँयत खाली तुरतै कारि दो ❋ ऊदनि सोचि २ रहिजायँ॥
फुलवा बैठी सिरहानेमें ❋ औ हम पायँत बैठें जाय ।
रणमें झूँठी परै शिरोही ❋ बूडै सात साखिको नाम ॥
छाँडि आसरा जिंदगानीको ❋ अपनो मया मोह बिसराय।
पाँयत छांडिदियो ऊदनिने ❋ औ सिरहाने बैठे जाय ॥
फुलवा मनमें सोचन लागी ❋ है कछु कारण परत दिखाय।

बोली फुलवा तब ऊदनिते ❋ तुम बहनोतिनि लगो हमारि
हाल बताय देउ महुबेको ❋ कैसे बसे चँदेले राय ।
मीठी बोली ऊदनि बोले ❋ ज्यों पिंजरामें बोलै लाल ॥
नगर महोबे बसैं चँदेले ❋ जिनघर पारसको अधिकार।
आल्हा ऊदनि हैं जिनके घर ❋ जिनकी बाँडि बहै तलवारि
सुखिया रैयति चन्देलेकी ❋ दुखिया कोउ न परै दिखाय
यह सुनि फुलवा पूछन लागी ❋ आल्हाको कहँ भयो बिवाह
कहाँ बियाहे ऊदनि ठाकुर ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय।
इतनी सुनि ऊदनि मुसक्याने ❋ औ फुलवाते कही सुनाय
आल्हा व्याहे रनि सुनावाँ सँग ❋ नैनागढमें भयो बिवाह ।
व्याह भयो नाहिं कहुँ ऊदनिको ❋ क्वाँरे उदैसिंह बलवान ॥
बोली फुलवा फिरि ऊदनिते ❋ मर्दके ऐसे पाँव तुम्हार
पिंडुरी तुम्हरी करीं करीं ❋ सो तुम साँची देउ बताय ॥
गाय भैंस हैं मोरे बापके ❋ हम जंगलमें चराईं जाय ।
तिनके पीछे हम दौरी हैं ❋ तासे पाँय गये कराय ॥
इतनी सुनिकै फुलवा रानी ❋ सिगरी देह टटोहन लागि ।
कैसी कैसी बहनोतिनि हो ❋ काहे देह गई कराय ॥
जो तुम मालिनिहो महुबेकी ❋ प्यारी बहु चन्द्रावलि केरि।
पंसासारी तुम खेलो अब ❋ हमरे साथ आजुकी राति ॥
फुलवा बोली तब मालिनिते ❋ बहनोतिनिको छोंडे जाउ ।
भोर होतही तुम यहँ ऐयो ❋ तब बहनोतिनि दिहैं पठाय
इतनी सुनिकै हिरिया चलिभइ ❋ औ अपने घर पहुँची जाय
सुन्दर पलका रतन जडाऊ ❋ सो फुलवाने लियो मँगाय॥
सो बिछवायो सतखंडापर ❋ फूल बिजानियाँ दई धराय।
पंसासारी खेलन लागी ❋ आधी राति गई नगिचाय॥

लियो बिजनियाँ फूलन वाली ❀ हाँकन लगी फुलामति रानि
लगी बयरिया जब खेलतमें ❀ अँचरा उडो उदयसिंह क्यार
तुरत निगाह परी फुलवाकी ❀ कमरमें देखि लई तलवारि।
तबतो फुलवा बोलन लागी ❀ हमनें तुमहिं लियो पहिचानि
तुमहो छलिया गढ महुवेके ❀ औ ऊदनि है नाम तुम्हार।
झूंठी कहिहौ जो हमते तुम ❀ तौ बीरनको लिहौं बुलाय॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ देखो हमहिं कहाँ तुम जाय
पता बतावौ जो हमको तुम ❀ तौ हम मानहिं बात तुम्हारि
बोली फुलवा तब ऊदनिते ❀ हमरे बचन करौ परमान।
जब तुम गये रहौ माडौमें ❀ लीन्हों जाय बापको दाउँ॥
तब हम देखा रहै तुमहिं तहँ ❀ जोगी रूप बनाफर राय।
भेद बिजैसिनिते पूँछो तुम ❀ औ लैलियो बापको दाउँ॥
सो तुम यादि करौ बातें सब ❀ हमनें तुमहिं लियो पहिचानि
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ तुमने भलो लियो पहिचानि
बोली फुलवा तब ऊदनिते ❀ अब तुम भांवरि लेउ डराय
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ रानी अक्किल गई तुम्हारि॥
चोरी चोरा ब्याह न करिहौं ❀ नहिं क्षत्रीपन जाय नशाय।
लैहैं हम बरात महुबेते ❀ सातौ भाँवरि लेयँ डराय॥
बोली फुलवा तब ऊदनिते ❀ यहँपर बीरनको है राज।
कठिन मारु है नरवर गढकी ❀ जानत तिनको सकलजहान
काठको घोडा बान अजीता ❀ शेलह शनीचर है गढ माहिं।
जिनके मारे लश्कर बिचलै ❀ कोऊ शूर न आडै पाँव॥
धोखे रहियो ना माडौके ❀ जहँ लैलियो बापको दाउँ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ रानी बचन करौ परमान॥
डंड बाँधिकै मकरन्दीकी ❀ सातौ भाँवरि लिहौं डराय।

बिना बियाहे तुम्हहिं जो छाँडौं ❀ तौ म्वहिंखाय कालिकामाय
धीरज राखौ अपने मनमें ❀ अब हम भाँवरि लिहैं डराय।
चारि पहर बीते अंटापर ❀ बोली तुरत फुलामति रानि॥
भोजन जेईंलेउ अंटापर ❀ अब हम करैं रसोई जाय।
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर ❀ रानी सुनौ हमारी बात ॥
क्वाँरे भोजन हम जेवैं ना ❀ क्वाँरे न धरैं सेजपर पांव।
भोर भये पर हिरिया मालिनि ❀ सतखंडापर पहुँची आय॥
बोली फुलवा तब मालिनिसे ❀ अब तुम इनहिं घरै लै जाउ।
भलेमिलायोबहनौतिनिको ❀ यह सुनि हिरिया चलीलिवाय
उतारिकै दोनों सतखंडाते ❀ औ द्वारेपर पहुँचे आय।
चढे पालकीपर जल्दीते ❀ पलकी चली उदैसिंह क्यार॥
हिरिया मालिनि संगै चलिभइ ❀ मकरँद ठाकुर कही सुनाय।
साँच बतावौ हिरिया मालिनि ❀ केहिकी बेटी लाई चुराय ॥
संग पालकी हमरे करिदेउ ❀ भोरहिं देहैं घर पहुँचाय ।
हिरिया बोली तब मकरँदते ❀ यह बहनौतिनि लगै हमारि ॥
फुलवा बुलवायो देखनको ❀ सो हम फुलवै लाई दिखाय
यह सुनि चलिभये मकरँदठाकुर ❀ तब ऊदनिने कही सुनाय
काम बिगारो तुमने मालिनि ❀ हम सब औते काम बनाय।
डंड बांधिकै मकरन्दीको ❀ तुरतै लेते ब्याह कराय ॥
संग भेजिदेतिउ मकरँदके ❀ सब बनिजातो काम हमार।
ऊदनि पहुँचे जब मालिनि घर ❀ तब ढेबाने कही सुनाय ॥
संग तुम्हारो हम ना करिहैं ❀ हम तो करैं मर्दको संग ॥
सबते कहि हैं हम महुबेमें ❀ ऊदनि धरो जनानो भेष ॥
फुलवा रानीके देखिबेको ❀ ऊदनि डारी नाक छिदाय ।
यह सुनि ऊदनि कायल ह्वइगे ❀ अपनी काढी तुरत कटार॥

चर्चा करिहौ जो महुबेमें ❋ अबहीं पेट्ट मारि मरिजाउँ।
हँसिकै ढेबा बोलन लागे ❋ हमने परचौ लियो तुम्हार॥
हमने हँसी करी तुम्हरे सँग ❋ तुमने मानिलई सतिभाउ।
कछू न कहि हैं हम महुबेमें ❋ अब तुम हाल देउ बतलाय
कैसी गुजरी सतखंडापर ❋ फुलवा कही कौनसी बात।
हमहूँ दिखिहैं रनि फुलवाको ❋ ताको कोई करो उपाय॥
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर ❋ हम तुम जोगी भेष बनाय।
चलिकै देखैं रनि फुलवाको ❋ तौ सब कामसिद्धि ह्वइजायँ
इतनी सुनतै नर ढेबाने ❋ दोनों गुदरी लईं निकारि।
रामानन्दी तिलक लगायो ❋ देहीमें लइ भस्म रमाय॥
सुवर मुद्रिका कानन पहिरी ❋ अपनी बाँधिलई तलवारि।
ऊपर पहिरी जोग गुदरी ❋ तुलसी माला लइ लटकाय॥
लई बँसुरिया बघ ऊदनिने ❋ ढेबा खँजरी लई उठाय।
दोनों जोगी डगरत चलिभये ❋ औ फाटकपर पहुँचे जाय॥
अलख जगाई दरवाजेपर ❋ बीच बजार पहूँचे जाय।
राग रागिनी गावन लागे ❋ अपने बाजा दिये बजाय॥
देखैं रूप जौन जोगिनको ❋ तनकी सुरति देय बिसराय।
नाचत गावत दोनों आये ❋ औ पनिघटपर पहुँजे आय।
पानी भरतीं पनिहारी जहँ ❋ सो जोगिनतन रहीं निहारि
एक पहर पनिघटपर ह्वइगो ❋ तिरिया मोहि मोहि रहिजायँ
बाँदी सोचै चम्पावाली ❋ कह रानीते कहि हौं जाय।
भरिकै गागर बाँदी चलिभइ ❋ औ महलनमें पहुँची जाय॥
आवत देखो जब बाँदीको ❋ तब रानीने कह्यो रिसाय।
देर लगाई क्यों पनिघटपर ❋ बांदी डारि हौं पेट्ट फराय॥
हाथ जोरिकै बाँदी बोली ❋ हमरी खता माफ ह्वइजाय।

बालक आये दुइ जोगिनके ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
रूप जोगियनके देखेते ❋ तनकी सुरति जाय बिसराय
हुक्म होय जो रानी हमको ❋ अवहीं महलन लाउँ लिवाय
यह सुनि रानी बोलन लागी ❋ अबहीं महलन लावो जाय
बाँदी चलिभइ तब जल्दीते ❋ औ जोगिनको चली लिवाय
गावत गावत जोगी आये ❋ औ ड्योढीमें पहुँचे आय ।
कान अवाज परी राजाके ❋ तब जोगिनको लियो बुलाय
जोगी आये जब समुहेपर ❋ बायें हाथते करी सलाम ।
राजा बोले तब गुस्सा ह्वै ❋ इन जोगिनको देउ निकारि
बायें हाथते करी बन्दगी ❋ हमरो करो आय अपमान।
इतनी सुनिकै ऊदनि तड़पे ❋ औ राजाते लगे बतान ॥
जौन हाथते जपैं सुमिरनी ❋ नित उठि लेयँ रामको नाम
तौन हाथते करैं बन्दगी ❋ हमरो जोग भंग ह्वैजाय ॥
यह सुनि राजा बहुत खुशीभे ❋ औ जोगिनते कही सुनाय।
गुस्सा दूरि करो अपनी तुम ❋ जोगिउ सांचो ज्ञान तुम्हार ॥
तान सुनाय देउ अपनी तुम ❋ औ तुम नाच देउ दिखलाय।
इतनी सुनिकै बच ऊदनिने ❋ अपनी बँसुरी दई बजाय ॥
बजी खँझरी नग टेबाकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
राग रागिनी गावन लागे ❋ नाचन लगे उदय सिंहराय
जितने क्षत्री बँगला बैठे ❋ ते सब मोहि मोहि रहिजायँ
डारि मोहनी दइ ऊदनिने ❋ नाहीं ममा तलक मन्नाय ॥
नचैं कंचनी वा बँगलामें ❋ तिनको नाच बन्द ह्वैजाय
तान मरोरा ऊदनि गावैं ❋ पक्के महल उठे झन्नाय ॥
बहुत खुशी ह्वै राजा बोले ❋ जोगिउ आजु करो बिसराम
करै रसोई हमरो ब्राह्मण ❋ सो तुम जेंयलेउ जेउनार ॥

बोले ऊदनि तब राजाते ❀ कहँ महराज तुम्हारो ज्ञान ।
करैं रसोई ब्राह्मण हमरी ❀ जो लगिजाय हाथमें दागु ॥
ब्राह्मण दोष लगै हमको तब ❀ हमरो जोग भंग ह्वैजाय ।
क्वाँरे भोजन हम जेंवत हैं ❀ कन्या करै रसोई त्यार ॥
तौ हम भोग लगाय महलमें ❀ अपने चले रास्ता जायँ ।
बोले राजा तब मकरँदते ❀ फुलवा करै रसोई त्यार ॥
हुक्म सुनायो तब मकरँदने ❀ फुलवा करन रसोई लागि ।
करी रसोई जब फुलवाने ❀ तब जोगिनको लियो बुलाय
चौका बैठे दोनों जोगी ❀ फुलवा भोजन धरे अगार ।
फुलवै देखो जब ढेबाने ❀ तब ऊदनिते कही सुनाय ॥
याही फुलवाके कारण तुम ❀ अपनी डारी नाक छिदाय ।
महा सुन्दरी यह फुलवा है ❀ मानहुँ इन्द्र अपसरा आय ॥
भरिकै गडुआ गंगाजलको ❀ सो जोगिनपै दियो धराय ।
करी अधीनी तब जोगिनते ❀ अब तुम जेंइलेउ जेवनार ॥
ऊदनि सोचै अपने मनमें ❀ औ मनमें यह कियो विचार
क्वाँरे भोजन जो हम करिहैं ❀ तौ सब क्षत्री धर्म नशाय ॥
ऊदनि गिरिगे तब चौकामें ❀ आंखिन पुतरी लई चढाय ।
स्वांस साधिलइ तब ऊदनिने ❀ लोटैं पोटैं औ रहिजायँ ॥
देखि हाल यह चम्पा रानी ❀ नर ढेबाते लगी बतान ।
रूप देखिकै मोरि बेटीको ❀ जोगी गिरिगा खाय पछार ॥
अबहिं बुलैहौं मकरन्दीको ❀ तुरतै पेटु दिहौं फरवाय ।
बोलो ढेबा तब रानीते ❀ रानी बोलो वचन सम्हारि
पकरि चुरैलनलौ जोगीको ❀ ताते गिरो भरहरा खाय ।
भरी चुरैलै हैं तुम्हरे घर ❀ तिन जोगीको पकरो आय ॥
छोटो जोगी जो मरिजैहै ❀ तुरतै तुमको दिहौं सराप ।

ऐसे वैसे हम जोगी नाहिं ❋ जो कछु बात कहे डारिजायँ
यह सुनि डारिगइ चम्पा रानी ❋ नाउत बैद लिये बुलवाय ।
अपनी अपनी करि हारे सब ❋ कोऊ जतन पेश ना जाय ॥
चम्पा रानी रोवन लागी ❋ तब फुलवाने कही सुनाय ।
कौन बातको माता रोवौ ❋ सो तुम हमाहिं देउ बतलाय ॥
रानी बोली तब फुलवाते ❋ हमते कछू कही ना जाय ।
कौर उठावत जोगी गिरिगो ❋ सिगरो कारज गयो नशाय
महलन जोगी जो मरिजैहै ❋ तो जग ह्वैहै हँसी हमारि ।
इतनी सुनिकै फुलवा बोली ❋ हम जोगीको दिहैं जिआय
फुलवा आई तब ऊदनिपै ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
काहे मकर कियो महलमें ❋ जो सुनिपैहै भाइ हमार ॥
बाँधि पठैहैं तुमहिं कइकमें ❋ औ सब जैहैं काम नशाय ।
अब तुम लौटि जाउ महुबेको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
साजि बरात लाय महुबेने ❋ सातौ भाँवरि लेउ डराय ।
यह सुनि ऊदनि उठि ठाढेभे ❋ औ चलिभये उदयसिंह राय
संगै ढेबा बघ ऊदनि दोउ ❋ फाटक निकरि गये वा पार।
तुरतै पहुँचि गये मालिनिघर ❋ जोगिन मुदरी धरी उतारि
रानी पूछै तब फुलवाते ❋ जोगी गिर्यो कौनसे हेत ।
बोली फुलवा तब रानीते ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
कोऊ सुहागिल ऊपर झांकी ❋ छाया परी थार पर जाय ।
ताते जोगी तुरतै गिरिगो ❋ राखी आजु लाज भगवान ॥
हियाँकि बातैं तो हियँ छांडो ❋ अब ऊदनिको सुनौ हवाल
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❋ अब कछु जतन देउ बतलाय
माया लाये जो महुबेते ❋ सो नरवरमें दई गँवाय ।
ढेबा बोले तब ऊदनिते ❋ तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय ॥

पागल बनिकै चलौ महोबे ❋ हम सब लेहैं काम बनाय ।
हम समुझैहैं परिमालेको ❋ औ आल्हाको दें समुझाय ॥
कठिन चुरैलैं गढ नरवरकी ❋ सो ऊदनिके गईं समाय ।
हिकमत बहुत करी नरवरमें ❋ औ सब माया दई लुटाय ।
यह मन भाई बघ ऊदनिके ❋ बहुतक हरदी लई बँटाय ।
सो लगवाय लई देहीमें ❋ औ महुबेको कियो पयान ॥
सात रोजकी मंजिल करिकै ❋ सागर तीर पहूँचे जाय ।
कीरति सागर निकट बागमें ❋ अपनो तम्बू दियो लगाय ॥
पलका बिछिगा बघ ऊदनिका ❋ तापर परे उदयसिंह राय ।
चलिभौ ढेबा तब तम्बूते ❋ औ राजापै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी परिमालेको ❋ तब राजाने कही सुनाय ।
कैसे घोडा तुम ले आये ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
बोलो ढेबा तब राजाते ❋ घोडा सागर दिये बँधाय ।
घोडा सुन्दर हम लाये हैं ❋ चलिकै देखिलेउ महराज ॥
तब मँगवाई तुरत सवारी ❋ तापर चढे रजा परिमाल ।
जहँपर तम्बू था ऊदनिको ❋ पहुँचे तहाँ चँदेले राय ॥
सूरति देखी जब ऊदनिकी ❋ तब राजाने कही सुनाय ।
कैसे जरद भई देही यह ❋ ढेबा हमहिं देउ बतलाय ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ राजा सुनौ हमारी बात ।
कठिन चुरैलैं गढ नरवरकी ❋ सो देहीमें गईं समाय ॥
नाउत बैद सबै बुलवाये ❋ सिगरी माया दई लुटाय ।
देखि आसरा ना जीबेको ❋ तब महुबेमें पहुँचे आय ॥
इतनी बात सुनी ढेबाकी ❋ राजा बहुत गये घबराय ।
सुनी खबरिया जब आल्हाने ❋ सोऊ तहाँ पहूँचे जाय ॥
बोले आल्हा चन्देलेते ❋ तुमहीं पठयो लहुरवा भाय ।

छोटो भैया जो मरिजैहै ❋ मडुवे आगी दिहौं लगाय॥
खबरि पहूँची जब देवैको ❋ माता बिलखि २ रहि जाय
पूँछे सुनवाँ तब देवैते ❋ काहे रोवौ सासु हमारि ॥
हाल बतायो जब देवैने ❋ तब सुनवाँने कही सुनाय ।
तुम बुलवावौ हियँ ऊदनिको ❋ अबहीं चुरैलैं दिहैं उतारि ॥
रुपनै बुलवायो देवैने ❋ औ सब हाल कह्यौ समुझाय
रुपना चलि भौ दशपुरवाते ❋ औ सागर पर पहुँचो जाय
बोलो रुपना परिमालैते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
देवै बुलवायो ऊदनिको ❋ भेजो तुरत हमारे साथ ॥
तुरत पालकी तहँ धरवाई ❋ तापर ऊदनिको पौढाय ।
चली पालकी बघ ऊदनिकी ❋ दशपुरवामें पहुँची जाय ॥
रानी सुनवाँके द्वारे पर ❋ तुरत पालकी धरी उतारि ।
उतरी सुनवाँ शतखडाते ❋ औ पलकी पै पहुँची जाय
हाथ पकरिकै उदयसिंहको ❋ सतखंडा पर गई लिवाय ।
लिये बिजनियां कर फूलनकी ❋ सो ऊदनि पर करै बयारि
सुनवाँ रानी पूछन लागी ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
रानी फुलवा तुम देखी कहुँ ❋ ताते मक्कर किये बनाय ॥
तुरतै ऊदनिने हँसि दीन्हों ❋ औ सुनवाँते कही सुनाय ।
कैसे जानिगइउ भौजी तुम ❋ फुलवा मिली हमहिं तहँ जाय
गंगा उठवाई हमते त्यहिं ❋ सातौ भाँवरि लेउ डराय ।
यह सुनि सुनवाँ बोलन लागी ❋ को नरपति घर करै बिवाह
क्यहिकी छाती है बज्जुरकी ❋ जो निज प्रान देनको जाय
काठको घोडा बान अजीता ❋ जिनघर शैल शनीचर आय
हिरिया मालिनिहैजालिमतहँ ❋ अपनी जादू देत चलाय ।
बोले ऊदनि तब सुनवाँते ❋ भौजी हम मनिबेके नाहिं॥

ब्याह न ह्वइहै जो नरवरमें ❋ तौ मैं पेटु मारि मरि जाउँ ।
सुनवाँ बोली तब ऊदनिते ❋ देवर धीर धरौ मनमाँह ॥
सोवत आल्हा रहैं जहाँपर ❋ सुनवाँ तहाँ पहूँची जाय ।
चन्दनछिरकिदियोआल्हापर ❋ सुनवाँ ठाढी करै बयारि ॥
आल्हा जागि परे तुरतै तब ❋ औ सुनवाँको लियो बिठाय
बोले आल्हा तब सुनवाँते ❋ काहे हमहिं जगायो आय॥
कौन काम तुम्हरो अटको है ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
हाथ जोरिकै सुनवाँ बोली ❋ स्वामी सुनो हमारी बात॥
हमने बुलवायो ऊदनिको ❋ औ सब जानिलियोअहवाल
फुलवा बेटी जो नरपतिकी ❋ सो ऊदनिकी परी निगाह॥
ब्याह करनको कहि आये हैं ❋ तुमसे करो बहाना आय ।
ब्याह रचो अब तुम भैयाको ❋ इतनी मानौ कही हमारि॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ हमते यह ह्वइमेकी नाहिं
फौज कटावै को नरवरमें ❋ को नरपति घर करै बिवाह ।
कौन दुसाहिा मकरंदाको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
बिनती करिकै सुनवाँ बोली ❋ औ आल्हाते लगी बतान
न्योता भेजो नैनागढमें ❋ तुरत आवै भाइ हमार ।
ब्याह कराय लेयँ ऊदनिको ❋ नरवर गर्द देहँ करवाय ॥
न्योता पठवौ पथरी गढको ❋ औ दिल्लीको देउ पठाय ।
न्योता भेजि देउ बौरीगढ ❋ औ कनौजको देउ पठाय ॥
खबरि भेजि देउ गढ सिरसाको ❋ जो चढि आवैंबीरमलिखान
बोले आल्हा तब सुनवाँते ❋ यह हमरे मन नाहिं समाय
तब तौ सुनवाँ बोलन लागी ❋ तुम धरि लेउ जनानो भेप ।
चुरियाँ बिछिया स्वामी पहिरौ ❋ औ सब छोरि धरौ हथियार
जाय बिराजो तुम पलकापर ❋ हम ऊदनिको लैहैं ब्याहि ।

पानमें चूना लागै ❋ डारे खैर लाल ह्वइ जाय ॥
तैसेइ बात लगी आल्हाके ❋ औ सुनवाँते कही सुनाय ।
जो कछु रानी हमते कहिहौ ❋ सो सब मनिहौं बात तुम्हारि
बोली सुनवाँ तब आल्हाते ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ।
न्यौता पठवौ तुम राजनके ❋ औ मलिखेको लेउ बुलाय॥
ब्याह रचावौ तुम ऊदनिको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ।
सुनतै चालिभै नुनि आल्हा तब ❋ औ डचौढीमें पहुँचे जाय॥
रूपना बारीको बुलवायो ❋ औ सिरसाको दियो पठाय
संगै लावौ तुम मलिखेको ❋ यह सुनि रूपना कियो पयान
जाय पहूँचो गढ सिरसामें ❋ औ मलिखेपै पहुँचो जाय ।
करी बन्दगी नर मलिखेको ❋ औ आल्हाको कह्यो सँदेश॥
सुनतै घोडीको मँगवायो ❋ औ चढि चले वीर मलिखान
मलिखे आये दसपुरवामें ❋ औ आल्हापै पहुँचे आन ॥
करी बन्दगी नर मलिखेने ❋ औ आल्हाते लगे बतान ।
काहे दादा तुम बुलवायो ❋ सो सब हाल देउ बतलाय॥
आल्हा बोले तब मलिखेते ❋ भैया कछू कही ना जाय ।
घोडा खरीदन गये काबुलको ❋ ऊदनि भेजि दिये परिमाल
पहुँचे ऊदनि जब नरवरगढ ❋ जहँपर नरपतिको है राज ।
फुलवा बेटी जो नरपतिकी ❋ सो ऊदनिके परी निगाह ॥
ब्याह करनको यह कहि आये ❋ सो कैसे अब होय विवाह।
कौनसो क्षत्री है दुनियामें ❋ जो नरवरगढ करै विवाह ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ दादा धीर धरौ मनमाँहि ।
मोहरा मारिहैं हम नरपतिको ❋ औ ऊदनिको लैहैं ब्याहि॥
—न ब्याहनको रहि हैं ना ❋ यहु दिन कहिबेको रहि जाय
। पठै देउ राजनको ❋ औ बरातको करौ तयार ॥

इतनी सुनतै त्रुनि आल्हाने ❀ इक हरकारा लियो बुलाय ।
तुरतै भेजि दियो झुन्नागढ ❀ यक बौरीगढ दियो पठाय॥
न्यौता भेज्यो गढ दिल्लीको ❀ औ नैनागढ दियो पठाय ।
जितने व्यौहारी आल्हाके ❀ सबको न्यौता दियो पठाय
यक हरकारा गयो सिरसा गढ ❀ औ सुलिखेते कह्यो हवाल
करी तयारी तब सुलिखेने ❀ मन्ना गूजर लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तब लश्करमें ❀ सिगरी फौज होय तैयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❀ लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
घोडा सब्जाको सजवायो ❀ मन्ना गूजर भयो सवार ।
घोडी हिरौंजिनि त्यार कराई ❀ तापर चढे बीर सुलिखान॥
लश्कर चालिभयो गढ सिरसाते ❀ औ महुबेमें पहुँचो जाय।
डेरा परिगे मदन तालपर ❀ अपने तम्बू दिये लगाय ॥
सूरज आये झुन्नागढते ❀ सागर डेरा दिये लगाय ।
आये यादवा बौरीवाले ❀ औ सागर पर करो मुकाम
लश्कर आयो नैनागढको ❀ परो बेगागि तालपर जाय ।
आये राजा व्यौहारी सब ❀ जहँ तहँ डेरा दिये लगाय॥
बोले मलिखे त्रुनि आल्हाते ❀ अपनो पंडित लेउ बुलाय ।
साइति पूँछि लेउ जल्दीते ❀ औ बरातको करो तयार ॥
भयो बुलौआ चूडामणिको ❀ सो ड्योढीमें पहुँचे आय ।
साइति देखत पंडित बोले ❀ अबहीं तेल लेउ चढवाय ॥
आँगन लिपवायो जल्दीते ❀ मोतिन चौक दई पुरवाय ।
कलश सूबरनको धरवायो ❀ तापर दीपक दियो धराय॥
भयो बोलावा बब ऊदनिको ❀ औ पाटापर दियो बिठाय ।
पंडित वेद उचारन लागे ❀ गौरी गणपति दिये पुजाय
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❀ चाढि गयो तेल लहुरवा क्यार

कंकन बँधिगयो बघ ऊदनिके ❋ औ सब नेग दिये करवाय॥
नीमा जामा ऊदनि पहिरे ❋ शिरपर मौर धरो तहँ जाय।
सेरवा लैकै चन्द्रावलि तब ❋ राई लोन उतारन लागि ॥
आई पालकी दरवाजे पर ❋ तापर चढे उदौसिंहराय ।
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ चारौ नेगी संगै जायँ ॥
चली पालकी बघ ऊदनिकी ❋ औ कुअँटा पर पहुँची जाय
जिनको ब्याही चन्द्रावलि थी ❋ तिनको इन्द्रसेन अस नाम
गोद उठायो उन ऊदनिको ❋ औ कुअँटा पर राखो जाय।
रानी मल्हना परिमालैकी ❋ कुअँटा पाँव दिये लटकाय ॥
पहुँचे ऊदनि तब कुँअटापर ❋ औ धरि बहियाँ लियो उठाय।
प्राणदान माता दीन्हें हम ❋ माता बचन करो परमान ॥
मल्हना रानी बोलन लागी ❋ जुग जुग जियो लडैते लाल।
चलिभे ऊदनि तब कुअँटाते ❋ औ पलकीमें बैठे आय ।
चली पालकी बघ ऊदनिकी ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय ॥
सजी बरायत तब महुबेते ❋ शोभा एक कही ना जाय॥
लश्कर पहुँचि गये मलिखेतब ❋ औ क्षत्रिनते लगे बतान ।
जिनहिं पियारी घर तिरियाहैं ❋ सो सब तलब लेउ घरजाउ
जिनहिं पियारी परम भगौती ❋ सो बरातको होउ तयार ।
शूर सिपाही इज्जतिवाले ❋ दहिनी धरैं मुच्छपर हाथ ॥
पाँव पिछारी हम धरिहैं ना ❋ चाहै तन धजीरउडि जाय ।
इतनी कहिकै नर मलिखेने ❋ लश्कर डंका दियो बजाय॥
बजो नगारा गढ महुबेमें ❋ सिगरी फौज भई तैयार ।
अपने अपने सब घोडनपर ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ कोऊ गजरथ भये सवार ।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❋ क्षत्री सबै भये असवार ॥

हाथी पचशावद मँगवायो ❀ तापर आल्हा भये सवार ।
घोडी कबुतरी पर मलिखे हैं ❀ घोडीहिरौंजिनिपरसुलिखान
मन्ना गूजर है सब्जापर ❀ ढेबा मनुरथा पर असवार ।
ताल्हन सैयद बनरस वाले ❀ घोडी सिंहिनि पर असवार॥
जितने राजा न्योते आये ❀ सो सब सजिकै भये तयार।
चली बरायत गढ महुबेते ❀ औ नरवरकी पकरी राह ॥
आठ रोजकी मँजलि करिकै ❀ नरवर आठ कोस रहिजाय।
डेरा डारि दिये धूरेपर ❀ अपने तम्बू दिये लगाय ॥
सब्ज बनातनके तम्बू हैं ❀ सब्जी रही फौजमें छाय ।
फेंटैं छुटिगईं रजपूतनकी ❀ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
जीन उतारि दिये घोडनपर ❀ क्षत्रिन छोरि धरे हथियार ।
बारह कोशीके गिरदामें ❀ लश्कर परो महोबे क्यार ॥
चढी रसुइयाँ उमरायनकी ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
कहूँ गवैया गान सुनावैं ❀ कहुँरनाच कंचानिन क्यार॥
राति बसेरो करि बरातमें ❀ भोरहिं उठे वीर मलिखान ।
भयो बुलौआ तब पंडितको ❀ अबहीं साइति देउ बताय ॥
बोले पंडित नर मलिखेते ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ।
मलिखे बुलवायो रुपनाको ❀ औ रुपनाते कही सुनाय ॥
ऐपनवारी तुम लै जावौ ❀ औ बरातको कह्यो हवाल ।
बोल्यो रुपना तब मलिखेते ❀ हम ना शीश कटैहैं जाय ॥
धोखे न रहियो नैनागढके ❀ जहँ आल्हाको कियो बिवाह
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ रुपना कहाँ तुम्हारो ध्यान॥
उदनि ब्याहनको रहिहैं ना ❀ यहु दिन कहिबेको रहिजाय।
मुहते हीनी तुम बोलतहौ ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं॥
यह सुनि रुपना बोलन लागो ❀ पाग बैंजनी देउ मँगाय ।

घोडा बेंदुलाको मँगवावौ ❋ ऊदनि केरि ढाल तलवारि॥
ऐपन वारी हम लैजैहैं ❋ सब सामान देउ मँगवाय।
इतनी सुनते नर मलिखेने ❋ घोडा बेंदुला दियो सजाय॥
पाग बैंजनी ऊदनिवाली ❋ सो रुपनाको दई गहाय।
भाला दीन्हों नागदौनिको ❋ औ देदई ढाल तलवारि॥
ऐपन वारी ले रुपनाने ❋ औ घोडापर भयो सवार।
चलिभयो रुपना तब लश्करते ❋ औ नरवर गढ पहुँचो जाय
जबहीं पहुँचो दरवाजेपर ❋ दरवानींने कही सुनाय।
कौन कामको तुम आये हो ❋ अपनो नाम देउ बतलाय॥
यह सुनि रुपना बोलन लागो ❋ दरवानीते लगो बतान।
हम तो आये हैं महुबेते ❋ जहँपर बसत रजा परिमाल
ब्याहन आये हम ऊदनिको ❋ रूपन बारी नाम हमार।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ राजै खबरि सुनावौ जाय॥
नेग हमारो जल्दी भेजैं ❋ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय
चारि घरी भरि चलै शिरोही ❋ द्वारे बहै रक्तकी धार॥
इतनी सुनिकै दरवानीने ❋ राजै खबरि सुनाई जाय।
बारी आयो है महुबेते ❋ ऐपनवारी लीन्हे ठाढ॥
नेग आपनो वह माँगत है ❋ द्वारे कठिन चलै तलवारि।
सुनो हाल जब यह नरपतिने ❋ तब मकरँदको लियो बुलाय
बाँधिकै लावौ तुम बारीको ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय
इतनी सुनिकै मकरँद चलिभै ❋ तौलौं रुपना पहुँचो आय॥
करी बन्दगी तब नरपतिको ❋ ऐपनवारी दई चलाय।
लगी कचहरी तहँ नरपतिकी ❋ क्षत्री बैठे आठ हजार॥
राजा बिजयसिंह सिलहटको ❋ तासे नरपति कही सुनाय।
मारौ मारौ या बारीको ❋ विजयसिंह लइ साँग उठाय

चोट चलाई तब रुपना पर ❋ सो रुपनाने लई बचाय ।
भाला लैकै तब रुपनान ❋ बिजयासिंह पर दियो चलाय
लागो भाला विजयासिंहके ❋ औ बहिचली रक्तकी धार।
इच्छा करिदियो सब क्षत्रिनने ❋ औ रुपनाको घेरो जाय ॥
सुमिरन करिकै रामचंद्रको ❋ लै बजरंग बलीको नाम ।
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने ❋ औ क्षत्रिनमें गयो समाय॥
गडबड करिदियो तहँ रुपनाने ❋ बहुतक क्षत्री दियो गिराय
ज्वान पाँच सौ रुपना मारे ❋ रुपना रक्तबरन ह्वइजाय ॥
करी बन्दगी तब नरपतिको ❋ ऐपनवारी लई उठाय ।
ऐंड लगाय दई घोडाके ❋ फाटक निकरि गयो वापार
आवत देखो जब रुपनाको ❋ हँसिकै कही बीर मलिखान
कैसी गुजरी नरवर गढमें ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
बोलो रुपना तब मलिखेते ❋ हमते कछू कही ना जाय ।
कठिन मारु है नरवर गढकी ❋ द्वारे खूब चली तलवारि ॥
देवि शारदा दाहिनि ह्वइगइ ❋ हम करि आये काम तुम्हार
हियाँ कि बातैं तौ हियँ छाँडो ❋ अब नरपतिको सुनो हवाल
बोले नरपति मकरन्दीते ❋ रहिरहि मेरो प्राण घबराय
जिन घर नेगी ऐसे जालिम ❋ तिन क्षत्रिनके कौन हवाल
ब्याहु मुनासिब नाहिं महुबेमें ❋ ओछी जाति बनाफर राय
यह सुनि मकरँद बोलन लागे ❋ दादा धीर धरो मनमाहिं॥
मारि भगैहों मैं आल्हाको ❋ लश्कर कटा दिहौं करवाय।
इतनी कहिकै मकरँद चलिभे ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कडा दियो डरवाय ।
बजो नगारा नरवर गढमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार॥

तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
घोडा हरियल त्यार करायो ❋ मकरँद तुरत भये असवार।
मारू डंकाके बाजत खन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दई जुताय।
चारि घरीक तब अरसामें ❋ लश्कर खत पहूँचो जाय ॥
इक हरकाराको बुलवायो ❋ औ आल्हापै दियो पठाय।
सुनी खबरिजबनुनिआल्हाने ❋ तब मलिखेको लियो बुलाय
खबारि सुनतही नर मलिखेने ❋ लश्कर डंका दियो बजाय।
मारू डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री सजिकै भये तयार ॥
जितने राजा आये बराती ❋ सबने बाँधि लिये हथियार
अपनी अपनी असवारिन पर ❋ सिगरे क्षत्री भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ मारू डंका दियो बजाय।
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें ❋ मुर्चा बन्दी दइ कराय ॥
घोडी बढाय दइ मलिखेने ❋ औ मकरँदपै पहुँचे जाय।
आगे बढिकै मकरँद बोले ❋ औ मलिखेते लगे बतान ॥
कहाँते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो हाल देउ बतलाय।
बोले मलिखे तब मकरँदते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
नगर महोबेते आये हम ❋ जहँपर बसत रजा परिमाल।
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ मलिखे है नाम हमार ॥
ब्याहन आये हम ऊदनिको ❋ राजै खबारि देउ करवाय।
सुनिकै बातैं नर मलिखेकी ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
बोले मकरँद तब मलिखेते ❋ चुप्पै लौटि महोबे जाउ।
धोखे न रहियो नैनागढके ❋ जहँ आल्हाको कियो विवाह
मारि भगैहौं मैं महुबेलौं ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय
यह सुनि मलिखे बोलनलागे ❋ जानो नाहीं हाल तुम्हार ॥

जेहिकी बिटिया नीकी देखैं ❋ जोरा जोरी करैं बिवाह ।
हमते दुसरी जो कोउ राखै ❋ मारैं राज भंग ह्वैजाय ॥
फौज आपनी क्यों कटवैहो ❋ सातों भाँवरि देउ डराय ।
कही हमारी मकरँद मानौ ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनतै मकरँद जरिगे ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय
बत्ती दैदेउ मोरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देइँ उडाय ॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ तुरतै बत्ती दई लगाय ।
धुआँ उडानो आसमानलौं ❋ सबिता रहे धुन्धमें छाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ।
अररर गोला छूटन लागे ❋ सर सर परी तीरकी मारु ॥
सननन सननन गोली छूटैं ❋ कह कह करैं अगिनियाँ बान ।
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ मानौ चोर सेंधि दै जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँटके ❋ सो गिरिपरै चकत्ता खाय ।
गोला लागै ज्यहि घोडाके ❋ चारौ सुम्म गर्द ह्वैजाय ॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरिपरै भरहरा खाय ।
बंबको गोला जिनके लागै ❋ तिनके हाड मांस छुटि जायँ
गोलाजँजिरहाजिनकेलागै ❋ सो लत्ता अस जायँ उडाय ॥
बानको डंडा जिनके लागै ❋ तिनके दुइ खंडा ह्वैजायँ ।
चारि घरीभरि गोला बरसो ❋ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ।
तोपै धँधैं लाली ह्वैगइँ ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ
तोप लडाई पीछे परिगइ ❋ लंबे बन्द करैं हथियार ।
दोनों फौजैं संगम ह्वैगइँ ❋ रहिगयो डेढ कदम मैदान
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
खट खट खट खट तेगा बाजै ❋ बोलै छपक छपक तलवारि
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटि२ गिरैं सुघरुआज्वान

चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायति क्वार॥
उठैं कबंध बीर रण खेलैं ❋ घैहा उठैं कराहि कराहि ।
चारों बयरियनका मसका है ❋ कौंधा चाल चलै तलवारि॥
घैहा डारे रणमें लोटैं ❋ जिनके प्यास प्यास रट लागि
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रट लागि॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत ।
पैदलके सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनते असवार ॥
हाहाकारी रणमें बीतै ❋ कोऊ रँधा भात ना खाय ।
चहला उठिगे हैं चर्बिनके ❋ औ लोथिनके लगे पहार ॥
ढालैं डारीं जो लोहूमें ❋ मानों कछुआसी उतरायँ ।
पगिया डारीं जो लोहूमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार ॥
परी शिरोही हैं क्षत्रिनकी ❋ मानों नागिनिसी मन्नायँ ।
कोऊ रोवत है तिरियनको ❋ अबहीं लाये गौनवाँ चार ॥
कोऊ रोवै घर लरिकनको ❋ कोऊ पुरिखन को चिल्लायँ।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहिचली रक्तकी धार॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ औ रणदुलहा चलै बराय ।
भाँग उतरिगइ भंगेडिनकी ❋ गाँजावाले चले बराय ॥
झुके अफीमी रणके भीतर ❋ पलकैं उघरैं औ रहिजायँ ।
लम्बी धोतिनके पहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह ॥
कोउ २ क्षत्री करैं बहाना ❋ रणमें डारिदेयँ हथियार ।
माटी लैकै सब देहीमें ❋ डरिकै लेयँ बिभूति रमाय ॥
हमैं न मारो हमैं न मारो ❋ हम भिक्षाके माँगनहार ।
हम बैरागी हैं काशीके ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
भिक्षा माँगन हम आये थे ❋ तौलौं चलन लगी तलवारि।
कोउ कोउ क्षत्री रोजगारी बनि ❋ ढालैं लेयँ पीठिपर लादि॥
हमहिं न मारियो हमहिंनमारियो ❋ हम ढालनके बेंचनहार ।

नीचे क्षत्री ऊपर मुरदा ❋ रणमें लोटि रहैं चुप साधि ॥
हाथी बिचलैं रणके भीतर ❋ उन क्षत्रिनपर धरिदेयँ पाँव।
बिनही मारे वे मरिजावैं ❋ धोखे माहिं मौत ह्वइजाय ॥
भगे सिपाही नरवर गढके ❋ अपने डारि डारि हथियार।
घोडा बढायो मकरंदीने ❋ औ मलिखे पै पहुँचो जाय॥
बोले मकरँद नर मलिखेते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
दश दश रुपयाके नौकर हैं ❋ काहे डरिहौ शीश कटाय ॥
हम तुम खेलैं समर खेतमें ❋ दुइमा एक कुरी रहिजाय ।
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❋ अपनी घोडी दई बढाय ॥
बोले मलिखे मकरंदीते ❋ पहिली चोट करो तुम आय
घोडा बढायो मकरंदीने ❋ औ यह कही सुनौ मलिखान
सम्हारिकै बैठो तुम घोडीपर ❋ तुम्हरो काल रहो नियराय ।
इतनी सुनतै घुंडी खोली ❋ छाती रोपि दई मलिखान॥
तीर चलायो मकरंदीने ❋ दहिने निकरि गयो वा पार
बचिगयो लरिका बच्छराजको ❋ दहिने भई शारदा माय ॥
बोले मकरँद नर मलिखेते ❋ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ।
इतनी बात सुनी मकरँदते ❋ तब हँसि कही बीर मलिखान
चोट आपनी औरौ करिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ।
गुस्सा ह्वइकै तब मकरँदने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि॥
करो जडाका जब समुहेपर ❋ मलिखे दीन्हीं ढाल अडाय
तीनि शिरोही मकरँद मारी ❋ उनके अंग न आयो घाव ॥
घोडी बढाई नर मलिखेने ❋ मकरन्दाते कही सुनाय ।
सम्हरौ मकरँद अब घोडापर ❋ तुमपर आयगयो मलिखान
गुर्ज उठायो नर मलिखेने ❋ सो मकरँदपर दियो चलाय।
लगो चपेटा जब घोडाके ❋ मकरँद घोडा गये भगाय ॥
पहुँचे मकरँद रंगमहलमें ❋ बान अजीता लियो उठाय।

काठको घोडा शेल शनीचर ❋ सो मकरँदने लियो उठाय ॥
जायकै पहुँचे तब हिरिया घर ❋ औ हिरियाते कही सुनाय
बडे लडैया महुबेवाले ❋ लश्कर कटा दई करवाय ॥
निमक हमारो तुम खायो है ❋ अब गाढेमें आवौ काम ।
लज्जा राखि लेउ हमरी तुम ❋ अबहीं चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिकै मालिनि चलिभइ ❋ अपनी जादू लई उठाय।
मकरँद पहुँचे जब लश्करमें ❋ मालिनि जादू दई चलाय॥
शेल शनीचर बान अजीता ❋ सो मकरँदने दियो चलाय।
लश्कर बिचलि गयो महुबेको ❋ क्षत्री सुन्नसान ह्वैजायँ ॥
देखि हाल यह नर मलिखेने ❋ अपनी घोडी दई बढाय ।
साँग उठाई नर मलिखेने ❋ मकरन्दी पर दई चलाय ॥
काठको घोडा ऊपर उडिगयो ❋ नीचे साँग गिरी अरराय।
शेल चलायो मकरन्दीने ❋ सो घोडीके लागी जाय ॥
घोडी कबुतरी लँगरी ह्वैगइ ❋ मलिखे उतरिपरे अरगाय।
मलिखे पहुँचे पँचपेडवालग ❋ मकरँद कटा दई करवाय ॥
जितने राजा आये बराती ❋ सबकी कैद लई करवाय ।
सो पठवाय दियो नरवर गढ ❋ नाहीं मसातलक मन्नाय ॥
तडपे आल्हा तब ऊदनिते ❋ तुम करि दई वंशकी हानि ।
याही दिनको हम हटको थो ❋ नाहीं मानी कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा धीर धरौ मनमाहिं ।
मौर उतारि धरो ऊदनिने ❋ शिरपर बाँधि बैंजनी पाग॥
कछनी बाँधी बघ ऊदनिने ❋ कम्मर दुइ बाँधी तलवारि ।
घोडा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर फांदिभये असवार ॥
ऊदनि आये जब लश्करमें ❋ देखी फौज महोबे केरि ।
सोचन लागे उदनि बाँकुडा ❋ अपनो मया मोह बिसराय॥

खैंचि शिरोही लियो कम्मरते ❋ लश्कर धँसे उदैसिंह राय ।
जैसे पान तमोली कतरै ❋ जैसे खेती लुनै किसान ॥
तैसेइ ऊदनि दलमें बिचले ❋ बहुतक क्षत्री दिये गिराय ।
बाइस हौदा खाली करिकै ❋ मकरन्दापै पहुँचे जाय ॥
करो जडाका मकरन्दीपर ❋ मकरँद दीन्हीं ढाल अडाय
ढाल फाटिगइ गैंडावाली ❋ सोने फूल गिरे झहनाय ॥
बोले मकरँद तब ऊदनिते ❋ अब तुम खबरदार होइजाउ
गुर्ज उठायो जब मकरँदने ❋ तब हिरियाने कही सुनाय॥
हाथ न डारियो तुम लरिकापर ❋ इतनी मानो कही हमारि ।
काम तुम्हारो पूरन ह्वइहै ❋ यह कहि जादू लियो उठाय
जादू डारिदियो मालिनिने ❋ घोडा तुरत खडो रहिजाय।
तबतौ मकरँद आगे बढिगे ❋ औ ऊदनिको लीन्हों बाँधि
मकरँद ऊदनिको सँग लैके ❋ नरवरगढमें पहुँचे जाय ।
देखि हाल यह ढेबा चलिभो ❋ औ आल्हापै पहुँचो जाय ॥
बोलो ढेबा तब आल्हाते ❋ दादा सुनो हमारी बात ।
ऊदनि बाँधिलिये मकरँदने ❋ औ नरवरमें राखो जाय ॥
सुनो हाल जब यह आल्हाने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ।
भैया जल्द जाउ महुबेको ❋ सुनवैं खबरि सुनावौ जाय॥
चलि भो ढेबा तब नरवरते ❋ औ महुबेमें पहुँचो आय ।
देवै ठाढी दरवाजे पर ❋ हेरैं बाट बरायत क्यार ॥
तौलौं ढेबा दाखिल ह्वइगो ❋ पहुँचो रंगमहलमें जाय ।
साजि आरती देवै माता ❋ सो ढेबा पर धरी उतारि ॥
हृदय लगाय लियो ढेबाको ❋ बेटा हाल देउ बतलाय ।
कहाँ बरायत तुमने छाँडी ❋ सो तुम हमाईं कहो समुझाय
यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ हमते कछू कही ना जाय ।

जितने राजा गै बरातमें ❋ मकरँद लीन्हें कैद कराय ॥
घायल घोडी भइ मलिखेकी ❋ औ बँधिगये उदैसिंह राय ।
जादू डारिदियो मालिनिने ❋ लश्कर सुन्नसान ह्वइजाय ॥
बहुतक क्षत्री मकरंदीने ❋ रणखेतनमें दिये गिराय ।
अकिले आल्हा हैं लश्करमें ❋ हमको पठयो नगर महोब॥
इतनी सुनतै परलै ह्वइगइ ❋ देवै गिरी मूर्छा खाय ।
जो कहुँ ऊदनि मारे जैहैं ❋ बेडा कौन लगैहै पार ॥
सुनी खबरि जब यह सुनवाँने ❋ तब देवै पै पहुँची जाय ।
पूँछन लागी नर ढेबाते ❋ देवर हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ बरायत तुमने छाँडी ❋ सो तुम हमते कहौ सुनाय ।
यह सुनि ढेबा बोलन लाग्यो ❋ भौजी सुनो हमारी बात ॥
जितनो लश्कर रहै महुबेको ❋ सब नरवरमें दियो गँवाय ।
हिरिया मालिनि नरवर गढकी ❋ तानें जादू दियो चलाय ॥
घोडी घायल भइ मलिखेकी ❋ लश्कर रेनबेन ह्वइ जाय ।
मकरँद बांधिलियो ऊदनिको ❋ औ नरवरगढ राखो जाय॥
इतनी सुनतै रनि सुनवाँने ❋ रनि देवै ते कही सुनाय ।
इन्दल बेटा यहु छोटो है ❋ नहिं मैं देती तुरत पठाय ॥
काम बनैहौं मैं अपनो सब ❋ सासुल धीर धरौ मनमाहिं
सब सामान लियो पूजाको ❋ औ इक साथ लई तलवारि
सुनवाँ चलिभइ रंगमहलते ❋ औ मठियामें पहुँची जाय
करिकै पूजन श्रीदेवीको ❋ अपनो शीश चढावन लागि
आभा बोली तब देवीकी ❋ अपनो कारज देउ बताय ।
हाथ जोरि तब सुनवाँ बोली- ❋ माता सुनो हमारी बात ॥
ऊदनि ब्याहन गये नरवरगढ ❋ मकरँद लीन्हीं कैद कराय ।
जितनी बरायत गइ महुबेते ❋ सबपर जादू दियो चलाय

कठिन मवासी नरवर गढ है ❋ कैसे बन हमारो काम ।
बोली देवी तब सुनवाँते ❋ बान अजीता दिहौं हटाय
काठको घोडा शेल शनीचर ❋ सोऊ तुरतै लिहौं छिपाय ।
लेकै अमृत दियो देवीने ❋ जादू पुरिया दई गहाय
बोली देवी रनि सुनवाँते ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय
यह सुनि चालिभइ सुनवाँ रानो ❋ श्रीदेवीको माथ नवाय ॥
आयकै पहुँची नर ढेबापै ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय
अमृत दिया था जो देवीने ❋ सो ढेबाको दौ पकराय ॥
जल्दी जावो तुम नरवरको ❋ भई सहाय शारदा माय ।
इन्दल बिचले सँग जैबेको ❋ तब सुनवाँने दौ समुझाय
चालि भयो ढेबा दशपुरवाते ❋ औ नरवरमें पहुँचे जाय ।
आल्हा बैठे थे तम्बूमें ❋ ढेबा करी बन्दगी जाय ॥
देवी पहुँची गढ नरवरमें ❋ शेल शनीचर लियो उठाय ।
काठको घोडा निर्बल करदौ ❋ बान अजीता लियो छिपाय
बोले आल्हा नर ढेबाते ❋ भैया हाल देउ बतलाय ।
हाल सुनायो तब ढेबाने ❋ औ अमृतको दियो गहाय ॥
देवी शारदा दहिने ह्वइगइ ❋ पूरन ह्वइ है काम तुम्हार ।
बोले आल्हा तब ढेबाते ❋ अब मलिखेको लावौ जाय
ढेबा चालिभौ तब जल्दीते ❋ पहुँचो जहाँ बीर मलिखान
तुमहिं बुलायो तुनि आल्हाने ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
मलिखे आये पँचपेडवाते ❋ औ आल्हापै पहुँचे आय ।
मलिखे उतरिपरे घोडीते ❋ औ आल्हाको कियो प्रणाम
हाल सुनायो तब आल्हाने ❋ भई सहाय शारदा माय ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोडा पपीहाको सजवायो ❋ तापर चढे बीर मलिखान ।
घोडा मनुरथापर ढेबा चढि ❋ पहुँचे तुरत फौजमें जाय ॥

अमृत छिडकि दियो आल्हाने ❋ लश्कर उठा बनाफर क्यार
सब उठि बैठे महुबे वाले ❋ जिनके मारु मारु रट लागि
हुक्म दैदियो तब आल्हाने ❋ लश्कर आगे दियो बढाय।
झुके सिपाही महुबे वाले ❋ औ फाटक पर पहुँचे जाय
इक हरकारा बदलत आयो ❋ औ मकरँदते कही सुनाय।
लश्कर आयो है महुबेको ❋ औ फाटकको घेरो आय॥
सुनतै चलिभे मकरँद ठाकुर ❋ अलँगा परी ढाल तलवारि।
पहुँच मकरँद तब लश्करमें ❋ तुरतै डंका दियो बजाय॥
चोब नगाराके सुनत खन ❋ लश्कर सजा बिसेने क्यार
मकरँद चलिभे फिरि लश्करते ❋ औ बँगलामें पहुँचे जाय॥
बान अर्जाता शेल शनीचर ❋ सो तहँ नाहीं परो दिखाय।
काठको घोडा निर्बल देखो ❋ मकरँद गये मनाका खाय
घोडा मँगायो मकरँद ठाकुर ❋ तापर तुरत भये असवार।
हिरिया मालिनिको सँग लीन्हों ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय
आये मकरँद रणखेतनमें ❋ तब मलिखेबढिकही सुनाय
कैद छोडिदेउ तुम ऊदनिकी ❋ सातों भाँवरि देउ डराय॥
रारि बढावत हौ नाहक तुम ❋ दूजी करत हमारे साथ।
इतनी सुनतै मकरंदाने ❋ लश्कर हुक्म दियो करवाय
मारि गिरावो इन पाजिनको ❋ सबकी कटा देउ करवाय।
बढे सिपाही नरवरवाले ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार।
खट खट तेगा बाजन लागो ❋ छूटन लगे अगिनियांबान
चलै जुनब्बी औ अहिगर्बी ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटिगिरैंसुघरुआज्वान
चारि घरी भरिचली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि॥

भगे सिपाही नरवरवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
भगत सिपाही मकरँद देखे ❋ अपनो घोडा दियो बढाय
बोले मकरँद नर मलिखेते ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ
गुर्ज चलायो मकरंदीने ❋ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय
बोले मकरँद तब हिरियाते ❋ अब क्यों राखी देर लगाय
इतनी सुनतै हिरिया मालिनि ❋ अपनी जादू लई उठाय ॥
ताकि ताकि जादू मालिनि मारै ❋ सो मलिखेपरना अनिआय
बोले मलिखे तब हिरियाते ❋ हमरो बचन करौ परमान॥
पुष्य नक्षत्र माहिं जन्माहूं ❋ बरहें परी बृहस्पति आय ।
जादू टोनाकी गिनती क्या ❋ शंका हमहिं कालकी नाहिं
यह कहि मलिखे गे हिरियापै ❋ औ मालिनिको दियोगिराय
जूरा काटि लियो जल्दीते ❋ जादू सबै झूंठ परिजाय ॥
यह गति देखी मकरंदीने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ।
घोडा बढाय दियो आगेको ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
करो जडाका नर मलिखे पर ❋ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय
ढालकि औझड मलिखे मारी ❋ औ मकरँदको दियो गिराय
मकरँद गिरिगे जब धरती पर ❋ घोडा सात कदम हटिजाय
तुरतै मकरँदको बांधो तहँ ❋ औ आल्हापै पहुँचो जाय
फौज भागि गइ नरवर गढकी ❋ राजै खबरि पहूँची जाय ।
खबरि सुनतही राजा नरपति ❋ बहुत गरीबी भेष बनाय ॥
आये नरपति तुनि आल्हापै ❋ औ आधीनी कही सुनाय
तुम सब लायक महुबेवाले ❋ सातौं भाँवरि दिहौं डराय॥
कैद छांडिदेउ मकरन्दीकी ❋ तुम्हरे काम सिद्धि ह्वइजायँ
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❋ तुम ऊदनिको देउ छुडाय
कदँ छोडिदेउ सब राजनकी ❋ सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
यह सुनि तुरतै राजा नरपति ❋ सबकी कैद दई छुडवाय ॥

केदृते ऊदनि ठाकुर ❋ सो आल्हापै पहुँच आय ।
आल्हाछाँडिदियो मकरँदको ❋ तब नरपातन कही सुनाय
साइति पूँछि लेउ पंडितते ❋ आल्हा पडित लियो बुलाय
चूडामणि पंडित तब आये ❋ औ आल्हाते लगे बतान ॥
देवा लग्न बहुत नीकी है ❋ अबहीं त्यारी लेउ कराय ।
इतनी सुनिकै नरपाति चलिभये ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
मडवा छायो तब जल्दीते ❋ मोतिन चौंक दई पुरवाय ।
कलश सोवरनको धरवायो ❋ औ सखियनका लियो बुलाय
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ पंडित वेद उचारन लाग ।
तौलौं आये माहिल राजा ❋ सो नरपातिते लगे बतान॥
ब्याह जो करिहौ तुम ऊदनि संग ❋ कोउ न पियै घडाको पानि
दागु लाग है रजपूतीमें ❋ ओछी जाति बनाफर कारि
यतन बतावैं हम तुमको यक ❋ सो तुम करौ बिसेन राय ।
जितने घरौआ हैं महुबेके ❋ सो मडयेमें लेउ बुलाय ॥
शूर कोठरियनमें बैठावौ ❋ सबक मूँड लेउ कटवाय ।
बात मानिलइ यह माहिलकी ❋ क्षत्री दुइ हजार बुलवाय ॥
तिनहिं छिपाय दियो कोठारिनमें ❋ औ नेगिनको सग लिवाय
मकरँद पहुचे तब बरातमें ❋ औ आल्हाते कही सुनाय॥
जितने घरौआ हैं तुम्हरे सँग ❋ सो सब चलौ हमारे साथ ।
चली पालकी तब ऊदनिकी ❋ संगहि चले घरौआ ज्वान॥
जबहीं पहुँचे सब महलंनमें ❋ फाटक बन्द दियो करवाय
अहनी ताले उन डरवाये ❋ औ फिरि नेग होन सब लाग
कन्यादान होन लागो तहँ ❋ पंडित गाँठि दइ जुरवाय ।
पंडित होम करावन लागे ❋ भाँवरि परन लगी ज्यहिकाल
पहली भाँवरिके परतैखन ❋ मकरँद खैंचि लइ तलवारि।

चोट चलाई जब ऊदनिपर ❋ मलिखे दीन्हीं ढाल अडाय
दुसरी भाँवरिके परतैखन ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ।
चली शिरोही तब मडये तर ❋ औ बहि चलि रक्तकी धार॥
टूक टूक मडयक ह्वइगे ❋ खंभा गिरो भूमिपर जाय ।
मडवा गाडो तब साँगनको ❋ ढालन मंडप दियो छवाय॥
कैद करालियो मकरंदीको ❋ सातौ भाँवरि लई डराय ।
हाथ जोरिकै नरपति बोले ❋ तुम समरत्थ बनाफर राय॥
कैद छाँडिदेउ मकरंदीकी ❋ अबहीं बिदा दिहौं करवाय
मकरंद छोंडे तब आल्हाने ❋ औ राजाते कही सुनाय ॥
भात खवाय देउ हमको तुम ❋ औ फिरि बिदा देउ करवाय
यह सुनि खबरि करी महलनमें ❋ तुरतै भयो भात तैयार ॥
बोले नरपति तब आल्हाते ❋ तुम चालि जेइँ लेउ ज्योंनार
इतनी सुनिक अपने अपने ❋ सबने बांधि लिये हथियार
बोले नरपति तब बिनती करि ❋ हमरे कुला यहै ब्योंहार ।
दूसरी करिहैं ना तुमते हम ❋ तुम सब छोरि धरौ हथियार
बोले मलिखे तब नरपतिते ❋ तुम घटि करौ हमारे साथ।
गंगा कीन्हीं तब नरपतिने ❋ तब उन छोरि धरे हथियार॥
लैकै गडुआ चले घरौआ ❋ औ चौकामें बैठे जाय ।
भात परोसो सबके आगे ❋ मकरँद क्षत्री लिये बुलाय॥
भात खान नहिं तिन पाया था ❋ तौलौं चलन लगी तलवारि
लैकै गडुआ उठे महोबिया ❋ औ क्षत्रिनको मारन लाग॥
तीनि घडी भरि गडुअन मारो ❋ सबने पाटा लिये उठाय ।
हनिकै पाटा ज्यहिके मारैं ❋ त्यहि धरतीमें देयँ गिराय
क्षत्री भागि गये नरवरके ❋ तब नरपतिने कही सुनाय ।
अब हम जानी अपने मनमें ❋ तुम गाढेमें ऐहौ काम ॥

ऐसे क्षत्री महुबे उपजे ❋ काहे न राज करैं परिमाल।
बोले आल्हा तब नरपतिते ❋ अपने नेगी लेउ बुलाय॥
नेगी बुलाये तब राजाने ❋ आल्हा गहनो दियो बँटाय।
आई पालकी दरवाजेपर ❋ फुलवा बिदा होन तब लागि
तोडा सात लिये मोहरनके ❋ सो ढेबाने दियो लुटाय।
बिदा भई तब रनि फुलवाकी ❋ पलकी चली बरायत जाय॥
जबहीं पहुँचे सब लश्करमें ❋ मलिखे मेख दई उखराय।
तम्बू लदिगे सब छकरनमें ❋ लश्कर कूच दियो करवाय॥
आई बरायत जब सागरपर ❋ सबने डेरा दिये डराय।
रुपना बारी गयो महुबेमें ❋ मल्हने खबरि सुनाई जाय॥
भई खबरि तब रंगमहलमें ❋ आये ब्याहि उदैसिंह राय।
सखियाँ बुलवाईं मल्हनाने ❋ महलन होय मंगलाचार॥
भयो बुलौआ बध ऊदनिको ❋ आवै साथ फुलामति रानि
आई पालकी दरवाजेपर ❋ परछानि करी मल्हनदे रानि
बहू उतारी रनि मल्हनाने ❋ औ महलनमें राखी जाय।
दान दक्षिणा दे सबहीको ❋ घरघर भयो मंगलाचार॥
अनँद बधाई बाजन लागीं ❋ महुबे दगन सलामी लागि।
जितने राजा आये बराती ❋ तिनकी बिदा दई करवाय॥
ऐसे ब्याह भयो ऊदनिको ❋ सो हम लिखिकै दियो सुनाय
कोउ कोउ गावत हैं अम्मर गढ ❋ पै यह साँचो भयो विवाह
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लिखिहों ब्याह वीर सुलिखान
कान लगाय सुनो यारा सब ❋ जैसे भयो युद्ध मैदान॥

इति नरवरगढकी लडाई (ऊदनिका ब्याह) समाप्त।

॥ श्रीः ॥

कमायूँगढकी लडाई।

मुलिखानका ब्याह।

पहले सुमिरौं श्रीगणपतिको ❋ जो गिरिजाके राजकुमार।
पिता जो कहिये शिवशंकरको ❋ जिनको यश छायो संसार
सदा भवानी दाहिनी कहिये ❋ अरु सन्मुख पर सदा गणेश
पाँच देव मिलि रक्षा करिहैं ❋ नित प्रति ब्रह्मा विष्णु महेश
चरण लागिक जगदम्बेके ❋ जो नित बुद्धि करैं परकाश
ऋद्धि सिद्धिको पूरण करिहैं ❋ जेहिकी ज्योतिदिपैं आकाश
काली सुमिरौं कलकत्तेकी ❋ जाको रूप न वरणो जाय।
मनके कारज पूरण करिदेउ ❋ चढिकै सिंह सवारी माय॥
सुमिरौं देवी पुनियाँ गिरिकी ❋ रक्षा करैं दासकी आय।
सुमिरौं चंडी धौलागढकी ❋ मुम्बा देवि मुम्बई माय॥
पुनि मैं सुमिरौं देवि ललिता ❋ हैं जो नैमिषारके माहिं॥
चक्रतीर्थकी है बुडकी जहँ ❋ पर्वी किये पाप नशि जाहिं
मात संकटा हैं लक्ष्मीपुर ❋ मन्दिर मात शीतला क्यार॥
जिनके दर्शनते सब पातक ❋ तुरतै नाश होत तेहि बार।
ज्वाला सुमिरौं कोट कांगडे ❋ हिरदै करैं ज्ञान उजियार॥
देश कामरूकी कामक्षा ❋ सुमिरौं बारबार शिर धार।
विन्ध्याचलकीविन्ध्यवासिनी ❋ देवी रटौं नित्य धरि ध्यान
अन्नपूरणा श्रीकाशीजी ❋ बाला त्रिपुर सुन्दरी जान॥
रक्षा करणी चित भ्रम हरणी ❋ सबसुखकरणिआदिमहरानि।
पूरण कीजै मनोकामना ❋ निशिदिनदासआपनोजान
पुनि मैं सुमिरौं श्रीगंगेजी ❋ भागीरथी नाम विख्यात।

सकल जगतकी तारनहारी ❋ माता धर्म तुम्हारे हाथ ॥
काशी कनवज कानपूर अरु ❋ सागर सेतु और हरद्वार ।
गंगाजीके तेज पुंजमें ❋ जारि जारि पाप होतसब छार।
पाप नशावनि सन्त उबारनि ❋ नितअस्नान देति सुखधाम
शुभ वर दीजे गंगे माई ❋ पूरण सभी कीजिये काम ॥
मनसे सुमिरों सब दुष्टनको ❋ हैं जो युगन युगन विख्यात।
सतयुग सुमिरों हिरण्याक्षको ❋ त्रेता दशकन्धर उत्पात ॥
द्वापर सुमिरौं कंसासुरको ❋ जिसने युद्ध कृष्णसों कीन।
कलिमें सुमिरौं मैं माहिलको ❋ भारत खंड क्षीण करि दीन॥
माहिल भूपतिकी चुगुलिनमें ❋ राजा बिगरिगये परिमाल ।
चुगुली करि करि देश नशायो ❋ क्षत्री भये कालके गाल ॥
भारत युद्ध कियो दुर्योधन ❋ सब नशिगये शूर बलवान ।
सोई प्रगट भये कलियुगमें ❋ करते क्यों न युद्ध सामान॥
जो नहिं लडते यह आपुसमें ❋ करते मित्रभाव संसार ।
यवन राज होता नाहिं जगमें ❋ होतो नाहिं कष्ट नर नारि॥
धन्य राज है अँगरेजनको ❋ जिनके राज सर्व दुख नाश।
सिंह गायहिलमिलिवनविचरैं ❋ एकहि घाट बुझावैं प्यास ॥
धान पान महुबेमें उपजैं ❋ ना महुबेमें होय उखारि ।
क्षत्री उपजैं ना आल्हा सम ❋ ना फिरि तपैं चन्द्र सरदार ॥
छोंडि सुमिरनी अब आगे मैं ❋ बरणौं ब्याह बीर सुलिखान।
वर्षा ऋतुमें प्रेमभावत ❋ यारो पढौ सुमिरि भगवान॥
एक समैया अपने मनमें ❋ कियो विचार वीर सुलिखान।
दर्शन करिहौं शिवशंकरके ❋ ह्वै हौं सुखी पाय वरदान ॥
भरिहौं काँवरि गंगाजलकी ❋ शंकर शीश चढैहौं जाय ।
यह प्रणकरिकैसुलिखेचलिभये ❋ पहुँचे नगर महोबे जाय ॥

जहाँ कचहरी चन्देलेकी * तहँपर गये वीर सुलिखान ।
करी बन्दगी परिमालैको * सन्मुख खडे छाँडि अभिमान
नजरि बदलिगइ चन्देलेकी * औ सुलिखे तन रहे निहारि ।
बैठौ बेटा बच्छराजके * अपने मनको कहा विचारि ॥
कौन कामको तुम आये हौ * बेटा हाल देउ बतलाय ।
हाथ जोरि तब सुलिखे बोले * हमरी खता माफ ह्वै जाय ॥
यक अभिलाखा है हमरे मन * ददुवा हुक्म देउ फरमाय ।
दर्शन करिकै बद्रीनाथके * शिवको काँवारि देउँ चढाय ॥
हँसी खुशीसे आज्ञा दैदेउ * अपनो कूच जाउँ करवाय ।
इतनी सुनिकै राजा बोले * बेटा बैठि रहौ हरगाय ॥
उमिरि तुम्हारी अति थोरी है * ताते मानौ कही हमार ।
यह सुनि सुलिखे बोलनलागे * ददुआ चहिये हुक्म तुम्हार
जो नहिं आज्ञा मोको देहौ * तौ मैं देहौं प्राण गँवाय ।
इतनी सुनते चन्देलेने * नर ढेबाको लियो बुलाय ॥
यह कह दीन्हीं तब ढेबासे * याको तीरथ देउ कराय ।
संगहि जावो तुम सुलिखेके * मगमें बहुत रहेउ हुशियार ॥
हुक्म पायकै तब ढेबाने * सुलिखे लीन्हें संग लिवाय ।
जायकै पहुँचे गढ सिरसाम * जहँ दरबार वीर मलिखान ॥
करी बन्दगी नर मलिखेको * औ सब हाल कह्यौ समुझाय ।
खर्च मँगाय देउ सुलिखेको * इनको तीरथ लाउँ कराय ॥
इतनी सुनिकै नर मलिखेने * बहुतक समुझायो सुलिखान ।
हाथ जोरिकै सुलिखे बोले * दादा सुनौ वीर मलिखान ॥
हम प्रण कीन्हा है अपने मन * जैहौं बद्रिनाथ दरबार ।
सोचन लागे मन मलिखे तब * ये ना मनिहैं कही हमार ॥
सुलिखे ढेबाको सँग लेकै * पहुँचे रंग महलमें जांय ॥

माता ब्रह्माके समुहेपर ❋ मलिखे हाथ जोरि रहिजाय
त्यार भये सुलिखे तीरथको ❋ नाहीं मानत कही हमार।
जो अब हुक्म देउ माता तुम ❋ सोई मानौं हुक्म तुम्हार॥
इतनी सुनिकै ब्रह्मा माता ❋ तब सुलिखेसे लगी बतान।
कौन बातके तुम भूँखे हो ❋ जो तीरथको भये तयार॥
हाथ जोरिकै सुलिखे बोले ❋ माता सुनौ हमारी बात।
दर्शन करिहौं बद्रिनाथके ❋ शिवको काँवारि दिहा चढाय
आज्ञा दैदेउ अपने मुखसे ❋ माता पैयाँ परौं तुम्हार।
सुनतै ब्रह्मा आज्ञा दीन्हीं ❋ मलिखे दीन्हों खर्च मँगाय
लियो खजाना बारह खच्चर ❋ औ सँग लीन्हें साठि सवार
ढेबा आगमको जानत था ❋ योगिन गुदरी लई सिलाय
काँवारि लैकै रतन जडाऊ ❋ ऊपर मोती जडे बनाय।
लैकै शीशा गंगजालको ❋ सो काँवारिमें दियो धराय॥
पूजन करिकै शिव शंकरको ❋ जगदीश्वरको शीश नवाय
लैके काँवारि सुलिखे चलिभे ❋ अपनो कूच दियो करवाय
जायके पहुँचो नगर महोबे ❋ जहँपर हती मल्हनदे रानि
चरण लागिकै रानि मल्हनाके ❋ सुलिखे कूच दियो करवाय
धीरे धीरे एक मासमें ❋ पहुँचे हरद्वारमें जाय।
गौमुख गंगाजल भरवायो ❋ सो काँवारिमें लियो धराय
डेढ महीनाके बीतेपर ❋ पहुँचे बद्रिनाथमें जाय।
डेरा डारि दिये तीरथमें ❋ सुलिखे शिव पूजनको जायँ
गंगाजल काँवारिसे लैकै ❋ मठके भीतर पहुँचे जाय।
शिव अन्हवायो गंगाजलसे ❋ चन्दन अक्षत दिये चढाय
बिल्वपत्र अरु फूल चढाये ❋ धूप आरती धरी उतारि।
बहु नैवद्य धरी शंकर ढिग ❋ हाथ जोरिकै विनय सुनाय

अस्तुति करिकै शिवशंकरकी ❋ सुलिखे कूच दियो करवाय
राह भूलिगै गढ महुबेकी ❋ पहुँचे शहर कमायूँ जाय ॥
डेरा डारि दिये सुलिखेने ❋ तब ढेबाने कही बुझाय ।
कूच कराय देउ जलदीसे ❋ इतनी मानौ कही हमार ॥
बोले सुलिखे तब ढेबासे ❋ नीको शहर कमायूँ क्यार ।
पाँच मुकाम यहाँ करि हैं हम ❋ छठयें कूच दिहैं करवाय ॥
राति बसेरो करि दोनोंने ❋ भोरहि उठे वीर सुलिखान
सपनो देखो जो सुलिखेने ❋ सो ढेबासे कह्यो सुनाय ॥
एक बाग सुन्दर देखा हम ❋ मेवा दाख छुहारे क्यार ।
तामें आई सात सखी सँग ❋ सुन्दर एक नारि सुकुमारि
नाम कलावति वाको कहिये ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
फूलहार हमको पहिरायो ❋ औ हमरे सँग कियो करार॥
कैतो होय व्याह तुम्हरे सँग ❋ की मैं जहर खाय मरिजाउँ
सपनो ऐसा हमने देखो ❋ ताको करिहौ कौनु उपाय॥
यह सुनि ढबा बोलन लागो ❋ सुलिखे कूच देउ करवाय ।
झूँठो सपनो यह देखो तुम ❋ ताते भरम देउ बिसराय ॥
बेटि कलावति रतनसिंहकी ❋ सुनते अग्निज्वाल ह्वैजाय
कैद कराय लिहै दोनोंकी ❋ जालिम रतनसिंह नरराय॥
कूच कराय देउ हियँनाते ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय
सुलिखे बोले हाथ जोरिकै ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
कलावतीको हम देखैंगे ❋ चाहैं प्राण रहैं कै जायँ ।
सोचि समझिक तब ढेबाने ❋ योगिन गुदरी लई निकारि
बाना बदलो रजपूतीको ❋ योगिन बाना लियो बनाय
सब हथियार बाँधि दोउनने ❋ ऊपर गुदरी लई लौटाय ॥
रामानन्दी तिलक लगायो ❋ हाथ सुमिरनी लई उठाय ।

डमरू लीन्हों ढेबा बहादुर ❋ बँसुरी लई वीर सुलिखान ॥
डगरत चलिभये दोनों योगी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
धीरे धीरे दोनों योगी ❋ बीच बजार पहूँचे जाय ॥
राग रागिनी गावन लागे ❋ अपने बाजा दिये बजाय ।
सब नर नारी मोहित हुइगईं ❋ अपनी अपनी सुरति भुलाय
मदन सेठ था वा नगरीमें ❋ वाने योगी लियो बुलाय ।
बोले मदन सेठ योगिनते ❋ जोगिव हाल देउ बतलाय॥
कौन देशसे तुम आये हौ ❋ आगे कौन देशको जाउ ।
नाम तुम्हारे क्या कहियत हैं ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
इतनी सुनत ढेबा बोलो ❋ मदन सेठसे कही सुनाय ।
देश हमारा बंगाला है ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
दर्शन करिहैं जगदम्बाके ❋ हमरो जन्म सफल ह्वयजाय
सुनि यह बातें मदन सेठने ❋ उन योगिनसे कही सुनाय
करो तमाशा तुम ड्योढीपर ❋ तुमको भिक्षा देउँ मँगाय ।
डमरू बजाई तब ढेबाने ❋ सुलिखे बँसुरी दई बजाय ॥
राग रागिनी गावन लागे ❋ जिनमें उठैं बीर बैताल ।
सुलिखे नाचे तेहि ड्योढीप ❋ सब नर नारी भये बिहाल॥
तान मरोरा गावन लागे ❋ ठुमरी सोरठ औ कल्यान ।
धुरपद गावैं औ तिल्लाना ❋ गजल पर्ज पर तोरैं तान ॥
नर नारी सब मोहित हुइगये ❋ तनमन की गये सुरत भुलाय
कान अवाज परी पदुमाके ❋ अपनी बाँदी लई बुलाय ॥
पूछन लागी तब बाँदीसे ❋ को यह कियो तमाशा आय
कहाँपे डमरू यह बाजत है ❋ कौने राग अलापे आय ॥
खबरि लै आवो तुम जल्दीसे ❋ मोको हाल बतावो आय ।
उनहीं पायँन बाँदी चलिभइ ❋ औ जोगिन तैं पहुँची जाय॥

देखिकै सूरति उन जोगिनकी * बाँदी मोहि मोहि रहिजाय ।
चारि घरी भरि देखि तमाशा * उन योगिनसे कही सुनाय
कहाँसे आये औ कहँ जैहौ * बाबा हाल देउ बतलाय ।
सुनतै जोगी बोलन लागे * बाँदी सुनौ बात मनलाय ॥
देश कामरूसे आये हम * आगे हिंगलाजको जायँ ।
इतनी सुनिकै बाँदी चलिभइ * पहुँची रंगमहलमें जाय ॥
कही हकीकति उन जोगिनकी * रानी बहुत खुशी ह्वै जाय ।
फिरिकै रानी बोलन लागी * बाँदी बार बार बलि जाउँ॥
जल्दी लावो उन जोगिनको * महलन करैं तमाशा आय ।
उनहीं पायँन बाँदी लौटी * औ जोगिनको लाई बुलाय
देखी सूरति तब जोगिनकी * रानी मोहि मोहि रहि जाय।
बोली रानी तब जोगिनसे * जोगिउ साँची देउ बताय ॥
कौन आपदा तुमपर परिगइ * बारे डारे मूँड मुँडाय ।
सुरति तुम्हारी ऐसी लागै * मानौं रूप क्षत्रियन क्यार॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागो * रानी घटिगो ज्ञान तुम्हार।
जो कछु कर्म लिखा बिधनाने * ताको कौन मिटावन हार॥
पूर्व जन्मकी जो करनी है * ताको फल पावत संसार ।
बहुत [illegible]ायो मात पिताने * मेटै कौन रेख करतार ॥
सुनि [illegible]ली रानी जोगिनसे * अबतुम नाचदेउ दिखलाय
इतनी सुनतै दोनों जोगी * अपने राग सुनावन लाग॥
डमरू बाजै नर ढेबाकी * बँसुरी बजै वीर सुलिखान ।
राग रागिनीकी ध्वनि छाई * सबने सुनी सुरीली तान ॥
मोहित ह्वैके रानी बोली * जोगिउ भोजन देउँ मँगाय ।
सो तुम जीमि लेउ महलनमें * हमरो जन्म सुफल ह्वै जाय
इतनी सुनिकै योगी बोले * औ रानीसे कही सुनाय ।

महलन भोजन जो हम जीमैं ❋ हमरो जोग भंग ह्वै जाय ॥
भीख मँगाय देउ महलनते ❋ जोगी चले यहाँसे जायँ ।
गुरू हमारे हैं डेरनमें ❋ तहँपर भोजन होयँ तयार ॥
राह निहारैं गुरू हमारी ❋ साँचे मानो बचन हमार ।
भोग लगावैं वे ठाकुरको ❋ तब हम भोजन पावत माय
सुनते रानी बोलन लागी ❋ जोगिउ मानो कही हमार ।
तनिक विलमि जाउ तुम ड्योढीमें ❋ मैं बेटीको लेउँ बुलाय
देखि तमाशा बेटी लेवै ❋ तब हम भिक्षा देइँ मँगाय ।
सुखिया बाँदीको भेजो तब ❋ कलावतीको लाउ बुलाय ॥
बाँदी पहुँची सतखंडा पर ❋ औ बेटीसे कही सुनाय ।
तुमहिं बुलायो है रानीने ❋ जलदी चलो हमारे साथ ॥
द्वै योगी महलन आये हैं ❋ उनने करो तमाशा आय ।
रूपके आगर वे जोगी हैं ❋ जिनके रूप न बरने जायँ ॥
इतनी सुनते कलावतीने ❋ पानको डब्बा लियो उठाय।
बीरा बनायो पाँच पानको ❋ सो मुट्ठीमें लियो दबाय ॥
उनहाँ पायँन बेटी चलिभइ ❋ पहुँची रंग महलमें जाय ।
जहाँ जोगिया दोनों ठाढे ❋ बेटी तहाँ पहूँची जाय ॥
आवत देखो जब बेटीको ❋ पदुमा लीन्हों कंठ लगाय ।
फिरि बैठाय दियो मचियापर ❋ औ जोगिनसे कही सुनाय
नाच दिखाय देउ जोगिउ तुम ❋ बेटी देखि तमाशा लेइ ।
इतनी सुनतै ढेबा बहादुर ❋ अपनी डमरू दई बजाय ॥
सुलिखे लीन्ही बेनु बांसुरी ❋ कजरी राग अलापन लाग ।
बजी बाँसुरी जब सुलिखेकी ❋ महलन दई मोहनी डारि ॥
नजरि बदलि गइ कलावतीकी ❋ औ सुलिखे तन रही निहारि
बीरा दीन्हों तेहि सुलिखेको ❋ सुलिखे बीरा लियो दबाय

चारौ नना इकमिल ह्वैगये ❀ दोनों गिरे मूरछा खाय ॥
बेटी गिरतै परलै ह्वैगइ ❀ औ जारि मरी पदुमदे रानि।
रूप देखिकै मारि बेटीको ❀ जोगी धरनि गिरो मुरझाय
इन छल कीन्हों आय महलमें ❀ ये राजनके राजकुमार ।
जोगी नाहीं ये भोगी हैं ❀ बाँदी जाउ राजदरबार ॥
बोलिकै लावो तुम राजाको ❀ इनकी खाल लेउँ खिंचवाय
इतनी सुनतै ढेबा तडपो ❀ औ रानीसे कही सुनाय ॥
छोटो जोगी जो मरि जैहै ❀ महलन आगी दिहौं लगाय।
रानी बोली तब ढेबासे ❀ यह तुम हालदेउ बतलाय ॥
काहे जोगी मूर्च्छित ह्वैगो ❀ काहे गिरो धरनि भहराय ॥
बात बनाई तब ढेबाने ❀ औ रानीसे कही सुनाय ।
सवा पहर भरि जोगी नाचो ❀ नाहीं कियो अन्न जल पान ॥
बीरा दीन्हों जो बेटीने ❀ तामें दई तमाखू डारि ।
पकि लागिगइ सो जोगीके ❀ तब गिरिपरो धरनि मुरझाय
सुनतै रानी बोलन लागी ❀ जोगी बोलत बात बनाय ।
देखि रूप मेरी बेटीको ❀ जोगी गिरो धरनिपर जाय ॥
अबहिं बुलैहौं कुँवरसिंहको ❀ तुम्हरी कैद लिहौं करवाय ।
इतनी सुनिकै ढेबा बोलो ❀ रानी अक्किल गई तुम्हार ॥
धोखे न रहियो भिखमंगनके ❀ जो धमकीमें जायँ डेराय ।
जो असराप देउँ महलनमें ❀ तौ रनिवास भस्म ह्वै जाय ॥
भेड बकरिया हम नाहीं हैं ❀ रानी कान छुये मिमियायँ ।
हैं हम जोगी बंगालेके ❀ मारैं राज भंग हुइ जाय ॥
सुनिकै बातैं नर ढेबाकी ❀ रानी बहुतै गई डेराय ।
तौलौं जगी मूरछा तुरतै ❀ जागे जबहिं वीर सुलिखान
भिक्षा दीन्हीं तब रानीने ❀ जोगिन बिदा दई करवाय ।

जगी मूरछा जब बेटीकी ❋ रानी लीन्हों कंठ लगाय॥
पूछन लागी तब बेटीसे ❋ बेटी भेद देउ बतलाय।
लागि तमाखू गइ जोगीको ❋ सो गिरिपरो धरनि भहराय
कौनसो कारण तुमको ह्वैगो ❋ जो गिरिपरी तडाका खाय।
बेटी बोली महतारीसे ❋ माता सुनौ हमारी बात॥
ऐसे जोगी कबहुँ न देखे ❋ इनके रूप न बरने जायँ।
सोच आय गौ मेरे मनमें ❋ ताते बदन गयो कुम्हिलाय॥
डगरत चलिभये दोनों जोगी ❋ अपने डेरन पहुँचे जाय।
राति बसेरो करि डेरामें ❋ भोरहि कूच दियो करवाय
धीरे धीरे पंद्रह दिनमें ❋ पहुँचे नगर महोबे जाय।
खबरि फैलिगइ सिरसा गढमें ❋ आये लौटि वीर सुलिखान
सुलिखे गाफिल भये महुबेमें ❋ रनि मल्हनाने सुनो हवाल
तुरतै बुलवायो ढेबाको ❋ पूँछो सबहि राहको हाल॥
कैसे गाफिल यह सुलिखे हैं ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
इतनी सुनतै ढेबा बोलो ❋ माता सुनौ हमारी बात॥
शहर कमायूँ है उत्तरमें ❋ जहँ है रतनसिंहको राज।
दर्शन करिकै बद्रिनाथके ❋ हमने कूच दियो करवाय॥
राह भूलिगये गढ महुबेकी ❋ पहुँचे शहर कमायूँ जाय।
राति बसेरो करि नगरीमें ❋ भोरहिं उठे जबहिं सुलिखान
सपनो देखो जो सुलिखेने ❋ सो सब हमसे कहो सुनाय।
तब समुझाया हम सुलिखेको ❋ अबहीं कूच देउ करवाय॥
कही न मानी यक सुलिखेने ❋ जोगी बने वीर सुलिखान।
घर घर शहर कमायूँ माँगो ❋ पहुँचे रतनसिंह घर जाय॥
नृपकी कन्या कलावती है ❋ जाको रूप न बरणो जाय।
रूप देखिकै वा कन्याको ❋ मोहित भये वीर सुलिखान

जैसे तैसे हम लै आये ❋ अब कछु ताको करौ उपाय
गाफिल सुलिखे यहि कारण हैं ❋ साँची मानौ कही हमार॥
इतनी सुनतै रानि मल्हनाने ❋ सिरसा खबरि दई पहुँचाय
सुनी खबरि जब नर मलिखेने ❋ अपने मनमें कीन्ह विचार
तुरत कबुतरीको मँगवायो ❋ तापर फाँदि भये असवार ।
घरी चारि केरे अरसामें ❋ पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
देखी सूरति जब सुलिखेकी ❋ सोचन लाग वीर मलिखान
सुनी खबरि आल्हा ऊदनने ❋ सोऊ तहाँ पहुँचे आय ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ पहुँचे रंगमहलम जाय ।
आवत देखो जब लरिकनको ❋ मल्हना लीन्हों कंठ लगाय
दियो बैठका इन चारोंको ❋ चारों बैठि गये हरगाय ।
तब रानि मल्हना बोलन लागी ❋ बेटा सुनौ हमारी बात ॥
करौ तयारी अब बरातकी ❋ औ सुलिखेको करौ विआहु
यह सुनि मलिखे पूछन लागे ❋ माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन शहरमें व्याह रचायो ❋ कहँ बरातको करैं तयार ।
बोली मल्हना तब मलिखेते ❋ बेटा मानौ वचन हमार ॥
शहर कमायूँ है उत्तरमें ❋ जहँपर रतनसिंहको राज ।
ताकी बेटी कलावती है ❋ ताके संग करौ यह काज ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ माता सुनौ बात मन लाय
केहिक छाती है बज्जुरकी ❋ रतनसिंहसे माँडै रारि ॥
बडे लडैया पर्वतवाले ❋ जिनसे लडे न पावैं पार ।
तोप रहकलाकी गति नाहीं ❋ औ असवार कहाँ ह्वै जायँ
इतनी सुनतै ऊदनि बोले ❋ औ मलिखेसे कही सुनाय।
मुखसे हीनी दादा बोलत ❋ ऐसा तुमहिं मुनासिब नाहिं
मारि शिरोहिनसे मुख तोरौं ❋ औ सुलिखेको लाऊँ व्याहि

करौ तयारी तुम बरातकी ❋ तुम्हरे काम सिद्धि ह्वै जायँ
न्योता भेजौ सब राजनको ❋ औ सबहीको लेउ बुलाय।
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❋ यक हरकारा लियो बुलाय॥
लिखी हकीकति रतनसिंहको ❋ औ विवाहको लिखो हवाल
करौ तयारी तुम विवाहकी ❋ व्याहन आवत हैं सुलिखान
पाती लिखिकै दइ धावनको धावन कूच दियो करवाय।
जायकै पहुँचा शहर कमायूँ जहँपर रतनसिंहको राज
लगी कचहरी रतनसिंहकी ❋ धावन जाकै करी सलाम
पाती दीन्हीं जो आल्हाने ❋ सो गद्दीपर दई चलाय॥
खोलिकै पाती राजा बाँची ❋ आँकुइआँकुनजारिकारिजायँ।
पाती पढतै परलै हुइगइ ❋ नैना अग्निज्वाल ह्वै जायँ॥
तुरत जवाब लिखो पातीको ❋ पढियो याहि बनारफर राय
कबसे तुम सब भये तरवारिहा ❋ कबसे कमर धरी तलवारि॥
घरमें मनके बढिया ह्वै गये ❋ नाहीं परो मर्दसे काम।
धोखे न रहियो नैनागढके ❋ हमरो रतनसिंह है नाम॥
मारि निकारा म धूरेसे ❋ सबकी कटा देउँ करवाय।
लिखीहकीकतियहआल्हाको ❋ औ धावनको दइ गहाय॥
लैकै पाती धावन चलिभो ❋ औ महुबेमें पहुँचो आय।
करी बंदगी तुनि आल्हाको ❋ पाती गद्दी दई चलाय॥
खोलिकै पाती आल्हा बाँची ❋ पढतै होश बन्द हुइ जायँ।
देखि अनमनो नर मलिखेने ❋ तुनि आल्हासे कही सुनाय
काहे दादा शोच करत हो ❋ मारौं राजभग हुइ जाय।
करौ तयारी अब बरातकी ❋ मनको शोच देउ बिसराय
इतनी सुनते तुनि आल्हाने ❋ सब राजनको लिखो हवाल
न्योता भेजिदियो राजनको ❋ अपनी करन तयारी लाग॥

जितनो लश्कर था महुबेको ❋ सो सजवायो वीर मलिखान
जितने राजा ब्यौहारी थे ❋ सो महुबेमें पहुँचे आय ॥
सवा लाख सब सजी बरायत ❋ शोभा एक न बरणी जाय
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ महलन भये मगलाचार ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोडा बेंदुलाको सजवायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोडी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढे वीर मलिखान ।
घोडा मनुरथाको सजवाया ❋ तापर ढेबा भयो सवार ॥
घोडा हरनागर सजवाया ❋ तापर ब्रह्मानँद असवार ॥
घोडी हिरौंजिनि त्यार कराई ❋ तापर रंजित भये सवार ॥
कामजीत औ समरजीत दोउ ❋ अपनी हथिनी पर असवार
मन्ना गूजर महुबेवारो ❋ सो बरातको भयो तयार ॥
बजो नगारा जब लश्करमें ❋ क्षत्री तुरत भये असवार ।
हाथी चढैया हाथिन चढिगये ❋ बाँके घोडनके असवार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ उत्तरको कियो पयान ।
वीस दिना मारगमें बीते ❋ पहुँचे शहर कमायूँ जाय ॥
तीनि कोश जब रहा कमायूँ ❋ तहँपर डेरा दियो लगाय ।
बडे बडे तम्बू बानातनके ❋ सो लगवाये वीर मलिखान
ऊँचे ऊँचे तम्बू लगि गये ❋ औ नीचेमें लगी बजार ।
आठ कोशलौं लशकर परिगो ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
राति बसेरो करि धूरेपर ❋ भोरहिं उठे उदयसिंह राय
जायके बोले नुनि आल्हासे ❋ दादा पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ चूडामणि तब पहुँचे आय
चूडाणिसे आल्हा बोले ❋ ब्याहकि साइति देउ बताय
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ ऐपनवारी देउ पठाय ।

इतनी सुनतै बघ ऊदनिन ❋ रूपन बारी लियो बुलाय ।
बोले ऊदनि तब रुपनाते ❋ ऐपनवारी तुम लै जाउ ॥
रुपना बारी बोलन लागो ❋ तुम सुनिलेउ उदयसिंह राय
धोखे न रहियो तुम दिल्लीके ❋ जहँ ब्रह्माको लाये बिआहि॥
बडे लँडैया पर्वतवाले ❋ जिनसे कछू पेश ना जाय ।
हमरे भरोसे तुम ना रहियो ❋ हम ना शीश कटैहैं जाय॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ रूपन सुना हमारी बात ।
तुमको नेगी हम जानत नहिं ❋ तुमतो भैया लगत हमार ॥
मुखसे हीनी तुम बोलत हौ ❋ पानी पियो महोबे क्यार ।
इतनी सुनतै रुपना बोलो ❋ औ ऊदनिसे कही सुनाय॥
घोडा पपीहा हमको देदेउ ❋ अपनी देउ ढाल तलवार ।
भाला देदेउ ब्रह्मानँदको ❋ ऐपनवारी मैं लै जाउँ ॥
जो जो मांगो रुपना बारी ❋ सो सो ऊदनि दियो मँगाय।
तुरत सवार भयो रुपना तब ❋ ऐपनवारी लई उठाय ॥
घडी एक केरे अरसामें ❋ दरवाजे पर पहुँचो जाय ।
तब दरवानी बोलन लागो ❋ औ रुपनासे कही सुनाय ॥
कहाँसे आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो नाम देउ बतलाय ।
बोलो रुपना दरवानीसे ❋ रूपन बारी नाम हमार ॥
हम आये हैं गढ महुबेसे ❋ ब्याहन आये वीर सुलिखान
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ राजे खबार सुनावो जाय ॥
नेग हमारो जो द्वारेको ❋ हमको तुरत देयँ मँगवाय ।
सुनि दरवानीने पूँछा तब ❋ अपनो नेग देउ बतलाय ॥
सुनतै रुपना बोलन लागो ❋ दरवानीसे कही सुनाय ।
चारि घरी भरि चलै शिरोही ❋ द्वारे बहै रक्तकी धार ॥
नेग हमरो द्वारेको ❋ सो राजासे कहौ सुनाय ।

इतनी सुनिकै गो दरवाना ❋ औ राजासे लगो बतान ॥
बारी आयो है महुबेको ❋ ऐपन वारी लीन्हें ठाढ ।
नेग आपनो वह माँगत है ❋ द्वारे बहै रक्तकी धार ॥
इतनी सुनते राजा जरिगे ❋ नैना अग्नि ज्वाल ह्वै जायँ ।
तुरत बुलाओ कुँवर सिंहको ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय
जान न पावै महुबेवारो ❋ अबहीं शीश लेउ कटवाय ।
देर लागिगइ दरवाजे पर ❋ रुपना तौलों पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी रतनसिंहको ❋ ऐपन वारी दइ चलाय ।
सूरति देखी जब बारीकी ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
तब ललकारो लालसिंहको ❋ याको लेउ जँजीरन बाँधि ।
इतनी सुनिकै लालसिंहने ❋ रजपूतनमे कही सुनाय ॥
जान न पावै महुबेवारो ❋ याको शीश लेउ कटवाय ।
हल्ला करि दो तब क्षत्रिनने ❋ खटखट चलन लगीतलवारि
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने ❋ अपनो मया मोह बिसराय
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लै बजरंग बलीको नाम ॥
चरण लागिकै जगदम्बाके ❋ मनियाँ सुमिर महोबे क्यार
चली शिरोही तब रुपनाकी ❋ क्षत्रियगिरैं धरणि भहराय॥
जैसे लाडिका गबडी खेलैं ❋ गिनि गिनिधरैं अगारूपायँ
तैसइ रुपना तहँपर बिचलो ❋ क्षत्री काटि करै खरिहान॥
जौहर कीन्हें रुपना बारी ❋ वाके अंग न आवै घाव।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार॥
घिरिगो रुपना सबै ओरसे ❋ नाहीं तानिकौ मिलै उबार ।
एंड लगाई तब घोडाके ❋ औ राजातर पहुँचो जाय ॥
भालाकि नोकसे ऐपनवारी ❋ सो रुपनाने लई उठाय ।
घोडा बढायो रुपना बारी ❋ फाटक निकरि गयो वा पार

दौरिकै घेरो बहु क्षत्रिनने ❋ रुपनपै चलन लगी तलवार
सोचो रुपना तब अपने मन ❋ देखैं कहा करैं करतार ॥
मारन लागो रुपना बारी ❋ औ घोडाको दियो बढाय
मारत मारत रुपना चालिभो ❋ बहुतक क्षत्री दिये गिराय॥
रंग विरंगो घोडा ह्वैगो ❋ औ बरातमें पहुँचो जाय।
रुपनै देखो जब मलिखेने ❋ मनमें गये सनाका खाय॥
पूछन लागे तब रुपनासे ❋ भैया हाल देउ बतलाय।
कैसी गुजरी तहँ ड्योढीपर ❋ रूपन हमहिं देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना तब मलिखेसे ❋ हमसे कछू कही ना जाय।
बडे लडैया पर्वतवाले ❋ अपने आये प्राण बचाय ॥
धर्म चँदेलेको राखो हम ❋ नारायणने करी सहाय ॥
धोखे न रहियो तुम माडोंके ❋ जहँ लैलियो बापको दांव।
कठिन मवासी शहर कमायूँ ❋ यहँ है रतनसिंहको राज ॥
सुलिखे ब्याहि लिहौ जबहीं तुम ❋ तब हमजानिहैंसत्व तुम्हार
मन घबडाने सुनि मलिखे कछु ❋ औ आल्हातर पहुँचे जाय
खबरि सुनाई सब रुपनाकी ❋ आल्हा गये सनाका खाय
तौलौं आये उदनि बाँकुडा ❋ औ आल्हासे कही सुनाय
गाफिल दादा कह बैठेहो ❋ अब द्वारेको होउ तयार॥
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❋ अपनो पडित लियो बुलाय
साइति देखौ दरवाजेकी ❋ पंडित साइति दई बताय॥
अबहीं त्यार होउ द्वारेको ❋ अब ना राखौ देर लगाय।
यहाँकि बातैं तौ यहँ छाँडौ ❋ अब आगेको सुनो हवाल॥
तुरत बुलायो सेनापतिको ❋ राजा रतनसिंह महराज।
हुक्म देदियो तब जलदीसे ❋ सिगरी फौज लेउ सजवाय
करौ तयारी अब लडबेकी ❋ अपने साजि साजि हथियार

जान न पावैं महुबेवारे ❋ सबके शीश लेउ कटवाय॥
कुँवरसिंह औ लालसिंह यह ❋ दोनों बेटा लिये बुलाय।
हुक्म देदियो दोउ बेटनको ❋ बांसन लग्गी लेउ मगाय॥
सो गडवाय देउ द्वारेपर ❋ तिनपर बाज देउ बैठाय।
यह कहि पठवो तुनि आल्हासे ❋ पहले बाज लेउ उतराय॥
ताके पाछे होय दुआरो ❋ तब भौंरिनको करो उपाय
जब सब आवैं दरवाजेपर ❋ तबहीं मूँड लेउ कटवाय॥
इतनी सुनिकै कुँवरसिंहने ❋ तुरतै लग्गी लई मँगाय।
सो गडवाय दई द्वारेपर ❋ तिनपै बाज दिये बैठाय॥
यक हरकाराको बुलवायो ❋ औ आल्हापै दियो पठाय।
खबर करौ जाय आल्हाको ❋ अब द्वारेको होउ तयार॥
गो हरकारा तब आल्हापर ❋ औ सब हाल कहो समुझाय
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❋ सबै घरौआ लिये बुलाय॥
हुक्म देदिया सब शूरनको ❋ दरवाजेको होउ तयार।
सम्हारिकै युद्ध करौ द्वारेपर ❋ राखौ धर्म चँदेले क्यार॥
इतनी सुनतै सब क्षत्रिनने ❋ अपने बांधि लिये हथियार
चली बरायत दरवाजेको ❋ देखौ कापर राम रिसायँ॥
घरी चारि केरे अरसामें ❋ दरवाजेपर पहुँचे जाय।
देखे शूर सभी महुबेके ❋ कुँवरसिंहने कही सुनाय॥
यह प्रण ठानो है राजाने ❋ पहिले बाज लेउ उतराय।
ताके पाछे होय दुआरो ❋ फिरि विवाहको करौ विचार
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ समर जीतसे कही सुनाय।
बाज उतारि लेउ लग्गीसे ❋ राखौ धर्म चँदेले क्यार॥
आगे बढिगे समरजीत जब ❋ लालसिंहने दइ ललकार।
पाँव अगारूको जो धरिहौ ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय॥

हल्ला करिदो लालसिंहने ❋ द्वारे चलन लगी तलवार ।
बढे शूरमा दोउ ओरके ❋ सबक मारु मारु रटलाग ॥
झुरमुट ह्वैगो दरवाजेपर ❋ कोइ न धरै पिछारू पायँ ।
तब ललकारो उदनि बाँकुडा ❋ लालसिंहसे कही सुनाय ॥
दस दस रुपयाके नौकर हैं ❋ काहे डरिहौ मूँड कटाय ।
हम तुम खेलैं रणखेतनम ❋ देखैं कापर राम रिसायँ ॥
इतनी सुनतै लालसिंहने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जडाका बघ ऊदनिपर ❋ ऊदनि दीन्हीं ढाल अडाय ॥
तौलौं मलिखे दाखिल ह्वैगे ❋ लालसिंहको दइ ललकार ।
गुर्ज उठायो लालसिंहने ❋ सो मलिखेपर दियो चलाय
बायेंसे घोडी दहिने ह्वगइ ❋ उनको राखि लियो भगवान
कावा देकै नर मलिखेने ❋ लालसिंहपै कीन्हों वार ॥
ढालकि औझड मलिखे मारी ❋ औ धरतीमें दियो गिराय
डड बाँधि लइ लालसिंहकी ❋ औ लश्करम दियो पठाय ॥
तुरतै ऊदनिगै लगी तैं ❋ रसबेंदुलसे कही सुनाय ।
बारेसे मल्हना तुमको पालो ❋ अमखुरवनसे दूध पिआय ॥
धम चन्देलेको राखो अब ❋ लग्गीसे बाज लेउ उतराय ।
इतनी कहिकै ऐंड लगाई ❋ घोडा बेंदुला दियो उडाय
भालाकि नोकसे बाज उतारो ❋ सो आल्हाके धरो अगार ।
खबरि पहुँचि गइ रतनसिंहको ❋ लग्गीसेबाज लियोउतराय
कैदि करायो लालसिंहको ❋ औ लश्करमें दियो पठाय ।
इतनी सुनतै रतनसिंहने ❋ कुँवरसिंहसे कही सुनाय ॥
खेत जीति बैरी जैहैं जब ❋ तब बल पौरुष वृथा तुम्हार
इतनी सुनिक कुँवरसिंहने ❋ अपने हाथ गहे हथियार ॥
जायके पहुँचे दरवाजेपर ❋ औ मलिखेसे कही सुनाय ।

सम्हरो ठाकुर तुम घोडीपर ❋ हमरी देखि लेउ तलवारि ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ समरजीतसे कही सुनाय ।
सम्हारिकै खेलो रणखेतनमें ❋ राखौ धर्म चँदेले क्यार ॥
खैंचि शिरोही समरजीतने ❋ कुँवरसिंह पर दई चलाय ।
ढाल उठाई कुँवरसिंहने ❋ तापर भयो जडाका जाय ॥
ढाल फाटिगइ गैंडावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय
कछुक घाव आयो हाथे महँ ❋ बाचिगे कुँवर सिंह सरदार ॥
गुर्ज उठायो कुँवरसिंहन ❋ समरजीत पै दियो चलाय ।
लगो चपेटा समरजीतके ❋ धरती गिरे तडाका खाय ॥
मुश्क बाँधिकै समरजीतकी ❋ अपने दलमें दियो पठाय ।
देखि हाल यह नर मलिखेने ❋ अपनी घोडी दई बढाय ॥
जायके पहुँचे कुँवरसिंहपै ❋ भारी जाय दई ललकार ।
खैंचि शिरोही मलिखे लीन्हीं ❋ औ हौदापर दई चलाय ॥
कलश सोबरनके भुइँ गिरिगे ❋ हौदा टूक टूक ह्वै जाय ।
घाव न आयो कुँवरसिंहके ❋ दाहिने भई शारदा माय ॥
गुर्ज उठायो कुँवरसिंहने ❋ सो मलिखेपर दियो चलाय
लगो चपेटा तब घोडीके ❋ घोडी सात कदम हटिजाय
यह गति देखी कामजीतने ❋ अपनी हथिनी दई बढाय ।
जायके पहुँचे कुँवरसिंहपै ❋ भाला नागदौनिको हाथ ॥
भाला चलायो कामजीतने ❋ कुँवरसिंह गे चोट बचाय ।
खैंचि शिरोही कामजीतने ❋ कुँवरसिंहपै दई चलाय ।
तीनि शिरोही गहि गहि मारी ❋ उनकी टूटि शिरोही जाय ॥
तब ललकारो कुँवरसिंहने ❋ अब तुम खबरदार ह्वइ जाउ
इतनी कहिकै गुर्ज उठायो ❋ कामजीतपै दियो चलाय ॥
कामजीत जूझे खेतनमें ❋ यह गति लखी उदयसिंहराय

खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ कुँवरसिंहपै पहुँचे जाय ।
ढाल अडाई कुँवरसिंहने ❋ ऊदनि धमकि दई तलवार॥
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❋ कुँवरसिंहके आयो घाव ।
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❋ कुँवरसिंहको लियो बंधाय॥
सुनी खबरि यह रतनसिंहने ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
जहाँ बेंदुलाको चढवैया ❋ राजा तहाँ पहूँचे जाय ॥
करी अधीनी रतनसिंहने ❋ तुम सुनिलेउ बनाफर राय।
अब हम जानी अपने मनमें ❋ तुम्हरो कोइ दुसरिहा नाहिं
कैदिछाँडि देउ तुमलडकनकी ❋ अबहीं भाँवरि देउँ डराय ।
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने ❋ सबकी कैद दई छुडवाय ॥
बोले राजा तब आल्हासे ❋ अकिले लडिका देउ पठाय।
आल्हा बोले तब राजासे ❋ संग घरौआ दिहैं पठाय ॥
गंगा कीन्हीं रतनसिंहने ❋ अकिलेसुलिखे लियेलिवाय
चली पालकी जनवासेसे ❋ पहुँची रंगमहलमें जाय ॥
फाटकबन्दी राजा करिदइ ❋ बाहिरो आवै न भितरो जाय
हुक्म दैदियो तब लडिकनको ❋ लडिकै कैद लेउ करवाय ॥
यहसुनि कुँवरसिंह पहुँचेढिग ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
करो जडाका वा पलकीपै ❋ छतुरी टूक टूक ह्वै जाय ॥
धरे दहिंगला जो पलकीमें ❋ सो सुलिखेने लियो उठाय ।
खैंचिकै मारे कुँवरसिंहके ❋ तुरतै छूटि परी तलवारि ॥
झपटि शिरोही लइ सुलिखेने ❋ महलन गडबड दियोमचाय
बारह शूर हने सुलिखेने ❋ तब राजाने कही सुनाय ॥
अब हम जानी अपने मनमें ❋ तुमसे हारि गई तलवारि ।
दुचितो करिकै तहँ सुलिखेको ❋ राजा कैद लई करवाय ॥
चुंगल दहक डारि सुलिखेको ❋ ऊपर पत्थर दियो धराय ।

सुनी खबरि यह कलावतीने ❋ तब मालिनिसे कही सुनाय
निमक हमारो तुम खायो है ❋ अब असमेंमें होउ सहाय।
पाती लिखिकै कलावतीने ❋ सो मालिनिको दई गहाय
यह दे आवो तुम आल्हाको ❋ हमरे निमक उरिण ह्वै जाउ।
मालिनि चलिभइ जनवासेको ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय
तौलौं मिलिगे ऊदनि बाँकुडा ❋ सो मालिनिसे पूँछन लाग।
कहाँसे आई औ कहँ जैहो ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
इतनी सुनिकै मालिनि बोली ❋ औ ऊदनिसे कही सुनाय।
लडिका व्याहनगो महलनमें ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय॥
ऊपर पत्थर धरवायो नृप ❋ बेटी पाती दई पठाय।
पाती लैलइ तब ऊदनिने ❋ औमालिनिको लौअगुआय
जायकै पहुँचे नुनि आल्हापै ❋ औ पातीको दियो गहाय।
खोलिकै पाती आल्हा बांची ❋ गुस्सा गई देहमें छाय॥
हुक्म देदियो तब आल्हाने ❋ सिगरी फौज होय तैयार।
लूटि कराय लेउ राजाकी ❋ मारौ राज भंग ह्वै जाय॥
इतनी सुनतै ऊदनि चलिभै ❋ जूझको डंका दो बजवाय।
चोब नगाडाके बाजतखन ❋ सिगरी फौज भई तैयार॥
तोपैं चढिगइँ सब चरखिनपै ❋ ज्वानन बांधि लियेहथियार
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार॥
खबरि पहुँचि गइ रतनसिंहको ❋ उनहूँ फौज लई सजवाय॥
लगे मोरचा दोनों दलके ❋ तोपन बत्ती दइ लगाय।
धुआँ उडानो उन तोपनको ❋ दोउदल रहीअँधेरिया छाय
गोला ओलाके सम छूटैं ❋ गोली मघाबूँद झरिलाय॥
बंनके गोला छूटन लागे ❋ कइ कद करैं अगिनियाँ बान
गोला लागे जेहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय
गोला लागे जौन ऊँटके ❋ दलमें गिरे चकत्ता खाय।

गोला लागै जिन घोडनके ❋ चारों सुम्म गर्द ह्वै जायँ ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❋ तिनकी त्वचा सरग मँडराय
बंबको गोला जिनके लागै ❋ सो लत्तासे जायँ उडाय ॥
गोला जंजिरहा जिनके लागै ❋ तिनको हाड मास छुटि जाय
तीरकी गाँसी जिनके लागै ❋ क्षत्री गिरैं करौंटा खाय ॥
बानको डडा जिनके लागै ❋ तिनके दुइ खंडा ह्वै जायँ ।
तोपैं धैं धैं लालैं ह्वैगईं ❋ जिनपर हाथ धरो ना जाय
चढी कमनियाँ पानी ह्वैगईं ❋ चुटकिनके गे मास उडाय
तोप रहकला पाछे परिगइ ❋ लम्बे बंद करैं हथियार ॥
भाला बर्च्छी छूटन लागीं ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ।
खट खट खट खट तेगा बाजे ❋ बोलै छपक छपक तलवार
चलै जुनब्बी औ गुजरानी ❋ ऊना चलै विलायत क्यार।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान
पैग पैग पर पैदल गिरिगे ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ।
बिसे बिसे पर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
घैहा डारे हैं लोहूमें ❋ जिनके प्यास प्यास रट लाग
मुहर कटोरा पानी ह्वैगो ❋ दूढ नीर मिलै है नायँ ॥
अपनो पराओ ना पहिचानैं ❋ जिनके मारु मारु रट लागि
दोनौं फौजैं यकमिल ह्वैगईं ❋ कोई कुँवर न टारैं पाँव ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय ।
लंबी धोतिनके पहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि
पाँव पिछारूको ना धरियो ❋ यारो राखियो धर्म हमार ॥
खटिया परिकै जो मरिजैहौ ❋ जगमें कोइ न लीहै नाम ।
जो मरिजैहौ रणखेतनमें ❋ साखो चलो अगारू जाय
जीतिकै चलिहौ जो महुबेको ❋ सोने कडा दिहैं डरवाय ।

देदै पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढाय॥
भजे सिपाही पर्बतवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
यह गति देखी कुँवरसिंहने ❋ अपनी घोडी दई बढाय॥
यक ललकार दई ऊदनिको ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात।
शूर सिपाही ना कटवावो ❋ हम तुम खेलैं जूझ अघाय
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ घोडा बेंदुला दियो बढाय।
जायकै पहुँचे कुँवरसिंहपै ❋ औ ऊदनिने कही सुनाय॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❋ तुरतै भाँवरि देउ डराय ।
इतनी बात कहन पाये नहिं ❋ कुँवरसिंह लइ तेग निकारि
जाय धमकी बघ ऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ।
तीनि शिरोही गहि गहि मारी ❋ ऊदनिके नहिं आयो घाव॥
ढालकि ओझड ऊदनि मारी ❋ कुँवरसिंहको दियो गिराय
कूदि बेंदुलाते भुइँ आये ❋ तुरतै डंड लई बँधवाय ॥
यह गति देखी लालसिंहने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय।
तौलौं मलिखे दाखिल ह्वैगे ❋ लालसिंहसे कही सुनाय ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखें कापर राम रिसायँ ।
यह मन भाई लालसिंहके ❋ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय
सो धरि धमको नर मलिखेपर ❋ मलिखे लैगे चोट बचाय।
समर जीत दाहिने पर आये ❋ लाली खैंचि लई तलवारि॥
सो धरि धमकी समरजीतपै ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ।
ढाल फाटिगइ गैंडावाली ❋ गदी मखमलकी कटि जाय
घाव न आयो कहुँ देहीमें ❋ उनको राखि लियो भगवान
खैंचि शिरोही समरजीत लइ ❋ लैके रामचन्द्रको नाम ॥
तब समुझायो नर मलिखेने ❋ भैया सुनो हमारी बात।
हाथ न डरियो लालसिंहपै ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय
मुश्क बाँधिलेउ लालसिंहकी ❋ सातौ भाँवरि लेउ डराय ।

यह कहि मलिखे समरजीतसे ❋ लालसिंह ढिग पहुँचे जाय
कावा दैकै लालसिंहकी ❋ मलिखे कैद लई करवाय ।
यह गति देखी रतनसिंहने ❋ आगे हाथी दियो बढाय ॥
तौलौं आल्हा दाखिल हुइगे ❋ हथि पचशावद पर असवार
बोले आल्हा रतनसिंहसे ❋ राजा मानौ बात हमार ॥
अबहूँतुम्हरो कछु बिगरोनहिं ❋ ना हमरो कछु भयो बिगार
भँवरि डराय देउ सुलिखेकी ❋ जामें दुओ धर्म रहिजायँ ॥
यह मन भाय गई राजाके ❋ तब आल्हासे कही सुनाय ।
कैदिछाँडिदेउतुमलडिकनकी ❋ अबहीं भँवरि देउँ डरवाय
गरुये नाते हम पाये हैं ❋ हौ समरत्थ बनाफर राय ।
करी अधीनी रतनसिंह जब ❋ आल्हा कैद दई छुडवाय ॥
उनहीं पायँन राजा चलिभे ❋ औ मलिखे लै संग लिवाय
जायके पहुँचे रंगमहलमें ❋ सुलिखेकि कैद दई छुडवाय
खंभ गडायो मलयागिरिको ❋ पानन मंडप दियो छवाय ।
भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ पंडित वेदी रची बनाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लगीं ❋ भाँवरि परैं वीर सुलिखान ।
खबरिभेजिदइनुनि आल्हाको ❋ अपने नेगी देउ पठाय ॥
सुनत खबरि यहतब आल्हाने ❋ तुरतै नेगी लिये बुलाय ॥
ढेबा ऊदनिको बुलवायो ❋ मोहरन तोडा दिये गहाय॥
दोनों चलिभे रंगमहलको ❋ अपने नेगी संग लिवाय ।
जायके पहुँचे रंगमहलम ❋ औ मडयेतर पहुँचे जाय ॥
नेग चार भौरिनके करिदै ❋ दान दक्षिणा दई बँटाय ।
तबफिरि मलिखे बोलनलागे ❋ औ राजासे कही सुनाय ॥
बिदा कराय देउ बेटीकी ❋ अपनो कूच जायँ करवाय ।
इतनी सुनिकै रतनसिंहने ❋ बेटिकि बिदा दई करवाय॥

बैठि कलावति जब पलकीमें ❋ मलिखे मुहरैं दईं लुटाय ।
चली पालकी कलावतीकी ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
हुक्म फेरि दो तब आल्हाने ❋ लश्कर कूच देउ करवाय ।
इतनी सुनतै सब क्षत्रिनने ❋ तँबुअन मेख दई उखराय ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
पन्द्रह दिनकी मैजलि कारकै ❋ गढ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
खबरैं ह्वैगईं रंगमहलमें ❋ मल्हनालीन्हीं सखीबुलाय
बारह रानी चन्देलेकी ❋ सोऊ तुरत पहूँचीं आयँ ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ परछनि होय बीरसुलिखान
परछानि करिकै तब दोउनकी ❋ आरतिकरीमल्हनदे रानि॥
रुचना करिकै तब माथेमें ❋ ऊपर अक्षत दिये लगाय ।
करी निछावरि सब रानिनने ❋ सो नेगिनको दई बँटाय ॥
जितने ब्राह्मण थे महुबेमें ❋ दान दक्षिणा दई गहाय ।
मुखदिखरावाकरिदुलहिनको ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वैजाय
जितने राजा आये बराती ❋ तिनकी बिदा दई करवाय ।
दगीं सलामी गढ महुबेमें ❋ गुंजैं सुनैं महिल परिहार ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ सो बँगलामें पहुँचे जाय ।
करी बन्दगी परिमालेको ❋ दोनों हाथ बाँधि रहिजायँ॥
हृदयलगायलियोलरिकनको ❋ औहँसि कही रजापरिमाल
हैं समरत्थी यह लडिका सब ❋ जोपहाडपर करो विआहु॥
युग युग जीवो पुत्र हमारे ❋ औ सब सुखी रहौसब काल
ऐसे व्याह भयो सुलिखेको ❋ सोहमलिखिकै दियोसुनाय
जेहिविधिव्याहभयोधाँधूको ❋ सो अब आगे करौं बखान ।
भई लडाई घनघोरी तहँ ❋ जहँ रणधीरसिंह बलवान॥

इति सुलिखानका ब्याह सम्पूर्ण ।

श्रीः ।

बुखारेकी लडाई ।

धाँधूका व्याह ।

दोहा–सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

सुमिरन करिये श्रीगिरिजापति ❋ जिनके श्रीगणेशसे क्वाँर ।
बिघ्न बिदारी सो कहियतु हैं ❋ भूले अक्षर लेहिं सम्हार ॥
सहज बानि है दयासिन्धुकी ❋ थोडे प्रेम मग्न हो जायँ ।
ऐसे प्रभुको ध्यान छोडिकै ❋ केहिको और जपैं मनमायँ
बाढ बढावनको समुद्रकी ❋ जैसे पूर्ण चन्द्रमा जान ।
ज्ञान बढावनको भक्तोंके ❋ श्रीशंकरजी दया निधान
कमल खिलावनको सूरज हैं ❋ जल बरसावनको वनमाल
सुख सरसावन पवन देवता ❋ जग आनन्द अग्निकी ज्वाल
कंस विनाशनको वनमाली ❋ रावण मारिबेको श्रीराम ।
काज सँवारनको भक्तनके ❋ भोलानाथ बुद्धि बलधाम ॥
रोग नशावनको धन्वन्तरि ❋ लंका जारनको हनुमान ।
जग उपजावनको ब्रह्मा हैं ❋ रक्षा करन हेत भगवान ॥
इतनी बेरा अब कह गेये ❋ सादर कहिको लीजे नाम ।
संझा तारनि तुमको गये ❋ घर घर दीपक बारैं वाम ॥
चरि चरि गौवैं वनसे डगरीं ❋ बछरन दूध पियाये आय ।
उडि उडि पंछिन लीन्ह बसेरो ❋ ऋषि मुनि संध्याकरैं बनाय
कंठ गवैयाको जो बाँधे ❋ बाँधै ताल मँजीरन क्यार ।
जो कोइ बाँधै मेरि ढोलकको ❋ ताको करै कालिका क्षार ॥
जागे शिवशंकर पर्वतपर ❋ अपनी डमरू लई उठाय ।

जाय पहुँचे नन्दी गणतर ❋ आक धतूरा भंग चढाय ॥
फेंट लगाये हैं साँपनकी ❋ औंर चन्द्रमा दिपै लिलार ।
कूदि नाँदिया पर चाढि बैठे ❋ पहुँचे हथिनापुर ढिग द्वार
भोलानाथ मगन मन अन्तर ❋ फाटक निकट पहूँचे जाय।
पाँचौ पांडव जहाँ विराजैं ❋ कुंतीपुत्र युधिष्ठिर राय ॥
भीम रु अर्जुन नकुल वीर तहँ ❋ औ सहदेव वीर बलवान ।
बाजो घटा नन्दीगणको ❋ सुनतै अर्जुन गही कमान॥
को अपराधी है द्वारेपर ❋ घंट सुनाय दीन्ह मनताप।
सन्मुख देखो जब अर्जुनको ❋ तब शंकरने दियो सराप ॥
जन्म तुम्हारो कलियुग युगमें ❋ ह्वैहै विकट क्षत्रियन क्यार
बहुत युद्ध ह्वैहै राजनते ❋ तुम सुनिलेउ गर्व सरदार
पाँचौ भाई तुम अवतरिहौ ❋ करिहौ समर भयंकर जाय
रानि द्रौपदी पृथीराज घर ❋ बेला नाम कहै है जाय ॥
वंश नशैहै बहु क्षत्रिनको ❋ रणमें कठिन होय संग्राम ।
यह कहि चलिभे शिवशंकरजी ❋ गे कैलास आपने धाम ॥
छोडि सुमिरनी अब आगे मैं ❋ वरणौं कलह बुखारे क्यार ।
जैसे व्याह भयो धाँधूको ❋ जो दुस्सासनको अवतार॥
सत्य यथार्थ व्याह धाँधूको ❋ सो हम तुमको दिहैं सुनाय
बलख बुखारा दो नगरी हैं ❋ तिनको भेद देउँ बतलाय॥
बलख नगरमें नृप अभिनंदन ❋ सेवक जौन अंबिका क्यार
देवी भवानीको सुमिरन करि ❋ जीतहि समर माहि निरधार
जाकी बेटी चित्तररेखा ❋ व्याहे ताहि इन्दला क्वाँर ।
सो आगे हम वर्णन करि हैं ❋ जेहि विधि व्याही राजकुमारि
बलख बुखाराके अन्तरमें ❋ है दश कोश केर मैदान ।
नगर बुखाराके अधिपति जो ❋ हैं रणधीर सिंह बलवान ॥

भाई चचेरे दोनों राजा ❋ श्री अभिनन्दन औ रणधीर
चित्तररेखा गइ न्यौतेमें ❋ देखे तहाँ इँदलसी क्वाँर ॥
रूप देखिके मोहित ह्वैगइ ❋ मनमें बसा परिउना लाल ।
जेठ दशहराकी बुडकीमें ❋ सो हरिलाई सुआ बनाय ॥
यह सब आल्हा आगे कहिहों ❋ यहाँ इशारा दियो बताय ।
नगर बुखाराके महराजा ❋ जो रणधीरसिंह बलवान ॥
तिनके घरमें कन्या जन्मी ❋ जोहि मुख देखत चन्द्र लजाय
नाम धरायो ताको केसरि ❋ केसर रंग रूप अधिकाय ॥
बारह वर्षकी जब कन्या भइ ❋ नित नित खेल करै सखिसंग
यक दिन एक सखी यह बोली ❋ केसरि सुनो हमारी बात॥
जितनी सखियाँ तुम्हरे सँगकी ❋ तिन सबकोंह्वै गयो विवाह
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❋ जो तुम्हरो नहिं करो विवाह
आय कायली गइ केसरिको ❋ सखियन संग दियो बिलगाय
तुरतै चलिभइ रंगमहलको ❋ औ मातातर पहुँची जाय॥
आवत देखो जब केसरिको ❋ चम्पा छाती लियो लगाय।
बोली रानी तब केसरिसे ❋ बेटी हाल देउ बतलाय ॥
काहे अनमनी तुम आई हो ❋ काहे वदन गयो कुम्हिलाय
बात कही हो जो काहूने ❋ ताकी जीभ लेउँ निकराय ॥
बोली केसरि तब मातासे ❋ माता सुनो हमारी बात ।
जितनी सखियाँ हमरे सँगकी ❋ ब्याही गौने गौने जायँ ॥
ताना मरती हैं सखियाँ सब ❋ क्यों तुम्हरो नहिं भयो विवाह
सुनो हाल जब यह चम्पाने ❋ तब बांदीको लियो बुलाय॥
बाँदी आई जब रानीपै ❋ तब रानीने कही सुनाय ।
जलदी जावो तुम बँगलामें ❋ औ राजाको लाउ बुलाय॥
बाँदी चलिकै गइ राजातर ❋ औ राजासे कही सुनाय ।

तुमहिं बुलायो है रानीने ❋ अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
सुनत खबरिया राजा चलिभै ❋ रंगमहलमें पहुँचे जाय ।
सूरति देखी जब राजाकी ❋ रानी उठी भरहरा खाय ॥
लये बिजनियाँ कर फूलनकी ❋ औ राजापर करै बयार ।
पलँग बिछाय दियो पँचरंगा ❋ रेशम तकिया दई लगाय ॥
नीको मन राजाको पाओ ❋ तब रानीने कही सुनाय ।
घरमें बेटी स्यानी ह्वैगइ ❋ ताको अब कहुँ करौ बिआहु
टीका भेजिदेउ जल्दीसे ❋ केहु राजाके देउ चढाय ।
यह मन भाय गई राजाके ❋ औ बँगलामें पहुँचे आय ॥
तीनि लाखको टीका लैकै ❋ सो राजाने दियो धराय ।
शाल दुशाला मोहनमाला ❋ चीरा कलँगी दई धराय ॥
साठि पालकी दुइसौ गजरथ ❋ अच्छे घोडा एक हजार ।
पाँच अंगूठी बहुत मोलकी ❋ जिनमें हीरा जडे बनाय ॥
टीका लैकै तब राजाने ❋ सब नेगिनको दो सौंपाय ।
चिट्ठी लिखिदइ महराजाने ❋ तामें लिखा घोर संग्राम ॥
पहली लडाई है धूरेपर ❋ दुसरी द्वार युद्ध घमसान ।
तिसरी लडाई है मडयेमें ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय
ऐसी चिट्ठी लिखि राजाने ❋ मोती बेटा लियो बुलाय ।
चिट्ठी दैकै राजा बोले ❋ तुम सँग जाउ नेगियन क्यार
नीको लडिका जहँ दिखियोतुम ❋ तहँ टीकाको दियो चढाय
एक न जैयो नगर महोबे ❋ जहँपर बसैं बनाफर राय ॥
गढ दिल्लीमें यक धाँधू है ❋ ओछी जाति बनाफरराय ।
बहुतै समुझायो मोतीको ❋ औ टीका सँग दियो पठाय
लैकै टीका मोती चलिभै ❋ चारौ नेगी संग लिवाय ।
राह पकरि लइ गढ कनवजकी ❋ मोती मनमें कियो विचार

टिका चढै हैं हम लाखनिको ❋ राजा जैचँदके दरबार ।
ऐसे सोच करत मोती मन ❋ गढ कनवजमें पहुचे जाय॥
मोती पहुँचे जब फाटक पर ❋ दरवानी तब पूछन लाग ।
कहाँसे आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो नाम देउ बतलाय॥
बोले मोती दरवानीसे ❋ राजै खबरि देउ पहुचाय ।
नगर बुखारेसे आये हम ❋ औ मोती है नाम हमार॥
टीका लाये हम बहिनीको ❋ सुनतै धावनगो दरबार ।
करी बन्दगी तब राजाको ❋ औ मोतीको कहो हवाल ॥
बोले जयचँद दरवानीसे ❋ अबहीं नजरि गुजारौ आय
उनहीं पायँन धावन लौटो ❋ मोती सिंहसे कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो है राजाने ❋ अबहीं चलौ हमारे साथ ।
मोती चलिभे सँग नेगी लै ❋ पहुँचे बीच कचेहरी जाय॥
करी बन्दगी मोती ठाकुर ❋ पाती गद्दी दई चलाय ।
खोलिकै पाती राजा बाँची ❋ औ टीकाको दो लौटाय ॥
लैकै पाती मोती चलिभे ❋ नैनागढमें पहुँचे आय ।
तहँ पाती पढि नैपालीने ❋ तुरतै टीका दियो फिराय॥
देश देश मोती ह्वै आये ❋ काहू टिका कबूलो नायँ ।
राह बुखारेकी पकरी तब ❋ मोती मनमें कियो विचार॥
लडिका पूछि लेयँ माहिलसे ❋ हैं जो उरईके परिहार ॥
राह पकरि लइ उरईकी तहँ ❋ ताहर खेलत फिरैं शिकार ।
संग सिपाही बहु ताहरके ❋ मोती सिंह पर परी निगाह
चारौ नेगी सँग देखे जब ❋ ताहर मनमें सोचन लाग ।
ब्याह भयो नहिं कहुँ धाँधूको ❋ औ यह टीका लीन्हें जात
टीका चढै जो यह धाँधूको ❋ तौ सब काम सिद्धि ह्वै जाय
ताला मोती समुहे आये ❋ तुरतै ताहर पूछन लाग ॥

कहाँसे आये औ कहँ जैहो ❋ साँचो हाल देउ बतलाय ।
करो बहाना तब मोतीने ❋ करिहैं जाय गंग अस्नान ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ काहे झूँठी कहत बनाय ।
चारो नेगी संग तुम्हारे ❋ तब मोतीने कही सुनाय ।
टीका लाये हम बहिनीको ❋ सबने टीका दियो फिराय ॥
अब हम जैहैं गढ उरईको ❋ पुछि हैं जाय महिल परिहार
इतनी सुनिकै ताहर बोले ❋ मोती मानौ वचन हमार ॥
लडिका क्वाँरो है दिल्लीमें ❋ सूबा जौन बनाफर राय ।
बोले मोती तब ताहरसे ❋ नाहीं हुक्म बघेले ब्यार ॥
ब्याह न ह्वइ है बन्नाफरसे ❋ ओछी जाति बनाफर राय ।
गुस्सा ह्वै तब ताहर बोले ❋ नहिं कुलहीन बनाफर राय ॥
यह कहिबाँधिलियोमोतीको ❋ औअपनेसँगलियोलिवाय ।
तिसरे दिन पहुँचे दिल्लीमें ❋ जहँ दरबार वीर चौहान ॥
जायकै ताहर दाखिल ह्वइगे ❋ पृथीराजको करी सलाम ।
लैकै पाती टीका वाली ❋ सो गद्दीपर दई चलाय ॥
पाती बाँचि तुरत लौटाई ❋ औ ताहरसे कही सुनाय ।
चाह नहीं है हमें ब्याहकी ❋ तब ताहरने कही सुनाय ॥
ब्याह करिदिहो जो धाँधूको ❋ तौफिरि कहीं जानकोनाहिं
काहे दादा टीका फेरत ❋ सातो भाँवरि लिहो डराय ॥
तौलौं चौंडा बोलन लागो ❋ काहे टीका दिहो फिराय ।
तुमहिं हँसौआको डर नाहीं ❋ जानत तुमहिं सकल संसार ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ औ चौंडासे कही सुनाय ।
मनहिं तुम्हारे जैसी आवै ❋ तैसी करौ चौंडिया राय ॥
हुक्म कराओ तब महलनमें ❋ लागे होन मंगलाचार ।
लक्ष्मण पंडितको बुलवायो ❋ पंडित चौक दई पुरवाय ॥

भयो बुलौआ तब मोतीको ❋ औ धाँधूको लियो बुलाय ।
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ पंडित टीकादौ चढवाय ॥
टीका चढायो मोती ठाकुर ❋ फिर ना कछू करी इन्कार ।
चारौ नेगी जो मोतीके ❋ ताहर गहनो दो पहिराय ॥
बचि रह्यो गहनो सो तुरतै लै ❋ मोतीसिंहको दो पकराय ।
और जो नेगी होयँ तुम्हारे ❋ तिनको गहनो दीजो जाय
साइति पूँछी तब ब्याहेकी ❋ सो पंडितने दई बताय ।
मार्ग मास तेरसि अंधियारी ❋ सुन्दर लग्न परी यह आय॥
यह सुनि चलिभै मोतीसिंह तब ❋ चारो नेगी संग लिवाय।
चारि दिना मारगमें बीते ❋ पहुँचे नगर बुरवारे जाय ॥
राजा पूँछो तब मोतीसे ❋ टीका कहाँ चढायो जाय ।
हाथ जोरिकै मोती बोले ❋ दादा कछू कही ना जाय ॥
देशदेशमें हम फिरि आये ❋ टीका काहु कबूलो नाहिं ।
तब हम चलिभे गढ उरईको ❋ ताहर मिले गढमें आय ॥
पूँछो हाल तहाँ ताहरने ❋ हमने हाल दियो बतलाय ।
उन लडिका धाँधू बतलायो ❋ हमने बहुत करी इन्कार ॥
बडे लडेया दिल्लीवारे ❋ उनने कैद लई करवाय ।
लैकै पहुँचे गढ दिल्लीमें ❋ औ टीका उन लयो चढाय
इतनी सुनतै राजा जरिगे ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
मोती बोले तब राजासे ❋ दादा सोच देउ बिसराय ॥
ब्याहन अइहैं जब दिल्लीसे ❋ सबके मूड लिहैं कटवाय ।
कछू दिनाको अरसा गुजरो ❋ अगहन मास पहूँचो आय॥
बोलो चौंडा पृथीराजसे ❋ अब बरातको होउ तयार ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ अपनो कलमदान मँगवाय
पाती लिखिकै सब राजनको ❋ न्यौतो भेजि दियो तत्काल

देश देशक राजा आये ❋ औ धूरेपर कियो मुकाम ॥
सजी बरायत गढ दिल्लीमें ❋ महलन होय मंगलाचार।
व्याहकि रीति होन लागी सब ❋ पंडित वेदी रची बनाय ॥
तेल चढायो तब धाँधूको ❋ औ सब नग दियो करवाय
बोले पृथीराज ताहरसे ❋ बेटा फौज होय तैयार ॥
पहुँचे ताहर तब लश्करमें ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय
बजे नगारा गढ दिल्लीमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजा तब लश्करमें ❋ लश्कर तुरत भयो तैयार।
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ॥
लश्कर सजिगो दिल्लीवालो ❋ शोभा कछू कही ना जाय।
बारह जोडी बजैं नगारा ❋ बाजै तुरही औ करनाल ॥
नौसै झंडा हैं लश्करमें ❋ मानौं बिजलीसी चमकाय।
बावन झंडा हैं निशानके ❋ तिनमें ध्वजा रहे फहराय ॥
कोइ नालकी कोइ पालकी ❋ कोई गजरथ पर असवार।
सजी पालकी तब धाँधूकी ❋ तापर धाँधू भये सवार ॥
नेगा लैके वर्दवानको ❋ सो पलकीमें लियो धराय।
फिरि दल उमडो पृथीराजको ❋ आठ कोशलौं लगी कतार
कूच कराय दियो लश्करको ❋ मारू डका दो बजवाय।
बारह दिनकी मजलि करिकै ❋ पहुँचे नगर बुखारे जाय ॥
पाँच कोश जब रहा बुखारा ❋ डेरा तहाँ दियो डरवाय।
तँबुआ लगिगये सब क्षत्रिनके ❋ हाथिन हौदा धर उतारि ॥
जीन उतारि गये सब घोडनके ❋ क्षत्रा करन गये अस्नान।
ताहर बोले पृथीराजसे ❋ दादा पडित लेउ बुलाय ॥
साइति पूँछि लेउ द्वारेकी ❋ ऐपनवारी देउ पठाय।
भयो बुलाआ तब पंडितको ❋ लक्ष्मण तुरत पहूँचे आय ॥

खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ ऐपन बारी देउ पठाय ।
साइति नीकी है द्वारेकी ❋ द्वारो होय बनाफर क्यार ॥
छेदा बारीको बुलवायो ❋ औ राजाने कही सुनाय ।
ऐपनवारी तुम ले जावौ ❋ औ बरातको कहो हवाल ॥
इतनी सुनतै छेदा बारी ❋ अपनो घोडा लियो सजाय
कूदि बछेरा पर चढि बैठो ❋ औ द्वारेपर पहुँचो जाय ॥
बोले दरवानी बारीसे ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
कहाँसे आये औ कहँ जैहौ ❋ तब छेदाने कही सुनाय ॥
आइ बरायत गढ दिल्लीसे ❋ छेदा बारी नाम हमार ।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ राजै खबरि सुनावौ जाय ॥
इतनी सुनिकै गौ दरवानी ❋ औ राजासे कहो हवाल ।
सुनी खबरिया जब राजाने ❋ मोती बेटा लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तब मोतीको ❋ तुम ड्योढीपर देखौ जाय ।
बारी आयो है दिल्लीसे ❋ ताको संगहि लावो जाय ॥
देर लागि गइ दरवानीको ❋ छेदा घोडा दियो बढाय ।
जहाँ कचेहरी महराजाकी ❋ बारी समुहे पहुँचो जाय ॥
माँगाकि नोकसे ऐपनवारी ❋ सो गद्दीपर दई चलाय ।
बोलो छेदा तब राजासे ❋ हमरो नेग देउ मँगवाय ॥
बोलो राजा तब छेदासे ❋ अपनो नेग देउ बतलाय ।
सुनतै छेदा बोलन लागो ❋ ओ महराज बघेले राय ॥
चारि घरी भरि चलै शिरोही ❋ द्वारे बहै रक्तकी धार ।
यही नेग हमरोचहियत ह ❋ सोई अबहिं देउ मँगवाय।
इतनी सुनतै राजा जरिगै ❋ औ यह हुक्म दियोफरमाय
शीश काटि लेउ या बारीको ❋ टट्टुआ टायर लेउ छिनाय
इतनी सुनिकै क्षत्री झपटे ❋ अपने हाथ लिये हथियार।

जायके पहुँचे वा छेदापर ❋ छेदा खैंचि लई तलवारि ॥
नौसै क्षत्रिनके दंगलमें ❋ अकिलो बारी परै दिखाय।
तेगा मारै जेहि क्षत्रीके ❋ तेहि धरतीमें देइ गिराय ॥
ऐंड लगाय दई घोडाके ❋ औ राजा पै पहुँचो जाय ।
नोक मारिकै तब भालाकी ❋ ऐपनवारी लई उठाय ॥
चाबुक मारि दियो घोडाके ❋ फाटक निकारि गयो वा पार
छेदा पहुँचो जब लश्करमें ❋ ताहर वासे पूछन लाग ॥
कैसी गुजरी दरवाजे पर ❋ छेदा हाल देउ बतलाय ।
छेदा बोलो तब ताहरसे ❋ द्वारे बही रक्तकी धार ॥
देवी शारदा दहिने ह्वैगइ ❋ अपने आये प्राण बचाय ।
यहाँकि बातैं तो यहँ छाँडौ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल॥
राजा सोचैं अपने मनमें ❋ धाँधूकि कैद लेउ करवाय ।
सोचि समुझि दूती बुलवाई ❋ तिनसे राजा कही सुनाय॥
बाना बदलि जाउ लश्करमें ❋ धाँधुइ छलिकै लावौ जाय।
इतनी सुनतै यक दूतीने ❋ अपने सोलह किये सिंगार॥
बैठि पालकी रंगविरंगी ❋ ऊपर झूल सुनहली डार ।
तामें झालरि है मोतिनकी ❋ शोभा जासु वरणिनहिंजाय
साथ सहेली लैकै चलिभइ ❋ डोला तिनके संग पचास ।
सजिकै डोला तुरतै चलिभै ❋ औ बागनमें पहुँची जाय ॥
यक तालाब बहुत सुन्दर तहँ ❋ मठिया तहाँ भगौती क्यार।
सखियाँ उतारि परीं डोलनसे ❋ औबगियामें घूमन लागि॥
धाँधू आये थे नहानको ❋ सो बगियामें पहुँचे आय ।
तालकि शोभा देखत देखत ❋ सबसखियनतनरहेनिहारि
डारि मोहिनी दइ दूतीने ❋ औ धाँधूको लियो बुलाय।
तासों धाँधू पूँछन लागे ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥

सुनिकै दूती बोलन लागी ❋ हम राजाकी राजदुलारि ।
हमको ब्याहन आये बनाफर ❋ सुनतै धाँधू कही सुनाय॥
हमहीं तुमको ब्याहन आये ❋ औ धाँधू है नाम हमार ।
बोली दूती तब धाँधूसे ❋ हमरे महल चलौ महराज॥
रैनिमाहिं हिलिमिलि बातैं करि ❋ भोरहितुमहिं दिहैंपहुँचाय
यह मन भाय गई धाँधूके ❋ तब दूतीसे कही सुनाय ॥
कैसे संग चलैं तुम्हरे हम ❋ सो तुम जतन देउ बतलाय।
जो सुनि पावैं बाप तुम्हारे ❋ हमरी कैद लेयँ करवाय ॥
यह सुनि दूती बोलन लागी ❋ तुम डोलामें बैठो आय ।
चलौ हमारे साथ महलमें ❋ हमरो महल अलग दिखलाय
रैनि बसेरो करि हमरे घर ❋ भोरहि तुमहि दिहौं पहुँचाय
इतनी बात सुनी धाँधूने ❋ अपनो नौकर लियो बुलाय
बोले धाँधू तब नौकरसे ❋ हाथी तुम लश्कर लै जाउ ।
खबरि न करियो तुम राजासे ❋ हम तनि नगर बुखारे जाय
इतनी सुनिकै चलो महावत ❋ औ लश्करमें पहुँचो जाय।
हाथी बाँधि दियो डेरामें ❋ काहुइ खबरि जताई नाहिं
धाँधू बैठे इत डोलामें ❋ औ महलनमें पहुँचे जाय
दूती तुरत गई राजा पर ❋ औ धाँधूको कहो हवाल॥
राजा पहुँच तुरत महलमें ❋ धाँधुइ भकसी दियो डराय।
बाँदी आइ तब केसरिकी ❋ औ बेटीसे कही सुनाय ॥
तुमहिं बियाहन धाँधू आये ❋ राजा भकसी दियो डराय
छल करि दूती लै आई है ❋ राजा कैद लियो करवाय ॥
इतनी सुनि लइ जब केसरिने ❋ तुरतै कलमदान लै हाथ ।
लिखी हकीकति पृथ्वीराजको ❋ पढियो याहि वीर चौहान
लडिका लाये जो ब्याहनको ❋ सो राजाने लियो मँगाय ।

डारि भाकसीमें दीन्हों तेहि ❋ ताको तुरतै करौ उपाय ॥
लिखिकै पाती यह केसरिने ❋ सो बाँदीको दई गहाय ।
पाती लैकै बाँदी चलिभइ ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय॥
पाती दै दीन्ही धावनको ❋ औ सब हाल कहो समुझाय
धावन पहुँचो पृथ्वीराजपै ❋ औ पाती दै कहो हवाल ॥
पाती बाँची पृथ्वीराजने ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
कैसे दूती धाँधुइ लै गई ❋ हमको काहु जतायो नाहिं॥
सुनी हकीकति जब ताहरने ❋ तब राजासे कही सुनाय ।
अबहिं छुडे हैं हम धाँधूको ❋ सातों भाँवारि लिहैं डराय॥
ताहर पहुँचि गये लश्करमें ❋ तुरतै डंका दो बजवाय ।
बजो नगाडा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
बडि बडि तोपैं जो लश्करमें ❋ सो चरखिनपर दई चढाय
हाथी घोडा ऊँट सजाये ❋ क्षत्री तुरत भये तैयार ॥
ताहर बोले सब क्षत्रिनसे ❋ यारो रखियो धर्म हमार ।
तीनि लाख पैदल सब साजिगै ❋ हाथी साजिगै पाँच हजार॥
सात लाख लश्कर दिल्लीको ❋ सो सब सजिकै भयो तयार
बावन झंडा घूमन लागे ❋ मारू डंका दो बजवाय ॥
यक हरकारा दौरत आयो ❋ जहँ रणधीरसिंह नरराय ।
करी बन्दगी महराजाको ❋ औ लश्करको कहो हवाल
लश्कर सजिगौ पृथ्वीराजको ❋ सो धूरे पर पहुँचो आय ।
इतनी सुनि रणधीरसिंहने ❋ मोती बेटा लियो बुलाय ॥
हुक्म देदिया महराजाने ❋ अपनो लश्कर लेउ सजाय
इतनी सुनतै मोती चलिभे ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय॥
तुरत नगडचीको बुलवायो ❋ तुरतै डंका दो बजवाय ।
सब दल सजिगौ तब मोतीको ❋ जाको सजत न लागी बार

सजो बछेडा जहँ ठाढो थो ❋ तापर मोती भये सवार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ समुहेपर पहुँचो जाय ॥
घोडा बढाय दियो मोतीने ❋ औ समुहे ह्वै कही सुनाय ।
कौनसो राजा चढिआयो है ❋ सो समुहे ह्वै देइ जबाब ॥
आगे बढिकै ताहर बोले ❋ औ समुहे हुइ दियो जवाब
हम चढि आये हैं दिल्लीसे ❋ ब्याहन आये बनाफरराय ॥
ब्याह कराय देउ बहिनीको ❋ नाहक रारि बढाई आय ।
इतनी सुनिकै मोती बोले ❋ चुप्पै लौटि जाउ महराज ॥
ब्याह न ह्वइहै यहँ धाँधूको ❋ ओछी जाति बनाफर क्यार
दुसरी करिहौ जो हमसे तुम ❋ मारौं गर्द बर्द ह्वइ जाउ ॥
बोले ताहर तब मोतीसे ❋ मोती अक्किल गई तुम्हार ।
डंड बाँधिकै मैं राजाकी ❋ सातौं भाँवरि लिहौं डराय ॥
बातन बातन बतबढ ह्वइगौ ❋ औ बातनमें बाढी रारि ।
हुक्म देदियो तब दोउनने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपनके ❋ तोपन आगी दई लगाय ।
गोला छूटैं दोनों दलमें ❋ गोली सन्न सन्न सन्नाय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❋ कहकह करैं आगिनियाँ बान ।
सर सर सर सर गोली छूटैं ❋ सननन परी तीरकी मारु ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपन हाथ धरे ना जायँ ।
लई शिरोही तब क्षत्रिनने ❋ लंबे बंद करैं हथियार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै ❋ बोलै छपक छपक तलवार ।
चलै शिरोही मानाशाही ❋ औ बूँदीकी असल कटार ॥
डेढ पहर भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चलि रक्तकी धार
तेगा बाजै दोनों दलमें ❋ कौंधा चाल चलै तलवार ॥
तौलौं जीवनि मालिनि आई ❋ अपनी जादू दई चलाय ।
पत्थर फौज करी पिरथीकी ❋ उनकी कछू पेश ना जाय ॥

यह गति देखी पृथ्वीराजने ❋ दिल्ली कूच गये करवाय ।
सुनी खबरि यह केसरी बेटी ❋ दिल्ली गये पिथौराराय ॥
केसरि सोची तब अपने मन ❋ पाती महुबे देउँ पठाय ॥
पिंजरा लीन्हों तब तोताको ❋ औ तोतासे कही सुनाय ।
बारेसे पाला हमने तुमको ❋ अब असमैंमें होउ सहाय ॥
पाती लै जावो महुबेको ❋ मल्हनै खबरि देउ पहुँचाय
यह कहि पाती लिखि केसरिने ❋ कंठमें बाँधि दई ततकाल ।
सुआ उडानो तब हुवनाँसे ❋ पहुँचो गढ महुबेमें जाय ॥
गोदी बैठि गयो मल्हनाके ❋ मल्हना तोतै देखन लागि
कंठमें पाती मल्हना देखी ❋ तब पाती लै बाँचन लागि
पाती बाँची जब मल्हनाने ❋ यक हरकारा लियो बुलाय
बोली मल्हना हरकारासे ❋ अबहीं दशपुरवालों जाउ
संगहि लावो तुम ऊदनको ❋ धावन तुरत पहूँचो जाय ।
जहँ कचेहरी थी आल्हाकी ❋ धावन करी बन्दगी जाय ॥
बैठो देखो तहँ ऊदनको ❋ तिनसे धावन कही सुनाय ।
तुमहिं बुलायो मल्हना रानी ❋ अबहीं चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनतै ऊदन चलिभे ❋ औ मल्हना ढिग पहुँचे आय
चरण लागिकै रानि मल्हनाके ❋ ऊदन हाथ जोरि रहि जाय
मल्हना रानी तब ऊदनको ❋ पाती तुरत दई पकराय ।
पाती पढिकै ऊदन बोले ❋ माता धीर धरो मन माहिं
अबहीं जैहौं मैं महुबेसे ❋ औ धाँधूको लिहौं छुडाय ।
सातौं भाँवरि मैं डरवैहौं ❋ तौ मैं दस्सराजको लाल ॥
इतनी कहिकै ऊदन चलिभे ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ।
पाती दीन्हीं केसरि वाली ❋ औ सब हाल कहो समझाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदनसे ❋ भैया मनमें करौ विचार ।

पृथ्वीराजको सूबा धाँधू ❋ तुम्हरे आवे कौने काम ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनने ❋ दादा सुनो हमारी बात।
भाई लागत हमरो धाँधू ❋ सो रणधीर लियो बँधवाय॥
व्याहि जो लेहो तुम धाँधूको ❋ ह्वै है युगन युगनलों नाम।
पिरथी जानि हैं अपने मनमें ❋ हैं बडवीर महुबिया ज्वान ॥
शरणागत है केसरि बेटी ❋ तुमको पाती दई पठाय।
जो तुम बैठि रहो महुबेमें ❋ बहु बदनामी होय तुम्हार ॥
धाँधू मरि जावे भकसीमें ❋ तो मोहिं जीबेको धिरकार।
हम तो जैहैं नगर बुखारे ❋ औ भैयाको लैहैं छुडाय ॥
इतनी सुनिकै तब आल्हाके ❋ मनमें आय गई ततकाल ।
हुक्म देदियो तब ऊदनको ❋ अपनी फौज लेउ सजवाय॥
सुनते ऊदन गये लश्करमें ❋ तुरतै डंका दो बजवाय।
बजो नगारा जब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ॥
आल्हा ऊदन ढेबा मन्ना ❋ सजिकै तुरत भये असवार।
जायके पहुँचे परिमालतै ❋ औ सब हाल कहो समुझाय
आज्ञा लैके चन्देलेकी ❋ लश्कर कूच दियो करवाय।
तीनि पहरको धावा करिकै ❋ सिरसा गढमें पहुँचे जाय ॥
पाती लैके केसरि वाली ❋ सो मलिखेको दई गहाय।
हाथ जोरिकै ऊदन बोले ❋ दादा जल्दी होउ तयार ॥
संगै लै लेउ पृथ्वीराजको ❋ सोऊ चलैं तुम्हारे साथ।
सुनते त्यार भये मलिखे तब ❋ घोडी कबुतरी लई सजाय ॥
हुक्म देदियो मलिखे ठाकुर ❋ लश्कर डंका देउ बजाय।
डंका बाजो सिरसा गढमें ❋ तुरतै फौज भई तैयार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार।
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढाय॥

नौसै झंडा उडैं सुनहरे ❋ मानौ बिजलीसी चमकायँ ।
कोइ नालकिन कोइ पालकिन ❋ कोई गजरथपर असवार ॥
बारह जोडी बजैं नगाडा ❋ नौसै धौंसा शब्दं अपार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ दिल्लीकी पकरी राह ॥
आयो लश्कर ब्रह्मानँदको ❋ सोऊ सिरसा पहुँचो आय ।
औ जगनायक जगनेरीके ❋ सोऊ तुरत पहूँचे आय ॥
चारौं लश्कर मिलिकै चलिभे ❋ गढ दिल्लीमें पहुँचे जाय ।
ऊदन बोले नर मलिखेसे ❋ चलिकै मिलौ पिथौराराय।
मलिखे ऊदन दोनों चलिभै ❋ औ फाटकपर पहुँचे जाय ।
जहां कचेहरी पृथीराजकी ❋ दोनों उतरि परे अरगाय ॥
पृथीराज देखो दोनोंको ❋ तब आदरसे गये लिवाय ।
चौकी बिछवाई सोनेकी ❋ तापर दियो गलीचा डारि॥
तापर बैठारो दोनोंको ❋ औ दोनोंसे लगे बतान
कैसे आये तुम दोनों हो ❋ अपने हाल देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे पृथीराजसे ❋ तुम सुनिलेउ वीर चौहान ।
कहाँ गँवायो तुम धाँधूको ❋ सो सब हाल कहौ समुझाय॥
पिरथी बोले तब अनमन ह्वै ❋ हमसे कछू कही ना जाय ।
धाँधू व्याहन गये बुखारे ❋ राजा भकसी दियो डराय॥
छलिकै बुलवायो धाँधूको ❋ तब हम कीन्हों युद्ध अपार ।
फौज हमारी पत्थर ह्वै गइ ❋ मालिनि जादू दई चलाय ॥
तब हम लौटे गढ दिल्लीको ❋ औ हम बहुत भये लाचार ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ अब तुम चलौ हमारे साथ
सातौं भाँवरि हम डरवैहैं ❋ औ धाँधूको लैहैं व्याहि ।
इतनी सुनिकै पिरथी बोले ❋ तुम सुनिलेउ वीरमलिखान॥
मरने होवैं जो सबको जहँ ❋ तौ फौजनको जाउ चढाय ।

हमरे मनमें नहिं आवत यह ❋ की धाँधूको होय विआहु ॥
इतनी सुनतै मलिखे बोले ❋ राजा बोलो बात सम्हारि ।
धाँधू छोडि दिये भकसीमें ❋ औ तुम घरमें बैठे आय ॥
खबरि न हमको तुम पठवाई ❋ यह क्या कियो भूलको काम
मुखसे हीनी अब बोलत हो ❋ तुमहिं हँसौआको डर नाहिं॥
बैठे रहियो तुम डेरामें ❋ हमरी देखि लेउ तलवारि ।
संग हमारे जो ना चलिहौ ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनिकै पिरथी सोचे ❋ है यह शूर महोबे क्यार ।
हटकी हमरी यह मानिहैं ना ❋ ताते लश्कर लेउ सजाय ॥
हुक्म देदियो पृथीराजने ❋ जल्दी फौज होय तैयार ।
बजो नगारा तब दिल्लीमें ❋ लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
हाथी मँगवायो पृथीराजने ❋ तापर चढे पिथौरा राय ।
लश्कर चलिभै पृथीराजको ❋ मलिखे लश्कर पहुँचे जाय॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ संगै चले वीर चौहान ।
तीनि दिनाको धावा करिकै ❋ पहुँचे नगर बुखारे जाय ॥
पाँच कोश जब रहा बुखारा ❋ लश्कर डेरा दिये डराय ।
जीन उतारि दिये घोडनके ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
फेटैं छुटिगइँ रजपूतनकी ❋ ऊँचे तंबू दिये तनाय ।
मलिखे बोले तब क्षत्रिनसे ❋ क्षत्रिउ सुनो हमारी बात ॥
जो कोई तुमसे पूछे कछु ❋ मत कुछ दीजो हाल बताय।
योगी बनिकै हम जैहैं अब ❋ महलन भेद जानिहैं जाय ॥
इतनी कहिकै मलिखे ढेबा ❋ ऊदन गंगू संग लिवाय ।
योगी बनिकै चारौं चलिभे ❋ अंग विभूति लई लपटाय ॥
बहुत मोहनी सूरति जिनकी ❋ देखत बिकल होयँ नर नारि
लई बँसुरिया बच ऊदनने ❋ खँजरी लई वीर मलिखान

गंगू भाट लियो यकतारा ❀ ढेबा डमरू लई उठाय ।
चारों योगी डगरत चलिभे ❀ औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
बजी खंजरी नर मलिखेकी ❀ ढेबा डमरू दई बजाय ।
बजो इकतारा गंगूको ❀ बँसुरी बजी उदयसिंह क्यार ॥
राग रागिनी गावन लागे ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
धुरपद गावैं औ तिल्लाना ❀ गजल पर्ज पर तोरैं तान ॥
राग भैरवीकी शोभा है ❀ गावन लाग मोहनी डार ।
गावत चलिभे चारों योगी ❀ औ फाटकपर पहुँचे जाय ॥
बोलो दरवानी जोगिनसे ❀ बाबा हाल देउ बतलाय ।
कहाँसे आये औ कहँ जैहौ ❀ यह सुनि ऊदन कही सुनाय
देश हमारा बंगाला है ❀ औ गोरखपुर कुटी हमार ।
आगे जैहैं हिंगलाजको ❀ अस कहि जोगी बढे अगार ॥
जायके पहुँचे वे ड्योढीमें ❀ सोरठ राग अलापन लाग ।
राग सुनत खन उन जोगिनके ❀ राजा मोहि मोहि रहि जाय
तुरत जोगियनको बुलवायो ❀ राजा उनसे पूछन लाग ।
कौन देशके तुम जोगी हो ❀ कछु दिन यहाँ करो बिसराम ॥
बोले जोगी तब राजासे ❀ तुम सुनिलेउ बघेलेराय ।
हम हैं जोगी बंगालेके ❀ औ गोरखपुर कुटी हमार ॥
बहता पानी रमता जोगी ❀ इनको कौन सकै बिरमाय ।
आजु रमानी तुम्हरी नगरी ❀ भोरहि हमहिं रमानी बाट ॥
भीख मँगाय देउ जल्दीसे ❀ राजा मोती दिये मँगाय ।
जोगी बोले तब राजासे ❀ राजा सुनो हमारी बात ॥
हमें चाह नाहीं मोतिनकी ❀ हमको भोजन देउ कराय ।
यह सुनि राजा गये महलनमें ❀ औ रानीसे कही सुनाय ॥
भोजन त्यार करो जल्दीसे ❀ जोगी भोजन करिहैं आय ।

भोजन त्यार किये रानीने ❋ औ जोगिनको लियो बुलाय
कछु सुधि आयगई रानीको ❋ हमरी बेटी है बीमार ।
बोली रानी तब जोगिनसे ❋ जोगिउ सुनो हमारी बात॥
हमरी बेटी माँदी ह्वैगइ ❋ ताकी दवा देउ बतलाय ।
बोले ऊदन तब रानीसे ❋ अपनी बेटी देउ दिखाय ॥
रानी बुलवायो बेटीको ❋ जोगिन लई विभूति निकारि
ऊदन बोले तब रानीसे ❋ अब तुम परदा देउ कराय॥
निकट हमारे कोइ न आवै ❋ दीहैं हम आसेब हटाय ।
परदा ह्वैगो हुकम होतही ❋ सब नर नारी दिये हटाय॥
बोले ऊदन तब केसरिसे ❋ भौजी सुनो हमारी बात ।
हम आये हैं गढ महुबेसे ❋ औ सिरसासे बीर मलिखान
धाँधू दादाको बतलावो ❋ हम भकसीसे लेइँ निकारि।
यह सुनि केसरि बोलनलागी ❋ ऊदन सुनो हमारी बात ॥
परदा लागो है महलनमें ❋ तुम मलिखेको लेउ बुलाय।
ऊदन टेरि लियो मलिखेको ❋ तीनों तहाँ पहूँचे जाय ॥
भकसी देखी बघ ऊदनने ❋ तब पत्थरको दियो हटाय ।
लट्ठा साखूको ऊपर धरि ❋ तामें रस्सा दो लटकाय ॥
पकरिकै रस्सा ऊदन उतरे ❋ औ धाँधूको लियो निकारि।
अंग विभूति मली धाँधूके ❋ औ अपने सँगलियोलिवाय
बोले ऊदन तब केसरिसे ❋ भौजी धीर धरो मनमाहिं।
सातों भाँवरि हम डरवैहैं ❋ हमरो नाम उदयसिंह राय
डगरत चलिभे पाँचो जोगी ❋ औ डेरनमें पहुँचे आय ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ औ धाँधूने कही सुनाय ॥
हमहिं छाँडिदिल्ली पहुँचे तुम ❋ फिरिनालीन्हीं खबरि हमार
हमरे भैया जो औते नाहिं ❋ तौ नहिं बचते प्राण हमार॥

बोले पृथीराज धाँधूसे ❋ हमने कीन्हों युद्ध अपार ।
जादू डारि दियो मालिनिने ❋ फौजहि पत्थर दियो बनाय
तब लाचार भये सबही विधि ❋ हम दिल्लीको गये पराय ।
धन्य बनाफर हैं महुबेके ❋ जिनयहँतुमकोलियोनिकारि
बडे शूर हैं मलिखे ऊदन ❋ क्यों नहिं राज करैं परिमाल
करि अस्नान ध्यान धाँधूने ❋ भोजन जाय किये तत्काल
दर्शन हेत जात देवीके ❋ नित रणधीरसिंह सरदार ।
नगरके बाहर है मठिया जहँ ❋ तहँ ऊदनने कियो विचार ॥
आजु बिठावैं हम धाँधूको ❋ राजै कैद लेइँ करवाय ।
कारो मुख करिकै धाँधूको ❋ देवीकि मठिया दो बैठाय ॥
केश खोलिदै तिन धाँधूके ❋ रूप भयंकर दियो बनाय ।
दर्शन हेत मात देवीके ❋ आयो तहाँ भूप रणधीर ॥
राजा भीतर गयो मठीके ❋ धाँधू तुरत लिया बँधवाय ।
देखो राजा जब धाँधूको ❋ मनमें गये सनाका खाय ॥
बोले राजा जब धाँधूसे ❋ तुम छल करो यहाँपर आय
तुमको भकसीमें राखो हम ❋ यहँ कैसे तुम पहुँचे आय ॥
बोले धाँधू तब राजासे ❋ तुम सुनिलेउ बघेले राय ।
तुम छल कीन्होंजस हमरेसँग ❋ दूती भेजि लियो बुलवाय ॥
तैसेइ छल करि हमरे भाई ❋ भकसीमेंसे लाये निकारि ।
होश बन्द भये तब राजाके ❋ संगको नौकर गयो भगाय
जाय पुकारो मोतीमलसे ❋ राजा कैद लिये करवाय ।
इतनी सुनतै मोतीमलने ❋ लश्कर डंका दो बजवाय ॥
बजो नगारा नगर बुखारा ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
बाडि बाडि तोपैं अष्ट धातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढाय
हाथीसजिगयेघोडासजिगये ❋ लश्कर सजा बुखारे क्यार ।

हाथी घोडा ऐसे सोहैं ❋ मानों गिरि सुमेरु दिखरायँ
रेशम और मखमली झूलैं ❋ तिनपर जरी तारको काम ।
ऊपर हौदा हैं सोनेके ❋ तिनमें हीरा जडे बनाय ॥
बोले मोती सब क्षत्रिनसे ❋ यारो रखियो धर्म हमार ।
पिता हमारे कैद कराये ❋ हैं चढि आये महुबिया ज्वान
बडे शूरमा हैं महुबेके ❋ जिनकी जग जाहिर तलवार
जिनहिं पियारी घर तिरिया हो ❋ सो सब तलब लेउ घर जाव
जिनहिं पियारी परम भगौती ❋ सो दुइ बाँधि लेउ तलवार
इतनी सुनिकै क्षत्री बोले ❋ अपनो सोच देउ बिसराय॥
निमक तुम्हारो हम खायो है ❋ सो हाडनमें गयो समाय ।
पायँ पिछारू हम ना धरि हैं ❋ चाहैं प्राण रहैं की जायँ ॥
कटि कटि बोटी गिरैं खेतमें ❋ उठि उठि रुंड करैं तलवार ।
बख्तर हमरे तुम मँगवावो ❋ लाल कुर्तियाँ देउ मँगाय ॥
बख्तर आये तब फौलादी ❋ सो ज्वाननने लिये चढाय ।
लाल कुर्तियाँ ज्वानन पहिरीं ❋ औ सब बाँधि लिये हथियार
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ खलबल परी फौजमें आय
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ॥
छम छमछमछम करैं सांडिया ❋ दोय दोय शुतर चढे असवार
बावन झडा घूमन लागे ❋ औ लश्करमें उडैं निशान ॥
चंग बजावैं कोइ लश्करमें ❋ कहुँ कहुँ रही बँसुरिया बाजि
भूरा हाथीको सजवाया ❋ मोती तुरत भये असवार ॥
सुमिरन करिकै जगदम्बाको ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ।
लश्कर चलिभो मोतीमलको ❋ औ धूरेपर पहुँचो जाय ॥
सुनी खबरिया जब ऊदनने ❋ अपनो लश्कर लियो सजाय
लगे मोरचा दोनों दलमें ❋ भारी शूर महोबे क्यार ॥

मोती बढ़िगै तब आगेको ❀ औ ऊदनसे कही सुनाय ।
कैद छाँडि देउ तुम राजाकी ❀ चुप्पे लौटि महोबे जाउ ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे ❀ मोती सुनौ हमारी बात ।
बहिनि व्याहि देउ तुम जल्दीसे ❀ तौ हम लौटि महोबे जायँ
विना विवाहे हम ना जैहैं ❀ चाहैं प्राण रहै कै जायँ ।
इतनी सुनते मोती जरिगो ❀ तोपन बत्ती दइ लगवाय ॥
हुक्म देदिया बघ ऊदनने ❀ तोपन आगी देउ लगाय ।
बत्ती देदइ तब तोपनमें ❀ धुअना रह्यो सरग मँडराय॥
गोला छुटन लगे तोपनसे ❀ जिनका होवै शब्द अपार ।
अररररररर गोला छूटै ❀ कह कह करैं अगिनियाँ बान
सननन सननन गोली छूटैं ❀ सररर परी तीरकी मारु ।
गोला लागै जेहि हाथीके ❀ दलमें डौंकि डौंकि रहि जाय
गोला लागै जौन ऊँटके ❀ दलमें गिरै चकत्ता खाय ।
गोला लागै जिन घोडनके ❀ चारौं सुम्म गर्द ह्वै जायँ ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❀ तिनकी त्वचा सरग मँडराय
बंबको गोला जिनके लागै ❀ सो लत्तासे जायँ उडाय ॥
गोला जंजिरहा जिनके लागै ❀ तिनके हाड माँस छुटि जायँ
छोटी गोली जिनके लागै ❀ मानौ गिरह कबूतर खाय ॥
बानको डंडा जिनके लागै ❀ तिनके दुइ खंडा ह्वै जायँ ।
चारि घरीभरि गोला बरसो ❀ कोइ रजपूत न टारैं पाँव ॥
तोपैं धैं धैं लालै ह्वै गईं ❀ चुटाकिनके गे माँस उडाय ।
तोप रहकला पीछे छाँडे ❀ लंबे बंद करे हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ रहिगो पाँच पैग मैदान ।
साँगैं चलन लगीं दोऊ दल ❀ ऊपर बर्छिनकी दइ मारु ॥
छुटैं पिचक्का जे लोहुनके ❀ औ बुबकारिन बोलैं घाव ।

बूडि जुलफियाँ गइँ लोहूसे ❋ चर्बी अंग गई लपटाय ॥
हौदा भरिगै तब लोहूसे ❋ औ चुचुआत फिरैं असवार
चारि घरी भरि बजो सांगडा ❋ भारी भइ बर्छिनके मारु ॥
भाला लपिकै दोना ह्वैगो ❋ लटुआ कटि बर्छिनके जायँ
यहौ लडाई पाछे परिगइ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल॥
दोनौं फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो डेढ कदम मैदान ।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खट खटचलन लगीतलवार
चलै जुनब्बी औ अहिगर्बी ❋ ऊना चलै विलायत क्यार
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटिगिरैंसुघरुआज्वान
पैदलके सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनसे असवार ।
हौदाके सँग हौदा मिलिगो ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत॥
पाँच कोशलों चलै शिरोही ❋ चारों ओर चलै तलवार ।
पैग पैगपर पैदल गिरिगये ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ।
कटे भुसुंडा जिन हाथिनके ❋ भुइमें गिरे भरहरा खाय ॥
कटिगै कल्ला जिन घोडनके ❋ सो गिरिपरे करौंटा खाय ।
कटि भुजदंडैं रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार
पगिया डारी जो लोहूमें ❋ मानौ ताल फूल उतरायँ ।
पडे दुशाला हैं लोहूमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार ॥
ढालैं डारी हैं लोहूमें ❋ मानौ नाग रहे मन्नाय ।
कठिन लडाई भइ धूरेपर ❋ औ बहिचली रक्तकी धार॥
घेहा डारे रणमें लोटैं ❋ जिनके प्यास प्यास रटलाग
मुहर कटोरा पानी ह्वइगो ❋ रणमें कोइ न बूझै बात ॥
तीनि लाख मोतीके जूझे ❋ रहिगे दोइ लाख असवार ।
दश हजार महुबेके जूझे ❋ ऐसी कठिन चलै तलवार ॥

झुके सिपाही महुबेवारे ❋ जिनके मारु मारु रट लाग
हाहाकार मचो लश्करमें ❋ सिगरे शूर उठे घबराय ॥
कोई रोवत है तिरियनको ❋ उनको कौन लगै है पार ।
कोई रोवत है लडिकनको ❋ कोई पुरिखनको चिल्लायँ ॥
कोई रोवै महतारिनको ❋ कुंछा लिये रही नौ मास ।
गोल फूटिगौ भर्रा परिगौ ❋ लश्कर रैनबेन ह्वै जाय ॥
ऊँचे खाले कायर भाजे ❋ जे रणदुलहा चले बराय ।
दुइ दुइ फैटनके बँधबैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह॥
भिड़हा आये हैं महुबेके ❋ सो लश्करमें दिये छुडाय ।
भेड़ बकरियनकी गिनती नाहिं ❋ जे मनइनको करैं अहार ॥
छोंडि नौकरी हम मोतीकी ❋ बनकी बेंचि लकडियाँ खायँ
मालिनि आई तब लश्करमें ❋ अपनी जादू लई निकारि ॥
घोडी कबुतरी दाबे आवै ❋ समुहे आये वीर मलिखान।
ताकि ताकि जादू मालिनि मारै ❋ सो मलिखेपरना अनियाय
बोले मलिखे वा मालिनिसे ❋ मालिनि सुनो हमारी बात ।
पुष्य नक्षत्र माहिं जन्माहूँ ❋ बरहें परी बृहस्पति आय ॥
और बातकी क्या गिनती है ❋ शंका करूँ कालकी नाहिं ।
ढालाकिऔझडमलिखे मारी ❋ औ मालिनिको दियोगिराय
जूरा काटिलियो मालिनिको ❋ जादू सब झूठी परिजाय ॥
तुरतबँधायलियोमालिनिको ❋ औ यह कही बीर मलिखान
पहली फौजनके क्षत्री जे ❋ तुमने पत्थर दिये बनाय ॥
मानुष करि देउ उन क्षत्रिनको ❋ सबकी जादू देउ उतारि॥
तौ हम छाँडिदेइँ तुमको अब ❋ नाहीं बँधी २ मरिजाउ ।
मालिनि पुरिया लइ जादूकी ❋ औ मलिखेको दइ पकराय
पुरिया डारिदेउ लश्करमें ❋ तौ सब जादू जाय पराय ।

पुरिया लैकै मलिखे चलिभे ❋ औ लश्करमें दइ फैलाय ॥
उठे सिपाही दिल्लीवाले ❋ सबकी जादू गई पराय ।
मलिखेछोंडि दियो मालिनिको ❋ मालिनि गढमें पहुँचीजाय
यह गति देखी जब मोतीने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय॥
बाढि ललकारो बघ ऊदनको ❋ औ ऊदनसे कही सुनाय ॥
दश दश रुपयाके नौकर हैं ❋ नाहक डारिहौ शीश कटाय।
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ देखें कापर राम रिसायँ ॥
यह मन भाय गई ऊदनके ❋ अपनो घोडा दियो बढाय।
साँगि उठाई तब मोतीने ❋ औ ऊदनपर दई चलाय ॥
बायेसे घोडा दहिने ह्वइगो ❋ नीचे साँगि गिरी अरराय ।
बोले मोती तब ऊदनसे ❋ तुम सुनिलेउ उदयसिंहराय॥
चोट हमारीसे तुम बचिगये ❋ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ।
ऊदन बोले तब मोतीसे ❋ ठाकुर अक्किल गई तुम्हार ॥
हम हैं क्षत्री गढ महुबेके ❋ नाहीं धरें पिछारू पायँ ।
दुसरी उचौनी औरौ करिलेउ ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ॥
सुनिकै बातैं यह ऊदनकी ❋ मोती लीन्हों गुर्ज उठाय ।
सो धरि धमको बघ ऊदनपर ❋ ऊदन लीन्हों चोट बचाय ॥
लई शिरोही तब मोतीने ❋ सो ऊदन पर दई चलाय ।
ढाल उठाई तब ऊदनने ❋ तापर भई जडाका जाय ॥
तीनि शिरोही मोती मारीं ❋ ऊदनके नहिं आयो घाव ।
तब ललकारो बघ ऊदनने ❋ मोती सुनौ हमारी बात ॥
तीनि उचौनी तुमनें कीन्ही ❋ अब तुम खबरदार ह्वैजाउ ।
ऐंड लगाई रसबेंदुलके ❋ द्वै मस्तीक अडाये पाँव ॥
ढालकि ओझड ऊदन मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय ।
रस्सा काटि दिये हौदाके ❋ हौदा गिरो धरणिमें आय॥

ऊदन उतरे तब घोडासे ❋ औ मोतीको लियो बँधाय।
मोतिहि बाँधि लियो ऊदनने ❋ औ आल्हातर पहुँचे जाय॥
बोले ऊदन तब आल्हासे ❋ दादा मंडलीक अवतार।
करौ तयारी अब महलनकी सातौं भाँवरि लेउ डराय॥
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ आल्हा सुनो हमारी बात।
कैद छाँडि देउ हम दोउनकी ❋ अबहीं भाँवरि देउँ डराय॥
कैद छाँडिदइ तब दोउनकी ❋ दोउ हाथीपर भये असवार।
करी सलाहैं तब दोनोंने ❋ भारी शूर महोबे क्यार॥
बडे लडैया बन्नाफर जिनकी जग जाहिर तलवार
इनसे जीतनके नाहीं है ❋ चाहै कोटिक करैं उपाय॥
देवी सहायक है आल्हाकी ❋ तासे ब्याह देउ करवाय।
करी सलाहैं यह दोउनने ❋ पहुँचे जाय राजदरबार॥
हुक्म देदिया तब मोतीको ❋ चारौ नेगी लेउ बुलाय।
सब सामग्री करौ त्यार तुम ❋ मोती नेगी लिये बुलाय॥
यक हरकाराको बुलवायो ❋ बलख नगरम दियो पठाय।
न्योतो भेजोअभिनन्दनको ❋ तिनलडिका निजादियोपठाय
चित्तररेखा राजकुमारी ❋ सोऊ तहाँ पहूँची आय।
फिर रणधीरसिंह राजाने ❋ अपनो पंडित लियो बुलाय॥
वेदी रचाई तब पंडितने ❋ लागे होन मंगलाचार।
बोलन लागे तहँ पंडितजी ❋ नेगिउ तुम लश्करलौं जाउ॥
गहनो लावो तुम आल्हासे ❋ औ बेटीको पठओ बुलाय।
नेगी चलिभये तब ड्योढीसे ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय॥
बोले नेगी तब आल्हासे ❋ गहनेको डब्बा देउ मँगाय।
करो तयारी अब महलनकी ❋ महलन चढै चढावो जाय॥
ऊदन पहुँचे पृथीराजतर ❋ औ राजासे कही सुनाय।

डब्बा लावो अब गहनेको ❋ महलन चढै चढावो जाय॥
बोले पृथीराज ऊदनिसे ❋ गहनो हम नहिं लाये साथ
हमहिं भरोसो नाहिं व्याहको ❋ तुम समरत्थ उदयसिंह राय
मुहरन तोडा तुम लै जावो ❋ अबहीं गहनो लेउ गढाय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि लौटे ❋ औ तंबूमें पहुँचे आय ॥
गहनेको डब्बा तुरत निकारो ❋ औ रुपनाको लियो बुलाय।
ऊदनि बोले तब रुपनासे ❋ महलन गहनो देउ पठाय ॥
संगै जावो तुम नेगिनके ❋ रुपना तुरत भयो असवार ।
डब्बा लीन्हों तेहि गहनेको ❋ नेगी लीन्हें संग लिवाय ॥
जाय पहूँचो महल बुखारे ❋ रुपना डब्बा दियो गहाय ।
गहनो पहुँचि गयो महलनमें ❋ रुपना लश्कर पहुँचो आय॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ बेटी चौक पहूँची आय ।
चढो चढावा तब केसारिको ❋ केसारि भूषण सजी बनाय॥
सजे अभूषण जे केसारिने ❋ तिनकी शोभा देउँ सुनाय ।
पहिरी सारी रेशमवारी ❋ जामें बनो जरकसी काम॥
ओढि दुपट्टा फिरि अतलसको ❋ जामें झालरि अजब सुहाय
पहिरो लहँगा घूमघुमेरा ❋ जामें गोटा लगो अपार ॥
झालरि लागी है मोतिनकी ❋ शोभा एक न बरणी जाय।
माथे बेंदी नीलाम्बरकी ❋ सोऊ चमकि चमकि रहिजाय
कर्णफूल काननमें सोहैं ❋ औ झुमकनकी अजब बहार
चम्पकली पचलडी सतलडी ❋ जेहारि तेहारि अधिक सोहाय
मोहनमाला चन्द्रहार अरु ❋ भुज भुजबंद कंठमें हार ।
दुलरी तिलरी कंठ विराजै ❋ बेंदी दमकि दमकि रहिजाय
नथकी शोभा क्या बरणूं मैं ❋ लटकन झूमि झूमि रहिजाय
कडा छडा सोहैं पायँनमें ❋ ऊपर छागलकी झनकार ॥

कजरा सोहि रहा आँखिनमें ❋ मेंहदी लाली रही दिखाय ।
जितने गहने थे तिरियनके ❋ सो केसरिने लिये सजाय ॥
भयो बुलौवा तब धाँधूको ❋ नेगी लश्कर दिये पठाय ।
नेगी पहुँचे जब लश्करमें ❋ तहँ आल्हासे कही सुनाय ॥
अब भिजवावौ तुम दूलहको ❋ संग घरौआ लेउ लिवाय ।
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❋ दूलह संग होउ तैयार ॥
खबरि सुनावौ पृथीराजको ❋ सो मडयेको होयँ तयार ।
इतनी सुनतै ऊदनि चलिभै ❋ पृथीराजपै पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदन पृथीराजसे ❋ अब दूलह संग होउ तयार ।
आदि भयंकर हाथी साजो ❋ पृथ्वीराज भये असवार ॥
हाथी पचशावद सजवाया ❋ तापर आल्हा भये सवार ।
चौंडा चढिगा इकदन्तापर ❋ ढेबा मनुरथापर असवार ॥
घोडा हरनागर सजवाया ❋ तापर ब्रह्मानँद असवार ।
घोडी हिरौंजिनि त्यार कराई ❋ तापर जगनिक भये सवार
घोडा बेंदुलापर ऊदन हैं ❋ घोडी कबुतरी पर मलिखान
घोडा करिलिया पर इन्दल हैं ❋ जो आल्हाको राजकुमार ॥
ताहर सूरज दोनों भैया ❋ अपने घोडनपर असवार ।
सजी पालकी तब धाँधूकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
चली पालकी तब दूलहकी ❋ संगहि चले सभी सरदार ।
अगल बगलपर घोडा नाचें ❋ बीच पालकी केरि बहार ॥
सब क्षत्री द्वारेपर पहुँचे ❋ तब रणधीरसिंह नरराय ।
साथ लिये मोती बेटाको ❋ सो द्वारेपर पहुँची आय ॥
करि अगवानी सब शूरनकी ❋ औ मडयेतर गये लिवाय ।
पंडित वेद उचारन लागे ❋ धाँधू चौक दिये बैठाय ॥
पहले पूजन करि गणेशको ❋ बहुरि गौरजा दई पुजाय ।

पूजा कराई नवग्रहनकी ❀ औ केसरिको लियो बुलाय
करि गठिबन्धन तब पंडितने ❀ कन्यादान दियो करवाय ।
भाँवरि परनलगीं धाँधूकी ❀ मोती शूर लिये बुलवाय ॥
पहिली भाँवरिके परतै खन ❀ मोती खैंचि लई तलवारि ।
करो जडाका जब खोपरीपर ❀ ऊदन दीन्हीं ढाल अडाय ॥
दुसरी भाँवरिके परतै खन ❀ क्षत्री दौरि परे तत्काल ।
ऊदन बोले तब आल्हासे ❀ दादा खबरदार ह्वै जाउ ॥
भाँवरि धाँधूकी डरवावो ❀ हम क्षत्रिनको देयँ भगाय ।
ऊदन ढेबा मलिखे ब्रह्मा ❀ चारों शूर महाबे क्यार ॥
जायके टूटे उन क्षत्रिनपर ❀ सबके होश बन्द ह्वै जायँ ।
ढालकि औझड जेहिके मारैं ❀ तेहि धरतीमें देयँ गिराय ॥
बैठ देखें पृथ्वीराज तब ❀ मनमें कहैं वीर चौहान ।
बडे लडैया महुबेवारे ❀ जिनके बाँटपरी तलवारि ॥
मारि भगायो सब क्षत्रिनको ❀ औ मडयेमें पहुँचे आय ।
तब रणधीर करी तैयारी ❀ औ दहेजको लियो सजाय ॥
करी तयारी तब बेटीकी ❀ डोला तुरत भयो तैयार ।
मिलिजुलिकेअपनीसखियनसे ❀ केसरि डोला बैठी जाय ॥
दियो दहेज सभी राजाने ❀ बेटी बिदा दई करवाय ।
डोला चलिभो तब बेटीको ❀ संगहि चले पिथौराराय ॥
घरी एकको अरसा गुजरो ❀ सब लश्करमें पहुँचे जाय ।
डंका दै दीन्हा लश्करमें ❀ लश्कर सभी होय तैयार ॥
कूँचको डंका तब बजवायो ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ।
चारि रोजको धावा करिके ❀ लश्कर दिल्ली पहुँचो जाय ॥
कछुक दिनालौं पृथीराजने ❀ महुबेवारेन लियो टिकाय ।
करी बनाफर तब तैयारी ❀ औ ऊदनने कही सुनाय ॥

जल्द सजाय देउ डोलाको ❋ औ धाँधूको संग पठाय ।
मुख दिखरावा ह्वै माता ढिग ❋ पाछे डोला दिहौं पठाय ॥
बोले पृथीराज ऊदनसे ❋ तुम सुनि लेउ उदयसिंह राय
डोला महुबे अब ना जैहै ❋ काहे करत बखेडा जानि ॥
इतनी सुनिकै मलिखे तडपे ❋ औ राजासे लगे बतान ।
पाती आई रनि मल्हना पै ❋ उन हम सबको दियो पठाय
हमरी छाती थी बज्जुरकी ❋ जो धाँधूको लाये बिआहि।
माता मल्हनाको दिखलै हैं ❋ पाछे दिल्ली दिहैं पठाय ॥
सो मँगवाय देउ डोलाको ❋ धाँधू संग देउ करवाय ।
बात हमारी झूँठी जानो ❋ तौ केसरिसे लेउ पुँछाय ॥
इतनी सुनिकै राजा चलिभे ❋ औ महलनमें पहुँचे जाय ।
रानी अगमासे बोले तब ❋ तुम केसरिसे पूँछौ जाय ॥
किसको पाती तुमने भेजी ❋ सो सब भेद देय बतलाय ।
हाथ जोरि तब केसरि बोली ❋ पाती मल्हनै दई पठाय ॥
भेजे शूरमा तब मल्हनाने ❋ तिनयहब्याह लियो करवाय
तुम्हरे राजाके लश्करमें ❋ मालिनि जादू दियो चलाय
बालम भकसीमें डारे गये ❋ तुम्हरे राजा आये बराय ।
जो नाहिं जाते महुबेवारे ❋ तौ यह ब्याह न होतो रानि
अब तुम भेजौ मोहिं महुबेको ❋ पूजौं चरण सासुके जाय ।
मल्हना रानीके लागौं पग ❋ फिरि दिल्लीमें लेउ बुलाय॥
इतनी सुनिकै रानी बोली ❋ औ राजासे कही सुनाय ।
हाल बतावति है केसरि सब ❋ यहि महुबेको देउ पठाय ॥
चरण लागि ऐहैं सबहीके ❋ धाँधू संग देउ पहुँचाय ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ धाँधू तुरत लिये बुलवाय ॥
सो आल्हा ऊदन सँग कीन्हें ❋ डोला तुरत दियो सजवाय

करी तयारी तब ऊदनने ❋ लश्कर कूच दियो करवाय॥
सात दिनाकी मैंजलि करिकै ❋ औ धूरेपर पहुँचे जाय ।
रुपना बारीको बुलवायो ❋ औ ऊदनने कही सुनाय॥
खबरि करौतुमरनिमल्हनासे ❋ आये व्याहि बनाफरराय ।
इतनी सुनिकै रुपना चलिभो ❋ औ महलनमें पहुँचो जाय
ठाढी मल्हना जहँ अंटापर ❋ हेरै बाट लहुरवा क्यार ॥
सिढियनसिढियनमल्हनाउतरी ❋ औ रुपनापै पहुँची जाय
मल्हना बोली तब रुपनासे ❋ भैया हाल देउ बतलाय ।
कहाँपै डोला है केसरिको ❋ औ कहँ रहे बनाफरराय ॥
आल्हा मलिखे ऊदन ब्रह्मा ❋ सबको हाल कहौ समुझाय।
केर्म्हा गुजरी नगर बुखारे ❋ केहिविधिभयोव्याहकोसाज।
हाल बतायो तब रुपनाने ❋ सब धूरेपर पहुँचे आय ।
इतनी सुनतै मल्हनारानी ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइ जाय
थार मोबरनको मँगवायो ❋ तामें चौमुख दियना बारि।
सिगरी सखियाँ महुबेवारी ❋ मो मल्हनाने लई बुलाय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ महलन भयो मंगलाचार ।
सिगरी रानी परिमालेकी ❋ मो द्वारेपर पहुँची आय ॥
देवै ब्रह्मा दोनों आईं ❋ मझुला फुलवा संगलिवाय
डोला आयो दरवाजे पर ❋ परछनि होन लागितेहिकाल
नेगी बुलवाये मल्हनाने ❋ सबको मोहरें दईं बँटाय ।
दान दक्षिणा दै विप्रनको ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वइजाय
आल्हा ऊदन मलिखे ढेबा ❋ औ ब्रह्माको संग लिवाय ।
पाँचौ आये तब महलनमें ❋ औ मल्हनासे कही सुनाय॥
माता सब परताप तुम्हारे ❋ हम धाँधूको लाये विआहि।
धाँधू आये तब पलकीसे ❋ औ महलनमें पहुँचे आय ॥

चरण लागिकै सब रानिनके ❋ धाँधू माथे लिये लगाय ।
देवै ब्रह्माके लागे पद ❋ औ धाँधूने कही सुनाय ॥
दया तुम्हारी माता चहिये ❋ हम नालायक पुत्र तुम्हार ।
कर्मरेखको को मेटै जग ❋ नाहिं कछु सेवा करी तुम्हार
बोली मल्हना तब धाँधूसे ❋ बेटा सुनौ हमारी बात ।
जहाँ तुम्हारे मनमें आवै ❋ तहँ तुम रहौ लडैते लाल ॥
खबरि हमारी तुम भुलियो ना ❋ सूबेदार पिथौरा क्यार ।
फिरिसबचलिभयेरंगमहलने ❋ बीच कचहरी पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी चन्देलेको ❋ औ सब हाल दियो बतलाय
सुनो हाल सब जब राजाने ❋ तुरतै हुक्म दियो फरमाय॥
दगै सलामी गढ महुबेमें ❋ आये जीति बनाग्फरराय ।
दगी सलामी गढ महुबेमें ❋ घर घर भयो मंगलाचार॥
दुलहिनि उतरी जो डोलामे ❋ सो महलनमें पहुँची जाय ।
नेग योग सब भये महलनमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
केसारि चरण छुये तब सबके ❋ औ माथेसे लिये लगाय ।
हाथ जोरिकै केसरि बोली ❋ औ मल्हनासे कही सुनाय ॥
तुमसे उऋण कबहुँ ना हुइहौं ❋ तुमने राखे प्राण हमार ।
बडो काम तुम माता कीन्हों ❋ हमरे स्वामी लिये बचाय ॥
जो स्वामी सकसो मरजाते ❋ तौ मैं देती प्राण गँवाय ।
धन्य धन्य यह नगर महोबो ❋ तुमको धन्य मल्हनदे माय
यहि विधि केसरि करी बडाई ❋ कछु दिन महुबे करो मुकाम
आठ रोज रहिके महुबेमें ❋ धाँधू महलन पहुँचे जाय ॥
बोले धाँधू रानि मल्हनासे ❋ माता हुकम देउ फरमाय ।
अब हम जैहै गढ दिल्लीको ❋ डोला साथ देउ भिजवाय ॥
करी तयारी तब मल्हनाने ❋ डोला तुरत दियो सजवाय ।

चरण लागिके सब रानिनके ❋ धाँधू कूच दियो करवाय ॥
सात रोजकी मांजिल करिके ❋ गढ दिल्लीमें पहुँचे जाय ।
डोला भेजि दियो महलनको धाँधू गये राज दरबार ॥
करी बन्दगी पृथ्वीराजको सब हाल दियो बतलाय
खुशी भये सब गढ दिल्लीमें ❋ आये ब्याहि बनाफरराय ॥
ऐसे ब्याह भयो धाँधूको ❋ सो हम लिखिकै दियो सुनाय
इन्दलहरण ब्याह इन्दलको ❋ सो आगे लिखिकै दिहैं सुनाय
समय समयपर आल्हा गावो ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति धाँधूका ब्याह बुखारेकी लडाई सम्पूर्ण ।
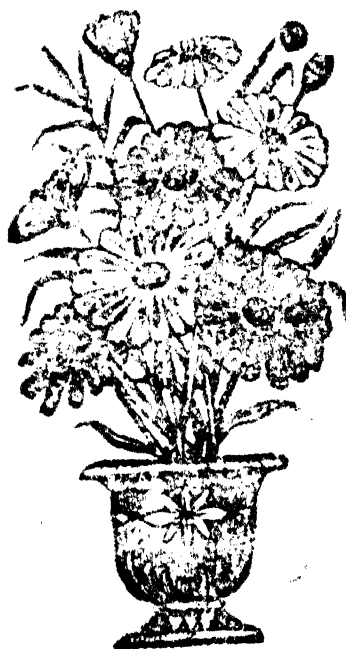
॥ श्रीः ॥

अथ इन्दलहरण।

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ जगदम्बाके चरण मनाय।
इन्दल हरण लिखौं आगे मैं ❋ होउ सहाय शारदा माय ॥
करौं ध्यान अब श्रीगंगेको ❋ निशिदिन पापहरनि महरानि
सब अस्नान करत भक्तीते ❋ तीर्थनमाहिं पुनीत बखानि
जेठ दशहराकी पर्बी है ❋ बुडकी लेन गंगकी धार।
देश दशक राजा चलिभे ❋ लीन्हें साथ शूर सरदार ॥
यात्री बोलैं जै गंगाकी ❋ जय जय शब्द होय चहुँ ओर
वही समैया ऊदनि ढेबा ❋ बनमें खेलन गये शिकार ॥
मेला देखो जब ऊदनिने ❋ तब ढेबाते कही सुनाय।
कहाँ जात है यह मेला सब ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
बोलो ढेबा तब ऊदनिते ❋ मेला यह बिठूरको जाय।
पर्ब दशहराकी भारी है ❋ यह सुनि कही उदयसिंह राय
बुडकी लेहैं हम बिठूरकी ❋ हमहूँ जैहैं गंग नहान।
यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ जेठो भाई बाप समान ॥
आल्हा पठवैं जो नहानको ❋ तौ तुम करौ गंग अस्नान
ढेबा ऊदनि दोनों चलिभे ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा हुकम देउ फरमाय।
जेठ दशहराकी पर्बी है ❋ हमहूँ जैहैं गंग नहान ॥
बोले आल्हा तब ऊदनि तें ❋ भैया मानो बात हमारि।

काम तुम्हारो ना जैबेको ❋ करिहौ तहाँ बखेडा जाय ॥
माहिल बैठे थे बँगलामें ❋ सो आल्हाते लगे बतान।
गंगा न्हैबेको हटकौ ना ❋ काहे करैं बखेडा जाय ॥
बोले आल्हा तब माहिलते ❋ तुमहूँ जाउ लहुरवा साथ ॥
करी तयारी तब ऊदनिने ❋ लीन्हें साथ महिल परिहार।
ढेबा ऊदनि दोनों सजिगे ❋ अपनो डंका दियो बजाय॥
सुनो नगारा जब इन्दलने ❋ तब ऊदनिपै पहुँचे जाय।
बोले इन्दल तब ऊदनिते ❋ चाचा हाल देउ बतलाय।
कहाँकि त्यारी चाचा कीन्हीं ❋ तब ऊदनिनें कही सुनाय ॥
जेठ दशहराकी बुडकी है ❋ बुडकी लेन गंगकी जायँ।
करी तयारी हम बिठूरकी ❋ यह सुनि इन्दल कही सुनाय
संग तुम्हारे हमहू चलि हैं ❋ बुडकी लिहैं गंगकी धार।
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर ❋ जान न दैहैं बाप तुम्हार ॥
संग तुमहिं हम नाहीं लैहैं ❋ यह सुनि इन्दल लियोकटार
अपनी छातीपर धरि लीन्हों ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय॥
संग हमहिं जो ना लै चलिहौ ❋ तौ मैं पेटु मारि मरिजाउँ।
यहसुनिसाथलियोइन्दलको ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा सुनौ हमारी बात।
इन्दल मचले हैं मेलाको ❋ आज्ञा होय संग लै जायँ ॥
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❋ साथ न लीजो पुत्र हमार।
जादूगर ऐहैं मेलामें ❋ अपनो जादू दिहैं चलाय ॥
चलिभये ऊदनितब बँगलाते ❋ औ सँग चले इँदलसीकाँर।
कूच करायो तब बिठूरको ❋ मानी कही न आल्हा क्यार
जबहीं पहुँचे गंग घाटपर ❋ अपने डेरा दिये डराय।
लाखनि राना कनउजवाले ❋ सोऊ तहाँ पहूँचे आय ॥

डंका बाजत रहै ऊदनिको ❋ सुनिकै लाखनि कही सुनाय।
किसको डंका यहु बाजत है ❋ अबहीं बन्द देउ करवाय॥
धावन पहुँचो तब ऊदनिपै ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय।
हुक्म कनौजीको गालिब है ❋ डंका बन्द देउ करवाय॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम रानाते कहौ सुनाय।
ऊदनि आये हैं महुबेते ❋ डंका बन्द होनको नाहिं॥
लौटि जवाब दियो धावनने ❋ तुम सुनिलेउ कनौजी राय।
आये महुबिया महुबेवाले ❋ डंका बन्द होनको नाहिं॥
इतनी सुनतै लाखनि राना ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय।
सुनी खबरि जब यह ऊदनिने ❋ तिनहूँ मुर्चा दियो लगाय॥
बत्ती धारिबेको बाकी रहि ❋ तौलौं सैयद पहुँचे आय।
बोले सैयद तब लाखनिते ❋ हमरे वचन करौ परमान॥
बडो लडैया ऊदनि ठाकुर ❋ है जो देवकुँवारिका लाल।
लडे न जितिहौ तुम ऊदनिते ❋ ताते धीर धरौ मनमाहिं॥
मेला देखन तुम आयेहौ ❋ काहे देहौ कटा कराय।
ढेबा समुझावै ऊदनिको ❋ भैया अक्किल गई तुम्हारि॥
आल्हा हटको है याहीको ❋ सोई बात परी यह आय।
बन्द कराय देउ डंकाको ❋ औ चलिमिलोकनौजीसाथ
अजैपाल राजा कनउजमें ❋ जिनको उदय अस्तलौंराज
तिन घर उपज्यो यहु लाखनिहै ❋ राजा रतीभानको लाल॥
बेनचक्कवै को नाती है ❋ जानत जिनहिं सकल संसार
दुसरी राखौ ना लाखनिते ❋ यह तुम मानौ कही हमारि॥
होय बडाई देश देशमें ❋ जो लाखनिते मिलिहौ जाय
बात मानिलइ तब ऊदनिने ❋ पाँच दुशाला लिये मँगाय॥
हीरा पाँच लिये ऊदनिने ❋ औ चलिभयो लहुरवाभाय।

पाँच कदम जब लाखनि राहिगे ❋ ऊदनि झुकिके करी सलाम
देखो नजराना लाखनिने ❋ लै हँसि कही कनौजी राय
तुम सब लायक ऊदनि ठाकुर ❋ राजा दस्सराजके लाल ॥
डंका अपनो तुम बजवावो ❋ यह कहि छाती लियो लगाय
भई मित्रता तब दोनोंमें ❋ शोभा कछु कही ना जाय
हियाँकि बातैं तौ यहँ छाँडौ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ।
बलखबुखारेके राजाकी ❋ चित्तररेखा राजकुमार ॥
सोऊ मचली जब मेलाको ❋ अभिनन्दनने कही बुझाय
बेटी जावो ना मेलाको ❋ इतनी मानो कही हमार ॥
लाखनि ऐहैं तहँ कनउजते ❋ ऐहैं तहाँ महोबिया ज्वान।
बात बिगारि जैहै काहूते ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय॥
एक न मानी जब बेटीने ❋ तब राजाने दियो पठाय ।
हंसा बेटा संग पठायो ❋ अपनो लश्कर दियो सजाय
करी तयारी तब बेटीने ❋ केसरि नटिनी संग लिवाय
पिंजरा सोनेको लै लीन्हों ❋ अपनो कूच दियो करवाय
पहुँची बेटी जब गंगापर ❋ अपने डेरा दिये लगाय ।
ब्याह भया था जब धाँधूको ❋ इन्दल गये बरायतमाहिं ॥
इन्दल देखे तहँ बेटीने ❋ तबते मनमें करै बिचार ।
या तो ब्याह होय इन्दलसँग ❋ नातर क्वाँरि रहौं संसार ॥
यहै सोच बेटीको निशिदिन ❋ कैसे मिलै इँदलसी क्वाँर ।
इन्दल मिलि हैं गंगघाटपर ❋ ताते गई गंग दरबार ॥
राति बसेरो करि गंगापर ❋ सूरज उदै भये जब आय ।
मेला देखनको जल्दीते ❋ चित्तररेखा भई तयार ॥
रूप बनाय लियो नटिनीको ❋ केसरि नटिनी संग लिवाय
संग लैलियो सब सखियनको ❋ मेला करन तमाशा लागि

मेला टिको जहाँ मडुबेको ❋ तहँ पर करो तमाशा जाय
नाच तमाशा देखन लागे ❋ क्षत्री मोहि मोहि रहिजाँय
जादू लीन्हों जब नटिनीने ❋ ढेबा तुरत गयो पहिचानि
बोलो ढेबा तब ऊदनिते ❋ जल्दी इनहिं देउ निकराय
अब जो देखिहौ इन नटिनिनको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय
सुनते मोहरें दे नटिनिनको ❋ औ तम्बूते दियो निकारि ॥
देखिकै बेटी गइ डेरामें ❋ मनमें बसे इन्दलसी क्वाँर ।
बुडकी लेन चले ऊदनि जब ❋ ढेबा इन्दल संग लिवाय ॥
क्षत्री एक हजार साथ लै ❋ नंगी लिये हाथ तलवारि ।
गोदी लैके तब इन्दलको ❋ बुडकी लई उदैसिंह राय ॥
गंगा पुत्री तब बुलवायो ❋ दान दक्षिणा दई बटाय ।
मोहरें पाँच दई केवटको ❋ ऊदनि नौका लई मँगाय॥
सो ढिलवाई उदयसिंहने ❋ पहुँची बीच धारमें जाय ।
चलिभइ बेटी अभिनन्दनकी ❋ पहुँची गंग किनारे आय॥
मोहरें देकै मल्लाहनको ❋ बेटी नाव लई मँगवाय ।
केसरि नाटिनीको सँग लैकै ❋ बैठी बीच नावमें जाय ॥
पिंजरा लैकै कर सोनेको ❋ तुरतै नाव दई छोडवाय ।
नाव पहूँची बीच धारमें ❋ नौका जहाँ मल्हाबियन केरि
चित्तररेखा देखन लागी ❋ औ इन्दल तन रही निहारि
लैकै जादू भैरववाली ❋ सो ऊदनि पर दई चलाय
नजरि बन्द ह्वइ गइ ऊदनिकी ❋ मूर्छित भये उदैसिंह राय ।
दूसरि पुरिया बेटी लैकै ❋ नर ढेबा पर दई चलाय ॥
ढेबा गिरिगो तब नौकापर ❋ देहीकी सुधि गई भुलाय ।
तिसरी जादू बेटी लैकै ❋ सो इन्दल पर दई चलाय ॥
सुवा बनाय लियो इन्दलको ❋ औ पिंजरामें राखो जाय ।

नाव किनारे पर लगवाई ❋ तुरतै उतारि परी अरगाय ॥
आय पहूँची जब लश्करमें ❋ अपनो कूच दियो करवाय ।
जादू उतरि गयो ऊदनिको ❋ औ ढेबाको आयो होश ॥
नहीं दिखाय परे इन्दल कहुँ ❋ तब ढेबाते कही सुनाय ।
काहे दादा यह कैसी भइ ❋ देखि न परै परेउना लाल॥
ऊदनि ढेबा दोनों चलिभये ❋ औ मेलामें ढूँढन लाग ।
सिगरो मेला जब मथि डारो ❋ तब उन जाल लिये मँगवाय
सो डरवाय दिये गंगामें ❋ फाँसिगे मगर मच्छ तहँ आय
पेटु फराये सब जीवनको ❋ तबहुँ न मिले इँदलसी क्वाँर
ऊदनि बोले तब ढेबाते ❋ अब हम करि हैं कौन उपाय
मुहँ दिखरैहैं कस दादाको ❋ करिहैं कौन बहाना जाय ॥
माहिल बोले तब ऊदनिते ❋ अपनो सोच देउ बिसराय।
हम कहि देहैं यह आल्हाते ❋ कोउ जादू करि गयो लिवाय
तुम कहि दीजो हाथ जोरिकै ❋ जल्दी ढूँढि मिलैहौं आय ।
मोहलतिमँगियोपाँचमासकी ❋ औ इन्दलको ढुँढियो जाय
इतनी सुनिकै तब ऊदनिने ❋ तुरतै कूच दियो करवाय ।
आय पहूँचे मदन तालपर ❋ अपनो तम्बू दियो लगाय॥
आगे पहुँचे माहिल राजा ❋ औ आल्हाते लगे बतान ।
हाल सुनो तुम सब मेलाको ❋ मारो गयो परेउना लाल ॥
गोता मारो जब इन्दलने ❋ ऊदनि मारि दई तलवारि ।
शीश काटिकै उन इन्दलको ❋ सो गंगामें दियो बहाय ॥
सुनतै आल्हा बोलन लागे ❋ काहे बोलत झूँठ बनाय ।
हमहिं पियारे थोरे इन्दल ❋ औ ऊदनिको बहुत पियार
बहुत बतकही भइ आल्हाते ❋ माहिल गंगा लई उठाय ।
बात हमारी साँची जानो ❋ हम ना बोलत झूँठ बनाय॥

कसम हमहिं है इकलौताकी ❋ जो हम कही होय कछु झूँठ
साँची बात मानि माहिलकी ❋ आल्हा गय क्रोधमें छाय ॥
माहिल चलिभे तब महुबेते ❋ औ उरईमें पहुँचे जाय ।
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❋ भैया तुम बँगलालौं जाउ ॥
हाल सुनावो तुम मेलाको ❋ औ आल्है समुझावो जाय ।
चलिभो ढेबा तब डेराते ❋ औ बँगलामें पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी जब आल्हाको ❋ आल्हा पीठी लई फिराय ॥
बोले ढेबा तब आल्हाते ❋ काहे न हमरी लई सलाम ।
खता हमारीको बतलावो ❋ तब आल्हाने कही सुनाय ।
जल्दी लावो तुम ऊदनिको ❋ हमरी नजर गुजारौ आय ॥
ढेबा लौटे तब बँगलाते ❋ औ डेरापर पहुँचो आय ।
बोलो ढेबा बघ ऊदनिते ❋ अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
तुमहिं बुलायो है आल्हाने ❋ यह सुनि कही उदैसिंह राय
दादा माँगिहैं जब इन्दलको ❋ तब हम देहैं कौन जवाब ॥
ढेबा समुझायो ऊदनिको ❋ तुम यह कहियो बात सुनाय
जादूगर आये मेलामें ❋ हारि लैगये परउना लाल ॥
मोहलति दैदेउ पाँच मासकी ❋ लावें ढूँढि इँदलसी क्वाँर ।
बात मानिकै तब ढेबाकी ❋ तुरतै उठे उदैसिंह राय ॥
दूबको बौंडा मुखमें दाबो ❋ नंगे पायँ गरीबी भेष ।
हाथ अँगोछाते बँधवायो ❋ औ चलि भये उदैसिंह राय
पहुँचे ऊदनि जब आल्हापै ❋ झुकिकै ऊदनि करी सलाम।
तीवा नै नै करी बन्दगी ❋ आल्हाने नहिं लियो सलाम
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय ।
खता हमारी तुम बतलावो ❋ काहे रूठि गये यहि काल॥
आल्हा बोले तब गुस्सा ह्वै ❋ तुम घाटि करी हमारे साथ

साथ लेगये पुत्र हमारो ❀ औ गंगा पर डारो मारि ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लाग दादा बचन करो परमान ।
जादूगर आये मेलामें काहू जादू दियो चलाय ॥
साथ लै गयो कोउ इन सब मेला लियो ढुँढाय
पता न लागो कहुँ बेटाको ❀ तब हम कूचदियो करवाय
मोहलति देदेउ पाँच मासकी ❀ लैहौं ढूँढि परेउना लाल ।
गुस्सा होइकै आल्हा बोले ❀ तुम घटि करी हमारे साथ॥
साँची कहिगे माहिल मामा ❀ तुमने मारो पुत्र हमार ।
एक न मनिहौं बात तुम्हारी ❀ डरिहौं तुमहिं जानते मारि
ऊदनि ढेबा दोनों मिलिकै ❀ आल्है बहुत कही समुझाय
बात न मानी कछु आल्हाने ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
डंड बाँधिकै बघ ऊदनिकी ❀ औ खंभामें दियो बँधाय ।
हरे बाँस आल्हा मँगवाये ❀ औ ऊदनिको मारन लाग॥
रुधिर बहन लागो देहीते ❀ पीठी लाल बरन ह्वैजाय ।
खबरि पहुँची जब देवैको बँगलामें पहुँची आय ॥
बोली देवै तब आल्हाते काहे दई बाँसकी मारु ।
बेटा छाँडिदेउ ऊदनिको इतनी मानौ कही हमारि ॥
बोले आल्हा तब देवैते ❀ इनने मारो पुत्र हमार ।
जियत छोडिहौंनाऊदनिको ❀ चाहै कोटिन करो उपाय॥
देवै लौटि गई सुनवाँपै ❀ औ ऊदनिको कह्यो हवाल।
कही न मानी कछु आल्हाने ❀ अपने कंथ मनावो जाय ॥
सुनवाँ पहुँची तब फाटकपर ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ।
बहुत पियारे थे बघ ऊदनि ❀ काहे दई बाँसकी मारु ॥
कोखिको भाई तुम मारत ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
सुनतै आल्हा बोलन लागे जानो नाहीं हाल तुम्हार ॥

छलिकै लैगे ये इन्दलको ❋ औ गंगापर डारो मारि ।
जियत न छोडिहैं हम ऊदनिको ❋ जो चाहो सो करो उपाय
हाथ जोरिकै सुनवाँ बोली ❋ स्वामी पैयाँ परौं तुम्हार ।
हम तुम रहि हैं जो दुनियाँमें ❋ इन्दल आय लिहैं अवतार
पीठिको भाईफिरिना मिलिहै ❋ स्वामीसमुझि लेउ मनमाहिं
यादि करौ तुम नैनागढकी ❋ तुम्हरी कैद छोडाई जाय॥
जो कहुँ मारिहौ तुम ऊदनिको। ❋ तौ माटीके मोल बिकाउ ।
अबहीं गुस्सा करि मारत हौ ❋ पीछे पछितैहौ महराज ॥
जबहीं सुनिहैं दिल्लीवाले ❋ तुरत महोबा लिहैं लुटाय ।
बोले आल्हा तब सुनवाँते ❋ रानीकोटिन कहौ बनाय॥
जियत छोडिहौं ना ऊदनिको ❋ अबहीं दिहौं जानते मारि।
बोले ऊदनि रनि सुनवाँते ❋ भौजी पानी देउ पिआय॥
लैकै गडुआ सुनवाँ चलिभइ ❋ औ ऊदनिको दौ पकराय।
लातसे गडुआ आल्हा मारो ❋ पानी सबै दियो ढरकाय ॥
आल्हा सुनवैं मारन लागे ❋ तुम मरवायो पुत्र हमार ।
भागी सुनवाँ तब फाटकते ❋ औ फुलवा पै पहुँची जाय॥
बोली सुनवाँ रनि फुलवाते ❋ अपनो कंथ छुडावौ जाय ।
खिरकी परते फुलवा बोली ❋ दादा बिनती मानि हमारि
अब ना मारो तुम भैयाको ❋ बेडा कौनु लगैहै पार ।
बोले आल्हा तब फुलवाते ❋ बैठी राज्य करौ घरमाहिं ॥
ऊदनि मारो ह इन्दलको ❋ इनको दिहैं जानते मारि ।
सुनतै गुस्सा ह्वइ ऊदनिने ❋ तुरतै खंभा लियो उखारि॥
सोचन लागे उदनि बाँकुडा ❋ जेठो भाई बाप समान ।
हाथ चलावौं जो आल्हापर ❋ तौ रजपूती धर्म नशाय ॥
मारत मारत आल्हा थाकिगे ❋ तब जल्लाद लिये बुलवाय ।

आल्हा बोले जल्लादनते ❋ जल्दी ऊदनिको लैजाउ ॥
नयन करेजेके निकारिकै ❋ हमरी नजारि गुजारौ आय ।
इतनी सुनिकै उदयसिंहको ❋ लै जल्लाद चले तत्काल ॥
पहुँचे ऊदनि जब ड्योढीमें ❋ जहँपर खडी सुनमदे रानि ।
बोली सुनवाँ जल्लादनते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
हाथ चलैयो ना ऊदनिपर ❋ इनको छांडिदेउ तुम जाय ।
अबै तो मारत हैं गुस्सामें ❋ पाछे पछितै हैं महराज ॥
ताते हिरना यक मारौ तुम ❋ नैन करेजा लाओ निकारि ।
जाय दिखावौ तुम स्वामीको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
यह कहि हार उतारि गरेको ❋ जल्लादनको दौ पकराय ।
लै जल्लाद चले आगेको ❋ तब फुलवाने कही सुनाय ॥
हाथ न डारियो तुम स्वामीपर ❋ यह कहि तोडा दियो गहाय
तब जल्लाद चले आगेको ❋ पहुँचे झारखंडमें जाय ॥
बोले ऊदनि जल्लादनते ❋ हमको छुरिया देउ गहाय ।
नैन करेजा अपने करते ❋ अबहीं तुमको देयँ निकारि
इतनी बात सुनी ऊदनिकी ❋ तब जल्लादन कही सुनाय
जहाँ तुम्हारे मनमें भावै ❋ तहँको ऊदनि जाउ बराय
नगर महोबेको जैयो ना ❋ नहिं सब जैहै बात नशाय ।
जानते आल्हा हमको मारि हैं ❋ सो तुम जानिलेउ मनमाय
हिरना मारो एक जंगलमें ❋ नैन करेजा लियो निकारि
जाय दिखायो सो आल्हाको ❋ औ महुबेमें पहुँचे जाय ।
खबरि सुनाई परिमालैको ❋ सुनि परिमाल गये घबराय
आय मूर्च्छा गइ राजाको ❋ भुइँमें गिरे तडाका खाय ॥
खबरि पहूँची जब महलनमें ❋ सिगरो रोय उठो रनिवास ।
हाहाकार परो मन्दिरमें ❋ को गाढेमें ऐहै काम ॥

पलकी मँगवाई राजाने तापर चढे चँदेले राय ।
राजा दशपुरवामें जहँ दरबार बनाफर क्यार
राजै देखो जब आल्हाने तुरतै उठे भरहरा खाय ।
करी बन्दगी तब राजाको ना राजानें लियो सलाम॥
गुस्सा होइकै राजा बोले औ आल्हाते कही सुनाय
तुमने मरवायो ऊदनिको नैना करेजालौ निकराय ॥
पीठिको भाई तुम मरवायो तुमको बारबार धिक्कार ।
बिन ऊदनिके या महुबेमें को गाढे दिन ऐहै काम ॥
बज्रकि छाती थी ऊदनिकी दिल्लीमें कियो बिवाह ।
आल्हा मनमें कायल ह्वैगै मुखते कछू न आई बात ॥
तब ललकारो चन्देलेने ओ हत्यारे बात बनाउ ।
इन्दल बेटाके कारण तुम, अपनो भाई दियो गँवाय ॥
आँखिन पट्टी आल्हा बाँधी ऊभे गिरे अंधमुख जाय ।
मुख दिखरैहौं ना काहूको यह गति भई बनाफर केरि
हियाँकि बातैं तौ हियँ छाँडो अब आगेको सुनो हवाल।
ऊदनि सोचैं अपने मनमें सिरसा बसैं बीर मलिखान
करैं नौकरी अब मलिखेकी कछु दिन समय गुजारैं जाय
सोचिकै चालिभे ऊदनि ठाकुर ❋ औ सिरसाकी पकरी राह॥
सुनवाँ बुलवायो ढेबाको सब हाल कह्यो समुझाय
खबारि लै आवो झारखंडते ❋ हमको खबारि सुनावो आय
इतनी,सुनतै ढेबा चलिभो ❋ घोडा मनुरथा पर असवार
उदया ठाकुर तुमरधारको ❋ सोऊ चलो साथमें जाय ॥
दोनों पहुँचे झारखंडमें ❋ गाय बरदिया रहे चराय ।
तिनते ढेबा पूँछन लागो ❋ तुम ऊदनिको देउ बताय॥
एक बरदिया बोलन लागो ❋ अबहीं गये उदैसिंह राय ।

मूड उघारे नंगे पाँयन ❋ सिरसा ओर गये घबराय ॥
ताही रस्ता दोनों चलिभे ❋ अब ऊदनिको सुनौ हवाल।
ऊदनि पहुँचे जब सिरसामें ❋ दरवानीते लगे बतान ॥
खबरि सुनावौ तुम मलिखेको ❋ द्वारे खडे उदयसिंह राय ।
गौ दरवानी तब मलिखेपै ❋ औ यह हाल सुनायो जाय॥
बोले मलिखे दरवानीते ❋ फाटक बन्द देउ करवाय ।
आयो दरवानी द्वारेपर ❋ फाटक बन्द दिये करवाय॥
हुक्म नहीं है नर मलिखेको ❋ तौलों ढेबा पहुँचो आय ।
ढेबा पूँछै तब ऊदनिते ❋ कहँ जानेको करो बिचार ॥
बोले ऊदनि तब ढेबाते ❋ दादा कछू न पूँछो बात ।
सुनवाँ भौजी दहिने ह्वइगइ ❋ हमरो लीन्हो प्राण बचाय ॥
बडो भरोसा था मलिखेको ❋ कछु दिन करें गुजारा जाय ।
सोऊ रूठि गये हमते अब ❋ फाटक बन्द दिये करवाय॥
कोउ न साथ देत बिपदामें ❋ यह हम जानिलियो सब भांति।
हितू कुटुंब सबै रूठे हैं ❋ हमपर रूठि गयो भगवान॥

कुण्डलिया ।

सुखते बिपदा है भली, जो थोरे दिन होय ।
इष्टमित्र बांधव जिते, जानि परत सबकोय ॥
जानि परत सबकोय, बात नाहिं पूँछै कोई ।
जब संकट परिजाय, मित्र होवै रिपु सोई ॥
नारायण धरि ध्यान, आप मनको समुझावै ।
कछु दिनमें सुख होय, सदा नाहिं बिपति सतावै ॥

यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ भैया धीर धरौ मनमाहिं ।
बिपति दूरि ह्वइहै जल्दीते ❋ हमरो बचन करौ परमान॥
साथ तुम्हारो हम ना छोंडिहैं ❋ रहि हैं सदा तुम्हारे संग ।

ऊदनि बोले तब ढेबाते ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
हमरे बैरी हैं चारौं दिशि ❋ क्यहि घर करैं गुजारा जाय
ढेबा बोले तब ऊदानिते ❋ अब नरवरको होउ तयार॥
करैं गुजारा मकरंदी घर ❋ कछु दिन समय काटिहैं जाय।
यह मन भाय गई उदनिके ❋ औ चलिबेको भये तयार ॥
उदया ठाकुर तुमरधारको ❋ सोऊ साथ भयो तैयार ।
तीनों चलिभे गढ सिरसाते ❋ नरवर गढमें पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❋ दादा ख्याल करौ मनमाहिं।
ब्याहन आये थे नरवर जब ❋ लाये साथ आपने फौज ॥
आजु आपदा हमपर परिगइ ❋ नाहीं पास ढाल तलवारि ।
एक कुवाँपर ऊदनि बैठे ❋ तौलौं मालिनि निकसी जाय
हिरिया मालिनि पूँछनलागी ❋ ओ परदेशी बात बनाउ ।
कौन देशके तुम बासीहौ ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
बोले ऊदनि तब मालिनिते ❋ बासी नगर महोबे क्यार ।
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि हैं नाम हमार ॥
लाये संपदा थे नरवरमें ❋ सो तुम्हरे घर दई गँवाय ।
तुमहूं भूलि गई बिपदामें ❋ हमको सब जानत संसार ॥
यह सुनि हिरियापूँछनलागी ❋ साँची कहौ उदयसिंह राय ।
फौज कटीली तुम कहँ छाँडी ❋ औ कहँ तज्यो बेंदुला घ्वाड
बात बनावन लगे उदैसिंह ❋ औ हिरियाते लगे बतान ।
चढो पिथौरा दिल्लीवाला ❋ सिगरो महुबो लियो छुटाय
सुनवाँ फुलवा को डोला लै ❋ हमरे लूटिलिये हथियार ॥
घोडा बेंदुला हथि पचशावद ❋ सो लैगयो पिथौरा राय ॥
प्राण आपने लै भागे हम ❋ औ नरवर गढ पहुँचे आय।
इतनी सुनिकै हिरियाचलिभइ ❋ पहुँची रंगमहलमें जाय ॥

हाल सुनायो सब रानीको ❀ रानी बहुत गयी घबराय।
बोली रानी तब हिरियाते ❀ हमरे मन यह नहीं समाय
ज्यहि दिन ऊदनि नरवर ऐहैं ❀ तादिन होय दिवसकी राति
हिरिया समुझावै रानीको ❀ रानी बचन करो परमान॥
ढेबा ऊदनि दोनों आये ❀ कहौ तो अबहीं लाउँ लिवाय
तौलौं आये मकरंदी तहँ ❀ तब रानीने कही सुनाय॥
जिनहिं बिवाही फुलवा बेटी ❀ सुनियत आये उदयसिंह राय
जल्दी जावौ तुम कुँवटापर ❀ हमको खबरि सुनावौ आय
चलिभे मकरंद तब महलनते ❀ औ कुँवटापर पहुँचे आय।
सूरति देखी जब ऊदनिकी ❀ तुरतै छाती लियो लगाय॥
पूँछन लागे मकरन्दी तब ❀ छाँडो कहाँ बेंदुला घ्वाड़।
फौज कटीली कहँ छाँडी तुम ❀ औ कहँ तजी ढाल तलवारि
ऊदनि बोले तब मकरंदते ❀ हमते कछू कही ना जाय।
आये पृथीराज दिल्लीते ❀ महुबे लूटि लई करवाय॥
बहिनि तुम्हारी औ सुनवाँको ❀ तुरतै डोला लियो खँदाय।
यह सुनि बोले मकरँद ठाकुर ❀ औ ऊदनिते लगे बतान॥
जियत तुम्हार डोला लैगो ❀ तुम्हरे जीवनको धिरकार।
अबहीं चलौ साथ हमरे तुम ❀ करिहौं अपनी फौज तयार
चलिकै दिल्लीको लुटवैहौं ❀ दोनों डोलों लिहौं खँदाय
बात सुनी यह मकरन्दीकी ❀ ऊदनि बहुत खुशी ह्वइ जायँ
परो भरोसा तब ऊदनिको ❀ मिलिहै हमाई इँदलसी क्वाँर
चलिभे मकरँद तब कुँवटाते ❀ तीनों क्षत्री संग लिवाय॥
तुरतै पहुँचे रंग महलमें ❀ रानी करी रसोई त्यार।
चारों बैठे जब जेंवनको ❀ सुन्दर भोजन धरे अगार
कौर उठायो जब ऊदनिने ❀ नैनन बही नीरकी धार।

देखि हाल यह रानी बोली ❋ धीरज धरो उदयसिंह राय
पृथीराज लूटो महुबो जो ❋ तौ हम दिल्ली लिहैं लुटाय
बोले ऊदनि तब रानीते ❋ हमने करो बहाना आय ॥
रैयति सुखी सबै महुबेकी ❋ बैठे राज्य करैं परिमाल ।
अपनी पीठी खोलि उदयसिंह ❋ रानिहिं तुरतदिखावन लाग
इन्दल हरिगे जो बिठूरमें ❋ सो सब हाल दियो बतलाय
बाँसन मारु दई आल्हाने ❋ सो रानीते कही बुझाय ॥
जियत महोबे हम जैहैं ना ❋ कागा मरे हाड ले जायँ ।
तब रानी समुझावन लागी ❋ बेटा धीर धरो मनमाहिं ॥
संकट कटि जैहैं जल्दीते ❋ औ सब ह्वइ हैं काम तुम्हार
ऊदनि चालिभे तब चौकाते ❋ औ ड्योढीमें पहुँचे जाय
पूछन लागे तब ढेबाते ❋ दादा मतो देउ बतलाय ।
कैसे मिलि हैं बेटा इन्दल ❋ ताको अब कछु करो उपाय
बोलेउ ढेबा तब ऊदनिते ❋ भैया गुदरी लेउ सिलाय ।
जोगी बनिकै चलो हियाँते ❋ तौ मिलि जाय परेउना लाल
थान मँगाये तब मलमलके ❋ चारि गुदरियाँ लईं सिलाय ।
बीस पर्तकी बनी गुदरियाँ ❋ जिनमें छिपैं सबै हथियार
टोपी बनवाई जोगिनकी ❋ सबमें हीरा दिये जडाय ।
भस्म रमाई तब चारोंने ❋ रामानन्दी तिलक लगाय॥
यक यक गुदरी सबने पहिरी ❋ ऊदनि बँसुरी लई उठाय ।
डमरू लीन्हों मकरंदीने ❋ ढेबा खँझरी लई उठाय ॥
भजो मँजीरा तब उदयाको ❋ गावन लागे राग मलार ।
कान अवाज परी रानीके ❋ सो द्वारेपर पहुँची आय ॥
मूरति देखी जब जोगिनकी ❋ रानी मोहि मोहि रहि जाय
रानी तब जोगिनते ❋ जोगिउ डेरा देउ डराय ॥

बहुत पियारे हमको लागो ❋ तब मकरँदने दियो जवाब।
तुमने माता पहिचानो ना ❋ कुंछा लिये रहिउ नौ मास॥
भेष बनायो हम जोगीको ❋ ढुँढि हैं जाय इँदलसी क्वाँर।
रानी बोली मकरन्दीते ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय
पहिले जैयो तुम झुन्नागढ ❋ जहँ सेनापति स्वशुर तुम्हार
तहँतुमढुंढियोत्यहिइन्दलको ❋ जासों होवै काम तुम्हार ॥
कुसुमा रानी मकरन्दीकी ❋ सो भीतरते लगी बतान ।
घर घर जादू मोरे मैकेमें ❋ तिरिया जादू करैं बनाय॥
देखि जो पैहैं कोउ ऊदनिको ❋ अपनो जादू दिहैं चलाय
चारौ पुरियाँ जादूवाली ❋ मकरन्दीको दई गहाय ॥
मुखमें पुरिया तुम सब दबियो ❋ तुमपर जादू ना अनिआय
चारौ चलिभे तब महलनते ❋ अपनो मया मोह बिसराय
राह पकरि लइ झुन्नागढकी ❋ पहुँचे पाँच रोजमें जाय ।
जोगी पहुँचे जब पनिघट पर ❋ अपने बाजा दिये बजाय॥
राग रागिनी गावन लागे ❋ मोहित भये तहाँ नर नारि
सब पनिहारी मोहित ह्वइ गईं ❋ पानी भरिबो गईं भुलाय॥
काहू दीन्हों माला मुँदरी ❋ काहु छल्ला दिये निकारि।
एक पहर पनिघट पर ह्वइगो ❋ बाँदी सोचि सोचिराहिजायँ
लैके गागर बाँदी चलि भईं ❋ रंग महलमें पहुँची जायँ ।
बांदी पहुँचीं जब महलनमें ❋ सब सखियनते कह्यो हवाल
चारि जोगिया ऐसे आये ❋ तिनके रूप न बरने जायँ।
उमिरि बीति गइ झुन्नागढमें ❋ ना अस जोगी परे दिखाय
यह सुनि अपने अपने घरते ❋ सब ठकुरानी भईं तयार ।
चलिकै देखैं उन जोगिनको ❋ सबने थार लिये मगवाय॥
सो भरवाय लिये मेवाते ❋ औ कुंअटा पर पहुँची जायँ

लै लै पुरिया जादूवाली ❋ देखैं रूप जोगियन क्यार॥
कोऊ बात करै ऊदनिते ❋ कोउ ढेबाते लगी बतान ।
कोऊ पूँछै मकरंदी ते ❋ काहे डाऱ्यो मूड मुडाय ॥
तकि तकि जादू उनपर छाँडैं ❋ सोजोगिनपरनाआनिआय ।
बोलीं सखियाँ तब आपुसमें ❋ अब हम करि हैं कौनु उपाय
अपने कर्तबके पक्के हैं ❋ हैं यह जोगी बुरी बलाय ।
सिगरी सखियाँयक ठौरीहोय ❋ पहुँची रंगमहलमें जाय ॥
बोलीं सखियाँ रनि कुशलाते ❋ रानी सुनौ हमारी बात ।
चारि जोगिया ऐसे आये ❋ जिनके रूप न बरने जायँ
बोली रानी तब सखियनते ❋ तुमजोगिनको लावौ बुलाय
सखियाँ लौटि गईं जोगिनपै　जोगिनको लाईं बुलाय
जोगी आये दरवाजे पर　गावन लागे राग मलार ।
रूप देखिकै तिन जोगिनको　रानी मोहि मोहि रहिजाये
रानी बोली सेनापतिकी　काहे डारे मूड मुडाय ।
कौन तपस्या खंडित ह्वैगइ　सो तुम हमहिं देउ बतलाय
कौन देशते तुम आये हौ　आगे कौन देशको जात ।
जोगी बोले तब रानी ते　रानी सुनौ हमारी बात ॥
कर्म हमारे जोग लिखो है　ताको कोउ मिटैया नाहिं ।
देश हमारा बंगाला है　आगे हिंगलाजको जायँ ॥
फिरिकै रानी बोलन लागी　जोगिउ डेरा देउ डराय ।
बोले ऊदनि तब रानीते　रानी अक्किल कहाँ तुम्हारि
रमता योगी बहता पानी　इनको कौन सकै बिलमाय
आजु रमानी तुम्हरी ड्योढी　भोरहि हमहिं रमानी बाट ॥
रानी बोली फिर जोगिनते　महलन करैं रसोईं त्यार ।
तनिकबिलमिजाउतुमड्योढीमें ❋ जोगिउ जेयँलेउ ज्योनार॥

तब फिरि मकरँद बोलन लागे ❋ माता सुनौ हमारी बात।
धोखे रहियो ना जोगिनके ❋ हमरो मकरँद है अस नाम॥
ऊदनि ढेबा उदया ठाढे ❋ यह सुनि रानीं लगी बतान
मूड मुडाये तुम काहेको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
हाल सुनायो सब मकरँदने ❋ तब रानीने कही सुनाय।
देवी पूजन करौ हियाँ तुम ❋ पूँछौ हाल मातुते जाय॥
यह मन भाई बघ ऊदनिके ❋ तब महलनमें करौ निवास।
खबरि सुनी जब सेनापतिने ❋ तुरतै मिले जोगियन आय॥
साले कांतामल मकरँदके ❋ सोऊ मिले जोगियन आय
चलिभे ऊदनि रंग महलते ❋ औ मठियामें पहुँचे जाय॥
पूजा करिकै श्रीदेवी की ❋ ऊदनि हाथ जोरि रहि जायँ
इन्दल हरि गये हैं बिठूरते ❋ माता पता देउ बतलाय॥
आभा बोली तब देवीकी ❋ अब तुम बलख बुखारे जाउ
है जो बेटी अभिनन्दनकी ❋ चित्तररेखा राजकुमारि॥
सोई इन्दलको हरि लैगइ ❋ दिनमें सुअना लेति बनाय।
इन्दल बेटा तुमको मिलि है ❋ जल्दी जाउ उदैसिंह राय॥
इतनी सुनिकै ऊदनि चलिभे ❋ औ रानीपै पहुँचे जाय।
हाल सुनायो सब रानीको ❋ तब रानी ने कही सुनाय॥
जादू बहुत प्रगट तहँना पर ❋ ताते बहुत रहेउ हुशियार।
कांतामलको तुरत बुलायो ❋ रानी कहन लागि तत्काल॥
संग जाउ तुम मकरन्दीके ❋ औ इंदलहि ढुँढावो जाय।
इतनी सुनतै कांतामलने ❋ अपनी गुदरी लई उठाय॥
पुरिया जादू की लै लीन्हीं ❋ अपनो कूच दियो करवाय।
पन्द्रह दिनकी मैजलि करिकै ❋ बलखबुखारे पहुँचे जाय॥
अलख जगाई तब फाटक पर ❋ दरवानीने कही सुनाय।

कहाँ ते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
सुनतै बोले ऊदनि ठाकुर ❋ दरवानीको दियो जवाब ।
देश हमारा बंगाला है ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
नाम सुना हम अभिनन्दनको ❋ तब हम अलख जगाई आय
फाटक खोलौ तुम जल्दीते ❋ माँगैं शहर तुम्हारे जाय ॥
खोलो फाटक दरवानी ने ❋ जोगी निकरि गये वा पार ।
जबहीं पहुँचे गलियारेनमें ❋ अपने बाजा दिये बजाय ॥
बजो यकतारा कांतामलको ❋ ढेबा कि बजन खंजरी लागि
डमरू बाजी मकरन्दीकी ❋ बँसुरी बजी उदयसिंह क्यार
बजे मँजीरा तहँ उदयाके ❋ गावन लागे राग मलार ।
डारि मोहनी दइ जोगिनने ❋ मोहित भये सबै नर नारि ॥
काहू दीन्हें रुपया पैसा ❋ काहू माला दियो गहाय ।
काहू दीन्हें साल दुशाला ❋ छल्ला मुँदरी दिये उतारि ॥
जोगी आये जब पनिघटपर ❋ मोहित भईं सबै पनिहारि ।
तारा बाँदी जो रानीकी ❋ मनमें सोचि सोचि रहिजाय
डेढ पहर पनिघट पर ह्वैगो ❋ कह रानीते कहिहौं जाय ।
बाँदी पहुँची रंगमहलमें ❋ तब रानीने दइ ललकार ॥
डेढ पहर पनिघटपर बीतो ❋ सिगरो प्यास मरै रनिवास।
हाथ जोरिकै बाँदी बोली ❋ मेरी खता माफ ह्वैजाय ॥
पाँच जोगिया ऐसे आये ❋ जिनके रूप न बरने जायँ ।
नाँके नाचत हैं पनिघटपर ❋ तासों देर भई महरानि ॥
आज्ञा पाऊँ जो तुम्हरी मैं ❋ तौ जोगिन को लाऊँ लिवाय
हुक्म दे दियो तब रानी ने ❋ तू जोगिन को लाउ लिवाय
चालि भइ बाँदी तब जल्दीते ❋ औ जोगिनको लाई बुलाय
जोगी आये जब द्वारे पर ❋ अपने बाजा दिये बजाय ॥

सूरति देखी जब जोगिनकी ❋ रानी गई सनाका खाय ।
बोली रानी तब बांदीते ❋ तेरो डरिहौं पेटु फराय ॥
जोगी लरिका ये नाहीं हैं ❋ ये राजनके राज कुमार ।
गज गज भरकी इनकी छाती ❋ औ नयननमें बरैं मसाल ॥
चढा उतारू मोरवा इनके ❋ मारू सिंहबरन करिहायँ ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ रानी बोलो बात सम्हारि ॥
हम हैं जोगी बंगाले के ❋ है गोरखपुर कुटी हमारि ।
बाप हमारे बारे मरिगे ❋ बारी बैस मातु भइ राँड ॥
देश हमारे मूखा परिगो ❋ माता बेंचो जोगियन हाथ ।
रूप बिधाता हमको दीन्हों ❋ सो हम राखैं कहाँ छिपाय ॥
यह सुनि रानी बोलन लागी ❋ जोगिउ हमहिं देउ बतलाय
जडे जवाहिर हैं गुदरिनमें ❋ सो कहँ पाई देउ बताय ।
बोले ऊदनि तब रानीते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
राजा जैचँद हैं कनउजमें ❋ तहँ हम अलख जगाई जाय
देखि तमाशा राजा मोहे ❋ तब यह गुदरी दई सिलाय ॥
बोली रानी तब जोगिनते ❋ अब हम जाने हाल तुम्हार
तनिक ठहरि जाव तुम द्वारेपर ❋ बेटी देखि तमाशा लेय ।
बाँदी भेजी तब रानीने ❋ तू बेटीको लाउ बुलाय ॥
बाँदी पहुँची सतखंडा पर ❋ औ बेटीते कही सुनाय ।
तुमहिं बुलायो है रानीने ❋ सो तुम चलौ हमारे साथ ॥
बेटी चलिभइ तब बाँदी सँग ❋ औ माता पै पहुँची जाय ।
रानी देखो जब बेटीको ❋ तब जोगिनते लगी बतान ॥
नाच दिखाय देउ बाबा तुम ❋ जोगिन बाजा दिये बजाय ।
राग रागनी गावन लागे ❋ नाचन लगे उदैसिंह राय ॥
बेटी उठिकै गइ ऊदनिपै ❋ तुरतै बीरा दियो गहाय ।

बीरा चाबो बघ ऊदनिने ❋ औ बेटी तन करी निगाह॥
रूप देखि चितररेखाको ❋ ऊदनि गिरे मूर्च्छा खाय ।
देखि हाल यह रानी बोली ❋ इनको पेट्ट दिहैं फरवाय ॥
जोगी नाहीं ये भोगी हैं ❋ इन छल करो हियाँपर आय
रूप देखिकै मेरि बेटीको ❋ जोगी गिरो भूमि मुर्झाय ॥
यह सुनि ढेबा बालन लागो ❋ रानी घटिगो ज्ञान तुम्हार।
बीरा दियो आय बेटीने ❋ तामें करुइ तमाखू डारि ॥
पीक लागि गइ यह जोगीके ❋ ताते गिरो भूमिपर जाय ।
तीनि पहरको भूखो जोगी ❋ पायो नहीं अन्न जलपान ॥
नाचत गावत तीनिपहर भे ❋ ताते गयो शीश भन्नाय ।
बेटी बोली तब रानीते ❋ माता आज्ञा होय तुम्हारि ॥
धरी मिठाई सतखंडापर ❋ सो जोगीको लाउँ जिवाय।
बोली रानी तब बेटीसे ❋ अबहीं जोगी लाउ जिवाँय
तुरतै उठिकै बेटी चलिभै ❋ ऊदनि को लै संग लिवाय।
बेटी पहुँची सतखंडापर ❋ औ पिंजराको लियो उतारि
सुआ निकारो त्यहि पिंजराते ❋ तुरतै मानुष लियो बनाय ।
बोली बेटी तब इन्दलते ❋ हमने जानी थी मनमाहिं ॥
तुम्हरीबरोबरि कोउसुन्दरना ❋ सो तुम देखौ दृष्टि पसारि ।
कैसो सुन्दर यहु जोगी है ❋ याको रूप दियो भगवान ॥
इन्दल देखो जब ऊदनिको ❋ तब बेटीते कही सुनाय ।
धोखे रहियो ना जोगीके ❋ समुहे चाचा खड़े हमार ॥
परदा करिलेउ तुम जल्दीते ❋ अंटा आये उदयसिंहराय ।
बोले ऊदनि तब इन्दलते ❋ बेटा मानौ कही हमारि ॥
परदा करवैयो वाही दिन ❋ जा दिन होय तुम्हारो ब्याह
जो अभिनन्दन यह सुनि पैहै ❋ आये यहाँ बनाफर राय ॥

घरलौं जैबो मुश्किल ह्वइ है ❀ सो तुम समुझिलेउ मनमाहिं
जोगी ह्वइकै घरते निकसे ❀ तुम्हरे कारन मूड मुडाय ॥
देश देशमें हम फिरि आये ❀ पायो तुमहिं यहाँपर आय ।
बहु दुख छायो है महुबेमें ❀ जल्दी चलो हमारे साथ ॥
हाथ जोरिकै इन्दल बोले ❀ चाचा सुनौ हमारी बात ।
हमाहिं मांगिलेउ तुम रानीते ❀ अबहीं चलौं तुम्हारे साथ ॥
ऊदनि बोले तब बेटीते ❀ माँगेदेउ परेउना लाल ।
बोली बेटी तब ऊदनिते ❀ चाचा बचन करौ परमान॥
कठिन तपस्या हम कीन्हीं है ❀ तब बर मिलो मोहिं संसार।
ब्याह कराय लेउ अबहीं तुम ❀ हमरो डोला लेउ खँदाय ॥
अपने पंडितको बुलवावो ❀ सब सामान लेउ मँगवाय ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
चोरा चोरी ब्याह न करि हैं ❀ करि हैं ब्याह धूमके साथ ।
ज्याहि दिन ब्याहन इन्दल ऐहैं ❀ चलिहै अँधाधुंध तलवारि॥
यह सुनि बोली चित्तररेखा ❀ ना जानो है हाल तुम्हार ।
धोखे रहियो ना माडोंके ❀ जहँ लै लियो बापको दाउँ॥
सातौ भैया हमरे जालिम ❀ जालिम जोर हमारो बाप ।
कठिन मवासी बलखबुखारा ❀ जहँ है जादूको अधिकार ॥
लडे न जितिहौ मेरे बापते ❀ कैसे करिहौ आय बिवाह ।
यह सुनि तडपे उदनि बाँकुडा ❀ औ बेटीते लगे बतान ॥
दतिया मारि उडैसा मारो ❀ बाजी सेतबन्द लौं टाप ।
गर्व न राखा हम काहूको ❀ हमको जानत सकल जहान
सातौ भैया तुम्हरे बाँधौं ❀ औ राजाको तुरत बँधाय।
सातौ भाँवरि मैं डरवाऊँ ❀ तौ मेरो नाम उदैसिंह राय॥
जिसकी बेटी नीकी देखैं ❀ जोरा जोरी करैं बिवाह ।

साँचो साँचो यहु हमरो प्रण ❋ सो तुम जानि लेउ मनमाहिं
बेटी बोली तब ऊदनिते ❋ चाचा गंगा लेउ उठाय ।
गंगा करि लइ तब ऊदनिने ❋ जल्दी ब्याह लिहौं करवाय॥
सुआ बनायो तब इन्दलको ❋ बेटी पिंजरा दियो गहाय ।
मानुषवाली पुरिया लैकै ❋ सो ऊदनिको दइ पकराय ॥
शहर लाँघि जैयो जबहींतुम ❋ तबहीं मानुष लिहौ बनाय ।
ऊदनि चलिभै तब पिंजरा लै ❋ औ नीचेको पहुँचे आय ॥
भिक्षा लैकै तब रानीते ❋ अपनो कूच दियो करवाय ।
शहरके बाहर मानुष करिकै ❋ इन्दलको लौ संग लिवाय ॥
आयकै पहुँचे गढ सिरसामें ❋ उदया ठाकुर गयो अगार ।
खबरि सुनाई नर मलिखेको ❋ मलिखे आये पँवरि दुआर॥
चरण लागिकै नर मलिखेके ❋ ऊदनि माथे लिये लगाय ।
हाल सुनायो सब इन्दलका ❋ जैसे मिले परेउना लाल ॥
फिरिकै ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा सुनौ बीर मलिखान ।
बांसन मारो म्वहिं आल्हाने ❋ जल्लादनको दो सौंपाय ॥
सुनवाँ भौजी दहिने ह्वैगइ ❋ हमरो लीन्हों प्राण बचाय ।
दुखमें पीठी तुमहूं देगये ❋ फाटक बन्द लिये करवाय ॥
सब कोउ साथी है संपतिमें ❋ ना बिपदामें कोउ सहाय ।
बडा भरोसा था हमरे मन ❋ सिरसाबसतबीर मलिखान॥
अब तुम इन्दुलको लै जावौ ❋ औ दादाको मिलावौ जाय
हम अब जैहैं नरवरगढमें ❋ जबहीं लैहैं साजि बरात ॥
तब हम मिलि जैहैं बरातमें ❋ दादा बचन करौ परमान ।
इन्दल बिचले तब ऊदनिते ❋ हम ना तजिहैं साथ तुम्हार॥
ऊदनि समुझायो इन्दलको ❋ बेटा सुनो लडैते लाल ।
जबहिं बरायत तुम्हरी ऐहै ❋ तब हम चलिहैं साथ तुम्हार॥

पाती लिखि दइ बघ ऊदनिने ❀ सो इन्दलको दइ पकराय।
हाल बतैयो ना काहूको ❀ की म्वहिं मिले उदैसिंह राय
दुसरी पाती ऊदनि लिखिकै ❀ सो मलिखेको दई गहाय।
पहिले पाती सुनवैं दीजो ❀ फिरि इन्दलहि मिलैयो जाय
इतनी कहिकै उदानि बाँकुडा ❀ नरवर गढकी पकरी राह।
मकरँद ठाकुर औ कांतामल ❀ सोऊ चले साथमें जायँ॥
मलिखे चलि भये गढ महुबेको ❀ इन्दल ढेबा सग लिवाय।
एक पहरके तब अरसामें ❀ गढ महुबेमें पहुँचे जाय॥
जहाँ कचहरी परिमालेकी ❀ पहुँचे तहाँ बीर मलिखान।
आगे खडो कियो इन्दलको ❀ औ राजाको करी सलाम॥
सूरति देखी जब इन्दलकी ❀ तब राजाने कही सुनाय।
इन्दल देउ जाय आल्हाको ❀ वे ऊदनिको देयँ मँगाय॥
जो नहिं मँगवैहैं ऊदनिको ❀ तौ दशपुरवा दिहैं फुँकाय।
इतनी सुनिकै मलिखे चलिभे ❀ औ इन्दलको संग लिवाय
संगहि चलिभे चंदेले तब ❀ दशपुरवामें पहुँचे जाय।
गई पालकी चंदेलेकी ❀ जहँ दरबार बनाफर क्यार॥
बोले इन्दल नर मलिखेते ❀ चाचा सुनो हमारी बात।
बहुत दुखी हैं चाची हमरी ❀ कहौ तौ हाल देउँ बतलाय
हुक्म दियो तब नर मलिखेने ❀ जल्दी खबरि सुनावो जाय
इन्दल पहुँचे रंगमहलमें ❀ रनि सुनवाँपै गये नियराय
दोउ करजोरे इन्दल ठाढे ❀ सुनवाँ लीन्हों शीश लचाय
इंदल बोले तब सुनवाँते ❀ माता काहे रही रिसाय॥
बात न पूँछी तुम हमरी कछु ❀ आये बहुत दिनामें माय।
गुस्सा ह्वैकै सुनवाँ बोली ❀ हमरे आगेते हटिजाउ॥
तुम्हरे कारण ऊदनि देवर ❀ मारेगये बिना अपराध।

इतनी सुनिकै इंदल बोले ❋ माता धीर धरौ मनमाहिं ॥
पाती लै लइ थी मलिखेते ❋ सो इंदलने दई गहाय ।
दुसरी पाती इंदल लैके ❋ रनि फुलवाको दइ पकराय ॥
पढी हकीकत रनि सुनवाने ❋ फूली अँगमें नाहिं समाय ।
बहुत खुशीभइ फुलवा रानी ❋ सो मैं कहँलग करौं बखान ॥
इंदल उतरे सतखंडाते ❋ औ मलिखे पै पहुँचे आय ।
चालिभये मलिखेतब आल्हापै ❋ नंगी हाथ लिये तलवार ॥
पहुँचे मलिखे जब आल्हापै ❋ तब इंदलको कियो अगार
बोले मलिखे नुनि आल्हाते ❋ दादा देखौ दृष्टि पसारि ॥
तुम्हरे समुहे इंदल ठाढे ❋ तुम ऊदनिको देउ मँगाय ।
जो ना देहौ तुम ऊदनिको ❋ तौ दशपुरवा दिहौं फुँकाय
समुहे देखो जब इंदलको ❋ तुरतै आल्हा गये लजाय ।
कायल ह्वइकै नुनि आल्हाने ❋ अपनी लई कटारी काढि ॥
हमने ऊदनिको मरवायो ❋ अबहीं पेट्ठ मारि मरिजाउँ
छीनि कटारी लइ मलिखेने ❋ औ आल्हाते कही सुनाय
सुनौ हाल तुम अब इंदलको ❋ पाछे करियो और उपाय ।
बलखबुखारके अभिनंदन ❋ जो नौनेजाके सरदार ॥
तिनकी बेटी चित्तररेखा ❋ हारि लैगई परेउना लाल ।
सपना दीन्हों मोहिं देवीने ❋ हम जोगी बनि पहुँचे जाय
अलख जगाई बलखबुखारे ❋ जो इन्दलको लाये ढूँढि ।
व्याह करनको हम कहि आये ❋ ताको जल्दी करौ उपाय ॥
हमहिं दिखावौ अपनि मर्दुमी ❋ औ इंदलको करौ बिवाह ।
बिना लहुरवाके देखैं हम ❋ कैसे भाँवरि लिहौं डराय ॥
यहि बिधिकीन्हीं बहुत बतकही ❋ औचालिभयेबीरमलिखान
चलिभये राजा चन्देले तब ❋ औ महुबेमें पहुँचे जाय ॥

मलिखे पहुँचे गढ सिरसामें ❀ आल्हा सोचि सोचि रहिजायँ
बहुत अनमने आल्हा ह्वइगे ❀ औ पलका पर लेटे जाय ॥
उतरी सुनवाँ सतखंडाते ❀ औ आल्हापै पहुँची जाय ।
कौन नीदमें तुम सोवत हौ ❀ अब लरिकाको करौ बिवाह
बोले आल्हा तब सुनवाँते ❀ हमते यहु ह्वइबेको नाहिं ।
प्राण हमारो ना भारू है ❀ जो हम बलखबुखारे जायँ
यह सुनि बोली सुनवाँ रानी ❀ स्वामी पैयाँ परौं तुम्हार ।
करौ तयारी तुम बरातकी ❀ औ इन्दलको करौ बिवाह
ब्याह न करिहौ जो लरिकाको ❀ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि
न्यौता भेजौ सब राजनको ❀ सो बरातको होयँ तयार ॥
खबरि पठावो तुम सिरसामें ❀ आवैं साजि बीर मलिखान
तापर ज्वाब दियो आल्हाने ❀ रानी बैठि रहो अरगाय ॥
कठिन मवासी बलखबुखारा ❀ जहँपर जादूको अधिकार ।
प्राण गँवावन हम ना जैहैं ❀ हमते ब्याहु होनको नाहिं
तडपी सुनवाँ तब आल्हाते ❀ तुम्हरी मति मारी भगवान
याही पौरुषपर स्वामी तुम ❀ ऊदनि देवर दिये मराय ॥
अब तुम पहिरौ लहँगा लुगरा ❀ औ धरिलेउ जनानो भेष।
चुरियाँ बिछिया पहिरि लेउ तुम ❀ औ पलकापर बैठो जाय॥
अपने कपडा हमको देदेउ ❀ औ देदेउ ढाल तलवारि ।
साजि बरायत मैं लैजैहौं ❀ औ इन्दलको लैहौं ब्याहि॥
जैसे पानमें चूना लागै ❀ कत्था परे लाल ह्वइ जाय।
तैसेइ बात लगी आल्हाके ❀ सुर्खी निकरि गई वा पार॥
बोले आल्हा तब सुनवाँते ❀ रानी मानी बात तुम्हारि ।
जो तुम कहिहौ सोई करिहैं ❀ तुम्हरे बचन किये परमान॥
कागद लैकै कल्पीवालो ❀ अपनो कलमदान लै हाथ

पाती लिखि लिखि सब राजनको ❋ भेजी तुरत बनाफर राय
इक हरकारा दिल्ली भेजो ❋ यक झुन्नागढ दियो पठाय।
यक हरकारा नरवर भेज्यो ❋ यक बौरीगढ दियो पठाय॥
यक हरकारा नैनागढको ❋ भेजो तुरत बनाफर राय।
देश देशके सब राजनको ❋ न्यौता भेजि दियो तत्काल
पाती लिखि भेजी सिरसाको ❋ आवो बेगि बीर मलिखान।
चिट्ठी पाई जब मलिखेने ❋ तुरतै कूच दियो करवाय॥
चारि घरीके तब अरसामें ❋ दशपुरवामें पहुँचे आय।
देश देशके राजा आये ❋ तिनने जहँ तहँ करो मुकाम॥
इन्दल हरन क्यार आल्हा यह ❋ हमने लिखिकै दियो सुनाय
इन्दल ब्याह क्यार आल्हा हम ❋ आगे लिखिकै दिहैं सुनाय
समय समयपर आल्हा गावो ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति इन्दलहरण समाप्त।

श्रीः।

अथ

इन्दलका व्याह।

बलखबुखारेकी लडाई।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश॥ १॥

राम वामदिशि जनकनन्दिनी ❋ राजत लखन दाहिनी ओर
शोभा शील रूप गुण आगर ❋ बाँये भरत शत्रुहन जोर॥
रत्नजटित सिंहासन सोहै ❋ सोहै राजछत्र भगवान।
ठाढे हनूमान जोरे कर ❋ जग कल्याण करन यह ध्यान
करौ ध्यान यह रघुनन्दनको ❋ जासों होय भक्ति भगवान।
नित नित बाढै भवन सम्पदा ❋ अंतिम मिलै मुक्ति निर्बान॥
रामचन्द्रको ध्यान मनोहर ❋ पंचायतन रूप करतार।
जो कोइ सुमिरन करै निरंतर ❋ होवै जगत भक्त सरदार॥
देखौ करनी हनूमानकी ❋ हैं जो पवन पुत्र बलवान।
निशि दिन सेवा कीन्ह रामकी ❋ तासों प्रगट नाम संसार॥
भोलानाथ मनाय हृदयमहँ ❋ सीताराम स्वामि पद ध्याय
छूटि माजरा गा सुमिरनका ❋ साका चला शूरमन क्यार
लिखौं ब्याह में अब इन्दलको ❋ यारो सुनियो कान लगाय
हुक्म दे दियो तुनि आल्हाने ❋ लश्कर साजिकै होय तयार
बोलि नगरची को बीरा दै ❋ सोने कडा दियो डरवाय।
बजो नगारा दशपुरवामें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार॥
करी तयारी सब क्षत्रिनने ❋ औ बरातको भये तयार।

भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ पंडित बेदी रची बनाय ॥
चौक पुरायदई मोतिनकी ❋ सोने कलश दियो धरवाय।
मल्हना देवै तिलका रानी ❋ रानी सबै चँदेले क्यार ॥
नेग जोग कीन्हें सबने मिलि ❋ लागे होन मंगलाचार।
तुरत बुलाय लियो इन्दलको ❋ चन्दन चौकी दियो बिठाय
कलश प्रतिष्ठा करि पंडितने ❋ गौरि गणेश दिये पुजवाय॥
तेल चढायो सात सुहागिल ❋ औ अस्नान दियो करवाय
कपडा पहिराये इन्दलको ❋ शिरपर मोर दियो धरवाय
आई पालकी सजि द्वारेपर ❋ तामें इन्दल बैठे जाय ॥
कुवाँ बियाह्यो रानी सुनवाँ ❋ सातौ भाँवरि दई डराय ।
उठी पालकी तब इन्दलकी ❋ औ बरातमें पहुँची जाय॥
मारू डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ।
कूच करायो दशपुरवाते ❋ औ नरवरमें पहुँचे जाय ॥
खबरि कराई मकरन्दीको ❋ जल्दी चलौ बरायत साथ।
बोले ऊदनि मकरन्दीते ❋ अब इन्दल को करौ विवाह
सुनतै चलिभै मकरन्दी तब ❋ लश्कर डंका दियो बजाय।
लश्कर सजिगौ मकरन्दीको ❋ तुरतै कूच दियो करवाय ॥
मकरँद मिले जाय आल्हाको ❋ तब बरात सब भई तयार ।
चली बरायत मौरँग गढते ❋ पहुँची बलखबुखारे जाय ॥
जबहीं पहुँचि गये धूरे पर ❋ तहँ पर डेरा दियो डराय ।
भयो बोलौवा तहँ पण्डितको ❋ ब्याह कि साइति देउ बताय
चूडामणि पण्डित तब आये ❋ पत्रा खोलि बिचारन लाग।
बोले पण्डित तब बिचारकै ❋ ऐपनवारी देउ पठाय ॥
रूपना बारीको बुलवायो ❋ बोले तुरत बीर मलिखान ।
ऐपनवारी तुम लै जावौ ❋ तब रूपनाने कही सुनाय ॥

मोरे भरोसे तुम रहियो ना ❋ हम ना शीश कटै हैं जाय ।
कठिन मवासी बलखबुखारा ❋ जहँ है जादू को अधिकार ॥
मलिखे बोले तब रुपनाते ❋ भैया अक्किल गई तुम्हारि ।
इन्दल ब्याहन को रहिहैं ना ❋ यह दिन कहिबेको रहिजाय
तुमको नेगी हम समझैं ना ❋ तुम तौ भैया लगौ हमार ।
बोलो रुपना तब मलिखेते ❋ घोडा हमहिं देउ मँगवाय ॥
इन्दल वालो तेगा दै देउ ❋ तौ हम बलखबुखारे जायँ ।
जो जो माँगो रुपना बारी ❋ सो सो मलिखे दियो मँगाय
कूदि बछेरा पर चढि बैठो ❋ ऐपनवारी लई उठाय ।
रुपना चलिभो तब बरातते ❋ पहुँचो बलखबुखारे जाय ॥
जबहीं पहुँचो दरवाजे पर ❋ दरवानीने कही सुनाय ।
कहाँते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना दरवानीते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
नगर महोबा इक बस्ती है ❋ जहँ पर बसैं चँदेले राय ॥
ब्याहन आये हम इन्दलको ❋ रूपन बारी नाम हमार ।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ राजैं खबरि सुनावौ जाय ॥
नेग हमारो जो द्वारेको ❋ राजा तुरत देइँ मँगवाय ।
चारि घरि भरि चलै शिरोही ❋ औ बहि चलै रक्तकी धार ॥
यहै नेग हमरो द्वारेको ❋ सो तुम खबरि देउ पहुँचाय ।
यह सुनि चलिभौ दरवानीतब ❋ औ राजा पै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी तहँ राजाको ❋ औ रुपनाको कह्यो हवाल ।
तुरत बुलायो हंसामनिको ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय
मारि गिरावौ तुम बारीको ❋ तुरतै मूड लेउ कटवाय ।
तौलौं रुपना समुहे पहुँचो ❋ औ राजाको करी सलाम ॥
तीनि कदम जब गद्दी रहिगइ ❋ ऐपनवारी दई चलाय ।

बोलो रुपना अभिनंदनते ❋ हमरो नेगु देउ मँगवाय ॥
गुस्सा ह्वइकै तब राजाने ❋ सातौ बेटा लिये बुलाय ।
हुक्म दै दियो तब क्षत्रिनको ❋ याको घोडा लेउ छिनाय ॥
रुपनै घेरो तब क्षत्रिनने ❋ तुरतै चलन लगी तलवारि ।
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंग बलीको नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने ❋ बहुतक क्षत्री दिये गिराय ।
चली शिरोही चारिघरी भरि ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
ऐंड लगाय दई घोडाके ❋ द्वारे कलशा लिये उतारि ।
करी बन्दगी अभिनन्दनको ❋ ऐपनवारी लई उठाय ॥
नेग आपनो हम भरि पायो ❋ दायज लिहैं बनाफर राय ।
यह कहि चलिभौ रुपनाबारी ❋ फाटक निकरि गयो बापार ॥
रुपना चलिभौ तब बरातको ❋ पहुँचो तब बरातमें जाय ।
रंग बिरंगो रुपना देखो ❋ तब हँसि कही वीर मलिखान
कैसी गुजरी दरवाजे पर ❋ मो सब हाल देउ बतलाय ।
बोलो रुपना तब मलिखेते ❋ दादा कछू न पूँछौ बात ॥
चली शिरोही चारिघरी भरि ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
हियाँकि बातै तौ हिय छाडौ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ॥
सातौं बेटा तब बुलवाये ❋ औ राजाने कही सुनाय ।
छापा मारौ तुम बरातमें ❋ अबहीं लूटि लेउ करवाय ॥
यह सुनि चलिभै सातौं बेटा ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
बोलि नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कडा दियो डरवाय ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ लश्कर साजि भयो तैयार ।
घोडा सजवायो सातौंने ❋ तिनपर फांदि भये असवार ॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दई बढाय ॥
लश्कर पहुँचो सो धूरे पर ❋ डंका होत गोलमें जाय ॥

सुनी खबारि जब नर मलिखेने ❋ तुरतै हल्ला दियो कराय।
डंका बजवायो जल्दीते ❋ सिगरी फौज भई तैयार॥
भयो सामना द्वौ फौजनको ❋ मुर्चा बंदी दई कराय।
आल्हन बेटा अभिनंदनको ❋ ताने घोडा दियो बढाय॥
बोले आल्हन नर मलिखेते ❋ अपनो नाम देउ बतलाय।
कौन काम तुम्हरो अटको है ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ हमरो नाम वीर मलिखान
इन्दल ब्याहन हम आये हैं ❋ सो तुम ब्याह देउ करवाय
विना ब्याहके हम जैहैं ना ❋ चाहै कोटिन करो उपाय।
गुस्सा ह्वइकै तब आल्हनने ❋ तोपन बत्ती दइ लगवाय॥
दगी सलामी दोऊ दलमें ❋ धुअना रह्यो सरग मडराय।
अररर अररर गोला छूटैं ❋ गोली मन्न मन्न मन्नायँ॥
बान अगिनियाँ छूटन लागे ❋ सर सर परी तीरकी मारु।
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि २ रहिजाय।
गोला लागै जौन ऊँटके ❋ दलमें गिरै चकत्ता खाय।
गोला लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरिपरै धरनि भहराय
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❋ तिनके हाड मास छुटिजायँ
बंबके गोला जिनके लागै ❋ वे लत्ता अस जायँ उडाय
छोटी गोली जिनके लागै ❋ मानहुँ गिरह कबूतर खाय।
एक पहर भरि गोला बरस्यो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ॥
चढी कमनियाँ पानी ह्वइगईं ❋ चुटकिनके गे मास उडाय।
मारु बंद भइ तब तोपनकी ❋ लंबे बंद करैं हथियार॥
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगौ सात कदम मैदान।
मारु होन लागी बरछिनकी ❋ भाला चलन लाग तत्काल
तीनि घरी भरि बजो सांगडा ❋ अब आगेको सुनौ हवाल

दोनों फौजनके अंतरमें ❋ रहिगौ डेढ कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अपनी खैंचि लइ तलवारि ।
खट खट खट खट तेगा बाजे ❋ बोलै छपक छपक तलवारि
चलै जुनब्बी औ अहिगर्बी ❋ ऊना चलै बिलायति क्यार
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकाटिगिरैंसुघरुआज्वान
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार ।
हौदा मिलि गये हैं हौदा सँग ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत॥
पैदल गिरि गये पैग पैगपर ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ।
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❋ छोटे पर्वतकी अनुहार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै कबुतरी ❋ मलिखे कहैं पुकारि पुकारि
भागि न जैयो कोउ समुहेते ❋ रखियो धर्म चँदेले क्यार॥
सदा तुरैया ना बन फूलै ❋ यारो सदा न सावन होय ।
सदा न माता उरमें धरिहै ❋ यारो जन्म न बारम्बार ॥
इन्दल ब्याहन को रहि हैं ना ❋ यहु दिनु कहिबेको रहिजाय
दियो बढावा जब मलिखेने ❋ क्षत्रिन धरे अगारी पाँव ॥
भगे सिपाही अभिनन्दनके ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी अभिनन्दनने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय॥
बोले अभिनन्दन मलिखेते ❋ काहे धुरो दबायो आय ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ पर्बी परी दशहरा क्यार ॥
बेटी तुम्हरी गइ बिठूरको ❋ गंगा केरि करन अस्नान ।
इन्दल बेटाको हरि लाई ❋ जादू करिकै सुआ बनाय ॥
ऊदनि आये जोगी बनिकै ❋ सो इन्दलको गये लिवाय ।
गंगा उठवाई बेटीने ❋ सातौ भाँवरि लेउ डराय ॥
सो हम आये चाढि बरात लै ❋ सातौ भाँवरि देउ डराय ।
बिना बियाहे हम जैहैं ना ❋ चाहौ प्राण रहैं की जायँ ॥

इतनी सुनतै अभिनन्दनने ❋ नर मलिखेको दियो जवाब
धोखे रहियो ना दिल्लीके ❋ नाहीं सजे बीर चौहान ॥
करी लडाई ना पिरथीने ❋ मन बढि गये बनाफर राय।
चुप्पै लौटिजाउ महुबेको ❋ नाहक प्राण गँवायो आय॥
तापर ज्वाब दियो मलिखेने ❋ हमको जानत सकल जहान
जिसकी बेटी नीकी देखैं ❋ जोरा जोरी करैं बिवाह ॥
सातौ बेटा तुम्हरे बँधिहौं ❋ तुम्हरी मुश्क लिहौं बँधवाय।
जोराजोरी व्याह करे हौं ❋ सातौ भाँवरि लिहौं डराय
यह सुनि गुस्साह्वै अभिनन्दन ❋ सातौ बेटा लिये बुलाय।
मारि भगावौ इन पाजिनको ❋ लश्कर कटा देउ करवाय ॥
इतनी सुनतै सातौ बेटा ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
झुके सिपाही अभिनंदनके ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
दबी बायसी अभिनंदनकी ❋ मुर्चा हटा महोबियन क्यार
भगे सिपाही महुबे वाले ❋ देखो हाल बीर मलिखान॥
रुपना वारीको बुलवायो ❋ औ यह कही बीर मलिखान
जल्दी जावौ तुम ऊदनिपै ❋ औ यह हाल सुनावौ जाय
इतनी सुनतै रुपना चलिभौ ❋ औ ऊदनिपै पहुँचो जाय ।
बोलो रुपना वघ ऊदनिते ❋ लश्कर घिरे बीर मलिखान
तुमहिं बुलायो नर मलिखेने ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ ।
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❋ मकरन्दीते कही सुनाय ॥
करौ तयारी अब लरिबेकी ❋ लश्कर सबै लेउ सजवाय ।
मकरँद ऊदनि दोनों चलिभे ❋ औ मठियामें पहुँचे जाय ॥
पूजन करिकै जगदम्बाको ❋ औ फिरि होम दियो करवाय
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ माता राखौ धर्म हमार ॥
आभा बोली तब देवीकी ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वैजाय।

बिनतीकरिकैदोनों चलिभय ❋ औ लश्करमें पहुँचे आय ॥
बोलि नगरचीको बीरा दे ❋ तुरतै डका दियो बजाय।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सजिकै भये तयार ॥
फौज रुजाई कांतामलने ❋ लश्कर कूच दियो करवाय।
मकरँद ऊदनि औ कांतामल ❋ पहुँचे समरभूमिमें जाय ॥
रुपना बारी तुरतै आयो ❋ औ मलिखेते कही सुनाय।
ऊदनि मकरँद औ कांतामल ❋ पहुँचे समर भूमिमें आय ॥
दाबे घोडा ऊदनि आये ❋ समुहे गोल गये समुहाय।
लश्कर मारो अभिनन्दनको ❋ औ आल्हापै पहुँचे आय॥
ऐंड लगाई रसबेंदुलके ❋ पचशावद पर बाजी टाप।
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय
बोले आल्हा तब मलिखेते ❋ यहु क्षत्री है बुरी बलाय।
थारो उम्मिरिको लरिका है ❋ रणमें कठिन करै तलवार ॥
तौलौं ऊदनि समुहे आये ❋ करमें आल्हा लई कमान।
मलिखे बोले तब आल्हाते ❋ दादा घटिगो ज्ञान तुम्हार॥
ऊदनि ठाढे हैं समुहेपर ❋ तुमने लीन्हीं हाथ कमान।
सुनतै धारि कमान हौदामें ❋ आल्हा छाती लियो लगाय
बिना बेंदुलाके चढवैया ❋ ऐसी कौन करै तलवारि।
ऊदनि बोले तब आल्हाते ❋ दादा धन्य तुम्हारो ज्ञान ॥
मामा माहिलके कहिबेते ❋ तुमने मारो हमहिं बँधाय।
सौंपिदियोफिरि जल्लादनको ❋ दहिने भई शारदा माय ॥
जोगी बनिकै हमने ढूँढा ❋ इन्दल महुबे दिये पठाय।
साइति बीती अब भौंरिनकी ❋ क्यों नहिंब्याहलियोकरवाय
याही पौरुष पर दादा तुम ❋ म्वहिं जल्लादन दो सौंपाय।
बैठो दादा अब हौदामें ❋ अबहीं भाँवारि लिहौं डराय॥

आल्हा बोले तब कायल ह्वइ ❋ झूँठी कही महिल परिहार ।
गंगा उठाय लई माहिलन ❋ तब हमरे मन गइ समाय ॥
हम जब चलिहैं अब महुबेमें ❋ उरई घर घर लिहैं लुटाय ।
ऊदनिचलिभयेतब लारिबेको ❋ बीच गोलमें गये समाय ॥
कांतामल उत्तरमें पहुच ❋ पश्चिम गये वीर मलिखान ।
पूर्व ओरको मकरँद घेरो ❋ ढेबा दक्खिन पहुँचो जाय ॥
पाँचौ शूर पैठि दल भीतर ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
हौदन हौदन नचै बेंदुला ❋ भाला नागदोनिको हाथ ॥
बत्तिस हौदा खाली करिकै ❋ हंसामनिपै गौ नियराय ।
तब ललकारो हंसामनिने ❋ ऊदान खबरदार ह्वइजाउ ॥
खाच कमनियाँ हंसामनिने ❋ समुहे छाँडि केबरी दीन्ह ।
घोडा बदुला दहिने ह्वइगो ❋ केबर निकारि गयो वा पार ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ तब मलिखेने कही सुनाय ।
हाथ न डारियो हंसामनिपर ❋ इतनी, मानो कही हमारि ॥
धक्का देकै तब ऊदानिने ❋ हंसामनिको दियो गिराय ।
डड बांधिके हंसामनिकी ❋ अपने लश्कर दियो पठाय ॥
मोहन बेटा अभिनन्दनको ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ।
चोट चलाई बघ ऊदनिपर ❋ ऊदनि लीन्हीं चोट बचाय ॥
गाफिल करिकै तब मोहनको ❋ ऊदनि लियो जँजीरन बाँधि
देखि हाल यह सुक्खा बेटा ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ॥
तौलौं ढेबा समुहे पहुँचो ❋ औ सुक्खाको दइ ललकार ।
लई शिरोही तब सुक्खाने ❋ औ ढेबापर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ढेबान ❋ औ सुक्खाको लियो बँधाय
सातौं बेटा अभिनन्दनके ❋ नर मलिखेने लिये बँधाय ॥
बढे सिपाही महुबेवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ।

राम बनावैं तो बनिजावै ❋ बिगरी बनत बनत बनि जाय
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ भोलानाथ क्यार धरि ध्यान
लिखौं लडाई अभिनन्दनकी ❋ शारद मोको होउ सहाय ॥
सुनो हाल जब अभिनन्दनने ❋ सातौ बेटा बँधे हमार ।
बडे लडैया महुबेवाले ❋ रणमें होत युद्ध घमसान ॥
हाथी बढायो अभिनन्दनने ❋ औ यह हुकम दियो करवाय।
जान न पावैं कोउ महुबेको ❋ सबकी कटा देउ करवाय ॥
झुके सिपाही अभिनन्दनके ❋ खट खट चलन लगी तलवारि
मलिखे बोले तब चौंडाते ❋ ब्राह्मण सावधान ह्वइजाउ ॥
इतनी सुनतै चौंडा ब्राह्मण ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ।
इक ललकार दई राजाको ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ
सेल धमक्की तब चौंडाने ❋ राजा लीन्हीं चोट बचाय ।
गुर्ज उठायो अभिनन्दनने ❋ मो चौंडापर दियो चलाय॥
लगो चपेटा जब पुट्ठापर ❋ हाथी भगा चौंडिया क्यार
मलिखे आये तब दहिने पर ❋ अपनी सेल धमक्की आय॥
चोट बचाई अभिनन्दनने ❋ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय ।
लगो चपेटा जब घोडीके ❋ घोडी सात कदम हटिजाय
दाबे घोडा ऊदनि आये ❋ मकरन्दीते कही सुनाय ।
जो नहिं ब्याह होय इन्दलको ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी हमारि॥
ऊदनि ढेबा मकरँद ठाकुर ❋ तीनों चले एकही साथ ।
मुर्चन मुर्चन खबरि जनाई ❋ क्षत्रिउ धर्म तुम्हारे हाथ ॥
जंग जीतिकै जो घर चलिहौ ❋ सोने कडा दिहौं डरवाय ।
दियो बढावा जब क्षत्रिनको ❋ क्षत्रिन मारु मारु रट लागि
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
आल्हा आये पचशावदपर ❋ घोडी कबुतरी पर मलिखान

घेरो राजा अभिनन्दनको ❋ चारों ओर चलै तलवारि।
दाबे बेंदुला ऊदनि आये ❋ अभिनन्दनपै पहुँचे जाय॥
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय।
ऊदनि पहुँचे फिरि आल्हापै ❋ औ आल्हाते कही सुनाय॥
तुम्हरी बरनीके अभिनन्दन ❋ दादा लेउ जँजीरन बाँधि।
हाथी बढायो तब आल्हाने ❋ अभिनन्दनते लगे बतान॥
या तौ ब्याह करौ बेटीको ❋ या तुम हाथ लेउ हथियार
गुस्सा ह्वइकै तब अभिनन्दन ❋ अपनी लीन्हीं लाल कमान
हियरा डटिकै तब आल्हाको ❋ समुहे छाँडि कैबरी दीन्ह।
मुंड उठाई पचशावदने ❋ कैबर निकरि गयो वा पार
हाथी बढायो तब आल्हाने ❋ हौदा हौदाते मिलिजाय।
दोनों शूर भिरे दंगलमें ❋ हौदा काठिन चलै तलवारि
खोलि जँजीर दई आल्हाने ❋ पचशावदको दइ पकराय।
बैरी समुहे यहु ठाढो है ❋ याको लेउ जँजीरन बांधि॥
साँकल फेरी तब हाथीने ❋ सब दल रेन बेन ह्वइजाय।
भगे सिपाही अभिनन्दनके ❋ अपने डारि डारि हथियार
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय।
लम्बी धोतिनके पहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह॥
बाँधि जँजीरन अभिनन्दनको ❋ आल्हा खुशी भये मनमाहिं
काठिन लडाई भै धूरेपर ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
जबहीं बाँधो अभिनन्दनको ❋ जीतिको डंका दियो बजाय
रुपना बारीको बुलवायो ❋ औ इन्दलको पठयो बुलाय
चली पालकी तब इन्दलकी ❋ औ लश्करमें पहुँची आय
भयो बुलौआ चूडामणिको ❋ ब्याह कि साइति देउ बताय
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ अबहीं भाँवरि लेउ डराय।

करी तयारी तब आल्हाने ❋ चारो नेगी संग लिवाय ॥
जितने घरौआ हैं आल्हाके ❋ कांतामलको लीन्हें साथ ।
खबरि कराय दई महलनमें ❋ अबही भाँवरि लिहैं डराय ॥
त्यारी करवाइ महलनमें ❋ साँगनको दो खभ गडाय ।
मडवा छाय दियो ढालनको ❋ पंडित बेदी रची बनाय ॥
गौरि गणेश केर पूजन करि ❋ फिरि गाठिबंधन दियो कराय
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ पंडित वेद उचारन लाग ॥
हाथ जोरि बोले अभिनन्दन ❋ पूरन ह्वइगो काम तुम्हार ।
कैद छोंडिदेउ तुम सबहीकी ❋ हो सब योग्य बनाफर राय
इतनी सुनते बघ ऊदनिने ❋ सबकी कैद दई छोंडवाय ।
कन्यादान दियो राजाने ❋ ऊदनि नेग दियो बँटवाय ॥
बडे लडैया महुबेवाले ❋ सातो भाँवरि लईं डराय ।
बोले आल्हा अभिनंदनते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात
तुम यह जानी थी अपने मन ❋ कोउ रजपूत नहीं ससार ।
इतनी कहिकै सुनि आल्हाने ❋ सिगरे नेगी लिये बुलाय ॥
गहनो बाँटि दियो सबहीको ❋ दान दक्षिणा दई बँटाय ।
ऊदनि बोले तब राजाते ❋ बेटी कि बिदा देउ करवाय
भई तयारी तब महलनमें ❋ बेटी बिदा दई करवाय ।
चित्तररेखा भेंटन लागी ❋ माता लीन्हों कंठ लगाय ॥
फिरि फिरि भटी सब सखियनको। सखियाँ रोयरोय रहि जायँ ॥
आय पालकीमें बैठी जब ❋ पलकी चली बरायत माहिं
बारह तोडा मोहरैं लैकै ❋ सो ऊदनिने दिये लुटाय ।
आई पलकी जब बरातमें ❋ दीन्हों हुक्म बीर मलिखान
मेख उखारि देउ तँबुअनकी ❋ लश्कर कूच देउ करवाय ।
कूचको डंका जब बजवायो ❋ तँबुअन मेखैं दईं उखारि ॥

लदे सलीता जब ऊँटन पर ❋ छकडन तम्बू दिये लदाय ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ जीतिको डंका दियो बजाय॥
बारह दिनकी मंजिल करिकै ❋ झुन्नागढमें पहुँचे जाय ।
आल्हा ऊदनि मलिखे मकरँद ❋ कांतामलको संग लिवाय॥
तुरतै पहुँचे राजसभामें ❋ सेनापतिको करी सलाम ।
बोले आल्हा सेनापतिते ❋ राजा सुनौ हमारी बात ॥
कांतामल म्वाहिं दहिने ह्वइगये ❋ इन्दल हमको दिये मिलाय।
करी बडाई तब राजाने ❋ तुम सब लायक राजकुमार॥
दुइ मुकाम करिकै झुन्नागढ ❋ तिसरे कूच दियो करवाय ।
सातदिनाकी मंजलि करिकै ❋ पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
खबरि भेजि दइ रंग महलमें ❋ आये ब्याहि इँदलसी क्वाँर ।
आरति सजवाई मल्हनाने ❋ सखियाँ करैं मंगलाचार ॥
आई पालकी दरवाजे पर ❋ परछनि करी मल्हनदे रानि ।
बहू उतारी रानि सुनवाँने ❋ दान दक्षिणा दई बँटाय ॥
दगी सलामी गढ महुबेमें ❋ घर घर भयो मंगलाचार ।
ऊदनि भेंटैं तहँ सबहिनते ❋ मनमें खुशी भये नर नारि॥
ऐसे ब्याह भयो इन्दलको ❋ सो हम लिखिकै दियोसुनाय
आल्हानिकासीअबमैंलिखिहौं ❋ यारो सुनियो कान लगाय
समयसमय पर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति बलखबुखारेकी लडाई (इन्दलका ब्याह) समाप्त।

श्रीः ।

अथ आल्हा निकासी ।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
लिखौं निकासी अब आल्हाकी । मनमें सुमिरि राम घनश्याम
इक दिन बिपत परत सबहीको ❋ यारो सुनियो कान लगाय
बिपति परी इक दिन रघुपतिको।सीता हरी बिपिन खल आय
बिपति परी थी राजा नलको ❋ खुटिया लीलो नौलखा हार
बिपदा परिगइ महादेव पर ❋ खल भस्मासुर परो पिछार॥
बिपतिपरीयकदिनआल्हापर ❋ चन्देले ने दियो निकारि ।
कसम दिलाई परिमालैने ❋ सो सब हाल लिखौं बिस्तारि
यक दिन सोचैं अपने मनमें ❋ माहिल उरई के परिहार ।
खोज मिटै जब परिमालैको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ॥
लिल्ली घोडी पर चढि बैठे ❋ औ दिल्लीकी पकरी राह ।
पाँच दिना मारगमें बीते ❋ पहुँचे गढ दिल्लीमें जाय ॥
गये सामुहे माहिल राजा ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार।
उतारि बछेरी ते भुइँ आये ❋ घोडी थामि लई थनवार ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ माहिल रहिगये माथ नवाय
नजरि बदलिगइपृथीराजकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरईवाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोले माहिल पृथीराजते ❋ बैठे राज करौ महराज ॥
क्षेम कुशल है मेरि उरईमें ❋ पै दिन रात अँदेशा मोहि।

किला बनायो नर मलिखेने ❋ सबके धूरे लिये दबाय ॥
बडो बीर है सिरसावालो ❋ जाको नाम कहत मलिखान
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ अब महुबे को कहौ हवाल
बोले माहिल पृथीराजते ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान।
बडे लडैया हैं महुबेके ❋ जिनते लडे पार ना जाय॥
पाँच बछेरा हैं महुबेमें ❋ तासे जीति सकत ना कोय।
घोडा करिलिया औ हरनागर ❋ हंसामानि प्रसिद्ध है घ्वाड॥
घोडा बेंदुला और पपीहा ❋ पाँचौ घोडा लेउ मँगाय।
ऐंड लगावत ही घोडा ये ❋ उडिकै आसमानलौं जात
ऐसे घोडा हम देखे ना ❋ सो तुम समुझि लेउ महराज
घोडी कबुतरी औ पचशावद ❋ हाथी तुरत लेउ मँगवाय॥
पहिले इनको तुम मँगवावौ ❋ पाछे महुबो लेउ लुटाय।
वंश नशावौ इन तीनोंको ❋ आल्हा ऊदनि औ मलिखान
तिनते रिस्ता नाहिं नीको है ❋ सो तुम जानिलेउ महराज।
बात सुनी जब यह माहिलकी ❋ पृथीराज मन गई समाय॥
लैकै कागद कल्पीवारो ❋ अपनो कलमदान मँगवाय
लिखि सरनामा पृथीराजने ❋ चन्देलेको लिखी जोहार॥
लिखो हाल फिरि यह पातीमें ❋ मानो बात रजा परिमाल।
घोडा हरनागर हंसामानि ❋ पपिहा औग बेंदुला घ्वाड॥
घोडाकरिलियाघोडीकबुतरी ❋ हथि पचशावद देउ पठाय।
काम हमारो कछु अटको है ❋ फिरि पाछेते दिहैं पठाय॥
ऐसी पाती लिखि राजाने ❋ सो धावनको दइ पकराय।
पाती लैकै धावन चलिभो ❋ औ महुबेकी पकरी राह॥
चारि रोजको धावा करिकै ❋ पहुँचो नगर महोबे जाय।
जहाँ कचहरी परिमालेकी ❋ धावन तहाँ पहुँचो आय॥

साँकल खैंचत माँडिनी बैठी ❋ धावन उतारि परो अरगाय ।
करी बन्दगी परिमालेको ❋ पाती गही दई चलाय ॥
नजरि बदलि गइ चन्देलेकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ।
पाती बाँची परिमालेने ❋ औ आल्हाको लियो बुलाय
आल्हा ऊदनि दोनों आये ❋ चन्देलेकी करी सलाम ।
हाथ जोरिके आल्हा बोले ❋ काहे हमाहिं लियो बुलवाय ॥
राजा बोले तब आल्हाते ❋ पाती आई पिथौरा क्यार ।
उड़न बछेरा बड़ी राशिके ❋ सो मँगवाये पिथौरा राय ॥
काम कछू उनको अटको है ❋ सो तुम जल्दी देउ पठाय ।
सुनतै आल्हा बोलन लागे ❋ हम सब मानत हुक्म तुम्हार
पै इक अर्ज सुनो दादा तुम ❋ औ निज मनमें लेउ बिचारि
जिन घोड़नपर चढ़ैं चँदेले ❋ तिन पर चढ़ैं शूर चौहान ॥
तुमहिं हँसौआको डर नाहीं ❋ सुनिकै हँसिहै सकल जहान
डरिगे चन्देले महुबेके ❋ अपने घोडा दिये पठाय ॥
इतनी सुनतै कही चँदेले ❋ बेटा सुनो हमारी बात ।
शब्दबेधि राजा दिल्लीको ❋ है नरनाह बीर चौहान ॥
नहीं पठैहो जो घोड़नको ❋ ह्वइहै यहां बखेड़ा आय ।
तुम ना जितिहो पृथीराजते ❋ ताते घोड़ा देउ पठाय ॥
इतनी सुनतै ऊदनि तड़पे ❋ नैनन गई ललरी छाय ।
करैं बखेड़ा जो हमरे सँग ❋ मागैं राज भंग ह्वइ जाय ॥
जो कोउ देखै याहि महुबे तन ❋ ताको लेउँ शीश कटवाय ।
ब्याह कियो जब ब्रह्मानँदको ❋ तब कहँ हते बीर चौहान ॥
मोहरा मारो चौहाननको ❋ सातौ भाँवरि लई डराय ।
सो क्या भूलि गये राजा तुम ❋ अब क्यों डरत आप महराज
गर्व न राखा केहु राजाका ❋ हमको जानत सकल जहान ।

बावन गढ हमने सर कीन्हें ❋ सिगरे राजा गये थर्राय ॥
हाल तुम्हारो न जानो है ❋ दादा मनमें करौ बिचार ।
पहले डोंडा वे माँगत हैं ❋ पीछे लैहैं फौज सजाय ॥
डोंडा ह्वइ हैं जब हम पर ना ❋ तब हम करिहैं कौन उपाय।
तातें मानो कही हमारी ❋ लिखिकै भेजि देउ इनकार॥
इतनी सुनिकै गुस्सा ह्वइगे ❋ बोले तुरत रजा परिमाल।
कही हमारी तुम मानी ना ❋ खाली करौ हमारो गाँव ॥
पानी पीहौ दशपुरवामें ❋ तौ तुम पियौ रक्तकी धार ।
भोजन करिहौ जो पुरवामें ❋ तौ तुम खाउ गऊको मांस॥
अथवा सोइहौ जो नारी सँग ❋ मानौ परै मात के साथ ।
दई तलाकै चँदेलने ❋ सो आल्हा हिय गई समाय
दोनों चलिभये तब बँगलाते ❋ दशपुरवामें पहुँचे जाय ।
रुपना बारीको बुलवायो ❋ औ यह हुकम दियो फरमाय॥
फौज हमारी दश हजार है ❋ तुरतै सो तुम लेउ सजाय ।
चलि भो रुपना तब जल्दीते ❋ लश्कर सबै सजावन लाग॥
बोले ऊदनि सुनि आल्हाते ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय ।
कौन देशको तुम चलिहौ अब ❋ करिहौ कहाँ गुजारा जाय॥
आल्हा बोले तब ऊदनिते ❋ बैरी बसत चारिहू ओर ।
कहीं गुजारा ना हमरो है ❋ भैया परी बिपति अब आय
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
राजा जैचँद हैं कनउजमें ❋ जिनको उदय अस्तलौं राज
भयो बखेडा ना तिनते है ❋ तिन घर चलिकै करौ मुकाम
मोहिं भरोसा है जैचँदको ❋ रखिहैं शरण आपनी माहिं॥
सुनी बात जब यह ऊदनिकी ❋ आल्हाके मन गई समाय ।
इक हरकारा आल्हा भेजो ❋ औ ढेबाको लियो बुलाय ॥

आल्हा बोले तब ढेबाते ❋ भैया सगुन देउ बतलाय।
त्यारी हमारी है कनउजकी ❋ राजा जैचँदके दरबार॥
बोले ढेबा तब आल्हाते ❋ दादा हाल देउ बतलाय।
काहे त्यारी है कनउजकी ❋ सो तुम हमहिं कहौ समुझाय
यह सुनिआल्हा बोलनलागे ❋ हमपर रूठि गये परिमाल।
तीनि तलाकैं हमको दीन्हीं ❋ औ भादौंमें दियो निकारि॥
हाल बताय दियो गुस्साको ❋ तब ढेबाने कही सुनाय।
साथ तुम्हारो हम ना छोंडिहैं ❋ दादा सोच करौ कछु नाहिं
खोलि पत्तरा तब ढेबाने ❋ अपनोसगुनदियो बतलाय।
कूच कराय देउ जल्दीते ❋ तुम्हरे काम सिद्धिह्वइजायँ॥
यह सुनि चलिभो आल्हा ऊदनि ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय।
बोले इन्दल तब ऊदनिते ❋ चाचा हाल देउ बतलाय॥
कहांकि त्यारी तुमने कीन्हीं ❋ सो तुम हमहिं कहौ समुझाय।
बोले ऊदनि तब इन्दलते ❋ बेटा कछू न पूँछौ हाल॥
तीनि तलाकैं राजा दीन्हीं ❋ दशपुरवाते दियो निकारि।
करी तयारी हम कनउजकी ❋ तुमहूं जल्द होउ तैयार॥
जहाँ दिवलदे माता बैठी ❋ आल्हा तहाँ पहूँचे जाय।
हाथ जोरिकै आल्हा बोले ❋ डोला सबै लेउ सजवाय॥
हमहिं निकारो परिमालैने ❋ हम कनउजको भये तयार।
बोली देवै तब आल्हाते ❋ बेटा मेरे लडैते लाल॥
बुरो न मानौ तुम राजाको ❋ बूढे भये चँदेले राय।
रानी मल्हना तुमको पालो ❋ ताते बिलग न मानौ बात॥
बोले आल्हा तब मातासे ❋ नाहीं जानो हाल तुम्हार।
उडन बछेरा बडी राशिके ❋ सो मँगवायो बीर चौहान॥
घोडी कबुतरी हथि पचशावद ❋ सो मँगवायो पिथौरा राय।

बहुत बतकही हमते ह्वइ गइ ❋ हमने साफ करी इनकार ॥
तापर राजा गुस्सा ह्वइगये ❋ हमको दई तलाकैं तीनि ।
पानी पीवो जो पुरवामें ❋ तौ तुम पिऔ रुधिरकी धार
भोजन करो आजु पुरवामें ❋ तौ तुम खाउ गऊको मांस।
सेजमें जावो जो तिरियाकी ❋ तौ तुम चढ़ो मातुकी सेज॥
तीनि तलाकैं यह राजाकी ❋ हमरे गईं करेजे सालि ।
हम ना रहि हैं अब पुरवामें ❋ माता वचन करो परमान॥
इतनी सुनते रनि देवैके ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
डोला सजवाये बहुअनके ❋ औ सब माया लई लदाय॥
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ।
घोडा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोडा करिलिया पर इन्दल हैं ❋ ढेबा मनुरथा पर असवार ।
घोडा पपीहा औ हंसामनि ❋ लीन्हें साथ बनाफर राय ॥
कूच करायो दशपुरवाते ❋ औ चलि भये बनाफर राय
सिगरी रैयत रोवन लागी ❋ बेडा कौनु लगैहै पार ॥
जबही पहुँचे गढ महुबेमें ❋ डोला सबके धरे उतारि ।
महल निकट था जगनायकको ❋ जगनिक एक न पूछी बात
सुनो हाल जब रनि मल्हनाने ❋ चले रिसाय बनाफर राय।
मल्हना आई दरवाजे पर ❋ सो आल्हाते लगी बतान ॥
काहे रिसाय चले बेटा तुम ❋ बेटा मेरे लड़ैते लाल ।
जो तुम छाँडि दिहौ महुबेको ❋ लैहै पृथीराज लुटवाय ॥
बोले ऊदनि तब मल्हनाते ❋ नाहीं कछू हमारी लाग ।
भादों चिरैया ना घर छाँडैं ❋ ना बनिजार बनिजको जायँ
काह बिगारो हम राजाको ❋ जो भादोंमें दियो निकारि
तीनि तलाकैं दई राजाने ❋ हमरे गई करेजे सालि ॥

आज्ञा देदेउ तुम माता म्वहिं ❋ महुबे हम रहिबेके नाहिं ।
यह सुनि बोली रानी मल्हना ❋ बेटा मानौ बचन हमार ॥
मति सठि आय गई राजाकी ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं
जो तुम छाँडि देहौ राजाको ❋ तुमको हँसिहै सकल जहान
आई चन्द्रावलि द्वारेपर ❋ सो ऊदनिते लगी बतान ।
तुम ना जावौ गढ महुबेते ❋ बीरन बारबार बलिजाउँ ॥
बडो भरोसो म्वहिं तुम्हरो है ❋ को गाढेमें ऐहै काम ।
ऊदनि बोले चन्द्रावलिते ❋ बहिनी सुनो हमारी बात॥
दई तलाकैं हैं राजाने ❋ औ भादों में दियो निकारि
तासे रहिहैं ना महुबेमें ❋ चाहै कोटिन करो उपाय॥
रोय रोय मल्हना समुझायो ❋ आल्हा एक न मानी बात
बारह रानी चन्देलेकी ❋ सोऊ बहुत रहीं समुझाय॥
बात न मानी आल्हा ऊदनि ❋ औ चालिबे को भये तयार।
चरण लागिकै सब काहूके ❋ आल्हा कूच दियो करवाय
सिगरी रैयति रोवन लागी ❋ विपदा कछू कही ना जाय ।
बिना बीरको महुबे रहिगो ❋ बेडा कौनु लगैहै पार ॥
चले बनाफर गढ महुबेते ❋ धावन चलो महोबे क्यार ।
धावन पहुँचो सो सिरसामें ❋ जहँ दरबार बीर मलिखान
करी बन्दगी नर मलिखेको ❋ औ आल्हाको कह्यो हवाल
आल्हा रूठि चले महुबेते ❋ तिनको राखि लेउ समुझाय
इतनी सुनते नर मलिखेने ❋ घोडी कबुतरी लई मँगाय।
सो सजवाय लई जल्दीते ❋ औ चढिचले बीर मलिखान
मलिखे पहुँचे जहँ आल्हा थे ❋ औ आल्हाको करी सलाम
हाथ जोरि बोले नर मलिखे ❋ दादा काहे चले रिसाय ॥
बोले आल्हा तब मलिखेते ❋ भैया कछू कही ना जाय ।

पाँच बछेरा बडी राशिके ❋ सो मँगवाये पिथौरा राय॥
हाथि पचशावद घोडी कबुतरी ❋ माँगी सोऊ बीर चौहान ।
कही देन को चन्देले ने ❋ हमने साफ करी इनकार ॥
तापर गुस्सा ह्वै राजाने ❋ हमको दई तलाकैं तीनि ।
तासों रहि हैं ना महुबे हम ❋ भैया समुझि लेउ मनमाहिं
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ दादा चलौ हमारे साथ ।
बैठे राज्य करौ सिरसामें ❋ नित उठि सेवा करौं तुम्हारि
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ भैया सुनौ हमारी बात ॥
सिरसा रजधानी महुबेकी ❋ नहिं हम करें अन्न जलपान
मलिखे बारबार समुझायो ❋ दादा मानो बात हमारि ।
बास करौ तुम गढ सिरसामें ❋ या धूरेपर करौ मुकाम ॥
किला दूसरो हम बनवावें ❋ जहँ है भूमि कनउजी क्यार
बहुतक समुझायो मलिखेने ❋ आल्हा एक न मानी बात॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा सुनौ बीर मलिखान ।
कहै कोऊ नहिं अस बैरीते ❋ जैसी कही रजा परिमाल ॥
तासे रोको ना दादा तुम ❋ हम ना करिहैं यहाँ मुकाम ।
गुस्सा ह्वैकै तब अपने मन ❋ सिरसा चले बीर मलिखान
आल्हा चलिभये तब आगेको ❋ औ कनउजकी पकरीराह
नदिया बितवैपर पहुँचे जब ❋ तब तहँ होन उतारा लाग
उतरि काफिला गो नदियाते ❋ औ झाबरमें पहुँचे जा ।
कबहुँक बादल गर्जन लागें ❋ कबहुँक तपै सूर्यको घाम ॥

दोहा—काँटो बुरो करीलको, औ बदरीको घाम ।
सौति बुरी है चूनकी, औ साझेको काम ॥ १ ॥

लगो घाम जब तहँ बदरीको ❋ सबके बदन गये कुम्हिलाय
गरम बयारी चलै रेतमें ❋ सबके प्यास प्यास रटलागि

भये पियासे इन्दल बेटा ❋ ना कहुँ पानी परै दिखाय।
मुहँ कुम्हिलाय गये रानिनके ❋ बिपदा एक न बरनी जाय
बहुत कलेश सहो रेतीमें ❋ औ जमुनापर पहुँचे जाय।
डेरा डारे तब रेतीमें ❋ क्षत्री करन रसोईं लाग ॥
राति बसेरा करि जमुनापर ❋ भोरहि कूच दियो करवाय
घाट कालपी उतरि गये जब ❋ पहुँचे सब परहुलमें जाय ॥
तीनि रोज परहुलमें रहिकै ❋ सियरमऊको कियो पयान।
जबहीं पहुँचे सियरमऊमें ❋ अपने डेरा दिये लगाय ॥
फेंटैं छुटिगइँ रजपूतनकीं ❋ बागन तम्बू दिये तनाय ।
एक महीना सियरमऊ में ❋ आल्हा ऊदनि कियो मुकाम
इक दिन ऊदनि बोलन लागे ❋ औ आल्हा ते लगे बतान।
काहे दादा तुम गाफिल हौ ❋ अब कनउजको करौ पयान
चलिकै भेंटौ अब जैचँदते ❋ नाहीं देर करनको काम ।
इतनी सुनतै नुनि आल्हाने ❋ हथि पचशावद लियो मँगाय
सो सजवाय लियो जल्दीते ❋ यकसौ शूर लिये सजवाय।
कूच कराय दियो डेराते ❋ औ कनउज में पहुँचे जाय
जबहीं पहुँचे दरवाजे पर ❋ दरवानीने कही सुनाय ।
कौन देशके तुम राजा हौ ❋ अपनो नाम देउ बतलाय॥
बोले आल्हा दरवानीते ❋ हम हैं महुबेके सरदार ।
भेंट करन आये राजाको ❋ औ आल्हा है नाम हमार॥
इतनी सुनतै गौ दरवानी ❋ औ जयचँदको करी सलाम
आल्हा आये हैं महुबेते ❋ सो ठाढे हैं पँवारि दुआर ॥
यह सुनि जैचँद बोलन लागे ❋ फाटक जल्द देउ खुलवाय।
अबहीं लावौ तुम आल्हाको ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
लौटो दरवानी द्वारेपर ❋ फाटक तुरत दियो खुलवाय

बोला दरवानी आल्हाते ❋ अबहीं चलो हमारे साथ ॥
चलिभे आल्हा तब द्वारेते ❋ औ राजापै पहुँचे जाय।
गये सामुहे जब जैचँदके ❋ आल्हा झुकिकै करी सलाम
सूरति देखी जब आल्हाकी ❋ ऊंची चौकी दई डराय।
पूँछन लागे राजा जैचँद ❋ कैसे बसत रजा परिमाल ॥
खबरि बताय देउ महुबेकी ❋ अपनो हाल कहो समुझाय।
बोले आल्हा तब जैचँदसे ❋ बैठे राज करैं परिमाल ॥
कुशल छेम है गढ महुबेमें ❋ हमपर परी आपदा आय।
हमहिं निकारो चन्देलेने ❋ सो हम तुमहिं जुहारे आय॥
ठौर बताय देउ हमको कहुँ ❋ तहँ हम करैं गुजारा जाय।
इतनी सुनिकै जैचँद बोले ❋ तुम सुनिलेउ बनाफर राय
तुमहिं निकारो चन्देलेने ❋ तासों हम रखिबेके नाहिं।
इतनी सुनते आल्हा चलिभे ❋ औ हाथीपर भये सवार ॥
कूच कराय दियो कनउजते ❋ औ डेरापर पहुँचे जाय।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ दादा हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ ठौर जैचँद बतलाई ❋ तब आल्हाने कही सुनाय।
सुखमें साथी सब कोऊ है ❋ दुखमें कोउ न होय सहाय॥
जाय ठौर माँगा राजाते ❋ राजा साफ करी इन्कार।
परी आपदा जब पाण्डुन पर ❋ तब बिराट घर रहे छिपाय
परी बिपति श्रीरामचन्द्रपर ❋ निश्चर हरी सिया बनमाहिं
बिपति परी यकदिन शंकरपर ❋ खल भस्मासुर परो पिछार
आजु आपदा हमपर परिगइ ❋ कोउ न हमको होय सहाय॥

दोहा—तुलसी पर घर जायके, दुःख न कहिये रोय।
आपन भरम गँवाइये, बाँटि न लेहै कोय॥ १॥

यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा धीर धरौ मनमाहिं।

परत आपदा सब काहूपर ❋ सबदिन बिपति रहत है नाहिं
एक महीना के बीते पर ❋ इकदिनऊदनिकिये बिचार
घोडा बेंदुला को सजवायो ❋ तापर फाँदिभये असवार ॥
यकसौ शूर साथ सजवायो ❋ औ चलिभये उदैसिंह राय ।
बालापीर जहाँ कनउजमें ❋ ऊदनि तहाँ पहूँचे जाय ॥
न्याजनजारिचढवायपीरको ❋ तोशा तुरत दियो बँटवाय
तहँतेचलिभये उदनि बाँकुडा ❋ पहुँचे फूलमती ढिग जाय॥
होम करायो तहँ देवीको ❋ कन्या सातक दई जिवाँय ।
करि प्रणाम श्रीफूलमतीको ❋ ऊदनि पहुँचे बीच बजार ॥
जेती दुकानें हलवाइनकी ❋ सो ऊदनिने लई लुटाय ।
गडबड ह्वइगो तब बजारमें ❋ रैयत भगी कनौजी केरि ॥
जाय पुकार करी ड्योढीमें ❋ जहँ दरबार कनौजी क्यार ।
लूटि बजार लई ऊदनि ने ❋ औ महराज कनौजी राय ॥
अजैपाल कनउज में ह्वइगे ❋ तब ना लूटी कोउ बजार ।
सुनतै जैचँद गुस्सा ह्वइकै ❋ औ लाखनि ते लगे बतान॥
तोपैं लगवावौ धूरे पर ❋ औ ऊदनि को देउ उडाय ॥
ऐसो क्षत्री को उपज्यो है ❋ हमरो कनउज लेय लुटाय।
इतनी सुनतै लाखनि राना ❋ तोपैं आगे दई जोताय ॥
खबरि पायकै सैयद आये ❋ औ जैचँद को करी सलाम
बोले सैयद तब जैचँद ते ❋ तोपैं कहाँ दई पहुँचाय ।
जैचँद बोले तब सैयद ते ❋ ऊदनि लूटी आय बजार ॥
यह सुनि सैयद बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ कनौजी राय ।
जीति न पैहौ तुम ऊदनि को ❋ कल्हा देव कुँवरिको लाल ॥
बारह बरस कोरि उम्मिरि में ❋ ऊदनि लियो बापको दाउँ
पृथीराज दिल्ली के राजा ❋ तहँ ब्रह्मा को कियो बिवाह ॥

हाथी पछारो दरवाजे पर * तुरत भाँवारि लई डराय ।
आल्हा ब्याहे नैपाली घर * इन्दल बलखबुखारे माहिं ॥
मलिखे ब्याहे पथरी गढमें * सुलिखे शहर कमायूँ माहिं ।
ऊदनि ब्याहे हैं नरपति घर * सो तुम जानि लेउ महराज॥
बडे बली हैं आल्हा ऊदनि * कल्हा दस्सराज के लाल ।
यह सुनि जैचद बोलन लागे * सैयद सुनौ हमारी बात ॥
जौंरा भौंरा जो हाथी हैं * तिनको मदिरा देउ पिलाय
दोनों हाथी मतवारे करि * दरवाजे पर देउ ढिलाय ॥
सुनी बात जब यह सैयद ने * दोनों हाथी लिये मँगाय ।
फूल पिलाय दियो दोनोंको * औ द्वारेपर दियो ढिलाय ॥
खबारि सुनाई जब जैचँदको * तब जैचँद ने कही सुनाय ।
अब बुलवाय लेउ ऊदनि को * द्वारे हाथी देयँ पछारि ॥
गो हरकारा सियरमऊको * औ आल्हाते कहो हवाल ।
करी तयारी तब आल्हाने * अपनो हाथी लियो मँगाय
मस्तक रँगिदो पचशावदको * मखमल झूल दई डरवाय ।
रेशम रस्सा ते कसवायो * हौदा धरो सोवरन क्यार ॥
तामें झालरि हैं मोतिनकी * शोभा कछू कही ना जाय ।
झंपा लटकैं अम्बारी में * जिन में जडे जवाहिर लाल
सब हथियार सजे आल्हा ने * औ हाथी पर भये सवार ।
घोडा बेंदुला को सजवायो * तापर ऊदनि भये सवार॥
कूच करायो सियरमऊ ते * औ कनउजमें पहुँचे जाय ।
जबहीं पहुँचे दरवाजे पर * आये तहाँ कनौजी राय ॥
बोले जैचँद सुनि आल्हाते * सुनिये दस्सराजके लाल ।
हाथी पछारे तुम दिल्ली में * सो तुम हाथी देउ पछारि ॥
इतनी सुनते बघ ऊदनि ने * भाला लियो आपने हाथ ।

उतरि बेंदुला ते भुइँ आये ❋ औ हाथी पै पहुँचे जाय ॥
भाला मारो यक जौराके ❋ औ धरती में दियो गिराय।
दाँत पकरिके यक भौंराको ❋ तुरतै ऊदनि दियो पछारि ॥
देखि हाल यह राजा जैचँद ❋ तब सैयद ते लगे बतान ।
अब हम जानिलिये अपने मन ❋ साचे दस्सराज के लाल ॥
रिजिगिरि रजधानी छोटीसी ❋ सो आल्हाको दई इनाम ।
करी बन्दगी तब आल्हाने ❋ औ ऊदनि ने करी सलाम ॥
दोनों चलिभये तब ड्योढी ते ❋ औ रिजिगिरिमें पहुँचे आय
फौज आपनी तहँ मँगवाई ❋ सब सामान लियो मँगवाय
आल्हा रहन लगे रिजिगिरिमें ❋ ईश्वर बिपदा दई नशाय ।

कुण्डलिया ।

सुखते बिपदा है भली, जो थोरे दिन होय ।
इष्टमित्र अरु बन्धुगण, जानि परें सब कोय ॥
जानि परें सब कोय, बात नहिं पूछे कोई ।
जब संकट टरि जाय, मित्र होवें रिपु सोई ॥
नारायण धरि ध्यान, आप मनको समुझावे ।
कछु दिनमें सुख होय, सदा नहिं बिपति सतावे ॥

आल्हा निकासी यह पूरी भइ ❋ सो हम लिखिके दई सुनाय
आगे ब्याह लिखौं लाखनिको ❋ यारो सुनियो कान लगाय
समय समय पर आल्हा गावो ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यारि धरि ध्यान

इति आल्हानिकासी समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

अथ लाखनि रानाका ब्याह।

बूँदी (कामरू 'बंगाला' देश) की लडाई।

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

बजी बाँसुरी वृन्दाबनमें * औ मधुबनमें कुहके मोर।
मोहित ह्वइगये जीव चराचर * औध्वनिछायरहीचहुँओर।
उठि उठि धाई सबै गोपिका * जबही सुने कृष्णके बैन।
उलटे भूषण बसन धारिके * पहुँची जहाँ कृष्ण छवि ऐन॥
कीन्हींरासबिलास श्यामने * त्रिभुवनमाहिं रह्योयश छाय।
कृष्णचन्द्रछबिपरममनोहर * निशिदिनध्यानकरौंमनलाय
देश कामरू बंगालेमें * बूँदी शहर एक सरनाम।
तहँके महराजा गंगाधर * जिनको जानत सकल जहान
बेटी कुसुमाँ गंगाधरकी * जाको रूप न बरणो जाय॥
तेरह बरस केरि बेटी भइ * तब राजाने कियो बिचार॥
ब्याह करौ अब या बेटीको * होगइ ब्याह योग सुकुमारि।
दुइ बेटा थे गंगाधरके * मोती और जवाहिरसिंह॥
तुरत जवाहिरको बुलवायो * औ गंगाधर कही सुनाय।
टीका लै जावो बहिनीको * कोइ राजाके देउ चढाय॥
सुन्दर लरिकाज्यहि क्षत्रीको * त्यहिघर टीका जाउ लिवाय
आल्हा ऊदनि हैं महुबेमें * ओछी जाति बनाफर राय॥
ना लै जैयो तहँ टीका तुम * इतनी मनियो कही हमारि।
इतनी कहिकै गंगाधरने * चारो नेगी लिये बुलाय॥

थार सूबरनको भारी लै ❋ मिसरूवाले थान मँगाय ।
एक नारियल पाँच दुशाला ❋ मोहनमाला लिये मँगाय ॥
तोडा पाँच लिये मोहरनके ❋ औ नौ हीरा लिये मँगाय ।
तीनि लाखको टीका लैकै ❋ सो नेगिनको दो सौंपाय ॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ चारौ नेगी संग लिवाय ।
टीका लैकै चले जवाहिर ❋ गढ दिल्लीकी पकरी राह ॥
कछुकदिनाकीमंजिल करिकै ❋ दिल्लीगढमें पहुँचे जाय ।
जहाँ कचेहरी पृथीराजकी ❋ उतरे तहाँ जवाहिर जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ।
पाती लैकै टीकावाली ❋ सो पढिलई बीर चौहान ॥
पाती फेरि दई राजाने ❋ औ यह कही पिथौरा राय ।
ब्याहु न करि हैं हम बूँदीमें ❋ टीका अनत चढावो जाय ॥
चले जवाहिर तब दिल्लीते ❋ पथरीगढकी पकरी राह ।
जबहीं पहुँचि गये पथरीगढ ❋ जहँ गज राजाको दरबार ॥
गये जवाहिर जब समुहेपर ❋ गज राजाको करी सलाम ।
लैकै पाती टीकावाली ❋ सो गद्दीपर दई चलाय ॥
नजरि बदलिगइगजराजाकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ।
पढी हकीकति सब पातीकी ❋ पाती तुरत दई लौटाय ॥
ब्याहु न करिहैं हम बूँदीमें ❋ जहँ है जादूका अधिकार ।
चलेजवाहिर तब बिसहिनिते ❋ बौरीगढकी पकरी राह ॥
आठ दिना मारगमें लागे ❋ पहुँचे बीरशाह दरबार ।
करी बन्दगी बीरशाहको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती राजा बाँची ❋ तुरतै पाती दई फिराय ।
टीका चढैहैं ना बूँदीमें ❋ ना हम फौज कटै हैं जाय ॥
इतनी सुनिकै चले जवाहिर ❋ औ अपने मन कियो बिचार ।

अजैपाल कनउज में ह्वैगे ❋ जिन घर उदै अस्तलौं राज
राजा जैचँद हैं कनउज में ❋ तिन घर टीका देयँ चढाय
यह बिचारि मन चले जवाहिर ❋ औ कनउजकी पकरी राह
आठ रोजकी मैजलि करिकै ❋ पहुँचे गढ कनउजमें जाय
कनउज शहर देखि मनमें तब ❋ भये प्रसन्न जवाहिरसिंह॥
गये जवाहिर जब फाटक पर ❋ दरवानीने कही सुनाय।
कहाँते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो नाम देउ बतलाय
बोले जवाहिर दरवानी ते ❋ हमरो नाम जवाहिरसिंह।
टीका लाये हम बूँदी ते ❋ सो कनउज में दिहैं चढाय
इतनी सुनिकै गौ दरवानी ❋ औ जैचँदको करी सलाम
हाल सुनायो दरवाजेको ❋ तब राजाने कही सुनाय॥
जल्दी लावौ दरवाजे ते ❋ हमरी नजरि गुजारै आय।
गौ दरवानी तब द्वारे पर ❋ औ यह हुक्म सुनायो जाय
तुमहिं बुलायो है राजाने ❋ अबहीं चलौ हमारे साथ।
चले जवाहिर दरवाजेते ❋ पहुँचे बीच कचहरी जाय॥
करी बंदगी महाराजको ❋ तब जैचँदने कही सुनाय।
कौन देशते तुम आये हौ ❋ किस राजाके राजकुमार॥
बोले जवाहिर तब राजाते ❋ बंगाला है देश हमार।
पिता हमारे गंगाधर हैं ❋ बूँदी शहर केर महराज॥
टीका लाये हम बहिनीको ❋ हमको लरिका देउ बताय
यह कहि पाती लै टीकाकी ❋ सो गद्दी पर दई चलाय॥
पाती बाँची राजा जैचँद ❋ आँकुइ आँकु नजरि करिजायँ
बोले जैचँद चिट्ठी पढिकै ❋ ना बूँदी मे करिहैं ब्याह॥
कठिन लडाई बंगाले की ❋ जहँ है जादूको अधिकार।
बैठे ऊदनि तहँ बँगला में ❋ सो जैचँद ते लगे बतान॥

नाम तुम्हारो है दुनियाँ में ❋ तुमको जानत सकल जहान
सो तुम हीनी मुखत भाखौ ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
टीका फेरत हौ घरते तुम ❋ यह नहिं धर्म क्षत्रियन क्यार
घर आयो टीका नहिं फेरौ ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
जो कहुँ फेरि दिहौ टीकाको ❋ तौ जग ह्वइ है हँसी तुम्हारि
चर्चा ह्वइ है यह घर घर में ❋ की डरिगये कनौजी राय ॥
टीका चढ़े है हम लाखनिको ❋ औ बूँदीमें करि हैं ब्याह ॥
यह सुनि जैचँद बोलन लागे ❋ तुम सुनिलेउ उदयसिंह राय
जो कछु तुम्हरे मनमें आवै ❋ सोई करौ बनाफर राय ।
बोले ऊदनि तब राजाते ❋ अबहीं पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ पंडित आय गये तत्काल ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ अबहीं टीका लेउ चढ़ाय ।
खबरि कराइ तब महलनमें ❋ त्यागी करी तिलकदे रानि ।
चौक पूरि दइ तब मोतिनते ❋ चन्दन चौकी दई डराय ॥
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ पंडित वेद उचारन लाग ।
लाखनि रानाको बुलवायो ❋ औ चौकी पर दियो बिठाय ॥
मंगल पाठ कियो पंडितने ❋ गौरि गणेश दिये पुजवाय ।
तुरत जवाहिरको बुलवायो ❋ सो आँगन में पहुँचे आय ॥
चारौ नेगी संगै आये ❋ औ सब साथ लिये सामान
राजा जैचँद आल्हा ऊदनि ❋ सोऊ तहाँ बिराजे आय ॥
भयो रोचना जब लाखनिको ❋ तौलौं काहू छींको आय ।
देखि हकीकति तिलका रानी ❋ तुरतै सबते कही सुनाय ॥
असगुन ह्वइगो रंगमहलमें ❋ अबहीं टीका देउ फिराय ।
बोले ऊदनि तब तिलकाते ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
सगुन बिचारैं बानियाँ बाढू ❋ जो धरि मौर बियाहन जायँ

सगुन बिचारैं ना क्षत्री ह्वै ❀ जो रण चढिकै लोह चबायँ॥
गिरै पसीना जहँ लाखनिको ❀ तहँ देदेउँ रक्तकी धार ।
तौ मैं बेटा दस्सराजको ❀ सातौ भाँवरि लेउँ डराय ॥
बिना बियाहे जो मैं लौटौं ❀ तौ म्वहिं खाय कालिका माय
यह कहि ऊदनि बोलन लागे ❀ औ पंडितते लगे बतान ॥
ब्याहकि साइति तुम बतलावो ❀ जामें काम सिद्धि ह्वैजाय
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❀ सुन्दर फागुनमास पुनीत ॥
कृष्ण पक्षकी शिव तेरसिको ❀ दिनमें ब्याह लेउ करवाय ।
साइति सुनिकै कही जवाहिर ❀ नेगी अपने देउ बुलाय ॥
आये नेगी तब राजाके ❀ तिनको गहनो दियो बँटाय
चारौ नेगी बूँदीवाले ❀ जैचँद गहनो दियो बँटाय॥
साल दुशाला मोहनमाला ❀ सो नेगिनको दियो गहाय।
चले जवाहिर तब कनउजते ❀ औ बूँदीकी पकरी राह ॥
मंजिल मंजिलके चलिबेमें ❀ अपने शहर पहूँचे आय ।
हाल बतायो गंगाधरको ❀ बहिनिको टीकाआयेचढाय
अजयपाल ह्वैगे कनउजमें ❀ जिन घर उदै अस्तलौं राज
देवी फूलमती जहँ कहिये ❀ अरु है गोबर्धनी अस्थान
करी रसोईं जहँ सीताने ❀ अरुसिन्दोहिनिकोअस्थान
नीचे धारा है गंगाकी ❀ ऊपर किला कनौजी क्यार
भारी राजा है कनउजको ❀ लागत बावन जहाँ बजार।
राजा जैचँद हैं कनउजमें ❀ तिनके लाखनके ब्योहार॥
टीका चढायो हम लाखनिको ❀ जो है लाखनमें सरदार ।
बेटा कहिये रतीभानको ❀ नाती बेनचक्कवै क्यार ॥
लाखन भूपनमें यक सुन्दर ❀ जाको रूप न बरनो जाय ।
सुनिकै बोले तब गंगाधर ❀ हमरे मनमें गयो समाय ॥

नीको घर वर तुमने ढूँढो ❋ अब सामान करौ तैयार ।
त्यारी करन लगे राजा तब ❋ ढूँढन लगे ब्याह सामान ॥
हियाँकि बातैं तौ हियँ छाँडौ ❋ अब कनउजको सुनौ हवाल
पूस महीनाके बीते पर ❋ लागो माघ महीना आय ॥
त्यारी करत करत बीते दिन ❋ फागुन मास रह्यो नियराय ।
देश देशके सब राजन घर ❋ न्यौता भेजि दियो तत्काल
जितने राजा व्यौहारी रहैं ❋ सो कनउजमें पहुँचे आय ।
कुडहारिवाले गंगा ठाकुर ❋ मामा जौन कनौजी क्यार ॥
साजिकै आये गढ कनउजमें ❋ बागन डेरा दिये डराय ।
परहुलवाले परशू राजा ❋ सो कनउजमें पहुँचे आय ॥
आये रूपन सिरउँजवाले ❋ आये देश देश सरदार ।
करी तयारी आल्हा ऊदनि ❋ औ बरात सब लई सजाय ॥
बाडि बाडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिन पर दई चढाय ।
हाथी राजवाये आल्हाने ❋ औ घोडनको लियो सजाय
खंभ गडि गयो रंगमहलमें ❋ लागे होन मंगलाचार ।
तेल चढायो सात सुहागिल ❋ पाछे उबटन दियो लगाय ॥
फिरि अस्नान कराय चौकमें ❋ नहछुर होय लाग तत्काल ।
कुवाँ बियाह्यो रानि तिलकाने ❋ लाखनि पलकी बैठे जाय ॥
चली पालकी तब लाखनिकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
भुरुही हथिनीको सजवायो ❋ तापर जैचँद भये सवार ॥
छत्र बिराजत महाराजपर ❋ ऊपर चौंर ढुरैं गजगाह ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
मीरा सैयद बनरसवाले ❋ घोडी सिंहिनि पर असवार ।
मनुआँ तेली जो बनरसको ❋ घोडी बिलंदिनि पर असवार
लला तमोली कनउजवाला ❋ घोडा सब्जापर असवार ।

घोडा बेंदुलाको सजवायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोडा मनुरथाको सजवायो ❋ तापर ढेबा भयो सवार ।
अपनी अपनी असवारिनपर ❋ सिगरे शूर भये असवार ॥
मारू डंकाके बाजतखन ❋ सजिगे तीनि लाख असवार
पैदलसजिगै चारि लाख सब ❋ डंका होन गोलमें लाग ॥
चली बरायत तब कनउजते ❋ झंडन रही लालरी छाय ।
बारह दिनकी मंजिल करिकै ❋ देश कामरू पहुँचे जाय ॥
बूँदी शहर केर धूरेपर ❋ अपने डेरा दिये डराय ।
तम्बू तनिगै बन्नातनके ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
फेंटैं छुटिगईं रजपूतनकी ❋ घोडन जीन धरे उतराय ।
चढी रसोई उमरायनकी ❋ कोऊ करन गये अस्नान ॥
नाच होन लागो तम्बुनमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
बोले आल्हा तहँ जैचँदते ❋ अपनो पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ पंडित तुरत पहूँचे आय ।
बोले राजा तब पंडितते ❋ ब्याहकि साइति देउ बताय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ ऐपनवारी देउ पठाय ।
बोले आल्हा तब रुपनाते ❋ ऐपनवारी तुम लै जाउ ॥
हाथ जोरिकै रुपना बोलो ❋ दादा हम जैबेके नाहिं ।
कठिन देश यह बंगाला है ❋ जहँ है जादूको अधिकार ॥
आल्हा बोले तब रुपनाते ❋ भैया अक्किल गई तुम्हारि ।
नगर महोबेके रहवैया ❋ मुखते कहत न बात सम्हारि ॥
ब्याह होनको यहु रहि है ना ❋ यहु दिन कहिबेको रहिजाय ।
यह सुनि रुपना बोलनलागो ❋ घोडा बेंदुला देउ मँगाय ॥
भाला दैदेउ ऊदनिवालो ❋ औ दैदेउ ढाल तलवार ।
जो जो माँगो रुपना बारी ❋ सो सो आल्हा दियो मँगाय ।

चलिभयोरुपना तब बरात औ बूँदीमें पहुँचो जाय ।
जबहीं पहुँचो दरवाजे पर दरवानीने दियो जवाब ॥
कहाँते आये औ कहँ जैहौ अपनो नाम देउ बतलाय ।
बोलो रुपना दरवानीते ब्याहन आये कनौजी राय॥
ऐपनवारी हम लाये हैं रूपन बारी नाम हमार ।
खबरि सुनावो तुम राजाको हमरो नेग देयँ मँगवाय ॥
इतनी सुनिकै गयो दरवान पहुँचो राज सभामें जाय ।
करी बन्दगी गंगाधरको दरवाजे को कह्यो हवाल ॥
देर देखिकै तब रुपनाने घोडा बेंदुला दियो बढाय ।
जायकै पहुँचो राजसभामें औ राजाको करी सलाम ॥
कुन्नस करिकै पाँच कदमते ऐपनवारी दई चलाय ।
पूँछो राजा तब रुपनाते अपना हाल देउ बतलाय ॥
कौन देशते तुम आये हौ यहँपर काह तुम्हारो काम ।
इतनी सुनिकै रुपना बोल्यो ❋ औ राजाते कही सुनाय ॥
हम आये हैं गढ कनउजते लाखनिको करन बिवाह
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ रूपन बारी नाम हमार ॥
आल्हा आये गढ महुबेते ❋ जैचँद रिजगिरि दई इनाम
अगुआ आल्हा हैं बरातमें ❋ तिन म्वहिं आगेदियो पठाय
नेग हमारो जो द्वारेको ❋ सो तुम जल्द देउ मँगवाय ।
काह नेग तुम्हरो द्वारेको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
चलै शिरोहीचारि घरी भरि ❋ औ बहि चलै रक्तकी धार ।
यहै नेग हमरो द्वारेको ❋ सो तुम नेग देउ चुकवाय ॥
इतनी सुनतै राजा जरिगे ❋ नैना अग्निज्वाल ह्वइजायँ ।
बोले गंगाधर रुपनाते ❋ ओछी जाति बनाफर राय ॥
आल्हा आये क्यों बरातमें ❋ काहे आये हमारे द्वार ।

हुक्म देदियो गंगाधरने ❋ फाटक बन्द देउ करवाय॥
मारि गिरावो या बारीको ❋ तुरतै शीश लेउ कटवाय।
जान न पावै यह बारी कहुँ ❋ टट्टुवा टायर लेउ छिनाय॥
यह सुनिरुपनाबोलनलाग्यो ❋ राजा बोलो बात सम्हारि।
ऐसो क्षत्री को तुम्हरे है ❋ हमरो घोडा लेय छिनाय॥
यहु घोडा है चन्द्रवंशको ❋ सो तुम जानिलेउ महराज।
इतनी सुनते क्षत्री झपटे ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने ❋ लै बजरंगबलीको नाम।
बत्तिस क्षत्री रुपना मारे ❋ औ तहँ गडबड दियो मचाय
झालरि तोरिलई मोतिनकी ❋ ऐपनवारी लई उठाय।
बाकी नेग लिहौं भौंरिनमें ❋ यहकहिचल्योमहुबियाज्वान
ऐंड लगाय दई घोडाके ❋ फाटक निकरि गयो वा पार
चारि घरी केरे अरसामें ❋ पहुँचो तब बरातमें जाय॥
रंग बिरंगो रुपना देखो ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय।
कैसी गुजरी दरवाजे पर ❋ रूपन हमहिं देउ बतलाय॥
बोलो रुपना तब ऊदनिते ❋ दहिने भई शारदा माय।
काम तुम्हारो पूरन ह्वइगो ❋ रहिगो धर्म कनौजी क्यार॥
बत्तिस क्षत्री हमने मारे ❋ द्वारे बही रक्तकी धार।
हियाँकि बातैं तौ दियँ छाँडो ❋ अब बूँदीको सुनौ हवाल॥
गंगाधर सोचैं अपने मन ❋ औ आपुसमें लगे बतान।
जिनके नेगी ऐसे जालिम ❋ तिन क्षत्रिनके कौन हवाल॥
मोती जवाहिर दोनों बेटा ❋ तिनते राजा कही सुनाय।
लडे न जितिहौ तुम आल्हाते ❋ ताते तुमहिं देउँ बतलायँ॥
चारो नेगी तुम बुलवावो ❋ औ बरातको जाउ लिवाय।
जायकै कहियो,तुमआल्हाते ❋ अकिलोलरिका देउ पठाय॥

देश हमारे यहै रीति है ❋ आवै साथ नाहिं कोउ शूर।
चलिकै लावौ तुम लरिकाको ❋ औ खंदकमें देउ डराय ॥
आल्हा अगुवा हैं बरातके ❋ ओछी जाति बनाफर क्यार
ब्याह जो ह्वइ है कहुँ बेटीको ❋ कोउ न पियै घडाको पानि॥
इतनी सुनिकै लरिका चलिभे ❋ चारौ नेगी संग लिवाय ।
दोनों पहुँचे जब बरातमें ❋ तहँ क्षत्रिनते पूछन लाग ॥
कौनसो तम्बू है राजाको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय।
तम्बू बतलायो काहूने ❋ तहँपर दोनों पहुँचे जाय ॥
सोने सिंहासन जैचँद बैठे ❋ तिनको झुकिकै करी सलाम
मोती जवाहिर बोलन लागे ❋ हम बूँदीके राजकुमार ॥
हमहिं पठायो है राजाने ❋ औ यह कही बुँदेले राय ।
देवालय बहुत नीकी है ❋ अकिलो लरिका देयँ पठाय॥
संग न भेजें कोउ लरिकाके ❋ हमरे कुला यहै ब्योहार ।
बोले आल्हा तब लरिकनते ❋ हमरे रीति यही चलि आय॥
जैहै सहबाला लरिका सँग ❋ औ नेगी सब जैहैं साथ ।
नेग झगरिहैं वे मडये तर ❋ हमरे बचन करौ परमान ॥
भेष बनायो तब नेगिनको ❋ ऊदनि शूर लिये सजवाय ।
काहुइ दीन्हों आसा बल्लम ❋ काहुइ पंखा दो पकराय ॥
मुरछल दे दीन्हों काहूको ❋ काहुइ झंडी दई गहाय ।
सजी पालकी तब लाखनिकी ❋ संगै ऊदनि भये सवार ॥
चलीपालकी तब लाखनिकी ❋ औ द्वारे पर पहुँची जाय ।
शूर तीनिसों बूँदीवाले ❋ सो पहिलेते दिये छिपाय ॥
बोले मोती तब लाखनिते ❋ अब हियँ छोरि धरौ हथियार
नेगी भीतर जान न पैहैं ❋ हमरे कुला यहै ब्योहार ॥
बोले ऊदनि तब मोतीते ❋ तुम चटि करौ हमारे साथ ।

गंग उठाई तब मोतीने ❋ मनको भरम देउ बिसराय॥
बात मानिक लाखानि ऊदनि ❋ अपने छोरि धरे हथियार।
दोनों चलि भये तब भीतरको ❋ फाटक बन्द दिये करवाय॥
फिरिकै मोती बोलन लागे ❋ हमरे कुला यहै व्यौहार।
पहिले भोजन करौ महलमें ❋ पाछे भाँवारि दिहैं डराय॥
बिछो गलीचा तहँ पलकापर ❋ लाखानि ऊदनि बैठे जाय।
थार सुबरन को आगे धरि ❋ तिनमें भोजन दिये परसाय
कौर उठायो जब दोनोंने ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि।
बोले ऊदनि तब मोती ते ❋ तुम बदि करी हमारे साथ
छलिकै लाये हम दोनों को ❋ झूंठी गंगा लई उठाय।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❋ नाहीं लेन दिये हथियार॥
इत उत दोनों देखन लागे ❋ ना कहुँ देखि परो हथियार।
पलका देखो यक महलन म ❋ ताकी पाटी लई निकारि॥
पाटिन मारु करी दोनोंने ❋ बहुतक क्षत्री दिये गिराय।
मारि भगायो सब क्षत्रिन को ❋ क्षत्री लै लै भगे परान॥
यह गति देखी मोतीसिंह ने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
जायकै घेरो बघ ऊदनिको ❋ ऊदनि पाटी दई चलाय॥
खाली हाथ परो ऊदनिको ❋ मोतीसिंहने दियो गिराय।
बेहा करिकै तब ऊदनि को ❋ मोतीसिंहने लियो बँधाय॥
झुके जवाहिर तब लाखानि पर ❋ लाखानि पाटी मारी आय
खाली हाथ परो लाखानि को ❋ औ झुकिपरे भूमिपर जाय
बेहा करिक तब लाखानिको ❋ तुरत जवाहिर लियो बँधाय
लाखनि ऊदनि दोनों बाँधिगे ❋ राजै खबरि दई करवाय॥
हुकम देदियो गंगाधर ने ❋ चुंगल दहक देउ डरवाय।
मोती लैकै गै दोनों को ❋ चुंगल दहक माहिं डरवाय

शिला धरि दई तब ऊभे पर ❋ पहरा बिकट दियो बैठारि
देखि हाल यहमालिनिचलिभइ ❋ सतखण्डा पर पहुँची जाय
हाल बतायो सब बेटी को ❋ औ मालिनि यह कही सुनाय
ब्याहन आये लाखनि राना ❋ आये संग उदयसिंह राय ॥
घैहा करिकै तिन दोनों को ❋ औ ऊभे में दियो डराय ।
यह नहिं चहिये थी राजा को ❋ जो घटि करी कनौजी साथ
रूप दियो तिनको विधनाने ❋ मानहुँ राम लषण द्वउ भाय
यह सुनि सोची कुसुमा बेटी ❋ थार सूबरन लियो मँगाय
भोजन धरिकै एक थार में ❋ जलको गडुआ लियो मँगाय।
रेशम रस्सा लियो साथ में ❋ औ ऊभे पर पहुँची जाय॥
आधी रातिके तब अमला में ❋ दरवानी को दियो इनाम ॥
जितने क्षत्री तहँ पहरा पर ❋ सबको मोहरैं दईं पकराय॥
हाल बतैयो ना काहू को ❋ आई यहँपर राजकुमारि ।
बेटी पहुँची जब ऊभेपर ❋ बजुर पिहनियाँ दइ सरकाय
रेशम रस्सा को लटकायो ❋ औ यह कही कुसुमदे रानि
निकसौ स्वामी तुम ऊभेते ❋ भोजन करौ कनौजी राय॥
बोले लाखनि तब ऊभेते ❋ रानी घटिहा पिता तुम्हार ।
भैया तुम्हरे द्वउ घटिहा हैं ❋ गंगा करी हमारे साथ ॥
सब हाथियार धराय द्वार पर ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि।
घैहा करिकै हम दोनोंको ❋ दाहक माहिं दियो डरवाय॥
तुम्हरे निकारे जो हम निकरें ❋ तौ सब क्षत्रीधर्म नशाय ।
भोजन करिहैं ना ऊभे में ❋ नाहिं यह धर्म क्षत्रियन क्यार
हमको चाहो जो रानी तुम ❋ आल्हे खबरि देउ पहुँचाय।
इतनी सुनिकै कुसुमा चलिभइ ❋ सतखंडा पर पहुँची जाय
भोर होतखन पाती लिखिकै ❋ सो मालिनिको दइ पकराय

लैके डलिया मालिनि चलिभइ ❋ तामें पाती लई छिपाय ॥
मालिनि पहुँची जब बरातमें ❋ आल्है पूँछि पहुँची जाय।
पाती दीन्हीं तब मालिनिने ❋ आल्हा पाती बाँचन लाग
बाँचिके पाती आल्हा बोले ❋ मालिनि सुनौ हमारी बात
धीरज देउ जाय बेटीको ❋ अबहीं कैद लिहैं छोंडवाय
मालिनि चलिभइ तब बरातते ❋ औ बेटी पै पहुँची जाय।
कह्यो सँदेशा तब आल्हाको ❋ बेटी धीर धरौ मन माहिं
आल्हा बोले नर ढेबाते ❋ लश्कर तुरत लेउ सजवाय।
घटिहा राजा है बूँदीको ❋ झूँठी गंगा लई उठाय ॥
लाखनि ऊदनिको धोखा दै ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय
इतनी सुनतै ढेबा चलिभौ ❋ औ लश्करमें पहुँचो जाय॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कडा दियो डरवाय ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोडा मनुरथा त्यार करायो ❋ तापर ढेबा भयो सवार ।
मीरा सैयद बनरस वाले ❋ घोडी सिंहिनिपर असवार
धनुआँ तेली लला तमोली ❋ सोऊ साथ भये तैयार ।
लश्कर चलि गयो रणखेतनमें ❋ मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
खबरि पहूँची गंगाधरपै ❋ शिरपै फौज पहूँची आय ।
मोती जवाहिरको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय
जान न पावै कोउ कनउजको ❋ सबकी कटा देउ करवाय ॥
इतनी सुनतै दोनों चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।

हुक्म दै दियो तब लश्करमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार ।
बजो नगारा तब बूँदीमें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार
मोती जवाहिर दोनों सजिगे ❋ अपने घोडन भये सवार ।
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
घोड़ा बढाय दियो मोतीने ❋ ओ आल्हाते कही सुनाय ।
कही हमारी आल्हा मानो ❋ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
बोले आल्हा तब मोतीसे ❋ तुम छल कियो हमारे साथ
कटा करि दिहौं मैं लश्करकी ❋ ओ बूँदीको लिहौं लुटाय॥
लाखनि ऊदनि छलिकै लैगे ❋ ओ ऊभेमें दियो डराय ।
भलो आपनो जो तुम चाहो ❋ सातो भाँवारि देउ डराय ॥
इतनी सुनतै मोती बोले ❋ आल्हा बोलो बात सम्हारि
धोखे न रहियो तुम दिल्लीके ❋ जहँ ब्रह्माका कियो विवाह॥
नाम जो लेहौ तुम भौंरिनको ❋ मुखमें धाँसि दिहौं तलवारि
इतनी सुनतै आल्हा बोले ❋ क्या कमबख्ती लगी तुम्हारि
हटिजा कायर तू समुहेते ❋ घटिहा वंश बूँदेले क्यार ।
धोखे न रहियो कहु कायरके ❋ नाहीं परो मर्द ते काम ॥
सिगरी बूँदी मैं लुटवैहौं ❋ कारे पाखे दिहौं कराय ।
इतनी सुनतै मोती जारिगे ❋ तुरतै गोलंदाज बुलाय ।
हुक्म दे दियो मोतीसिंहने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
हुक्म पायकै झुके खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआँ उडानो आसमानलौं ❋ सबिता रहे धुंधमें छाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ गोला चलै दनाक दनाक॥
ओलाके सम गोला बरसै ❋ गोली मघा बूँद झरिलाय।
तीरन मारैं जे कमनैता ❋ गोलिन मारैं बरकंदाज ॥
चारि घरी भारि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ।

लागै गोला ज्यहि हाथीके ❀ मानौं चोर सेंधि दै जाय ॥
गोला लागै ज्यहि घोडाके ❀ चारौ सुम्म गर्द ह्वइ जाय ।
जौन ऊँटके गोला लागै ❀ सो गिरिपरै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्रीके ❀ सो गिरि परै भूमि भहराय।
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❀ तिनकी त्वचा सरग मँडराय।
बंबको गोला जिनके लागै ❀ तिनके हाड मास छुटि जायँ
छोटी गोली जिनके लागै ❀ मानौं गिरह कबूतर खाय॥
बुके मसाला जब तोपनके ❀ तोपैं छांडि दईं तत्काल ।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❀ खट खट चलन लगी तलवार
बोले आल्हा बाढि सैयदते ❀ घटिहा वंश बुंदेले क्यार ।
लाखनि ऊदनिको छलि लैगे ❀ चुंगल दहक दियो डग्वाय॥
इतनी सुनते सैयद झपटे ❀ लैकै खुदा नबीको नाम ।
धनुआँ तेली लला तमोली ❀ तिनहूँ खैंचि लई तलवारि ॥
दोनों फौजें संगम ह्वइगईं ❀ क्षत्रिन मारु मारु रटलागि ।
चलैं जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलैं बिलायति क्यार
चटकै तेगा बर्दवानके ❀ कटिकटिगिरैंसुघरुआज्वान
हौदाके सँग हौदा मिलिगे ❀ हाथिन अडो दाँतसे दाँत॥
चलै शिरोही सात कोशलों ❀ औ बहिचली रक्तकी धार ।
पैदल गिरिगे पैग पैगपर ❀ उनके दुदुइ पैग असवार ॥
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❀ छोटे पर्बतकी उनहार ।
एक लाख जूझे बूँदीके ❀ रणमें बही रक्तकी धार ॥
तीनि लाख जूझे कनउजके ❀ ऐसी कठिन चली तलवारि
आधी नदीमें लोहू बहै ❀ लोथिन ऊपरलोथि दिखाय
मारतमारत दोउदल थकिगे ❀ संझाकाल रह्यो नियराय ।
बन्द लडाई भइ दोनों दल ❀ क्षत्रिन छोरि धरे हथियार॥

जितने घैया जीबे लायक ❋ सो आल्हाने लये उठाय ।
लश्करघटिगोकनवजियाको ❋ आल्हा सोचि २ रहिजायँ ॥
बडे लडैया बूँदीवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
पहुँचेआल्हासोचि समझिकै ❋ पूजन करन अंबिका क्यार
होम करायो जगदम्बाको ❋ बोले हाथ जोरि शिरनाय ।
ब्याहु न ह्वैहै जो लाखनिको ❋ तौ जग ह्वैहै हँसी हमार ॥
आजु आपदा हमपर परिगइ ❋ अब गाढेमें आवौ काम ।
बोली आभा तब देवीकी ❋ आल्हा सुनौ हमारी बात ॥
पाती भेजौ तुम सिरसाको ❋ औ महुबेको देउ पठाय ।
मलिखे ब्रह्मा दोनौं ऐहैं ❋ तब लाखनिको ह्वैहै ब्याह
चरणै लागिक तब देवीके ❋ आल्हा लश्कर पहुँचे आय
पाती लिखी एक मलिखेको ❋ दूजी ब्रह्मै लिखो हवाल ॥
लाखनि राजा ब्याहन आये ❋ सो बूँदीमें लाये बरात ।
गंगा करिकै लाखनि ऊदनि ❋ इन दोनोंको गये लिवाय ॥
धोखा दैक गंगाधर ने ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय ।
कटा कराय दई लश्करकी ❋ अब गाढेमें आवौ काम ॥
बडे लडैया बूँदीवाले ❋ तिनसे कछू न पार बसाय ।
जल्दी लश्कर तुम लै आवौ ❋ तब लाखनिको होय बिवाह
तुमहिं बुलायो राजा जैचंद ❋ सो संकटमें होउ सहाय ।
दोनों पाती लिखि आल्हाने ❋ औ धावनको दई गहाय ॥
दीन्हीं पाती इक ब्रह्माको ❋ दूसरि देउ बीर मलिखान ।
धावन चलिभयो तब पातीलै ❋ गढ महुबे में पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी थी ब्रह्माकी ❋ धावन उतारि परो अरगाय ।
करी बन्दगी ब्रह्मानँद को ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
पढी हकीकति जब ब्रह्माने ❋ तब धावनते कही सुनाय ।

माता मल्हना बहुत मनायो ❋ तुम नहिं जाउ बनाफर राय॥
हटको मानो ना माताको ❋ औ कनउजको गये रिसाय।
जो कछु कीन्हो सो भरि पायो ❋ अब तहँ हमरी जाय बलाय
चलो सांडिया तब सिरसाको ❋ पहुँचो जहाँ बीर मलिखान
करी बन्दगी नर मलिखेको ❋ पाती गही दई चलाय॥
खोलिके पाती मलिखे बांची ❋ तुरतै पाती दई चलाय।
सोचत मनमें मलिखे चलिभे ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय॥
आवत देखो जब मलिखेको ❋ तब रानीने कही सुनाय।
कौन सोचमें तुम स्वामी हौ ❋ काहे बदन गयो मुरझाय॥
हाल बताय देउ साँचो तुम ❋ बालम पैयाँ परौं तुम्हार।
बोले मलिखे गजमोतिनिते ❋ रानी कछू कह्यो ना जाय॥
लाखनि ब्याहन गे बूँदीको ❋ साथ गये उदयसिंह राय।
लाखनि ऊदनि को गंगा करि ❋ बूँदीवाले गये लिवाय॥
घायल करिके तह दोना को ❋ चुगल दहक दियो डरवाय।
कटा कराय दई लश्करकी ❋ आल्हा पाती दई पठाय॥
हमहिं बुलाया ह बूँदीम ❋ की असमैमें आवौ काम।
याही दिनको हम हटको थो ❋ औ धूरेपर रोको जाय॥
बहुत मनायो हम आल्हाको ❋ मानी नहीं हमारी बात।
कही हमारी उन मानी ना ❋ अब मलिखेकी जाय बलाय
यह सुनि बोली गजमोतिनि तब ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात
तुम जब ब्याहनगे हमरे घर ❋ तबकी यादि करौ सब बात॥
बाप हमारन दाहक म ❋ तुमको बांधि दियो डरवाय।
तुमहिं निकारो तब ऊदनिने ❋ सो क्यों भूलिगये सब बात
जो कहुँ ऊदनि मारे जैहैं ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि।
पीछे पछितैहौ स्वामी तुम ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं

जल्दी जावौ तुम बूँदी को ❋ इतनी मानौ कही हमारि।
यह मन भायगई मलिखे के ❋ बोले तुरत बीर मलिखान॥
जो कछु कहिहौ सोई करि हैं ❋ रानी मानी बात तुम्हारि।
इतनी कहिकै मलिखे चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जायँ
बोलि नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कडा दियो डरवाय।
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार॥
डंका बाजो तब सिरसामें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार।
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार॥
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदिभये असवार।
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार॥
घोडी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढे बीर मलिखान।
खुनखुन कोरी मन्ना गूजर ❋ मदन गडारिया भयो सवार॥
तीनों शूर चले मलिखे सँग ❋ जो मरिबेको नाहिं डेरायँ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ पहुँचे नगर महोबे जाय॥
डेरा डारे मदन तालपर ❋ आगे बढे बीर मलिखान।
जहाँ कचहरी ब्रह्मानँदकी ❋ पहुँचे जाय बीर मलिखान॥
करी बन्दगी ब्रह्मानँदको ❋ ब्रह्मा चौकी दई डराय।
बोले ब्रह्मा तब मलिखेते ❋ अपनी कुशल देउ बतलाय
कौन सोच है तुम्हरे जियमें ❋ काहे बदन गयो कुम्हिलाय
बोले मलिखे तब ब्रह्माते ❋ सिरसा कुशल छेम सब भाँति
राज करत हौं मैं सिरसा में ❋ है यहु सब परताप तुम्हार।
काज हमारो कछु अटको नहिं ❋ पै एक अर्ज सुनौ मन लाय
लाखनि ब्याहन गे बूँदीमें ❋ संगै गये उदयसिंह राय।
छलिकै लैगे बूँदीवाले ❋ लाखनि ऊदनि संग लिवाय
घायल करिकै तिन दोनोंको ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय।

कटा कराय दई लश्करकी ❋ हमको पाती दई पठाय ॥
सो हम त्यार भये बूँदीको ❋ तुमहूँ चलौ हमारे साथ ।
असमौ परिगा है आल्हाको ❋ सो गाढे में आवो काम ॥
जो नहिं चलि हौ तुम हमरे सँग ❋ तुमको हँसि है सकलजहान
इतनी सुनतै तब ब्रह्मानँद ❋ तुरतै साथ भये तैयार ॥
तुरत नगरची को बुलवायो ❋ चीरा कलँगी दियो इनाम
डंका बाजो गढ महुबे में ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार
खबरि पायकै मल्हना रानी ❋ नर मलिखेको लियो बुलाय
आवत देखो जब मलिखेको ❋ तब मल्हनाने कही सुनाय
नित उठि हेरों बाट तुम्हारी ❋ आवत आजु बीर मलिखान
सुधि बिसराय दई हमरी तुम ❋ अब कहँ त्यारी दई कराय
हाथ जोरि कै मलिखे बोले ❋ माता सुनो हमारी बात ।
लाखनि ब्याहन गये बूँदीको ❋ संगे गये उदैसिंह राय ॥
बूँदीवाले छलिकै लेगये ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय
वहा होइगे लाखनि ऊदनि ❋ ऊभे परे मूर्च्छा खाय ॥
पाती भेजी राजा जैचँद ❋ लिखिकै आल्हा दई पठाय
मलिखे ब्रह्मा दोनों आवैं ❋ तो बूँदीमें होय बिवाह ॥
भारी संकट है आल्हापर ❋ हम बूँदी को भये तयार ।
संग हमारे ब्रह्मा जैहैं ❋ माता हुक्म देउ फरमाय ॥
इतनी सुनतै मल्हना बोली ❋ अबहीं जाउ लडैते लाल ।
ब्याह करावौ तुम लाखनिको ❋ औ ऊदनिको लेउ छोंडाय
चरण लागिकै रनि मल्हनाके ❋ मलिखे कूच दियो करवाय
बोले मलिखे ब्रह्मानँद ते ❋ अब ना राखौ देर लगाय
कूच कराय देउ जल्दीते ❋ गुजरै घरी घरी पर ब्यार ।
घोडा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मा भये सवार ॥

घोडी कबुतरी त्यार खडी थी ❋ तुरतै चढे वीर मलिखान
कूच कराय दियो महुबे ते ❋ औ बूँदी की पकरी राह ॥
सात रोज को धावा करिकै ❋ बूँदी शहर गये नियराय ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
लिखौं लडाई फिरि बूँदीकी ❋ होउ सहाय राम घनश्याम
मलिखे ब्रह्मा बूँदी पहुँचे ❋ अब आल्हाको सुनौ हवाल
बूँदी रहिगइ सात कोस जब ❋ मलिखे डेरा दियो डराय ।
बोले आल्हा तब जैचँदते ❋ तुम सुनिलेउ कनौजी राय
लश्कर थोरा है कनउजको ❋ आये नाहिं बीर मलिखान ।
अब तुम लौटिचलौ कनउजको ❋ लावैं साथ बीर मलिखान
संगै लैहैं ब्रह्मानँदको ❋ तब लाखनिको होय बिवाह
बोले जैचँद तब आल्हाते ❋ अबहीं कूच देउ करवाय ॥
अकिले पैदल क्या लारिहैं अब ❋ ताते अबहीं करो पयान ।
हुक्म देदियो तब आल्हाने ❋ लश्कर चलो कनौजी क्यार
जितने घैहा थे लश्करमें ❋ सो डोलिनमें लियो बिठाय
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ कनउजकी पकरी राह
लश्कर देखो जब मलिखेने ❋ इक हरकारा लियो बुलाय।
लावो खबरि जाय अबहीं तुम ❋ आवत फौज बुँदेले केरि॥
लैकै तोपैं अष्टधातु की ❋ सो चरखिन पर दई चढाय
लश्कर देखो जब आल्हाने ❋ तब ढेबाते कही सुनाय ।
आगे लश्कर है बूँदीको ❋ जल्दी मुर्चा देउ लगाय ॥
इतनी सुनतै नर ढेबाने ❋ मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिन पर दई चढाय
तौलौं धावन दाखिल ह्वैगयो ❋ धावन देखि महोबे क्यार
बत्ती धरिबेको बाकी थी ❋ ढेबा बन्द दई करवाय ।

धावन पहुँचि गयो आल्हापै ❋ औ आल्हाको करी सलाम॥
खबरि बताई ब्रह्मानँदकी ❋ आये साथ बीर मलिखान।
सुनी खबरि जब ब्रह्मा मलिखे ❋ लश्कर फिरो कनौजी क्यार
घोडी कबुतरीको सजवायो ❋ तुरतै तापर भये सवार।
घोडा हरनागर सजवायो ❋ ब्रह्मा फाँदि भये असवार॥
दोनों पहुँचे तुरत जहाँपर ❋ आल्हा और कनौजीराय।
करी बन्दगी तिन दोनोंको ❋ आल्हा छाती लियो लगाय॥
मोह आयगो नुनि आल्हाको ❋ नैनन बहै नीरकी धार।
बोले मलिखे तब आल्हाते ❋ दादा धीर धरौ मनमाहिं॥
मारि शिरोहिन चहला करिहौं ❋ सातौं भाँवरि लिहौं डराय।
बोले मलिखे तब ढेबाते ❋ भैया सुनौ हमारी बात॥
उत्तर ओर जाय बूँदीके ❋ अपनो मुर्चा देउ लगाय।
जबहीं राजा करै चढाई ❋ पाछे लश्कर दिऔ हटाय॥
जैहैं दक्खिन हम बूँदीके ❋ औ फाटकको दिहैं गिराय॥
ढेबा चालिभौ उत्तर पाटी ❋ घेरिकै मुर्चा दियो लगाय॥
पाँच कोसको फेरु खायकै ❋ दक्खिन गये बीर मलिखान
ढेबा बहादुरने मुर्चापर ❋ सिगरी तोपें दईं लगाय॥
लै बारूद डराय सबनमें ❋ ऊपर गोला दिये डराय।
बत्ती दैदइ सब तोपनमें ❋ धुअँना रह्यो सरग मँडराय॥
भयो दनाका जब तोपनको ❋ गंगाधरने सुनी अवाज।
मोती जवाहिरको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❋ सबकी कटा देउ करवाय॥
मोती जवाहिर दोनों चालिभये ❋ अपनो डंका दियो बजाय
लश्कर सजन लगो बूँदीको ❋ क्षत्री साजिकै भये तयार।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय

मोती जवाहिर केरि लड़ाई ❋ लिखिहौं सुमिरि शारदा माय
मोती जवाहिर दोनों लरिका ❋ अपने घोड़न भये सवार ॥
चली सवारी तब दोनोंकी ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
जाय पहूँचे जब खेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दइ करवाय ॥
तोपैं लगाय दईं आगेको ❋ सबमें बत्ती दइ लगवाय ।
अररर गोला छूटन लागे ❋ चहुँदिशि रही अंधेरिया छाय
जबहीं गोला छूटन लागे ❋ ढेबा मुर्चा लियो हटाय ।
मुर्चा लगवायो पाछे हटि ❋ लश्कर बढ़ो बुँदेले क्यार ॥
बढ़िगे आगे बूँदीवाले ❋ फिरिकै ढेबा हटो पिछार ।
हटै पिछारू ज्यों ज्यों ढेबा ❋ त्यों त्यों बढ़ै बुँदेली फौज॥
सात कोस पीछेको हटिकै ❋ ढेबा मुर्चा दियो लगाय ।
दक्खिन पाटी मलिखे घेरी ❋ औ तोपनको दियो लगाय
मारे गोला दरवाजे पर ❋ तुरतै फाटक दियो गिराय ।
धावा करिकै बीच किलामें ❋ पहुँचे जाय बीर मलिखान॥
आई रानी रंगमहलते ❋ औ मलिखेते लगी बतान ।
हाथ चलैयो ना तिरियन पर ❋ तुम समरत्थ बनाफर राय॥
बड़े लड़ैया हौ महुबेके ❋ तुम्हरी जग जाहिर तलवारि
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ धर्म कि माता लगौ हमारि
घटिहा राजा बूँदीवाला ❋ जो घटि करी हमारे साथ ।
छलिकै लाये लाखनि ऊदनि ❋ तिनको ऊभे दियो डराय॥
कौनसे ऊभेमें दोनों हैं ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय।
बोली रानी तब मालिखेते ❋ महलके नीचे परत दिखाय ॥
ताही खंदकमें दोनों हैं ❋ तिनको अबहिं लेउ निकराय
मलिखे पहुँचे तब हाहक पर ❋ बजुर पिहानियाँ दइ हटवाय
जितने क्षत्री थे पहरेपर ❋ सबकी कटा दई करवाय ।

बोले मलिखे बघ ऊदनिते ❋ निकसो तुरत उदेसिंह राय॥
हम चढि आये हैं सिरसाते ❋ संगे ब्रह्मा राजकुमार ।
इतनी सुनते ऊदनि बोले ❋ हमरे लगो करेजे घाव ॥
कैसे निकसें हम चुंगल ते ❋ दादा सुनो बीर मलिखान।
बोले मलिखे तब ऊदनि ते ❋ भैया सुरति करो मनमाहिं॥
हमको व्याहन गे पथरी गढ ❋ हम जब परे दहकमें जाय ।
तुम जब पहुँचे थे दाहक गढ ❋ हमको तहाँ पुकारो जाय ॥
तुरते निकसे हम ऊभे ते ❋ सो सुधि करो लहुरवा भाय
बाना राखे रजपूती को ❋ क्या बल घटो तुम्हारो आज
इतनी सुनते बात लागिगइ ❋ मनियाँ सुमिरि महोवे क्यार
तडपिके ऊदनि बाहर आये ❋ औ मलिखेको करी सलाम॥
चरण लागिके ब्रह्मानँदके ❋ ऊदनि माथे लिये लगाय ।
बोले मलिखेफिरिलाखनिते ❋ निकसो वेगि कनौजी राय॥
यहसुनिलाखनिसोचन लागे ❋ बहुते लागो घाव हमार ।
कसक करेजे पर भारी है ❋ पसुरी कसकिरहिजाय ॥
उज्जुरु जो करिहैंहमहियनापर ❋ हँसिहैं हमहिं बीर मलिखान
तडपिकैनिकसे लाखनिराना ❋ ले बजरंगबली को नाम ॥
तुरत पालकी तब मँगवाई ❋ लाखनि ऊदनि को बैठाय।
संग पालकी लइ दोनों की ❋ लश्कर गये बीर मलिखान॥
घाव सिलाये तिन दोनोंके ❋ मलहमपट्टी दई बँधाय ।
फौज बढाय दई आगे को ❋ हाहाकारी बीतन लागि ॥
उत्तर घेरो ढेबा बहादुर ❋ पश्चिम सैयद लियो घिराय।
पूरब बढिगे हैं ब्रह्मानँद ❋ दक्षिण ओर बीर मलिखान
बीच में घिरिगे बूँदीवाले ❋ चारों ओर चलै तलवारि ।
पाँच कोसके चौफेरा में ❋ चारों ओर चलै तलवारि ॥

बडे लडैया महुबेवाले ❋ सबके मारु मारु रट लागि ।
एक पहर भरि चली शिरोही ❋ तहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
तीनि लाख क्षत्री बूँदीके ❋ महुबे वारेन दिये गिराय ।
भगे सिपाही बूँदीवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखिजवाहिर मोती ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ॥
मोतीसिंह पहुँचे ब्रह्मापै ❋ औ ब्रह्मा ते कहो सुनाय ।
खबरदार रहियो घोडा पर ❋ यह कहि लीन्हींलालकमान
तीर चलायो ब्रह्मानँदपर ❋ ब्रह्मा दीन्हीं बाग मरोरि ।
बायेंते घोडा दहिने ह्वइगो ❋ कैबर निकारि गयो वा पार ॥
खैंचि शिरोही तब मोतीमल ❋ ब्रह्मानँद पर दई चलाय ।
ढाल अडाय दई ब्रह्माने ❋ उनकी टूटिगई तलवारि ॥
आगे बाढिगे ब्रह्मानँद तब ❋ औ मोतीको दियो गिराय ।
तुरतै बाँधिलियो मोतीको ❋ देखा हाल जवाहिर सिंह ॥
आगे बढिकै गै ब्रह्मापै ❋ समुहे आय गये मलिखान ।
खैंचि शिरोही लई जवाहिर ❋ सो मलिखेपर दई चलाय ॥
ढाल अडाई तब मलिखेने ❋ उनकी टूटि शिरोही जाय ।
ढालकि औझडमलिखेमारी ❋ औ धरतीपर दियो गिराय ॥
बाँधि जवाहिरसिंह मलिखेने ❋ अपने लश्कर दिये पठाय ।
सुनो हाल जब गंगाधरने ❋ दोनों लडिका बँधे हमार ॥
मन घबराने बूँदीवाले ❋ अबधौं काह करैं करतार ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
लिखौं लडाई गंगाधरकी ❋ शारद मोपर होउ सहाय ।
धीरज धरिकै गंगाधरने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ॥
समुहे पहुँचे जब मलिखेके ❋ तब मलिखेने कही सुनाय ।
छलिकै बुलवाये लरिका तुम ❋ औ ऊभेमें दिये डराय ।

तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❋ जो छल करो हमारे साथ ।
अबहूँ तुम्हरो कछु बिगरो ना ❋ सातों भाँवरि देउ डराय ॥
ब्याह किये बिन हम जैहैं ना ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ ।
इतनी सुनतै गंगाधरने ❋ अपने जादू लिये उठाय ॥
ताकि ताकि जादू राजा मारै ❋ सो मलिखेपर ना अनियाय
बोले मलिखे गंगाधरते ❋ तुम सुनिलेउ बुँदेलेराय ॥
पुष्य नक्षत्तरमें जन्माहूं ❋ बरहें परी बृहस्पति आय ।
तुम्हरे जादूकी क्या गिनती ❋ शंका हमहिं कालकी नाहिं
बोले मलिखे सुनि आल्हाते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
तुम्हरी बरनी गंगाधरकी ❋ अबहीं लेउ जँजीरन बाँधि
हाथी बढायो तब आल्हाने ❋ गंगाधरको दइ ललकार ।
यातौ ब्याह करौ बेटीको ❋ या तुम आय लडौ मैदान॥
सुनतै भाला लै गंगाधर ❋ सो आल्हापर दियो चलाय
चोट बचाय लई आल्हाने ❋ भाला गिरो धरनिमें जाय
मनमें सोचे तब गंगाधर ❋ अपनो हाथी दियो बढाय।
हौदाके सँग हौदा मिलिगे ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि॥
सो धरिधमकी नुनि आल्हापर ❋ छतुरी टूक टूक ह्वैजाय ।
डंडा कटिगे अम्बारीके ❋ आल्है राखिलियो भगवान
तडपे आल्हा तब हौदाते ❋ गंगाधरको लियो बँधाय ।
तब गंगाधर बोलन लागे ❋ सुनियो देवकुँवरिके लाल॥
हौ सब लायक मह्ुबेवाले ❋ तुम्हरी जग जाहिर तलवारि
ऐसे क्षत्री मह्ुबे प्रगटे ❋ क्यों नहिं राज करैं परिमाल
कैद छांडिदेउ तुम लरिकनकी ❋ अबहीं भाँवरि दिहौं डराय
बात मानिकै गंगाधरकी ❋ मलिखे कैद दई छोंडवाय

लौटो लश्कर महुबेवालो ❋ खेतन डेरा दियो डराय ।
करी तयारी तब गंगाधर ❋ मडवा तुरतै दियो गडाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ पंडित तुरत पहूँचे आय ।
चौक पुराय दई मोतिनकी ❋ सोने कलश दियो धरवाय
मोती जवाहिरको बुलवायो ❋ औ यह कही बुँदेले राय ।
शूर बुलाय लेउ जल्दीते ❋ सो कोठरिनमें देउ छिपाय
जबहीं आवैं महुबेवाले ❋ सबकी कटा देउ करवाय ।
ब्याह करें हैं जो महुबेके ❋ तौ जग ह्वै है हँसी हमारि॥
दुइ हजार क्षत्री बुलवाये ❋ सो महलनमें दिये छिपाय।
मोती चलिभे तब बूँदीते ❋ औ बरातमें पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी तहँ जैचँदको ❋ औ राजाते कही सुनाय ।
साइति नीकी है भौंरिनकी ❋ जल्दी लरिकै देउ पठाय ॥
आइ पालकी तब लाखनिकी ❋ तापर लाखनि भये सवार ।
आल्हा सैयद मलिखे ढेबा ❋ पँचये ब्रह्मा भये तयार ॥
चली पालकी तब लाखनिकी ❋ दरवाजेपर पहुँची आय ।
चारौं नेगी संगै पहुँचे ❋ लरिकै मडये लियो बुलाय
चन्दन चौकी लाखनि बैठे ❋ गौरि गणेश दिये पुजवाय
कुसुमा बेटीको बुलवायो ❋ चन्दन पाटा दियो बिठाय
हुक्म दै दियो गंगाधरने ❋ सबकी कटा देउ करवाय ।
क्षत्री निकरे तब कोठरिनते ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि
उठे महुबिया तब जल्दीते ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि ।
जितने क्षत्री थे बूँदीके ❋ सबको काटि कियो खरिहान
दोनों लडिका गंगाधरके ❋ बांधे तुरत बीर मलिखान ।
तब बुलवायो गंगाधरको ❋ कन्यादान लियो करवाय॥

बडे लडैया महुबेवाले ❋ सातो भाँवरि लई डराय
नेग जोग सबही करवाये ❋ गंगाधरते कही सुनाय ॥
बिदा करो तुम अब बेटीकी ❋ तब गंगाधर लगे बतान ।
सालके भीतर गौना देहैं ❋ हमरे कुला यहै ब्यौहार ॥
बोली रानी गंगाधरकी ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ।
बडे लडैया महुबेवाले ❋ जिनके बाँट परी तलवारि ॥
लडे न जितिहौ इन लरिकनते ❋ ताते भरम देउ बिसराय ।
हँसी खुशीते इनहिं पठावो ❋ दाइज देउ बुँदेले राय ॥
बोले गंगाधर रानीते ❋ रानी मानी बात तुम्हारि ।
सवा लाखको लहर पटोरा ❋ अस्सी मोहरैं लई मँगाय ॥
सो बहँडोर धरी राजाने ❋ औ लाखनिको लियो बुलाय
फिरि लहकौरि खवाय प्रेमते ❋ मोहनमाला दइ पहिराय ।
द्वारो गैंको जब सरहजनैं ❋ लाखनि हरवा दयो पहिरा
रूप देखिकै उन लाखनिको ❋ सखियाँ मोहिमोहि रहिजा
धनि धनि कहिये इनकी माता।।जिसकी कोखि लियो औता ।
हँसी खुशीते दायज देकै ❋ कीन्हों बिदा बुँदेले राय ॥
चली पालकी तब द्वारेते ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय ।
कूच करायो तब बूँदीते ❋ औ कनउजकी पकरी राह ॥
बारह दिनकी मैजलि करिकै ❋ पहुँचे घाट कालपी जाय ।
मलिखे ब्रह्मा आज्ञा लैकै ❋ गढ महुबेकी पकरी राह ॥
आई बरायत जब कनउजमें ❋ महलन खबरि दई करवाय ॥
करी तयारी रनि तिलकाने ❋ सखियाँ करैं मंगलाचार ॥
आई पालकी दरवाजेपर ❋ परछनि करी तिलकदे रानि
भीतर पहुँचे लाखनि राना ❋ दान दक्षिणा दई बँटाय ॥

दगी सलामी गढ कनउजमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
ऐसे ब्याह भयो लाखनिको ❋ सो हम लिखिके दियो सुनाय
आगे लडाई है गाँजरकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय
समय समयपर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति बूंदी (कामरूदेश बंगाला) की लडाई

(लाखनिरानाका ब्याह) समाप्त ।

श्रीः।

अथ गाँजरकी लडाई।

ऊदनि विजय।

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
लिखौं लडाई अब गाँजरकी ❋ शारद मोको होउ सहाय ॥
सिंहासन जैचन्द बिराजैं ❋ भारी लागि रहा दरबार।
ऊपर ढुरैं चौंर राजाके ❋ बैठे बडे बडे सरदार ॥
बोले मंत्री महाराज ते ❋ तुम सुनि लेउ कनौजी राय
अटको पैसा बहु गाँजरमें ❋ ताको करिहौ कौन उपाय ॥
यह सुनि सोचे राजा जैचँद ❋ औ यक कलश लियो मँगवाय
सो धरवाय दियो बँगलामें ❋ तापर बीरा दियो धराय ॥
कौन शूरमा है कनउजमें ❋ जो गाँजरपर पान चबाय।
पैसा अटको जो गाँजरमें ❋ ताको तुरत लेय भरवाय ॥
भारी खिलत दिहैं ताको हम ❋ करिहैं माफ लूटिको माल।
पहर एक बीरा को ह्वइगो ❋ कोऊ पान चबावै नाहिं ॥
तडपे ऊदनि तब बंगलामें ❋ औ बीराको लियो उठाय।
पान चबाय लियो गाँजरपै ❋ औ जैचँदते कही सुनाय ॥
ठाढे पैसा हम भरवै हैं ❋ गाँजर गर्द दिहैं करवाय।
यह कहि चालिभे ऊदनि ठाकुर ❋ औ लाखनिपै पहुँचे जाय
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ जल्दी फौज लेउ सजवाय।
बीरा चाबा हम गाँजरपर ❋ ठाढे पैसा लिहैं भराय ॥

इतनी सुनते लाखनि राना ❋ लश्कर डंका दो बजवाय ।
फौज सजाय लई कनउजकी ❋ भारी हुक्म कनौजी क्यार
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडन के असवार ।
पैदल सजिगे सब लश्करके ❋ अपने बाँधि सबै हथियार॥
भूरी हथिनी तब सजवाई ❋ तापर लाखनि भये सवार।
घोडा बेंदुला को सजवायो ❋ ऊदनि फांदि भये असवार
इन्दल चढिगे हंसामनि पर ❋ ढेबा मनुरथापर असवार॥
दस हजार हाथी सजवाये ❋ सजिगये तीनि लाख असवार
चारि लाख पैदल सजवाये ❋ कूचको डंका दियो बजाय
साले आल्हा के आये थे ❋ जोगा भोगा जिनके नाम ।
सोऊ त्यार भये गाँजरको ❋ अपने बांधि लिये हथियार
घोडा पपीहा त्यार करायो ❋ तापर जोगा भयो सवार ।
सब्जा घोडाको सजवायो ❋ तापर भोगा भयो सवार ॥
लश्कर चलिभो गढ कनउजते ❋ कूचको डंका दियो बजाय
मारू बाजा बाजन लागे ❋ क्षत्री बीररूप ह्वइजायँ ।
मंजिल मंजिल के चालिबे में ❋ गोरखपुर में पहुँचे जाय ॥
पाँच कोस बिरियागढ रहिगो ❋ अपने डेरा दिये डराय ।
तम्बू तनिगे तब ऊँचेपर ❋ औ खाले में लगी बजार॥
हौदा उतारि गये हाथिन के ❋ घोडन जीन दिये उतराय।
फेंटैं छुटिगईं सब क्षत्रिनकी ❋ सबने छोरि धरे हथियार ।
तीनि दिना होइगे धूरेपर ❋ मनमें ऊदनि कियो बिचार
पाती भेजैं अब बिरियागढ ❋ यह गुनि कलमदान लै हाथ
सिद्धि श्री नारायण लिखिकै ❋ ता पाछे ते लिखी जोहार ।
लिखो हाल तब बघ ऊदनिने ❋ हमरे बचन करौ परमान ॥
तुम तहसील करी गाँजर की ❋ औ जैचँदको दियो न दाम ।

बारह बरस क्यार पैसा है ❋ तुम ना दीन्हीं एक छदाम॥
हमहिं पठायो राजा जैचँद ❋ लाखनि राना साथ हमार।
हम हैं क्षत्री गढ महुबेके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार॥
पैसा भेजिदेउ जल्दी तुम ❋ इतनी मानौ कही हमारि।
जो नहिं इच्छा होय देनकी ❋ तौ तुम आय लडो मैदान॥
चिट्ठी लिखिकै यह ऊदनिने ❋ हरकाराको दइ पकराय।
चलिभयो धावनतबलश्करते ❋ औ बिरियागढ पहुँचो आय
हिरसिंह बिरसिंह बँगला बैठे ❋ धावन करी बन्दगी जाय।
पाती दैदइ बघ ऊदनिकी ❋ सो पाती लै बाँचन लाग॥
पढी हकीकति जब पातीकी ❋ गुस्सा गई देहमें छाय।
बोलि नगरचीको बीरा दौ ❋ लश्कर डंका देउ बजाय॥
बजो नगारा जब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार।
पहले नगारामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार॥
तिसरे नगाराके बाजत खन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार।
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार॥
बडि २ तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दईं बढाय॥
कूचको डंका तब बजवायो ❋ लश्कर कूच दियो करवाय।
चारि घरी केरे अरसामें ❋ पहुँची फौज खेतमें जाय।
इक हरकारा बदलाति आयो ❋ औ ऊदनिते कह्यो हवाल॥
लश्कर आयो बिरियागढको ❋ सो तुम खबरदार ह्वइजाउ।
सुनी खबरि जब यह ऊदनिने ❋ तुरतै डंका दौ बजवाय॥
चोब नगाराके बाजतखन ❋ क्षत्रिन बांधिलिये हथियार।
सजिगयोलश्करकनउजवालो ❋ तुरतै कूच दियो करवाय॥
आधकोसजबलश्कररहिगयो ❋ हिरसिंह हाथी दियो बढाय
आगे बढिकै हिरसिंह बोले ❋ को बिरियागढ घेरो आय॥

किसकी माता नाहर जायो ❋ सो समुहे ह्वइ देय जवाब ।
बोले ऊदनि तब आगे बढ़ि ❋ औ हिरसिंहते कही सुनाय
हमरी माता नाहर जायो ❋ हमने घेरो गाँव तुम्हार ।
हमाईं पठायो राजा जैचँद ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
बारह बरस क्यार पैसा है ❋ सो तुम दाम देउ भरवाय ।
नीके देहौ नीके लेहौं ❋ नाहीं कठिन करौं संग्राम ॥
यह सुनिहिरसिंहबोलनलागे ❋ औ ऊदनिको दियो जवाब।
चढ़ि चढ़ि आये राजा जैचँद ❋ हम ना दीन्हीं एक छदाम॥
धोखे रहियो ना काहूके ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय
भागे बचिहौ ना कनउजलौं ❋ ताते लौटि कनौजे जाउ ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ नाहीं जाना हाल तुम्हार ।
अपन दुसरिहा हम देखा ना ❋ जो समुहे होइ देय जवाब ॥
धोखे रहियो ना जैचँदके ❋ कौडी कौडी लिहौं भराय ।
दूजी करिहौ जो हमते तुम ❋ मारौं गर्द बर्द ह्वइजाउ ॥
हम हैं क्षत्री गढ महुबेके ❋ राजा दस्सराजके लाल ।
पैसा लिये बिना लौटैं ना ❋ चाहौ प्राण रहैं की जायँ ॥
बातन बातन बतबढ ह्वइगो ❋ औ बातनमें बाढी गारि ।
गुस्सा ह्वइके हिरसिंह ठाकुर ❋ अपनो हुक्म दियो करवाय
बत्ती देदेउ मोरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउँ उडाय।
के खलासी तब तोपन पर ❋ सुम्बा मारैं बारंबार ॥
रंजक धरिकै तिन प्यालनपर ❋ ऊपर बत्ती दई लगाय ।
दगी सलामी दोऊ ओरते ❋ दलमें रही अँधेरिया छाय

अथ हिरसिंह बिरसिंहकी लडाई ।

अररर गोला छूटन लागे ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ।

१ हिरसिंह और हरिसिंह दोनों नाम प्रसिद्ध थे.

गोला छूटैं दोनों दलमें ❋ रणमें होय दनाक दनाक ॥
गोला लागे ज्यहि हाथीके ❋ मानों चोर सेंधि दै जाय।
जौन ऊँटके गोला लागे ❋ सो गिरिपरे चकत्ता खाय॥
गोला लागे जिन घोडनके ❋ चारौ सुम्म गर्द ह्वइजायँ।
गोला लागे जिन क्षत्रिनके ❋ सो गिरि परैं धरनि भहराय
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ।
क्षत्रिन छोंडि दई तोपैं तब ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार॥
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ क्षत्रिन खैंचिलई तलवारि।
हल्ला ह्वइ गौ द्वउ लश्करमें ❋ खटखट चलन लगी तलवारि
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❋ हाथिन अडो दाँत से दाँत।
हौदाके सँग हौदा मिलगये ❋ औ असवारनते असवार॥
पैदल गिरिगये पैग पैगपर ❋ उनके दुदुइ पैग असवार।
हाथी गिरिगे बिसे बिसे पर ❋ छोटे पर्वतकी अनुहार॥
पहर एक भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार।
कटे भुसुंडा हैं हाथिनके ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार॥
कल्ला कटि गये हैं घोडन के ❋ अधाधुंध चली तलवारि।
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि॥
सदा तुरैया ना बन फूलै ❋ यारो सदा न सावन होय।
सदा न माता उरमें धारि है ❋ यारो जन्म न बारंबार॥
जैसे पात गिरैं तरुवरते ❋ गिरिकै बहुरि न लागै डार।
मानुष देही यह दुर्लभ है ❋ आवै समय न बारम्बार॥
पावँ पिछारू तुम धरियो ना ❋ रखियो धर्म कनौजी क्यार।
जीतिकै चलिहो जो गाँजर ते ❋ दूनी तलब दिहैं बढवाय॥
दै दै पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढाय।
झुके सिपाही ऊदनि वाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि॥

भगे सिपाही बिरिया वाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
गडबड परिगौ तब लश्करमें ❋ सब दल रेनबेन ह्वइजाय ॥
देखि हाल यह तब हरिसिंहने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय।
बोले हिरसिंह बघ ऊदनिते ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ॥
काल तुम्हारो नियरानो है ❋ सुनिल्यो दस्सराजके लाल।
इतनी सुनते बघ ऊदनिने ❋ अपनी छाती दई अडाय ॥
चोट आपनी हिरसिंह करिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ।
इतनी सुनते हरिसिंहने ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि ॥
चोट चलाई बघ ऊदनि पर ❋ ऊदनि दीन्हीं ढाल अडाय।
बचिगो बेटा दस्सराजको ❋ हिरसिंह लीन्हों गुर्ज उठाय
गुर्ज चलायो बघ ऊदनि पर ❋ ऊदनि लैगये चोट बचाय ।
कावा देके तब ऊदनिने ❋ रसबेंदुल को दियो बढाय ॥
तडपिकै पहुँचि गये मस्तकपर । औ हिरसिंहको लीन्हों बाँधि
यह गति देखी जब बिरसिंहने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय
इक ललकार दई आगे बाढि ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
खबरदार घोडापर रहियो ❋ तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
इतनी कहिकै गुर्ज उठायो ❋ सो ऊदनिपर दियो चलाय।
बायेंते घोडा दाहिने ह्वइगो ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा ह्वइकै बीरसिंहने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि।
करो जडाका जब ऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
तीनि शिरोही बिरसिंह मारी ❋ ऊदनि लीन्हीं चोट बचाय
टूटि शिरोही गइ बिरसिंहकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय
घोडा बेंदुलाको धरि दाबो ❋ गज मस्तकपर बाजी टाप ।
औझड मारी एक ढालकी ❋ सोने कलशा दिये गिराय॥
रस्सा काटि दिये हौदाके ❋ बिरसिंह गिरे धरनिपर आय।

बडिबडिकुश्तीबिरसिंहमारी ❋ जीते बडे बडे बलवान ॥
गजभरिछातीथी बिरसिंहकी ❋ देखत शूर ताहि भय खायँ।
देहीं बहुत गठी बिरसिंहकी ❋ दोनों नयनन बरें मसाल ॥
ताल ठोंकि बोला ऊदनिते ❋ कुश्ती लडौ हमारे साथ।
ऊदनि उतरे रसबेंदुलते ❋ औ समुहे पर पहुँचे जाय॥
झपटि उठायलियोऊदनिको ❋ औ बिरसिंह यहकहीसुनाय
कहँपर फेंकि देउँ तुमको मैं ❋ तब ऊदनिने दियो जबाब॥
फेंकि देउ जल्दी हमको तुम ❋ जहँपर मर्जी होय तुम्हारि।
यह सुनि बहुत दूरि फेंकनको ❋ बिरसिंह मनमें कियोबिचार
ऊदनि पेंच करो ऊपरते ❋ औ छातीपर भये सवार।
डंड बांधिलइतब बिरसिंहकी ❋ माल खजाना लियोलुटाय
किलाजीतिलियोबिरियागढको।जीतिकोडंका दियो बजाय।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ पट्टी धुरो दबायो जाय॥

अथ पट्टीके महाराजा सातनिकी लडाई।

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबली को नाम।
लिखौं लडाई अबसातनिकी ❋ होउ सहाय कृष्ण घनश्याम
राति बसेरा करि धूरेपर ❋ भोरहि उठे उदैसिंहराय।
कागद लैके कल्पी वालो ❋ अपनो कलमदान लैहाथ॥
पहिले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पीछेते लिखी जोहार।
लिखीहकीकातिफिरिऊदनिने ❋ सातनि मानो कहीहमारि ॥
पैसा तहसीलो गाँजरको ❋ नाहीं दीन्हीं एक छदाम।
बारह बरस क्यार पैसा है ❋ सो सब दाम देउ भरवाय॥
हमको भेजो राजा जैचँद ❋ लाखनि आये हमारे साथ।
नगर महोबेके रहवैया ❋ बघ ऊदनि है नाम हमार ॥
हिरसिंहबिरसिंहबिरियावाले ❋ तिनकी दंड लई बँधवाय।

बारह बरस क्यार पैसा था ❋ ठाढे दाम लियो भरवाय ॥
दाम चुकाय देउ तुमहूँ सब ❋ नाहीं कठिन करौ संग्राम।
जो नहिं इच्छा होय देनकी ❋ तो तुम निकसि होउ मैदान॥
ऐसी पाती लिखि ऊदनिने ❋ हरकाराको दई गहाय।
चलिभयोधावनतबलश्करते ❋ ओ पट्टीगढ पहुँचो जाय॥
जहाँ कचहरी थीसातनि की ❋ धावन उतरि परो अरगाय।
करी बन्दगी तहँ राजाको ❋ पाती गद्दी दई चलाय॥
खोलिकै पाती राजा बाँची ❋ मनमें गये सनाका खाय।
ऊँचे चढि देखो धूरे पर ❋ लश्कर डटा बनाफर क्यार॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय।
डंका बाजे हमरे दलमें ❋ सब दल साजि होय तैयार॥
बजो नगारा गढ पट्टीमें ❋ क्षत्रिन बाँधिलिये हथियार।
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगे को दईं बढवाय॥
तीनि लाख दलतुरते सजिगो ❋ लश्कर कूच दियो करवाय।
भूरा हाथी तब सजवायो ❋ सातनि राजा भये सवार॥
चारि घरी केरे अरसा में ❋ रण खेतन में पहुँचे आय।
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दई कराय॥
हाथी बढायो सातनि राजा ❋ आगे जाय दई ललकार।
कौन शूरमा चढि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देय जवाब॥
देखि फौज सातनिराजा की ❋ ऊदनि लश्कर लियो सजाय
घोडा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर फांदि भये असवार॥
आगे बढिक ऊदनि बोले ❋ औ सातनिको दियो जवाब।
हम चढि आये हैं कनउज ते ❋ जैचँद हमको दियो पठाय॥
देश हमारो नगर महोबा ❋ जहँ पर बसैं रजा परिमाल
छोटे भैया हम आल्हा के ❋ औ ऊदनि है नाम हमार॥
बावन गढ के राजा जीते ❋ जीते बडे बडे सरदार।

नाम हमारो जग जाहिर है । लाखनि राना साथ हमार
भलो आपनो जो तुम चाहौ पैसा जल्दी देउ चुकाय ।
बातन बातन बतबढ़ ह्वैइगो । औ बातनमें बाढी रारि ॥
हुक्म दे दियो तब सातनिने तोपन बत्ती देउ लगाय ।
झुके खलासी तब तोपन पर तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोना दलमें धुअँना रह्यो सरग मँडराय
अररर गोला छूटन लागे गोली मन्न मन्न मन्नायँ ॥
भाला बरछी छूटन लागे सरसर परी तीरकी मारु ।
पहर एक भरि गोला बरसो अंधाधुंध तोप की मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली होय गईं । ज्वानन हाथ धरे ना जायँ
तोपैं छोंडि दईं ज्वानननें लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
हाथी बढवायो सातनिने ❋ औ क्षत्रिन ते कही पुकारि
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❋ यारौ रखियो धर्म हमार ॥
निमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाडन में गयो समाय ।
आजु अखाडे में बरनी है ❋ सन्मुख लरौ शत्रुके साथ ॥
जान न पावैं कनउज वाले ❋ सबके मूँड लेउ कटवाय ।
झुके सिपाही तब पट्टी के ❋ रहि गयो पाँच पैग मैदान॥
झुरमुट होइगयो दोनोंदलको ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि।
खट खट तेगा बाजन लागो ❋ बोलै छपक छपक तलवारि
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायति क्यार
तेगा चटकैं बर्दवान के ❋ कटि२ गिरैं सुघरुआ ज्वान
चलै कटारी बूँदी वाली ❋ अब ना सूझै अपन बिरान।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
बडे लडैया गाँजर वाले ❋ जिनके मारु मारु रटलागि
हटो मूरचा बघ ऊदनिको ❋ ऊदनि घोडा दियो बढाय॥

खैंचि शिरोही लइ ऊदनि ने ❀ सो सातनि पर राखी जाय
ढाल अडाय दई सातनि ने ❀ तुरतै लीन्हीं चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो सातनि राजा ❀ बघ ऊदनि पर दियो चलाय।
लगो चपेटा रसबेंदुलके ❀ घोडा पाँच कदम हटिजाय
ऐंड लगाई रसबेंदुलके ❀ औ मस्तकपर बाजी टाप।
ढाल कि औझड ऊदनि मारी ❀ सोने कलशा दियो गिराय
गुर्ज उठायो तब सातनिने ❀ घोडा भगो उदयसिंह क्यार
हाथी पचशावद ठाढो थो ❀ ऊदनि तासु आड ह्वइजाय
बोले इंदल तब आल्हा ते ❀ दादा अब कछु करौ उपाय
अकिले सातनिकी धमकिनमें ❀ कोऊ कुँवर न आडे पाँव
डंड बाँधिलेउ तुम सातनि की ❀ अब ना राखौ देर लगाय
हाथी बढायो तब आल्हा ने ❀ औ सातनि ते कही सुनाय
करौ सामना अब हमरो तुम ❀ मनके मेटिलेउ अरमान।
इतनी सुनते सातनि राजा ❀ कर में लीन्हीं लाल कमान
केवर छोडि दियो आल्हापर ❀ आल्हा हाथी लियो हटाय।
आल्हा बचिगे तब हौदा में ❀ केवर निकरि गयो वा पार॥
साँग उठाई तब सातनि ने ❀ सो आल्हा पर धमकी जाय
हाथी हटिगयो तुनि आल्हाको ❀ नीचे साँग गिरी अरराय
दोनों चोटैं खाली परिगइँ ❀ सातनि हाथी दियो बढाय
हौदाके सँग हौदा मिलिगयो ❀ सातनि खैंचि लई तलवारि
चोट चलाई जब आल्हा पर ❀ आल्हा लीन्हीं चोट बचाय
बोले सातनि तब आल्हा ते ❀ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
धोखे रहियो ना माडौ के ❀ जहँलै लियो बाप को दाउँ।
जितने आये हौ महुबेते ❀ सबके शीश लिहौं कटवाय॥
बोले आल्हा तब सातनि तें ❀ राजा बोलो जीभ सम्हारि।

दाम लिये बिन हम ना जैहैं ❋ चाहौ प्राण रहैं की जायँ ॥
बिना दामके हम नौकर हैं ❋ तासों हम लौटनके नाहिं ।
इतनी कहिकै लै जँजीर तब ❋ औ हाथीको दई गहाय ॥
बांधि जँजीरन लेउ सातानिको ❋ यह हाथी ते कही सुनाय ।
साँकल फेरी तब हाथी ने ❋ तुरतै हौदा दियो गिराय ॥
गिरिगे सातनि जब धरती पर ❋ दुसरो घोडा लियो मँगाय
तापर चढिगे सातनि राजा ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि॥
जोगा भोगा के समुहे पर ❋ सातनि राजा कही सुनाय।
खबरदार रहियो घोडा पर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय॥
इतनी बात सुनी राजाकी ❋ जोगा खैंचिलई तलवारि ।
चोट चलाई जब सातनिपर ❋ सातनि दीन्हीं ढाल अड़ाय
खाली मूठि रही जोगाकी ❋ सातनि खैंचि लई तलवारि।
करो जडाका जब जोगापर ❋ जोगा भूमि गिरो मुरझाय ॥
यह गति देखी जब भोगाने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जडाका जब सातनिपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
तीनि शिरोही भोगा मारीं ❋ तुरतै टूटि गई तलवारि ।
खैंचि शिरोही सातनि मारी ❋ भोगा गिरो धरनि पर जाय॥
जोगा भोगा दोनों जूझे ❋ घायल भयो पपीहा ज्वाड ।
देखि हकीकति यह इन्दलने ❋ अपनो घोडा दियो बढाय॥
बढिकै सातनिको ललकारो ❋ ठाकुर खबरदार होइजाउ ।
ढालकि औझड इन्दल मारी ❋ सातनि राजै दियो गिराय॥
उतरिकै घोडाते इन्दलने ❋ सातनिराजा लियो बँधाय।
तुरतै भिजवायो लाखनिपै ❋ जीति को डंका दियो बजाय
लूटि कराई गढ पट्टीको ❋ पहरा अपनो दियो बिठाय।
जोगा भोगा नैनागढके ❋ साले जौन बनाफर क्यार॥

तिनकी यादि करतआल्हाके ❋ नैनन बहै नीर की धार ।
कूच कराय दियो पट्टी ते ❋ पहुँचे कामरूप में जाय ॥
डेरा डारि दिये धूरे पर ❋ मुर्चो बन्दी दई कराय ॥

कामरूपके राजा कमलापतिकी लडाई ।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय।
कहौं लडाई कमलापतिकी ❋ यारौ सुनियो कान लगाय॥
राति बसेरा करि धूरे पर ❋ भोरहिं उठे उदैसिंह राय ।
पाती लिखिकै बघ ऊदनिने ❋ हरकारा को दई गहाय ॥
पाती लैकै धावन चलिभयो ❋ पहुँचो कामरूप में जाय ॥
जहाँ कचेहरी कमलापतिकी ❋ धावन उतरि परो अरगाय ।
करी बन्दगी कमलापतिको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ।
पाती बाँची कमलापतिने ❋ मनमें गये बहुत घबराय ॥
ऊँचे चढि देखो कमलापति ❋ लश्कर डटा बनाफर क्यार।
तुरत नगरची को बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय॥
हुक्म दे दियो कमलापतिने ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ।
बजो नगारा कामरूप में ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंका में जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधिलिये हथियार।
तिसरे डंका के बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ।
बडि बडि तोपें अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढाय ॥
डेढ लाख दलतुरतैसजिगयो ❋ कट्टर फौज गँजरहन केरि ।
जबरजंग औ जबर्दस्तखाँ ❋ जे मरिबेको नाहिं डेरायँ ॥
सोऊ त्यार भये लश्कर सँग ❋ अपने घोडन भये सवार ।
करी तयारी कमलापति ने ❋ पहुँचे रंगमहल में जाय ॥

घट भरवायो गंगाजलको ❋ तासे तुरत कियो अस्नान
डारि आसनी रेशमवाली ❋ तापर बैठि गये अरगाय ॥
चन्दन रगरो मलयागिरिको ❋ सोने कटोरा धरो उतारि ।
करिकै पूजन श्रीगणपतिको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
दैकै चन्दन भुजदडनपर ❋ औ माथेमें लियो लगाय ।
लंग बाँधिकै रेशमवाली ❋ धोती पहिरि पोतिया कोरि ॥
पहिरि पैजामा मिसरूवालो ❋ जामा पहिरि दुदामी क्यार
ताके ऊपर बख्तर पहिरो ❋ जामें तेग नाहिं अनियाय
पाग बैंजनी शिरपर बाँधी ❋ शोभा कछू कही ना जाय।
बारह छुरियाँ कम्मर बाँधी ❋ राजा दुइ बाँधी तलवार ॥
अगल बगलपर दुइ पिस्तौलैं ❋ दहिने सिंहिनि मूठि कटार।
भाला लीन्हों नागदौनिको ❋ बायें भुजा गैंडकी ढाल ॥
कलँगी लागी मोतीचूरकी ❋ भाला चमकि २ रहिजाय।
सजिकै कमलापति ठाढे भै ❋ अपनो हाथी लियो मँगाय
गद्दा डारि दियो मखमलको ❋ रेशम रस्सा दियो कसाय ।
धरि अम्बारी सोने वाली ❋ चमकै कलश सुबरन क्यार
हौदा धरिदियो है चुम्बकको ❋ जामें सेल बिलौंचा खाय ।
रेशम रस्सा ते हाथी कसि ❋ चन्दन सिढिया दई लगाय
सिढियन २ चढि कमलापति ❋ हौदा बीच पहूँचे जाय ।
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ मारू डंका दो बजवाय ।
बजत नगारा दलमें आवै ❋ घुमरत आवैं लाल निशान
तीनि घरी केरे अरसामें ❋ रण खेतनमें पहुँचे आय ।
मुर्चा बन्दी तब करवाई ❋ पाई खबरि उदैसिंह राय ॥
डंका बजवायो ऊदनिने ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ।

हाथी बढायो कमलापतिने ❋ आगे जाय दई ललकार ॥
कौन शूरमा चढि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब ।
घोडा बढायो तब ऊदनिने ❋ कमलापतिको दियो जवाब
देश हमारो नगर महोबा ❋ जहँपर बसैं रजा परिमाल।
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
हमहिं पठायो है जैचँदने ❋ लाखनि आये हमरे साथ ।
बीरा चाबा हम गाँजरपर ❋ सिगरे दाम लिहैं भरवाय ॥
हिरसिंह बिरसिंह बिरियावाले ❋ तिनते दाम लिये भरवाय
सातनि राजा पट्टीवाले ❋ तिनहूँकी लइ कैद कराय ।
बारह बरस क्यार पैसा है ❋ सो तुम जल्दी देउ चुकाय॥
लाखनि रानी हैं हमरे सँग ❋ तिनकी नजरि गुजारो आय
गुस्सा ह्वइकै कमलापतिने ❋ बघ ऊदनिको दियो जवाब
गीदड मारे हो जंगलके ❋ बगुला मारे सागर ताल ॥
जादिन परिहै काम मर्दते ❋ मुँहका थूँक बन्द ह्वइजाय ।
धोखे रहियो ना काहूके ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय
ताते लौटिजाउ महुबेको ❋ नाहक देहौ प्राण गँवाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ कमलापतिको दियो जवाब
हाल तुम्हारो ना जाना है ❋ ताते बातैं करत बनाय ।
दतिया मारि उडैसा मारो ❋ बाजी सेतबन्दलौं टाप ॥
मोहरा मारो हम पिरथीको ❋ औ ब्रह्माको कियो बिवाह ।
बावन गढके राजा जीते ❋ जीते बडे बडे सरदार ॥
अपन दुसरिहा हम राखा ना ❋ जो समुहे ह्वइ देय जवाब ।
दाम चुकाय देउ जल्दी तुम ❋ तौ हम लौटि कनौजै जायँ
दाम लिये बिन हम जैहैं ना ❋ चाहै कोटिन करौ उपाय॥
नकि देहौ नीके लेहैं ❋ नाहीं कैद लिहैं करवाय ।

इतनी सुनतै कमलापतिने ❀ अपनो हुक्म दियो फर्माय।
बत्ती देदेउ मेरी तोपनमें ❀ इन पाजिनको देउँ उड़ाय॥
हल्ला ह्वैगो दोनों दलमें ❀ तोपन बत्ती दई लगाय।
अररर गोला छूटन लागे ❀ गोली मघाबूँद झारिलाय॥
भाला बरछी छूटन लागीं ❀ सरसर परी तीरकी मारु।
हाहाकारी बीतन लागी ❀ कह कह करैं अगिनियाँ बान
चारि घरी भरि गोला बरसो ❀ भारी भई तोपकी मारु।
तोपैं धैंधैं लाली होइ गईं ❀ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ॥
तोपैं छोडि दईं क्षत्रिनने ❀ लम्बे बन्द करैं हथियार।
दोनों फौजनके अन्तर में ❀ रहिगो पाँच पैग मैदान॥
बढे सिपाही दोनों दलके ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि
खटखट खटखट तेगा बाजे ❀ बोलै छपक छपक तलवारि
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायति क्या
तेगा चटकैं बर्दवानके ❀ कटि कटि गिरैं सुघरुआज्वान
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ जिनके मारु मारु रट लागि
भगे सिपाही कामरूपके ❀ अपने डारि डारि हथियार॥
तब कमलापति मनमें सोचे ❀ अपनी जादू लई उठाय।
जादू मारी तब लश्करपर ❀ जादू सबै झूँठि परि जाय॥
हाथी बढायो तब कमलापति ❀ औ ऊदनिपै पहुँचे जाय।
इक ललकार दई कमलापति ❀ अपनो भाला लियो उठाय
चोट चलाई तब ऊदनिपर ❀ ऊदनि लीन्हीं चोट बचाय।
गुर्ज उठायो फिर कमलापति ❀ औ ऊदनिपर दियो चलाय
बायेंते घोडा दहिने ह्वैगो ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय।
बोले कमलापति ऊदनिते ❀ अबहूँ लौटि जाउ महराज॥
चोट तीसरीमें बचिहो ना ❀ ताते लौटि जाउ महराज।

तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ राजा बोलो बचन सम्हारि
धर्म नहीं है यहु क्षत्रिनको ❋ जो हटि धरैं पिछारी पाँव ।
तिसरी उचौनी औरौ करिलेउ ❋ मनके मेटिलेउ अरमान ॥
इतनी सुनिकै कमलापतिने ❋ तुरतै खैंचि लई तलवारि ।
करो जडाका बघ ऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
ढाल फाटिगइ गैंडावाली ❋ चाँदी फूल गिरे झहनाय ।
बचिगो बेटा दस्सराजको ❋ दहिने भई शारदा माय ॥
घोडा उडायो तब ऊदानिने ❋ पहुँचे आसमान में जाय ।
जैसे बाज कुहीपर टूटै ❋ तैसे गिरे उदैसिंह राय ॥
हौदा घेरो कमलापतिको ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जडाका जब हौदापर ❋ हौदा टूकटूक ह्वैजाय ॥
करिकै दुचित्तो कमलापतिको ❋ तुरतै डंड लई बँधवाय ।
हुक्म कराय दियो लश्करमें ❋ माल खजाना लेउ लुटाय ॥
जीति कामरू कामक्षाको ❋ आगे बढे उदैसिंह राय ॥

बंगालेके राजा गोरखाकी लडाई ।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
लिखौं लडाई बंगालेकी ❋ यारौ सुनियो कान लगाय ॥
फौज पहूँची बंगाले में ❋ धूरे डेरा दिये डराय ।
लिखिकै पाती बघ ऊदनिने ❋ हरकारा को दई गहाय ॥
धावन चलिभौ तब धूरेते ❋ औ गढ माहिं पहूँचो जाय।
जहाँ कचेहरी थी राजाकी ❋ धावन उतारि परो तहँ जाय
करी बन्दगी तब राजाको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ।
पाती बाँची जब राजाने ❋ मनमें गये सनाका खाय ॥
ऊँचे चढि देखो धूरेपर ❋ झंडन रही लालरी छाय ।

तुरत नगरचीको बुलवायो ❀ सोने कड़ा दियो डरवाय॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्रिन बांधिलिये हथियार
मारू डंकाके बाजत खन ❀ लश्कर सजिकै भयो तयार
करी तयारी राजा गोरखा ❀ अपनो हाथी लियो मँगाय
सो सजवाय लियो जल्दीते ❀ तापर तुरतै भयो सवार॥
कूच कराय दियो लश्करको ❀ अपनो डंका दियो बजाय
लश्कर पहुँचो जब धूरेपर ❀ मुर्चा बन्दी दई कराय॥
देखि फौज राजा गोरखकी ❀ ऊदनि लश्कर लियो सजाय
हाथी बढाय दियो राजाने ❀ औ इक जाय दई ललकार
कौनसो क्षत्री चाढि आयो है ❀ सो समुहे ह्वै देइ जवाब।
घोडा बढायो तब ऊदानिने ❀ औ राजाको दियो जवाब
हम हैं क्षत्री महुबेवाले ❀ हमरो उदयसिंह है नाम।
हम चाढि आये हैं कनउजते ❀ लाखनि राना साथ हमार
बारह बरस क्यार पैसा औ ❀ तुम ना दीन्हीं एक छदाम
जितना पैसा तुम पर चहिये ❀ सो सब दाम देउ भरवाय॥
नीके देहो नीके लेहैं ❀ नाहीं कैद लिहैं करवाय।
इतनी सुनते गुस्सा ह्वइकै ❀ राजा हुक्म दियो करवाय
मारि भगावो इन पाजिनको ❀ सबकी कटा देउ करवाय।
झुके सिपाही तब राजाके ❀ खट खट चलन लगी तलवारि
चलै जुनब्बी औ अद्दिगर्बी ❀ ऊना चलै बिलायति क्यार
तेगा चटकैं बर्दवानके ❀ कटि कटि गिरनलगे बहु ज्वान
बोले ऊदनि सब क्षत्रिनते ❀ यारो राखियो धर्म हमार।
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि
जीतिकै चलिहौ जो कनउजको ❀ दूनी तलब दिहैं बढवाय।
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि॥

भगे सिपाही बंगालेके ❋ अपने डारि डारि हथियार॥
हाथी बढ़ायो तब गोरखने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय।
खबरदार रहियो घोडापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय
यह कहि गुर्ज लियो राजाने ❋ सो ऊदनिपर दियो चलाय
घोडा बेंदुला ऊपर उडिगो ❋ नीचे गिरो गुर्ज अरराय।
ऐंड लगाई तब घोडाके ❋ औ मस्तकपर बाजी टाप॥
ढालकि ओझड ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय
करिकै मुर्छित तब राजाको ❋ ऊदनि लियो जँजीरन बाँधि
धावा करि दियो गढ भीतरको ❋ माल खजाना लियो लुटाय
जीतिको डंका तब बजवायो ❋ लश्कर आगे दियो बढाय

कटक, जिन्सी, गोरखपुर, पटना आदिके राजाओंकी लडाई।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
लिखौं लडाई अब आगेकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय
लश्कर चलिकै बंगालेते ❋ पहुँचो कटक धुरेपर जाय।
हुक्म देदियो तब ऊदनिने ❋ तुरतै कटक लियो घिरवाय
फाटक बन्दी तब करवाई ❋ अपने पहरा दिये बिठाय।
मुरली मनोहर दोनों भैया ❋ तिनकी कैद लई करवाय॥
माल खजाना सब लै लीन्हों ❋ सो छकरनमें लियो लदाय
कूच करायो कटक शहरते ❋ जगमनि राजा लिये घिराय
खबरि कराय दई जिन्सीमें ❋ जगमानि गये सनाका खाय
हुक्म दे दियो तब लश्करमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार॥
बजो नगारा तब जिन्सीमें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार
हाथी सजवायो जगमानिने ❋ तुरतै तापर भये सवार॥

कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ धूरेपर पहुँचो जाय ।
आगे बढिकै जगमानि बोले ❋ काहे धुरो दबायो आय ॥
कौनसो क्षत्री चढि आयो है ❋ सो समुहे ह्वै देय जवाब ।
ऊदनि बढिकै बोलन लागे ❋ हमको जैचँद दियो पठाय
छोटे भैया हम आल्हा के ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ।
लाखनि राना साथ हमारे ❋ तुम से दाम लिहैं भरवाय
बारह बर्ष को पैसा मागो ❋ तुम ना दीन्हीं एक छदाम ।
इतनी सुनतै जगमनि राजा ❋ अपना हुकम दियो फरमाय
जाय न पावें कोउ कनउजको ❋ सबकी कटा देउ करवाय ।
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ खटखटचलनलगीतलवारि
तीनि घरी भरि चली सिरोही ❋ मुर्चा हटो गँजरहन क्यार
ऐंड लगाई रस बेंदुलके ❋ ऊदनि घोडा दियो बढाय
ढालकि ओंझड ऊदनि मारी ❋ औ जगमनिकोदियोगिराय
बांधि जँजीरन लौं जगमनिको ❋ माल खजाना लियोलुटाय
आगे बढिगे रूसनी गढमें ❋ चिन्ता ठाकुर लियो बँधाय
लूटि करि लई गढ रुसनीकी ❋ आगे लश्कर दियो बढाय।
गोरखपुर में सूरज राजे ❋ ऊदनि तुरतै लियो बँधाय।
माल खजाना लै आगे बढि ❋ पटना सहर लियो घिरवाय
पूरन राजाको तहँ बाँधो ❋ औ काशी में पहुँचे जाय ।
हंसामनि राजाको बाँधो ❋ माल खजाना लिये लदाय
गाँजर वाले बारह राजा ❋ जीतो तिनहिं उदैसिंह राय।
कैदी करिकै सब राजनको ❋ जीतिकोडंकादियोबजाय ॥
तीनि महीना औ तेरह दिन ❋ गाँजर कठिन चली तलवारि।
कूच करायो सब लश्करको ❋ औ कनउजकी पकरी राह॥
पगिया बदली लाखनि राना ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।

जा दिन जैहो तुम महुबेको ❋ हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार । ॥
लश्कर पहुँचो गढ कनउजमें ❋ सबने छोरि धरे हथियार ॥
आल्हा ऊदनि लाखनि राना ❋ पहुँचे बीच कचहरी जाय।
बारह राजा जो कैदी थे ❋ सो जैचँदको दये सौंपाय।
माल खजाना जो लाये थे ❋ सो जैचँदको दियो बताय
सब सौंपाय दियो राजाको ❋ बहुतै खुशी भये महराज।
बोले जैचँद तब ऊदनिते ❋ धनि धनि दस्सराजके लाल
तुम सब लायक हौ महुबेके ❋ रानी देवकुँवरिके लाल ।
कठिन काम हमरो तुम कीन्हों ❋ अब तुम जाय करौ बिश्राम
करि अधीनं अपने जैचँदने ❋ सब राजन को दियो छुटाय
इतनी लडाई भइ गाँजर में ❋ सिरसा समर सुनौमनलाय
समय समयपर आल्हा गावो ❋ नितउठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीता राम क्यार धरिध्यान

इति गाँजरकी लडाई (ऊदनि विजय) समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

अथ सिरसागढकी २ लडाई।

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सवैया।

लाज गई बछराजके साथ, तल्वारिगई मलिखान अकेले।
काढि कै तेग फिरो दलमें, पृथीराजकी फौजन मारिकै ठेले
लोहूके नारे पनारे चलैं, मानौं रँगरेज कुसुम्भ सनेले।
ठाढी कहै मलिखान की नारि ❀ सो आवत कंत बसंतसों खेले
सुमिरन कीजे श्रीगणपति को ❀ है जो ऋद्धि सिद्धि दातार
बहुरि मनैये जगदम्बेको ❀ भूले अक्षर लेहिं सँभारि ॥
सदा सुमिरिये शिवशंकरको ❀ जो दीनन पर सदा दयाल
जो कोउ भक्ति करै शंकरकी ❀ ताको तुरतै करैं निहाल ॥
फूलमती देवीको सुमिरौं ❀ सुमिरौं बहुरि संकटा माय।
बहुरि सरस्वतिको सुमिरौंमैं ❀ माता कंठ बिराजो आय ॥
समर लिखौं मैं गढ सिरसाको ❀ होउ सहाय शारदा माय
तुम्हरे अखाडेमें गावत हौं ❀ बेडा पार करौ मन लाय
कमल न प्रगटैं कहु पर्वतपे ❀ मोती लगत न देखे डार।
गई जवानी फिरि बहुरै ना ❀ माँगे रूप न मिलै उधार ॥
माहिल राजा उरई वाले ❀ हैं, जो चुगुलनमें सरदार।
इक दिन सोंचे अपने मनमें ❀ खाली भूमि महोबे क्यार ॥
देउँ बढावा अब पिरथीको ❀ महुबो नगर लेयँ लुटवाय
सोचि समझिकै तब माहिलने ❀ लिल्ली घोडी लई मँगाय

कूदि बछेरी पर चढि बैठे ❋ औ दिल्ली की पकरी राह ।
पाँच दिनाकी मंजिल करिकै ❋ पहुँचे गढ दिल्ली में जाय ॥
जहाँ कचहरी पृथीराजकी ❋ माहिल तहाँ पहूँचे जाय ।
उतारि बछेरी ते भुइँ आये ❋ घोडी थामि लई थनवार ॥
लगी कचहरी पृथीराजकी ❋ बैठ बडे बडे सरदार ।
सोने सिंहासन राजा बैठे ❋ ऊपर चौंर ढुरै गजगाह ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ माहिल रहिगे माथ नवाय
नजरि बदलि गइ पृथीराजकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवो आवो उरई वाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय
हाल सुनावो तुम महुबेको ❋ कैसे बसैं रजा परिमाल ॥
बोले माहिल तब राजाते ❋ तुम सुनिलेउ वीर चौहान
सबै कुशल है मेरि उरईमें ❋ बैठे राज करौं महराज ॥
एक अँदेशा है हमरे जिय ❋ खटकत राति दिना महराज
किला बनाय लियो धूरपर ❋ सबके धूरे लियो दबाय ॥
एक बात हम तुमहिं बतावैं ❋ सो तुम मानो बचन हमार
आल्हा ऊदनि कनउज छाये ❋ सूनो परो महोवा गाँव ॥
लश्कर सजवावो जल्दीते ❋ ऐसो समय न बारम्बार ।
अकिले मलिखे हैं सिरसामें ❋ तुमते लडे न पैहैं पार ॥
पहिले लूटि लेउ सिरसाको ❋ फिरि महुबेको लेउ लुटाय
इतनी सुनते पृथी राजने ❋ अपनो हुकम दियो करवाय
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर सजिकै होय तयार
बजो नगारा तब लश्कर में ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ।

कोउ नालकिन कोउ पालकिन * कोऊ गज रथ भये सवार
लश्कर सजिगौ दिल्लीवालो * डंका हान गोलमें लाग।
आदि भयकर जो हाथी थो * सो सजवायो बीर चौहान॥
अपनो साज करो दिल्लीपति * शोभा एक न बरनी जाय।
पहिरि पैजामा मिसरूवाला * जामा पहिरि दुदामी क्यार
दुइ पिस्तौलें अगल बगल पर * बायें सिहिानि मूठि कटार।
बारह छुरियाँ कम्मर बाँधी * लीन्हें हाथ ढाल तलवारि॥
पाग सेंदुरी शिरपर सोहै * कलँगी मोतिचूर के लागि।
गजभरि छाती पृथीराजकी * मानों नैनन बरै मसाल॥
साजिकै पृथीराज ठाढ मे * मानों इन्द्र अखाडे जायँ।
सिढियन २ पिरथी चढिगे * धरि धरि कुम्भकारिन पर पाँव
सजी सवारी पृथीराजकी * शोभा कछु कही ना जाय।
हाथी इकदंता सजवायो * तापर चढो चौंडिया राय॥
ताहर बेटा पिरथीवाला * भा दलगंजन पर असवार।
भौरानँद हाथी सजवायो * तापर धाँधू भयो सवार॥
पारथ बेटा पृथीराजको * अपने घोडा भयो सवार।
चन्दन बेटा जो पिरथीको * सो घोडापर भयो सवार॥
हाथी सजवायो जल्दीते * तापर धीरसिंह असवार।
दुइसै हाथी खूनी साजे * दुइसै मुडिया लिये सजाय॥
इकसौ हाथी मस्ता साजिगे * दुइसै भूरा लिये सजाय।
कट्टर हाथी दुइसै कहिये * सो सजवायो पिथौरा राय
नौसै हाथीके हलकामें * झूमै आदिभयंकर ठाढ।
तीनि लाख पैदल सजवाये * साजे चारि लाख असवार॥
सात लाखत पिरथी चालिमै * लश्कर कूच दियो करवाय
सात दिनाकी मैजलि करिकै * पहुँचे गढ सिरसा में जाय

चारिकोसजबसिरसारहिगयो ❋ अपने डेरा दिये डराय ।
चौंडा ब्राह्मण को बुलवायो ❋ औ यह कही पिथौरा राय
किला गिराय देउ सिरसाको ❋ जल्दी कूच जाउ करवाय ।
हाथी इकदन्ता सजवायो ❋ तापर चौंडा भयो सवार ॥
कूच कराय दियो जल्दीते ❋ सिरसा गढको घेरो जाय ।
इक हरकारा बदलत आयो ❋ औ मलिखेपै पहुँचो आय॥
कारि सलाम बोला मलिखेते ❋ तुमपर चढे बीर चौहान ।
सिरसा घेरि लियो चौंडाने ❋ सो तुम खबरदार ह्वइ जाउ
यह सुनिबुलवायोसुलिखेको ❋ औ यह कही बीर मलिखान
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❋ अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनतै सुलिखे चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय।
हुक्म फेरि दियो सब लश्करमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार॥
बजो नगारा तब सिरसामें ❋ क्षत्री सजे बांधि हथियार
सजिगे क्षत्री सिरसा वाले ❋ जिनको सजत न लागीबार
घोडीहिरौंजिनिको सजवायो ❋ सुलिखे फाँदि भये असवार
घोडी कबुतरी त्यार कराइ ❋ तापर चढे बीर मलिखान॥
जबहीं चढन लगे घोडीपर ❋ सन्मुख छींक भई ठहनाय
ब्रह्मा माता बोलन लागी ❋ बेटा मेरे लडैते लाल ॥
अशकुन ह्वइ गयो है घरहीते ❋ तुम ना जाउ युद्ध मैदान ।
बोले मलिखे तब माताते ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
सगुन मनावत बनियाँ बाढ़ू ❋ जो धारि मौर बियाहनजात
शगुन मनावैं क्या क्षत्री ह्वै ❋ जो रण चढिकै लोह चबात
हम ना जावैं जो दंगलमें ❋ लूटै शहर पिथौरा राय ।
आशीर्बाद देउ माता तुम ❋ अपनो हुक्म देउ फरमाय
हुक्म देदियो तब माताने ❋ जुग जुग जिऔ लडैतेलाल

चरण लागिकै तब माताके ❋ तुरतै चले बीर मलिखान ॥
पहुँचे जाय तुरत धूरेपर ❋ लश्कर साथ बीर मुलिखान
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
लिखौं लडाई अब चौंडाकी ❋ जीते जंग बीर मलिखान ।
समुहे देखो जब मलिखेको ❋ तब चौंडाने कही सुनाय ॥
हुक्म दियो है पृथीराजने ❋ सिरसा किला देउ गिरवाय।
यह सुनि मलिखे बोलनलागे ❋ ब्राह्मण सुनौ हमारी बात ॥
अपने बल हम किला बनायो ❋ सो कैसे अब देयँ गिराय ।
होय पराक्रम पृथीराजमें ❋ हमरो किला देयँ गिरवाय ॥
मारौं खेदि खेदि दिल्लीलौं ❋ टटुआ टायर लेउँ छिनाय ।
गुस्सा ह्वैकै तब चौंडाने ❋ अपनो हुक्म दियो करवाय॥
बत्ती देदेउ सब तोपनमें ❋ औ सिरसाको देउ उडाय ।
इतनी सुनते झुके खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुअना रह्यो सरगमें छाय ।
तोपैं छुटन लगीं तुरतै तब ❋ गोला होय दनाक दनाक ॥
बाण अगिनियाँ छूटन लागे ❋ सरसर परी तीरकी मारु ।
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वैजायँ ॥
तोपैं छोडीं तब ज्वाननने ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ।
दोनों फौजैं इकमिल ह्वैगईं ❋ क्षत्रिन खैंचि लईं तलवारि ॥
खटखट तेगा बाजन लागो ❋ बोलै छपक छपक तलवारि
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलाइति क्यार॥
बाजैं तेगा बर्दवानके ❋ कटिकटिगिरैंकेसरिहाज्वान।
मुर्चन मुर्चन नचै कबुतरी ❋ मलिखे कहैं पुकारि पुकारि
भागि न जैयो कउ मोहराते ❋ यारो धर्म तुम्हारे हाथ ।
मारेजैहौ जो खेतन में ❋ ह्वैहै जुगन जुगनलौं नाम ॥

खटिया परिके जो मरिजे हौ ❋ कलिमें कोउ न लैहै नाम ।
दै दै पानी रजपूतनको ❋ मलिखे आगे दियो बढाय ॥
घोडी कबुतरी दाबे आवै ❋ करमें नग्न लियो तलवारि
जैसे भेडिन भेडहा पैठे ❋ ज्यों गोवनमें छूटै बाघ ॥
जैसे सुआ सुपारी कतरै ❋ जैसे खेती लुनै किसान ।
तैसे रणमें मलिखे पैठे ❋ क्षत्रिन काटि करै खारेहान॥
अकिलेमलिखेकीधमकिनमें ❋ सब दल रेन बेन ह्वइ जाय ।
भगे सिपाही चौंडावाले ❋ अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब चौंडाने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ।
यक ललकार दई मलिखेको ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ॥
यहसुनिमलिखे बोलन लागे ❋ पहले चोट करो तुम आय ।
साँग उठाई तब चौंडाने ❋ सो मलिखेपै दई चलाय ॥
घोडी कबुतरी दहिने ह्वइगइ ❋ नीचे साँग गिरी अरराय ।
खैंचि शिरोही लइ मलिखेने ❋ औ चौंडापर पहुँचे जाय ॥
चोट चलाई तब हौदापर ❋ हौदा टूक टूक होइ जाय ।
मलिखे मनमें सोचन लागे ❋ हम ना करैं विप्रको घात ॥
बाँधि जँजीरनसो चौंडाको ❋ अपने दलमें राखो जाय ।
चुरियाँबिछियात्यहिपहिराई ❋ औ करि दियो जनानो भेष
माथे बेंदी दइ चौंडाके ❋ नाक नथुनियाँ दइ पहिराय
डंड बाँधिके उन चौंडाकी ❋ सेंदुर माँग दियो भरवाय ॥
एक पालकी तुरत मँगाई ❋ तामें ताहि दियो बैठाय ।
परदा डारि दियो पलकी पर ❋ दुइ हरकारा लिये बुलाय ॥
बहु समुझाय दियो मलिखेने ❋ पृथीराजते कहियो जाय ।
चौंडा जीति गयो सिरसामें ❋ सिरसा किला दियो गिरवाय
डोला खँदायो चन्द्रावलिको ❋ तुम्हरे पास दियो भिजवाय ।

इतनी सुनतै चलो सांडिया ❋ पलकी उठी चौंडिया क्यार ॥
पलकी आई पृथीराजपै ❋ मनमें बहुत खुशी चौहान ।
जो जो बात कही मलिखेने ❋ सो हरकारा कही सुनाय ॥
खोलिकै पलकी राजा देखी ❋ तामें चौंडा परो दिखाय ।
मन खिसियाने पृथीराज तब दाँतन अँगुरी रहे दबाय ॥
बडो बीर है सिरसावाला [illegible] गहै तलवारि ।
डंड खोलिकै तब चौंडाकी ❋ मनमें सोचि रहे चौहान ॥
बोलो पारथ तब पिरथीते ❋ दादा धीर धरौ मनमाहिं ।
मारि गिरैहौं मैं मलिखेको ❋ नाहक सोच करत हौ आज ॥
सुमिरण करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ।
लिखौं लडाई अब पारथकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
सूरज उदै भये पूरबमें ❋ किरणनकीनजगतउजियार ।
पारथ बीर उठा पलकाते ❋ लश्कर हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाधिलिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ।
पैदल सजिगे सब लश्करके ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
सुनीखबरि जब नर मलिखेने ❋ अपनो लश्कर लियोसजाय ।
घोडी कबुतरीको सजवायो ❋ तापर चढे बीर मलिखान ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ धूरेपर पहुँचे जाय ।
बोले पारथ नर मलिखेते ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ ॥
सम्हरिकै बैठो तुम घोडीपर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ।
यह सुनि मलिखेबोलन लागे ❋ सम्मुहे लडौ आय मैदान ॥

होय पराक्रम जो देहीमें । सो तुम हमें देउ दिखलाय।
इतनी सुनतै पारथ ठाकुर । तुरतै हल्ला दियो कराय ॥
खट खट तेगा बाजन लागो । क्षत्रिन मारु मारु रट लागि।
मलिखेपारथदोनों भिडिगये । अपनी अपनीचोट चलाय॥
कबहुँक तेगा पारथ मारैं । कबहुँक हनैं बीर मलिखान।
बज्र समान देह दोनोंकी । तामें तेग नाहिं अनियाय ॥
दिनभर बीतै लडतलडत तहँ । संध्याकाल बन्द ह्वैजाय ।
भोर होत खन दोनों अभिरे । यहिविधि बीतिगयेदिनसात
इक दिन मलिखे सोचनलागे । औ रानी पै पहुँचे आय ।
बोली रानी तब मलिखेते । काहे बदन गये कुम्हिलाय॥
कौन बातको तुम सोचत हौ । सो तुम हमें देउ बतलाय ।
बोले मलिखे तब रानीते । हमते कछू कही ना जाय ॥
पत्थर देही है पारथकी । जामें तेग नाहिं अनियाय ।
सात दिना बीते दंगलमें । मारे न मरे पिथौरा लाल ॥
बोली गजमोतिनि मलिखेते । हम इक जतन देयँ बतलाय ।
दिनभर देही पाथर कहिये । सन्ध्या समय मोम ह्वैजाय
काल्हि लडाई करौ रातमें । तुम्हरो काम सिद्धि ह्वैजाय
हाल जानयहनर मलिखे तब ❀ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय ।
भोर होतखन धावा करिदो ❀ दोनों लडन लगे मैदान ॥
चारि पहर बीते दंगलमें ❀ सन्ध्याकाल रह्यो नियराय।
मुर्चा फेरि दियो पारथने ❀ तब हँसि कही बीर मलिखान
भारी जोधा हौ पारथ तुम ❀ क्यों समुहेते चले बराय ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिनके ❀ जो हटि धरैं पिछारू पाँव ।
जूझ अघाय करौ हमरे सँग ❀ हौ तुम बीर पिथौरा लाल ॥
तेहा आय गयो पारथको ❀ समुहे लडन लाग तत्काल।

करी चोट जबहीं मलिखे पर ❋ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय
सेल उठाई तब मलिखेने ❋ सो पारथपर दई चलाय।
तुरतै गिरगे पारथ ठाकुर ❋ मलिखे खैंचि लई तलवारि॥
मूंड काटिलियो तब पारथको ❋ औ लश्करको दियो भगाय
सुनी खबरि जब पृथीराजने ❋ पारथ जूझि गयो मैदान॥
बहुत सोच कीन्हों पिरथी तब ❋ भारी शूर बीर मलिखान।

अथ धीरसिंह व मलिखानकी लड़ाई।

सदा भवानी दाहिनि कहिये ❋ औ सन्मुख पर रहैं गणेश।
रक्षा करैं पाँच देउता मिलि ❋ नितप्रति ब्रह्मा विष्णु महेश
जूझे पारथ जब खेतनमें ❋ पाई खबरि पिथौरा राय।
तुरते बुलवायो धाँधूको ❋ साउँत शूर लिये बुलवाय॥
करी सलाहैं महाराजने ❋ बीरा तुरतै दियो धराय।
कौनसो क्षत्री है हमरे दल ❋ लावै बाँधि बीर मलिखान॥
मुश्क बांधिकै नर मलिखेकी ❋ हमरी नजरि गुजारै आय।
पहर एक बीराको ह्वैगौ ❋ सबके भूलि गये औसान॥
कोउ न देखै वा बीरातन ❋ तब पिरथी मन सोचन लाग
धीरसिंहको तुरत बुलायो ❋ औ यह कही बीर चौहान
बांधि लै आवो तुम मलिखेको ❋ यह तुम मानौ कही हमारि
बात मानिकै धीरसिंहने ❋ तुरतै बीरा लियो चबाय॥
चढे धीरसिंह तब हाथीपर ❋ चौबिस लीन्हें साथ सवार।
तीनि घरी मारगमें बीते ❋ औ फाटकपर पहुँचे जाय॥
कही धीरसिंह दरवानीते ❋ फाटक तुरत देउ खुलवाय।
बोले दरवानी धीरजते ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात॥
हाथी चढिकै जान न देहौं ❋ नाहीं हुक्म बीर मलिखान।
उतरे धीरसिंह हाथीते ❋ औ घोडापर भये सवार॥

दुसरे फाटक पर पहुँचे जब ❀ तब दरवानी कही सुनाय।
कोउ न जावे घोडा चढिकै ❀ है यह हुक्म बनाफर क्यार॥
यह सुनि धीरसिंह सोचे मन ❀ कीन्होंयहप्रबन्ध मलिखान
बाँधो घोडा तब फाटक पर ❀ पैदल चला धीर सरदार॥
भीतर बँगलामें पहुँचे जब ❀ चौबिस लिये संग सरदार।
देखी शोभा जब बँगलाकी ❀ बहुतै खुशी भया सरदार॥
खंभ अठासीको बँगला है ❀ जहँपर बना जडाऊ काम।
बिछे गलीचा हैं मखमलके ❀ बैठे बडे बडे सरदार॥
सिंहासन सोहै सोनेको ❀ बीचमें बैठ बीर मलिखान।
हीरा दमकै है माथेपर ❀ ऊपर चौंर ढुरै गजगाह॥
नचैं कंचनी वा बँगलामें ❀ शोभा कछू कही ना जाय।
मचियाके सँग मचिया रगडै ❀ मोढा रगडि रगडि रहिजाय
एक हजार ज्वान पंजाबी ❀ काबुलके हजार सरदार।
सिंहकि बैठक क्षत्री बैठे ❀ सबके बीच बीर मलिखान॥
संगके क्षत्री बारह छोडे ❀ अकिला गया धीर सरदार।
पाँच कदम जब मलिखेरहिगो ❀ धीरसिंहने करी जोहार॥
नजरि बदलिगइ नर मलिखेकी ❀ ऊँची चौकी दई डराय।
बैठे धीरसिंह चौकीपर ❀ औ मलिखेते लगे बतान।
हमको भेजा है पिरथीने ❀ की मलिखेको लावो साथ।
संग हमारे जो चलिहौ तुम ❀ ह्वइ है खुशी बीर चौहान॥
राज करो बैठे सिरसामें ❀ चलिकै मिलौ पिथौरा साथ।
बीरा चाबो हम लावनको ❀ सो तुम राखौ लाज हमारि॥
संग न चलिहौ जो हमरे तुम ❀ तौ जग ह्वइहै हँसी हमारि।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ सुनिये धीरसिंह महराज॥
शीश झुकै हौ परमेश्वरको ❀ जाने जन्म दियो संसार॥

करे अधीनी जो क्षत्री ह्वै ❀ ताकी माताको धिरकार ॥
हम तौ मिलि हैं तेगधारते ❀ सो तुम बचन करौ परमान।
बोले धीरज फिरि मलिखेते ❀ मलिखे मानौ बात हमारि॥
चलिकै मिलिहौ पृथीराजते ❀ तुम्हरे देहैं प्राण बचाय।
जो कछु होवे तुम्हरे जियको ❀ हमरे जीवन को धिरकार॥
फिरिकै ज्वाब दियो मलिखेने ❀ हठ ना करौ हमारे साथ।
सात लाखते पिरथी आये ❀ चाहौ चढ़ैं पचासी लाख॥
करैं अधीनी ना पिरथीकी ❀ हमको कौन परी परवाहि।
तुम तो मित्र लगत आल्हाके ❀ आल्हा भैया लगत हमार॥
ताते तुमको समुझावत हौं ❀ करिहौं नाहिं अधीनी जाय
काल बिराजत है सबके शिर ❀ कोऊ आजु मरै कोउ काल्हि
करैं खुशामद जो काहूकी ❀ हमरो क्षत्रीधर्म नशाय।
हमहिं भरोसा है अपने बल ❀ जबतक हाथ रहै तलवारि॥
हम नहिं जैहैं पृथीराजपै ❀ चाहै कोटिन करौ उपाय।
यह कहि दीजो पृथीराजते ❀ मनके मेटिलेइ अरमान॥
सुनी बात जब यह मलिखेकी ❀ गुस्सा भया धीर सरदार।
तुरते उठिकै साँग उठाई ❀ औ बँगलामें धमकी जाय॥
सात तवा सोनेके काहिये ❀ तिनके वारपार ह्वैजाय।
बोले धीरसिंह गुस्सा ह्वै ❀ मलिखे सुनौ हमारी बात॥
साँग उखारौ या हमरी तुम ❀ या तुम चलौ हमारे साथ।
मलिखे सोचै अपने मन मैं ❀ है, यह धीर बीर सरदार॥
है बरदानी यहु देवी को ❀ याको जानत सकल जहान
बोले मलिखे तब धीरज ते ❀ धीरज धरौ धीर सरदार॥
करिकै सुमिरन जगदम्बे को ❀ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार
मारी ठोकर नर मलिखे ने ❀ लैकै साँग दई पकराय॥

देखि हाल यह नर मलिखेको ❋ धीरज गये सनाका खाय।
चलिभे धीरज तब सिरसाते ❋ औ लश्कर में पहुँचे जाय॥
आवत देखो धीरसिंह को ❋ पृथीराज ने कही सुनाय।
हाल बताय देउ धीरज तुम ❋ यह सुनि धीर बतावन लाग
बडा बहादुर सिरसा वाला ❋ जाकी जग जाहिर तलवारि
बहुतक हमने तहँ समुझायो ❋ मलिखे एक न मानी बात॥
साँग गाडि दइ हम बँगलामें ❋ सो मलिखे ने दई उखारि।
जीति न पैहौ तुम मलिखे को ❋ हैं तरवारि धनी मलिखान
सुनौ हाल जब यह पिरथी ने ❋ मनमें गये सनाका खाय।
हारि मानि गये मन अपने में ❋ है बड बीर धीर मलिखान

अथ मलिखान विजय और सुलिखानका स्वर्गवास

दोहा-सिरसा में बहु युद्ध करि, लडे बीर सुलिखान।
त्यागि प्राण रणखेत महँ, पायो पद निर्बान॥

सुमिरन करिकै नारायण को ❋ लैकै रामचन्द्र को नाम।
बिजय सुनाऊं अब मलिखेकी ❋ वर्णन करौं मरण सुलिखान
हुक्म दै दियो पृथ्वीराज ने ❋ लश्कर साजिकै होय तयार।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्रिन बांधि लिये हथियार
आदि भयंकर हाथी साजो ❋ तापर चढे बीर चौहान।
ताहर चढिकै दलगंजन पर ❋ सब दल साजि भयो तैयार॥
चन्दन बेटा पृथ्वीराजको ❋ सोऊ साथ भयो तैयार।
धाँधू त्यार भये लारिबेको ❋ भौरानँद पर भये सवार॥
हाथी इकदन्ता सजवायो ❋ तापर चढा चौंडिया राय।
कूच कराय दियो लश्कर को ❋ मारू डंका दियो बजाय॥
चार चौसँधे के धूरेपर ❋ पहुँची फौज पिथौरा केरि।
सुनी खबरि जब नर मलिखेने ❋ घोडी कबुतरी लई सजाय

फांदि बछेरी पर चढि बैठे ❋ औ लश्करको लियो सजाय
घोडी हिरौंजिनि त्यार कराई ❋ तापर चढे बीर मुलिखान॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ धूरे पर पहुँचे जाय ।
समुहे देखो नर मलिखे को ❋ पिरथी हाथी दियो बढाय
बोले पृथीराज मलिखे ते ❋ क्यों यह किला लियो बनवाय
किला गिराय देउ अबहीं तुम ❋ इतनी मानौ कही हमारि॥
इतनी सुनतै नर मलिखे ने ❋ पृथीराज को करी सलाम ।
बोले मलिखे पृथीराज ते ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान
किला बनाया हम अपने बल ❋ सो हम कैसे देयँ गिराय ।
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ ताते कहौं समुझिकै बात ॥
धरती बंजर हम यह देखी ❋ तब यह किला लिया बनवाय
काम तुम्हारो कछु अटको ना ❋ काहे रारि बढाई आय ॥
इतनी सुनिकै पृथीराज ने ❋ नर मलिखे ते कही सुनाय
किला गिरैहौ जो अबहीं ना ❋ सिरसा गर्द दिहौं करवाय
तापर ज्वाब दियो मलिखेने ❋ क्यों तुम वृथा करत बकवाद
गर्ब न राखा हम काहूका ❋ हमको जानत सब संसार ॥
गये बरायत लै ब्रह्माकी ❋ द्वारे हाथी दिये पछारि ।
सातौ लरिका तुम्हरे बाँधे ❋ सातौ भाँवारि लईं डराय ॥
सिरसा छीनि लियो पारथते ❋ तब कहँ हते बीर चौहान ।
इतनी सुनिकै पृथीराज ने ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय
बत्ती दैदेउ इन तोपन में ❋ अबहीं किला देउ गिरवाय
झुके खलासी तब तोपन पर ❋ तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ चहुँदिशि धुवाँ रह्यो मँडराय
अररर गोला छूटन लागे ❋ रणमें होय दनाक दनाक॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ।

तोपैं छाँडि दईं ज्वानन ने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
दोनों फौजन के अन्तरमें ❋ रहिगयो तीनि पैग मैदान।
खटखट तेगा बाजन लागो ❋ जूझन लगे अनेकन ज्वान
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ सबके मारु मारु रट लागि
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत।
सूँडि लपेटा हाथी ह्वइगे ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
चन्दन बेटा जो पिरथी को ❋ तानें घोडा दियो बढाय।
जहँ पर लरत रहैं नर सुलिखे ❋ चन्दन तहाँ पहूँचे जाय॥
बोले चन्दन नर सुलिखेते ❋ तुम्हरो काल पहूँचो आय।
यह कहि गुर्ज लियो चन्दनने ❋ सो सुलिखे पर दियो चलाय
चोट बचाय लई सुलिखे ने ❋ चन्दन खैंचि लई तलवार
करो जडाका जब सुलिखे पर ❋ सुलिखे दीन्हीं ढाल अडाय
तीनि शिरोही चन्दन मारी ❋ सुलिखे लीन्हीं चोट बचाय
बोले सुलिखे तब चन्दन ते ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ
खैंचि शिरोही लइ सुलिखेने ❋ सो चन्दनपर दई चलाय।
ढाल अडाई तब चन्दनने ❋ तापर भयो जडाका जाय॥
ढाल फाटि गइ तब चन्दनकी ❋ उनको छूटि जनेवा जाय।
चन्दन जूझि गये खेतन में ❋ ताहर गये सनाका खाय॥
घोडा बढायो तब ताहरने ❋ औ सुलिखे को दइ ललकार
खबरदार रहियो घोडी पर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय
इतनी सुनिके तब सुलिखेने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
करो जडाका तब ताहर पर ❋ ताहर दीन्हीं ढाल अडाय॥
गुर्ज उठायो तब सुलिखेने ❋ औ ताहर पर दियो चलाय।

गो तब ताहरको । नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा ह्वैकै तब ताहरने । अपनी खैंचिलई तलवारि।
चोट चलाई नर मुलिखे पर ❋ मुलिखे दीन्हीं ढाल अडाय
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❋ सोने फूल गिरे झहनाय ।
मुलिखे जूझिगये खेतनमें ❋ पाई खबरि बीर मलिखान
घोडी बढाई तब मलिखेने ❋ औ ताहर पै पहुँचे जाय ।
भाला लैकै नर मलिखेने ❋ सो ताहर पर दियो चलाय
लगो चपेटा जब घोडाके ❋ ताहर घोडा गये भगाय ।
मोहैं आयगो तब भाईको ❋ सोचन लगे बीर मलिखान
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ मलिखे खैंचि लई तलवारि
जैसे भिडहा भेडिन पैठै ❋ ज्यों गौवनमें छूटै बाघ ॥
पान तमोली जैसे कतरैं ❋ जैसे खेती लुनैं किसान ।
तैसे रणमें मलिखे पैठे ❋ बहुतक क्षत्री दिये गिराय॥
राजा अंगद नैमिषारको ❋ सो मलिखेने दियो गिराय
राजा सूरत हाडावाला ❋ औ दिल्लीके तीनि सरदार॥
राजा चन्द्रसेन बाँदाके ❋ मारे तुरत बीर मलिखान ।
अकिले मलिखेकी डपटनमें ❋ सब दल रैन बैन ह्वैजाय॥
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
मुर्चा हटिगो पृथीराजको ❋ लश्कर आठ कोस भगिजाय
मारत आवैं मलिखे ठाकुर ❋ हाहाकार परो रणमाहिं ।
सोचे पृथीराज अपने मन ❋ है तलवारि धनी मलिखान
बडो लडैया सिरसावाला ❋ जासे कछू न पार बसाय ।
पहुँचे पृथीराज दिल्लीमें ❋ सिरसा आय गये मलिखान
मोहरा मारो पृथीराजको ❋ जीते जंग बीर मलिखान ।

बीर मलिखानका धोखेसे मारा जाना और गजमोतिनिका सती होना ।

दोहा–सिरसामें अति युद्ध करि, महाबीर मलिखान ।
धोखा दै मारो गयो, जीतिगयो चौहान ॥ १ ॥

राम बनावैं सो बनिजावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय
मलिखे मारे गये धोखेते ❋ यारो सुनियो कान लगाय
माहिल राजा उरईवाले ❋ जो परिहार गोटैया टार ।
लिल्ली घोडी पर चढि बैठे ❋ औ सिरसाको भये तयार ॥
सोचत चलिभये माहिल राजा ❋ पहुँचे गढ सिरसामें जाय ।
महल जौनु था रानि ब्रह्माको ❋ द्वारे गये माहिल परिहार ॥
खबरि सुनाई तब बाँदीने ❋ माहिल ठाढे पँवारि दुआर ।
तुरत बुलाय लियो माहिलको ❋ रंगमहलमें पहुँचे जाय ॥
बोली ब्रह्मा तब माहिलते ❋ बीरन हाल देउ बतलाय ।
कहौ छेम तुम गढ उरईकी ❋ औ अभईको कहौ हवाल ॥
बोले माहिल तब ब्रह्माते ❋ बहिनी सुनौ हमारी बात ।
कुशल छेम है सब उरईमें ❋ बैठे राज्य करौं गढमाहिं ॥
देन बधाई हम आये हैं ❋ मलिखे जीति लियो मैदान
पै इक बिगरी बात यहाँपर ❋ रणमें जूझि गये सुलिखान
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागी ❋ बीरन सुनौ हमारी बात ॥
नहिं कोउ क्षत्री है दुनियाँमें ❋ जीतै जौनु बीर मलिखान ।
जबलौं पाँव पद्म कायम है ❋ जीवत रहै मोर मलिखान
है बरदानी जगदम्बेको ❋ साँची मानौ बात हमारि ॥
इतनी सुनिकै माहिल राजा ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय
जोई रोगीको भावति थी ❋ सोई बैद बताई आय ॥
भेद लेन माहिल आये थे ❋ सो ब्रह्माने दियो बताय ।

चलिभये माहिल तब सिरसाते ❋ औ दिल्ली की पकरी राह
पहुँचे माहिल दिल्लीगढमें ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार।
उतरि बछेरीते भुइँ आये ❋ घोडी थामि लई थनवार॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ माहिल रहिगे माथ नवाय।
नजरि बदलि गइ पृथीराजकी ❋ ऊंची चौकी दई डराय॥
आवौ आवौ उरईवाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय।
बोले माहिल पृथीराजते ❋ भई सहाय शारदा माय॥
गये रहैं हम गढ सिरसाको ❋ ब्रह्मा हाल दियो बतलाय।
पायँ पद्म है नर मलिखेके ❋ ताते जीति सकै ना कोय॥
पद्म फाटि जाय जो तरवाको ❋ तौ मरिजाय बीर मलिखान
जतन बतावैं हम तुमको अब ❋ सोई करौ बीर चौहान॥
ऊभे खुदवावौ धूरे पर ❋ तामें साँगें देउ गडाय।
पद्म फाटिजैहै जबहीं तब ❋ सब बनि जैहै काम तुम्हार
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ माहिल भली बताई आय।
हुक्म देदियो तब पिरथीने ❋ दुइसै ऊभे होयँ तयार॥
गढ सिरसा केरे धूरेपर ❋ ऊभे तुरत लेउ खुदवाय।
खुले रहैं सुरंग एकसौ ❋ इकसौ पटपर होयँ तयार॥
भाला बर्छी तिनमें गडियो ❋ साँग कटारी देउ गडाय।
यह सुनि चलिभै सुरँग खोदैया ❋ औ सिरसागढ पहुँचे जाय
ऊभे त्यार किये धूरेपर ❋ भाला बर्छी दिये गडाय।
हुक्म दिया था जो पिरथीने ❋ तैसेइ ऊभे किये तयार॥
खबरि कराई पृथीराजको ❋ ऊभे सबै भये तैयार।
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ तुरत नगरची लियो बुलाय
हुक्म देदियो महाराजने ❋ लश्कर डंका देउ बजाय।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार॥

पहले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगै ❋ बाँके घोडनके असवार ।
आदि भयंकरको सजवायो ❋ तापर चढे बीर चौहान ॥
हाथी इकदंता सजवायो ❋ तापर चढा चौंडिया राय ।
घोडा दलगंजन सजवायो ❋ तापर ताहर भये सवार ॥
भौरानँद हाथी सजवायो ❋ तापर धाँधू भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ सिरसा धुरो दबायो जाय ॥
डेरा डारिदिये धूरेपर ❋ अपने तम्बू दिये लगाय ।
कागद लैकै कलपीवाला ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लई लेखनी कर कंचनकी ❋ पिरथी लिखन लाग अहवाल
लिखो हाल यह पृथीराजने ❋ पढियो याहि बीर मलिखान
किला गिराय देउ सिरसाका ❋ इतनी मानों कही हमारि ।
किला गिरैहौ ना जल्दी जो ❋ तुम्हरे प्राण बचनके नाहिं ॥
ऐसी पाती लिखि पिरथीने ❋ सो धावनको दइ पकराय ।
चलो साँडिया तब लश्करते ❋ औ सिरसामें पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी रहै मलिखेकी ❋ धावन उतारि परो अरगाय ।
करी बन्दगी नर मालिखेको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती मलिखे बाँची ❋ हरकाराको दियो जवाब ।
जाय सुनावो यह पिरथीको ❋ सिरसा किला गिरनको नाहिं
होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❋ तौ तुम किला देउ गिरवाय
यह कहि हुक्म दियो मलिखेने ❋ लश्कर जल्द होय तैयार
बजो नगारा तब सिरसामें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार ।
घोडी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढे बीर मलिखान ॥
सम्मुहे छींक भई मलिखेके ❋ तब ब्रह्माने कही सुनाय ।

असगुन ह्वइगो है समुहेपर ❋ तुम घर बैठि रहो मालिखान
मलिखे बोले तब मातातें ❋ माता बोलो बात सम्हारि
बैरी चढि आयो सिरसापर ❋ कैसे बैठि रहैं घरमाहिं ॥
जो हम बैठि रहैं घर भीतर ❋ हमरो जियत मरन ह्वइजाय
सगुन बिचारैं बानियं बाट्ट ❋ जो धरि मौर बियाहन जायँ
सगुन बिचारैं क्या क्षत्री हैं ❋ जो रण चढिकै लोह चबायँ
सदा न जीवत कोऊ रहि है ❋ कोऊ आजु मरै कोउ काल्हि
जो मरिजैहैं खटिया परिकै ❋ जगमें कोउ न लैहै नाम ।
जो मारि जैहैं रणखेतनमें ❋ ह्वइहै जुगन जुगनलों नाम
सोचि समुझि यह आज्ञा देदेउ ❋ माता वचन करो परमान
समुहे गजमोतिनि ठाढी थीं ❋ सो मलिखे ते लगी बतान
माता हटकति है जैबे को ❋ तुम ना जाउ समर मैदान
यह सुनि मालिखे बोलन लागे ❋ रानी अकिल गई तुम्हारि
लश्कर लै पिरथी चढि आये ❋ कैसे बैठि रहैं घरमाहिं ।
हँसी हमारी जगमें ह्वइहै ❋ बुडि है सातमाखि को नाम
रानी बैठो रंगमहल में ❋ मनमें धीर धरो महरानि ।
इतनी कहिकै मलिखे चलिभे ❋ मारू डंका दियो बजाय
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ धूरेपर पहुँचे जाय ।
घोडा बढायो तब ताहरने ❋ औ मालिखेतें कही सुनाय
किला गिराय देउ जल्दीते ❋ है यह हुक्म पिथौरा क्यार
गुस्सा ह्वइ तब मलिखे बोले ❋ औ ताहर ते कही सुनाय ॥
एक पिथौराकी गिनती क्या ❋ कोटिन चढैं पिथौरा राय
मारि भगैहैं मैं दिल्लीलौं ❋ कारे पाँखें दिहैं कराय ॥
किलाके समुहे जो कोउ दिखिहै ❋ मुखमें धाँसि दिहौं तलवार
देउँ चुनौती पृथीराजको ❋ हमरो किला देयँ गिरवाय
मारि शिरोहिनसे मुडुँ तोरौं ❋ जौलौं रहै हाथ तलवारि ।

होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❋ तौ मरदूमी देउ देखाय ॥
देखें कसे तुम क्षत्रीहौ ❋ सन्मुख लड़ौ आय मैदान
इतनी सुनिकै ताहर जरिगे ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
हुक्म दे दियो तब ताहरने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
झुके खलासी तब तोपन पर ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुअना रह्यो सरग मँडराय।
अररर गोला छूटन लागे ❋ सर सर परी तीरकी मारु ॥
सननन सननन गोली छूटे ❋ कहकह करैं अगिनियाँ बान
डढ पहर भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ॥
तोपैं छोड़ि दई ज्वानननें ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खटखट चलन लगी तलवारि
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ सबके मारु मारु रट लागि
खैंचि शिरोही मलिखे ठाकुर ❋ समुहे गोल गये समुहाय ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगये ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ।
बिसे बिसेपर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
लोथीं डारीं जो लोहूमें ❋ मानौं मगर मच्छ उतरायँ
डारीं पगियाँ जो लोहूमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार ॥
ढालें डारीं जो लोहूमें ❋ मानौं कछुआ सी उतरायँ
पहर एक भरि चली शिरोही ❋ क्षत्री लैलै भगे परान ॥
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ।
आकिले मलिखेकी धमाकिनमें ❋ सब दल रेन बेन ह्वइजाय
बाइस हौदा खाली करिकै ❋ पृथीराजको करी जोहार ।
बोले मलिखे पृथीराजते ❋ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
आजु अखाड़ेमें बरनी है ❋ अब तुम खेलौ जूझ अघाय
सोचे पृथीराज अपने मन ❋ है यह महाबीर मलिखान ॥
जौलौं बाण लेइँ हम करमें ❋ तौलौं मारिदेय तलवारि ।

सोचि समुझि यह पिरथीबोले ❋ औ मलिखेते कही सुनाय॥
बरनी तुम्हरी है ताहर ते ❋ सो तुम खेलौ जूझ अघाय
यह मन भाई नर मलिखेके ❋ घोडी कबुतरी दई बढाय॥
एंड लगाय दई घोडीके ❋ ऊभे फाँदि गई वा पार।
पटपर ऊभे पर जबहीं गइ ❋ जाते घोडी गई समाय॥
लगी साँग जब पावँ पदुममें ❋ तरवा फटो बीर मलिखान
मूर्छित होनलगे मलिखे जब ❋ सोचे मनहिं बीर मलिखान
काल हमारो अब आयो है ❋ धोखा दियो पिथौरा राय।
धोखा देवै जो काहू को ❋ ताको बार बार धिक्कार॥
सन्मुख लरतो जो हमरे कोउ ❋ मरतो बीर धनी चौहान।
मनकी बात रही मनहीमें ❋ यहि विधि रोय कहैं मलिखान
तडपी घोडी नर मलिखेकी ❋ औ ऊभे ते लाई निकारि।
देखि लाश तब नर मलिखेकी ❋ धावन खबरि दई पहुँचाय॥
सुनी खबरि जब माता ब्रह्मा ❋ भुइँमें गिरी तडाका खाय।
बाँदी पहुँची सतखंडा पर ❋ औ रानी ते कही सुनाय॥
बदी उडानी है राजाकी ❋ सुनियत जूझे कंत तुम्हार।
सुनते रानी गइ द्वारे पर ❋ औ धावनते पूँछो हाल॥
हाल सुनायो सब धावनने ❋ तुरतै डोला लियो मँगाय।
तुरत सबार भई डोला पर ❋ माता ब्रह्मा संग लिवाय॥
डोला पहुँचो गजमोतिनिको ❋ जहँपर लाश बीर मलिखान
माता ब्रह्मा बहुते रोवे ❋ लैलै नाम बीर मलिखान॥
लाश जहाँपर थी मलिखेकी ❋ तहँ पर गये पिथौरा राय।
तब ललकारो गजमोतिनिने ❋ तुम सुनिलेउ बीर चौहान॥
तुम यह जानी अपने मनमें ❋ मारे गये बीर मलिखान।
खेदिके मारिहौं मैं दिल्लीलौं ❋ लश्कर कटा दिहौं करवाय
अबहीं शाप देहौं तुमको मैं ❋ तुरतै यहाँ भस्म ह्वइ जाउ।

ताते मानौ कही हमारी ❋ दिल्लीहि लौटिजाउ महराज
सत्त बिधाता हमको दीन्हीं ❋ ह्वइहौं सती कंतके साथ ।
काम न कीन्हों तुम नीको यह ❋ जो धोखा दे दियो मराय ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❋ कीन्हीं दगा हमारे साथ ।
तीनि महीना तेरह दिनमें ❋ नदिया बहै रक्तकी धार ॥
नगर महोबे ते दिल्लीलौं ❋ ह्वइ हैं सबै सोहागिनि राँड ।
अब तुम देखौ ना सिरसातन ❋ अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
इतनी सुनिकै गजमोतिनि ते ❋ मनमें डरे पिथौरा राय ।
मुर्चा फेरो तब जल्दीते ❋ दिल्ली कूच दियो करवाय ॥
हुक्मफेरिदियो तबगजमोतिनि ❋ चन्दन लकड़ी लई मँगाय
जितनो खजाना था सिरसाको ❋ सो सब पुण्य करोमहरानि
माता अल्ला प्राण छोडि दिये ❋ ताकी क्रिया दई करवाय ।
चारि चौंसधे के धूरेपर ❋ तुरतै चिता लई रचवाय ॥
सबने समुझायो रानीको ❋ बैठी राज करौ महरानि ।
तापर ज्वाब दियो रानीने ❋ करिहौं राज कंतके साथ ॥
यह कहि सुमिरि मातुदेवीको ❋ बैठी तुरत चितापर जाय ।
सुमिरन करिकै सत मल्हनाको ❋ शरमें आगी दई लगाय ॥
सती पुकारैं सरके ऊपर ❋ जागौ जागौ कंत हमार ।
सती ह्वइगई गजमोतिनि तब ❋ आल्हा ऊदनिको लै नाम
ऐसी सती भई गजमोतिनि ❋ पहुँची स्वर्गलोक मे जाय।
यहि बिधि पूरन भयो समर यह ❋ सोहमलिखिकैदियोसुनाय
आगे लडाई है सागरपर ❋ यारो सुनियो कान लगाय।
आल्हा गावौ पावस ऋतुमें ❋ सुमिरन करो नित्यभगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति सिरसा समर समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

अथ

कीरतिसागरपर भुजरियोंकी लडाई ।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

सुमिरण करिकै नारायण को ❋ लैकै रामचन्द्र को नाम ।
लिखौं लडाई अब सागरकी ❋ शारद मोको होउ सहाय ॥
लगो महीना अब सावनको ❋ घरघर होय तीज त्योंहार ।
परे हिंडोला हैं घरघर में ❋ सखिया गावें राग मलार ॥
बेटी चन्द्रावलि मल्हनाकी ❋ जो महुबे की राजकुमारि ।
झूला झूलै सावन गावै ❋ लै लै नाम बनाफर क्यार ॥
करै यादि आल्हा ऊदनि की ❋ नैनन बहै नीरकी धार ।
नाम लेय जब नर मलिखेको ❋ तबहीं रोय उठै तत्काल ॥
चलिभये माहिल गढ उरईते ❋ औ दिल्ली की पकरी राह ॥
पाँच रोजकी मंजिल करिकै ❋ गढ दिल्ली में पहुँचे जाय ।
जहाँ कचहरी पृथीराजकी ❋ माहिल तहाँ पहूँचे जाय ॥
करी बन्दगी महाराज को ❋ राजा चौकी दई डराय ।
आवौ आवौ उरई वाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले माहिल पृथीराज ते ❋ अब ना राखौ देर लगाय ।
चलिकै लूटि लेउ जल्दी ते ❋ सूनो परो महोबा गाँव ॥
इतनी सुनते पृथीराजने ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय
फौज सजाय लेउ जल्दी ते ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ।
बजो नगारा तब दिल्लीमें ❋ सिगरी फौज भई तैयार ॥
आदि भयंकरको सजवायो ❋ तापर चढे पिथौरा राय ।
चौंडा धाँधू ताहर सूरज ❋ सरदनि मरदनि भये तयार ॥

सजिकै भूप टंकवै आयो ❋ भूरा मुगुल भयो तैयार ।
सात लाख ते पिरथी साजे ❋ लैकै खुरासान गुजरात ॥
कूच कराय दियो दिल्ली ते ❋ औ महुबे की पकरी राह ॥
सात रोज की मंजिल करिकै ❋ महुबो धुरो दबायो जाय ॥
लश्कर बांटि दियो पिरथीने ❋ औ महुबे को लियो घिराय
कनवाँ खेरे पर धाँधू ने ❋ अपने डेरा दिये डराय ॥
चन्दन बगिया में पिरथी ने ❋ अपने तम्बू दिये तनाय ।
कोऊ परि गो मदनताल पर ❋ कोऊ बैरागी तालपर जाय ॥
खजुहा गढमें कोऊ परि गो ❋ कोऊ लुहर गाँव मैदान ।
बारह कोसों चौगिर्दा में ❋ झंडन रही लालरी छाय ॥
सिगरी रैयति गढ महुबे की ❋ मनमें काँपि काँपि रहिजाय ।
रानी मल्हना सोचन लागी ❋ अब ना रहि है धर्म हमार ॥
लई आरती औ सामग्री ❋ देवीकी मठी पहूँची जाय ।
करिके पूजा जगदम्बे की ❋ मल्हना होम दियो करवाय ॥
हाथ जोरिके मल्हना बोली ❋ माता राखो धर्म हमार ।
पिरथी घेरो नगर महोबा ❋ संकट परो नगर पर आय ॥
होउ सहायक अब तुम माता ❋ औ गाढे में आवौ काम ।
सपना देउ जाय ऊदनिको ❋ माता मेरी अम्बिका माय ॥
आभा बोली तब देवी की ❋ रानी धीर धरौ मनमाहिं ।
काम तुम्हारो पूरन ह्वइहै ❋ ऊदनि ऐहैं नगर महोब ॥
मल्हना चलिभइ तब महलनते ❋ कनउज गई शारदा माय ।
आधी राति केरे अमलामें ❋ सपना दियो अम्बिका माय ॥
ऊदनि सोवत थे बँगलामें ❋ तिनते देवी लगी बतान ।
पृथीराज घेरो महुबेको ❋ संकट परो नगर पर आय ॥
थर थर काँपै सिगरी रैयति ❋ कोऊ रँधो भात ना खाय ।

फाटक बन्दी है महुबेमें ❋ बाहिरो आवै न भितरोजाय
तुम सोवत हौ सुखनिदियामें ❋ हैं दुखनींद रजा परिमाल।
जल्दी पहुँचो तुम महुबेको ❋ राखौ धर्म चँदेले क्यार॥
पवनी करावौ चन्द्रावलिकि ❋ औ भुजारैनको देउ सिराय।
यहि बिधि सपने में देवीने ❋ कहि दो हाल महोबे क्यार॥
सुनतै सपना यह सोवत में ❋ ऊदनि उठे भरहरा खाय।
ढेबा बहादुर ते सपने को ❋ सबियाँ हाल कह्यो समुझाय
पिरथी वैरो नगर महोबो ❋ दादा सगुन देउ बतलाय।
पवनी खोटी जो ह्वइजैहै ❋ तो जग ह्वइहै हँसी हमारि॥
ढेबा बोलेउ तब ऊदनिते ❋ जल्दी कूच देउ करवाय।
करौ बहाना तुम आल्हाते ❋ लाखनि राना संग लिवाय॥
करौ तयारी अब जल्दीते ❋ गुजरै घरी घरी पर क्यार।
करि सलाह दोनोंचलि पहुँचे ❋ जहँपर हते कनौजी राय॥
करी बन्दगी बघ ऊदनिने ❋ औ लाखनिते कह्यो हवाल।
सपना दियो हमहिं देवीने ❋ हमरे काम सिद्धि ह्वइ जायँ॥
होत सनीनो है महुबेमें ❋ ऐसी कहूँ होत है नाहिं।
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ महुबो हमहिं देउ दिखलाय॥
ऊदनि बोले तब लाखनिते ❋ जान न दैहैं तुमहिं महराज।
ताते चर्चा ना करियो तुम ❋ की हम नगर महोबे जाहिं॥
करौ बहाना तुम गाँजर को ❋ की हम खेलन जात शिकार।
यहसलाहकरि तीनोंचलिभये ❋ औ जैचन्द कचहरी जाय॥
करी बन्दगी महाराजको ❋ तब जैचँदने कही सुनाय।
कहाँ कि त्यारी तुमने कीन्हीं ❋ यह सुनि कही उदैसिंहराय॥
संग जात हैं हम लाखनिके ❋ गाँजर खेलन जायँ शिकार।
आज्ञा दैदेउ तुम लाखनिको ❋ तब जैचँदने दियो जवाब॥

जो कछु तुम्हरे मनमें आवै ❋ सोई करो उदै सिंह राय ।
हुक्मपाययहतीनों चलिभये ❋ त्यारी करन लगे तत्काल ॥
पूँछो आल्हा तब ऊदनिते ❋ कहँ जैबेको भये तयार ।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ लाखनि खेलन चले शिकार
संग जात हैं हम लाखनिके ❋ दादा हुक्म देउ फरमाय ।
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❋ भैया खेलन जाउ शिकार॥
पै नहिं जैयो नगर महोबे ❋ यह सुनि ऊदनि दियो जवाब
जियत महोबे हम जैहैं ना ❋ कागा मरे हाड लै जायँ ॥
यह कहि चलिभै उदनिबाँकुडा ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय।
हुक्म कराय दियो लाखनिने ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ सिगरी फौज भई तैयार ।
ठाढी देवै दरवाजे पर ❋ सो ऊदनिते लगी बतान ॥
कहांकि त्यारी तुमने कीन्ही ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय ।
साथ जात हैं हम लाखनिके ❋ गाँजर खेलिहैं जाय शिकार॥
बोली देवै तब ऊदनिते ❋ तुम ना जैयो नगर महोब ।
ऊदनि बोले तब देवैते ❋ हम ना जैहैं नगर महोब ॥
चरण लागिकै तब माताके ❋ तुरतै चले उदैसिंह राय ।
सुनवाँ ठाढी थी खिरकी में ❋ ऊदनि तहाँ पहूँचे जाय ॥
पूछन लागी सुनवाँ रानी ❋ कहाँको डंका दियो बजाय ।
बोले ऊदनि तब सुनवाँ ते ❋ भौजी सुनौं हमारी बात ॥
हाल बतैयो ना दादा ते ❋ जियतै ह्वइ है मरन हमार ।
जो सुनि पैहैं दादा आल्हा ❋ हमको घरते दिहैं निकारि॥
महुबो घेरो पृथीराजने ❋ बहिरो आवै न भितरो जाय
पृथीराज लुटिहैं महुबो जो ❋ तौ जग ह्वइ है हँसी हमार॥
करी तयारी हम महुबे की ❋ लाखनि ढेबाको लै साथ ।

यह सुनि सुनवाँ बहुत खुशी ह्वै ❋ बघ ऊदनि ते लगी बतान
धन्य धन्य देवर हमरे तुम ❋ तुम बिन कौन करै यह काम
जल्दी जावौ तुम महुबेको ❋ भारी बिपदा देउ नशाय॥
चलिभे ऊदनि तब आगेको ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय।
ढेबा बहादुर आगम जानै ❋ जोगिन गुदरी लई सिलाय
कूच कराय दियो कनउजते ❋ औ महुबे की पकरी राह।
तीनि रोज की मंजिल करिके ❋ नदि बितवैपर पहुँचे जाय॥
छकडन गेरू तहँ मँगवाई ❋ सो घोरवाय लई तत्काल।
कपडा रँगवाये जोगिनके ❋ लश्कर जोगी लियो बनाय
राति बसेरा करि नद्दीपर ❋ भोरहि होन उतारा लाग।
नदी पार ह्वैके जोगिनने ❋ अपने डेरा दिये डराय॥
मीरा सैयद लाखनि राना ❋ ढेबा ऊदनि भये तयार।
गुदरी पहिरि लई जोगिनकी ❋ अपने बाजा लिये उठाय॥
लियो इकतारा मीरा सैयद ❋ ढेबा खँझरी लई उठाय।
लई बाँसुरी बघ ऊदनि ने ❋ लाखनि डमरू लियो उठाय
चारो जोगी गावत चलिभे ❋ शोभा कछू कही ना जाय।
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❋ दादा सुनौ हमारी बात॥
पहिले दिखिहैं गढ सिरसा हम ❋ पाछे चलिहैं नगर महोब॥
इतनी कहिकै चारो जोगी ❋ गढ सिरसामें पहुँचे जाय।
ऊजर खेरा देखि उदैसिंह ❋ मनमें ऊदनि सोचन लाग॥
देखो फाटक गढ सिरसाको ❋ उडि उडि काग बसेरा लेयँ
इते बरदिया जो बगियामें ❋ सो जोगिनते लगे बतान॥
यहँ पर आये तुम काहे सब ❋ कोऊ भीख दिवैया नाहिं॥
सिरसा गढ केरो मालिक जो ❋ मारो गयो बीर मलिखान।
इतनी सुनतै ऊदनि रोये ❋ ढेबा छाँडि दई डिंडकार॥

देखि बरदिया बोलन लागे ❋ बाबा हाल देउ बतलाय ।
काहे बाबा तुम क्यों रोये ❋ क्या वे भाई लगैं तुम्हार ॥
बोले ऊदनि तब धीरे ते ❋ वे गुरुभैया लगत हमार ।
मोह आय गयो हमहिंयहाँपर ❋ देखि न मिले बीर मलिखान
कैसे मरण भयो मलिखेको ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय ।
बोले बरदिया तब ऊदनिते ❋ बाबा सुनौ हमारी बात ॥
पृथीराज दिल्लीते आये ❋ लश्कर सात लाख लै साथ
मारि भगायो नर मलिखेने ❋ तब तौ लौटि गये चौहान
देन बधाई माहिल आये ❋ ब्रह्मा हाल दियो बतलाय॥
माहिल हाल कह्यो पिरथीते ❋ है पद पद्म बीर मलिखान।
चढो पिथौरा फिरि दिल्लीते ❋ औ धूरेपर कियो मुकाम ॥
ऊभे खुदवाये धूरेपर ❋ तिनमें साँगैं दई गडाय ।
घास फूस डरवाय उपरते ❋ पटपर भूमि दई करवाय ॥
खाली राखे आधे ऊभे ❋ तहँपर खडे पिथौरा राय ।
ऊभे पार खडे ताहर थे ❋ मारत आये बीर मलिखान
करी बन्दगी पृथीराज को ❋ तब पिरथीने कही सुनाय ।
तुम्हरी ताहरकी बरनी है ❋ सो तुम खेलौ जूझ अघाय
मलिखे जानी यह धरती है ❋ घोडी आगे दई बढाय ।
फांदिकै घोडी गइ पटपर पर ❋ तुरतै भीतर गई समाय ॥
घाव सांगको लगो पदुममें ❋ तरवा फटो बीर मलिखान।
घोडी कबुतरी घायल ह्वइगइ ❋ मूर्छित भये बीर मलिखान
तडपी घोडी तब भीतरते ❋ औ ऊपरको लाई निकारि।
सुलिखे मारे गये पहलेही ❋ ब्रह्मा छाँडिदिये तहँ प्रान॥
रनि गजमोतिनि सत्ती ह्वइगइ ❋ आल्हा ऊदनि को लै नाम
रैयति जितनी थी सिरसाकी ❋ सो सब जहँ तहँ गई बराय

धोखा दैकै पृथीराजने ❋ यहि बिधि मारि दिये मलिखान
बोले बरदियाते ऊदनि तब ❋ सतीको चौरा देउ बताय ।
ठौर बतायो तब ऊदनिको ❋ जोगी तहाँ पहूँचे जाय ॥
देखिकै ऊदनि रोवन लागे ❋ हा दैया गति कही न जाय ।
आभा बोली तब मलिखेकी ❋ अब ना मिलिहैं भाय तुम्हार
रोये तुम्हरे कछु ह्वइहै ना ❋ अब तुम जावौ नगर महोब
रोयकै ऊदनि बोलन लागे ❋ हम ना जैहैं नगर महोब ॥
थोरि दूरि पर रहैं चँदेले ❋ क्यों ना तुम्हरी करी सहाय
जियत महोबे हम जैहैं ना ❋ कागा मरे हाड लै जायँ ॥
बोली आभा गजमोतिनिकी देवर सुनौ उदयसिंह राय
जल्दी जावौ तुम महुबेको यहँ क्यों खाक बटोरी आय
पृथीराज लुटि हैं महुबेको तुम्हरे जीबेको धिरकार ।
पबनी खोटी जो ह्वइ जैहै ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हार
ताते जल्द जाउ महुबेको ❋ उनकी पबनी देउ कराय ।
जो तुम महुबेको जैहौ ना ❋ देहौं शाप भस्म ह्वइ जाउ ॥
इतनी सुनतै जोगी चलिभे ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
जबहीं पहुँचे वे फाटक पर ❋ दरवानीने कही सुनाय ॥
हुक्म नहीं है महाराजको ❋ भीतर जान दिहैं हम नाहिं
बोले ऊदनि तब जल्दीते ❋ भीतर भिक्षा माँगि हैं जाय
नाम सुना हम गढ महुबेको ❋ महुबे बसत रजा परिमाल
पारस पूजा है तिनके घर ❋ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय
फाकट खोलि देउ जल्दीते ❋ यह कहि अलखजगावन लाग
डारि मोहिनी दइ द्वारेपर ❋ फाटक तुरत लियो खुलवाय
गावत गावत जोगी चलिभये ❋ औ पनिघटपर पहुँचे जाय
ित ह्वइगईं सब पनिहारी ❋ देखत एक पहर ह्वइजाय

नैवा बाँदी रानि मल्हनाकी ❀ सो अपने मन सोचन लागि
एक पहर पनिघटपर ह्वैगो ❀ सिगरो प्यास मरै रनिवास
बाँदी चालिभइ तब पनिघटते ❀ रंग महलमें पहुँची जाय।
रानी मल्हना जब गुस्सा भइ ❀ तब बाँदीने कही सुनाय॥
चारि जोगिया हैं पनिघटपर ❀ जिनके रूप न बरने जायँ
देखि तमाशा लउ तिनको तुम ❀ रानी पैयाँ परौं तुम्हारि॥
बोली मल्हना तब गुस्सा ह्वै ❀ हम पर बिपति परी है आय
नाच रंग तोको भावत है ❀ हमरे नैन ओट ह्वै जाय॥
हाथ जोरिकै बाँदी बोली ❀ रानी बार बार बलि जाउँ।
बडे तेजधारी जोगी हैं ❀ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वैजय
आज्ञा दै दइ तब मल्हनाने ❀ जल्दी जोगिन लाउ बुलाय
आई बाँदी तब जोगिन पै ❀ औ जोगिनते कही सुनाय
तुमहिं बुलायो है रानीने ❀ अबहीं चलौ हमारे साथ।
आये जोगी तब ड्योढीमें ❀ देखो महल कनौजी राय॥
बहुत खुशी भये लाखानिगना ❀ शोभा देखि देखि रहिजायँ
रूप देखिकै उन जोगिनको ❀ मल्हना रानी उठी रिसाय
पेटु फरै हौं बांदी तेरो ❀ तू छलियनको लाई बुलाय
ये हैं लरिका पृथीराजके ❀ इन छल कियो हियाँपर आय
बोले ऊदनि तब रानीते ❀ धर्म कि माता लगौ हमारि।
हम तो लरिका हैं जोगिनके ❀ दुबिधा छोंडि देउ महरानि
कुटी हमारी है गोरखपुर ❀ हमको रूप दियो करतार।
फिरिकै मल्हना बोलन लागी ❀ रहि रहि मेरो प्राण घबराय
तुमहो लरिका कोइ राजनके ❀ साँची हमहिं देउ बतलाय।
कहाँ गुदरिया यह तुम पाई ❀ जिनमें जडे जवाहिर लाल
झालरि लागी है मोतिनकी ❀ हाथन कडा सूबरन क्यार

कानन कुंडल हैं सोने के ❋ सो कहँ तुमहिं मिले महराज॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ माता सुनौ हमारी बात।
कियो तमाशा गढ़ कनउजमें ❋ राजा जैचँद को जहँ राज॥
ह्वै प्रसन्न तहँ महाराज ने ❋ हमको गुदरी दई सिलाय।
तिलका रानी मोहित होय गइ ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय॥
तहँते पहुँचे हम रिजिगिरि में ❋ जहँ पर बसत बनाफर राय
आल्हा ऊदनि दुइ भैया हैं ❋ तहँ हम कियो तमाशा जाय
कुण्डल पहिराये ऊदनि ने ❋ चीरा कलँगी दई इनाम।
नाम सुनौ जब बघ ऊदनिको ❋ रोवन लगी मल्हन दे रानि
बेटा ऊदनि को पाऊँ कहँ ❋ जो गाढ़े में आवै काम।
जोगिऔ जैयो तुम कनउजको ❋ हमरी खबरि सुनैयो जाय
याही दिनको हम पालो थो ❋ की असमय में ऐहैं काम।
कुआं बियाह्यो जब ऊदनिने ❋ तब हमते यह कियो करार
प्राण निछावरि माता कीन्हें ❋ सो क्या भूलिगये यह बात
तुम सुख निंदियामें सोवत हौ ❋ हमपर बिपति परी अब आय
फिरिकै ऊदनि पूँछन लागे ❋ माता हाल देउ बतलाय।
कौन आपदा तुमपर परिगइ ❋ जो तुम रोय रोय रहि जाउ
बोली मल्हना तब ऊदनिते ❋ पिरथी घेरो नगर महोब।
धरी भुजरियाँ हैं महलनमें ❋ सागर कौन देय सिरवाय॥
कौन दूसरिहा पृथीराजको ❋ को ऊदनि बिन करै सहाय
तौलौं आई बेटि चन्द्रावलि ❋ सो मल्हनाते लगी बतान॥
छोटो जोगी ऐसो लागै ❋ मानौं मेरो लहुरवा भाय।
बोली मल्हना चन्द्रावलिते ❋ बेटी सुनौ हमारी बात॥
काहे ह्वैहैं ऊदनि जोगी ❋ जिनकी जग जाहिर तलवारि
करो इशारा तब लाखनिने ❋ ऊदनि नाम देउ बतलाय॥

बोले ऊदनि तहँ लाखनिते ❋ नाहीं अबहिं बतै हैं नाम ।
बोले ऊदनि रनि मल्हना ते ❋ पबनी तुम्हरी दिहैं कराय॥
मल्हना बोली तब जोगिनते ❋ तुम भिक्षा के माँगन हार ।
क्या गति जानौ तुम लरिबेकी ❋ कैसे पबनी दिहौ कराय ॥
ऊदनि होते जो महुबे में ❋ पबनी देते हमहिं कराय ।
होते मलिखे या सिरसा में ❋ तौ बनि जातो काम हमार
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ माता बचन करौ परमान ।
हम जोगी हैं बंगाले के ❋ पबनी तुम्हरी दिहैं कराय॥
मारि भगै हैं हम पिरथी को ❋ हम जोगी हैं बुरी बलाय ।
बोली चन्द्रावलि ऊदनि ते ❋ जो तुम गंगा लेउ उठाय ॥
तौ हम जानैं अपने मन में ❋ हमरी पबनी दिहौ कराय ।
गंगा कीन्हीं तब ऊदनि ने ❋ तौलौं माहिल पहुँचे आय ॥
देखि हकीकत माहिल लौटे ❋ पृथीराजपै पहुँचे जाय ।
जोगी चलिभे रंगमहलते ❋ अपने लश्कर पहुँचे जाय॥
बोले माहिल पृथीराजते ❋ हमते कछू कही ना जाय ।
आये जोगी बंगालेके ❋ जादू पढे बीर बैताल ॥
गंगा कीन्हीं उन महुबे में ❋ पबनी तुम्हरी दिहैं कराय ।
लडे न जितिहौ तुम जोगिनते ❋ तासे कूच जाउ करवाय ॥
चुगुली करिकै परिमालैने ❋ हम निकराये बनाफर राय
तब ना लूटो तुम महुबेको ❋ अब सब बिगरि गयो है काम
पृथीराज तब पूँछन लागे ❋ अब कछु जतन देउ बतलाय
कैसे लूटैं नगर महोबा ❋ तब माहिलने कही सुनाय॥
होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❋ तौ जोगिनको देउ भगाय ।
पाछे लूटि लेउ महुबेको ❋ यह सुनि पृथीराज चौहान॥
चौंडा धाँधू को बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय

जल्दी जावौ तुम झाबरको ❋ औ जोगिनते कहो सुनाय ॥
कूच कराय जाउ जल्दी ते ❋ नाहिं कछु यहाँ तुम्हारोकाम।
चौंडा धाँधू दोनौं चलिभे ❋ औ जोगिन पै पहुँचे जाय॥
हाथ जोरिकै दोनों बोले ❋ बाबा कूच जाउ करवाय ।
बोले ऊदनि तब दोनों ते ❋ हम पन्द्रह दिन करैं मुकाम॥
देखि सनीनौं गढ महुबे की ❋ तब हम कूच दिहैं करवाय ।
तापर ज्वाब दियो चौंडा ने ❋ बाबा मानौं बात हमारि ॥
पृथीराज घेरो महुबे को ❋ चढिकै महुबो लिहैं लुटाय।
गर्द बर्द बाबा ह्वै जैहो ❋ ताते कूच जाउ करवाय ॥
गुस्सा ह्वै तब ऊदनि बोले ❋ क्यों नहिंबोलतबात सम्हारि।
जल्दी चले जाउ समुहेते ❋ क्यों हम कूच जायँ करवाय॥
आगे बढिगे चौंडा धाँधू ❋ लश्कर देखि जोगियन क्यार
मन घबराय गये दोनों तब ❋ पृथीराज पै पहुँचे आय ॥
हाल कह्यो सब बैरागिनको ❋ हैं बैरागी बुरी बलाय ।
फौज परी है आठ कोसलों ❋ तँबुअन रही लालगी छाय॥
जो मुँहलागिहौ उनजोगिनके ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
परे रहन देउ तुम जोगिनको ❋ अपनो लीजो काम बनाय॥
याहि बिधि बीते दिन संकटमें ❋ अब दिन परो सनीनौं आय
ठाढी मल्हना सतखंडा पर ❋ देखै बाट जोगियन क्यार॥
पहर एक ह्वै गयो अँटा पर ❋ नाहीं जोगी परे दिखाय ।
बोली चन्द्रावलि मल्हनाते ❋ पवनी कौन दिहै करवाय ॥
गंगा करिगै थे जोगी हियँ ❋ सोऊ नाहीं परत दिखाय॥
मल्हना समुझावै बेटी को ❋ बेटी मानौं बात हमारि ।
लेउ भुजरियाँ तुम महलन ते ❋ सो कुँवटा में देउ सिराय ॥
रोवन लागी तब चन्द्रावलि ❋ लै लै नाम बीर मलिखान।

माहिल आये तब महलन में ❋ सो मल्हना ते लगे बतान॥
डाँड पठाय देउ पिरथी को ❋ अपनी करौ सनीनौं जाय।
बोलन लागी रनिमलहना तब ❋ क्या हम डाँड देयँ पठवाय।
माहिल बोले तब मल्हनाते ❋ यह कहि दियो बीर चौहान
हार नौलखा शहर ग्वालियर ❋ लैहैं उड़न बछेड़ा पाँच।
बैठक लैहैं खजुहागढ़ की ❋ डोला लिहैं चन्द्रावलिक्यार
ब्याह रचै हैं सो ताहर सँग ❋ पारस पूजा लिहैं अगार।
इतनों डाँड पठाय देउ तुम ❋ बहिनी मानों बात हमार॥
यह सुनिमल्हनारोवनलागी ❋ औ माहिल ते कही सुनाय।
डोला देहौं ना बेटी को ❋ चाहे लाख चढ़ै चौहान॥
पेटु मारि अपनो मरि जैहों ❋ देहौं मया मोह बिसराय।
बोली चन्द्रावलि मल्हनाते ❋ यह ब्रह्मा ते कहौ हवाल॥
चलिभे माहिल रंगमहलते ❋ पाछे चली मल्हनदे रानि।
लीन्हों संगै चन्द्रावलिको ❋ औ ब्रह्मा पै पहुँची जाय॥
चरण लागिकै तब माता के ❋ ब्रह्मा माथे लिये लगाय।
बोले ब्रह्मा तब माता ते ❋ आई यहाँ कौन से हेत॥
बोली मल्हना तब ब्रह्मा ते ❋ बहिनि कि पबनी देउ कराय
धरी भुजरियाँ रंगमहल में ❋ सो सागर में देउ सिराय॥
सुनतै ब्रह्मा बोलन लागे ❋ हम ना मूँड कटै है जाय।
तुमहिं भरोसा दौ जोगिनने ❋ सोई पबनी दिहैं कराय॥
यह सुनिमल्हनारोवनलागी ❋ बेटी छाँडि दई डिडकार।
देखि हाल यह अभई बोले ❋ बेटा जौन महिल परिहार॥
पबनी तुम्हरी हम करवै हैं ❋ अपनी त्यारी लेउ कराय।
दई चुनौती पृथीराजको ❋ हमते डोला लेयँ छिनाय॥
बोले माहिल तब अभई ते ❋ बेटा अक्किल गई तुम्हारि।

जन्मके बैरी महुबे वाले ❋ तिनकी ओर लड़न ना जाउ
कही हमारी बेटा मानौ ❋ घरमें बैठि रहौ चुप साधि ।
तापर ज्वाब दियो अभईने ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
दोनौं राजा हमाईं बराबर ❋ जगमें पृथीराज परिमाल ।
पृथीराज मनमें जानी यह ❋ कोऊ मर्द महोबे नाहिं ॥
बात कहि चुके अब मल्हनाते ❋ पत्रनी इनकी दिहैं कराय ।
यह कहि अभई उठि ठाढ़े भे ❋ तुरत नगरची लियो बुलाय
हुक्म दैदियो तब अभईने ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बाँके घोड़नके असवार ।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❋ कोऊ गजरथ भये सवार
बेटा रंजित परिमालेको ❋ सोऊ साथ भयो तैयार ।
घोड़ी हिरौंजिनि त्यार कराई ❋ तापर रंजित भये सवार ॥
सब्जा घोड़ाको सजवायो ❋ तापर अभई भये सवार ।
खबरि कराई रंगमहलमें ❋ सिगरे डोला लेउ सजाय ॥
डोला त्यार भये सखियनके ❋ चहुँ दिशि सब्जी परै दिखाय
सब्ज नालकी सब्ज पालकी ❋ तिनपर डारो सब्ज उहार ॥
सब्जै झालरि हैं रेशमकी ❋ उरदी सब्ज कहारन केरि ।
सब्ज भुजरियाँ सब सखियनकी ❋ सब्जै झूला लिये सजाय
सब्जै रस्सा रेशमवाले ❋ सो झूलनमें लिये धराय ।
जतन करी इक मल्हना रानी ❋ सोऊ सुनिलेउ कान लगाय
जहर बुझाई यक यक छुरिया ❋ सब सखियनको दइ पकराय
मटुका यक यक बारूदनके ❋ सब पलकिनमें दियो धराय

पत्थर चकचक लै मल्हनाने ❋ सब सखियनको दियो गहाय
डोला लूटैं पृथीराज जो ❋ तौ तुम जहर खाय मरि जाउ
जहर न खाय मिलै तुमको जो ❋ तौ तुम पेटु मारि मरि जाउ।
आगि लगाय लिऔ डोलनमें ❋ यहमल्हनाने दियो सिखाय
यह सुनि सखियाँ बोलन लागीं ❋ हम सब देहैं प्राण गँवाय
जैहैं नाहिं जियत दिल्लीको ❋ माता बचन करौ परमान ॥
चौदहसै डोला सब सजिगे ❋ डोला बीच चँद्रावलि क्यार
डोला आगे रानि मल्हनाको ❋ बारह. रानि चँदेले केरि ॥
आये डोला जब फाटकपर ❋ अभई रंजित चले अगार ।
चलतै छींक भई समुहे पर ❋ तब, रानीने कही सुनाय ॥
असगुन ह्वैगयो है चलतै पर ❋ तुम ना चलौ हमारे साथ ।
बोले अभई तब मल्हनाते ❋ हम ना मनिहैं कही तुम्हार॥
सगुन चाहिये उन बनियनको ❋ जे धरि मौर बियाहन जायँ
सगुन चाहिये ना क्षत्रीको ❋ जे रण चढिकै लोह चबायँ
करौ भरम नहिं तुम अपने मन ❋ दुबिधा छाँडि देउ तत्काल
चलिभे डोला तब महुबेते ❋ सखियाँ गावैं राग मलार ॥
माहिल पहुँचे तब बगियामें ❋ औ पिरथीते कही सुनाय ।
रंजित अकिले हैं डोलन पर ❋ डोला सबै लेउ लुटवाय ॥
बोले पृथ्वीराज चौंडाते ❋ अबहीं डोला लेउ लुटाय ।
चलो चौंडिया तब बगियाते ❋ औ लश्करमें पहुँचो जाय ॥
लश्कर सजवायो जल्दीते ❋ इकदंता पर भयो सवार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ सागर पर पहुँचो जाय॥

अभई रंजितकी चौंडा आदिसे लडाई ।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लैकै रामचन्द्रको. नाम ।

लिखौं लडाई अब सागरकी ❋ अभई रंजितको संग्राम ॥
देखो समुदे जब अभईको ❋ डोलन संग चौंडिया राय।
बोलो चौंडा तब अभईते ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
कहाँ कि त्यारी तुमने कीन्हीं ❋ क्यों यह डोला तुम्हरे साथ
यह सुनि अभई बोलन लागे ❋ है त्यौहार महोबे क्यार ॥
आज सनीनो है महुबेमें ❋ हम सागरको भये तयार।
हैं रखवारे हम डोलनके ❋ डोला संग मल्हनदे क्यार॥
बीचमें डोला चन्द्रावलिको ❋ अपनी लिये भुजरियाँजाय
सखियाँ सिगरी हैं बेटीकी ❋ सोऊ चलीं साथमें जायँ॥
सुनि यह बात कही चौंडाने ❋ डोला हियाँ देउ धरवाय।
पाँव बढैयो ना आगेको ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय
बोले अभई तब चौंडाते ❋ मुखते बोलो बात सम्हारि।
समुहे देखै जो डोलनके ❋ ताके नैन लेउँ निकराय॥
गुस्सा ह्वइ तब चौंडा ब्राह्मण ❋ लश्कर हुक्म दियो करवाय।
डोला लूटि लेउ जल्दीते ❋ अब ना राखौ देर लगाय॥
इतनी सुनतै तब क्षत्रिनने ❋ अपनी खैंचि लईं तलवारि।
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ खटखटचलन लगीतलवारि
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार।
हौदा मिलिग तब हौदा सँग ❋ हाथिन अडो दाँतसे दाँत॥
तीनि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि
भगे सिपाही चौंडावाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
यह गति देखी जब चाडाने ❋ तब हाथीको दियो बढाय॥
समुहे जाय कही अभईते ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय
गुर्ज उठाय लियो चौंडाने ❋ सो अभई पर दियो चलाय॥

सब्जा घोडा आगे बढिगो ❋ नीचे गुज गिरो अरराय ।
घोडा बढायो तब अभईने ❋ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
करो जडाका इक हौदा पर ❋ छतुरी टूक टूक ह्वइजाय ।
सोने कलश गिरे धरती पर ❋ चौंडा हाथी दियो भगाय ॥
हटिगौ मुर्चा जब चौंडाको ❋ लश्कर तिडी बिडी ह्वइजाय
सुनो हाल जब यह पिरथीने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
जल्दी चले जाउ सागरपर ❋ डोला सबै लेउ लुटवाय ।
डोला लावौ चन्द्रावलिको ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
यह सुनिचलिभैतब सूरजमल ❋ लश्कर तीनि लाख सजवाय
कूच कराय दियो लश्करको ❋ राजा टंक संग सजवाय ॥
जबहीं पहुँचि गये सागरपर ❋ सूरज बढिकै कही सुनाय ।
डोला धरि देउ चन्द्रावलिको ❋ सुनि अभईने दियो जवाब
नाम लिहौ जो तुम डोलाको ❋ मुहमें धाँसि दिहौं तलवारि
समुहे दिखिहौ जो डोलनके ❋ दोनों नैन लिहौं निकराय
इतनी सुनतै सूरज जरिगै ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
हुक्म दै दियो तब लश्करमें ❋ सबकी कटा देउ करवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खटखटचलन लगी तलवारि
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ लोथिनऊपरलोथि दिखाय
सूरजमल आगेको बढिगै ❋ औ रंजिततें लगे बतान ।
खबरदार रहियो घोडापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय॥
यह कहि गुर्ज लियो सूरजने ❋ सो रंजितपर दियो चलाय।
घोडी हटिगइ तब रंजितकी ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
लई शिरोही तब सूरजने ❋ सो रंजितपर दइ झुकाय ।
तीनि शिरोही सूरज मारीं ❋ रंजित लीन्हीं चोट बचाय॥
कावा दैकै तब रंजितने ❋ अपनी लई शिरोही काढि ।

चेहरा मारो तब सूरजको ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
ढाल फाटि गइ सूरजमलकी ❋ धरनी गिरे जाय मुरझाय ।
देखि हाल यह टंकराजने ❋ आगे हाथी दियो बढाय ॥
सम्हरो ठाकुर तुम घोडी पर ❋ यह कहि लीन्हीं साँग उठाय ।
अभई आय गये समुहे पर ❋ औ राजाते कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ दुइमें एक आँकु रहिजाय ।
साँग उठाई टंकराजने ❋ सो अभई पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई अभईने ❋ अपनो भाला लियो उठाय ।
दियो चलाय टंक राजापर ❋ सो तोंदी में गयो समाय ॥
मूर्च्छित ह्वइकै गिरे टंक तब ❋ लश्कर तिडीबिडी ह्वइजाय ।
चलो साँडिया तब लश्करते ❋ पृथीराज पै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ औ लश्करको कह्यो हवाल ।
बिकट लडाई भइ सागर पर ❋ सूरज टंक जूझिगे जाय ॥
लाश उठाय लेउ दोनोंकी ❋ सुनि घबराय गये महराज ।
सरदनि मरदनिऔ ताहरको ❋ तुरतै राजा लियो बुलाय ॥
हुक्म दैदियो पृथीराजने ❋ अपनो लश्कर लेउ सजाय
सूरज टंक परे खेतनमें ❋ जायकै लाश लेउ उठवाय ॥
इतनी सुनिकै तीनौंचलिभये ❋ लश्कर तुरत लियो सजवाय
अपने अपने तब घोडन पर ❋ तुरतै फांदि भये असवार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ मारूडंका दौ बजवाय ।
लश्कर पहुँचिगयो सागरपर ❋ दोनों लाशैं लईं उठाय ॥
सो पठवाय दई बगियाको ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ।
इक ललकार दई ताहरने ❋ कौने मारो भाइ हमार ॥
बोले अभई तब आगे बढि ❋ हमने मारो भाइ तुम्हार ।
करन सनीनों हम आये हैं ❋ क्यों तुम लाये फौज चढाय ॥

तापर ज्वाब दियो ताहरने ❋ डोला देउ चन्द्रावलि क्यार।
बोले अभई तब ताहरते ❋ अपनी जीभ लौटि मुँह दाबु॥
अबजोनाम लिहौ डोलाको ❋ तुम्हरो शीश लिहौं कटवाय।
यह सुनिताहरगुस्सा ह्वइगये ❋ औ क्षत्रिनते कही सुनाय॥
अबहीं लूटिलेउ डोला सब ❋ सबकी कटा देउ करवाय।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ क्षत्री बीररूप होइ जायँ॥
झुरमुट ह्वइगो दोनों दलको ❋ खटखट चलन लगी तलवार
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ सबके मारु मारु रट लागि॥
आगे बढिगये ताहर ठाकुर ❋ औ रंजितते लगे बतान।
डोला धरिदेउ चन्द्रावलिको ❋ जो जीतै सो लेय उठाय॥
गुस्सा ह्वइकै तब रंजितने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि।
चोट चलाई तब ताहर पर ❋ बायें उठी गैंड की ढाल॥
तीनि शिरोही रंजित मारीं ❋ ताहर लीन्हीं चोट बचाय।
टूटि शिरोही गइ रंजितकी ❋ ताहर खैंचि लई तलवारि॥
करो जडाका जब रंजितपर ❋ रंजित जूझिगये मैदान।
यह गति देखी जब अभईने ❋ अपनो घोडा दियो बढाय॥
इक ललकार दई ताहरको ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ।
खैंचि शिरोही लइ अभईने ❋ सो ताहर पर दई चलाय॥
ढाल अडाय दई ताहरने ❋ अपनी लीन्हीं चोट बचाय।
कावा देकै तब ताहरने ❋ तुरतै मारि दई तलवारि॥
अभईगिरि गये जब धरतीपर ❋ ताहर लीन्हों शीश उतारि।
मल्हना रोय उठी तुरतै तब ❋ औ बेटीते कही सुनाय॥
बात हमारी तुम मानी ना ❋ औ सागर पर आई लिवाय।
दोनों लरिका खेत जूझिगे ❋ अब को रखिहै धर्म हमार॥
बोली आभा तब दोनों की ❋ ब्रह्मै खबरि देउ पहुँचाय।

जौलौं ब्रह्मा हियँ ऐहैं ना ❋ तौलौं रुंड करैं तलवारि॥
जगे रुंड अभई रंजितके ❋ रणमें कठिन कियो संग्राम
मुर्चा फारि दियो ताहरको ❋ क्षत्री लैलै भगे परान ॥
इक हरकारा ते मल्हनाने ❋ भेजी खबरि महोबे माहिं ।
चलो साँडिया तुरत फौजते ❋ औ ब्रह्मापै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी ब्रह्मानँदको ❋ औ सागरको कह्यो हवाल।
अभई रंजित रणमें जूझे ❋ चलिकै लाश लेउ उठवाय
ताहर मारो है अभईको ❋ औ रंजितको दियो गिराय ॥

अथ ब्रह्मानन्दकी लड़ाई।

सुमिरन करिके रामचन्द्रको ❋ लैकै नाम वीर हनुमान ।
युद्ध बखानों ब्रह्मानँदको ❋ कायर सुनत होय बलवान
पाई खबरि जबहिं लश्करकी ❋ ब्रह्मानँद मन कियो बिचार
अब जो जैहैं ना सागर पर ❋ हँसिहै हमहिं सकल संसार
कियो उचित नहिं पृथीराजने ❋ जो हियँ आय बढाई रारि।
आजु सामना करि सागर पर ❋ मारिहौं खेदि खेदि चौहान
सोचि समझि यह ब्रह्मानँदने ❋ तुरत नगरची लियो बुलाय
बीरा देकै हुक्म दियो यह ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ सिगरी फौज भई तैयार ।
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ सागरकी पकरी राह ।
चलिभे क्षत्री वीररूप ह्वै ❋ डंका होत गोलमें जाय ॥
हियाँकि बातैं तौ हियँ छोड़ो ❋ अब ताहरको सुनौ हवाल।
ताहर आये फिरि मुर्चापर ❋ भूरा मुगुल शूर लै साथ ॥
कठिन मारु देखी रुंडनकी ❋ तब भूराते कही सुनाय।

लीलको झंडा फेरि देउ तुम ❋ भुइँमें गिरैं रुंड भहराय ॥
यह सुनि झंडा लियो लीलको ❋ सो रुंडन पर दियो फिराय
रानी मल्हनाके डोलापर ❋ दोनों रुंड गिरे भहराय ॥
तौलौं पहुँचे ब्रह्मानँद तहँ ❋ दोनों रुंड लिये उठवाय ।
तुरतै भेजदिये महुबेको ❋ औ क्षत्रिनते लगे बतान ॥
निमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाडन में गयो समाय
पाँव न धरियो तुम पाछेको ❋ हमरी पवनी देउ कराय ॥
धर्म राखि लेहौ हमरो जो ❋ तौ हम तलब दिहैं बढवाय
दियो बढावा रजपूतनको ❋ क्षत्री बीररूप ह्वइ जायँ ॥
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि।
सुमिरि भवानी जगरानीको ❋ लैकै हनूमान को नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ ब्रह्मानँद ❋ खट खट चलन लगी तलवारि
भेडहा पैठै जस भेडिनमें ❋ ज्यों बन सिंह बिडारै गाय
त्यों ब्रह्मानँद रणमें पैठे ❋ क्षत्रिन काटि कियो खरिहान
मुर्चन मुर्चन नाचै घोडा ❋ ब्रह्मा कहैं सुनाय सुनाय ॥
भागि न जैयो कुउ समुहेते ❋ यारौ राखियो धर्म हमार ।
ब्रह्मानँदकी तहँ धमकिनमें ❋ सब दल तिडीबिडी ह्वइजाय
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
भगे सिपाही पृथीराजके ❋ अपने छाँडि छाँडि हथियार
यह गति देखी जब ताहरने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ।
दपटनि झपटनि ब्रह्मानँदकी ❋ ताहर देखि देखि रहिजाय॥
समुहे देखैं जब ब्रह्माके ❋ ब्रह्मा कालरूप दिखरायँ ।
सोचि समुझिकै तब ताहरने ❋ इक हरकारा दियो पठाय॥
खबरि सुनावो तुम राजाको ❋ जल्दी लावैं फौज चढाय ।
जो नहिं ऐहैं वे सागरपर ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥

चलो सांडिया तब लश्करते ❋ औ बगिया में पहुँचो जाय।
तौलौं आये माहिल राजा ❋ सो पिरथी ते लगे बतान ॥
जौहर कीन्हें ब्रह्मानँद ने ❋ रणमें कठिन करी तलवारि
करौ चढाई अब ब्रह्मापर ❋ तुरतै मुश्क लेउ बँधवाय ॥
डोला लैकै चन्द्रावलि को ❋ महुबो नगर लेउ लुटवाय ।
सुनतै पिरथी उठि ठाढे भै ❋ चौंडा धाँधू लिये बुलाय ॥
हुक्म दैदियो तब जल्दी ते ❋ अबहीं फौज होय तैयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ सिगरो लश्कर भयो तयार
दुइसौ हाथी भूरा साजे ❋ दुइसौ मकुना लिये सजाय ।
इक सौ हाथी खूनी साजे ❋ इकसौ मुडिया लिये सजाय
दुइसा हाथी मुकुटबन्दनी ❋ सो सजवाये बीर चौहान।
इक सौ हाथी मस्ता कहिये ❋ सो सजवाये पिथौरा राय
आदि भयंकर को मँगवायो ❋ ताको तुरत लिये सजवाय
चकमक पत्थर को हौदा धरि ❋ रेशम रस्सा दिये कसाय॥
सिढ़ी लगाई मलयागिरि की ❋ औ चढि गये बीर चौहान।
नौसै हाथी के हलका में ❋ आदि भयंकर झूमन लाग॥
हाथी इकदन्ता सजवायो ❋ तापर चौंडा भयो सवार ।
हाथी भौंरानँद सजवायो ❋ तापर धाँधू भयो सवार ॥
मारू डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय
हाहाकारी बीतन लागी ❋ मानौ भई दिवसकी राति॥
लश्कर आयो जब सागरपर ❋ लश्कर जहाँ महोबे क्यार ।
हुक्म दियो तब पृथीराजने ❋ डोला तुरत लेउ लुटवाय ॥
खौंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने ❋ तुरतै चलन लगी तलवारि ।
लश्कर देखो पृथीराजको ❋ ब्रह्मा मया मोह दौ छांडि॥
प्राण हथेली पर धरि लीन्हों ❋ दलमें घोडा दियो बढाय ।

ज्यों किसान खेती को काटै ❋ कतरै जैसे तमोली पान॥
तैसे ब्रह्मा क्षत्रिन काटैं ❋ क्षत्री लैलै भगैं परान।
झपटनि दपटनि ब्रह्मानँदकी ❋ देखैं खडे बीर चौहान॥
सोचे पृथीराज अपने मन ❋ धनि धनि ब्रह्मा राजकुमार
बडे बडे शूर रहत महुबे में ❋ एकते एक बीर सरदार॥
देखि लडाई ब्रह्मानँदकी ❋ गुस्सा भयो चौंडिया राय।
समुहे जाय कह्यो ब्रह्माते ❋ अब तुम खबरदार ह्वइ जाउ
यह कहि गुर्ज लियो चौंडाने ❋ सो ब्रह्मापर दियो चलाय।
घोडा हटिगो ब्रह्मानँदको ❋ नीचे गुर्ज गिरो अर्राय॥
सोचन लागे ब्रह्मानँद तब ❋ समुहे ब्राह्मण खडो हमार।
हाथ चलैहौं जो ब्राह्मणपर ❋ तौ रजपूती धर्म नशाय॥
सोचि समुझि यह ब्रह्मानँदने ❋ दियो संमोहन बाण चलाय
मूर्च्छित ह्वइ तब चौंडा गिरिगे ❋ मुर्चा हटो चौंडिया क्यार
धाँधू आयो तब समुहे पर ❋ औ यह मनमें सोचन लाग
ब्रह्मा भैया हमरो लागै ❋ कैसे करौं युद्ध ब्योहार॥
जो नहिं लडौं साथ ब्रह्माके ❋ गुस्सा करैं पिथौरा राय।
यह मन समुझि लडे धाँधू तब ❋ ब्रह्मा दीन्हों बाण चलाय॥
धाँधू गिरिगे तब हौदा में ❋ सरदानि मरदानि पहुँचे आय
सरदनि बोले तब ब्रह्माते ❋ समुहे डोला देउ धराय॥
बोले ब्रह्मानँद सरदानि ते ❋ सरदनि अपनी जीभ सम्हारु
नाम जो लैहै अब डोला को ❋ मुहमें ठाँसि दिहौं तलवारि
गुस्सा ह्वइकै तब सरदानिने ❋ अपनी लीन्हीं तेग निकारि
चोट चलाई ब्रह्मानँदपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल॥
टूटि शिरोही गइ सरदानि की ❋ ब्रह्मा खैंचि लई तलवारि।
चेहरा मारो तब सरदानि को ❋ सरदानि दीन्हीं ढाल अडाय

ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❀ सर्दनि गिरे धरनिपर जाय
जूझे सरदनि जब खेतनमें ❀ मरदानि खैंचि लई तलवारि
चोट चलाई तब ब्रह्मापर ❀ ब्रह्मा लीन्हीं चोट बचाय।
धार लौटि गइ तब तेगाकी ❀ ब्रह्मा दीन्हीं तेग चलाय॥
छूटि जनेवा गौ मरदनिको ❀ ताहर घोडा दियो बढाय।
भई लडाई तहँ दोनोंते ❀ ब्रह्मा भाला दियो चलाय॥
घोडा भगाय गये ताहर तब ❀ देखैं खडे बीर चौहान।
चन्द्रभाट बोला पिरथीते ❀ ब्राह्मण भक्त ब्रह्म सरदार॥
जीति न सकि है कउ ब्रह्माते ❀ ताते हाथ लेउ हथियार।
यह सुनि सोचे पृथीराज तब ❀ धीरसिंहते कही सुनाय॥
बाँधि लेउ तुम ब्रह्मानँदको ❀ औ सब डोला लेउ लुटाय
यह सुनि चलिभे धीरसिंह तब ❀ औ ब्रह्मापे पहुँचे जाय॥
आवत देखौ धीरसिंहको ❀ तब ब्रह्मा मन कियो विचार
आजु अखाडेमें बरनी है ❀ आवत धीरसिंह सरदार॥
बडो भक्त है यहु देवीको ❀ भारीशूर जगत सरनाम।
बोले धीरसिंह ब्रह्माते ❀ तुम सुनिलेउ हमारी बात॥
डाला धरि देउ तुम खेतनमें ❀ है यह हुकम पिथौरा क्यार
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❀ सुनिये धीरसिंह बलवान॥
करो सामना तुम हमरो यहँ ❀ ऐसी तुम्हहिं मुनासिब नाहिं
हौ तुम परममित्र आल्हाके ❀ आल्हा भैया लगत हमार॥
धन्य नीति है पृथीराजकी ❀ हमपर लाये फौज चढाय।
बेटी ब्याही है हमरे सँग ❀ फिरि क्यों भूमि मँझाईआय
लानति ऐसी रजपूती पर ❀ पानी पीबेको धिरकार।
मरजी होवै जो लडनेकी ❀ तौ तुम करो सामना आय
जो नहिं इच्छा होय लडनेकी ❀ तौ समुहेते जाउ बराय।

सुनत गुस्सा ह्वइ धीरजने ❀ अपनी साँग चलाई आय ॥
चोट बचाई तब ब्रह्माने ❀ लीन्हों गुर्ज धीर सरदार ।
गुर्ज धमक्को जब ब्रह्मापर ❀ ब्रह्मा लैगे चोट बचाय ॥
गुस्सा ह्वइ तब धीरसिंहने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि
करो जड़ाका जब ब्रह्मापर ❀ ब्रह्मा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
बोले ब्रह्मा धीरसिंहते ❀ हमहूँ भक्त आबिका क्यार ।
जितने शस्त्र होयँ तुम्हरे सँग ❀ सो हमपर सब लेउ चलाय
यह सुनि सोचे धीरसिंह तब ❀ है यहु बड़ाशूर सरदार ।
चोटैं हमरी खाली परिगइँ ❀ ब्राह्मण भक्त धन्य संसार ॥
हाथी लौटायो धीरजने ❀ देखें खड़े पिथौरा राय ।
देखि हाल यह पृथीराजने ❀ दाँतन रहे अँगुरिया दाबि ॥
हाथी बढ़ायो पृथीराजने ❀ औ ब्रह्माको घेरो जाय ।
हुक्म दैदियो महाराजने ❀ सिगरे डोला लेउ लुटाय ॥
चौंडा ताहर दोनों चलिभे ❀ औ डोलनको लियो घिराय
चौंडा घेरि लियो मल्हनाको ❀ डोला सबै लिये धिरवाय
डोला घेरो चन्द्रावलिको ❀ ताहर जौन पिथौरा लाल ।
दुइसै जोड़ी बजैं नगारा ❀ बाजे तुरुही औ कंडाल ॥
कान अवाज परी लाखानिके ❀ सो ऊदनिते लगे बतान ।
हमरे मनमें अस आवत है ❀ सागर चलत विषम तलवारि
जल्दी त्यार होउ लड़िबेको ❀ अब ना राखौ देर लगाय ।
ऊदनि बोले तब ढेबाते ❀ दादा हाल देउ बतलाय ॥
बोले ढेबा तब ऊदनिते ❀ भैया जल्द होउ तैयार ।
हुक्म दैदियो तब लाखनिने ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री तुरत भये हुशियार ।
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बाँधिलिये हथियार ॥

तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्रिन धरे रकाबन पायँ।
हाथी चढैया हाथिन चढिग❀ बाँके घोडन के असवार ॥
भुरुही हथिनी त्यार कराई ❀ तापर लाखनि भये सवार।
घोडा बेंदुलाको सजवायो ❀ तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोडा मनुरथा त्यार करायो ❀ तापर ढेबा भयो सवार।
मीरा सैयद बनरस वाले ❀ घोडी सिंहिनिपर असवार
लला तमोली धनुवाँ तेली ❀ सोऊ साथ भये असवार।
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ औ सागर पै पहुचे जाय॥
लगो मोरचा जहँ धाँधूको ❀ पहुँची फौज जोगियन केरि
बोला धाँधू तब जोगिनते ❀ नाहक प्राण गँवाये आय
पाछे लौटि जाउ झाबरको ❀ इतनी मानों कही हमारि।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ औ लाखनि ते लगे बतान
कठिन लडाई है सागरकी ❀ दादा बहुत रहेउ हुशियार
हुक्म दैदियो तब लाखनिने ❀ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ खट खट चलन लगी तलवार
सुमिरन करिकै नारायणको ❀ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❀ सम्मुहे गोल गये समुहाय।
जैसे भेडहा भेडिन पैठे ❀ ज्यों बनासिंह बिडारै गाय
तैसे ऊदनि दलमें पैठे ❀ भाला नागदौनि लै हाथ।
बाइस हौदा खाली करिकै ❀ औ धाँधूपै पहुँचे जाय ॥
धाँधू देखो जब ऊदनि को ❀ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय।
गुर्ज चलायो बघ ऊदनिपर ❀ ऊदनि लैगे चोट बचाय ॥
ऐंड लगाई तब घोडाके ❀ औ मस्तकपर पहुँचे जाय।
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❀ सोने कलशा दियो गिराय
धाँधू सोचे तब अपने मन ❀ है यहु जोगी बुरी बलाय।

मुर्चा लौटि गयो धाँधू को ❋ लश्कर रेनबेन ह्वैजाय ॥
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय ॥
लम्बी धोतिन के पहिरैया ❋ तिन नारेन की पकरी राह
जिनहिं पियारी घरमें तिरिया ❋ अबहीं लाये गौनवाँचार
भस्म रमाइ तिन देही में ❋ अपने डारि दिये हाथियार
हमको मरियो ना क्षत्रिउ तुम ❋ हम भिक्षाके माँगनहार ॥
कहँ लग बरणौं मैं क्षात्रिनको ❋ क्षत्री लैलै भगे परान ।
यह गति देखी जब ऊदनिने ❋ आगे लश्कर दियो बढाय
चौंडा पहुँचो रनि मल्हनापै ❋ औ मल्हना ते कही सुनाय
हुक्म दियो है पृथीराज न ❋ रनि मल्हना को लेउ लुटाय
सो हम मानत अदब तुम्हारो ❋ नासे गहना देउ उतारि ।
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ यह पिरथी ते कहियो जाय
धर्म क्षात्रियनके नाहीं यह ❋ जो तिरियन पर डारें हाथ
काहे नाहीं तब चढि आये ❋ जब यहँ हते उदैसिंह राय ॥
यह सुनि बोल चौंडा ब्राह्मण ❋ हम ना सुनिहैं बात तुम्हारि
हार नौलखा हमको देदेउ ❋ अब ना राखौ देर लगाय
इतनी सुनते मल्हना रानी ❋ मनमें बहुत गई घबराय ।
हाथ जोरिकै आसमानको ❋ तहँ पर लागी करन विलाप
हे नारायण दीनबन्धु प्रभु ❋ स्वामी जगतकेर करतार ।
होउ सहायक यहि समयापर ❋ राखौ आजु हमारी लाज ॥
ऊदनि मिलैं कहाँ हमको अब ❋ जो असमयमें आवैं काम ।
होउ जो ऊदनि आसमानपर ❋ हमपर फाटि परौ अरराय
तौलौं आये उदनि बाँकुडा ❋ औ मल्हनापै पहुँचे आय ।
ठाढे दखा जब चौंडाका ❋ घोडा बेंदुला दियो बढाय

जोगी रूप देखि मल्हनाने ❋ अपने मनमें कियो बिचार ।
भये सहायक नारायण अब ❋ आई फौज जोगियन क्यार
चौंडा देखो जब जोगिनको ❋ तब जोगिनते कही सुनाय ।
चलै शिरोही आठ कोसलौं ❋ काहे प्राण गँवाये आय ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि।
पेंड लगाई रस बेंदुलके ❋ समुहे गोल गये समुहाय ॥
बाइस होदा खाली करिदे ❋ औ चौंडापै पहुँचे जाय ।
डपटो घोडा बघ ऊदनिने ❋ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
लकि औझड तुरतै मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय ।
मुर्चा हटिगौ तब चौंडाको ❋ सोचन लाग चौंडिया राय॥
बडे लडैया ये जोगी हैं ❋ इनते हम जीतनके नाहिं ।
मल्हना रानी को डोला जहँ ❋ तहँपर ऊदनि पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि रनि मल्हना ते ❋ भिक्षा हमहिं देउ मँगवाय ।
हाथ जोरि तब मल्हना बोली ❋ बाबा हमपर होउ सहाय ॥
हमरो डोला पिरथी लुटि हैं ❋ फिरि मडुवेको लिहैं लुटाय।
डोला लैकै चन्द्रावलिको ❋ पँचपेडनपै राखो जाय ॥
ह्वाँ घेरो है पिरथीने ❋ सो तुम बिपदा देउ हटाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम्हरी पवनी दिहैं कराय
धीरज राखौ अपने मनमें ❋ यह कहि चले उदैसिंह राय।
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❋ दादा बहुत रहेउ हुशियार॥
लाखनि सैयद को सँग लैकै ❋ पँचपेडवन पै पहुँचे जाय ।
बोले ताहर तब जोगिनते ❋ काहे प्राण गवाँये आय ॥
ऊदनि बोले तब ताहर ते ❋ हमने गंगा लई उठाय ।
कौल हारिगये हैं मल्हनाते ❋ तुम्हरी पवनी दिहैं कराय ॥
डोला धारि देउ तुम ठौरैपर ❋ इतनी मानो कही हमारि ।

हुक्म देदियो तब ताहरने ❋ इन जोगिनको देउ भगाय॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रणमें चलन लगी तलवारि।
ताहर बढ़िकै खैंचि शिरोही ❋ सो लाखनि पर दई चलाय
चोट बचाय लई लाखनिने ❋ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय।
गुर्ज चलायो जब ताहरपर ❋ ताहर घोड़ा गये भगाय॥
ऊदनि डोला चन्द्रावलिको ❋ लै मल्हनापै राखो जाय।
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ दादा सुनौ हमारी बात॥
पृथीराज घेरो ब्रह्माको ❋ चलिकै खबरि लेउ तत्काल
लाखनि ऊदनि तब धाये तहँ ❋ अब ब्रह्माको सुनौ हवाल॥
कठिन लड़ाई लखि ब्रह्माकी ❋ सोचन लगे वीर चौहान।
बोला चन्द्रभाट पिरथीते ❋ अब ब्रह्माको देउ गिराय॥
सोचि समझि तब पृथीराजने ❋ अपनी लीन्हीं लाल कमान
तब ब्रह्मानँद सोचन लागे ❋ जैसे हमाहिं रजा परिमाल॥
तैसेइ हमको पृथीराज हैं ❋ पै यह हरत हमारे प्रान।
अब चुपसाधनकीबिरिया नहिं ❋ है यहु शब्द बेधि चौहान
सोचि समझि यह ब्रह्मानँदने ❋ लीन्हों मोहन बाण उठाय।
धनुष तानि मारो पिरथीके ❋ हौदा गिरे वीर चौहान॥
हाहाकार होन लागो तहँ ❋ मूर्च्छित भये पिथौरा राय।
तौलौं ऊदनि दाखिल ह्वैगये ❋ लाखनि सैयद संग लिवाय॥
चारिहु राजा गाँजरवाले ❋ धनुआँ तेली संग तयार।
ऊला तमोली संगहि आयो ❋ बारह कुँवर बनौधे क्यार॥
राउ गोरखा बंगालेका ❋ सातनि पट्टीके सरदार।
मुरलि मनोहर कलपी वाले ❋ औ पत्यउँजके मदनगोपाल
रूपन राजा सिरउँजवाले ❋ जगमनि जिन्सीके सरदार।
चन्दन राजा दतियावाले ❋ पूरन पूराके सरदार॥

मधुकर राजा गढ चितौरके ❋ चिन्ता रुसनी के सरदार।
मोहन राजा हद्दीगढके ❋ चिन्तामनि गोरखपुर क्यार
लश्कर बढिगौ उन जोगिनको ❋ कीरति सागर के मैदान।
देखो लश्कर जब जोगिनको ❋ ब्रह्मा लौटि परे तत्काल॥
मुच्छी जागी पृथीराज की ❋ आदि भयंकर दियो बढाय।
हुक्म दैदियो फिरि पिरथी ने ❋ लश्कर कटा देउ करवाय॥
हल्ला ह्वइगौ तब दोनों दल ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि।
खटखट तेगा बाजन लागो ❋ कटिकटि गिरनलगे बहु ज्वान
रंग बिरंगे घोडा ह्वइगै ❋ क्षत्री रक्तबरन ह्वइ जायँ।
बिजुली चमकै ज्यों बादलमें ❋ त्यों रण चमकि रही तलवारि
लाखनि भुरुही दाबे आये ❋ जहँ पर खडे पिथौरा राय।
टक्कर मारी तब भुरुही ने ❋ आदि भयंकर दियो हटाय॥
सोचैं पृथीराज अपने मन ❋ हमरो हाथी दियो हटाय।
क्या बिजरासिनि यह हथिनी है ❋ है यहु जोगी बुरी बलाय
तौलौं ऊदनि समुहे आये ❋ जुझ को कंगन परो दिखाय
सोचि समझि तब पृथीराजने ❋ अपनो मुर्चा दियो हटाय॥
दक्खिन पारिनपर सागर क ❋ लश्कर परो पिथौरा क्यार
उत्तर पाटी में सागर के ❋ लश्कर परो कनौजी क्यार
डोला पहुँचि गये सागर पर ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय।
लेउ भुजरियाँ अब बहिनी तुम ❋ सो सागर में देउ सिराय॥
लई भुजरियाँ तब चन्द्रावलि ❋ सो सागर में दई सिराय।
बोलैं माहिल पृथीराजते ❋ शगुनको दोना लेउ मँगाय॥
हुक्म दै दियो तब चौंडा को ❋ जल्दी दोना लावौ जाय।
बढो चौंडिया तब आगे को ❋ तब चन्द्रावलि कही सुनाय
चौंडा लैहै जो दोना यहु ❋ खोटी पबनी होय हमारि।

ऊदनि भैया जो होते यहँ ❋ तौ यहु दोना लौते उठाय ॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❋ ऊदनि दोना लेउ उठाय ।
ऊदनि झपटे जब दोना पर ❋ तब चौंडाने कही सुनाय ॥
हाथ चलैयो ना दोना पर ❋ नाहीं लेहौं शीश उतारि ।
बोले ऊदनि तब गुस्सा ह्वै ❋ चौंडा बोलो बात सम्हारि ॥
दोना पैहो ना सागर पर ❋ चाहै कोटिन करौ उपाय ।
भाला लैके तब चौंडा ने ❋ बघ ऊदनि पर दियो चलाय
चोट बचाई तब ऊदनि ने ❋ दोना लीन्हों झपटि उठाय ।
सो पकराय दियो बहिनी को ❋ तब चन्द्रावलि लगी बतान
कहँ मैं पाऊँ अब ऊदनिको ❋ क्यहिके घुरसि भुजरियाँ देउँ
जबहिं भुजरियाँ मैं घुरसति थी ❋ म्वहिं मुह माँगो देत मँगाय
बोली मल्हना चन्द्रावलि ते ❋ बेटी सुनो हमारी बात ।
समुहे तुम्हरे जोगी ठाढे ❋ जिन यह पवनी दई कराय
धर्म हमारो इन राखो है ❋ जानौ इनहिं लहुरवा भाय ।
इनके घुरसौ जाय भुजरियाँ ❋ यह तुम मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि तुरतै लई भुजरियाँ ❋ सो ऊदनिके घुरसन लागि ।
बोले ऊदनि चन्द्रावलि ते ❋ धर्म कि बहिनी लगो हमारि
जेठो जोगी यहु ठाढो है ❋ पहले घुरसि देउ तुम जाय ।
ताके पाछे हमरे घुरसौ ❋ इतनी मानौ बात हमारि ॥
लई भुजरियाँ चन्द्रावलि तब ❋ सो लाखनि के घुरसी जाय
हाथिनी चालिस चन्द्रावलिको ❋ दीन्हीं बिहँसि कनौजी राय
लई भुजरियाँ फिरि चन्द्रावलि ❋ सो ऊदनि के घुरसी जाय
कंगन अपनो ऊदनि लैकै ❋ चन्द्रावलि को दौ पकराय ॥
देखो कंगन जब चन्द्रावलि ❋ तब मल्हनाते लगी बतान ।
यह तौ कंगन है ऊदनि को ❋ माता देखि लेउ पहिचानि ॥

कैसे पायो इन जोगिनने ❋ सुनि हँसि दियो उदैसिंहराय
चमकी बिजुली तब दाँतनमें ❋ मल्हना तुरत गई पहिंचानि ।
मिलन लगीतुरतैचन्द्रावलि ❋ नयनन बही नीरकी धार ॥
बोली जन्द्रावलि मल्हनाते ❋ हमने पहिलेइ लो पहिचानि ।
ड्योढी पहुँचे थे जोगी जब ❋ तबहीं हमने दियो बताय ॥
छोटो जोगी ऐसो लागै ❋ मानों मेरो लहुरवा भाय ।
बिना बेंदुलाके चढवैया ❋ को पिरथीको देय हटाय ॥
मल्हनारानीऔसखियनको ❋ तुरतै मिले उदैसिंह राय ॥
दोना लैलै सब काहूने ❋ सो सागरमें दिये सिराय ।
बोले पृथीराज धाँधू ते ❋ बीर भुगन्तैं कही सुनाय ॥
इक तो दोना तुम लै आवो ❋ हमरी नजरि गुजारो आय ।
दोनों शूर चले सुनते यह ❋ तब लाखनिने कही सुनाय॥
एको दोना दिल्ली जैहै ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
हुक्म देदियो तब ऊदनिने ❋ क्षत्रिउ खबरदार ह्वइ जाउ ॥
जान न पावैं दिल्लीवाले ❋ सबकी लूटि लेउ कराय ।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ तुरतै चलन लगी तलवारि॥
हाथी बढायो तब धाँधूने ❋ औ सिढियनपर पहुँचो जाय
हाथ चलैयो ना दोननपर ❋ यह ऊदनिते कही सुनाय ॥
दपटो घोडा तब ऊदनिने ❋ औ हाथीपर राखो जाय ।
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय ॥
सोचे धाँधू तब अपने मन ❋ यहु जोगी है बुरी बलाय ।
मुर्चा फेरि दियो अपनो तब ❋ बीर भुगन्ता गयो बराय ॥
लीन्हों भाला बघ ऊदनिने ❋ नोकसे दोना लिये उठाय ।
पैदल डेढ लाख पिरथीके ❋ जूझे सागरके मैदान ॥
हाथी नौसै रणमें जूझे ❋ जूझे दश हजार असवार ।

राजा टंक शूर पिरथीको ❋ जूझो समर खेतमें आय ॥
सरदनि मरदनि सूरज जूझे ❋ ऐसी बिषम चली तलवारि।
बोले माहिल पृथीराजते ❋ तुम सुनिलेउ पिथौरा राय॥
जीति न पैहौ तुम ऊदनिते ❋ तासे कूच जाउ करवाय।
जबहीं ऊदनि कनउज जैहैं ❋ तुरते खबरि दिहौं पहुँचाय॥
तीस हजार फौज महुबेकी ❋ कटिगइ सागरके मैदान।
हाथी बासठि गढ महुबेके ❋ जूझे घोडा एक हजार॥
रंजित अभई दोनों जूझे ❋ जिनके रुंडनकी तलवारि।
सुनी खबरि जब चन्देलेने ❋ पवनी ऊदनि दइ कराय॥
तुरत पालकी तब मँगवाई ❋ औ चलिभये रजा परिमाल।
झूला झूलन लगिचन्द्रावलि ❋ लैलै बच ऊदनिको नाम॥
बोले ऊदनि तब बहिनीते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात।
पवनी करवाई है लाखनिने ❋ तिनको नामलेउ यहिकाल॥
नाम बखानो तब लाखनिको ❋ गावन लागी राग मलार।
तौलौं पलकी परिमालैकी ❋ आई सागरके मैदान॥
देखि पालकी चन्देलेकी ❋ ऊदनि उठे भरहरा खाय।
चरण लागिकै परिमालैके ❋ ऊदनि माथे लिये लगाय॥
आँसू बहन लगे नैननते ❋ राजा छाती लियो लगाय।
बोले चन्देले ऊदनिते ❋ बेटा मेरे उदैसिंह राय॥
सुधि बिसराय दई हमरी तुम ❋ औ कनउजको गये रिसाय।
बिना तुम्हारे ऊदनि बेटा ❋ हमपर चढे पिथौरा राय॥
अब तुम छाँडो ना महुबेको ❋ इतनी मानौं कही हमारि।
खबरिभेजिकैतुमकनउजको ❋ आल्है तुरत लेउ बुलवाय॥
हाथ जोरि बोले ऊदनितब ❋ दादा सुनिलेउ बात हमारि।
भादौं चिरैया न घरु छाँडैं ❋ ना बनिजारा बनिजको जायँ
तब तुम सोची क्या अपनेमन ❋ जो भादौंमें दियो निकारि॥

बात मानिकै तुम माहिलकी * हमपर रूठि कियो अपमान॥
तीनि तलाकैं दईं हमको तुम * हमरे गई करेजे सालि ।
जियत महोबे हम जैहैं ना * कागा मरे हाड लै जायँ॥
यह सुनिमल्हनारोवनलागी * औ ऊदनिने कही सुनाय ।
ऊदनि तुमको हमने पाला * अपनो दूध पिलाय पिलाय॥
तुम जब जैहौ गढकनउजको * चढि हैं तुरत वीर चौहान ।
नगर महोबा वे लुटवैहैं * डोला लिहैं चन्द्रावलिक्यार
आगे कारिकै ब्रह्मानंदको * औ ऊदनिते कही सुनाय ।
हौ रखवारे तुम ब्रह्माके * अब ना लौटि कनउजै जाउ
करौ राज्य वैठ महुवेमें * तब ऊदनिने दियो जवाब॥
धीरज राखौ अपने मनमें * हमरे वचन करौ परमान ।
छिपिकै आये हम आल्हाते * हमने करो बहाना जाय॥
संग जात हैं हम लाखनिके * गाँजर खेलन हेत शिकार ।
ऐसे छिपिकै हम आये हैं * तासों हम रहिबेके नाहिं॥
लश्कर लावैं पृथीराज जब * तुरतै दीजो खबरि कराय ।
तब फिरि ऐहैं हम महुबेको * लाखनि राने संग लिवाय॥
बोली मल्हना तबलाखनिते * तुम यह पबनी दई कराय ।
बिछुरे ऊदनि हमहिं मिलाये * धनिधनि रतीभानके लाल॥
लाखनि बोलेतबबिनतीकरि * माता सब तुम्हार परताप ।
आज्ञा लैकै रनि मल्हनाते * लाखनि कूच दियो करवाय
सबको लैकै रनि मल्हना तब * रंगमहलमें पहुँची जाय॥
इतनो युद्ध भयो सागरपर * सो हमलिखिकै दियो सुनाय।
आल्हा मनौआआगेकहिहौं * यारो सुनियो कान लगाय ।
समय पाय तुम आल्हा गावौ * नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हियेमहँ * सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति (सागर पर) भुजरियोंकी लडाई समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

अथ आल्हा मनौआ।

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
लिखौं मनौआ अब आल्हाको ❋ शारद मोको होउ सहाय ॥
माहिल राजा की चुगुली में ❋ बारह बाट भये परिमाल ।
आल्हा छाये गढ़ कनउजमें ❋ महुबे बिपति रही सब काल
माहिल चलिभये गढ़ उरईते ❋ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
जहाँ कचेहरी पृथीराजकी ❋ माहिल उतरिपरे अरगाय ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ माहिल रहिगये माथ नवाय
नजरि बदलिगइ पृथीराजकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठौ उरई वाले ❋ जियको भेद देउ बतलाय।
यहसुनि माहिल बोलन लागे ❋ सुनिये पृथीराज महराज ॥
लौटि गये ऊदनि कनउजको ❋ कोऊ मर्द महोबे नाहिं ।
सूनी परी मबै बस्ती है ❋ चलिकै लूटि लेउ करवाय॥
बात मानिकै तब माहिलकी ❋ पिरथी हुक्म दियो करवाय
डंका बाजै गढ़ दिल्लीमें ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधिलिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बाँके घोडनके असवार ॥
कोउनालकिनकोउपालकिन ❋ कोऊ गज रथ भये सवार ।
ताहर गोपी चन्दन बेटा ❋ तीनौ सजिकै भये सवार ॥

हाथी साजो आदि भयंकर ❋ तापर चढ़े बीर चौहान ।
लश्कर सजिगौ सात लाखते ❋ कूचको डंका दियो बजाय
लश्कर चलिभौ पृथीराजको ❋ डंका होन गोलमें लाग ।
हाहाकारी बीतन लागी ❋ सविता रहे धुंधमें छाय ॥
सात रोजकी मंजिल करिकै ❋ महुबो धुरो दबायो आय ।
महुबो घेरि लियो जल्दीते ❋ फाटक बन्दी दई कराय ॥
बाहरको ना भीतर आवै ❋ ना भीतरते बाहर जाय ।
क्या दुख बरणौं त्यहि समयाको ❋ विपदा कछू कही ना जाय
राम बनावैं तो बनिजावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय
तम्बू तानिगै पृथीराजके ❋ कीरति सागरके मैदान ॥
कोऊ परिगयो सजुहा गढ़में ❋ कोऊ मदननालकी पारि ।
कउ कउ परिगयो कनवाँ खेरे ❋ कोउ बैरागी तालपर जाय॥
तानिगे तम्बू सब लश्करके ❋ चन्दन बगियाके मैदान ।
बोले पृथीराज माहिलते ❋ अब तुम रंगमहललौं जाउ॥
कहौ संदेशा रानि मल्हनाते ❋ अब तुम डाँड देउ भरवाय
डाँड न पैहै पृथीराज जो ❋ तौ महुबेको लिहैं लुटाय ॥
माहिल चलिभे तब लश्करते ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ।
चढ़िगइ मल्हना सतखंडापर ❋ देखी फौज पिथौरा केरि ॥
नीचे उतरी रानी मल्हना ❋ औ राजाको लियो बुलाय।
तौलौं आये माहिल राजा ❋ औ मल्हनाते लगे बतान॥
हमहिं पठायो पृथीराजने ❋ यह कहि दई पिथौरा राय।
डाँड पठाय देउ हमरो तुम ❋ नहिं हम महुबो लिहैं लुटाय
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ बीरन हमहिं देउ बतलाय
काह डाँड चहिये पिरथीको ❋ ब्योरेवार कहौ समुझाय ॥
बोले माहिल तब मल्हनाते ❋ बहिनी सुनौ हमारी बात ।

हार नौलखा पिरथी माँगत ❋ सिगरो शहर ग्वालियर क्यार
उडन बछेरा सब माँगत हैं ❋ डोला लिहैं चँद्रावलि क्यार
पारस पूजाको माँगत हैं ❋ खजुहा गढ बैठक सुखसार
यह सब माँगत पृथीराज हैं ❋ सो तुम डाँड देउ पहुँचाय
सुनतै मल्हना रोवन लागी ❋ औ माहिलते लगी बतान॥
यह कहि दीजौ पृथीराजते ❋ कापर चढे बीर चौहान
क्यों नहिं आये पृथीराज तब ❋ जब घर हते उदैसिंह राय॥
हाथी पछारे दरवाजे पर ❋ औ ब्रह्माको कियो विवाह ।
सातौ बेटा पृथीराजके ❋ बाँधे तुरत उदैसिंह राय ॥
कलश उतारि लिये द्वारेके ❋ तब कहँ हते बीर चौहान ।
तिनहिं मुनासिब यह नाहीं है ❋ जो सूनेमें घेरो आय ॥
नाहीं मरदुमी यह राजाकी ❋ जो तिरियन पर डारै हाथ।
मोहलति देदेयँ पन्द्रह दिनकी ❋ सोरहे देहैं डाँड मगाय ॥
सुनतै चलिभे माहिल राजा ❋ फाटक निकरि गये वा पार
जबहीं पहुँचे पृथीराजपै ❋ सिगरो हाल बतायो जाय
मांगी मोहलति पन्द्रह दिनकी ❋ सोरहें डाँड दिहैं भरवाय ।
बात मानि लइ तब पिरथीने ❋ अब मल्हनाको सुनो हवाल
आधीरातिके तब समयामें ❋ मल्हना पलकी लई मँगाय।
दुइ हरकारा लिये साथमें ❋ अपनो कूच दियो करवाय
चली पालकी रानि मल्हनाकी ❋ जगनेरीमें पहुँची जाय ।
गो हरकारा जगनायकपै ❋ औ जगनिकते कही सुनाय
मल्हना आई दरवाजेपर ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
जगनिक आये दरवाजेपर ❋ मल्हना छाती लियो लगाय
रोयकै मल्हना बोलन लागी ❋ हमपर चढे बीर चौहान ।
घर घर महुबो उन घिरवायो ❋ फाटक बन्द दियो करवाय॥

बिपति हमारी तुम मिटवावौ ❋ आल्है खबरि सुनावौ जाय
बोले जगनिक तब मल्हनाते ❋ तुम सुनिलेउ धर्मकी बात॥
तीनि तलाकें दई राजाने ❋ औ भादोंमें दियो निकारि।
हम जो जैहैं उन आल्हापै ❋ हमको मरिहैं तुरत बँधाय॥
तांते कनउज हम जैहैं ना ❋ हमरो करौ भरोसा नाहिं।
यह सुनि मल्हना रोवन लागी ❋ अब को रखिहै धर्म हमार
सब कोउ साथ देत सुखमें जग ❋ दुखमें कोउ न होत सहाय
बडो भरोसा म्वाहिं तुम्हरो था ❋ को अब खबरि सुनावै जाय
सुनि यह बातैं रानि मल्हनाकी ❋ तब जगनिकने कही सुनाय
घोडा हरनागर तुम देदेउ ❋ तौ हम खबरि सुनावैं जायँ
संग लियो तब जगनायकको ❋ मल्हना महुबे पहुँची आय
तुरत बुलायो ब्रह्मानँदको ❋ तौलौं आये महिल परिहार
बोली मल्हना ब्रह्मानँदते ❋ घोडा अपनो देउ मँगाय।
जगनिक जैहैं गढ कनउजको ❋ आल्हे खबरि सुनैहैं जाय॥
बोले माहिल तब ब्रह्माते ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात।
जिन घोडनपर भयो बखेडा ❋ आल्हा कनउज गये रिसाय
जगनिक लै जैहैं घोडा जब ❋ आल्हा लेहैं तुरत छिनाय।
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❋ हम ना दिहैं आपनो घोड
काढि कटारी लइ मल्हनाने ❋ सो छातीसे लई लगाय।
घोडा अपनो जो देहौ ना ❋ तौ मैं पेटुमारि मरिजाउँ॥
खि हाल यह ब्रह्मानँदने ❋ तुरतै घोडा दियो मँगाय।
ट्ठी लिखनलगी मल्हना तब ❋ नैनन बहै नीरकी धार॥
सात लाखते चढो पिथौरा ❋ लैकै खुरासान गुजरात।
जहाँ रसुइयाँ थी देवैकी ❋ तहँपर मुगल पछारे गाय॥
पीपर काटिगे हैं आल्हाके ❋ कटिगे आम लहुरवा क्यार

घरघर मह्वुबो पिरथी घेरो ❋ फाटक बन्द दियो करवाय॥
तुमबिन बिपदा हमपर परिगइ ❋ बेटा हमको होउ सहाय।
नगर महोबा जब लुटि जैहै ❋ तब का खाक बटुरिहौ आय
मोहलति माँगी पन्द्रह दिनकी ❋ सोरहें लुटि हैं नगर महोब
तुरतै आय जाउ बेटा तुम ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय
दूलह बनिहैं पृथीराज जब ❋ दुलहिनि बनै मल्हनदेरानि
डोला जैहै चन्द्रावलिको ❋ तब चलि जैहै पाग तुम्हारि
याही दिनको हम पाला है ❋ की असमयमें ऐहौ काम।
सो तुम छायरहे कनउजमें ❋ हमपर परी आपदा आय॥
देखत चिट्ठीके आवौ तुम ❋ राखौ धर्म चँदेले क्यार॥
यहि बिधि पाती लिखि मल्हनाने।जगनायक को दई गहाय।
घोडा हरनागर सजवायो ❋ तापर जगनिक भये सवार
चलिभे जगनिक तब महुबेते ❋ अब माहिलको सुनो हवाल
माहिल पहुँचे पृथीराजपै ❋ औ पिरथीते लगे बतान।
उडन बछेरन में हरनागर ❋ जगनिक चढे कनौजै जात
घोडा छीनि लेउ जल्दीते ❋ औ सब घाट लेउ घिरवाय
आल्हा ऊदनि महुबे ऐहैं ❋ तौ ना बनि है काम तुम्हार
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ चौंडा धाँधू लिये बुलाय।
हुक्म दैदियो तब दोनोंको ❋ सिगरे घाट लेउ घिरवाय॥
घोडा लावौ तुम जगनिकते ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय।
यह सुनि चौंडा धाँधू चलिभे ❋ औ लश्करको लियो सजाय
चलिकै पहुँचे तब बितवापर ❋ सिगरे घाट लिये रुकवाय।
जगनिक पहुँचे जब नदिया पर ❋ तब चौंडाने कही सुनाय॥
चुप्पै उतरि परौ घोडाते ❋ नदिया उतरि जाउ वा पार
यह सुनि जगनिक बोलन लागे ❋ ब्राह्मण बोलौ बात सम्हारि

कौन शूर है तुम्हरे दलमें ❋ हमरो घोडा लेय छिनाय।
गुस्सा ह्वइकै तब चौंडाने ❋ अपनी लीन्हीं लाल कमान
तीर निकारि लियो तरकसते ❋ औ जगनिकते कही सुनाय
जल्दी उतरौ तुम घोडाते ❋ नाहीं देहौं तुरत गिराय॥
इतनी सुनतै जगनिक झपटे ❋ औ मस्तकपर पहुँचे जाय।
ढालकि औझड जगनिक मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय
घोडा बढाय दिये आगेको ❋ तब धाँधूने दइ ललकार।
खबरदार रहियो घोडापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो मँडराय
घोडा बढायो तब जगनिकने ❋ औ हौदापर पहुँचे जाय।
धोखा देकै तब धाँधूको ❋ शिरकी कलँगी लई उतारि
जगनिक घोडा तिरछे हाँको ❋ नदिया निकरि गयो वापार
बोले धाँधू जगनायकते ❋ मैंने सुनौ चँदेले क्यार॥
हमरी कलँगी हमको देदेउ ❋ इतनी मानौ बात हमार।
बोले जगनिक तब धाँधूते ❋ हम ना कलँगी दिहैं तुम्हारि
यह दिखलैहैं हम आल्हाको ❋ यह कहि घोडा दियो बढाय
देखि हाल यह चौंडा ब्राह्मण ❋ मनमें सोचि सोचि रहिजाय
तनिकसो लरिका महुबेवालो ❋ सो कलँगी लैगयो उतारि
हियाकि बातैं तौ हियं छौंडो ❋ अब आगेको सुनौ हवाल
राम बनावैं सो बनिजावे ❋ बिगरीबनन बनन बनिजाय
जगनिक पहुँचे जब कुडहारिमें ❋ देखो पेंड बरगदा क्यार॥
तहँपर उतारिपरे घोडाते ❋ अपनोलीन्हों जीन बिछाय
बाँधो घोडा तुरत पेंडमें ❋ सोवनलाग महोबिया ज्वान
आयो माली जो बगियामें ❋ सो घोडा तन रह्यो निहारि
माली चलिभो तब बगियाते ❋ औ गंगापै पहुँचो आय॥
करी बन्दगी तब राजाको ❋ औ घोडाको कह्यो हवाल।

इमिरि बीतिगइमोरिकुडहारिमें ❋ ऐसो तुरँग न परो दिखाय
यह सुनि गंगा तुरतै चलिभै ❋ औ बगियामें पहुँचे जाय।
सोवत देखो जगनायक को ❋ तुरतै घोड़ा लाये चुराय ॥
सो बँधवाय दियो महलनमें ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय
नाम जो लैहै कोउ घोडाको ❋ तौ हम लैहैं शीश कटाय ॥
जागे जगनिक जब बगियामें ❋ तब ना घोडा परो दिखाय
सोचन लागे जगनायक तब ❋ हमरे घोंडा आयो पिछार॥
टाप देखिकै फिरि घोडाकी ❋ जगनिक कुडहारे पहुँचेजाय
पानी भरती रहैं पनिहारी ❋ सो आपुस में लगीं बतान
ऐसो घोडा हम देखो ना ❋ जैसो राजा लाये चुराय ।
कान अवाज परी जगनिकके ❋ जगनिक बीच कचेहरी जाय
करी बन्दगी तब गंगाको ❋ सो जगनिते लगे बतान ।
कहाँते आये औ कहँ जैहो ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले जगनिक तब गंगाते ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात ।
हम तो आये हैं महुबेते ❋ औ कनउजको कियो पयान
हैं हम भैने चन्देलेके ❋ औ जगनायक नाम हमार
घोडा लाये तुम बगियाते ❋ सो तुम हमहिं देउ मँगवाय।
घोडा हमरो जो देहो ना ❋ तो मैं पेटु मारि मरि जाउँ॥
गुस्सा ह्वै तब गंगा बोले ❋ जगनिक अक्किल गई तुम्हारि
चोर बनावत क्यों हमको तुम ❋ ना हम करत चोरके काम ।
बहुत बछेरा हैं हमरे घर ❋ जो चाहो सो लेउ खुलाय॥
जैसे भन चन्देलेके ❋ तैसेइ भैने लगौ हमार ।
बोले जगनिक तब गंगाते ❋ हमरो घोडा देउ मँगाय ॥
दुसरो घोडा हमहिं न चहिये ❋ आवै कौन हमारे काम ।
जो ना देहो तुम घोडाको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥

इतनी सुनते गंगा ठाकुर ❋ जगनायकको लियो बँधाय
डेढ पहर जब राति बीति गइ ❋ तब तहँ रानी परी दिखाय॥
जगनिक बोले तब बिनती करि ❋ रानी सुनो पँवारे केरि।
महुबो घेरो पृथिराजने ❋ मल्हना पाती लिखी बनाय
देकै पाती हमाहिं पठायो ❋ हम कनउजकी पकरी राह।
आल्हा ऊदनिको लैहैं हम ❋ राजा घोडा लियो चुराय॥
जो सुनि पैहैं आल्हा ऊदनि ❋ तुरतै कुडहरि लिहैं लुटाय।
यह सुनि रानी बोलन लागी ❋ घोडा तुम्हरो दिहैं दिवाय॥
भोर होतही घोडा दै दो ❋ जगनिक बहुत खुशी ह्वइजायँ
राखि लो कोडा सवा लाखको ❋ तब जगनिकने कही सुनाय
बदला लैहैं हम कोडाको ❋ लौटत कुडहरि लिहैं लुटाय
यह कहि तुरतै जगनिक चलिभे ❋ पहुँचे गढ कनउजमें जाय
पाँच दिना मारगमें लागे ❋ जगनिक पहुँचे बीच बजार
जगनिक पूँछैं हलवाइनते ❋ तुम आल्हाको देउ बताय॥
कहँपर मिलि हैं ऊदनि ठाकुर ❋ सो तुम हमें देउ बतलाय।
कियो बहाना हलवाइनने ❋ आल्हा सहर केरि कुतवाल॥
दुसरे आल्हा इक तेली है ❋ तीजे रहैं महोबे क्यार।
सो वे आल्हा ऊदनि दोनों ❋ गाँजर लडन गये चढि धाय
सो वे मारेगये गाँजरमें ❋ यह सुनि जगनिक सोचन लाग
बडा भरोसा करि आये हम ❋ सो यह काह भयो भगवान
धक्का लागि गयो जियरामें ❋ जगनिक बहुत गये घबराय
फिरि धरि धीरज आगे बढिकै ❋ औ लरिकनते पूँछन लाग
कहँपर मिलि हैं आल्हा ऊदनि ❋ साँची हमहिं देउ बतलाय
बोले लरिका तब जगनिक ते ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात॥
अबहिं कचेहरी ते आल्हा गे ❋ रिजिगिरि पहुँचे ह्वइहैं जाय

यह सुनि लौटे जगनायक तब ❋ हलवाइनको लूटन लाग ॥
भागे हलवाई तुरतै तब ❋ औ जयचंद कचहरी जायँ।
हाल सुनायो तहँ जगनिकको ❋ औ राजाते करी पुकार ॥
हुक्म देदियो तब जैचँदने ❋ औ लाखनिते कही सुनाय।
जल्दी जाय बांधि लरिकाको ❋ हमरी नजरि गुजारो आय॥
भुरुही हाथिनी पर लाखनि चढ़ि ❋ लीन्हें साथ बीस असवार
चलिभे लाखनि तब बँगलाते ❋ औ बजारमें पहुँचे जाय ॥
समुहे देखो जगनायकको ❋ लाखनि राना कही सुनाय।
हथिनी मस्ता यह हमरी है ❋ अपनो घोड़ा जाउ हटाय॥
सुनतै जगनिक बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ कनउजीराय
कद्दर घोड़ा ना हटिबेको ❋ अपनी हथिनी जाउ हटाय
लाल कमान लई लाखनि तब ❋ औ जगनिकते कही सुनाय
पाँव बढ़ैहो जो आगेको ❋ तौ हम घोड़ा लिहैं छिनाय॥
बोले जगनायक गुस्सा ह्वै ❋ राना सुनो हमारी बात ।
नगर महोबा इक बस्ती है ❋ जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
हम हैं भैने चन्देलेके ❋ औ जगनायक नाम हमार ।
है यह घोड़ा ब्रह्मानँदको ❋ भेजो हमहिं मल्हनदे रानि॥
जाय मनै हैं हम आल्हाको ❋ अटको काज चँदेले क्यार ।
कौन शूरमा है धरती पर ❋ जो यह घोड़ा लेय छिनाय
सुनी बात जब यह जगनिककी । लाखनि मनमें गे खिसियाय
बोले लाखनि तब जगनिकते ❋ भैने सुनो हमारी बात ॥
यह ना कहियो तुम आल्हाते ❋ की लाखनिने गही कमान।
ताना देहैं हमहिं उदैसिंह ❋ ह्वै है जियते मरन हमार ॥
बोले लाखनिते जगनिक तब ❋ ना हम हीनी कहैं तुम्हार ।
इतनी कहिकै करी बन्दगी ❋ औ रिजिगिरिकी पकरी राह

लाखनि पहुँचे तब बँगलामें ❋ औ राजाते कह्यो हवाल।
जगनिक पहुँचे जब रिजिगिरिमें। फाटक बीस कदम रहिजाय
तुरतै धावन गौ आल्हापै ❋ औ आल्हाते कही सुनाय।
जगनिक आये हैं द्वारेपर ❋ सो हरनागर पर असवार॥
सुनतै आल्हा बोलन लागे ❋ हमहिं न सांची परत दिखाय
जगनिक औते जो रिजिगिरिको ❋ लौते घोडा तुरत फँदाय
देर लागिगै जब धावनको ❋ जगनिक घोडा दियो फँदाय
जहाँ अखाडा था इन्दलको ❋ जगनिक तहाँ पहूँचे जाय॥
जवहीं देखो जगनाक को ❋ इन्दल बहुत खुशी ह्वइ जायँ
इन्दल पूंछो जगनायकते ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
बोले जगनिक तब इन्दलते ❋ पहिले आल्हैं देउ मिलाय।
कुशल छेम कहि हैं पाछे हम ❋ यह सुनि इन्दल चले लिवाय
मूरति देखी जब जगनिककी ❋ आल्हा छाती लियो लगाय
आल्हा पूंछी जगनायकते ❋ सबकी कुशल देउ बतलाय
यह सुनि पाती मल्हनावाली ❋ खोलिकै आल्है दइ पकराय
पाती बाँची सुनि आल्हाने ❋ आल्हा मनमें गै घबराय॥
पूँछन लागे बघ ऊदनि तब ❋ काहे बदन गयो मुरझाय।
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❋ मह्वो पिरथी लियो घिराय
खाली करि दौ दशपुरवाको ❋ जल्दी तुम महलनलौं जाउ
त्यार कराय लेउ भोजन तुम ❋ यह सुनि गये उदैसिंह राय
त्यार रसोई तहँ करवाई ❋ औजगनिकको पठयो बुलाय
बोले जगनायक आल्हाते ❋ अबहीं फौज लेउ सजवाय
त्यारी करि देउ जब चलिबेकी ❋ तब हम जेयँ लिहैं ज्यौनार
सुनतै हुक्म दियो आल्हाने ❋ अबहा फौज होय तैयार॥
आल्हा ऊदनि ढेबा इन्दल ❋ औ जगनायक संग लिवाय

पाँचौ पहुँचि गये चौकामें ❋ सुनवाँ परसे थार अगार ॥
लई बिजनियाँ कर फूलनकी ❋ देवै करने लगी बयारि ।
कौर उठावतही जगनिकके ❋ जब सुधि आई बीर मलिखान
नैनन आँसू ढरकन लागे ❋ तब देवैने कही सुनाय ।
धीरज राखौ जगनिक बेटा ❋ गढ महुबे को लिहौ बचाय
बोली सुनवाँ तब जगनिकते ❋ तुम सिरसाको कहौ हवाल
तब जगनायकने सिरसाको ❋ सिगरो हाल दियो बतलाय
माहिल राजा उरईवाले ❋ तिन सब लीन्हों भेद बनाय
सौंधे जियकी ब्रह्मा रानी ❋ तिन सब भेद दियो बतलाय
माहिल पहुँचे तब दिल्ली में ❋ सिगरो भेद कह्यो समुझाय
करी चढाई फिर पिरथीने ❋ सिरसा घूरो लियो दबाय
ऊभे खुदवाये घूरेपर ❋ तिनमें साँगें दई गडाय ।
घास बिछाय दई तिन भीतर ❋ ऊपर पटपर दियो कराय
धोखा देकै नर मलिखे को ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय
ऊभे पार खडे ताहर थे ❋ तिनसों लडन चले मलिखान
घोडी समाय गई ऊभे में ❋ घोडी घायल भई बनाय ।
पद्म फाटिगौ नर मलिखेको ❋ जूझे खेत बीर मलिखान॥
मदन गडरिया मन्नागूजर ❋ सुलिखे जूझि गये मैदान ।
सती ह्वइ गई गजमोतिनि तहँ ❋ ब्रह्मा दीन्हें प्राण गँवाय ॥
इतनी सुनतै परलै ह्वइ गइ ❋ रोवन लगे उदैसिंह राय ।
आल्हा ढेबा इन्दल जगनिक ❋ रोवन लागे जार बेजार ॥
हाहा करि सब रोवन लागे ❋ सिगरो रोय उठो रनिवास
आल्हा आये दरवाजेपर ❋ बाडन जीन दियो उतराय
जगानिक गै द्वारेपर ❋ औ आल्हाते कही सुनाय
काहे जीन उतारि दियो तुम ❋ सो तुम हाल देउ बतलाय

बोले आल्हा तब जगनिकते ❋ घटिहा बसै रजा परिमाल ।
मलिखे मारेगे सिरसा में ❋ नाहीं खबरि दई पहुँचाय ॥
हमहिं निकारि दियो भादों में ❋ कीन्हों रहै कौन अपराध।
जियत न जैहैं हम महुबे को ❋ कागा मरे हाड ले जायँ ॥
बोले जगनिक तब आल्हा ते ❋ जल्दी त्यारी लेउ कराय ।
जो ना चलि हौ तुम महुबे को ❋ तौ मैं पेटुमारि मरि जाउँ ॥
देवै समुझावै आल्हा को ❋ बेटा मानौ बात हमारि ।
जल्दी चले जाउ महुबे को ❋ राखौ धर्म चँदेले क्यार ॥
बात न मानी तब आल्हाने ❋ देवै गई उदैसिंह पास ।
बोली देवै तहँ ऊदनि ते ❋ बेटा जल्द महोबे जाउ ॥
बहुतै समुझायो आल्हा को ❋ तिन ना मानी कही हमारि।
सुनतै ऊदनि बोलन लागे ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
जेठो भैया बाप बरोबारि ❋ आल्हा पठवैं तौ हम जायँ ।
देवै बोली तब ऊदनि ते ❋ पालो तुमहिं मल्हनदे रानि
जो लुटि जैहै नगर महोबा ❋ जगमें ह्वइ है हँसी तुम्हारि ।
याही दिन को मल्हना पालो ❋ की गाढे में ऐहैं काम ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ माता सुनौ हमारी बात ।
कही न मनि हैं हम आल्हा की ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय
यह सुनि देवै बोलन लागी ❋ रोवन लागी जार बेजार ।
होती बेटी जो हमरे इक ❋ कोइ राजा के जाती ब्याहि॥
कुम्मक लौती त्यहि राजा ते ❋ औ महुबे को देतिउँ पठाय
सुनी बात जब यह देवै ते ❋ मानहुँ लग्यो करेजे बान ॥
बोलन लाग्यो उदनि बांकुडा ❋ माता मनि हौं बात तुम्हारि
अकिलो जैहौं मैं महुबेको ❋ यह कहि चले उदैसिंह राय ॥
ऊदनि पहुँचे जब आल्हा पै ❋ औ आल्हा ते लगे बतान ।

जल्दी साजि चलौ दादा तुम ❋ अब ना राखौ देर लगाय॥
गुस्सा ह्वइकै आल्हा बोले ❋ हम ना जैहैं नगर महोब ।
घटिहा राजा चन्देला है ❋ सिरसा जूझिगये मलिखान
खबरि पठाई नहिं हमरे ढिग ❋ औ भादों में दियो निकारि
सुनतै ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
बाँसन मारो तुम दादा ग्वहिं ❋ जल्लादनको दौ सौंपाय ।
तापर गुस्सा भये चँदेले ❋ औ भादों में दियो निकारि॥
जब रिस दूरि भई राजाकी ❋ तब जगनिकको दियो पठाय।
जल्दी त्यार होउ दादा तुम ❋ इतनी मानो कही हमारि॥
गुस्सा ह्वइ तब आल्हा बोले ❋ चाहै कोटिन करौ उपाय ।
जियत महोबे हम ना जैहैं ❋ कागा मरे हाड ले जायँ ॥
तडपे ऊदनि तब आल्हा ते ❋ आधी फौज देउ बँटवाय ।
संग पठावौ तुम इन्दल को ❋ माया लेउँ तिहाई बाँटि ॥
हँसी खुशी ते जो ना देहौ ❋ तौ मैं कठिन करौं तलवारि
हम तौ जैहैं गढ़ महुबे को ❋ रखि हैं धर्म चँदेले क्यार॥
ढेबा समुझायो आल्हा को ❋ मानौ बात उदैसिंह केरि ।
आल्हा बोले तब ढेबा ते ❋ जान न दिहैं कनौजी राय
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम जैचन्द कचेहरी जाउ
आज्ञा मांगि लेउ राजा ते ❋ औ महुबे को होउ तयार ॥
हाथी मँगवायो आल्हा ने ❋ तापर तुरत भये असवार ।
आल्हा पहुँचे जब बँगला म ❋ औ जैचँदको करी सलाम॥
नजरि बदलिगइ तब जैचँदकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ।
आवौ बैठो यहँ आल्हा तुम ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥
हाथ जोरि तब आल्हा बोले ❋ औ महुबेको कह्यो हवाल ।
जगनिक आये हैं महुबेते ❋ आज्ञा देउ महोबे जायँ ॥

गुस्सा ह्वइ तब जैचँद बोले ❀ औ आल्हाते लगे बतान।
लूटि करी जो तुम गाँजरमें ❀ सो महुबे में दई पठाय॥
खायकै मोटे भै रिजिगिरिमें ❀ तब महुबेको भये तयार।
लेखा देउ सबै गाँजरको ❀ यह कहि कैद दई करवाय
आल्हा भेज्यो तब रुपनाको ❀ तुम ऊदनि ते कहौ हवाल।
उनहीं पाँयन रुपना चलिभो ❀ औ ऊदनि पै पहुँचो आय
हाल सुनायो तब आल्हाको ❀ जैचँद आल्है लियो बँधाय
लेखो माँगत हैं गाँजरको ❀ जल्दी उनाहिं देउ समुझाय
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❀ घोडा बेंदुला लियो सजाय
देवै माता पूँछन लागी ❀ अब तुम कहँको भये तयार
बोले ऊदनि तब देवै ते ❀ माता सुनौ हमारी बात।
आल्हा गये रहैं जैचँदपै ❀ औ महुबेको कह्यो हवाल॥
आज्ञा माँगी जब जैबेकी ❀ तब उन कैद लई करवाय।
लेखो माँगत हैं गाँजर को ❀ सो हम उन्हैं दिहैं समुझाय
दुसरी करिहैं जो हमरे सँग ❀ तो सब जैहैं काम नशाय।
तब देवै समुझावन लागी ❀ बेटा करौ अधीनी जाय॥
आज्ञा लेकै हँसी खुशीते ❀ तब महुबेको होउ तयार।
संग लेउ तुम जगनायकको ❀ तब जगनिकने कही सुनाय
सुथरी बैठक है जैचँदकी ❀ मैले कपडा भये हमार।
कपडा मँगवाये इन्दल के ❀ सो जगनिकको दै पकराय॥
कपडा पहिरे सो जगनिकने ❀ औ हरनागर लियो सजाय
दोनों चाढिगे तब घोडनपर ❀ गलियन घ्वाड नचावत जायँ
जितनी सखियाँ थीं छज्जनपर ❀ सो सब मोहि मोहिरहि जायँ
सुनी खबारि जब राजा जैचँद ❀ द्वारे हाथी दिये ढिलाय॥
जबहीं पहुँचे दरवाजेपर ❀ तब ऊदनिने कही सुनाय।

हाथी पछारि देउ जगनिक तुम ❋ जगनिक उतरि परे अरगाय
भाला लै लौ जगनायकने ❋ औ हाथिनको दियो पछारि
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे ❋ फाटक निकारि गये वा पार
जगनिक ऊदनि दोनों पहुँचे ❋ जहँ दरबार कनौजी क्यार
उतरे ऊदनि रस बेंदुलते ❋ औ जगनिक ते लगे बतान
जबहिं बुलावैं तुमहिं कनौजी ❋ करियो तबहिं बंदगी जाय
तबा सात राजा गड़वाये ❋ तिनपर साँग चमक्की आय॥
यह कहि ऊदनि आगे बढ़िगे ❋ औ राजाके समुहे जाय ।
करी बन्दगी बघ ऊदनि ने ❋ औ बिनती करि कही सुनाय
सात लाख ते चढ़ो पिथौरा ❋ महुबो नगर लियो घिरवाय
चिट्ठी भेजी रनिमल्हनाने ❋ आज्ञा देउ महोबे जायँ ॥
तुरत बचे हैं हम महुबेको ❋ रखि हैं धर्म चँदेले क्यार ।
सुनतै जैचँद बोलन लागे ❋ अब तुम ऊदनि गये भुटाय
गंगाजल पीयो कनउजमें ❋ नित गंगाके करि अस्नान।
गेहूँ खाये तुम गाँजरके ❋ लूटिकि माया लइ पँजियाय
लेखो बतलावो गाँजरको ❋ तब महुबेको होउ तयार ।
तब फिरि ऊदनि बोलन लागे ❋ राजा सुनो हमारी बात ॥
बारह बरस लड़े गाँजरमें ❋ तुम नहिं पाई एक छदाम ।
धन्यकि छाती थी आल्हाकी ❋ गाँजर पैसा लियो भराय॥
सिगरे राजा गाँजरवाले ❋ बाँधिकै तुमको दै सौंपाय ।
दौलति लाये जो गाँजरते ❋ ओ सब तुम्हरे धरी अगार
तीनि महीना औ तेरह दिन ❋ तंग न छुटा बछेरन क्यार
लाज तुम्हारी हमने राखी ❋ सिगरे राजा लिये बँधाय॥
घोड़ा पपीहा घायल ह्वैगो ❋ ताको मोल देउ मगवाय ।
जोगा भोगा दोनों जूझे ❋ तिनको अब तुम देउ जिआय

लेखा यहु है गाँज़रवाला ❀ सो तुम समुझि लेउ महराज
कैद कराई क्यों आल्हाकी ❀ सो तुम हाल देउ बतलाय
घोडा पपीहा के बदले में ❀ भुरुही हथिनी लिहौं खुलाय
जोगा भोगा के बदले में ❀ जैहौं लाखनि साथ लिवाय
गंगा कीन्हीं लाखनि राना ❀ महुबे चलि हैं संग तुम्हार
हँसी खुशी ते आज्ञा दै देउ ❀ नाहीं कठिन करौं तलवार
बोले जैचँद तब ऊदनिते ❀ हमने कियो हँसौआ आज
साँची जानी बच ऊदनि तुम ❀ धनि धनि दस्सराजके लाल
जबहीं जैहौ तुम महुबे को ❀ अपनो लश्कर दिहौं सजाय
छकरन माया तुमको देहौं ❀ तुरतै जैयो नगर महोब ॥
लाखनि ह्वैहैं रनि तिलका वर ❀ तिनने माँगि लेउ तुम जाय
कौन खबरि लायो महुबेकी ❀ सो तुम अबहीं लेउ बुलाय॥
तुरत बुलायो तब जगनिकको ❀ सो समुहे पर पहुँचे जाय।
करी बन्दगी जगनायक ने ❀ तब हँसि कही कनौजी राय॥
भेने आवो चन्देले के ❀ औ सब हाल कहो समुझाय
कै यह बखतर माँगिकै लाये ❀ या काहू के लाये उठाय ॥
तापर ज्वाब दियो जगनायक ❀ राजा सुनौ हमारी बात ।
माँगिकै नाहीं यह लाये हम ❀ ना हम बखतर लाये उठाय
बडे बडे जोधा हमने जीते ❀ तिनके बख्तर लिये उठाय।
इतनी कहिकै साँग धमक्की ❀ सातो तवा तोरि धँसि जायँ
देखि हाल यह राजा जैचँद ❀ मुहमें रहे अँगुरिया दाबि ।
बडे बडे जोधा हैं महुबे में ❀ जिनते हारि गई तलवारि
हाल सुनायो फिरि जगनिकते ❀ औ हँसि चले उदयसिंह राय
जाय पहूँचे द्रुउ लाखनि पै ❀ औ लाखनि ते लगे बतान
चढो पिथौरा दिल्लीवालो ❀ घर घर महुबो लियो घिराय

चिट्ठी पठई रानि मल्हनाने ❋ हम महुबे को भये तयार॥
जल्दी त्यार होउ हमरे सँग ❋ अब ना राखौ देर लगाय ।
तब हँसि लाखनि बोलन लागे ❋ हम नाछोंडि हैं साथ तुम्हार
पै तुम पूंछि लेउ तिलका ते ❋ तब हम चलि हैं संग तुम्हार
दोनों चलिभे तब महलन को ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
पूंछे रानी बघ ऊदनि ते ❋ कहांकि त्यारी भई तुम्हारि
हाथ जोरि तब ऊदनि बोले ❋ माता सुनौ बात धरि ध्यान
सात लाख ते चढो पिथौरा ❋ महुबो नगर लियो घिरवाय
संकट परिगौ चन्देले पर ❋ मल्हना पाती दई पठाय ॥
सो हम जैहैं नगर महोबे ❋ लाखनि जैहैं संग हमार ।
आज्ञा देदेउ सो माता तुम ❋ तब तिलका ने कही सुनाय
बारह रानिन को इकलौता ❋ औ सोरह को सर्ब सिंगार।
आस लकरिया इक राजा की ❋ सो तुम मानो कही हमारि
संग लेउ ना तुम लाखनिको ❋ रानी देउ कुँवरि के लाल ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
लाखनि प्यारे बहुत तुमहिं हैं ❋ सो तुम घरमें लेउ बिठाय।
हम ना प्यारे थे देवै के ❋ जो गाँजर को दिये पठाय
कठिन लड़ाई करि गाँजरमें ❋ गाँजर पैसा लियो भराय ।
तंग न छूटी कोइ घोडाकी ❋ साढे तीनि मास लग जाय
गंगा कीन्हीं हमते लाखनि ❋ महुबे चलिहैं साथ तुम्हार ।
कायल ह्वै तब तिलका बोली ❋ बेटा सुनो हमारी बात ॥
तब लौं बालक मात पिताको ❋ जौलों होय न वाको ब्याह
ब्याह भये पर तिरिया मालिक ❋ तासे पूंछि लेउ तुम जाय॥
सुनते लाखनि ऊदनि चलिभे ❋ औ अंटा पर पहुँचे जाय।
बोले लाखनि तहँ बाँदी ते ❋ ऊपर खबरि देउ पहुँचाय ॥

बाँदी चढिगइ तब ऊपरको ❀ रानी सोय रही त्यहि देखि
सोचिकै बाँदीने तुरतै तब ❀ सुन्दर चन्दन लियो उतारि
सोइ लगाय दियो माथेपर ❀ औ ऊपरते करी बयारि।
ठंढक पहुँची जब माथेपर ❀ तुरतै नैना दिये उघारि॥
समुहे देखो जब बाँदी को ❀ तब कुसुमाने कही रिसाय।
तूने काची नींद जगायो ❀ तब बाँदीने दियो जवाब॥
हमहिं पठायो है तिलकाने ❀ नीचे ठाढे कंत तुम्हार।
खोलि खिरकिया तब देखतही ❀ मनमें बहुत खुशी ह्वइ जाय
सब सिंगार कियो रानीने ❀ औ बाँदीने कही सुनाय।
जल्दी लावौ तुम बालमको ❀ बाँदी तुरत पहूँची जाय॥
बोली बाँदी तब लाखनिते ❀ ऊपर जाउ कनौजी राय।
लाखनि चढिगे तब ऊपरको ❀ चारों नैन एक ह्वइ जायँ॥
मूर्च्छित होइगे लाखनि राना ❀ तब रानीने कही सुनाय।
नैनके मारे तुम मूर्च्छित भे ❀ रण तुम काह करौ तलवारि
जगी मूर्च्छा जब लाखनिकी ❀ तब रानी यह पूँछन लागि
कौन हेत दिनमें आये हौ ❀ सो तुम हमें देउ बतलाय॥
बोले लाखनि तब रानीते ❀ पिरथी घेरो नगर महोब।
पाती भेजी रनि मल्हनाने ❀ आल्हा जैहैं नगर महोब॥
हमहूँ संग जात ऊदनिके ❀ सो तुम हुक्म देउ फरमाय।
सुनतै कुसुमा बोलन लागी ❀ स्वामी सुनौ हमारी बात॥
बादल उमडत हैं चारों दिशि ❀ निशिमें रहति अँधेरियाछाय
जब सुधि ऐहै हमहिं तुम्हारी ❀ तब हम कारि हैं कौनउपाय
झींगुर दादुर बोली बोलि हैं ❀ लगि हैं हिये कामके बान।
बिरह हूक उठि है जियरामें ❀ तब को हरि है पीर हमारि
घटा छाय रहि है सबही दिशि ❀ अकिले नींद न ऐहै मोहिं

बिजुली चमकि चमकि रहिजैहै ❋ जियतै होइ है मरन हमार
ताते अबहिं न जाउ कंत तुम ❋ इतनी मानो कही हमारि ।
पिरथी घेरो नगर महोबो ❋ तुम ना जावो कंत हमार ॥
तुम घिरि जैहौ दलके भीतर ❋ तब तुम करिहौ कौनउपाय
बोले लाखनि तब कुसुमाते ❋ रानी सुनौ हमारी बात ॥
खाँडा बिजुलिया हम दै जैहैं ❋ सोई जनियो कंत हमार ।
तापर रानी कही रानीनि ❋ ओसन कैसे बुझे पियास ॥
हमहूँ चलि हैं संग तुम्हारे ❋ महुने दिखि हैं जूझ अथाय
गुस्सा ह्वै तब लाखनि बोले ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि
संगमें डोला जो लै जैहैं ❋ हमको हँसि है सकल जहान
तीनि घरी के हम पाहुन हैं ❋ ताते खेलौ पंसासार ॥
लैके चौसर तब कुसुमाने ❋ तुरतै तहँपर दई बिछाय ।
खेलत ह्वै गयो डेढ़ पहर तब ❋ लाखनि उठे भरहरा खाय
पूँछन लागीं रानी कुसुमा ❋ काहे तुरत उठे महराय ।
बोले लाखनि तब रानीते ❋ नीचे खड़े उदैसिंह राय ॥
डेढ़ पहर बीतो अंटापर ❋ तबहीं उझकि देखिकै रानि ।
बोलन लागी बच ऊदनिते ❋ तुम सुनि लेउ उदैसिंह राय
हठ ना ठानो तुम बालमसँग ❋ ना लै जाउ आपने साथ ।
चुरियाँ हमरी अम्मर करि देउ ❋ इतनी मानो कही हमारि ॥
ना ये जानैं कठिन लड़ाई ❋ ना कहुँ करी कठिन तलवारि
ताते मानो बात हमारी ❋ ना लै जावौ कंत हमार ॥
माया चहिये जो तुमको कछु ❋ सो हम छकरन देयँ भराय
फौज कटीली जो चहिये कछु ❋ सो लै जाउ आपने साथ ॥
पै नहिं संग लेउ बालमको ❋ इतनी मानो बिनय हमारि ।
जो कहुँ बालम मारे जैहैं ❋ बेड़ा कौनु लगै है पार ॥

तापर ज्याब दियो ऊदनिने ❋ रानी सुनौ कनौजीक्यार।
पगिया बदली राजघाट में ❋ औ छाती लग गंग मँझाय
कौल करार कियो लाखनिने ❋ हमहूँ चलि हैं साथ तुम्हार।
सो हम ले जैहैं लाखनिको ❋ रखि हैं धर्म चँदेले क्यार॥
तब तौ कुसुमा बोलन लागी ❋ आल्है डसै कालिया नाग
भरी जवानी इन्दल मारियो ❋ तुमहूँ मरौ उदैसिंह राय॥
जो मैं जनती ऐसी ह्वइ है ❋ औतै देती तुमहिं निकारि।
जोडी हमरी तुम बिछुराई ❋ घाटिहा पूत दिवलदे क्यार
बोले ऊदनि तब गुस्सा ह्वइ ❋ लाखनि सुनौ हमारी बात
रूप देखिकै तुम रानी को ❋ मोहित ह्वैगै हमहिं भुलाय
अब तुम बैठि रहौ अंटापर ❋ अपने छोरि धरौ हथियार
जब सुधि ऐहै तुमहिं यहांकी ❋ तब धरि दिहौ ढाल तलवारि
कायल ह्वैकै तब लाखनि ने ❋ पाँसे तरतै दिये फिंकाय।
तुरतै लाखनि त्यारी कीन्हीं ❋ तब कुसुमाने हाथ उठाय॥
ऊपर चितै कही ब्याकुल ह्वइ ❋ बहिनि बदरिया होउ सहाय
कारी बदरिया तुमको सुमिरौं ❋ कौंधा बीरनकी बलि जाउँ
झिमिकिकै बरसौ तुम अंटापर ❋ कंता आजु रैनि रहि जायँ
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि
कारी बदरिया सारी लागै ❋ कौंधा लागै सार हमार।
डारि मोमियाँ देउँ भुरुहीपर ❋ बदरै देत चुनौती जाउँ॥
देर न करि हैं हम अंटापर ❋ बीतै घरी घरी पर ब्यार।
फिरिकै रानी बोलन लागी ❋ कंता सुनौ हमारी बात॥
पिंजरा साथ लेउ चिडियनके ❋ जिनको प्यार करौ दिनराति
खिरकी खोलि दइ लाखनिने ❋ औ सब दीन्हैं लाल उडाय
दावन पकरो तब कुसुमान ❋ औ लाखनिते कही सुनाय।

सोई पृथीराज दिल्ली के ❋ जिनने कठिन कियो संग्राम
डोला लैगे संयोगिनि को ❋ काहे न कियो सामना जाय
गुस्सा ह्वइ तब लाखनि बोले ❋ औ रानी को दियो जवाब
दासी कन्या संयोगिनि को ❋ पृथीराज लै गये चोराय।
बदला लेहौं मैं ताही को ❋ तब छाती को डाहु बुझाय
तीनि बरस की मेरी उमिरि थी ❋ नाहीं कमर धरी तलवारि
तब क्या करते ना समुझी में ❋ सोई अब हम भये तयार
डोला लेहैं हम अगमा को ❋ रानी धीर धरो मनमाहिं।
फिरिकै कुसुमा बोलन लागी ❋ स्वामी दूध धरो बिलखाय
करै रसोई माता तिलका ❋ सो तुम जेइँ लेउ ज्यौनार
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❋ हमको भोजन जहर समान
रुधिरधार सम हमहिं दूध है ❋ कैसे जेइँ लेयँ ज्यौनार।
नदि वितवेपर हमारि रसोई ❋ परसै हमहिं चौंडिया राय
सोई खैहैं हम नदियापर ❋ फिरि कुसुमाने कहा सुनाय
चटक चूनरी ना मैली भइ ❋ ना धोबीघर गयो पटोर॥
लाज न छूटी मेरे नैननकी ❋ कंता छाँडि चले परदेश।
अबके बिछुरे फिरि कबमिलिहौ ❋ स्वामी हमहिं देउ बतलाय
बोले लाखनि तब रानी ते ❋ रानी सुनौ हमारी बात।
चारि महीना के बीतेपर ❋ पँचयें हेरिऔ बाट हमारि
सुनतै कुसुमा बोलन लागी ❋ हमरो जोबन गो कुम्हिलाय
सगुन हमारो खाली परिगो ❋ अब ना मिलि हैं कंत हमार
थोरे दिनकी यह जोडी थी ❋ सो ब्रह्माने दइ बिछुराय।
बारी उम्मिरि मो बिरहिनिकी ❋ बेडा कौनु लगै है पार॥
हाय बिधाता यह कैसी भइ ❋ यह दुख हमहिं दियो करतार
लाखनि समुझायो रानीको ❋ मनमें धीर धरो महरानि॥

बिना मीच कोऊ मरि है नाहिं ❋ सोतुम समुझि लेउ मनमाहिं।
सरग मडैया सब काहूकी ❋ कोऊ आजु मरै कोउ कालिह॥
शूर प्राण खोवत रणसन्मुख ❋ कायर भागत प्राण बचाय।
काज पराये जो मरिजैहैं ❋ ह्वै है नाम प्रगट संसार॥
घरमें रहिकै जो मरि जैहैं ❋ कोऊ न लैहै नाम हमार।
यह सुनिकुसुमाबोलनलागी ❋ स्वामी खेलौ जूझ अघाय॥
काम बनावौ चन्देलेको ❋ पै इक बचन सुनौ दै कान।
पाँव पिछारू ना धरियो तुम ❋ नहिं क्षत्रीपन जाय नशाय॥
जो सुनि पैहौं भगे कनौजी ❋ तौ मैं पेट्ट मारि मरि जाउँ।
रणके सन्मुख जो मरि जैहौ ❋ ह्वइहौं सती तुम्हारे साथ॥
यह सुनिहँसिकैलाखनि बोले ❋ रानी बचन करौ परमान।
इन्द्र डोलि जायँ इन्द्रासनते ❋ औ शिव डोलि जाय कैलाश
लाखनि डोलनके नाहीं हैं ❋ चहै तनधजी धजी उडि जाय।
मोहिं कसममाता तिलकाकी ❋ औ जयचँदकै रक्त नहाउँ॥
कटि कटिमांसागिरै धरनी पर ❋ पै ना धरौं पिछारी पाँव।
फिरि यह बोली कुसुमा रानी ❋ परहुल दिया बुझाये जाउ॥
जो अंटाते देखि परत है ❋ ताको खटका देउ मिटाय।
सिंहा ठाकुर परहुलवाला ❋ ताको खटकाहमाहिं सिवाय॥
बोले लाखनि तब रानीते ❋ पहिले दिया दिहैं बुझवाय।
धीरज दैकै रानि कुसुमाको ❋ औ चलि भये कनौजी राय
संगै चलिभै उदनि बाँकुडा ❋ लाखनि डंका दियो बजाय।
कान अवाज परी तिलकाके ❋ सो द्वारेपर पहुँची आय॥
पूँछै तिलका तब लाखनिते ❋ कहँकी त्यारी दई कराय।
बोले लाखनि हाथ जोरिकै ❋ हम महुबेको भये तयार॥
यह सुनि बोलीरानी तिलका ❋ कुसुमैं संग लिवाये जाउ।

बोले लाखनि तब तिलकाते ❋ माता बोलौ बात सम्हारि॥
हँसी हमारी जगमें होइ है ❋ यहकहि हँसि है सकलजहान
बेनचक्कवै को नाती है ❋ डोला संग पद्मिनी क्यार ॥
पृथीराज यह ताना देहैं ❋ कुसुमा रानी तुम्हरे साथ ।
यहकहिचलिभेलाखनिराना ❋ औ जैचँदपै पहुँचे जाय ॥
ऊदनि लाखनि करी बन्दगी ❋ हाथ जोरि यह कही सुनाय।
आज्ञा देदेउ हँसी खुशीते ❋ महुबे कूच जायँ करवाय ॥
सोने सिंहासन जैचँद बैठे ❋ बैठे बड़े बड़े उमराव ।
गाँजर वाले चारिहु राजा ❋ बारह कुँवर बनौधे क्यार ॥
लला तमोली धनुआँ तेली ❋ मीरा सैयद बनरस क्यार ।
यह सब बैठे थे बँगलामें ❋ सबते जैचँद कही सुनाय ॥
सबको सौंपत हौं लाखनिको ❋ हमको फेरि मिलैयो आय।
इतनी सुनते मीरा सैयद ❋ तुरतै लियो कुरान उठाय ॥
चारो राजा गाँजरवाले ❋ बारहु कुँवर बनौधे क्यार ।
धनुआँ तेली लला तमोली ❋ सबने गंगा लई उठाय ॥
पहले जुझि हैं हम खेतनमें ❋ ता पाछेते पुत्र तुम्हार ।
जहाँ पसीना गिरै कुँवरको ❋ तहँ देदेयँ रक्तकी धार ॥
ठाढी तिलका जो बँगलापर ❋ त्यहि ऊदनिको लियोबुलाय
बोली तिलका तब ऊदनिते ❋ बेटा सुनो हमारी बात ॥
तुमको सौंपतिहौंलाखनिको ❋ खेलियो युद्ध एकही साथ ।
लाय मिलैयो फिरि बेटाको ❋ औ गाढेमें दीजो संग ॥
सुनते ऊदनि बोलन लागे ❋ माता सुनो हमारी बात ।
सौंपति नाहीं कोउ क्षत्रीको ❋ निशिदिनरहतकालके साथ॥
पै हम बचन देत माताको ❋ हमरे बचन करो परमान ।
गिरै पसीना जहँ लाखनिको ❋ तहँ मैं देउँ रक्तकी धार ॥

भाई समुझत हौं हिरदैसे ❋ सो तुम जानि लेउ महरानि
इतनी सुनतै रानि तिलकाने ❋ भुरुही हाथिनि लई मँगाय ॥
मस्तक पूजि दियो हथिनीको ❋ औ लाखनिको लियो बुलाय
हाथ पकरिकै तब लाखनि को ❋ औ भुरुही ते कही सुनाय
तुमको सौंपति हौंलाखनि को ❋ नाहिंतुम धरियो पाँव पिछार
रोचना करिकै तब तिलकाने ❋ औ छातीते लियो लगाय॥
चरण छुये माता तिलकाके ❋ औ माथेने लिये लगाय ।
भुरुही हथिनी तब सजवाई ❋ तापर लाखनि भये सवार ॥
बोले लाखनि सब क्षत्रिन ते ❋ यारो सुनो हमारी बात ।
घरमें तिरिया जिनहिं पियारी ❋ सो सब तलब लेउ घर जाउ
जिनहिं पियारी परम भगोती ❋ सो सजि चलो हमारे साथ
बोले क्षत्री तब लाखनि ते ❋ हम ना तजि हैं साथ तुम्हार
काटि काटि बोटी गिरैं खेतमें ❋ पै ना तजि हैं साथ तुम्हार ।
गंगा कीन्हीं सब हिन्दुन ने ❋ औ तुर्कनने करी कुरान ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना ❋ अपना कूच दियो करवाय ।
लश्करचालिभयोगढकनउजते ❋ संगै चले बनाफर राय ॥
आल्हा चलिभे तब रिजगिरिते ❋ संगै मिलो काफिला जाय
साथमें डोला सब रानिनके ❋ संगै चले महोबिया ज्वान ॥

अथ सिंहाठाकुरसे लाखनिकी लड़ाई ।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपति के चरण मनाय
सिंहा ठाकुर औ लाखनि की ❋ लिखिहौं कछुक लड़ाई गाय
होत सबेरे परहुल पहुँचे ❋ तब लाखनि ने कही सुनाय।
हम करार कीन्हों रानी ते ❋ परहुल दिया दिहैं बुझवाय ॥
आल्हा बोले तब लाखनि ते ❋ धीरज धरौ कनौजी राय ।

पाती लिखिकै हम सिंहाको ❋ अबहीं दिया दिहैं बुझवाय॥
लैकै कागद कलपी वालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ।
पहले लिखिकै सरनामा को ❋ ता पाछेते लिखो हवाल॥
पाती पढ़ियो सिंहाठाकुर ❋ गालिब हुक्म कनौजी क्यार
दिया बुझाय देउ अंटाको ❋ औ साजि चलौ हमारे साथ
लाखनि आये हैं कनउजते ❋ गढ महुबेको कियो पयान।
लिखिकै पाती जुनि आल्हाने ❋ हरकारा को दइ पकराय॥
गयो हरकारा तब परहुलमें ❋ औ सिंहाको करी सलाम।
पाती धरि दइ तहँ गद्दी पर ❋ सिंहा पाती लई उठाय॥
पाती बाँचत गुस्सा आई ❋ नैनन रही लालरी छाय।
तुरत नगरची को बुलवायो ❋ तुरतै डंका दियो बजाय॥
फौज त्यार भइ सब परहुलकी ❋ लश्कर कूच दियो करवाय
हाथी सजवायो सिंहाने ❋ तुरतै तापर भयो सवार॥
जाय पहूँचो जब भूरेपर ❋ तब सिंहाने कही सुनाय।
कौन शूरमा चढि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देय जवाब॥
घोडा बढायो तब ऊदनिने ❋ औ सिंहाको दियो जवाब।
लाखनि आये हैं कनउजते ❋ आगे जैहैं नगर महोब॥
दिया बुझाय देउ अंटाको ❋ औ साजि चलौ कनौजी साथ
इतनी सुनते सिंहाठाकुर ❋ तुरतै हुक्म दियो फरमाय॥
बत्ती दैदेउ सब तोपन में ❋ सबकी कटा देउ करवाय।
झुके खलासी तब तोपन पै ❋ तोपन बत्ती दई लगाय॥
दगी सलामी दोनों दल में ❋ चहुँदिशि धुवाँ रह्यो मँडराय
अररर गोला छूटन लागे ❋ गोली सन्न सन्न सन्नाय॥
पहर एक भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ।

आगे बढिकै सब क्षत्रिन ने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
झुके सिपाही कनउजवाले ❋ खटखटचलन लगीतलवारि
भगे सिपाही परहुल वाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
यह गति देखी जब सिंहाने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय
सिंहा ठाकुर बोलन लागे ❋ समुहे खेलो जूझ अघाय।
इतनी सुनतैं लाखनि राना ❋ आगे भुरुही दई बढाय॥
गुस्सा ह्वैकै तब सिंहाने ❋ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय।
चोट चलाय दई लाखनि पर ❋ लाखनि लीन्हीं चोट बचाय
आगे बढिकै तब लाखनि ने ❋ सिंहा ठाकुर को लौ बाँधि
लाखनि पहुँचे सतखंडापर ❋ करमें लैकै लाल कमान।
तीर चलाय दियो लाखनि ने ❋ औ दीपकको दियो गिराय
फौज साथ लीन्हीं सिंहाकी ❋ औ सिंहाको साथ लिवाय
कूच कराय दियो आगेको ❋ कोडहारि धुरो दबायो जाय

अथ गंगाठाकुरसे आल्हाकी लडाई।

सुमिरन करिकै नारायण को ❋ औ गणेशके चरण मनाय
लिखौं लडाई अब गंगाकी ❋ यागो सुनियो कान लगाय
बोले जगनायक ऊदनिते ❋ हमरे बचन करौ परमान।
कोडहारि वाले गंगा ठाकुर ❋ हरनागर लैगये चोराय॥
उठे सोयकै जब देखा हम ❋ ना कहुँ घोडा परो दिखाय
चिह्न देखिकै तब टापन के ❋ हम कोडहरिमें पहुँचे जायँ
घोडा माँगो हम गंगाते ❋ तबहीं गंगा उठे रिसाय।
बिनती कीन्हीं हम रानीकी ❋ तब उन घोडा दियो मँगाय
कोडा हमरो सवा लाखको ❋ सो नहिं दियो पँवारे राय।
हम चलिभये यह कहिकै तब ❋ लौटत लैहैं नगर लुटाय॥

सो तुम कोडाको मँगवावो ❋ नहिं म्वहि हँसैं रजा परिमाल
सुनते ऊदनि बोलन लागे ❋ औ लाखनिते कही सुनाय
कोडा लैकेके बदले में ❋ हम कोडहारिको लिहैं लुटाय
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ धीरज धरो उदैसिंह राय॥
मामा हमरे गंगा ठाकुर ❋ तिनते कोडा लिहैं मगाय।
अबहीं पाती हम भेजत हैं ❋ यह कहि कलमदान लै हाथ
लैके कागद कलपी वाला ❋ लाखनि पाती लिखी बनाय
मामा हमरे तुम लागत हौ ❋ सो तुम मानो कही हमारि
जगनिक ठाकुर महुबेवाले ❋ तिनको कोडा लियो उठाय
सो पठवाय देउ जल्दी ते ❋ नाहिं सब जैहैं काम नशाय॥
पाती लिखिकै यह लाखनि ने ❋ हरकारा को दइ पकराय।
पाती लैकै गयो हरकारा ❋ औ कोडहारि में पहुँचो जाय
जहाँ कचेहरी रहै गंगाकी ❋ धावन नैकै करी सलाम।
पाती दीन्हीं लाखनि वाली ❋ पाती पढी पवाँरे राय॥
तुरत नगरची को बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय।
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार॥
डंका बाजो तब कोडहरिमें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार
हथिनी सजवाई गंगाने ❋ तापर तुरत भये असवार॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ धूरेपर पहुँचे आय।
गंगा बढिकै बोलन लागे ❋ को यह धुरो दबायो आय॥
लाखनि भुरुही दाबे आये ❋ औ गगाते लगे बतान।
मामा हमरे तुम लागत हौ ❋ काहे रारि करत बिन काज
आल्हा ऊदनि महुबे वाले ❋ जिनको जानत सकल जहान
तिनको कोडा तुम मँगवावो ❋ औ आल्हाते करौ मिलाप

दुसरी करि हौ जो आल्हाते ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
रारि बढावौ ना मामा तुम ❋ इतनी मानौ बात हमारि ॥
तापर ज्वाब दियो गंगाने ❋ है क्या चाज बनाफर राय ।
देत चुनौती हम आल्हाको ❋ हमते कोडा लेयँ मँगाय ॥
बातन बातनबतबढ़होइगयो ❋ औ बातनमें बाढी रारि ।
हुक्म देदियो गंगा ठाकुर ❋ तोपन आगी देउ लगाय ॥
दगी सलामी तब दोऊ दल ❋ चहुँदिशि रही अँधेरी छाय
गोला गोली छूटन लागे ❋ छूटन लगे अगिनियाँ बान
कयागतिबरणौंत्यहिसमयाकी ❋ रणमें परी तोपकी मारु ।
तोपें धें धें लाली होइ गईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
मारु बन्द भइ जब तोपनकी ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करें तलवारि ।
चारि वरी भारिचलीशिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
भगे सिपाही कोडहारिवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार।
आगे बढिकै लाखनि बोले ❋ मामा मानौ बात हमारि ।
अबहूँ मानो कही हमारी ❋ कोडा तुरत देउ मँगवाय ॥
बडे लडैया महुबेवाले ❋ जिनते तुम जीतनके नाहिं ।
नगर तुम्हारो सब लुटवैहैं ❋ कलहा दस्सराजके लाल ॥
बात न मानी गंगा ठाकुर ❋ अपनी हथिनी दई बढाय ।
गगा बोले सुनि आल्हाते ❋ काहे देहौ प्राण गँवाय ॥
ऊदनि बोले तब गंगाते ❋ अबहीं कोडा देउ मँगाय ।
कोडा देहौ ना हमरो तुम ❋ कोडहरितुम्हरीलिहौं लुटाय
यह सुनिगुस्सा होय गंगाने ❋ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय ।
चोट चलाई बघ ऊदनिपर ❋ ऊदनि लैगे चोट बचाय ॥
ऐंड लगाई तब घोडाके ❋ औ हौदापर पहुँचे जाय ।

ढालकि औंझड ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय॥
ऊदनि झपटि गये आल्हापै ❋ औ आल्हाते लगे बतान ।
तुम्हरी बरनीके गंगा हैं ❋ तुरतै लेउ जँजीरन बाँधि ॥
बढिगे आल्हा तब आगेको ❋ औ गंगाते कही पुकारि ।
कोडा हमरो ना देहौ जो ❋ तौ तुम खबरदार ह्वइ जाउ॥
खैंचि शिरोही लइ गंगाने ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
करो जडाका जब समुहेपर ❋ आल्हा दीन्हीं ढाल अडाय
सात शिरोहीं गंगा मारी ❋ आल्हा लीन्हीं चोट बचाय
बोले आल्हा तब गंगाते ❋ उसारिन खेलौ जूझ अवाय
लैकै साँकल तब आल्हाने ❋ पचशावदको दइ पकराय ।
साँकल फेरी जब हाथीने ❋ तब गंगाको लियो बँधाय॥
ऊदनि पहुँचे तब कोडहरिमें ❋ सिगरो लियो बजार लुटाय।
खबरि पायकै बौना ठाकुर ❋ सो कोडालै पहुँचो आय ॥
करी अधीनी तब आल्हाकी ❋ औ कोडालै धरो अगार ।
हाथ चलैयो ना गंगापर ❋ हो समरत्थ बनाफर राय ॥
लैकै कोडा तब आल्हाने ❋ जगनायकको दो पकराय ।
कैद छोडि दइ तब गंगाकी ❋ गंगाको लौ साथ लिवाय॥
लश्कर साथ लियो गंगाको ❋ औ चलिभये बनाफर राय।
कूच करायो सब लश्करको ❋ जमुना निकट पहूँचे जाय ॥
डेरा डारि दिये नदियापर ❋ भोरहि उतरिगये वा पार ।
जबहीं पहुँचे शहर कालपी ❋ आये जबहीं बीच बजार ॥
लूटि बजार लई लाखनितब ❋ बोले उदैसिंह बलवान ।
क्यों बजार तुमने लुटवाई ❋ तब हँसि कही कनौजी राय
कोडहरि तुमने क्यों लुटवाई ❋ गंगा मामा लगत हमार ।
बदला लीन्हों हम मामाको ❋ सो तुम समुझिलेउ मनमाहिं

ढेबा बोलो तब ऊदनिते ❋ भैया भूलि जाउ सब बात ।
संग आपने तुम लाये हौ ❋ ताते बैठि रहौ चुप साधि ॥
दूजी करिहौ जो लाखनिते ❋ तौ जग ह्वइ है हँसी तुम्हारि
काम बनावौ चन्देले को ❋ नदिया खेलौ जूझ अघाय ॥
यह सुनि ऊदनि चुप होइगे ❋ अपनो डेरा दियो डराय ।
शहर कालपी के धूरे ते ❋ नदिया बितवै के मैदान ॥
लश्कर पारि गयो बहुत दूरिलौं ❋ झंडन रही लालरी छाय ।
बोले जगनायक आल्हा ते ❋ मल्हनैं खबारि सुनावौ जाय
सुनतै पाती लिखि ऊदनिने ❋ सो जगनिक को दई गहाय
जगनिक चालिभै तब लश्करते ❋ औ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
मल्हना देखो जब जगनिकको ❋ तब छाती ते लियो लगाय
तौलौं माहिल दाखिल ह्वैगे ❋ जगनिक करन बहाना लाग
पाती दीन्हीं जो हमको तुम ❋ सो आल्हा पढि दई फेंकाय
बात न मानी कछु आल्हाने ❋ हमने बहुत मनायो जाय ॥
यह सुनि मल्हना रोवन लागी ❋ तब माहिल यह लगे बतान
बात हमारी बहिनी मानौ ❋ अब तुम डाँड देउ भरवाय ॥
बोले जगनिक तब माहिलते ❋ माँगत डाँड काह चौहान ।
माहिल बोले तब जगनिक ते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात॥
सिगरो शहर ग्वालियर माँगत ❋ माँगत उडन बछेडा पाँच।
बैठक माँगत खजुहागढ की ❋ मल्हना क्यार नौलखा हार
पारस पूजा को माँगत हैं ❋ डोला लिहैं चन्द्रावलि क्यार
बोले जगनायक माहिल ते ❋ अबहीं डाँड दिहैं भरवाय ॥
पारस पूजा है कोठरी में ❋ सो तुम पहले लावौ उठाय ।
गये कुठरियामें माहिल जब ❋ जगनिक बन्द दियो करवाय
पाती लैकै ऊदनि वाली ❋ सो मल्हना को दई गहाय ।

पाती बाँची रानि मल्हनाने ❋ औ राजाको लियो बुलाय ॥
हाथमें पाती दइ राजा के ❋ राजा पाती बाँचन लाग ।
बहुत खुशी भये पाती पढ़िकै ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वै जाय
माहिल बोले तब कोठरीते ❋ बिछुरे लरिका मिले तुम्हार।
कैद छोंडि देउ अब बहिनी तुम । ना घटि करिहौं साथ तुम्हार
चुगुली करि हौं ना तुम्हरी कछु ❋ सो तुम मानो कही हमारि
दाया करिकै तब मल्हनाने ❋ तुरते माहिल दियो निकारि
चलिभे माहिल तब महलनते ❋ औ बगियामें पहुँचे जाय ।
हाल सुनायो पृथीराजको ❋ आये यहाँ बनाफर राय ॥
साथ ले आये हैं लाखनिको ❋ औ नदियापर कियो मुकाम।
घाट बयालिस अब रुकवावो ❋ अपनो पहरा देउ बिठाय ॥
सुनते राजा पृथीराजने ❋ सिगरे घाट लिये रुकवाय ।
पहरा अपने तहँ बैठाये ❋ कोउ ना जाय नदी के पार ॥
आल्हा मनौआ यह पूरो भा ❋ सो हम लिखो सुमिरि करतार
आगे लडाई है बितवा पर ❋ सो हम लिखिकै दिहैं सुनाय
कठिन लडाई भइ पिरथी सँग ❋ जीते जंग कनौजी राय ।
समय पाय तुम आल्हा गावो ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति आल्हा मनौआ समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

अथ नदिया बेतवैकी लडाई ।

लाखनि विजय ।

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

होत प्रकाश दिवाकरको तब, चन्द्रप्रकाश लखाय परै ना ।
सिंहको शब्द सुनाय परै तब, मत्तगयन्द दिखाय परै ना ॥
शूर सिंगार करै रणको तब, नारि सिंगार पै ध्यान धरै ना ।
बात यही समरत्थन केरि कि, भाभी टरै पर बात टरै ना ॥

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबली को नाम ।
कहौं लडाई अब बितवैकी ❋ यारो सुनौ छोंडि सब काम ॥
बाग चिरैया बिन सूनो है ❋ सूनो कमल बिना है ताल ।
बिना पातको तरुवर सुनो ❋ सूनो बिना मंत्रि भूपाल ॥
बिन विद्या को ब्राह्मण सूनो ❋ सूनी बिना पुरुष की नारि ।
रैनि तो सूनी है चन्दा बिन ❋ ठाकुर बिना सूनि चौपारि ॥
सूनोमंदिर निशिदीपकबिन ❋ सूनो बिना पुत्र परिवार ।
अकिले ऊदनिके जियरा बिन ❋ सूनी भूमि चँदेले क्यार ॥
सुनी खबरि जब यह ऊदनिने ❋ पिरथी घाट लिये रुकवाय ।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ दादा अब कछु करौ उपाय ॥
घाट बयालिस पिरथी रोके ❋ तब आल्हाने कही सुनाय ।
धीरज राखौ तुम अपने मन ❋ अबहीं देहौं जतन बताय ॥
कलश मँगायलियो सोनेको ❋ औ इक बीरा लियो मँगाय
सो धरवाय दियो कलशापर ❋ औ आल्हा यह कही सुनाय

कौन सूरमा है दोनों दल ❋ जो बितवा पर पान चबाय
मारि भगावै चौहाननको ❋ पृथीराजको देय हटाय ॥
यह सुनि क्षत्री चुपके ह्वइगये ❋ सबने शीश लियो औंधाय
घरी एक बीराको ह्वइगो ❋ तब ऊदनि उठि कही सुनाय
मारि भगैहौं चौहाननको ❋ पृथीराजको दिहौं हटाय ।
घाट बयालिस मैं छुटवैहौं ❋ अबहीं बीरा लिहौं चबाय॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ लहुरवा भाय
गाँजर उसरी रहै तुम्हारी ❋ अब यहँ काम कनौजी क्यार
इतनी सुनिकै मीरा सैयद ❋ सो लाखनिते लगे बतान ।
बात सुनाई जो आल्हाने ❋ सो तुम समुझिलेउ महराज॥
पान चबाय लेउ बितवे पर ❋ हम चलि देहैं साथ तुम्हार ।
धनुआँ तेली बोलन लागो ❋ सैयद साँची कही सुनाय ॥
याही दिनको तुम आये हो ❋ लाये ऊदनि संग लेवाय ।
राजपाट अपनो छाँडो तुम ❋ घरमें तजी पद्मिनी नारि ॥
बीरा चाबि लेउ जल्दी तुम ❋ लश्कर तुरत लेउ सजवाय ।
हम छुटवैहैं घाट बयालिस ❋ नाहीं छोडिहैं साथ तुम्हार ॥
सुनतै उठिकै लाखनि राना ❋ नदियापर लियो पान चबाय
हुक्म देदियो तब लाखनिने ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्कर में ❋ क्षत्री साजि भये तैयार ।
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ हमहूँ चलैं तुम्हारे साथ ॥
तब हँसिलाखनिबोलनलागे ❋ तुम ना कहो मर्मकी बात ।
ना मोरि भुरुही बूढी ह्वइगइ ❋ ना बल घटो परखौरन क्यार
बात कही तुम संग चलनकी ❋ सो हमरे मन नाहिं समाय ।
मारि भगैहों मैं पिरथी को ❋ औ धूरे लौं हनौं निशान ॥
यह कहि चलिभये लाखनिराना ❋ औ सैयद ते लगे बतान

अब तुम कूच करौ लश्कर लै ❋ तब सैयदने कही सुनाय ॥
पाँजि लगाय लेउ नदियाकी ❋ सिगरी फौज होय वा पार।
यह कहि चलिभे मीरा सैयद ❋ लाखनि धनुआँ संग लेवाय
राह पकरि लइ तब नदियाकी ❋ लश्कर साथ कनौजी क्यार
नौसै हथिनी लिये साथ में ❋ सुपना पानी पियावन जाय
घाम बदारिया को दुपहर में ❋ लागत तनमें तीर समान ।
सबियाँ हथिनी ब्याकुल ह्वैकै ❋ नदि बेतावे में गईं मँझाय ॥
नदिया पार गईं हथिनी जब ❋ तब हरकारा बढो अगार।
खबरि सुनाई सो चौंडाको ❋ हथिनी आईं नदीके पार॥
नौसै हथिनी हैं लाखनिकी ❋ ताको अब कछु करौ उपाय
इतनी सुनतै चौंडा ब्राह्मण ❋ अपनो हाथी लियो सजाय
तुरत सवार भयो हाथीपर ❋ औ बितवापर पहुँचो जाय
नौसै हथिनी जो लाखनिकी ❋ सो चौंडाने लईं खिदाय ॥
भगो महाउत तब नदियाते ❋ औ लाखनिपै पहुँचो आय
हाल बतायो सब हथिनिनको ❋ चौंडा हथिनी लईं खेदाय॥
सुनतै गुस्सा ह्वइ लाखनिने ❋ आगे लश्कर दियो बढाय
जबहीं पहुँचि गये नदियापर ❋ औघट घोडा दियो चलाय
हाथी हेलि दिये घाटनपर ❋ लश्कर उतरि गयो वा पार
नौसै हथिनि रहैं अपनी जहँ ❋ सातसै रहीं चौंडिया क्यार
हथिनी सोरहसै लाखनिने ❋ गुस्सा ह्वइ सब लईं खिदाय
खबरि पहूँची तब चौंडाको ❋ लाखनि हथिनी लईं खिदाय
सुनतै चलि भयो चौंडा ब्राह्मण ❋ लश्कर डंका दियो बजाय
चौंडा पहुँचो चढि हाथीपर ❋ नादिया बितवै के मैदान ॥
कछुक दूरि जब लाखनि रहिगे ❋ तब चौंडा यह कही सुनाय
कहाँते आये औ कहाँ जैहौ ❋ काहे करो उतारा आय ॥

नाम आपनो तुम बतलावो ❋ हियँपर कौन तुम्हारो काम
बोले लाखनि तब चौंडाते ❋ ब्राह्मण सुनो हमारी बात॥
संगमें आये हम ऊदनिके ❋ आगे दिखि हैं नगर महोब
नाम हमारो लाखनि राना ❋ औ कनउज है देश हमार॥
हम हैं लरिका रतीभानके ❋ नाती बेनचक्कवै क्यार ।
यह सुनि चौंडा बोलन लागो ❋ लाखनि सुनो हमारी बात
संगमें आये ना जैचँदके ❋ ना बुलवायो रजा परिमाल
साथमें आये तुम आल्हाके ❋ जगमें होइ है हँसी तुम्हारि॥
ताते लौटि जाउ कनउजको ❋ इतनी मानो बात हमारि ।
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ चौंडा ब्राह्मण बात बनाउ ॥
सुनी बडाई हम महुबेकी ❋ तब यह देश मँझायो आय
तासों दिखि हैं हम महुबेको ❋ नाहीं मनि हैं बात तुम्हारि
फिरिकै चौंडा बोलन लागो ❋ लाखनि मानो कही हमारि
जैसेइ लरिका रतीभानके ❋ तैसेइ लरिका लगो हमार॥
ताते तुमको समुझावत हौं ❋ लाखनि लौटि कनौजै जाउ
सात लाखते चढो पिथौरा ❋ लैकै खुरासान गुजरात ॥
घाट बयालिस रोकवाये हैं ❋ सो तुम करो उतारा आय
चाढि है लश्कर पृथीराजको ❋ जब चौरासी बंब बजाय॥
तुम घिरि जैहौ तब लश्करमें ❋ ना ठहरैगो पाँव तुम्हार ।
कुशल आपनी जो चाहौ तुम ❋ चुप्पै लौटि कनौजै जाउ ॥
इतनी बातैं सुनि चौंडाकी ❋ हँसिकै कही कनौजी राय
इन्द्र डोलि जायँ इन्द्रासनते ❋ औ शिव डोलि जायँ कैलास
लाखनि डोलनके नाहीं हैं ❋ हमरे बचन करौ परमान ।
बारबार चौंडा समुझायो ❋ मानी नाहिं कनौजी राय ॥

बातन बातन बतबढ़ु ह्वैगो ❀ औ बातन में बढ़ि गइ रारि
रिसहा ह्वैकै तब चौंडा ने ❀ तुरतै दीन्हीं ढाल चलाय॥
तौ हम जानैं तुम जोरावर ❀ जो यह ढाल लेउ उठवाय।
बोले लाखनि तब धनुआँते ❀ अबहीं लावो ढाल उठाय
बोल्यो चौंडा तब धाँधूते ❀ हमरी लावौ डाल उठाय।
हाथी बढ़ायो तब धाँधूने ❀ औ धनुआँ ते कही सुनाय
आगे बाढ़ि हौ जो धनुआँ तुम ❀ अबहीं भाला दिहौं चलाय
इतनी बात सुनत धाँधू की ❀ धनुआँ घोडी दई बढ़ाय॥
भाला मारो तब धाँधूने ❀ धनुआँ लीन्हीं चोट बचाय
ढाल उठाय लई जल्दी ते ❀ सो लाखनिको दीन्हीं आय
हँसिकै लाखनि बोलन लागे ❀ धनि तुम शूर कनौजी क्यार
लाखनि राना ने खेतन में ❀ अपनो दियो कटार चलाय
बोले लाखनि तब चौंडाते ❀ हमरो लेउ कटार उठाय।
बोलो चौंडा तब भूरा ते ❀ अबहीं लेउ कटार उठाय॥
लाखनि बोले तब सैयदते ❀ जल्दी लेउ कटार उठाय।
भूरा मुगुल बढ़ो आगे को ❀ तब सैयद ने कहा पुकारि
पाँव बढ़ै हौ जो आगे को ❀ तौ हम लेहैं शीश उतारि।
झुरमुट ह्वैगयो तब दोनोंको ❀ सैयद लीन्हों झपटि कटार
आयकै दीन्हीं सो लाखनिको ❀ तब हँसि कही कनौजी राय
अब हम जानी अपने मनमें ❀ तुम असमय में ऐहौ काम
यह गति देखी जब लाखनिकी। चौंडा बहुत गयो खिसियाय
हुक्म दैदियो तब चौंडाने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ तोपन बत्ती दई लगाय।
दगी सलामी तब दोउ दल में ❀ धुँअना सरग रहो मँडराय

अररर गोला छूटन लागे ❋ गोली मघा बूँद झरिलाय।
गोला ओलाके सम बरसै ❋ रणमें होय दनाक दनाक॥
बरछी भाला छूटन लागे ❋ सरसर परी तीरकी मारु ।
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वैजायँ ॥
तोपैं छोंडि दईं ज्वानननें ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ।
आगे बढिकै तब क्षत्रिननें ❋ अपनी खेंचि लई तलवारि
खट खट तेगा बाजन लागे ❋ औ बूँदीकी चलै कटार ।
पैदल अभिरे तहँ पैदलसँग ❋ औ असवारनते असवार ॥
हौदा मिलिगै तहँ हौदासँग ❋ सबके मारु मारु रटलागि ।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
दबी बायसी तहँ लाखनिकी ❋ मुर्चा हटो चौंडिया क्यार ।
भगे सिपाही चौंडावाले ❋ औ समुहेते गये बराय ॥
यह गति देखी जब चौंडाने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ।
बोला चौंडा तब लाखनिते ❋ अब तुम खबरदार होइ जाउ
दाबे भुरुही लाखनि आये ❋ औ समुहेपर पहुँचे आय ।
समुहे देखो जब लाखनि को ❋ चौंडा लीन्हीं लाल कमान॥
कैबर छोडि दियो लाखनिपर ❋ लाखनि लीन्हीं चोट बचाय
भाला अपनो लै हाथेमहँ ❋ मनमें सोचे कनौजी राय।
मारो मस्तक तब हाथीको ❋ औ धरती में दियो गिराय
पाँव पियादे चौंडा रहि गयो ❋ तब लाखनिने कही सुनाय
पाँव पियादे अब तुम रहिगे ❋ दुसरो हाथी लेउ मँगाय ।
हाथ चलै हैं ना तुमपर हम ❋ ताते हाथी लेउ सजाय ॥
यह गति देखी जब लाखनिकी ❋ चौंडा मनमें गयो सकाय।
मुर्चा फेरि दियो अपनो तब ❋ जीते जंग कनौजी राय ॥

अथ

पृथीराज और लाखनिकी लडाई ।

सुमिरण करिकै नारायण को ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
लिखौं लडाई अब लाखनिकी । ज्यहि बिधि लडे पिथौरा राय
सुनी खबरि जब पृथीराजने ❋ मुर्चा हटो चौंडिया क्यार ।
लाखनि आये हैं कनउजते ❋ नदिया करो उतारा आय ॥
हुक्म दे दियो पृथीराजने ❋ ताहर बेटाको बुलवाय ।
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
ताहर पहुँचे तब लश्करमें ❋ तोपदरोगा लियो बुलाय ।
हुक्म दे दियो तब ताहरने ❋ सिगरी तोपैं लेउ सजाय ॥
हाथिनवालेको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय
हाथी सजवाओ जल्दीते ❋ मुडिया हौदा देउ धराय ॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय
डंका देदेउ तुम लश्करमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सजन लगे तत्काल ।
दुइसै हाथी खूनी साजिगये ❋ दुइसै भूरा भये तयार ॥
दुइसै सजिगै मुकुटबन्दनी ❋ इकसौ मस्ता भये तयार ।
दुइसै सजिगो मकुनाहाथी ❋ सबके माथे दिये रँगाय ॥
आदि भयंकर हाथी सजिगयो ❋ सजि गये तुरत बीर चौहान
नौसै हाथिनके हलकामें ❋ झूमै आदिभयंकर ठाढ ॥
चढिगे पृथीराज हाथीपर ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
पाग बैंजनी शिरपर सोहै ❋ कलँगी मोतीचूरकी लागि ॥
गजभरि छाती पृथीराजकी ❋ औ नैननमें बरै मशाल ।
पृथीराज बैठे हाथीपर ❋ मानौ इन्द्र अखाडे जायँ ॥

सजिगयो लश्कर पृथीराजको ❋ तुरतै कूच दियो करवाय ।
मारू डंका बाजन लागो ❋ ढाढी करखा बोलन लाग ॥
हाहाकारी बीतन लागी ❋ घूमन लागे लाल निशान ।
तीनि घरीके तब अरसामें ❋ पहुँचे आय समर मैदान ॥
घोडा बढायो तब ताहरने ❋ ताहर कर्णक्यार औतार ।
लाखनि रहिगै बीस कदम जब ❋ तब ताहर यह कही पुकारि
कहाँते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
घाट बयालिस हम रोकवाये ❋ तुम क्यों करो उतारा आय
काम तुम्हारो क्या अटको है ❋ सो तुम हमाहँ कहौ समुझाय
बोले लाखनि तब ताहरते ❋ बेटा सुनौ पिथौरा क्यार ॥
हम आये हैं गढ कनउजते ❋ आगे देखि हैं नगर महोब ।
जायकै मिलि हैं हम राजाको ❋ लाखनि राना नाम हमार ॥
सुनतै ताहर बोलन लागे ❋ लाखनि सुनौ हमारी बात ।
महुबो घेरो दिल्लीपतिने ❋ तुम क्यों देहौ प्राण गँवाय ॥
काम तुम्हारो ना अटको कछु ❋ ताते लौटि कनौजै जाउ ।
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ ताहर सुनौ हमारी बात ॥
देखन आये हम महुबेको ❋ मिलि हैं जाय रजा परिमाल
तुम चढि आये क्यों महुबेपर ❋ काहे रारि बढाई आय ॥
हम नाहिं लौटैंगे देखे बिन ❋ चाहै कोटिन करो उपाय ।
इतनी सुनिलइ जब ताहरने ❋ तब गुस्सा ह्वै कही सुनाय ॥
कही हमारी अबहूँ मानौ ❋ लाखनि लौटि कनौजै जाउ
प्राण तुम्हारे क्यों भारू हैं ❋ जो नदियापर दिहौ गँवाय
सुनतै लाखनि बोलन लागे ❋ ताहर अक्किल गई तुम्हार ।
आगे बढिकै हम आये हैं ❋ अब क्यों धरैं पिछारी पावँ ॥
धर्म क्षत्रियनको नाहीं यह ❋ जो मुर्चाते जायँ बराय ।

लाखनि लौटन के नाहीं हैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ ॥
मर्द बनाये मरि जैबे को ❋ खटिया पारिकै मरै बलाय
होय पराक्रम जो तुम्हरे में ❋ सो तुम हमहिं देउ दिखलाय
बात बनैबे को औसर नहिं ❋ गुजरै घरी घरी पर ब्यार।
गुस्सा ह्वैकै तब लाखनि पर ❋ ताहर हुक्म दियो करवाय
बत्ती दैदेउ तुम तोपन में ❋ इन पाजिन को देउ उडाय
हुकुम खलासी तब तोपन पर ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
मुर्चा लगि गयो दोनों दलमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय
राजा कालनेमि दक्खिनको ❋ पृथीराज को जो सरदार ॥
त्यहि के मुर्चा पर गंगा ने ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय
भूरा मुगुल केर मुर्चा पर ❋ सैयद मुर्चा दियो लगाय ॥
पटना के राजा पूरनसिंह ❋ तिन उत मुर्चा दियो लगाय
तिनके समुहे पर सिंहाने ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय
धाँधू ठाकुर के मुर्चा पर ❋ धनुआँ मुर्चा दियो लगाय
रहिमत सहिमत दोनों जोधा ❋ तिन उत मुर्चा दियो लगाय
हिरासिंह बिरसिंह बिरियागढके। तिन इत मुर्चा दियो लगाय
देबी मरहटा दक्खिन वाला ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय
भूप गोरखा बंगाले को ❋ इतते मुर्चा दियो लगाय।
वंशगोपाल केर मुर्चा पर ❋ अंगद मुर्चा दियो लगाय
यहि बिधि मुर्चा लगे सबनके ❋ सो मैं कहँ लग करौं बखान
ताहर ठाकुर के समुहे पर ❋ मुर्चा लगो कनौजी क्यार
अररर गोला छूटन लागे ❋ कहकह करैं अगिनियाँ बान
सननन गोली छूटन लागीं ❋ सरसर परी तीरकी मारु
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लालबरन ह्वैजायँ।
मारु बन्द करि तब तोपन की ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि

दोनों फौजैं यकमिल ह्वइ गइँ।खट खट चलन लगी तलवारि
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायति क्यार
तेगा चटकैं बर्दवान के ❋ काटि काटि गिरैं सुघरुवा ज्वान
मुर्चा लौटि गयो ताहर को ❋ देखैं खडे बीर चौहान ॥
आगे बढि गै पृथीराज तब ❋ अपनो लश्कर दियो बढाय
नौसै हाथी के हलका में ❋ घिरगे बीर कनौजी राय ॥
लश्कर सात लाख दिल्ली को ❋ सो बेतवापर पहुँचे आय ।
चलै शिरोही आठ कोस लौं ❋ सबके मारु मारु रट लागि
पैदल गिरिगे पैग पैगपर ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ।
हाथी गिरिगै बिसे बिसेपर ❋ छोटे पर्वत की अनुहार ॥
भुरुही घिरि गइ तहँ लाखनिकी ❋ पृथीराज ने घेरो आय ।
आधी नदिया में पानी बहै ❋ आधी बहै रक्तकी धार ॥
मीरा सैयद धनुआँ तेली ❋ दोनों मनमें गये डराय ।
मुर्चा छोंडि दियो दोउनने ❋ औ समुहे ते गये बराय ॥
जितने चढवायक लाखानि के ❋ सब मुर्चा ते चले बराय ।
भुरुही हथिनी लाखनि वाली ❋ सो मुर्चा ते लौटन लागि ।
यक ललकार दई लाखनि ने ❋ भुरुही खबरदार ह्वइ जाउ
मस्तक पूजो जब माता ने ❋ तब तुम ते यह कही सुनाय
तुमको सौंपति हौं लाखनिको ❋ तुम ना धरियो पाँव पिछार
याही दिन को रनि तिलकाने ❋ पालो तुमहिं बहुत दुलराय
चहुँ दिशि लाखनि देखन लागे।कोउ न आपन परो दिखाय
संगमें जितने राजा आये ❋ सब मोहरा ते गये बराय॥
धनुआ तेली लला तमोली ❋ सोऊ ना कहुँ परत दिखाय
बडो आसरा था सैयद को ❋ सोऊ रणते गये बराय ॥
सोचैं लाखनि अपने मनमें ❋ को असमै में ऐहै काम।

सुपना महाउत जो भुरुहीको ❋ तासे लाखनि लगे बतान॥
कोऊ सहायक ना हमरे सँग ❋ जो गाढेमें आवै काम।
राजा जैचँदने हटका था ❋ ना महुबेको करौ पयान॥
रानी कुसुमाने हटको थो ❋ तुम ना जावो कंत हमार।
तुम घिरि जैहौ दलके भीतर ❋ तब तुम करिहौ कौनु उपाउ॥
सात लाखते पिरथी घेरो ❋ हमते परो साबिका आय।
साँची बात भई रानीकी ❋ हम अब करिहैं कौनु उपाय॥
बोलो सुपना तब लाखनिते ❋ कहौतो कनउज चलौंलेवाय
तब ललकारो लाखनि राना ❋ सुपना अपनीजीभ सम्हारु॥
जो हम भागि जायँ मुर्चाते ❋ बूडे सात साखिको नाम।
कोउ न अमर भयो दुनियाँमें ❋ हैं क्या अमर कनौजी राय
रणके सन्मुख जो मरि जैहैं ❋ जगमें चलिहै नाम हमार॥
बडे बडे राजा जगमें ह्वैगे ❋ कोउन अमर भये जगमाहिं
क्या हम अम्मर हैं दुनियाँमें ❋ जो मुर्चाते जायँ बराय।
लाखनि उतरि परे भुरुहीते ❋ चौबिस बोतल फूलमँगाय॥
सो पियाय दीन्हों भुरुहीको ❋ भाँग मिठाई दई खवाय।
गोटा दैदियोफिरिअफीमको ❋ राती माती दई बनाय॥
अहदू डारि दियो हाथिनिके ❋ औ भुरुहीते कही सुनाय।
पाँव पिछारू तुम ना धरियो ❋ रणमें रखियो धर्म हमार॥
चहुँ ओर लश्कर पिरथीको ❋ सो तुम जौहर देउ दिखाय।
लैकै साँकल लाखनि राना ❋ सो भुरुहीको दइ पकराय॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लैकै अजै पालको नाम।
प्राण हथेलीपर धरि लीन्हें ❋ अपनो मया मोह बिसराय॥
खैंचि शिरोही लाखनि राना ❋ बीच गोलमें गये समाय।
जैसे भिडहा भेडिन पैठे ❋ जैसे सिंह बिडारै गाय॥

त्यों दल पैठे लाखनि राना ❋ अपनी नम्र लिये तलवारि।
साँकल फेरे भुरुही हथिनी ❋ सब दल रेनबेन ह्वैजाय ॥
अकिलेलाखनिकौंडपटिनमें ❋ कोऊ कुँवर न आड़े पाँव ॥

सवैया।

लाखन भूपनमें यक सुन्दर, रूप छटा लखि काम लजावै।
लाखनकी गिनती दलमें अरु, लाखन शूरनमें चलि जावै ॥
लाखन बीर हनै क्षणमें, लखि ताहि भगे रिपु प्राणबचावै।
ऐसो महाबलवान सो लाखनि, लाखनमें तलवारि चलावै ॥
एक पहर भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार।
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ॥
लाखनि राना ढाल उठाये ❋ रणमें देत फिरैं ललकार।
है कोउ क्षत्री दिल्लीवालो ❋ समुहे लड़े आय मैदान ॥
हियाँकी बातैं तो हियँ छाँडो ❋ अब आगेको सुनो हवाल।
घोडापियावन रुपना आयो ❋ नदिया बहै रक्तकी धार ॥
ऊँचे चढि तब रुपना देखो ❋ औ घाटनतन रहो निहारि।
ज्यों बादल बिच बिजुलीदमकै ❋ तैसेइ चमकि रही तलवारि
चलिभयो रुपना तब नदियाते ❋ औ डेरनपर पहुँचो आय।
ठाढी देवै जो तम्बूमें ❋ सो रुपनाते पूँछन लागि ॥
कौन सोचमें तुम रूपन हो ❋ जियको भेद देउ बतलाय।
बोलो रुपना तब देवैते ❋ माता कछू न पूँछौ हाल ॥
कठिन लडाई भइ नदियापर ❋ अंधाधुंध चलै तलवारि।
मनहिं हमारे यह आवत है ❋ जूझे तहाँ कनौजी राय ॥
खबरि मँगायलेउलाखनिकी ❋ माता मानो कही हमारि।
सुनतै चलिभइ देवै माता ❋ औ आल्हाके तम्बू जाय ॥

देखा सूरति जब माताकी ❀ आल्हा उठिकै कियो प्रणाम।
हाथ जोरिकै आल्हा बोले ❀ माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन कामको तुम आई हो ❀ तब देवैने कही सुनाय ।
लाखनि आये हैं तुम्हरे सँग ❀ सो तुम अकिले दिये चढाय
है इकलौता रतीभानको ❀ नाती बेनचक्कवै क्यार ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❀ जो तुम अकिले दियोपठाय
जो कहुँ लाखनि मारे जैहैं ❀ तौ जग होइहै हँसी तुम्हारि।
काह जवाब दिहौ जैचँदको ❀ सो तुम खबरि लेउ तहँजाय
चढो पिथौरा सात लाख ते ❀ अंधाधुंध चलै तलवारि ।
लावौ खबरि जाय लाखनिकी ❀ बेटा मानौ बात हमारि ॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❀ माता सुनौ बात धरि ध्यान
तीनि महीना औ तेरह दिन ❀ तंग न छुटी बछेरन क्यार
कठिन लडाई भइ गाँजरमें ❀ टाढे पैसा लियो भराय ।
गाँजर उसरी थी ऊदनिकी ❀ नादिया उसरि कनौजी क्यार
लाखनि परे रहे तँबुअन में ❀ ऊदनि लडे गँजरहन साथ।
जो कहुँ ऊदनि मारे जाते ❀ तौ कहँ मिलतो भाइ हमार
लाखनि चढिगे हैं बितवापर ❀ क्यों हम जायँ जंग मैदान।
इतनी सुनिकै देवै चलि भइ ❀ पहुँची जाय उदैसिंह पास
हाल सुनायो तब लाखनिको ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय।
जल्दी जावौ तुम नदियापर ❀ औ सुधि लेउ कनौजीक्यार
हम समुझायो बहु आल्हाको ❀ उन ना मानी बात हमारि
बोले ऊदनि तब देवैते ❀ आल्हा पठवैं तौ हम जायँ
जेठो भैया बाप बरोबरि ❀ माता समुझि लेउ मनमाहिं
यह सुनि देवै बोलन लागी ❀ बेटा सुनौ हमारी बात ॥
बारह रानिनको इकलौता ❀ औ सोरहको सर्व सिंगार ।

आश लकाडिया है जैचँदकी ❋ सो तुम अकिले दियो पठाय
राजा जैचँद रनि तिलकाने ❋ सौंपो तुमहिं कनौजी राय ।
सो तुम सुखते यहँ बैठे हो ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
जो कहुँ लाखनि मारे जैहैं ❋ तुमको हँसि है सब संसार
मित्र तुम्हारो मारो जैहै ❋ तुम्हरे जीवनको धिक्कार ॥
ताते समुझि लेउ अपने मन ❋ जल्दी खबरि लेनको जाउ
बोले ऊदनि तब देवैते ❋ हमरे मनमें नाहिं समाय ॥
बडे लडैया लाखनि राना ❋ नकुला पंडाको अवतार ।
संकट परिहै जब लाखनिपर ❋ तब वे खबरि दिहैं पहुँचाय
फिरिकै देवैने समुझायो ❋ बेटा सुनो हमारी बात ।
पूरे क्षत्री जो दुनियाँमें ❋ सो देदेत आपनो प्राण ॥
संकट लाखनिसहि शिर ऊपर ❋ पैनहिंखबरि करत सकुचाय
कही हमारी ऊदनि मानो ❋ अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
खबरिलैआवोतुमलाखनिकी ❋ इतनी मानो कही हमारि ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ आल्हा भेजैं तो हम जायँ ॥
कहे तुम्हारे हम ना जैहैं ❋ चाहे कोटिन करो उपाय
यह सुनि देवै रोवन लागी ❋ लागी कहन मर्मकी बात ॥
हुक्म न मानत तुम माताको ❋ हैं कलजुगहा पुत्र हमार ।
हमने जानी थी अपने मन ❋ हमरे दोनों पूत सपूत ॥
कही न मानी तिन दोनोंने ❋ हमरे जीवन को धिक्कार ।

सवैया ।

जो दश पुत्र जनै गदही तो कहा दश पुत्र जनै सुख पावै ।
लादत लादत बोझ सबै बिधि आयु घटेपर सो मरि जावै ॥
सिंहिनि एकहि पुत्र जनै वनमें सुखते सब आयु बितावै ।
पूत सपूत सदा सुख देत कपूत सदा दुखको सरसावै ॥ १ ॥

रामचंद्र त्रेता में उपजे ❋ जिनको नाम प्रगट संसार।
सौती माताके कहिबे ते ❋ चौदह वर्ष कीन्ह वनवास॥
पूत सपूत होय कुंछां में ❋ मानै हुक्म मातु पितु क्यार
पूत कपूत होय कुंछामें ❋ नित दुख देय सबहि संसार
बिटिया होंती जो मोरे इक ❋ कोइ राजाके देती ब्याहि।
कुम्मक लौती त्यहि राजाकी ❋ औ लाखनिको लेती बचाय।
यह सुनि ऊदनि कायल होइगे ❋ औ मातासे लगे बतान।
हुक्म तुम्हारो हम मानत हैं ❋ माता बचन करौ परमान॥
बिना बुलाये हम लाखनिके ❋ कैसे जायँ समर मैदान।
देवै पहुँची तब सुनवाँ पै ❋ औ लाखनिको कह्यो हवाल
दोनों भैयनको समुझायो ❋ उन ना मानीं बात हमारि।
कही हमारी अब तुम मानो ❋ औ ऊदनिको देउ पठाय॥
भेजो सुनवाँ तब बाँदीको ❋ औ ऊदनिको लियो बुलाय।
चौकी डारि दई सुनवाँने ❋ ऊदनि सुनवैं कियो प्रणाम॥
जबहीं बैठि चुके चौकीपर ❋ तब सुनवाँने कही सुनाय।
मित्र कनौजी अस मिलिहै ना ❋ भाइ न मिलै बीर मलिखान
माता देवैसी मिलि है ना ❋ चाहै धरौ लाख औतार।
क्यों नाहिं खबरि लई नादियाकी ❋ जहँ घिरि गयेकनौजी रायं
बारह रानिनको इकलौता ❋ औ सोरह को सबै सिंगार।
यक अधार रानी तिलका को ❋ सो तुम अकिले दिये पठाय
बैठक छाँडी जिन जैचँद की ❋ घर में तजी पद्मिनी नारि।
दर्शन छौंडे फूलमतीके ❋ छाँडे गंगाके असनान॥
साथ तुम्हारो पै छांडो ना ❋ औ चलि आये पराये काज
प्रीति पतिंगाकी साँची है ❋ जो जरि जात दियाके साथ

प्रीति कनौजीकी सांची है ❋ जिन नहिं छांडो संग तुम्हार
लावौ खबरि जाय जल्दीते ❋ देवर मानौ कही हमारि ॥
जो नहिं इच्छा होय तुम्हारी ❋ तौ तुम धरौ जनानो भेष ।
लहँगा लुगरा पहिरि लेउ तुम ❋ औ देदेउ ढाल तलवारि ॥
कपडा अपने हमको देदेउ ❋ औ देदेउ बेंदुला घ्वाड ।
अबहीं जैहौं मैं नदियापर ❋ लैहौं खबरि कनौजी क्यार
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ भौजी सुनौ हमारी बात ।
बडे बली हैं लाखनि राना ❋ नकुला पंडा के अवतार ॥
खेदिकै मारि हैं पृथीराजको ❋ औ दिल्ली लौं दिहैं भगाय ।
जोपै आज्ञा है माताकी ❋ औ है भौजी हुक्म तुम्हार ॥
तौ हम जैहैं समरभूमि में ❋ लैहैं खबरि कनौजी क्यार ।
यह कहिचालिभे उदनि बाँकुडा ❋ घोडा बेंदुला लियो मँगाय
सो सजवाय लियो जल्दीते ❋ तापर तुरत भये असवार ।
ऊदनि पहुँचे पुनि आल्हापै ❋ हाथ जोरिकै कही सुनाय ॥
सुनी खबरि हम लाखनि घिरिगे ❋ नदिया बितवै के मैदान
मारे जैहैं जो लाखनि तहँ ❋ तौ जग ह्वैहै हँसी हमारि ॥
ताते त्यार भये नदियाको ❋ लैहैं खबरि कनौजी क्यार ।
तुमहूँ त्यार होउ जल्दीते ❋ तुरतै फौज लेउ सजवाय ॥
हुक्म दै दियो तब आल्हाने ❋ सिगरी फौज होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❋ आगे चले उदयसिंह राय ।
लीन्हें साठि सवार साथ में ❋ जो मरिबेको नाहिं डेरायँ ॥
चारौ राजा गाँजरवाले ❋ बारह कुँवर बनौधे क्यार ।
धनुआँ तेली मीरा सैयद ❋ सब मुर्चाते आये बराय ॥
राहमें मिलि गये उदनि बाँकुडा ❋ सो सैयद ते पूँछन लाग ।

कहँपर छाँडो तुम लाखनिको ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
बोले सैयद तब ऊदनिते ❋ नादिया चलै विषम तलवारि
नौसै हाथी को हलका है ❋ बीचमें घिरे कनौजी राय॥
कठिन मारु है पृथीराज की ❋ हम मुर्चा ते आये बराय ।
यह सुनि ऊदनि बोलनलागे ❋ चाचा अक्किल गई तुम्हारि॥
अकिलेछोंडिदियोलाखनिको ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
जो कहुँ लाखनि मारे जैहैं ❋ तौ तुम सबको दिहौं उडाय॥
बोला धनुआँ तब सैयद ते ❋ जैचँद पुछिहैं हाल हवाल ।
कौनु जवाब दिहौ तबहीं तुम ❋ जियते ह्वइ है मरण तुम्हार॥
ताते लौटि चलौ अबहीं तुम ❋ औ लाखनिकी करौ सहाय।
यह सुनि सैयद धनुआँ लौटे ❋ अपनो मरण ठानि मनमाहिं
देखत लौटिपरे राजा सब ❋ औ मुर्चन पर पहुँचे जाय ।
ऊदनि पहुँचि गये दंगलमें ❋ समुहे गोल गये समुहाय॥
राम बनावैं तौ बनिजावैं ❋ बिगरी बनत बनत बनि जाय
ऊदनि पहुँचे इत नदियापर ❋ अब लाखनिको सुनौ हवाल
मुर्चा हटिगयो जब पिरथीको ❋ तब लाखनिने करी पुकार।
है कोउ जोधा दिल्लीवालो ❋ समुहे लडै हमारे साथ ॥
ढाल अडाये लाखनि राना ❋ रणमें देत जायँ ललकार ।
भुरुही हथिनी दाबे आये ❋ पृथीराजपै पहुँचे आय ॥
टक्कर मारी तब हथिनीने ❋ आदि भयंकर हटो पिछार।
पृथीराज तब सोचन लागे ❋ गरुइ गाज कनौजी क्यार॥
भुरुही हाथिनी है जोरावर ❋ हमरो हाथी दियो हटाय ।
तब लाखनिको पृथीराजने ❋ मोहनमाला दइ पहिराय ॥
हँसिकै बोले पृथीराज तब ❋ लाखनि सुनिलेउ बात हमारि
जैसेइ लरिका रतीभानके ❋ तैसेइ लरिका लगौ हमार ॥

योग्य मित्रता है समानते ❀ पै नहिं योग्य कपट बर्ताव ।
करी मिताई तुम ऊदनिते ❀ तुम्हरे योग्य नाहिं यह बात
संग छांडिकै तुम आल्हाको ❀ हमते मिलौ कनौजी राय ।
हम तुम लूटैं नगर महोबा ❀ जहँ है पारसको अधिकार॥
सो तुम लीन्हेउ पारस पूजा ❀ लोहा छुवत सोन होइ जाय
खोटी संगति छांडि देउ तुम ❀ घटिहा दस्सराजके लाल॥
जबहीं आल्हा तुमते बिचलैं ❀ ठाढे कनउज लिहैं लुटाय ।
सुनते ज्वाब दियो लाखनिनै ❀ ऐसे न कहो पिथौरा राय॥
हमरे मनमें यह भावत नाहिं ❀ जो तुम कहत बीर चौहान।
घाटि करत जो कउ काहूते ❀ ताको नाश होत संसार ॥
धर्म हमारो यहु नाहीं है ❀ जो रण चढि हम घूसैं खायँ।
होय हाल जो कछु आल्हाको ❀ सो गति होय हमारी आजु॥
संग न छोडिहैं हम आल्हाको ❀ चाहै लाखन कहो बनाय ।
यह सुनि गुस्सा ह्वइ राजा तब ❀ औ लाखनिते लगे बतान॥
कौन दिनाते भये तरवारिहा ❀ तब कहँ गई रहैं तलवारि ।
लाये सँयोगिनिहमकनउजते ❀ सो तुम हमाहिं देउ बतलाय॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिनै ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
उमिरि हमारी तीनि बरसकी ❀ तब तुम चोरी लाये चोराय॥
कौनि बीरता तुमने कीन्हीं ❀ जो बडि बात कहत महराज
बदला लेबे हम आये हैं ❀ डोला लिहौं अगमदे क्यार
डाहु बुझै है तब छातीको ❀ सो तुम बचन करो परमान॥
माहिल राजा तहँ ठाढे थे ❀ सो पिरथीते लगे बतान ।
छोटो लरिका यहु लाखनिहै ❀ बोली बोलत नाहिं सम्हार॥
सही न जात बात यह हमते ❀ याको लेउ जँजीरन बाँधि॥
जानते मारो या लरिकाको ❀ औ यहु खटका देउ मिटाय।

यह सुनि राजा पृथीराजने ❋ अपनी लीन्हीं लाल कमान
हियाँकि बातैं तौ हियँ छाँडौ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ।
ऊदनि बाँकुडा ढूँढत डोलै ❋ लश्कर डटा पिथौरा क्यार
भुरुही देखिपरी ऊदनिको ❋ खाली हौदा परो दिखाय ।
सोचैं ऊदनि तब अपने मन ❋ मारे गये कनौजी राय ॥
पाछे हटि तब ऊदनि देखो ❋ औ लाखानिपर परी निगाह
सन्मुख देखो पृथीराजको ❋ करमें लीन्हे लाल कमान ॥
मनमें जानी तब ऊदनिने ❋ अब ना बाचि हैं मित्र हमार
खाली चोट जात इनकी नहिं ❋ है यह्व शब्दबेधि चौहान ॥
घोडा बढायो तब ऊदनिने ❋ अपनो मया मोह बिसराय
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ हाथ जोरिकै कही सुनाय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ हो तुम शब्दबेधि चौहान ।
ना चढि आये राजा जैचँद ❋ ना चढि आये रजा परिमाल
म्हरी बरोबारिको नाहीं कोउ ❋ केहिपर लीन्हीं लाल कमान
सेइ लरिका रतीभानको ❋ तैसेइ लरिका लगैं तुम्हार ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है ❋ जो लाखनिपर गहौ कमान
हँसी तुम्हारी जगमें होइ है ❋ जो लरिकन पर डरिहौ हाथ
कायल होइगये पृथीराज तब ❋ अपनी धरि दइ लाल कमान
ऐंड लगाई तब घोडाके ❋ औ मस्तक पर बाजी टाप
कलश सूबरनको हौदापर ❋ सो ऊदनिने लियो उतारि
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ॥
हमरी बरोबारिके नाहीं तुम ❋ जौहर देतिउँ अबहिं दिखाय
क्या सुधि भूलि गये द्वारेकी ❋ हम ब्रह्माको लाये बियाहि ॥
हाथी पछारा दरवाजे पर ❋ सातौं भाँवारि लई डराय ।
ऐसो देखैं ना काहूको ❋ जो मडुबेको लेइ लुटाय ॥

यह सुनि सोचे पृथीराज तब ❋ कलहा दस्सराजके लाल ।
बडे लडैया महुबे वाले ❋ गरुई गाज कनौजी क्यार ॥
सोचि समझि यह पृथीराजने ❋ अपनो मुर्चा दियो हटाय ।
रुधिर धारते लाखनि बूडे ❋ तिनहिं न कोउ सकै पहिचानि
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
अब तुम बैठि जाउ हौदामें ❋ हमरी देखि लेउ तलवारि ॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❋ काहे हँसी करत तुम आज
क्या तुम हमहिं निबल जानतहौ। क्या बल रहो भुजनमें नाहिं
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब ❋ दादा धन्य कनौजी राय ।
कौन शूर है या धरती पर ❋ जो पिरथीको देय हटाय ॥
करो सामना तुम पिरथीको ❋ औ मुर्चाते दियो हटाय ।
हौ सब लायक महराना तुम ❋ राखो धर्म चँदेले क्यार ॥
देह दुशालाते पोछी तब ❋ औ यह कही उदैसिंह राय ।
बैठो दादा तुम हौदामें ❋ यह सुनि लाखनि भये सवार
ऊदनि चढिगे रसबेंदुल पर ❋ आगे बढे कनौजी राय ।
तौलौं आल्हा लश्कर लैकै ❋ पहुँचे आय समर मैदान ॥
हल्ला होइ गयो रणखेतनमें ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि।
बढे सिपाही आल्हावाले ❋ खटखट चलन लगी तलवारि
धाँध्र धनुआँको मोहरा था ❋ धनुआं कठिन करी तलवारि
मुर्चा फेरि दियो धाँधूको ❋ श्याबसि कही कनौजी राय
भूरा मुगुल करे मुर्चापर ❋ सैयद जीति लियो मैदान ।
रहिमत सहिमतको दंगलमें ❋ हरिसिंह बिरसिंह दियो गिराय
लाखनि रानाने हनि डारे ❋ दतिया वाले वंशगोपाल ।
पैदल तीनि लाख पिरथीके ❋ कनउजवालेन दियो गिराय
दुइसै हाथी दिल्लीवाले ❋ जूझे एक लाख असवार ।

कनउज वाले सत्तर हाथी ❋ जूझे पाँच हजार सवार ॥
नदिया बितवै पर लाखनिके ❋ जूझे पैदल साठि हजार ।
ताहर लाये बेंडा लश्कर ❋ औ लाखनिपै पहुँचे आय ॥
बोले ताहर तब लाखनिते ❋ अब तुम खबरदार होइ जाउ
तेग निकारि लई ताहरने ❋ सो लाखनिपर दई चलाय
ढाल अडाय दई लाखनिने ❋ उनके अंग न आयो घाव ।
गुस्सा होइकै तब लाखनिने ❋ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय
लगो चपेटा इक घोडाके ❋ ना रोके ते रुकी लगाम ।
भागो घोडा तब ताहरको ❋ लश्कर रेनबेन होइ जाय ॥
घाट बयालिस सोरह घाटी ❋ तुरते लाखनि लिये छुटाय
लाली बैरखैं घूमन लागीं ❋ जीतिको डंका दियो बजाय
कूच करिदियो नदि बितवैते ❋ चन्दन बगिया पहुँचे जाय
तम्बू लगे जहाँ पिरथी के ❋ तँबुअन रस्सा दिये कटाय
लूटि होन लागी तँबुअनमें ❋ गालिब हुकम कनोजी क्यार
काहू लूटे साल दुशाला ❋ काहू शक्कर लई लदाय ॥
घीके कुप्पा काहू लूटे ❋ काहू चावल लिये लुटाय ।
हाथी घोडा ऊदनि लूटे ❋ अपने लश्कर दिये पठाय ॥
कूच कराय दियो पिरथीने ❋ औ दिल्ली की पकरी राह ।
मन खिसियाने माहिल राजा ❋ तिन उरई की पकरी राह ॥
सुनी खबरि जब परिमालैने ❋ आये यहाँ कनोजी राय ।
घाट बयालिस उन छुटवाये ❋ औ महुबे को लियो बचाय
पिरथी लौटि गये दिल्ली को ❋ जीते जंग कनोजी राय ।
लश्कर परिगयो है बगिया में ❋ देखन ऐहैं नगर महोब ॥
यह सुनि खुशी भये राजा तब ❋ औ ब्रह्माको लियो बुलाय ।
हाल सुनायो नदि बितवै को ❋ औ यह हुकम दियो करवाय

दगे सलामी यहँ जल्दीते ❋ छूँछी दगन सलामी लागि
सुनी खबरि जब मल्हना रानी ❋ सिगरी सखियाँ लई बुलाय
जितनी रानी चन्देलेकी ❋ सो सब सजिकै भई तयार
सखियाँ मंगल गावन लागीं ❋ घरघर भयो मंगलाचार ।
हुक्म दियो फिरि परिमालैने ❋ सिगरो नगर लेव सजवाय
चलि भये मंत्री तब राजाके ❋ कूचा गली दिये झरवाय ।
कलश सुबरनके मँगवाये ❋ द्वार द्वारप्रति दिये धराय ॥
बन्दनवार बँधे द्वारेनपर ❋ झालरि लगी मोतियन केरि
बिछे बिछौना गलियारेन में ❋ ऊपर दिये गलीचा डारि ॥
इतर गुलाबन के शीशा लै ❋ गलियारेन में दै छिरकाय
नौबत बजन लगी महुबे में ❋ छज्जन रही लालरी छाय
सजिगयो महुबो तब जल्दी ते ❋ मानौं इन्द्रधाम दिखराय।
पलकी मँगवाई राजा ने ❋ तापर चढ़े रजा परिमाल ॥
हरनागर पर ब्रह्मानँद चढ़ि ❋ चलि बगिया में पहुँचे जाय
जबहीं देखो चन्देले को ❋ लाखनि उठिकै करी सलाम
हृदय लगाय लियो राजाने ❋ भेंटे ब्रह्मा राजकुमार ॥
आल्हा ऊदनि इन्दल आये ❋ औ राजाको करी सलाम ।
चरण लागिकै चन्देले के ❋ सो माथे में लिये लगाय ॥
मोह आय गयो परिमालै को ❋ नैनन बहै नीर की धार ॥
बहुतै बातैं भईं आल्हाते ❋ राजा लीन्हों शीश लचाय।
कायल होइकै चन्देले तब ❋ तुरतै करन अधीनी लाग ॥
बसौ महोबे में बेटा तुम ❋ सुखते रहो छोंडि दुखजाल
सूनो नगर जानि घेरत हैं ❋ नित उठि चढ़त पिथौरा राय
हँसी खुशी ते चन्देले ने ❋ सब लरिकनते कही सुनाय
तुमहिं बुलावन हम आये हैं ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ ॥

करी तयारी तब सबने मिलि ❋ देखन चले महोबा गाँव ॥
जबहीं आय गये फाटकपर ❋ महुबे दगन सलामी लागि।
आई सवारी गलियारेनमें ❋ महुबो इन्द्रधाम दिखराय॥
जितने राजा थे लाखनि सँग ❋ महुबो देखि देखि रहिजायँ
शोभा देखत गढ महुबेकी ❋ पहुँचे राजमहल ढिग जाय
अपनी अपनी असवारिनते ❋ सिगरे उतरि परे अरगाय।
मेल मिलाप भयो सबहीको ❋ सो हम कहँ लग करें बखान
आदर करिकै चन्देलेने ❋ सब काहूको दियो टिकाय।
आल्हा ऊदनि दशपुरवागे ❋ फिरिकै पुरवा लियो बसाय
घर घर खुशी भये नर नारी ❋ महुबे आये बनाफर राय।
पूरि लडाई भइ बितवैकी ❋ सो हम लिखिकै दई सुनाय
ऊदनि हरन लिखौं आगे मैं ❋ यारो सुनियो कान लगाय।
समय पाय तुम आल्हा गावो ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति नादिया बितवैकी लडाई लाखनिराना विजय समाप्त।

॥ श्रीः ॥

अथ ऊदनि हरनकी लडाई।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन कारकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
ऊदनि हरन कहौं यहि अवसर ❋ यारो सुनियो कान लगाय
पर्ब दशहराकी बुडकी पारि ❋ औ दिन आनि परो इतवार
श्री बिठूरघाट गंगाके ❋ मेला चलन लाग त्यहिकाल
सुनवाँ ठाढी सतखंडापर ❋ मेला देखि देखि रहि जाय।
गंगा गंगा यात्री बोलैं ❋ जय जय कहत चले सब जायँ
उतरी सुनवाँ सतखंडाते ❋ औ ऊदनिको लियो बुलाय
आये ऊदनि तब सुनवाँ पै ❋ सुनवाँ चौकी दई डराय ॥
चरण लागिकै ऊदनि बैठे ❋ तब सुनवाँने कही सुनाय।
मेला चलो जात गंगाको ❋ हमहूँ चलि हैं गंग नहान ॥
बोले ऊदनि तब सुनवाँते ❋ भौजी सुनौ हमारी बात।
आज्ञा लेलेयँ हम आल्हाते ❋ तब तुम चलो हमारे साथ ॥
यह कहि ऊदनि उठि ठाढेभे ❋ औ आल्हा पै पहुँचे जाय।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
गंग नहै हैं सुनवाँ भौजी ❋ सो तुम हुकम देउ फरमाय।
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ करिहौ तहाँ बखेडा जाय ॥
ताते बैठि रहौ घरहीमें ❋ यह तुम मानौ बात हमारि।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ दादा बचन करौ परमान ॥
धुरो हमारो कछु अटको ना ❋ क्यों हम करैं बखेडा जाय।
बुडकी लैकै घर फिरि अइ हैं ❋ रहि हैं बिना काम तहँ नाहिं

आज्ञा देदइ तब आल्हाने ❋ तुरतै उठे उदैसिंह राय ॥
खबरि पठाय दई सुनवाँपै ❋ भौजी जल्द होउ तैयार ।
करी तयारी सुनवाँ रानी ❋ फुलवा त्यारी लई कराय ॥
सुनवाँ फुलवा दोनों चलि भईं ❋ औ पलकी में भईं सवार ।
घोडा बेंदुला को सजवायो ❋ तापर चढे उदैसिंह राय ।
साथमें लीन्हों जगनायक को ❋ लश्कर सवा लाख सजवाय
कूच कराय दियो महुबेत ❋ औ बिठूरकी पकरी गह ।
मंजिल करिकै सात रोजकी ❋ गंगाघाट पहूँचे जाय ॥
डेरा डारि दिये रेती में ❋ खाली एक देखि मैदान ।
तम्बू तनवायो अपनो तहँ ❋ तामें टिके उदैसिंह राय ॥
सोभिया नटिनी झुन्नागढकी ❋ रेतीमें डेरा दिये लगाय ।
भोर होतखन त्यहि सोभियाने ❋ सहुआ बीरन लियो बुलाय
बोली तुरतै तब बीरनते ❋ त्यागी तुरत लेउ करवाय ।
यहकहिसंगलियोनटिनिनको ❋ औ मेला में पहुँची जाय॥
राग रागिनी गावन लागी ❋ मला करन तमाशा लागि ।
मेला जहाँ रहै महुबेको ❋ सोभिया तहा पहूँची जाय॥
पूँछन लागी दरवानीते ❋ महुबेको मेला देउ बताय ।
जहँपर तम्बू थो ऊदनिको ❋ दरवानीने दियो बताय ॥
नाचत आई सोभिया बेडिनि ❋ औ तम्बूपै पहुँची आय ।
जहाँ कचहरी थी ऊदनिकी ❋ सोभियाकियोतमाशा आय
डारि मोहनी दइ सोभियाने ❋ क्षत्री मोहि मोहि रहि जायँ
देखो सोभिया जब सुनवाँको ❋ तब यह मनमें कियो विचार
जीति न पैहौं मैं सुनवाँ ते ❋ ताते करिहौं कौन उपाय ।
नब्बे लाखको गहनो सुनवाँ ❋ सो डब्बा में धरो उतारि ॥
जादू तब सोभिया ने ❋ त्यहि डब्बापर दियो चलाय

लैकै भिक्षा नटिनी चलिभइ ❋ अपने डेरा पहुँची आय ॥
सुनवाँ फुलवा दोनों सजि गइँ ❋ संगे चले उदैसिंह राय ।
गंग स्नान करी सबही ने ❋ दीन्हों बहुत दक्षिणा दान ॥
लश्कर आयो जब यमुनापर ❋ सोभिया डब्बा लियोमँगाय
जादू डारि गई पहिले थी ❋ ताते तुरतै लियो उडाय ॥
उतरी सुनवाँ जब डोलाते ❋ ना कहुँ डब्बा परो दिखाय
मनमें डरि गइ सोनवाँ रानी ❋ औ ऊदनि को लियो बुलाय
बोली सुनवाँ बघ ऊदनि ते ❋ देवर करि हो कौन उपाय।
डब्बा भूली मैं बिठूर में ❋ अब मैं देहों कौन जवाब ॥
बोले ऊदनि तब सुनवाँ ते ❋ भौजी धीर धरो मनमाहिं ।
गहना लैहौं मैं बिठूरते ❋ जैहौं अबहिं गंगके घाट ॥
ऊदनि बुलवायो जगनिकको ❋ औ जगनिकते कही सुनाय
डोला लै जाउ तुम महुबेको ❋ हम अब गहना ढुँढिहैं जाय
डोला चलिभै तब महुबेको ❋ अकिलै चले उदैसिंह राय।
ऊदनि पहुँचे जब बिठूर में ❋ मेला कहूँ न परो दिखाय ॥
कूच कराय गयो मेला सब ❋ ऊदनि गये सनाका खाय ।
डेरा परो रहै सोभियाको ❋ ऊदनि तहाँ पहूँचे जाय ॥
पूँछन लागी सोभिया बेडिनि ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोले ऊदनि तब सोभियाते ❋ हम रहवैया नगर महोब ॥
छोटे भैया हैं आल्हा के ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ।
गहना भूले हम भौजी को ❋ सो नाहीं कहुँ परत दिखाय
बोली सोभिया तब ऊदनिते ❋ हमते खेलौ पंसासार ।
पता लगै हैं हम गहने को ❋ ऊदनि धीर धरो मनमाहिं ॥
घोडा बेंदुलाते उतरे तब ❋ ऊदनि बैठि गये निरशंक ।
सोभिया मँगवाई चौपरि तब ❋ सो सिराकिनमें लई बिछाय

खेलन लागे ऊदनि ठाकुर ❋ सोभिया जादू दीन्हीं डारि
सुआ बनायलियोऊदनिको ❋ औ पिंजरामें लो बैठारि ॥
कूच कराय दियो दिल्लीको ❋ औ दिल्लीमें पहुँची जाय।
कही हकीकति तहँ पिरथीते ❋ पृथीराजने दियो निकारि॥
टिकन न दीन्हों महाराजने ❋ सोभिया कूच दियो करवाय
जहँजहँपहुँचीसोभियाबेडिनि ❋ काहू ठौर दियोत्यहि नाहिं
झारखंडके तब झाबरमें ❋ सोभिया डेरा दिये लगाय।
सिरकी परिगइँ ठौर ठौरपर ❋ जादुकि चौकी दई बिठाय॥
हियाँकि बातें तो हियँ छाँडो ❋ अब महुबेको सुनो हवाल।
डोला आये जब बिठूरते ❋ ना कहुँ ऊदनि परे दिखाय
आल्हा पूँछो जगनायकते ❋ छाँडे कहाँ लहुरवा भाय।
हाल सुनायो तब जगनिकने ❋ आल्हा बैठि रहे अरगाय॥
बहुत दिना बीते ऊदनिको ❋ आल्हा सोच करन तब लाग
पूँछन लागे तब सुनवाँते ❋ कहँ रहिगये उदैसिंह राय॥
खबरि मिलीनाकहुँऊदनिकी ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय।
बोली सुनवाँ तब आल्हाते ❋ स्वामी सुनो हमारी बात॥
हमरे मनमें अस आवत है ❋ काहू हरे उदैसिंह राय।
जादू करि कोऊ हरि लैगयो ❋ सो हम देहैं ढूँढि मिलाय॥
बिना हमारे सो मिलिहैं ना ❋ सो तुम बचन करो परमान
लैकै जादू सुनवाँ चलिभइ ❋ मुखमें गुटिका लियो दबाय
चिल्हिया बनि गइ लोटिपोटिकै ❋ आधे सरग रही मँडराय।
घर घर खोज्यो तिन बिठूरमें ❋ ना कहुँ ऊदनि परे दिखाय
देश कामरू बंगाला सब ❋ ढूँढो जाय सुनमदे रानि।
बूनागढ नैनागढ नरवर ❋ सबते ढूँढो सुनमदे रानि॥
सिगरे राजनके शहरनमें ❋ ढूँढे जाय उदैसिंह राय।

तब फिरि आई झारखंड में ❋ सिरकिन डेरा परे दिखाय॥
टँगो पींजरा इक अमिलीमें ❋ तामें सुअना परो दिखाय ।
सो पहिचानि लियो सुनवाने ❋ तापर सुनवाँ बैठी जाय ॥
सोभिया पहुँची वा अमिलीतर ❋ तुरतै पिंजरा लियो उतारि
पलँग बिछाय लियो सोभियाने ❋ तापर चौपारि लई बिछाय
मानुष करिकै बघ ऊदनिको ❋ पंसासारी खेलन लागि ।
आधी राति गई खेलतही ❋ तब शोभियाने कहासुनाय॥
ब्याह करौ ऊदनि हमरे सँग ❋ औ नित लेउ खुदाको नाम।
बोले ऊदनि तब सोभियाते ❋ हमते यह होइबेकी नाहिं ॥
बहुतक समुझायोसोभियाने ❋ ना ऊदनिने मानी बात ।
रस्सा लैकै तब सोभियाने ❋ बघ ऊदनिको दियोबँधाय ॥
बाँसन मारु दई पीठी में ❋ गाँठी पैठि पीठि में जायँ ।
बोले ऊदनि तेहि सोभियाते ❋ चहैतन धजीधजी उड़िजाय
ब्याहु न करिहैं हम तुम्हरेसँग ❋ ना हम लिहैं खुदाको नाम॥
राम नाम आधार हमारे ❋ सोई रखि है धर्म हमार ।
राति रहिगई पहर एक जब ❋ सोभियासुअनादियोबनाय
पिंजरा टांगिदियोअमिलीमें ❋ अपना परिकै सोवन लागि।
डारि मसानदियो सुनवाँतब ❋ पिंजरा तुरतै लियो उतारि॥
दुसरे बनमें पिंजरा लाइ ❋ तुरतै मानुष लियो बनाय ।
बोली सुनवाँ तब ऊदनिते ❋ देवर क्या गति भई तुम्हारि।
बडे बडे जोधा तुमने मारे ❋ कबहुँ न लगो पीठिमें दागु॥
जातिकि बेडिनि तुमका मारै ❋ क्यों ना लियो खुदाका नाम
बोले ऊदनि तब सुनवाँते ❋ है तरवारि गहेकी लाज ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिन को ❋ जो तजि देयँ रामको नाम।
फिरिकै सुनवाँ बोलन लागी ❋ या नटिनी ते करौ बिवाह॥

बोले ऊदनि तब सुनवाँ ते ❋ भौजी यह होइबेकी नाहिं।
हमें चाह नाहीं नटिनीकी ❋ ना हम महुबेको लै जायँ ॥
तब फिरि सुनवाँ बोलन लागी ❋ अब तुम चलौ हमारे साथ
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ हम ना जायँ तुम्हारे साथ॥
चोरी चोरा जो जैहैं हम ❋ हमरो क्षत्री धर्म नशाय।
खबरि सुनावौ तुम आल्हाको ❋ सो लश्कर लै पहुँचै आय
लडिकै भागि जाय नटिनी जब ❋ तब हम चलें महोबे माहिं
यह सुनि सुनवाँने ऊदनिको ❋ फिरिते लीन्हों सुआ बनाय
सो बैठारि दीन पिंजरामें ❋ औ अमिलीमें दीन्हों टांगि
चलिभइ सुनवाँ झारखंडते ❋ औ महुबेमें पहुँची आय ॥
खबरि सुनाई सब आल्हाको ❋ औ सुनवाँने कही सुनाय।
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❋ औ ऊदनिको लेउ छुडाय॥
संग तुम्हारे हमहूँ चलि हैं ❋ औ सब जादू दिहैं हटाय।
पाती भेजौ तुम जगनिकको ❋ औ लैलेउ आपने साथ ॥
यह सुनि पाती लिखि आल्हाने। जगनायकको लियो बुलाय
हाल बतायो सब ऊदनिको ❋ औ चलिबेको भये तैयार॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय।
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार॥
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये तैयार।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ अपनो हाथी लियो सजाय
तापर बैठि गये आल्हा तब ❋ ढेबा मनुरथापर असवार।
घोडी हिरौंजिनि पर जगनिक तब ❋ तुरतै कूदि भये असवार
घोडा करिलिया पर इन्दल चढि ❋ सबने कूच दियो करवाय
गुटका मुहमें सुनवाँ दाबे ❋ चिल्हिया बनि लश्करके साथ
चलिभइ सुनवाँ रंगमहलते ❋ झारखंडमें पहुँची जाय।

आधिराति के तब अमलामें ❋ सुनवाँ गई अमिलिया पास
लैकै पिंजरा सुनवाँ चलिभइ ❋ बनके बाहर पहुँची जाय ।
मानुष करि दियो बघ ऊदनिको। तौलौं आल्हा पहुँचे आय
डेरा डारि दिये आल्हा ने ❋ अपने तम्बू दिये लगाय ।
ऊदनि मिले जायँ आल्हाको ❋ औ आल्हाको करी सलाम
पहरा बैठे थे रखवार ❋ तिन सोभियाते कही सुनाय
फौज आयगइ केहु राजाकी ❋ घेरो चारि ओरते आय ॥
यह सुनि सोभिया उठि ठाढी भइ। सद्दुआ बीरन लियो बुलाय
बोली बेडिनि तब बीरनते ❋ शिरपर दुश्मन पहुँचो आय
जल्दी त्यार होउ लडिबेको ❋ अब ना राखो देर लगाय ।
नौ हजार नट त्यार भये तब ❋ अपने बाँधि बाँधि हथियार
लै लै अपने जादू झोरा ❋ औ मुर्चा पर पहुँचे जाय ।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
हुक्म दै दियो तब आल्हाने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
झुके खलासी तब तोपन पर ❋ तोपन आगी दई लगाय ॥
दगी सलामी दोऊ ओरसे ❋ अररर गोली छूटन लागि।
लागै गोला जौने नटके ❋ सो लत्ता अस जाय उडाय
गोला जँजिरहा ज्यहि के लागै। तुरतै हाड मास छुटि जायँ
बानको डंडा ज्यहिके लागै ❋ ताके दुइ खंडी ह्वइ जायँ ॥
छोटी गोली ज्यहिके लागै ❋ सो गिरि परै करौंटा खाय
इक हजार नट जब भुइँ गिरिगे ❋ सद्दुआ मनमें गयो डेराय
लैकै जादू बंगाले की ❋ तब सद्दुआ ने दई जगाइ ॥
गोल बाँधि सब झुके बेडिया ❋ अपनो मया मोह बिसराय
खैंचि शिरोही नटवा आये ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ खटखट चलन लगी तलवारि

दोनों फौजैं संगम होइ गईं ❋ कोताखानी चलै कटार ।
पैदल गिरिगे पैगपैग पर ❋ उनके दुदुइ पैग असवार
जहँ तहँ काटि कटि हाथी गिरिगे ❋ छोटे पर्वत की उनहार ।
क्या गति बरणौं तेहि समयाकी ❋ अन्धाधुन्ध चलै तलवारि
सहुआ सोभियाकी धमाकिनमें ❋ कोऊ कुँवर न आडे पावँ।
भगे सिपाही महुबेवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
बोले ऊदनि तब क्षत्रिन ते ❋ यारो समय न बारम्बार ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भैया लगौ हमार
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❋ यारो रखियो धर्म हमार ।
निमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाडनमें गयो समाय
मारि भगावौ तुम नटवनको ❋ औ रखि लेउ आपनो नाम
सदा तुरैया ना बन फूलै ❋ यारो सदा न जीवन होय
मानुष देही यह दुर्लभ है ❋ कोऊ आजु मरै कोउ कालिह
दियो बढावा बघ ऊदनिने ❋ सबको आगे दियो बढाय
झुके सिपाही तब महुबेके ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय
लम्बी धोतिन के पाहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह
यह गति देखी जब सोभियाने ❋ अपने जादू लये उठाय ॥
जादू पढिकै सोभिया मारी ❋ रणमें आगी दइ फैलाय ।
ब्याकुल होइगये महुबेवाले ❋ क्षत्री लैलै भगे परान ॥
देखि हाल यह सुनवाँ रानी ❋ अपनो जादू लियो उठाय।
पानी बरसायो जादूते ❋ तुरतै आगी गई बुझाय ॥
आँधीकि पुडिया सोभिया छाँडी ❋ सुनवाँ दई मसानीडारि।
बोले आल्हा तब क्षत्रिनते ❋ यारो राखौ धर्म हमार ॥
भागि न जैयो कोउ समुहेते ❋ नाहिं सब जैहै काम नशाय

सुनिकै लौटे फिरि क्षत्री सब ❋ रणमें चलन लगी तलवारि
पूरब दबिगे जगनायक तब ❋ पश्चिम दबे उदैसिंह राय ।
उत्तर पाटी ढेबा बहादुर ❋ दक्षिण दबे इँदलसी क्वाँर
मारि शिरोहिनसे मुह फेरो ❋ मुर्चा हटो बेडियन क्यार
देखि हकीकति अपने दलकी
सिगरे जादूलै सोभियाने ❋ सो लश्करपर दिये चलाय।
जो जो जादू सोभिया फेंकै ❋ सो सो सुनवाँ देय हटाय
तीनि पहर लौं चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
तकि तकि जादू सोभिया मारै ❋ सुनवाँ काटि देय तत्काल
बहुत लडाई भइ सोभियाते ❋ पै सुनवाँ ने लियो बचाय
बीर महमदा वाली पुरिया ❋ सो सुनवांने लई उठाय ॥
लैकै जादू नारसिंहकी ❋ सुनवाँ चौकी दई बिठाय
लैकै जादू भैरौंवाली ❋ सोऊ सुनवाँ दइ बैठारि ॥
है बिकराल कालिका जादू ❋ सो बेडिनि पर दई चलाय
भगे बेडिया तब लश्करते ❋ सब मोहरा ते गये बराय
लौटिकै सोभिया देखन लागी ❋ मनमें बहुत गई घबराय ।
बचे बेडिया जो हमरे थे ❋ सो समुहेते गये बराय ॥
सोभिया झपटी तब सुनवाँपर ❋ दोनों लडन लगीं तत्काल।
नीचे सोभिया ऊपर सुनवाँ ❋ तौलौं इन्दल पहुँचे जाय
बोली सुनवाँ तब इन्दलते ❋ याको देउ जानते मारि ।
बोले इन्दल तब सुनवाँते ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
हाथ न डारि हैं हम तिरियापर ❋ हमरो क्षत्री धर्म नशाय ।
उतरे इन्दल तब घोडाते ❋ औ सोभिया पै पहुँचे जाय
छुरिया लैकै जहर बुझाई ❋ जूरा काटिलियो तत्काल
सिगरे जादू झूठे परिगे ❋ जियतै छांडि दियो महरानि

छूटिकैभागीसोभियाबेडिनि ❋ गहना आल्हा लियोसम्हारि
कूच करायो झारखंडते ❋ झुन्नागढकी पकरी राह ॥
जबहीं पहुँचे झुन्नागढमें ❋ आल्हा डेरा दियो लगाय ।
गो हरकारा सेनापतिपै ❋ औ लश्करको कह्यो हवाल॥
कोऊ राजा चढि आयो है ❋ ताको अब कछु करौ उपाय ।
सुनतै धावनको बुलवायो ❋ औ राजाने कही सुनाय ॥
जल्दी जावौ तुम बागनमें ❋ औ सब खबरि सुनावौ आय
चलो सांडिया झुन्नागढते ❋ औ बागनमें पहुँचो आय॥
सुनोहाल तबसबआल्हाको ❋ तुरतै लौटि परो अरगाय ।
खबरि सुनाय दई राजाको ❋ लश्कर परा महोबे क्यार ॥
इतनी सुनतै सेनापतिने ❋ अपनी पलकी लई मँगाय ।
तोडा पाँच लिये मोहरनके ❋ औ नौ हीरा लिये मँगाय॥
तुरत सवार भये पलकी पर ❋ औ लश्करकी पकरी राह ।
आगे मिले जाय आल्हाको ❋ दीन्हीं भेंट विसेने राय ॥
बोले सेनापति आल्हाते ❋ कहाँकि त्यारी दई कराय ।
बोले आल्हा तब राजाते ❋ ऊदनि गये थे गंग नहान॥
सोभियाबेडिनि जादू करिकै ❋ हरि लैगई उदैसिंह राय ।
मोहरा मारो हम सोभियाको ❋ औ ऊदनिको लाये छुडाय
यह सुनिराजाबहुत खुशीभये ❋ हो समरत्थ बनाफर राय ।
जादूगरनी सोभिया बेडिनि ❋ तुमने लडिकै दई भगाय ॥
लाज राखिलइ परमेश्वरने ❋ औ मिलिगये उदैसिंह राय।
खातिर कीन्हीं तब राजाने ❋ आल्हा कीन्हें तीनि मुकाम॥
कूच करायो झुन्नागढते ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
मंजिल मंजिलके चालेमें ❋ गढ महुबेमें पहुँचे आय ।
खबरि फैलिगइ गढ महुबेमें ❋ महुबे आये उदैसिंह राय ।

अनँद बधैया महुबे बाजी ❀ तुरतै दगन सलामी लागि ॥
ऊदनि भेंटे सब काहूको ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
ऊदनि हरन भयो पूरा यह ❀ सो हम लिखिकै दियो सुनाय
आगे गौना है ब्रह्माको ❀ यारौ सुनियो कान लगाय।
समय पाय तुम आल्हागावौ ❀ नित उठि नाम लेउ भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीताराम क्यार धरि ध्यान॥

इति ऊदनि हरण समाप्त ।

अथ

बेलाके गौनेकी पहिली लडाई।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सवैया।

कैटभसे नरकासुरसे अरु भीषम द्रोण महायश खेवा।
बालि बली बलि बाण दधीचि ययातिदिलीपहुसे बलसेवा॥
रावण और युधिष्ठिर भारत भीम महाबलवान सुदेवा।
अन्तसमय उबरेन कोऊ क्षणमाहिं भये सब कालकलेवा ॥२॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम।
गौना बेलाको भाषत हौं ❋ यारौ सुनौ छोंडि सब काम
सुमिरन करिये सब दुष्टनको ❋ जिनको नाम प्रगट संसार
हिरण्याक्ष हिरणाकुश ह्वैगे ❋ सतयुग माहिं शूर सरदार
त्रेता में रावण दशकन्धर ❋ लडिकै वंश नाश करि दीन
मुख नहिं मोर्‍यो रण समुहे ते ❋ रघुबर किये प्राणने हीन ॥
द्वापर प्रगट भयो कंसासुर ❋ मार्‍यो ताहि कृष्ण भगवान
कलियुग प्रगटे माहिल राजा ❋ जानें क्षत्री कियो निदान
चुगुली करि करि युद्ध करायो ❋ लडि लडि मरे शूर शिरताज
बीर हीन भारत गारत भयो ❋ बिगडे सबै राजके काज ॥
भारत युद्ध कियो दुर्योधन ❋ सोई पृथीराज भे आय।
क्यों ना करते युद्ध बादसो ❋ माहिल दीन्हीं बुद्धि फिराय
बेटी ब्याही जब ब्रह्मासँग ❋ तब क्यों कियो युद्ध सामान
आल्हा ऊदनि लाखनि सैयद ❋ होते मित्र बीर मलिखान॥

होता यवन राज नांहीं यहँ ❃ मिलतो नाहिं कष्ट संसार ।
धन्य राज है अब दुनियामें ❃ है अँगरेजन को अधिकार
होय उखारी ना महुबे में ❃ महुबे धान पान अधिकार
क्षत्री उपजैं ना आल्हासे ❃ ना फिरि तपै चन्द्र सरदार
लगी कचहरी परिमालै की ❃ अजगर लागि रहा दरबार
बडे बडे जोधा बँगला बैठे ❃ बैठे बडे बडे सरदार ॥
लाखनि राना मीरा सैयद ❃ आल्हा और उदैसिंह राय।
ढेबा इन्दल ब्रह्मा बैठे ❃ बैठे उरईके परिहार ॥
माहिल बैठे थे समुहेपर ❃ सो राजासे लगे बतान ।
लरिका आये अब तुम्हरे घर ❃ आये संग कनौजी राय ॥
ऐसो समय फेरि मिलि है ना ❃ गौनेको बीरा देउ धराय ।
इतनी सुनतै परिमालैने सोने कलशा लिये मँगाय॥
बीरा लैकै पाँच पानको सो कलशापर दियो धराय
है कोउ क्षत्री या बँगलामें जो गौनेपर पान चबाय ॥
भरी कचहरी क्षत्री बैठे सुनिकै गये सनाका खाय।
कोऊ चालि भयो दहिने बायें कोऊ करन गयो अस्नान॥
कोउ निहारै आसमानको काहू लीन्हों शीश लचाय
कोउ न देखै वा बीराको नाहीं मसातलक मन्नाय ॥
तडपिकै ऊदनि गै कलशापै औ बीराको लिये उठाय ।
गौनो हम ब्रह्माको ❃ हमहीं बीरा लिहैं चबाय ॥
यह माहिल राजा ❃ ब्रह्मानँदसे लगे बतान ।
संगमें जैहैं आल्हा ऊदनि ❃ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❃ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं
बीरा छीनि लेउ ऊदनिते ❃ औ गौनेको होउ तयार ॥
साथ तुम्हारो चलि दिल्लीको ❃ तुरतै गौना दिहैं कराय ।

बात मानिकै तब माहिलकी ❀ ब्रह्मा बीरा लियो छिनाय ॥
कायल आल्हा बहुतै ह्वइगे ❀ ऊदनि मनमें गये लजाय ।
दोनों भैया उठि ठाढेभे ❀ दशपुरवामें पहुँचे जाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदनिते ❀ तुम सुनिलेउ लहुरवा भाय
बीरा छीनि लियो मजलिसमें ❀ हमरी दीन्हीं हँसी कराय॥
घटिहा राजा परिमालै है ❀ कायल कियो हमहिं बुलवाय
हम नहिं आवत थे कनउजते ❀ तुम ना मानी कही हमारि
लगो महीना जब अगहनको ❀ आये दिना गौनवाँ क्यार
करी तयारी ब्रह्मानँदने ❀ तुरत नगरची लियो बुलाय
डंका बाजै हमरे दलमें ❀ सिगरी फौज होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री सजिकै भये तयार॥
सोचन लागी रानी मल्हना ❀ अकिले ब्रह्मा भये तयार ।
आल्हा ऊदनि जो जैहैं ना ❀ मारो जैहै पुत्र हमार ॥
सोचि समुझिकै रानी मल्हना ❀ इक हरकारा लियो बुलाय
सो पठवाय दियो लाखनिपै ❀ औ लाखनिको लियो बुलाय
देखी सूरति जब लाखनिकै ❀ मल्हना रोय उठी तत्काल
बोले लाखनि तब मल्हनाते ❀ माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन बातको तुम रोई हौ ❀ सो सब हमते कहौ सुनाय
बोली मल्हना तब लाखनिते ❀ बेटा सुनो कनौजी राय ॥
आल्हा ऊदनि रूठि गये हैं ❀ सो ना मनि हैं कही हमारि।
कौनसो जोधा है धरतीपर ❀ जो पिरथीते माडै रारि ॥
लाखनि बोले तब मल्हनाते ❀ धीरज धरो मल्हनदे माय ।
मोहरा मारि हैं हम पिरथीको ❀ तुरतै बिदा लिहैं करवाय
यह कहि चालिभै लाखनि राना ❀ अपने दलमें पहुँचे जाय ।
हुक्म दै दियो तब लश्करमें ❀ हमरी फौज होय तैयार ॥

डंका बाजो तब लाखनिको ❋ क्षत्री होनलगे तैयार ।
सुनी खबरि जब बघ ऊदनिने ❋ तब लाखनिपै पहुँचे जाय॥
करी बन्दगी उन लाखनिको ❋ पूछन लगे उदैसिंह राय ।
कहांकि त्यारी दादा कीन्हीं ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ मल्हना रानी हमहिं बुलाय
रोवन लागी हमरे आगे ❋ औ गौनेको कहो हवाल ॥
आल्हा ऊदनि हमसे रूठे ❋ को अब गौना देय कराय
तब हम त्यार भये ब्रह्मासँग ❋ उनको गौना दिहैं कराय ।
यहसुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम तौ आये हमारे साथ॥
अकिले जावो ना ब्रह्मासँग ❋ घटिहा वंश चँदेले क्यार ।
काम तुम्हारो ना जैबेको ❋ सो तुम मानौ कही हमारि
कही हमारी जो मनिहौ ना ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
बोले सैयद तब लाखनिते ❋ बेटा छोरि धरौ हथियार ॥
दूजी करौ नहीं ऊदनिसँग ❋ नाहिं कछु काम बनैगो नाहिं
इतनी सुनतै लाखनि राना ❋ सबकी कमरैं दईं खुलाय ॥
त्यारी कीन्हीं तब ब्रह्माने ❋ अपनो लश्कर संग लिवाय
बडे बडे जोधा लिये साथमें ❋ लश्कर कूच दियो करवाय॥
संगै चालिभै माहिल राजा ❋ औ दिल्ली मैं पहुँचे जाय ।
डेरा डारि दिये धूरेपर ❋ अपने तम्बू दिये लगाय ॥
फेटैं छुटिगईं रजपूतनकी ❋ सब क्षत्रिननेकियो मुकाम
जीन उतारि दिये घोडनके ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
चालिभै माहिल तब लश्करते ❋ पहुँचे जाय राजदरबार ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ माहिल हाथ बांधि रहिजायँ
नजरि बदलि गइ महाराजकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ।
आवो बैठौ उरईवाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय॥

बोले माहिल तब राजाते ❋ बैठे राज्य करौं महराज ॥
आये ब्रह्मा हैं गौनेको ❋ अपना लश्कर साथ लिवाय।
बीरा धरो गयो गौनेको ❋ सो ऊदनिने लियो उठाय ॥
हमने कहिके तब ब्रह्माते ❋ वा बीराको लौं छिनवाय ।
करी तयारी थी लाखनिने ❋ सो ऊदनिने लियो रोकाय॥
अकिले आये हैं ब्रह्मानँद ❋ डोला लेन विलमदे क्यार ।
मनहिं तुम्हारे जैसी आवै ❋ तैसी करौ बीर चौहान ॥
यह सुनि बोलेपृथीराज तब ❋ माहिल सुनौ हमारी बात ।
गौना देहैं हम पाछेको ❋ पहिले करि हैं युद्ध अघाय ॥
अपनो क्षत्रीपन दिखलावौ ❋ यह ब्रह्माको देउ सुनाय ।
इतनीसुनिकैमाहिलचलिभे ❋ औ ब्रह्मापै पहुँचे जाय ॥
बोले माहिल ब्रह्मानँदते ❋ यह कहि दई पिथौरा राय ।
गौना देहैं हम पीछेको ❋ पहले करि हैं युद्ध अघाय ॥
करैं तयारी वे लडिबेकी ❋ औ क्षत्रीपन देयँ दिखाय ।
बिना लडे गौना मिलिहै ना ❋ सो तुम जानि लेउ मनमाहिं।
होय न इच्छा जो लडिबेकी ❋ तौ तुम कूच जाउ करवाय ।
पै इक मानौ सीख हमारी ❋ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय॥
लौटि जोजैहो तुम गौनेबिन ❋ तुमको हँसि है सकल जहान।
आल्हाऊदनिहँसिहँसिकहिहैं ❋ क्यों नहिं लाये गौन कराय॥
ताते त्यार होउ लडिबेको ❋ रक्षा करैं शारदा माय ।
इतनी सुनते ब्रह्मानँदने ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लैकै कागद कलपीवालो ❋ चिट्ठी लिखी आपने हाथ ।
सिद्धिश्री नारायण लिखिकै ❋ ता पाछेते लिखी जोहार ॥
लिखी हकीकति फिरि गौनेकी ❋ पढियो याहि पिथौरा राय
लेन गौनवाँ हम आये हैं ❋ सो तुम बिदा देउ करवाय ॥

कही हमारी जो मनिहौ ना ❋ तौ हम कटा दिहैं करवाय ।
बिदा करे हैं रनि बेलाकी ❋ ताते बिदा देउ करवाय ॥
बिदा कराये बिन जैहैं ना ❋ चाहौ प्राण रहैं की जायँ ।
यह बिधि चिट्ठी लिखि ब्रह्माने ❋ हरकारा को दइ पकराय॥
चलो सांडिया तब लश्करते ❋ औ दिल्लीमें पहुँचो जाय ।
धावन उतरि परो जल्दीते ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ पाती गदी दई चलाय ।
नजरिबदलिगइपृथीराजकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ॥
पाती पढतै महाराजने ❋ ताहर बेटा लियो बुलाय ।
चौंडा धाँधूको बुलवायो ❋ गोपी बेटा लियो बुलाय ॥
औ बुलवायो टोंडरमलको ❋ सब ते कही बीर चौहान ।
लश्कर सजवावौ जल्दीते ❋ औ धूरे पर पहुँचो जाय ॥
ब्रह्मा आये हैं गौनेको ❋ सो तुम कटा देउ करवाय ।
बाँधिके लावौ ब्रह्मानँदको ❋ अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनतै ताहर चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कडा दियो डरवाय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर सजिकै होय तयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्री सजन लागि तत्काल॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढैया हाथिन चढिगे ❋ बाँके घोडनके असवार ।
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दईं जुताय ॥
घोडा दलगंजन सजवायो ❋ तापर ताहर भये सवार ।
सब्जा घोडा त्यार करायो ❋ तापर गोपी भये सवार ॥
टोंडरमल चढिगै सुर्खापर ❋ हाथी सजा चौंडिया क्यार

भौंरानँद हाथी सजवायो ❋ तापर धाँधू भये सवार ॥
अपनी अपनी असवारिनपर ❋ सिगरे क्षत्री भये सवार ।
कूच कराय दियो लश्कर को ❋ मारू डंका दियो बजाय ॥
चारि घरी के तब अरसामें ❋ पहुँचे रणखेतनमें जाय ।
खबरि सुनी जब ब्रह्मानँदने ❋ आई फौज पिथौरा क्यार ॥
हुक्म फेरि दियो तब जल्दीते ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सजिकै भये तयार ॥
बडि बडि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो मुर्चा पर दईं लगाय ।
लश्कर त्यार भयो ब्रह्माको ❋ औ मुर्चापर पहुँचो जाय ॥
चाढि हरनागरपर ब्रह्मानँद ❋ पहुँचे समरभूमि में जाय ।
ताहर घोडा दाबे आये ❋ औ ब्रह्मापै पहुँचे आय ॥
बोले ताहर ब्रह्मानँदते ❋ काहे धुरो दबायो आय ।
गरुई गाजे हैं दिल्ली की ❋ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
यह सुनि ब्रह्मानँद बोले तब ❋ बाहिनिकि बिदा देउ करवाय
बिदा कराये बिन जैहैं ना ❋ चाहैं प्राण रहैं की जायँ ॥
गुस्सा ह्वइकै तब ताहरने ❋ तुरतै हुक्म दियो करवाय ।
बत्ती दैदेउ सब तोपन में ❋ इन पाजिन को देउ उडाय ॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ तुरतै आगी दई लगाय ।
दगीं सलामी दोनों दलमें ❋ धुअना रह्यो सरगमें छाय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❋ सरसर परी तीर की मारु ।
बान अगिनियाँ छूटन लागे ❋ गोली मघाबूँद समजाय ॥
गोला ओलाके सम बरसैं ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ।
गोला लागै ज्यहि हाथी के ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहि जाय
लागै गोला जौने ऊँटके ❋ सो गिरि परै चकत्ता खाय ।
गोला लागै ज्यहि घोडाके ❋ चारौ पायँ देय फैलाय ॥

लागै गोला ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरिपरै धरनि भहराय।
छोटी गोली ज्यहि के लागै ❋ मानौं गिरह कबूतर खाय ॥
गोला जँजिरहा ज्यहिके लागै ❋ तुरतै हाडमास छुटि जायँ।
बानको डंडा ज्यहिके लागै ❋ ताके दुइखंडा ह्वइ जायँ ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ।
बन्द लडाई करि तोपनकी ❋ ज्वानन खैंचि लई तलवारि
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ रहि गयो तीनि कदम मैदान
उठी शिरोही तब क्षत्रिनकी ❋ खटखट चलन लगी तलवारि
चलै जुनब्बी औ अहिगर्वी ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार।
तेगा चटकैं बर्दवान के ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुवा ज्वान
झुके सिपाही महुबे वाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि।
पैग पैगपर पैदल गिरिगे ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसेपर हाथी डारे ❋ छोटे पर्बत की उनहार।
सवा पहर भरि चली शिरोही ❋ धूरे बही रक्तकी धार ॥
डारे वैहा रण में लोटैं ❋ जिनके प्यास प्यास रट लागि
पगिया डारी जो लोहू में ❋ मानौं कमल फूल उतरायँ॥
डारी ढालैं जे लोहू में ❋ मानौ कछुवासी उतरायँ।
भगे सिपाही दिल्ली वाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
देखि हाल यह गोपी बढिगे ❋ औ ब्रह्मा ते लगे बतान।
सम्हरो ब्रह्मा तुम घोडापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय
घोडा बढायो तब ब्रह्माने ❋ औ गोपीते कही सुनाय।
पहिली चोट करौ अपनी तुम ❋ मनके मेटि लेउ अरमान॥
इतनी सुनतै गोपी बढिगे ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि।
चोट चलाई ब्रह्मानँदपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
तीनि शिरोही गोपी मारी ❋ ब्रह्मा लीन्हीं चोट बचाय।

तब ललकारो ब्रह्मानँद ने ❋ अब तुम खबरदार ह्वैजाउ
खैंचि शिरोही ब्रह्मा मारी ❋ गोपी दीन्हीं ढाल अडाय
ढाल फाटिगइ गैंडावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय
छूटि जनेवा गो गोपीको ❋ गोपी जूझि गये मैदान ।
यह गति देखी जब टोंडरमल ❋ तब ब्रह्माको दइ ललकार ॥
खैंचि शिरोही टोंडरमल ने ❋ ब्रह्मानँदपर दई चलाय ।
चोट बचाई ब्रह्मानँदने ❋ अपनी दीन्हीं ढाल अडाय
टूटि शिरोही गइ टोंडरकी ❋ टोंडर सोचि सोचिरहिजायँ
तब ललकार दई ब्रह्मानँद ❋ अपनों दीन्हों गुर्ज चलाय
गुर्जके लागत टोंडर जूझे ❋ ताहर घोडा दियो बढाय ।
लाश उठाय लई दोनों की ❋ सो दिल्लीको दई पठाय ॥
घोडा बढायो ताहर ठाकुर ❋ औ ब्रह्माते कही सुनाय ।
सम्हरिकै बैठो तुम घोडापर ❋ तुम्हरा काल पहूँचो आय ॥
चोट आपनी ब्रह्मा करि लेउ ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ।
बोले ब्रह्मा तब ताहर ते ❋ हमरे बचन करौ परमान ॥
पहिलि उचौनी हम ना खेलैं ❋ ना तिरियापर डारैं हाथ ।
भगे सिपाही को मारैं ना ❋ ना हम धरैं पिछारी पाँव ॥
चोट आपनी ताहर करि लेउ ❋ मनके मेटि लेउ अरमान ।
इतनी सुनि ताहर गुस्सा ह्वै ❋ अपनी लई शिरोही काढि
चोट चलाई ब्रह्मानँदपर ❋ ब्रह्मा दीन्हीं ढाल अडाय ।
सात शिरोही ताहर मारी ❋ ब्रह्मा लैगे चोट बचाय ॥
सोचे ताहर तब अपने मन ❋ यह ब्रह्मा है बुरी बलाय ।
साँग उठाई फिरि ताहरने ❋ सो ब्रह्मापर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ब्रह्माने ❋ ताहर दीन्हीं गुर्ज चलाय ।
हटि गयो घोडा ब्रह्मानँदको ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥

बोले ब्रह्मानँद ताहरते ❀ अब तुम खबरदार ह्वैजाउ
गुर्ज उठायो ब्रह्मानँद ने ❀ सो ताहर पर दियो चलाय
लगो चपेटा जब घोडाके ❀ ताहर घोडा गये भगाय।
यह गति देखी जब चौंडाने ❀ अपनो हाथी दियो बढाय
आगे बढि ब्रह्मै ललकारो ❀ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय
बायें ते घोडा दहिने ह्वैगो ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
साँग उठाई तब ब्रह्माने ❀ सो हाथीपर दई चलाय।
हाथी हटि गयो तब चौंडाको ❀ मुर्चा फिरो चौंडिया क्यार
मुर्चा हटि गयो जब चौंडाको ❀ धाँधू हाथी दियो बढाय।
धाँधू आये जब समुहेपर ❀ तब ब्रह्माने कही सुनाय॥
भैया हमरे तुम लागत हौ ❀ पै जो लडौ हमारे साथ।
तौ तुम अपने बल पौरुषभारि ❀ लडिकै मेटि लेउ अरमान
काल समान देखि ब्रह्माको ❀ धाँधू तुरतै लगे बतान।
लागि हमारी कछु नाहीं है ❀ खायों निमक पिथौराक्यार
खैंचि शिरोही लइ इतनो कहि ❀ सो ब्रह्मापर दई चलाय।
ढाल अडाय दई ब्रह्माने ❀ तीनों चोटैं लईं बचाय ॥
गुर्ज उठायो ब्रह्मानँदने ❀ औ धाँधूपर दियो चलाय
भागो हाथी तब धाँधू को ❀ ब्रह्मा डंका दियो बजाय॥
ताहर चौंडा धाँधू ठाकुर ❀ सब मुर्चाते गये बराय।
फौज भागि गइ पृथीराजकी ❀ कोऊ शूर न परै दिखाय॥
जहाँ कचेहरी पृथीराज की ❀ ताहर तहाँ पहूँचे जाय।
हाल सुनायो सब ब्रह्माको ❀ औ लश्करको कह्यो हवाल
लडे न जिति हैं हम ब्रह्माते ❀ है जो रणमें काल समान।
गोपी टोंडरको हनि डारो ❀ लश्कर काटिकियो खरिहान
मारि भगायो हम सबहीको ❀ सो तुम समुझि लेउ महराज

यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ हमरो वंश नाश करि दीन॥
कौन उपाय करें ब्रह्मा सँग ❋ यह सुनि माहिल कही सुनाय
जीति न पैहौ तुम ब्रह्माको ❋ चाहै कोटिन करौ उपाय ॥
सीख हमारी राजा मानौ ❋ तौ हम जतन देयँ बतलाय।
भेष जनाना ताहर धरि लेयँ ❋ औ डोलीमें होयँ सवार ॥
भेजो डोली सो ब्रह्मा पै ❋ औ यह कहिकै देउ पठाय।
डोला भेजो हम बेटीको ❋ सो तुम लेउ चँदेले राय ॥
गाफिल करिकै ब्रह्मानँदको ❋ तुरतै लेउ जँजीरन बांधि।
लायकै दिल्लीके खंदकमें ❋ ब्रह्मानंदहि देउ डराय ॥
यह उपाय हमने सोचा है ❋ सोई करौ बीर चौहान।
उडन बछेरा है ब्रह्माको ❋ तातें और न चलै उपाय ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ हम ना धरैं जनानो भेष।
धर्म क्षत्रियनको नाहीं यह ❋ जो क्षत्रीपन देयँ नशाय ॥
चौंडा बोलो तब जल्दीतें ❋ हम धरि लिहैं जनानो भेष
जायकै मारि हैं हम ब्रह्माको ❋ सिगरो झगडा दिहैं मिटाय
यहकहिचलिभयोचौंडाब्राह्मण ❋ औ महलनमें पहुँचो जाय
भेष जनानो धरो तहाँ तब ❋ पायँ महाउर लियो लगाय
गहनोपहिरिलियोतिरियनको ❋ घूँघट हाथभरेको काढि।
जहर बुझाई लई कटारी ❋ सो कम्मरमें लई लगाय ॥
पलकी मँगवाई जल्दीतें ❋ तापर चौंडा भयो सवार।
चली पालकी चौंडावाली ❋ हुकमत चलिभै आठ कहार
संगै ताहर हैं घोडापर ❋ लीन्हें साथ बीस सरदार।
इक हरकाराको भेजो तब ❋ औ यह ताहर कही सुनाय
खबरि सुनावौ तुम ब्रह्माको ❋ डोला भेजि दियो महराज॥
ताहर आवत हैं डोला सँग ❋ आगे हमको दियो पठाय।

यह सुनि ब्रह्मा बहुत खुशी होय ❋ अपनो घोडा लियो सजाय
तुरत सवार भये घोडापर ❋ तौलौं डोला परो दिखाय
बीस कदम जब ब्रह्मा रहिगे ❋ ताहर झुकिकै करी सलाम
बोले ताहर ब्रह्मानँदते ❋ डोला भेजि दियो महराज
बात तुम्हारी राजा मानी ❋ अब तुम बिदा जाउ करवाय
साँची मानि लई ब्रह्मा तब ❋ घोडेते उतारि परे अरगाय
देखो दुचित्तो जब ब्रह्माको ❋ हाथमें लई कटारी काढि।
उतरो चौंडा तब पलकीते ❋ बायें हनी कटारी जाय ॥
तुरत समाय गई हिरदैमें ❋ मूर्च्छित भये चँदेल राय ।
तीर खैंचि फिरि ताहर मारो ❋ सो माथेमें गयो समाय ॥
साँग उठाई फिरि ताहरने ❋ सो दहिनेपर दियो चलाय
घाव तीनि लागे ब्रह्माके ❋ तौलौं धाँधू पहुँचे आय ॥
हाल देखिकै ब्रह्मानँदको ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
बोले धाँधू तब ताहरते ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
धोखा दैकै तुमने मारो ❋ नहिं यह धर्म क्षत्रियन क्यार
लानति ऐसी रजपूती पर ❋ तेगा बँधिबेको धिरकार ॥
भागि गये थे तुम समुद्रते ❋ अब क्या कियो मर्दको काम
ब्याह कियो थो जब ब्रह्माते ❋ तब कहँ गई रहैं तलवारि
रांड करि दियो तुम बहिनीको ❋ अब नियरानों काल तुम्हार
भेष जनानो चौंडा करिकै ❋ धोखेते हनि दई कटार ॥
करी मर्दुमी ना चौंडाने ❋ याके जीवनको धिरकार
दिया बुझाय गयो महुबेको ❋ अब ना बचैं पिथौरा राय
अब चढि ऐहैं आल्हा ऊदनि ❋ मारि हैं बीनि बीनि सरदार
बचिहै कोऊ नहिं दिल्लीमें ❋ हमरे बचन करौ परमान
सुने बचन जब यह धाँधूके ❋ ताहर लीन्हों मूँड लचाय

मन घबराय गयो चौंडा तब ❋ सब दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
देखो मूर्च्छित ब्रह्मानँदको ❋ जगनिक तँबुआ गये लिवाय
जगी मूर्च्छा जब ब्रह्माकी ❋ तब जगनिक ते लगे बतान
हम ना जैहैं अब महुबे को ❋ तुम हरकारा देउ पठाय।
तब जगनिकने हरकारा को ❋ गढ महुबे में दियो पठाय ॥
घाव सिलाय दिये ब्रह्माके ❋ मलहम पट्टी दई कराय।
ताहर चौंडा धाँधू पहुँचे ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार
बोले धाँधू पृथीराजते ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
समुहे जीते ना ब्रह्माते ❋ तब धोखेते दियो मराय ॥
बेटी ब्याही जब ब्रह्माको ❋ तब क्यों करी निरासिनिराँड
काम मर्दको है नाहीं यह ❋ ना यह धर्म क्षत्रियन क्यार
ऐसे महावीर ब्रह्मा को ❋ बिन अपराध कियो संहार।
दिया बुझाय दियो महुबे को ❋ अपनो कियो सुयशको नाश
ऐसेइ मारे तुम मलिखे को ❋ जग बदनामी भई तुम्हारि।
काल बुलाय लियो सबको तुम ❋ साँची मानो बात हमारि
भई खबरि जब रंगमहलमें ❋ ब्रह्महिं हनो चौंडिया राय।
रोवन लागी अगमा रानी ❋ चौंडा तेरो बुरो ह्वै जाय ॥
भेद जनाको करिकै मारो ❋ तेरे जीवन को धिरक्कार।
गौन कराो नहिं मोरि बेटीको ❋ तू करि दियो निरासिनि राँड
सुनी खबरि जब रानि बेलाने ❋ तुरते अग्नि ज्वाल होइ जाय
भूषण बसन त्यागि जौहर करि ❋ बेला करन लागि अपघात
महल दूसरे में बेला गइ ❋ रोवन लागी जार बेजार।
जो हरकारा गयो महुबे में ❋ मल्हनै खबरि सुनाई जाय॥
दिल्ली जूझे पुत्र तुम्हारे ❋ सुनिकै रोय उठी महरानि।

खबरि सुनतही परलै ह्वइ गइ * हाहाकार परो रनिवास ॥
हाय हाय करि मल्हना रोवै * औ सब रोय रोय रहि जायँ
सुनी खबरि जब चन्देलेने * रोवन लगे रजा परिमाल ॥
रैयत रोवै गढ महुबे की * कोऊ रँधे भात ना खायँ ।
खबरि फैलिगइ दशपुरवा में * जूझे ब्रह्मा राजकुमार ॥
सिगरी रैयत रोवन लागी * हा दैयागति कही न जाय ।
देवै सुनवाँ फुलवा रानी * सबन छाँडि दई डिडकार ॥
हाय बिधाता यह कैसी भइ * मारे गये चँदेले राय ।
अगमा रानी बेला जाई * त्यहिं करि दई वंशकी हानि
दिया बुझाय दियो महुबेको * मरियो पुत्र पिथौरा क्यार ।
हाय निपूती अगमा रानी * जैसे भई मल्हनदे रानि ॥
माहिल राजा तुम मरिजैयो * औ उरईपर परियो गाज ।
साथ लै गये छलि ब्रह्माको * औ धोखने दियो मराय ॥
सुनौ हाल आल्हा ऊदनि जब * भुइँमें गिरे तडाका खाय ।
रोवन लागे दोनों भैया * नैनन बहै नीरकी धार ॥
रो रो बोले बघ ऊदनि तब * सूनो ह्वइ गयो नगर महोब ।
हाय बिधाता यह कैसी भइ * कैसे बचैं चँदेल राय ॥
भैया ब्रह्मा अब कहँ मिलिहैं * करिहैं अब हम कौन उपाय।
धीरज धरि तब आल्हा बोले * भैया सुनौ हमारी बात ॥
मीच पराई कोऊ मरै ना * सब कोउ मरै आपनी मीच।
जा कछु कर्म लिखो बिधनाने * ताको कोउ मिटैया नाहिं॥
काल आयगयो ब्रह्मानँदको * तब उन बीरा लियो छँडाय
अकिले चढिगे गढ दिल्लीको * घटिहा वंश पिथौरा राय ॥
जैसेइ मारा था मलिखे को * सो गति करी चँदेले क्यार।

उन्हैं मुनासिब यह नाहीं थी॥ जो घटि करी चँदेले साथ॥
घटिहा राजा दिल्लीवाला ॥ घटिहा वंश पिथौरा क्यार॥
पहिलि लडाई यह पूरी भइ ॥ आगे दुसरी दिहैं सुनाय॥
आल्हा गावौं वर्षाऋतुमें ॥ नित उठि नाम लेउ भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ॥ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति बेलाके गौनेकी पहिली लडाई समाप्त ।

अथ

बेलाके गौनेकी दूसरी लडाई।

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

कुण्डलिया।

सबकी बाजी लगि रही, धर्मराजसों जान।
लैकै फाँसी हाथ में, यम घोटैंगे प्रान ॥
यम घोटैंगे प्रान जानि मन क्यों भरमावै।
मात पिता सुत नारि बन्धु कोउ काम न आवै ॥
नारायण धरु ध्यान बँध्यो यमपुरको जावै।
तब रोवै पछिताय नहीं कछु पार बसावै ॥ २ ॥

सवैया।

ज्ञान घटै खल संगतितें, अरु रोष घटै मनके समुझाये।
पाप घटै कछु पुण्य किये, अरु रोग घटै कछु औषधि खाये ॥
प्रीति घटै नित माँगनतें, अरु नीर घटै ऋतु ग्रीषम आये।
नारि प्रसंगते जोर घटै, यमत्रास घटै हरिके गुन गाये ॥ ३ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❀ औ गणपतिके चरण मनाय
दूसरी लडाई अब, गौनेकी ❀ सो हम लिखिकै दिहैं सुनाय
भुँइया गैये याहि खेरेकी ❀ माता भूलौं नाम तुम्हार।
तुम्हरे अखाडेमें गावत हौं ❀ बेडा खेय लगायो पार ॥
जो जो अक्षर माता भूलौं ❀ सो सब कंठ बैठि कहिजाउ।
शरण तुम्हारी मैं आया हौं ❀ भूले अक्षर देउ बताय ॥
परत बिपति जगमें सबहीको ❀ यारो बिपति धाम संसार।

इक दिन बिपति परी शंकरपर ❋ जब भस्मासुर परो पिछार॥
इक दिन परिगै रामचन्द्रपर ❋ वनमें हरी निशाचर नारि।
सोइ दिन परिगयो चन्देलेपर ❋ जूझे ब्रह्मा राजकुमार॥
महलन बिलखै बेला रानी ❋ सो वह बिपति कही ना जाय
कागद लैकै कलपी वाला ❋ अपनो कलमदान लै हाथ॥
सोचि समुझिकै बेला रानी ❋ तुरतै लिखन हकीकति लागि
पहले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पाछेते लिखो हवाल॥
पाती पढियो बघ ऊदनि तुम ❋ औ आल्हाको देउ सुनाय।
सुनियत मल्हना तुमको पालो ❋ ऊदनि यही दिनाके काम॥
सुखते सोये तुम महुबेमें ❋ हमरे कंत दिये मरवाय।
लानति ऐसी रजपूतीपर ❋ तेगा बँधिवे को धिरकार॥
तेग तुम्हारी जग जाहिर है ❋ रणमें एक शूर सरदार।
सो तुम डारिगे क्यों पिरथीको ❋ क्यों गौनेते गये बराय॥
होउ जो पैदा दस्सराज ते ❋ हमरे कंत देउ मिलवाय।
नाहीं आवो जो दिल्ली को ❋ तौ धरि लेउ जनानो भेष॥
बाना छांडि देउ क्षत्री को ❋ औ सब छोरि धरौ हथियार
बेला रानी रोय रोय यह ❋ बघ ऊदनिको लिखो हवाल
यहि विधिचिट्ठी लिखि ऊदनिकोफिरि आल्हाकोलिखोहवाल
जेठ हमारे तुम आल्हा हौ ❋ तुम ऊदनिहीं देउ समुझाय
बिदा कराय लेयँ हमरी सो ❋ हमरे कंत देयँ मिलवाय।
खाय जो कसम गये गौनेकी ❋ तौ वे करैं चाकरी आय॥
भरती करि हैं हम लश्करकी ❋ लावैं फौज उदैसिंह राय।
लिखिकै पाती यह बेलाने ❋ हरकारा को दइ पकराय।
जल्दी चले जाउ महुबे को ❋ यह आल्हाको दीन्ह्यो जाय
चलो सांडिया तब दिल्लीते ❋ दशपुरवा में पहुँचो जाय।

लगी कचहरी जहँ आल्हाकी ❋ बावन उतरि परो अरगाय॥
करी बन्दगी सुनि आल्हा को ❋ पाती गद्दी दई चलाय ।
खोलिके पाती आल्हा बाँची ❋ जियके होश बन्द ह्वइ जायँ
सोचन लागे शिर नीचे करि ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय
कहाँ कि पाती यह दादा है ❋ सो तुम हाल देउ बतलाय
कौन सोच आयो जियरा में ❋ काहे बदन गयो कुम्हिलाय
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❋ भैया हाल कह्यो ना जाय
चिट्ठी भेजी यह बेलाने ❋ तुरतै तुमको पठयो बुलाय
ब्रह्मा मारेगें दिल्ली में ❋ सो अब करिहौ कौन उपाय
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा बचन करो परमान
बदला लैहैं हम ब्रह्मा को ❋ दिल्ली गर्द दिहैं करवाय ।
डाह्नु बुझैहै तब छातीको ❋ यह कहि उठे उदैसिंह राय
ऊदनि पहुँचि गये लाखनि पै ❋ औ यह कही उदैसिंह राय
अब तुम त्यार होउ दिल्लीको ❋ दादा फौज लेउ सजवाय ॥
विदा करै है हम बेला की ❋ औ ब्रह्मा को दिहैं दिखाय ।
बदला लैहैं हम भैया को ❋ तब छातीको डाह्नु बुझाय॥
यह सुनि चलिभे लाखनि राना ❋ संगै चले उदैसिंह राय ।
तुरतै पहुँचि गये लश्करमें ❋ औ यह हुकम दियो फरमाय
डंका बाजे हमरे दलमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ।
जतन करी यह तब ऊदनिने ❋ कारे कपडा लिये रँगाय ॥
कारे निशाना सब बनवाये ❋ कारो बाना कियो तयार ।
वस्त्र बँटाय दिये क्षत्रिनको ❋ औ यह सबते कही सुनाय
आयके पूँछे जो तुम ते कोउ ❋ कहियो फौज गँजरहन क्यार
भरती होवै गढ दिल्लीमें ❋ सो हम करन चाकरी जायँ
डंका बाजो गढ महुबेमें ❋ साजि गइ फौज कनौजी क्यार

लश्कर सजिगयोआल्हावालो * जाकोसजनन लागीब्यार।
अपनी अपनी असवारिनपर * क्षत्री फांदि भये असवार॥
आल्हा चढिगये पचशावदपर * सैयद सिंहिनिपर असवार।
लाखनि चढिगैतबभुरुहीपर * ढेबा मनुरथापर असवार॥
घोडा बेंदुलाको सजवायो * ऊदनि फांदि भये असवार।
धनुवाँ तेली कनउजवाला * घोडी बिलन्दिानिपर असवार
मारू डंका के बाजत खन * लश्कर कूच दियो करवाय॥
पाँच दिना मारगमें बीते * दिल्ली धुरो दबायो जाय।
डेरा डारि दिये बागनमें * लश्कर रही लालरी छाय॥
चौंडा आया था बागनमें * सो लश्करतन रह्यो निहारि।
कारो निशाना कारो बाना * देखै खडा चौंडियाराय॥
पूछन लागो तब ऊदनिते * कहाँते आई फौज तुम्हारि।
कहँ तक जैहौ तुम आगेको * सो सब हाल देउ बतलाय॥
कौने राजाको लश्कर यहु * क्यों यहँ आप मँझायो आय
यहसुनिज्वाबदियोऊदनिने * हरिसिंहाबिरसिंह नाम हमार
हम रहवैया हैं गांजरके * करि हैं यहाँ नौकरी जाय।
भरती सुनी शहर दिल्लीमें * रखि हैं हमैं बिलमदे रानि॥
बोल्यो चौंडा तब ऊदनिते * हरिसिंह सुनो हमारी बात।
करो नौकरी जो तिरियाकी * तुम्हरो क्षत्री धर्म नशाय॥
करो चाकरी बादशाहकी * तुम्हरो नाम होय संसार।
यह सुनि ऊदनिं बोलनलागे * हमको यहाँ खर्चते काम॥
चाकर रखि हैं जो हमको यहँ * करि हैं तहाँ चाकरी जाय।
बोल्यो चौंडा तब ऊदनिते * अब तुम चलो हमारे साथ॥
यह सुनि चलिभेऊदनिठाकुर * संगै चले कनौजी राय।
जबहीं पहुँचे वे ड्योढी पर * तब चौंडाने कही सुनाय॥

अब तुम ठहरौ दरवाजेपर ❋ राजै खबरि सुनावैं जायँ ।
तलब बताय देउ पहिले तुम ❋ सो राजाको देयँ सुनाय ॥
बोले ऊदनि तब चौंडाते ❋ लेहैं तीस लाख महराज ।
यह सुनि चौंडा गो राजापै ❋ तुरतै करी बन्दगी जाय ॥
बोल्यो चौंडा पृथीराजते ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
फौज कटीली गांजरवाली ❋ सो ह्वियँ आइ चाकरी काज
लाख रुपैया रोजाना है ❋ मांगत तीस लाख महँवार ।
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ चौंडा बैठि रहौ चुप साधि ॥
यहाँ खजाना ना इतनो है ❋ कैसे तलब सकैं दिलवाय ।
पारस पूजा है महुबेमें ❋ लोहा छुवत सोन ह्वइ जाय ॥
राखि सकत हैं गढ महुबेमें ❋ राजा चन्द्रबंश परिमाल ।
यह सुनि चौंडा बोलन लाग्यो ❋ ऐसी न कहो बीर चौहान ॥
बडे शूरमा हैं गांजरके ❋ जो मारिबेको नाहिं डेरायँ ।
लडे कनौजी बारा बरस लौं ❋ तहँ न पाई एक छदाम ॥
नौकर राखि लेउ पन्द्रहदिन ❋ औ महुबेको लेउ लुटाय ।
काम सिद्धि तुम्हरोह्वइ जैहै ❋ सोरहें दीजो नाम कटाय ॥
यह सुनि बोले पृथीराजतब ❋ अबहीं नाम देउ लिखवाय ।
भयो बुलौआ तब ऊदनिको ❋ औलाखनिको लियो बुलाय
दोनों पहुँचे पृथीराजपै ❋ औ सब बात चीत ह्वइ जाय
लिखिगे चेहरा जबलश्करमें ❋ तब यह कही पिथौरा राय ॥
तुरत बुलायो जल्लादनको ❋ हाथी घोडा देउ दगाय ।
तापर ज्वाब दियोलाखनिने ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
आज एकादशि हम बरते हैं ❋ पारन करिहैं कालिह बनाय ।
चमडा जरि है चौपायनको ❋ हमरो बरत भंग ह्वइ जाय ॥
ताते मानौं बात हमारी ❋ परसौं दीजो दाग दिवाय ।

सो सुनि मानि लियो राजाने * औ चौंडाते कही सुनाय ।
बेला बेटी के महलन में * इनकी चौकी देउ बिठाय ॥
चौकी उठवायो मुगुलनकी * खटका हमैं उदैसिंह क्यार ।
बोल्यो चौंडा तब ऊदनिते * हरिसिंह सुनौं हमारी बात ॥
हुक्म दियो है महाराजने * मन्दिर जहाँ विमलदे क्यार
तहँ तुम जाओ दरवाजेपर * रहियो बहुत बहुत हुशियार
इतनी सुनतै लाखनि ऊदनि * ढेवा सैयद भये तयार ।
घनुआँ तेली उठि ठाढो भयो * सब द्वारेपर पहुँचे जाय ॥
चौकी बैठ गये द्वारेपर * तब लाखनिने कही सुनाय
कौन काम खाली बैठनको * ऊदनि खेलौ पंसासार ॥
खेलन लागे लाखनि ऊदनि * लैलै नाम बेलमदे क्यार ।
होउ जो साँची बेला रानी * पाँसा परैं हमारे नाम ॥
कान अवाज परी बेलाके * तब बाँदीते कही सुनाय ।
लावो खबरि जाय द्वारेकी * पहरा कौन सिपाही क्यार
नाम हमारो बारबार कहि * द्वारे खेलत पंसासार ॥
यह सुनि आई रूपा बाँदी * औ द्वारे पर पूँछन लागि ।
हम को पठयो रानि बेलाने * अपनो नाम देउ बतलाय ॥
काहे नाम लेत हमरो हैं * सो यह पूँछी बेलमदे रानि ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे * तुम बेलाते कहियो जाय ॥
आये ऊदनि गढ महुवेते * सो ठाढे हैं पँवारि दुआर ।
जल्दी त्यार होउ चलिबेको * गौना लिहैं तुम्हारो आज
इतनी सुनतै बाँदी लौटी * औ बेलाते कही सुनाय ।
ऊदनि ठाढे हैं द्वारेपर * सो तुम सजिकै होउ तयार
तब ललकारो रानि बेलाने * काहे झूँठी कहै बनाय ।
ऐहैं ऊदनि जब दिल्लीमें * होइ है तबही दिवसकी राति
चारहु ओरी फौज पिताकी * कैसे आये उदैसिंह राय ।
कैसी सूरति है ऊदनिकी * बाँदी हमहिं कहो समुझाय

यह सुनि बाँदी बोलन लागी ❋ नैना हिरनाकी अनुहार।
मुख नरियारो देह सांवली ❋ औ है बहुत सुघरुआ ज्वान
बोली बेला तब बांदीते ❋ हमरे मन यह नाहिं समाय
अबहीं लौटि जाउ द्वारेपर ❋ पूंछो जाय ब्याहको हाल॥
ब्याहे आये चन्देलेको ❋ सो सब हाल देउ बतलाय।
इतनी सुनते बांदी लौटी ❋ औ द्वारेपर पहुँची जाय॥
बोली बांदी फिरि ऊदनिते ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात।
हमको भेजो है बेलानें ❋ औ यह पूँछो हाल हवाल
ब्याहन आये चंदेलेको ❋ सो सब हाल देयँ बतलाय
इतनी सुनते बघ ऊदनिने ❋ कोरो कागद लियो उठाय
पहले लिखिके सरनामाको ❋ ता पाछेते लिखो प्रणाम।
लिखी हकीकति बघ ऊदनिने ❋ पढियो याहि बेलमदेरानि
ब्याहन आये हम ब्रह्माको ❋ द्वारे चली विषम तलवारि
हाथी मस्ता खडे द्वारेपर ❋ हमअरु मलिखे दियेपछारि
द्वारे चार भयो जबहीं तहँ ❋ फिरि समधोरा लियो कराय
मडयेके नीचे फिरि पहुँचे सब ❋ लागे होन नेग ब्योहार॥
भाँवरि परते भई लडाई ❋ खटखट चलीकठिनतलवारि
बांधे तुरते भैया तुम्हरे ❋ मानो भाँवरि लईं डराय॥
खान कलेवा गये ब्रह्मासँग ❋ चौंडा धारि जनानो भेष।
छिपिके जाय बीचतिरियनके ❋ हमरे हनी कटारी आय॥
घाव आयगयो मुर्च्छा आई ❋ तब तुम भई दाहिने आय।
प्राण हमारो तहँ राखो तुम ❋ ऐसे भयो ब्याहको काम॥
ऐसी पाती लिखि ऊदनिने ❋ सो बांदीको दई गहाय।
लेके पाती बाँदी चलि भइ ❋ औ बेलाको दीन्हीं जाय॥
पढो हाल जब रनि बेलाने ❋ पाती छाती लई लगाय
बोली बेला तब बाँदीते ❋ तू ऊदनिको लाउ लिवाय॥
बाँदी आई दरवाजेपर ❋ औ ऊदनिको चली लिवाय

आये ऊदनि रंगमहलमें ❋ तब बेलाने कही सुनाय ॥
एक अँदेशा है हमको यह ❋ सो तुम धोखा देउ मिटाय।
ब्याहन आये थे भाईको ❋ गोरे हते उदैसिंह राय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ गुस्सा भये रजा परिमाल ।
हमहिं निकारि दियो भादोंमें ❋ हम कनउजमें करो मुकाम॥
करी तयारी हम गाँजरपर ❋ तहँ हम विषम करी तलवारि
तीनि महीना तेरह दिनलों ❋ ना तँग छुटी बछेरन केरि ॥
बख्तर पहिरे रहे रातिउ दिन ❋ गोरी देह गई करियाय ।
साँची मानी सो बेलाने ❋ तब ऊदनिते कही सुनाय ॥
जैसे हमरे तुम लागत हो ❋ तैसो परदा करौं तुम्हार ।
बोले ऊदनि हाथ जोरिकै ❋ धर्मकि माता लगौ हमारि ॥
मौसी हमरी मल्हना रानी ❋ ब्रह्मा भैया बड़े हमार ।
देवर तुम्हरे हम लागत हैं ❋ सो तुम जानि लेउ महरानि ।
इतनी सुनी बात बेलाने ❋ तुरतै परदा दियो लोटारि ।
ऊँची चौकी तब डरवाई ❋ बैठे जाय उदयसिंह राय ॥
बोली बेला तब ऊदनिते ❋ देवर हाल देउ बतलाय ।
कैसो घाव लगो बालमको ❋ सो तुम हमें कहौ समुझाय॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दाहिने लगो सेलको घाव ।
लागो कैबर है माथेमें ❋ गाँसी निकरि गई वा पार॥
बायें कुंछा लगी कटारी ❋ सो हियरेमें गई समाय ।
तीनि घाव लागे भैयाके ❋ लोटैं पोटैं औ रहि जायँ ॥
ब्याकुल ब्रह्मा पड़े पलँग पर ❋ कोऊ रँधे भात ना खायँ ।
सुनतै बेला रोवन लागी ❋ औ ऊदनिते लगी बतान ॥
तुम रणदूलह घरमें बैठे ❋ अकिले भेजे कंत हमार ।
सो मरवाय दिये दिल्लीमें ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं
अबहीं शाप देउँ तुमको मैं ❋ तो तुम भस्म होउ तत्काल ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ हाथ जोरिकै कही सुनाय ॥

बात धर्मकी माता सुनिल्यो ❋ नाहक हमैं देउ कछु दोष ।
लाग हमारी कछु नाहीं है ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं
इक दिन राजा चन्देलेने ❋ गौनको बीरा दियो धराय।
काहु न लीन्हों वा बीराको ❋ हमने बीरा लियो उठाय ॥
हुक्म देदियो हम लश्करमें ❋ क्षत्री सबै होयँ तैयार ।
तुरतै माहिलके कहिबेते ❋ ब्रह्मा बीरा लियो छँडाय ॥
अकिले त्यार भये दिल्लीको ❋ उनको काल रह्यो नियराय
मीचु पराई कोउ मरिहै ना ❋ अपनी मीचु मरै संसार ॥
लिखी बिधाताकी को मेटै ❋ माता समुझि लेउ मनमाहिं।
यह सुनि बेला बोलन लागी ❋ औ ऊदनिते लगी बतान ॥
सात जन्म हमरे खंडित भे ❋ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय।
पहलो जन्म भयो मछरीको ❋ मछरा भये चँदेले राय ॥
तहाँ तपस्या खंडित ह्वइगइ ❋ ना हम कीन्हों भोग बिलास
दुसरो जन्म भयो नागिनको ❋ नागा भये चँदेले राय ॥
तहाँ तपस्या खंडित ह्वइगइ ❋ ना करि पायों भोग बिलास
तिसरो जन्म भयो चकईको ❋ चकवा भये चँदेले राय ॥
रैनि बिछोहा तहँऊँ ह्वइ गयो ❋ हम ना कीन्हों सुःख अघाय
चौथा जन्म भयो हिरनीको ❋ हिरना भये चँदेले राय ॥
तहाँ तपस्या खंडित होइगइ ❋ ना हम कीन्हों भोग बिलास
पँचयों जन्म भयो हंसिनिको ❋ हंसा भये चँदेले राय ॥
तहाँ आपदा हमपर परिगै ❋ ना करि पायो भोग बिलास
छठयों जन्म भयो द्रुपदीको ❋ अर्जुन भये चँदेले राय ॥
बैरी हमरे तहँ कौरव भे ❋ ना करि पायो राज अघाय
सतयों जन्म भयो हमरो यहु ❋ बैरी होइगे बाप हमार ॥
बालम हमरे उन मरवाये ❋ ना करि पायो भोग बिलास
अब तुम मानों बात हमारी ❋ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ॥
लश्कर भारी मेरे बापको ❋ काहे देहौ प्राण गँवाय ।

जीति न पैहौ तुम दादाको ❀ हमरो डोला लिहैं छँडाय॥
उमिरि तुम्हारी यह थोरी है ❀ तासे ऊदनि जाउ बराय।
जीवत गौना तुम लै जाते ❀ कछुदिनकरतीभोग बिलास
अब जो गौना तुम लै जैहो ❀ तौ क्या खाक बटोरिहौंजाय
झाँझरि नैया मेरि डोलति है ❀ बेडा कौनु लगै है पार ॥
ऊदनि बोले तब बेलाते ❀ बेडा खेइ लगै हौं पार।
जौलौं जीहौं मैं दुनियाँमें ❀ बैठी राज्य करो महरानि॥
तापर ज्वाब दियो बेला ने ❀ यह हमरे मन नाहिं समाय।
अबै तौ बैठी मैं दिल्ली में ❀ जहँ मोती के मोल बिकाउँ॥
राहमें डोला दादा छिनि हैं ❀ तब माटीके मोल बिकाउँ॥
कौन शूर है साथ तुम्हारे ❀ सो तुम हमैं देउ बतलाय॥
बोले ऊदनि तब बेलाते ❀ लाखनि राना हमरे साथ।
हैं जो बेटा रतीभानके ❀ नाती बेनचक्कवै क्यार ॥
मीरा सैयद बनरसवाले ❀ जिनकी जग जाहिर तलवारि
धनुआँ तेली कनउजवाला ❀ जाकी बैंडि बहै तलवारी॥
ढेबा बहादुर हैं हमरे सँग ❀ लश्कर साथ कनौजीक्यार
लश्कर आयो है आल्हासँग ❀ तिन बागनमें कियो मुकाम
यह सुनि झाँकी तब खिरकीते ❀ औ ऊदनिते लगी बतान
पाग बैंजनी को बांधे है ❀ गोरे बदन कौन सरदार ॥
दाढ़ी लटकति हाथभरेकी ❀ सो यह ठाढो कौन अगार
बोले ऊदनि तब बेलाते ❀ गोरे बदन कनौजी राय ॥
पाग बैंजनी शिरपर बांधे ❀ लाखनि राना इनको नाम।
दाढ़ी जिनकी हाथभरेकी ❀ सोई सैयद खडे अगार ॥
तब बुलवायो बेला रानी ❀ दोनों तहाँ पहूँचे आय।
बीरा दीन्हो तब ऊदनिने ❀ सो दोनोंने लियो चबाय॥
नैनबाण मारे बेलाने ❀ लाखनि गिरे धरनि भहराय
बोली बेला तब ऊदनिते ❀ देवर देखौ दृष्टि पसारि ॥

साथ लरिकवा तुम लाये यहु ❋ जो तिरियनको देखि डराय
दबैं मतंगा दुर्योधन के ❋ करते छूटि परै तलवारि ॥
तापर ज्वाब दियो सैयदने ❋ तुरतै लीन्हीं बात बनाय ।
तलकि तमाखू है कनउजकी ❋ बँगलापान महोबे क्यार॥
पीक लागि गइ सो लाखनिके ❋ तामे गिरे धरनि मुरझाय
उठिकै बोले लाखनि राना ❋ रानी सुनो चंदेले क्वांरि ॥
इन्द्र डोलि जायँ इन्द्रासनते ❋ औ शिव डोलि जायँ कैलास
देवी डोलैं मृत्युलोककी ❋ धरती पाँच कदम हटि जाय
लाखनि डोलनके नाहीं हैं ❋ चहै तन धजीधजी उडिजाय
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❋ अब कछु भयो भरोसा मोहिं
कंत हमारे तुम मिलवै हौ ❋ फिरि सैयदते कही सुनाय ।
देवर हमरे तुम लागति हौ ❋ क्यों सुधि हमरी दई बिसारि
बोले सैयद तब गुस्सा होय ❋ कहँको नातो लियो निकारि
बोली बेला तब सैयदते ❋ तुम द्वापरकी गये भुलाय॥
छोटे भैया दुःशासन के ❋ तुमने चीर खिंचायो आय।
कीन्हीं रक्षा नारायणने ❋ चीर द्रौपदी दियो बढाय
कि गयोसभाबीच दुःशासन ❋ राखी लाज कृष्ण भगवान
वै पुत्र भयो दुःशासन ❋ धाँधू नाम प्रगट भा आय
पापके मारे तुम सैदय भे ❋ काशी माहिं प्रगट भे जाय
लाखनि राना जो ठाढे यह ❋ नकुला पंडाके औतार ॥
तुमसे देवर हमरे लागैं ❋ औ हम भई निरासिनि राँड ।
बालम हमरे जब मारेंगे ❋ तब क्या खाक बटोरी आय
कही हमारी अब मानौं तुम ❋ लाखनि लौटि कनौजै जाउ
चाढि है लश्कर जब दिल्लीको ❋ तुमपर मारु सही ना जाय
गरुई गाजें मेरे बापकी ❋ काहे देहो प्राण गँवाय ।
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ तुम्हरे कंत दिहौं मिलवाय
मोहरा मारि हौं पृथीराजको ❋ तौ तौ लाखनि नाम हमार।

यह सुनि बोली बेला रानी ❋ अब बिन कहे रह्यो ना जाय
डोला लाये संयोगिनि को ❋ आये जीति पिथौरा राय।
वा दिन लाखनि गे कहँना तुम ❋ क्योंना कठिन करीतलवार
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ नाहीं जाना हाल तुम्हार।
नाहीं जैचँद मडवो गाडो ❋ नाहीं दीन्हों कन्यादान
चेरी हरिकै पिरथी लाये ❋ तब हम रहे बहुत नादान
अब हम लैहैं सो बदला यहँ ❋ डोला लिहैं अगमदे क्यार
तुम्हरो डोला हम लै जैहैं ❋ तँबुआ जहाँ चँदेले क्यार
देउँ चुनौती पृथीराज को ❋ हमते डोला लेयँ छिनाय
बोली बेला तब लाखनिते ❋ अब हम मानी बात तुम्हारि
बात हमारी अब मानों तुम। औ फिरि समुझि लेउ मनमाय
डोला जैहै जो चोरी त ❋ हमरो परै भगोडिनि नाम
नाम तुम्हारो ओछो होइ है ❋ ताते सुनो हमारी बात।
नेगी जितने हैं राजा के ❋ सबको देउ नेग बुलवाय॥
अधकर लावौ तुम गौनेको ❋ तब हम चले तुम्हारे साथ
यह मन भाय गई लाखनिके ❋ तब ऊदनि ते लगे बतान।
देउ नेग तुम सब नेगिनको ❋ अधकर लेउ उदैसिंह राय
यह सुनि ऊदनि उठि ठाढे भे ❋ घोडा बेंदुला लियो सजाय
तोडा चारि लिये मोहरनके ❋ सो घोडापर धरे अगार॥
चलि भये ऊदनि तब द्वारेते ❋ औ लाखनिते कही सुनाय
रहियो खबरदार द्वारेपर ❋ जल्दी डोला लेउ सजाय
पहुँचे ऊदनि तब जल्दीते ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार
समुहे पहुँचे पृथीराज के ❋ तुरतै ऊदनि करी सलाम
तोडा लैगे थे मोहरन के ❋ सो गद्दी पर दिये चलाय
बोले ऊदनि पृथीराजते ❋ गौने को अधकर देउ मँगाय
नेगी बुलवावौ अपने तुम ❋ तिनको मोहरैं देउ बँटाय।
गौना लैहैं हम बेला को ❋ हमरो उदैसिंह है नाम॥

माहिल थे दाहिने पर ❋ सो राजा ते लगे बतान।
शीश कटाय लेउ ऊदनि को ❋ ऐसा समो न बारम्बार ॥
अकिले ऊदनि हियँ आये हैं ❋ राजा समय खोय पछिताउ
इतनी सुनतै पृथीराज तब ❋ बघ ऊदनि ते लगे बतान
उतरौ ऊदनि तुम घोडाते ❋ अबहीं अधकर [illegible] गाय
यह कहि महाराज पिरथीने ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब ❋ तुम सुनिलेउ बीर चौहान
जैसे लरिका परिमालेके ❋ तैसेइ लरिका लगौं तुम्हार
तुम्हारि बरोबारि ना बैठों मैं ❋ तब राजा यह पूँछन लाग
हाथमें कंगन तुम बांधे हौ ❋ ताको हाल देउ बतलाय
बोले ऊदनि तब राजाते ❋ तुम सुनिलेउ धनी चौहान
बहुत लडाई हमने जीती ❋ जीते बडे बडे उमराव ॥
जूझ को कंगन परिमालैने ❋ तब हमरे कर दियो बँधाय
यह सुनि कुंडल सात लाखके ❋ पृथीराजने लिये मँगाय ॥
सो रखवाय दिये सम्मुहे पर ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय।
कुंडल रक्खे जो सम्मुहे हैं ❋ सो तुम ऊदनि लेउ उठाय
जाय दिखावौ परिमाले को ❋ तुम्हरा नाम होय संसार।
यह सुनि ऊदनि चौकन्ने होय ❋ देखन लगे चारिहूँ ओर ॥
झपटि उठाये दोनौं कुंडल ❋ औ राजाको करी सलाम
एंड लगाई रसबेंदुल के ❋ फाटक निकरि गये वा पार
उडन बछेरा था ऊदनि को ❋ देखत रहे धनी चौहान।
राम बनावैं सो बनि जावै ❋ बिगरी बनत बनत बनि जाय
नौं हाल तुम अब बेलाको ❋ बेला पलकी लई मँगाय।
बोली बेला तब लाखनिते ❋ लाखनि सुनौ हमारी बात
माता अगमा के महलन में ❋ हमने गहनो धरो उतारि।
गहना अपनो सो लेहैं हम ❋ औ माताते मिलि हैं जाय
इतनी कहिके बेला रानी ❋ त्यहि पलकी पर भई सवार

लाखनि राना हैं भुरुही पर ❋ ढेबा मनुरथा पर असवार।
घनुआ तेली मीरा सैयद ❋ सोऊ साथ कनौजी राय ॥
चली पालकी रनि बेलाकी ❋ औ अगमापै पहुँची जाय ॥
रानी अगमाके द्वारेपर ❋ भुरुही अडी कनौजीक्यार।
देखो अगमा जब बेटीको ❋ तब हिरदैसे लियो लगाय॥
रानी अगमा बोलन लागी ❋ बेटी मानौ बात हमारि ।
बैठी राज्य करौ दिल्लीमें ❋ काहे रोय रोय रहि जाउ ॥
रानी ताहरकी बोली तब ❋ ननदी सुनौ हमारी बात ।
ना सुखभोग्योतुमबालमको ❋ ना महुबेको जान्यो राज ॥
नाहक रोवौ तुम ब्रह्माको ❋ अब तुम बैठि रहौ चुपसाधि
राजपाट की जो भूँखी हौ ❋ केहु राजा घर देउँ बियाहि।
इतनी सुनतै बेला रानी ❋ भौजाईते लगी बतान ॥
बिटिया होवै बादशाहके ❋ सो मुगुलन घर देउ पठाय।
हमपर मोहे ताहर भैया ❋ हमरे कंत दिये मरवाय ।
समुहे लडिकै जो मरिजाते ❋ तौ कछु दुःख न होतो मोहिं
बालम मारेगे धोखेते ❋ है नामर्द चौंडिया राय ॥
भेष जनानो धरि चौंडाने ❋ मारे जायँ चँदेले राय ।
ताहर भैया गये संगमें ❋ तिनहूँ मारो तीर निकारि ॥
साँगको घाव दियो दाहिनेपर ❋ नाहीं कियो मर्दको काम ।
लानति ऐसी रजपूतीपर ❋ तेगा बँधिबेको धिरकार ॥
अब हम देखि हैं कंत आपनो ❋ ह्वइ हौं सती कंतके साथ ।
यहतुमजानियोना अपने मन ❋ बेला भई निरासिनि राँड॥
घर घर दिल्ली रँडिया ह्वइ है ❋ मिलिहैनाहिंसुहागिलकोय
एक महीना तेरह दिनलौं ❋ बहि है हियाँ रक्तकी धार
जैसि निपूती मल्हना ह्वइगईं ❋ तैसेइ होय अगमदे रानि ॥
गंगा करै राँड होवो तुम ❋ दिल्ली परै बज्रकी गाज ।
रो रो यहि बिधि कहि बेलाने ❋ गहनापहिरिलियोतत्काल

चलिभइ बेला रंगमहलते ❀ औ पलकीपर भई सवार ।
चली पालकी दरवाजेते ❀ औ मढियापै पहुँची जाय ॥
बोली बेला तब लाखनिते ❀ तुम सुनिलेउ कनौजी राय ।
दर्शन करि हैं हम देवीके ❀ सो तुम बिलमिजाउकछुकाल
उतरि पालकीते बेला तब ❀ मठिया भीतर पहुँची जाय ।
दर्शन करिकै जगदम्बाके ❀ औ फुलवाते लगी बतान ॥
मालिनि जावौ तुम ताहरपै ❀ यह बीरनते कहियो जाय ।
लाखनि राना रानि बेलाको ❀ डोला लिये कनौजे जात ॥
बदला लैहैं संयोगिनिको ❀ सो तुम डोला लेउ छिनाय ।
जो कहुँ डोला कनउज जैहै ❀ बुडि है सात साखिको नाम ॥
सुनतैचलिभइ फुलवामालिनि ❀ औ ताहर पै पहुँची जाय ।
हाल सुनायो जब बेलाको ❀ ताहर अग्निज्वाल ह्वइ जायँ ॥
दुइ हजार क्षत्री सँग लैकै ❀ ताहर मठिया लई घिराय ।
बोले ताहर आगे बढिकै ❀ किन यहु डोला लियो खँदाय
कौन शूरमा चढि आयो है ❀ चोरी करी हियाँपर आय ।
आगे बढिकै लाखनि बोले ❀ ना हम चोरी करी तुम्हारि ॥
लाये डोला हैं बेला को ❀ सो ब्रह्मापै दिहैं पठाय ।
बदला लैहैं संयोगिनिको ❀ फिरि कनउजमें रखिहैं जाय ॥
इतनी सुनते ताहर जरिगे ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ।
हुक्म दैदियो सब क्षत्रिनको ❀ अबहीं डोला लेउ छिनाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❀ तुरत चलन लगी तलवारि ।
घोडा बढायो ताहर ठाकुर ❀ औ लाखनिपै पहुँचे जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ कम्मरते ❀ औ लाखनिपर राखीजाय ।
चोट बचाय लई लाखनिने ❀ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो तब ताहरपर ❀ घोडेके लगो चपेटा जाय ।
घोडा भागि चलो ताहरको ❀ ना रोंकेते रुकी लगाम ॥
छुटिगयो मुर्चा तब ताहरको ❀ लाखनि डोला दियो बढाय

तौलौं आये ऊदनि ठाकुर ❋ तिनते बेला पूँछन लागि॥
अधकर लाये क्या गौनेको ❋ सो तुम हमैं देउ दिखलाय
दोनों कुंडल सात लाखके ❋ सो ऊदनिने धरे अगार ॥
बहुत खुशी भइ बेला रानी ❋ साँचे देवकुँवरिके लाल ।
अब हम जानि लई अपने मन ❋ बेडा खेइ लगैहो पार ॥
खबरि सुनी जब पृथीराजने ❋ डोला जात बेलमदे क्यार
तुरतै चौंडाको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय
डोला छीनिलाउ जल्दीते ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय
सुनतै चौंडा करी तयारी ❋ तुरतै फौज लई सजवाय ॥
कूच कराय दियो लाखनिपै ❋ औ लाखनिते कही सुनाय।
डोला लायो को चोरी करि ❋ सो समुहे होइ देय जवाब॥
बढिकै बोले लाखनि राना ❋ चौंडा अपनी जीभ सम्हारु
डोला लाये हम बेलाको ❋ सो महुबेमें दिहैं पठाय ॥
बोल्यो चौंडा तब गुस्सा होइ ❋ डोला अबहीं देउ धराय ।
चुप्पे लौटि जाउ कनउज को ❋ लाखनि मानौ बात हमारि
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ काहे रारि बढाई आय ।
डोला लौटनको नाहीं यह ❋ चाहै कोटिन करौ उपाय॥
गुस्सा ह्वैकै तब चौंडाने ❋ सब क्षत्रिनते कही सुनाय ।
डोला छीनि लेउ इनते तुम ❋ सबकी कटा देउ करवाय॥
सुनतै बढिगै सबै सूरमा ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि
डोला घेरि लियो बेला को ❋ खटखट चलन लगी तलवारि
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार।
झुकै सिपाही कनउज वाले ❋ सबकै मारु मारु रटलागि॥
भगे सिपाही चौंडा वाले ❋ अपने डारि डारि हथियार
यह गति देखी जब चौंडाने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय
चौंडा ब्राह्मणने ललकारो ❋ लाखनि खबरदार ह्वइ जाउ
यह कहि गुर्ज लियो चौंडाने ❋ औ समुहेपर दियो चलाय

गुर्जकि चोट लगी हौदामें ❀ धक्का लगो बदनमें आय ।
गाफिल होइगै कछु लाखनि तब ❀ चौंडा डोला लियो घिराय
कही चौंडियाने सैयदते ❀ सैयद सुनौं बात मनलाय।
थाती लाये जो कनउजते ❀ सो दिल्लीमें दई गँवाय ॥
यह सुनि मीरा गे लाखनिपे ❀ औ लाखनिते कही सुनाय
काहे गाफिल भे हौदामें ❀ सो तुम हमैं देउ बतलाय॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❀ गरुई गाज चौंडिया क्यार
धक्का लागि गयो देहीमें ❀ तासे बदन गयो कुम्हिलाय
बढ़िके लाखनिने ललकारा ❀ चौंडा खबरदार ह्वइ जाउ।
लैकें भाला लाखनि मारो ❀ औ हाथी को दियो गिराय
पाँय पियादे चौंडा रहि गयो ❀ तब समुहेते गयो बराय ।
डोला उठवायो लाखनि तब ❀ सो आगेको दियो बढाय
सुनी खबरि जब पृथीराजने ❀ डोला नगर महोबे जात ।
हाथी जूझो तहँ चौंडाको ❀ लश्कर तिडी बिर्डी ह्वइ जाय
यह सुनि राजा पृथीराजने ❀ ताहर बेटा लियो बुलाय ।
हुक्म देदियो तब ताहरको ❀ लश्कर तुरत लेउ सजवाय
डोला जैहै जो महुबेको ❀ तौ जग ह्वइ है हँसी हमारि।
चालिभे ताहर तब बँगलाते ❀ औ लश्कर में पहुँचे जाय॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❀ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
बजै नगारा हमरे दलमें ❀ लश्कर तुरत होय तैयार ॥
डंका बाजो तब दिल्लीमें ❀ क्षत्री साजि भये तैयार ।
साजि गयो हाथी आदि भयंकर ❀ तापर चढे पिथौरा राय॥
घोडा दलगंजन सजवायो ❀ तापर ताहर भये सवार ।
हाथी भौंरानँद सजवायो ❀ तापर धाँधू भये सवार ॥
ताँता लागो चारि कोसलों ❀ मारू डंका दियो बजाय ।
कूच कराय दियो लश्करको ❀ आगे हाथी दियो बढाय ॥
डोला रहि गयो तीस पैग जब ❀ तब पिरथीने कही पुकार ।

कौन शूर लायो डोला को ❋ चोरी करी महलमें जाय ॥
बढिकै ज्वाब दियो लाखनिने ❋ हम ना चोरी करी तुम्हारि।
आज्ञा दीन्हीं रनि बेलाने ❋ तब हम डोला लियो खँदाय॥
जहँपर तम्बू है ब्रह्माको ❋ तहँ यह डोला दिहैं पठाय।
इतनी सुनिकै पिरथी बोले ❋ लाखनि सुनिलयो बात हमारि
जैसेइ लरिका रतीभान के ❋ तैसेइ लरिका लगो हमार।
काम तुम्हारो ना कछु अटको ❋ काहे यहाँ बडाई रारि ॥
आल्हा ऊदनि डोला लेते ❋ खाये निमक चँदेले क्यार।
तुम क्यों आये प्राण देन को ❋ ताते लौटि कनौजै जाउ ॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❋ ना कछु जाना हाल तुम्हार।
पगिया बदली हम ऊदनि ते ❋ आल्हा भैया लगत हमार॥
आल्हा ऊदनि गाँजर चढिगै ❋ गाँजर कठिन करी तलवारि।
तीनि महीना तेरह दिन लौं ❋ ना तेग छूटी बछेरन केरि॥
पैसा भारिलौ बारा वर्षको ❋ राखो धर्म कनौजी क्यार।
संग न छोंडि हैं हम आल्हाको ❋ चाहै कोटि करौ परकार ॥
यह सुनि गुस्साभे पिरथी तब ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय।
बत्ती देदेउ सब तोपन में ❋ इन पाजिनको देउ उडाय॥
हुक्म पायकै झुके खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुअनाँ रह्यो सरगमें छाय॥
अररर गोला छूटन लागे ❋ कह कह करैं अगिनियाँ बान
गोली छूटै सननन सननन ❋ सरसर परी तीरकी मारु ॥
भाला बरछी छूटन लागी ❋ हाहाकारी बीतन लागि।
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ॥
छोंडी तोपैं तब क्षत्रिनने ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार।
बढे सिपाही दोनों दलके ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि॥
खट खट तेगा बाजन लाग्यो ❋ बोलै छपक छपक तलवारि
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार ॥

चलै शिरोही मानाशाही ❋ औ बूँदी की चलै कटार ।
चटकैं तेगा बर्दवान के ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
पैग पैगपर पैदल गिरिगे ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ।
बिसे बिसेपर हाथी गिरिगे ❋ छोटे पर्वत की उनहार ॥
चली शिरोही चारि घरीलौं ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
आधी जमुना में पानी बहै ❋ आधी बहै रक्तकी धार ॥
डारी लोथीं जो जमुना में ❋ मानौं कच्छ मच्छ उतरायँ ।
परी बँदूकैं हैं रणमें जो ❋ मानौं रहे नाग मन्नाय ॥
डारी पगिया जो लोहू में ❋ जनु नदी में बहै सिवार ।
सबै बयरियन का मसका है ❋ कौंधा चाल चलै तलवारि ॥
बढे सिपाही कनउजवाले ❋ सबके मारु मारु रटलागि ।
धनुआँ तेली के मुर्चापर ❋ लाखनि राना पहुँचे जाय ॥
बोले लाखनि तब धनुआँते ❋ भैया धर्म तुम्हारे हाथ ।
दबी बायसी तब लाखनिकी ❋ संगे बढे शूर सरदार ॥
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी पृथीराज जब ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ॥
बोले पृथीराज धाँधूते ❋ डोला तुरत लेउ घिरवाय ।
हाथी बढायो तब धाँधूने ❋ औ धनुआँ को दइ ललकार
धरिदे तेली तू डोलाको ❋ काहे देहै प्राण गँवाय ।
बोल्यो धनुआँ तब गुस्सा होइ ❋ तुमको कोल्हू दिहैं पेराय ॥
तेलु काढिकै हम तुम सबको ❋ सो कनउजको दिहैं पठाय ।
ऐसे तेली हम जालिम हैं ❋ क्यों तुम रारि बढाई आय ॥
गुर्ज उठायो तब धाँधूने ❋ सो धनुआँपर दियो चलाय ।
चोट बचाई तब धनुआँने ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
धोखा दैकै तब धाँधूने ❋ अपनो भाला दियो चलाय ।
घाव आय गयो तब जंघा में ❋ धनुआँ उतरि परो अरगाय ॥
घेरो डोला तब धाँधूने ❋ तुरतै बेला कही सुनाय ।

पता नहीं है कहुँ ऊदानि की ❋ काहे हँसी कराई आय ॥
कान अवाज परी लाखनि के ❋ तुरतै भुरुही दई बढाय ।
लाखनि उतरि परे भुरुही ते ❋ औ धनुआँ पै पहुँचे जाय ॥
बोले लाखनि तब धनुआँते ❋ को गाढे में ऐहै काम ।
बडा भरोसा म्वहिं तुम्हरो है ❋ तुम्हरे लग्यो जाँघमें घाव ॥
यहसुनिधनुआँउठि ठाढोभयो ❋ अपनो लियो दुशाला हाथ
घाव बाँधि लियो कसि पट्टीते ❋ औ घोडी पर भयो सवार
आगे बढिकै गयो धाँधू पै ❋ औ हौदा पर पहुँचो जाय ।
चोट चलाई धनुआँ तेली ❋ सोने कलशा दियो गिराय ॥
[illegible] हटि गयो तब धाँधूको ❋ धनुआँ डोला लौ उठवाय ।
लै राखेउ उन लाखनि पै ❋ भारी शूर कनौजी क्यार ॥
देखि हाल यह पृथीराजने ❋ अंगद राजा लियो बुलाय ।
जल्दी लावौ तुम डोलाको ❋ भूरा मुगुल लेउ तुम साथ ॥
तुरतै चलि भयो राजा अंगद ❋ औ डोलाको घेरचो जाय ।
गुर्ज उठायो अंगद राजा ❋ सो धनुआँ पर दियो चलाय
लग्यो चपेटा इक घोडीके ❋ धनुआँ घोडी गयो भगाय ।
डोला उठवायो भूराने ❋ तब लाखनिने कही सुनाय ॥
चाचा सैयद आगे बढिकै ❋ डोला तुरतै लेउ छिनाय ।
अली अली करि सैयद दौरे ❋ औ डोला पै पहुँचे जाय ॥
सेल उठाय लियो सैयदने ❋ सो भूरापर राखो जाय ।
लग्यो चपेटा तब घोडाके ❋ भूरा घोडा गयो भगाय ॥
घोडा बढायो तब ताहरने ❋ औ डोला पै पहुँचे आय ।
गाफिल देखो जब सैयदको ❋ ताहर डोला लियो उठाय ॥
हाथिनी बढाई तब लाखनिने ❋ औ ताहर ते लगे बतान ।
धरि देउ डोला तुम खेतन में ❋ जो जीतै सो लेय उठाय ॥
यह सुनि बढिगे ताहर ठाकुर ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जडाका जब सम्मुहे पर ❋ लाखनि लैगे चोट बचाय ॥

गुर्ज उठायो तब लाखनि ने ❋ सो ताहर पर दियो चलाय।
लग्यो चपेटा तब घोडा के ❋ ताहर घोडा गये भगाय ॥
डोला उठायो लाखनि राना ❋ सो आगेको दियो बढवाय।
देखि हाल यह पृथीराज ने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ॥
बोले पृथीराज लाखनि ते ❋ लाखनि मानो बात हमारि।
अबहूँ लौटि जाउ कनउजको ❋ काहे देहौ प्राण गँवाय ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ डोला यह लौटन को नाहिं
डोला लिये बिना जैहैं ना ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ ॥
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ अपनी लीन्हीं लाल कमान।
ऊदनि लडति रहैं मुर्चा पर ❋ तिनकी परिगइ तुरत निगाह
झपटे ऊदनि तब मुर्चाते ❋ औ समुह पर पहुँचे जाय।
लाखनि राना को देखा जब ❋ ऊदनि गये सनाका खाय ॥
बोले ऊदनि पृथीराजते ❋ तुम सुनि लेउ धनी चौहान
हाथ न डारियो तुम लाखनिपर ❋ नाहिं सब जैहैं काम नशाय
तुम्हरी बरोबरिके नाहीं हैं ❋ जो तुम लीन्हीं लाल कमान
सोचि लेउ अपने मनमें तुम ❋ सब जग ह्वैहै हँसी तुम्हारि॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने ❋ हौदा धरि दइ लाल कमान।
भुरुही बढाई तब लाखनिने ❋ आदि भयंकर दियो हटाय॥
हटिगौ हाथी पृथीराजको ❋ लाखनि डोला लियो उठाय
जहँपर तम्बू रहै ब्रह्माको ❋ तहँ डोलाको दियो धरवाय॥
ऐसि लडाई भइ डोलापर ❋ सो हम लिखिकै दई सुनाय
आगे लडाई है बेलाकी ❋ सो हम लिखिकै दिहैं सुनाय
समय पाय तुम आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति बेलाके गौनेकी दूसरी लडाई समाप्त।

॥ श्रीः ॥

अथ बेलासे ताहरकी लडाई।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

कुण्डलिया ।

यह मानुष मन चाहना, छाँडत नाहिं नदान ।
क्षणमें राजा होत है, क्षणमें रंक समान ॥
क्षणमें रंक समान, क्षणकमें पंडित भाई ।
क्षणमें रोवत आपु, क्षणकमें हसत ठठाइ ॥
क्षणमें मानत मोर, धाम धन बाम पियारी ।
क्षणमें होत उदास, मरणकी करत तयारी ॥

सवैया ।

ज्यों घट माटीको फूटि गयो तब, होत कहा सुठि लाखके लाखे
दाँव चलाय दियो रिपुने तब, होत कहा बल पौरुष भाखे ॥
धीरज छूटि गयो जबहीं तब, होत कहा हथियारके राखे ।
बात गई जगमें तुलसी फिरि, होत कहा तन प्राणके राखे ॥
सुमिरन कारिकें नारायणको ❋ जगदम्बा के चरण मनाय ।
लिखौं लडाई अब बेलाकी ❋ शारद मोको होउ सहाय ॥
क्यहिकिअटारियापरादियनाँजरै।क्यहिकीफूलसेजकुम्हिलाय
क्यहिकी रानी अंटा बिलखै ❋ कंता रहे बिदशा छाय ॥
परहुलअटरियापरादियनाँजरै ❋ फुलवा फूल सज कुम्हिलाय
कुसुमा रानी अंटा बिलखै ❋ लाखनि छाय रहे परदेश ॥

बेला पहुँची जब तम्बू में ❋ देखा हाल चँदेले क्यार ।
बिलखन लागीरनि बेलातब ❋ औ फिरि आरति धरी उतारि
लिये बिजनियाँ कर फूलनकी ❋ सो ब्रह्मापर करै बयारि ।
बेला रानी बोलन लागी ❋ जागो जागो कंत हमार ॥
मुर्च्छा जागी ब्रह्मानँदकी ❋ देखन-लागे नैन उघारि ।
समुहे ठाढे ऊदनि ठाकुर ❋ तिनते ब्रह्मा लगे बतान ॥
क्यहिकी तिरिया यह ठाढी है ❋ सो तुम हमें देउ बतलाय ।
हाथ जोरि बेला बोली तब ❋ मैं ठाढी हौं नारि तुम्हारि ॥
बेटी हौं मैं पृथीराज की ❋ औ बेला है नाम हमार ।
गुस्सा होइकै ब्रह्मानँदने ❋ बघ ऊदनि ते कही सुनाय॥
घटिहा राजाकी बेटी है ❋ हमको मुख दिखरायो आय
मारि निकारो यहि तँबुआते ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
हाथ जोरि तब बेला बोली ❋ स्वामी सुनो हमारी बात ।
लाग हमारी कछु नाहीं है ❋ बैरी होइगो बाप हमार ॥
राज उठाय लियो हमरो उन ❋ हमपर रूठि गयो भगवान।
अब जो हुक्म होय दासी को ❋ सोई करै काम मनलाय ॥
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❋ औ बेला ते कही सुनाय ।
हमको चाहौ जो रानी तुम ❋ तौ इक मानौ बात हमारि॥
शीश काटि लावो ताहर को ❋ हमरी नजरि गुजारो आय ।
शीश देखि हैं जब ताहर को ❋ तादिन जियैं चँदेले राय ॥
हाथ जोरिकै बेला बोली ❋ तुम्हरे बचन करौं परमान ।
अपनो घोडा तुम दीजौ म्वहिं ❋ दीजौ हमहिं ढाल तलवारि
पाग बैंजनी अपनी दीजौ ❋ तौ हम लैहैं शीश उतारि ।
पहले जैहैं हम महुबे को ❋ लगि हैं चरण सासुके जाय
शीश काटिकै फिरि ताहरको ❋ तुरतै तुमहिं दिखै हैं आय ।

यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❋ अबहीं नगर महोबे जाउ ॥
पै नहिं जैयो सँग लाखनि के ❋ बदला लिहैं संयोगिनि क्यार
तापर ज्वाब दियो बेला ने ❋ हम ना जायँ कनौजी साथ
थोरी उम्मिरि के ऊदनि हैं ❋ जैहौं ना ऊदनि के साथ।
संग पठावौ तुम आल्हाको ❋ इतनी मानो बात हमारि॥
इतनी सुनतै ब्रह्मानँदने ❋ तुरतै आल्है लियो बुलाय।
बोले ब्रह्मानँद आल्हाते ❋ इनको महुबो देउ दिखाय॥
बात मानिकै तब आल्हाने ❋ हाथि पचशावद लियो सजाय
डोला मँगवायो बेला ने ❋ तामें बेला भइ सवार॥
हाथी चढिगे नुनि आल्हा तब ❋ डोला चला ब्यलमदे क्यार
खबरि पाय यह माहिल चलिभे ❋ औ पिरथी प पहुँचे जाय
करी बन्दगी पृथीराज को ❋ औ माहिल यह कही सुनाय
आल्हा संग जात बेलाके ❋ डोला जैहै नगर महोब॥
चालिकै डोला छीनि लेउ तुम ❋ इतनी मानो बात हमारि।
सुनतै बुलवायो चौंडा को ❋ पृथीराज यह कही सुनाय
डोला लिये जात आल्हा हैं ❋ सो तुम डोला लेउ छिनाय
डोला लैकै तुम बर्टाको ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय
हुक्म पाय तब चौंडा चलि भयो। लश्कर तुरत लियो सजवाय
जायकै घेरि लियो डोलाको ❋ औ आल्हाते कही सुनाय
डोला धरि देउ तुम बेलाको ❋ चुप्पै लौटि महोबे जाउ।
बोले आल्हा तब चौंडाते ❋ तुम्हरी मति मारी भगवान
बार बार घेरत डोला तुम ❋ पै नहिं चलत तुम्हारो दाँव
डोला लौटन को नाहीं यह ❋ चाहै कोटिन करा उपाय॥
ताते लौटि जाउ चौंडा तुम ❋ नाहक रारि बढाई आय।
यह सुनि चौंडा गुस्सा ह्वइकै ❋ सब क्षत्रिनते कही सुनाय॥
डोला छीनि लेउ जल्दीते ❋ औ आल्हाको देउ भगाय

हल्ला करि दियो तब क्षत्रिनने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि
डोला घेरि लियो सबहीने ❀ खटखट चलन लगी तलवारि
हाथी चिंघारा जब आल्हाका ❀ सुनी अवाज कनौजी राय
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❀ ऊदनि मानो बात हमारि।
खबरि लै आवो तुम आल्हाकी ❀ मानौ घिरे बनाफर राय
हमरे मनमें यह आवत है ❀ जल्दी जाउ उदैसिंह राय।
तुरतै ऊदनि उठि ठाढे भै ❀ औ घोडापर भये सवार ॥
नारे ककरहा के डांडेपर ❀ पहुँचे जाय उदैसिंह राय।
हाथी घिरो तहाँ आल्हाको ❀ ऊदनि घोडा दियो बढाय
इक ललकार दई चौंडाको ❀ चौंडा खबरदार ह्वइ जाउ।
ऐंड लगाई रसबेंदुलके ❀ औ हौदापर पहुँचे जाय ॥
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❀ सोने कलशा दिये गिराय।
मुर्छा लौटी तब चौंडाको ❀ ऊदनि डोला दियो बढाय
सुनी खबरि यह पृथीराजने ❀ मुर्छा हटी चौंडिया क्यार।
लश्कर सजवायो पिरथी तब ❀ आदि भयंकर लियो सजाय
तापर चाढिगे पृथीराज तब ❀ लश्कर कूच दियो करवाय
देखो लश्कर पृथीराजको ❀ लाखनि फौज लई सजवाय
कूच कराय दियो जल्दीते ❀ औ नारेपर पहुँचे जाय।
हल्ला ह्वइ गै दोनों दलमें ❀ खटखट चलन लगी तलवारि
भई लडाई तहँ डोलापर ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय।
कबहुँक डोला राजा छीनै ❀ कबहुँक लाखनि लेयँ छिनाय
देखि हाल यह बघ ऊदनिने ❀ पृथीराजते कही सुनाय।
कही हमारी अब तुम मानो ❀ ओ महराज बीर चौहान
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❀ तुम चाढि रारि बढावत आय
नाहक डोला तुम रोकत हौ ❀ है यह तुमहिं मुनासिब नाहिं

डोला जैहै यहु महुबेको ❋ चाहै कोटिन करौ उपाय ।
जबलौं रहि है श्वास देहमें ❋ तबलौं लडौं तुम्हारे साथ॥
ताते लौटि जाउ दिल्लीको ❋ इतनी मानो बात हमारि ।
यह सुनि सोचे पृथीराजमन ❋ इन लरिकनते जितिहैं नाहिं॥
मुर्चा फेरो पृथीराज तब ❋ दिल्ली कूच गये करवाय ।
ऊदनि बोले तब आल्हाते ❋ दादा कूच जाउ करवाय ॥
चलि भौ डोला तब बेलाको ❋ बरइनि पुरवा पहुँचो जाय।
पूँछन लागी रनि बेला तब ❋ क्या यहु महुबो परो दिखाय॥
बोले आल्हा तब बेलाते ❋ बरइनि पुरवा परै दिखाय ।
है यह पुरवा परिमालैको ❋ रैयति बसै चँदेले कोरि ॥
आगे महुबो अब देखौगी ❋ जहँ पर बसत चँदेले राय ।
डोला पहुँचो जब महुबेमें ❋ तब आल्हाने कही सुनाय ॥
नगर महोबा अब तुम देखौ ❋ यह सुनि बेला रही निहारि ।
खबरि फैलिगइ रंगमहलमें ❋ डोला आयो ब्यलमदे क्यार
मल्हना आई दरवाजेपर ❋ तुरत आरती लई सजाय ।
बारह रानी चन्देलेकी ❋ सुनवाँ फुलवा संग लिवाय॥
देवै आई दरवाजेपर ❋ सबने आरति धरी उतारि ।
तुरत उतारि लियो बेलाको ❋ औ महलनमें गई लिवाय ॥
बैठी जायँ सबै आँगनमें ❋ बैठी बीच ब्यलमदे रानि ।
मुख दिखराई रनि बेलाको ❋ मल्हना दियो नौलखा हार॥
चरण लागिकै तब बेलाने ❋ अपनो कंकन दियो उतारि।
पूँछन लागी मल्हना रानी ❋ कैसे लगे पुत्रके घाव ॥
बोलन लागी रनि बेला तब ❋ दहिने लगो सेलको घाव ।
गाँसी लागी है मस्तकपर ❋ कैबर निकरिगयो वा पार ॥
बायें कटारी उनके लागी ❋ स्वामी जियन केर हैं नाहिं।

श्वासा बाकी है हिरदे महँ ❋ व्याकुल परे चँदेले राय ॥
यह सुनिमल्हनारोवनलागी ❋ सिगरो रोय उठो रनिवास ।
क्यागतिबरणौंत्यहिसमयाकी ❋ हा दैया गति कही न जाय॥
बोली बेला चन्द्रावलिते ❋ ननदी सुनौं हमारी बात ।
अपने बीरनको सतखंडा ❋ सो तुम हमहिं देउ दिखलाय॥
सुनि चन्द्रावलिउठिठाढीभइ ❋ औ बेलाको चली लिवाय ।
जायकै पहुँची सतखंडापर ❋ देखन लगी व्यलमदे रानि॥
शोभा देखि देखि अंटाकी ❋ बेला सोचि सोचि रहिजाय
नीचे सागर लेय हिलोरैं ❋ मानों रचो इन्द्रको धाम ॥
छाई छौनी मोरपंखकी ❋ झालरि लगी मोतियन कोरि
लागे खम्भा मलयागिरिके ❋ हीरा मानिक जडे बनाय ॥
हंस हिलोरैं वा सागरमें ❋ औ छज्जन पर नाचैं मोर ।
कलश सूबरनके अंटापर ❋ शोभा एक न बरनी जाय ॥
देखि देखि शोभा अंटाकी ❋ बेला बहुत दुखी होइ जाय।
जियत कंतके गौना औतो ❋ करती कुछ दिन भोगविलास
मरत समय आई महुबे हम ❋ हमरे कोन कामको राज ।
बहुत सोच कीन्हों बेलाने ❋ फिरि महलनमें पहुँची आय॥
बेलाबोली फिरि मल्हनाते ❋ अब फुलबगिया देउदिखाय
इतनी सुनतै रनि मल्हनाने ❋ तुरतै डोला लिये सजाय ॥
चलिभे डोला सब रानिनके ❋ फुलबगियामें पहुँचे जाय ।
बेला पहुँची जब बगियामें ❋ देखन लागि सबै फुलवारि ॥
बीचमें बँगला था ब्रह्माको ❋ तापर चढी व्यलमदे रानि।
चारौ ओरी बेला देखै ❋ नैनन बहै नीरकी धार ॥
उठैं सुगन्धैं वा बगियामें ❋ औ केंवडाकी अजब बहार।
फूल गुलाबी दौना मरुआ ❋ बिच बिच फूलकेतकीक्यार॥

बेला चमेली की बहार है ❋ शोभा देखि चित्त लहराय
चुरियाँ तोरन बेला लागी ❋ बहुतै बेला करै बिलाप ॥
मल्हना समुझावै बेलाको ❋ बहुअर धीर धरौ मनमाहिं
पारस पूजा है तुम्हरे घर ❋ लोहा छुवत सोन ह्वै जाय
बैठी राज्य करौ महुबे में ❋ काहे रोय रोय रहि जाउ।
यह सुनि बेला बोलन लागी ❋ औ देवैते लगी बतान ॥
तुम्हरे बेटा आल्हा ऊदनि ❋ जिनकी जग जाहिर तलवारि।
सुखते बैठे सो अपने घर ❋ अकिले बालम दिये पठाय
उनहिं सुनामित्र यह नाहीं थी ❋ हमरे कंत दिये मरवाय।
बोली देवै तब बेलाते ❋ नाहीं लागि लरिकवन क्यार
यह सब कीन्हीं माहिल राजा ❋ सो सब हाल सुनौ मनलाय
करिकै चुगुली उन माहिलने ❋ हमरे लरिका दै निकराय॥
बिपति के मारे सो भादौं में ❋ पहुँचे गढ कनउज में जाय।
द्वारपै हाथी जैचँद छोडे ❋ सो ऊदनि ने दिये पछारि
बहुत खुशी भये राजा जैचँद ❋ अपनी रिजिगिरि दई इनाम
तहाँ बसे संकट के मारे ❋ फिरिमाहिलकोसुनो हवाल
लाय चढाये पृथीराज को ❋ सिरसा तुरत लियो घिरवाय
हाल पूँछिकै तब ब्रह्मातें ❋ तहँ मरवाये बीर मलिखान
फिरि घिरवायो नगर महोबो ❋ लाये साथ बहुतसी फौज।
आये ऊदनि तब कनउजते ❋ संगै आये कनौजी राय ॥
मुर्चा मार्‍यो पृथीराजको ❋ दिल्ली लौटि गये चौहान।
ऊदनि लौटि गये कनउजको ❋ फिरि माहिलने करो उपाय
चुगुली करिकै पृथीराजते ❋ फिरिकै लाये फौज चढाय
सब घिरवायो नगर महोबो ❋ बिपता कछू कही ना जाय
तब यह जतन करी मल्हनाने ❋ जगनायकको दियो पठाय

आल्हा ऊदनि को बुलवायो ❋ आये संग कनौजी राय ॥
धानि धानि बेटा रतीभानको ❋ लाखनि राना जिनको नाम
समुहे लडिके नदि बितवैपर ❋ पृथीराजको दियो हटाय ॥
फिरिकै आये माहिल राजा ❋ औ राजाते कही सुनाय।
बीरा धरवावो गौनेको ❋ औ गौनेको लेउ कराय ॥
बिरा धरायो तब राजाने ❋ सो ऊदनिने लियो उठाय
सीख मानिकै तब माहिलकी ❋ ब्रह्मा बीरा लियो छिनाय
करी तयारी बघ ऊदनिने ❋ ब्रह्मा बन्द दई करवाय।
माहिल भूपति तू मरिजैयो ❋ उरई परै इन्द्रकी गाज ॥
वंश नसैबे को लागे थे ❋ सो करिदई वंशकी हानि।
लाग हमारी कछु नाहीं है ❋ यह सब कर्म माहिला क्यार
बोली बेला तब देवैते ❋ हमपर रूठि गयो भगवान
लेख बिधाता को जैसे था ❋ ताको कौन मिटावनहार
सागर बँगला जो स्वामीको ❋ सो हम अबहीं देखि हैं जाय
तुम बुलवाय लेउ आल्हाको ❋ तब देवैने लियो बुलाय ॥
आये आल्हा रंगमहलमें ❋ तब बेलाने कही सुनाय।
सागर बँगला जो बालमको ❋ सो तुम हमहिं देउ दिखलाय
तुरतै त्यार भये आल्हा तब ❋ संगै चली व्यलमदे रानि।
पहुँची बेला जब सागर पर ❋ चन्दन नाव लई मँगवाय
चाढि गइ बेला त्याहि नौकापर ❋ औ बँगलाको गइ नियराय
उतरी बेला तब नौकाते ❋ औ बँगला में पहुँची जाय
शोभा देखै बेला रानी ❋ औ मन मोहिमोहि रहि जाय
चौपारि दीख एक ताखेमें ❋ सो बेलाने लई उठाय ॥
बोली बेला तहँ आल्हाते ❋ आवो देवकुँवरि के लाल।
पंसासारी हम तुम खेलैं ❋ आल्हा बैठि गये चुपसाधि

अंचल खोलि दियो बेलाने ❀ देखिकै आल्हा गये लजाय।
रूप धरचो बेला डाइनिको ❀ औ आल्हातन रही निहारि॥
लैकै खांडा तब आल्हाने ❀ औ बेलाते लगे बतान।
धर्मकि माता हमरी लागौ ❀ तुमते हम डरपनके नाहिं ॥
असल रूप धारि तब बेलाने ❀ तुनि आल्हाते कही सुनाय।
हमने जानि लियो अपने मन ❀ साँचे दस्सराजके लाल ॥
पाप कछू नाहिं है तुम्हरे मन ❀ हौ तुम धर्मराज औतार ।
यह कहि बेला उठि ठाढी भई ❀ औ नौकामें बैठी आय ॥
नाव पार आई सागरके ❀ तब डोलीमें बैठी जाय ।
जितने ताल हते महलनमें ❀ देखे सबै बनाफर साथ ॥
आई बेला रंगमहलमें ❀ औ मल्हनाते कही सुनाय।
आज्ञा देदेउ अब माता तुम ❀ सेवा करौं स्वामिकी जाय॥
मल्हना बोली तब बेलाते ❀ बहुअर मानौं कही हमारि ।
राज्य करौ तुम गढ महुबेमें ❀ रैयत मानि है हुक्म तुम्हार॥
बोली बेला तब मल्हनाते ❀ हमरे मनमें नहीं समाय ।
जीवत गानो हमरो औतो ❀ तौ हम करतीं भोग बिलास॥
नहीं भरोसा है स्वामीका ❀ है सब वृथा राज धन धाम।
सेवा करि हौं जाय कंतकी ❀ अपने जन्म सुफलके काज॥
होतो कुअँना तौ पटि जातौ ❀ केहि विधि समुद पटायो जाय
ना कोउ बेटा और तुम्हारे ❀ जो हम करैं ताहिकी आस॥
झांझरि नैया मोरि डोलति है ❀ को यह खेइ लगै है पार ।
उमिरि हमारी यह बारी है ❀ ना नैननकी छूटी लाज ॥
जब सुधि ऐहै मोहिं स्वामीकी ❀ तब हम करि हैं कौन उपाय
मेघ गरजि है सावन भादों ❀ रहि है रैन अँधेरिया छाय ॥
बिरह सतै है सतखंडापर ❀ जियरा हूकि हूकि रहिजाय।

पिउपिउ पपिहाबोलीबोलिहै ❋ हमपर बोल सहे ना जायँ ॥
ताते माता आज्ञा दैदेउ ❋ अब ना राखौ देर लगाय ।
हमैं हुक्म दीन्हों स्वामीने ❋ लावौ शीश शत्रुको जाय ॥
शीश काटि अबहमताहरको ❋ सो स्वामीको दिखै हैं जाय ।
देखत शीश जियैं स्वामी जो ❋ तौ बनि जैहै काम हमार ॥
इतनी सुनतै रानि मल्हनाने ❋ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ।
चरण लागिकैतब मल्हनाके ❋ बेला कूच दियो करवाय ॥
आल्हा चले संग बेलाके ❋ बेला सिरसा पहुँची जाय ।
देखिकै चौरा गजमोतिनिको ❋ बेला उतरि परी अरगाय ॥
पूजा करिकै हाथ जोरि तब ❋ बिनती करी ब्यलमदे रानि
आभा बोली गजमोतिनिको ❋ काहे भरम गँवायो आय ॥
माहिल मामा बैरी ह्वइगे ❋ हमरे दीन्हें कंत मराय ।
सत्त हमैं ब्रह्माने दीन्हों ❋ हम जरिमरीं कंतके साथ ॥
गढ दिल्लीते औ महुबेलौं ❋ होइ हैं सबै सुहागिनि राँड ।
धरती रक्तबरन ह्वइ है सब ❋ हमरे बचन करौ परमान ॥
यह सुनि बेला रोवन लागी ❋ औ आभाते कही सुनाय ।
हमहूँ रँडिया वादिन ह्वइ गईं ❋ जूझे जादिन कंत तुम्हार ॥
बहुत आसरा था मोहूँको ❋ सिरसा बसत बीर मलिखान
सो यह सिरसासूना होइगयो ❋ देखत छाती फटै हमारि ॥
यह कहि पैकरमा कीन्हीं तब ❋ औ चलिभई ब्यलमदे रानि
बेला पहुँचि गई तम्बूमें ❋ लागी तुरतै करन बयारि ॥
मूर्च्छा जागी ब्रह्मानँदकी ❋ औ बेलापर परी निगाह ।
बोले ब्रह्मा तब बेलाते ❋ कहँ तुम लाई शीश उतारि ॥
बोली बेला हाथ जोरि तब ❋ हम हो आईं नगर महोब ।
लाय शीश अब हम ताहरको ❋ तुमको बेगि दिखै हैं आय ॥

यह कहि चलिभइ बेला रानी ❋ लश्कर डंका दियो बजाय।
लश्कर सजवायो ब्रह्माको ❋ अपना साजिकै भई तयार॥
लाँग चढाय लई लहँगाकी ❋ तुरतै कमर कसी तत्काल।
पहिरि पैजामा भिसरूवाला ❋ जामा पहिरि दुदामी क्यार
पटुका बाँधि लियो ऊपरते ❋ शिरपर बाँधि बैंजनी पाग।
दुइ पिस्तौलैं अगल बगलपर ❋ दहिने सिंहिनि मूठि कटार
बारह छुरियाँ कम्मर बांधी ❋ बेला दुइ बांधी तलवारि॥
कलँगी लागी मोतीचूरकी ❋ हीरा चमकिचमकि रहिजाय
टोप झलरिहा धरि माथेपर ❋ बायें भुजा गैंडकी ढाल।
भेष मर्दको बेला धरिकै ❋ दोनों नैना लिये उघारि॥
घोडा सजवायो हरनागर ❋ बेला फांदि भई असवार।
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब ❋ हमहूं चलें तुम्हारे साथ॥
बोली बेला तब ऊदनिते ❋ तुम तंबूमें रहो हुशियार।
काम बनै हैं हम स्वामीको ❋ अबहीं लेहैं शीश उतारि॥
यह कहि चलिभइ बेला रानी ❋ लश्कर कूच दियो करवाय।
लश्कर पहुँचो जब बागनमें ❋ तहँपर डेरा दियो लगाय॥
लैकै कागद कलपीवालो ❋ अपनो कलमदानलै हाथ।
लिखी हकीकति बेला रानी ❋ पढियो याहि बीर चौहान॥
बेटी तुम्हरी गइ महुबेमें ❋ हमको ताने दियो जिआय।
अधकर बाकी जो गौनेका ❋ सो तुम तुरत देउ पहुँचाय॥
अधकर देहौ जो नाहीं तुम ❋ ठाढे दिल्ली लिहौं लुटाय।
यहि बिधि चिट्ठीलिखिबेलाने ❋ सो धावनको दई गहाय॥
लैकै पाती धावन चलिभयो ❋ आ दिल्लीमें पहुँचो जाय।
जहाँ कचेहरी दिल्लीपतिकी ❋ धावन उतरि परो अरगाय॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ पाती गद्दी दई चलाय।

नजरि बदलि गइ पृथीराजकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ॥
खोलिकै पाती जबहीं बांची ❋ पिरथी गये सनाका खाय ।
तुरतै बुलवायो ताहरको ❋ औ ताहरते कही सुनाय ॥
बेला पहुँचि गई महुबेमें ❋ औ ब्रह्माको दियो जिआय ।
आये ब्रह्मा हैं लश्कर लै ❋ गौनेको अधकर रहे मँगाय ॥
लावौ खबरि जाय ब्रह्माकी ❋ अबहीं कूच जाउ करवाय ।
सुनतै ताहर उठि ठाढे भे ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
तुरत सजायलियो लश्कर तब ❋ मारू डंका दियो बजाय ।
घोडा दलगंजन सजवायो ❋ अपने सजे पिथौरा लाल ॥
पाँव धरतही काहू छींको ❋ तब चौंडाने कही सुनाय ।
तुम ना चलौ साथ लश्करके ❋ ताहर बैठि रहौ चुपसाधि ॥
खबरि लै ऐहैं हम ब्रह्माकी ❋ तुम ना चलौ हमारे साथ ।
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ ब्राह्मण सुनौ हमारी बात ॥
सगुन चाहियेउनबनियनको ❋ जो धारि मौर बिवाहन जायँ ।
सगुन चाहिये ना क्षत्रिनको ❋ जो रण चढिकै लोह चबायँ ॥
यह कहि ताहर चढिघोडापर ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
लश्कर आयो रणखेतनमें ❋ ताहर घोडा दियो बढाय ॥
बोले ताहर आगे बढिकै ❋ को यह लश्कर लायो चढाय ।
बोली बेला तब ताहरते ❋ गौनेको अधकर देउ मँगाय ॥
तौ हम लौटिजायँ महुबेको ❋ अबहीं सबै रारि मिटिजाय ।
तापर ज्वाब दियो ताहरने ❋ काहे प्राण गँवाये आय ॥
कही हमारी ब्रह्मा मानौ ❋ चुप्पै लौटि महोबे जाउ ।
बोली बेला तब ताहरते ❋ ताहर सुनौ हमारी बात ॥
बहिनि तुम्हारी ने भेजा है ❋ गौनेको अधकर लावौजाय ।
सो तुम दै देउ हँसी खुशीते ❋ नाहीं दिल्ली लिहौं लुटाय ॥

बोले ताहर तब ब्रह्मा ते ❋ ब्रह्मा चलौ हमारे साथ ।
भोजन करिहौ जब हमरे सँग ❋ तब हम अधकर दिहैं मँगाय
बोली बेला तब ताहरते ❋ हौ तुम दगाबाज जल्लाद ।
बात तुम्हारी हम मानिहैं ना ❋ ना हम जायँ तुम्हारे साथ ॥
ठौर मँगायदेउ अधकर तुम ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
बातन बातन बतबढ ह्वइगो ❋ औ बातन में बाढी रारि ॥
गुस्सा होइकै ताहर बोले ❋ औ क्षत्रिनते कही सुनाय ।
बत्ती दैदेउ सब तोपन में ❋ इन सबहुनको देउ उडाय ॥
बत्ती दैदइ तब तोपनमें ❋ धुँवँना रह्यो सरग मँडराय ।
दगीं सलामी दोना दल में ❋ तोपैं चलन लगीं तत्काल ॥
अररर गोला छूटन लागे ❋ गोली सन्न सन्न सन्नायँ ।
गोला बरसे तीनि घरी भरि ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ ॥
तोपैं छोडि दईं ज्वानननें ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रननें ❋ खटखट चलन लगीं तलवारि
क्यागति बरनौंत्यहि समयाकी ❋ बेला बीररूप ह्वइ जाय ।
अकिली बेलाकी धमकिनमें ❋ कोऊ कुँवर न आडै पाँव ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी जब ताहरने ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ॥
इक ललकार दई ताहरने ❋ ब्रह्मा खबरदार ह्वइ जाउ ।
खैंचि शिरोही लइ ताहरने ❋ सो बेलापर दई चलाय ॥
ढाल अडाई तब बेलाने ❋ औझड लगी हाथमें जाय ।
कटि अस्तीन गई जामाकी ❋ चुरियाँखुलीं ब्यलमदे क्यार॥
देखि हाल यह तब चौंडाने ❋ यह ताहरते कही सुनाय ।
हाथ चलैयो ना बेलापर ❋ है आगे यह बहिनि तुम्हारि॥
सुनत दुचित्ते ताहर ह्वइगे ❋ बेला घोडा दियो बढाय ।

खैंचि शिरोही लइ बेलाने ❋ औ ताहर पर दई झुकाय ॥
शीश काटि लीन्हों ताहरको ❋ अपनो मुर्चा दियो हटाय ।
कूच कराय दियो तुरतै तब ❋ औ ब्रह्मापै पहुँची जाय ॥
चौंडा आयो गढ दिल्लीमें ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ।
हाल सुनायो सब बेलाको ❋ सुनि सब गये सनाका खाय
पृथीराज मनमें घबराने ❋ पहुँची खबरि महलमें जाय
हाहाकार परो महलनमें ❋ अगमा रोय रोय रहि जाय
अगमा रानी बहुतै बिलखै ❋ लैलै सब लरिकन के नाम ।
याही दिनको बेला जन्मी ❋ ज्याहिं करि दई वंशकी हानि
खून कि प्यासी यह बेला है ❋ कैसे लेय नीर की धार ।
पानी दिवैया कोउ रहिगो ना ❋ दिल्ली दियना गयो बुझाय
सिगरी रैयति रोवन लागी ❋ लैलै नाम ब्यलमदे क्यार ।
याही दिनको तुम उपजी थी ❋ जो करि दई वंशकी हानि॥
पूरि लडाई भइ बेलाकी ❋ सो हम लिखिकै दई सुनाय
आगे लडाई है चन्दनकी ❋ ऊदनि बगिया लाये कटाय
सो हम लिखिकै तुमहिं सुनै हैं ❋ यारो सुनियो कान लगाय
समय पाय तुम आल्हागावौ ❋ नित उठि नाम लेउ भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान॥

इति बेला और ताहरकी लडाई समाप्त ।

अथ

चंदन बगिया कटानेकी लडाई।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सवैया।

ज्ञान घटै खलसंगतिते अरु,नीर घटै ऋतु ग्रीषम आये।
पाप घटै कछु पुण्य किये अरु,रोग घटै कछु औषधि खाये॥
प्रीति घटै नित माँगनते अरु,रोष घटै मनके समुझाये।
नारि प्रसंगते जोर घटै,यमत्रास घटै हरिके गुण गाये ॥ २ ॥

बिपाति बसेरा सब काहूको ❋ यारो बिपाति परै संसार।
इक दिन पारिगौ रामचन्द्रपर ❋ बनमें हरी निशाचर नारि
सोइ दिन पारिगौ परिमालेपर ❋ जूझे ब्रह्मा राजकुमार।
कहौं लडाई अब बगियाकी ❋ यारो सुनो सुमिरि करतार
शीश काटि लाई ताहर को ❋ सो थारामें तुरत धराय।
जायकै पहुँची ब्रह्मानँद पै ❋ बेला ठाढी करै बयारि॥
बारबार तकि मुख स्वामीको ❋ बेला रानी कहै पुकारि।
जागौ जागौ स्वामी मेरे ❋ मैं ठाढी हौं नारि तुम्हारि
शीश काटि लाई ताहरको ❋ सो तुम देखौ नैन उघारि।
जागी मूर्छा ब्रह्मानँद की ❋ औ बेलातन रहे निहारि॥
देखा शीश जबाहिं ताहरको ❋ तब बेलाते लगे बतान।
डाहु बुझाय गयो छातीको ❋ जो तुम बैरी दियो गिराय॥
तुम्हरे देखत अब सुखते हम ❋ अपने देहैं प्राण गँवाय।
मनसा हमरी पूरन ह्वइ गइ ❋ रानी सुनौ हमारी बात॥

जो इच्छा होय राजपाटकी ❋ तौ महुबेको करौ पयान ।
होवै प्यारो जो नैहर यहु ❋ तौ दिल्लीमें बैठौ जाय ॥
साथ हमारो जो चाहौ तुम ❋ हमरे संग सती ह्वइ जाउ ।
इतनी कहिकै ब्रह्मानँदने ❋ तुरतै दीन्हें प्राण गँवाय ॥
देखिं हाल यह बेला रानी ❋ भुँइमें गिरी तडाका जाय ।
कारण करि करि रोवन लागी ❋ बहुतै लागी करन बिलाप
लटैं उखारै चुनरी फारै ❋ दाँतन पहुँचा डरै चबाय ।
हाय बिधाता यह कैसी भइ ❋ बेडा कौन लगै है पार ॥
नातो छूटि गयो नैहरते ❋ ससुरे रही अँधेरिया छाय ।
जो हम जनती की मरिजैहौ ❋ क्यों भैयाको मरती जाय ॥
यहि बिधि बेला बहुतै बिलपै ❋ सो दुख कछू कह्यो नाजाय
सोचै बेला अपने मनमें ❋ अब मैं सती होउँ पियसाथ
बेला बुलवायो ऊदनिको ❋ औ ऊदनि ते कही सुनाय ।
ह्वइ हौं सती संग स्वामी के ❋ चन्दन बगिया लाओ कटाय
बोले ऊदनि तब बेलाते ❋ चहुँ दिशि फौज पिथौराक्यार
कही हमारी तासे मानो ❋ बैठी राज्य करौ महरानि ॥
गुस्सा ह्वइकै बघ ऊदनि ते ❋ रानि बेलाने कही सुनाय ।
जल्दी जावो तुम चन्दनको ❋ नाहीं तुरतै दिहौं सराप ॥
यह सुनि घबराने ऊदनि तब ❋ औ लाखनिते कही सुनाय
चन्दन माँगति है बेला अब ❋ ह्वइ है सती कंतके साथ ॥
चलौ साथ हमरे दिल्लीको ❋ चन्दन बगिया लेयँ कटाय ।
यहकहि चलिभैलाखनिऊदनि ❋ लश्करतुरत लियोसजवाय
कूच कराय दियो नारेते ❋ औ दिल्ली में पहुँचे जाय ।
चन्दन बगिया तुरत कटाई ❋ सो छकरन में लई भराय ॥
माली खबरि करी राजाको ❋ ऊदनि बगिया लई कटाय ।

चौंडा धाँधूको बुलवायो ❋ औ यह कही बीर चौहान
चन्दन बगिया उदनि कटाई ❋ सो तुम चन्दन लेउ छँडाय
फौज सजाय जाउ जल्दी तुम ❋ सबकी कटा देउ करवाय
यह सुनि चौंडा धाँधू चलिभे ❋ सिगरो लश्कर लियो सजाय
कूच कराय दियो जल्दीते ❋ औ छकरनको लियो घिराय
हाथी बढाय दियो चौंडाने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
काहे बगिया तुम कटवाई ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ ह्वइ है सती विलमदे रानि ।
हुक्म मानिकै हम बेलाका ❋ चन्दन बगिया लई कटाय
फिरिकै चौंडा बोलन लागो ❋ ऊदनि लौटि महोब जाउ।
जान न देहैं हम चन्दन लै ❋ चाहै लाखन करौ उपाय॥
बोले ऊदनि तब गुस्सा ह्वइ ❋ नाहक रारि बढाई आय ।
अपन दुसारिहा हम राखा ना ❋ दूजी करै हमारे साथ ॥
गुर्ज उठायो तब चौंडाने ❋ सो ऊदनिपर दियो चलाय
हटिगयो घोडा बघ ऊदनिको ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
एँड लगाई रसबदुलके ❋ औ मस्तकपर बाजी टाप
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय॥
हाथी भागि चला चौंडाका ❋ मुर्चा हटो चौंडिया क्यार
बीकानेरी बिजैसिंहने ❋ चन्दन छकरा लिये घिराय
लाखनि भेजे हिरसिंह बिरसिंह ❋ तुम छकरनको लउ छोडाय
इतनी सुनते दोनों झपटे ❋ बिजयसिंहको दइ ललकार
ह्वइगयो झुरमुट तहँ दोनोंको ❋ हौदा चली बिषम तलवारि
हिरसिंह बिरसिंह दोनों जूझे ❋ लाखनि देखि गये घबराय
तुरत बुलाय लियो गंगाको ❋ औ लाखनिने कही सुनाय
मामा जावो तुम जल्दीते ❋ औ छकरनको लेउ छँडाय

हाथी बढायो तब गंगाने ❋ बिजैसिंहको दइ ललकार ।
छकरा छिनवाये जल्दीते ❋ अपनी खैंचिलई तलवारि॥
करो जडाका बिजैसिंह पर ❋ औ धरतीपर दियो गिराय।
यह गति देखी हीरामनिने ❋ जो चरखारीके सरदार ॥
भाला मारो तब गंगाको ❋ गंगा लैगे चोट बचाय।
लियो गुर्ज तब गगा ठाकुर ❋ हीरामनिपर राखो जाय ॥
जूझे हीरामनि तुरतै तब ❋ छकरा आगे दिये बढाय।
झूके सिपाही तब दिल्लीके ❋ सबके मारु मारु रट लागि
बढे महोबिया बीर रूप ह्वइ ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि।
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ औ मुर्चाते गये बराय ॥
चौंडा धाँधू दोनों चलिभये ❋ मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ।
लैकै छकरा लाखनि ऊदनि ❋ जमुनापार पहूँचे आय ॥
जहँपर तम्बू ब्रह्मानँदको ❋ तहँ सब छकरा दै पहुँचाय
डेरा डारि दिये बागनमें ❋ फेंटैं छुटीं सिपाहिन केरि॥
जीन उतारिगे सब घोडनकी ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ।
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ बेलहि खबरि सुनावो जाय
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ जल्दी हाल सुनावो जाय ।
यह सुनि चलिभे ऊदनि ठाकुर ❋ औ बेलापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ चन्दन बगिया लाये कटाय
यह सुनि चालि भइ बेला रानी ❋ औ छकरनपै पहुँची आय
देखिकै चन्दन बेला बोली ❋ गीलो चन्दन लाये लदाय।
चिता न जारि है या चन्दनते ❋ सूखो चन्दन लावौ जाय॥
बोले ऊदनि तब बेलाते ❋ औ बेलाते कही सुनाय ।
चन्दन सूखो है कनउजमें ❋ सो हम तुमहिं देयँ मँगवाय
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❋ तौलौं सत्त रहनको नाहिं ।

लावौ चन्दन तुम दिल्लीते ❋ जहँ है पृथीराज दरबार ॥
बाहर खंभा हैं चन्दन के ❋ लावौ जाय अबहिं उखराय ।
यह सुनि तडपे उदनि बाँकुडा ❋ औ बेला ते लगे बतान ॥
बात सम्हारि कहो बेला तुम ❋ हैं ना भारू प्राण हमारि ।
गुस्सा होइ तब बेला बोली ❋ अब हम जानि लई सतिभाव
देखि रूप हमरो मोहे तुम ❋ हमरे कंत दिये मरवाय ।
दाखिकै पारस तुम महुबे में ❋ अकिले बालम दिये पठाय॥
काम तुम्हारो पूरन होइगो ❋ सिगरी मनसा फली तुम्हारि
यह ना जनियो तुम अपने मन ❋ बेला भई निरासिनि राँड।
दिल्लीगढते औ महुबेलौं ❋ होइ हैं सबै सोहागिनि राँड ॥
पायल बाजि है ना पलकापर ❋ होय न बिछुवनकी झनकार
घरघर महुबो आठ दिना में ❋ होइ है सिगरो नगर निरास।
बीस दिनाकेरे अरसा में ❋ दिल्ली परै बज्रकी गाज ॥
बाकी रहे पाँच दिन सतके ❋ जल्दी कूच जाउ करवाय ।
चन्दन खंभा ना लैहै जो ❋ तौ सब जैहै काम नशाय ॥
यह सुनि चलिभे उदनि बाँकुडा ❋ औ लाखनिपै पहुँचे जाय
करी बन्दगी तब लाखनिको ❋ औ सब हालकह्योसमुझाय
सो सुनि चलिभै लाखनि राना। ❋ संगै आये उदैसिंह राय।
आये लाखनि जब बेलापै ❋ तब बेलाते कही सुनाय ॥
सती न होवौ बेला रानी ❋ महुबे करौ राजको काज ।
आज्ञा मनि हैं हम तुम्हरी सब ❋ सेवा करैं बनाफर राय ॥
पारस पूजा है तुम्हरे घर ❋ लोहा छुवत सोन ह्वइ जाय।
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❋ हमरे मन यह नाहिं समाय
मन नाहिं मानत समुझायेते ❋ हमको सत्त दियो भगवान।
ह्वइहौं सती साथ स्वामीके। ❋ हमरो जन्म सुफल होइ जाय

या लै आवो चन्दन खंभा ❋ नातर छोरि धरौ हथियार ।
इतनी सुनते लाखनि बोले ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
अब तुम त्यार होउ जल्दीते ❋ शिरपर काल पहूँचो आय ।
चन्दन खंभा हम तुम लैहैं ❋ या तहँ देहैं प्राण गँवाय ॥
आगे लडाई है खंभनकी ❋ सो हम लिखिकै दिहैं सुनाय ।
आल्हा गावो समय पाय तुम ❋ औ नित नामलेउ भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान

इति चन्दनबागियाकी लडाई समाप्त ।

अथ

चंदनखंभ उखाडनेकी लडाई।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देवा रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लै बजरंगबली को नाम ॥
लिखौं लडाई अब खभनकी ❋ यारो सुनो छोंडि सबकाम।
राम चले गये बनोबासको ❋ दशरथ दीन्हें प्राण गँवाय॥
सीतहि हरिलीन्हों रावणने ❋ प्रभुपर बिपति परी बन आय
तैसेइ बिपति परी बेलापर ❋ ब्रह्मा दीन्हें प्राण गँवाय।
छांडि आसरा जिंदगानीको ❋ लाखनि और उदैसिंहराय॥
करी तयारी तब खंभनकी ❋ लश्कर सबै लियो सजवाय।
कूच कराय दियो जल्दीते ❋ औ दिल्ली में पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दिये धूरेपर ❋ तुरतै तम्बू दिये तनाय।
गाडि निशाना दै लश्करके ❋ झंडन रही लालरी छाय ॥
लाखनि बुलवाये राजा सब ❋ औ सब शूर लिये बुलवाय।
ढेबा जगनिक धनुआँ तेली ❋ लला तमोली पहुँचो आय।
आये राजा गाँजरवाले ❋ तिनते लाखनि लगे बतान॥
छाँडि आसरा जिंदगानीको ❋ अपनो मया मोह बिसराय।
धावा मारो तीन गोल ह्वइ ❋ चन्दन खंभ लेउ खुदवाय
सुनतै धाये तीन गोल ह्वइ ❋ पहुँचे शूर राजदरबार ॥
बारह खंभा मलयागिरिके ❋ सो उखराय लिये लदवाय।
मिली खबरि जब बीरभुगंतै ❋ रमया दानव लियो बुलाय॥
लाख सवार साथ लीन्हें सब ❋ तुरतै धावा दियो कराय।

खंभा घेरि लिये दोनोंने ❀ औ आगे बढि कही सुनाय
बीर भुगन्ता ने ललकारो ❀ किसने खंभ लिये उखराय।
काल बिराजत है क्यहिके शिर ❀ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब ॥
घोडा वढायो तब ऊउनिने ❀ बीर भुगन्तै दियो जवाब।
खंभ मँगाये रानि बेलाने ❀ अपने सती होनके काज॥
तब हम खंभा यह उखराये ❀ है यह काज व्यलमदे क्यार
काम हमारो ना अटको कछु ❀ तुम क्यों रारि बढाई आय
गुस्सा ह्वइ तब बीर भुगंता ❀ सब क्षत्रिनते कही पुकारि।
जान न पावैं महुबेवाले ❀ सबकी कटा देउ करवाय॥
हल्ला करि दो सब क्षत्रिनने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि
खट खट तेगा बाजन लाग्यो ❀ जूझन लगे सुघरुआ ज्वान
रमया दानों शूर युद्धमें ❀ बहुतै विषम करै तलवारि।
लोथैं गिरन लगीं लोथिन पर ❀ सबके मारु मारु रट लागि॥
राजा अंगद आगे बढिगै ❀ चन्दन खंभा लिये घिराय।
लाखनि भेजा तब परशूको ❀ चन्दन खंभा लेउ छँडाय॥
बढिकै परशूने ललकारो ❀ अंगद खैंचि लई तलवारि।
करो जडाका जब परशूपर ❀ परशू लीन्हीं चोट बचाय॥
खैंचि शिरोही लइ परशूने ❀ सो अंगदपर दई चलाय।
अंगद जूझिगये खेलन में ❀ बीर भुगन्ता बढो अगार ॥
भाला मारि दियो परशूके ❀ परशू जूझि गये मैदान।
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❀ ऊदनि खंभा लेउ छिनाय॥
खंभा जैहैं जो दिल्ली को ❀ तौ जग ह्वइ है हँसी हमारि
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
घोडा बढायो बघ ऊदनिने ❀ बीर भुगन्तै दइ ललकार।
झुरमुट ह्वइगौ तहँ दोनोंको ❀ तुरतै ऊदनि दियो भगाय॥

आगे बढिगौ रमया दानौ ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
खबरदार रहियो घोडापर ❋ तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
खैंचि शिरोही लइ रमयाने ❋ सो ऊदनिपर दई चलाय ।
चोट बचाय लई ऊदनिने ❋ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय॥
गुर्जके लागत रमया जूझो ❋ ऊदनि छकरा दिये बढाय ।
भुरुही दाबे लाखनि आये ❋ घेरो महल पिथौरा क्यार ॥
बदला लैहौं संयोगिनिको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ।
बोले जगनिक तब लाखनिते ❋ यह ना कहौ कनोजी राय
जैसे हमको मल्हना रानी ❋ तैसेइ हमहिं अगमदे रानि ।
नाम न लीजौ तुम अगमाको ❋ नहिं सब जैहै काम नशाय
तौलौं आये ऊदनि ठाकुर ❋ सो जगनिक ते लगे बतान ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है ❋ दूजी करौ कनौजी साथ॥
ऊदनि समुझायो जगनिकको ❋ औ लाखनिते कही सुनाय
धीरज राखौ तुम अपने मन ❋ अबहीं डोला लेउँ खँदाय
यह कहि चलिभे ऊदनि ठाकुर ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ।
सूरति देखी जब ऊदनिकी ❋ अगमा बहुत गई घबराय ॥
बोली अगमा बघ ऊदनिते ❋ तुम सुनिलेउ उदैसिंह राय।
हाथ चलैयो ना काहूपर ❋ तुमतो लरिका लगौ हमार॥
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब ❋ माता सुनौ हमारी बात ।
लाखनि बिचले हैं द्वारेपर ❋ बदला लिहैं संयोगिनिक्यार
कही हमारी माता मानौ ❋ बांदीको डोला देउ सजाय ।
इतनी बात सुनी अगमाने ❋ तुरतै डोला दियो सजाय ॥
डोला लैकै ऊदनि चलिभये ❋ दरवाजे पर पहुँचे आय ।
बोले ऊदनि तहँ लाखनिते ❋ दादा मानौ कही हमारि ॥
परन तुम्हारो पूरो ह्वइगौ ❋ डोला आयो अगमदे क्यार

डोला फेरिदेउ अपनो करि ❋ तुम्हरो नाम होय संसार ॥
बात मानि लइ तब ऊदनिकी ❋ लाखनिडोला दियो फिराय
बेंडा लश्कर पृथीराजको ❋ बिसहिनि जीति पहूँचो आय
सुनी खबरि यह पृथीराजने ❋ ऊदनि खंभ लिये उखराय
साथमें आये लाखनि राना ❋ लश्कर साथ कनोजी क्यार
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ चौंडा धाँधू लियो बुलाय
हुक्म देदियो तिन दोनोंको ❋ चन्दन खंभा लेउ छिनाय
हाथी बढाये तिन दानोंने ❋ आगे लश्कर दियो बढाय
आदि भयंकर झूमत आवै ❋ बैठे शब्दवोधि चौहान ॥
बोले पृथीराज आगे बढि ❋ किसने खंभा लियो उखारि
करी बन्दगी तब ऊदनिने ❋ औ समुहे ह्वइ दियो जवाब
हुक्म पायकै रानि बेलाका ❋ हमने खंभ लिये उखराय
काज हमारो ना अटका कछु ❋ है यह काज ब्यलमदे क्यार
फिरिकै पिरथी बोलन लागे ❋ ऊदनि लौटि महोबे जाउ
खंभ न पैहो तुम हमरे यह ❋ नाहक देहो प्राण गँवाय
बोले ऊदनि तब राजाते ❋ अब ना मिलि हैं खंभ तुम्हार
पृथीराज बोले धाँधूते ❋ चन्दन खंभ लेउ छिनवाय
हाथी बढायो तब धाँधूने ❋ चन्दन खंभ लिये घिरवाय
बोले लाखनि तब धनुआँते ❋ खंभा तुरतै लेउ छँडाय ॥
धनुआँ पहुँचो जब खंभनपै ❋ तब धाँधूने दइ ललकार ।
झुरमुट ह्वइ गौ तब दोनोंको ❋ धनुआँ जूझि गयो मैदान
आगे बाढिगौ लला तमोली ❋ सोऊ जूझि गयो रणमाहिं
मन घबराने लाखनि राना ❋ को असमयमें ऐहै काम ॥
घोडा बढायो बघ ऊदनिने ❋ औ धाँधूको दइ ललकार ।
गुर्ज चलायो तब धाँधूने ❋ ऊदनि लैगे चोट बचाय ॥

मारो भाला जब ऊदनिने ❋ धाँधू हाथी गये भगाय।
खौंचि शिरोही देवी मरहटा ❋ बघ ऊदनि पर दई चलाय
चोट, बचाय लई ऊदनिने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
चेहरा मारो तब देवीको ❋ देवी जूझि गये मैदान ॥
यह गति देखी पृथीराज जब ❋ तब लश्करको दियो बढाय
झुके सिपाही दिल्लीवाले ❋ सबके मारु मारु रट लागि॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि।
कोउ न भगियो रणसमुहेते ❋ यारो रखियो धर्म हमार ॥
जंग जीति चलि हा दिल्लीते ❋ दूनी तलब दिहौं बढवाय।
समुहे रणके जो मरिजैहौ ❋ ह्वइहै जुगन जुगनलौं नाम॥
खटिया परिकै जो मरिजैहौ ❋ कोउ न लैहै नाम तुम्हार।
द द पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढाय॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अन्धाधुन्ध चलै तलवारि
चलै शिरोही आठ कोसलों ❋ धूरे बही रक्तकी धार ॥
साँकल लैकै लाखनि राना ❋ सो भुरुहीको दई गहाय।
दबी बायसी पृथीराजकी ❋ भुरुही राखो धर्म हमार ॥
लाखनि ऊदनि दलमें पैठे ❋ क्षत्रिन काटि करो खरिहान
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ अपने छोंडि छोंडि हथियार
करें चाकरी ना दिल्लीमें ❋ बनकी बेंचि लडकियाँ खायँ
आये भिडहा हैं महुबेके ❋ जे मानुषकर करैं अहार ॥
भगत सिपाही पिरथी देखे ❋ अपनो हाथी दियो बढाय
आगे बढिकै पृथीराजको ❋ बघ ऊदनि ने करी सलाम
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ तुम सुनि लेउ पिथौरा राय
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ तुम क्यों रारि बढावत आय
सत्ती ह्वइ है बेला रानी ❋ सो हम खंभ लिये उखराय

जो तुम छीनि हौ इन खंभनको ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि
काज हमारो ना कछु अटको ❋ है यह काज ब्यलमदे क्यार
खभ न देहैं हम तुमको अब ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ ॥
तांते मानौं कही हमारी ❋ अपनो कूच जाउ करवाय ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ अपनो मुर्चा दियो हटाय॥
लाखनि ऊदनिने खंभनके ❋ छकरा आगे दियो बढाय।
पृथीराज पहुँचे दिल्लीमें ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
हाल सुनायो रनि अगमाने ❋ बिचले यहाँ कनौजी राय ।
बदला लेहैं संयोगिनिको ❋ महलन आये उदैसिंह राय॥
डोला सजाय दियो बांदीको ❋ औ द्वारेपर गये लिवाय ।
डोला फेरि दियो द्वारेते ❋ औलाखनिकोदियो समुझाय
इतनी सुनिकै रनि अगमाते ❋ बहुतै खुशी भये महराज ।
लाज हमारी ऊदनि राखी ❋ धनि धनि दस्सराजके लाल
बेला सती भई आगे अब ❋ सो हम लिखिकै दिहैं सुनाय
समय पाय तुम आल्हा गावो ❋ नित उठि नाम लेउ भगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धारि ध्यान

इति चन्दनखंभ उखाडनेकी लडाई समाप्त ।

श्रीः ।

अथ बेलाके सती होनेकी लडाई ।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सवैया ।

कैटभसे नरकासुरसे अरु,भीषम द्रोण महायश खेवा ।
बालि बली बलि बाण दधीचि, ययातिदिलीपहुसे बलसेवा॥
रावण और युधिष्ठिर भारत, भीम महाबलवान सुदेवा ।
अन्तसमय उबरे न कोऊ, क्षणमाहिं भये सब काल कलेवा२
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय
लिखौं लडाई अब अखीरकी ❋ यारौ सुनियो कान लगाय
ऊदनि पहुँचे रानि बेलापै ❋ औ बेला ते कही सुनाय ।
चन्दन खंभा हम लाये हैं ❋ आगे हुक्म देउ फरमाय ॥
बोली बेला तब ऊदनिते ❋ अब तुम सुनौ हमारी बात।
पहिलो धूरो गढ दिल्लीको ❋ दुसरो नगर महोबे क्यार ॥
तिसरो धूरो गढ कनउजको ❋ चौथो बलखबुखारे क्यार।
चारि चौसँधे के धूरेपर ❋ जल्दी सरा देउ रचवाय ॥
यही हुक्म हमरो अखीर है ❋ जल्दी चिता बनावौ जाय
सुनते चलिभे ऊदनि ठाकुर ❋ चन्दन छकरा दिय जुताय
चारि चौसँधे के धूरेपर ❋ ऊदनि सरा दियो रचवाय
ऊदनि बोले तब लाखनिते ❋ दादा सुनौ कनौजी राय ॥
मरन कि बेरा अब आई है ❋ सिगरो लश्कर लेउ सजाय
खबरि पहूँची गढ महुबेमें ❋ सत्ती होय ब्यलमदे रानि॥

रैयत धाई सब देखनको ❋ औ धूरेपर पहुँची आय ।
सुनी खबरियाँ पृथीराजने ❋ बेला सती होनको जाय ॥
लश्कर अपनो सब सजवायो ❋ औ चढि आये पिथौरा राय
अगहनमास शुदी एकादशि ❋ सत्ती भई ब्यलमदे रानि ॥
चिता समीप गई बेला जब ❋ पतिकी लाश लई मँगवाय
लाश धराई तुरत चितापर ❋ बेला कीन्हें सर्व सिंगार ॥
करि पैकरमा जबहीं बैठी ❋ पृथीराज तब कही पुकारि।
होवै जो कोउ चन्द्रवंशमें ❋ सरा में आगी देय लगाय॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ सो ना जायँ चिताके पास।
आगे बढि तब ऊदनि बोले ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान
हुक्म दियो हमको बेलाने ❋ की तुम आगी देउ लगाय।
कोटि उपाय करौ चाहे तुम ❋ आगी हमहीं दिहैं लगाय ॥
गुस्सा ह्वइके पृथीराज तब ❋ तुरतै हुक्म दियो करवाय ।
बत्ती दैदेउ सब तोपन में ❋ इन पाजिनको देउ उडाय॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ तुरतै बत्ती दई लगाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुअना रह्यो सरग मँडराय
तोपैं छूटीं दोनों दलमें ❋ रणमें होन लगा घमसान ।
अररर अररर गोला छूटैं ❋ कहकह करैं अगिनियाँ बान
रिम झिम रिम झिम गोली बरसैं ❋ सननन परी तीरकी मारु
तड तड तड तड तासे बाजे ❋ जंगी ढोल रहे झहनाय ॥
शंख तोरही औ रणसिंहा ❋ जहँ तहँ मदन बेलि घहराय
तीर कमनियाँ जो मुलतानी ❋ कारी नागिनिसी मन्नायँ ॥
जैसे साँप बँबीमें जावै ❋ त्यों ज्वाननके तीर समायँ।
दोनों फौजन के संगममें ❋ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ॥
लागे गोला ज्यहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहि जाय

गोला लागै जौन ऊँटके ❋ दलमें गिरै चकत्ता खाय ॥
लागै गोला जिन घोडनके ❋ चारों सुम्म गर्द ह्वइ जायँ ।
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❋ तिनकी त्वचा सरग मँडराय
बंबको गोला जिनके लागै ❋ तिनके हाड मास छुटिजायँ
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❋ सो लत्ताअस जाय उडाय॥
छोटी गोली जिनके लागै ❋ मानौ गिरह कबूतर खाय ।
बान को डंडा जिनके लागै ❋ तिनके दुइ खंडा ह्वइ जायँ॥
तोपैं धैंधैं लाली ह्वइ गईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ।
चढी कमनियाँ पानी ह्वइ गईं ❋ चुटकिन के गै माँस उडाय
तोप रहकला पीछे छाँडे ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगे पाँच पैग असवार ॥
साँगै चलन लगीं दोनों दल ❋ ऊपर बर्छिन की दइ मारु ।
छुटैं पिचक्का तहँ लोहूके ❋ औ बहि चली रक्तकी धार
बूडि जुलफियाँ गईं क्षत्रिनकी ❋ चरबी अंग गई लपटाय ।
मानहुँ टेसू वनमें फूले ❋ ऐसी रही लालरी छाय ॥
हौदा भरिगे हैं लोहूते ❋ औ चुचुआत फिरैं असवार।
चारि घरी भरि बजो साँगडा ❋ भारी भई साँगकी मारु ॥
टूटिकै भाला दोना ह्वइगे ❋ सबियाँ हारि मानिगे ज्वान
दोनों फौजनके संगममें ❋ रहिगो डेढ कदम मैदान ॥
खैंचि शिरोही लइ ज्वाननने ❋ नंगी चलन लगी तलवारि।
खट खट खट खट तेगा बाजै ❋ बोलै छपक छपक तलवारि
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायति क्यार
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटिगिरैंसुघरुआज्वान
पैदल के सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनते असवार।
हौदाके सँग हौदा मिलिगै ❋ ऊपर पेशकब्जकी मारु ॥

कटि काटि शीश गिरैं धरनीमें ❋ उठि उठि रुंड करैं तलवारि ।
आठ कोस के तहँ गिरदामें ❋ अन्धाधुन्ध चलै तलवारि ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगे ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ।
बिसे बिसेपर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
कच्छा कटिगे जिन घोडनके ❋ धरती गिरे भरहरा खायँ ।
कटे भुसुडा जिन हाथिनके ❋ दलमें गिरैं करौंटा खाय ॥
कटि भुजदंडे रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार
दोनों सेना यक मिल होगईं ❋ ना तिल परा धरनिमें जाय
ज्यों सावनमें छुटैं फुहारा ❋ त्योंही चलै रक्तकी धार ।
परे दुशाला जो लोहूमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार ॥
पगिया डारीं जे लोहूमें ❋ मानों ताल फूल उतरायँ ॥
परी शिरोही हैं ज्वाननकी ❋ मानो नाग रहे मन्नाय ॥
घैहा डारे रणमें लोटैं ❋ जिनके प्यासप्यासरटलागि
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भैया लगो हमार ।
पाँव पिछारीको ना धरियो ❋ यारो राखियो धर्म हमार ॥
सन्मुख लडिके जो मरि जैहौ ❋ ह्वइहै जुगन जुगनलौं नाम।
जो मरिजैहौ खटिया परिकै ❋ कोउ न लिहै तुम्हारो नाम
देदै पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढाय।
झुके सिपाही महुबे वाले ❋ जिनके मारु २ रट लागि॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय।
लम्बी धोतिन के पहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह ॥
भेष बदलिकै क्षत्री भागैं ❋ हा दैयागति कही न जाय।
कोऊ रोवै है लरिकनको ❋ कोऊ पुरिखन को चिल्लाय
कोउकोउरोवैतहँतिरियनको ❋ बेडा कौन लगै है पार ।

चौंडा ब्राह्मण के समुहेपर ❋ ढेबा करो सामना जाय।
बिकट लडाई भइ दोनों में ❋ ढेबा जूझि गयो मैदान ॥
घोडी बढाई जगनायक तब ❋ औ चौंडाको दइ ललकार।
बहुत लडाई भइ दोनोंमें ❋ सो मैं कहँ लग करौं बखान
जगनिक जूझि गये खेतनमें ❋ आगे बढो चौंडिया राय।
बोले पृथीराज भूराते ❋ भूरा सुनौ हमारी बात ॥
जान न पावैं कोउ महुबेको ❋ सबकी कटा देउ करवाय।
भूरा मुगुल रहै काबुलको ❋ सो मुर्चापर पहुँचो जाय ॥
बोले लाखनि तब सैयदते ❋ मैं चाचाकी लेउँ बलाय।
बडा लडैया यहु भूरा है ❋ याको शीश लेउ कटवाय॥
अली अली करि सैयद झपटे ❋ औ भूराको दइ ललकार।
सुनते गुस्सा ह्वइ भूराने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
करो जडाका तब सैयदपर ❋ सैयद लीन्हीं चोट बचाय।
टूटि शिरोही गइ भूराकी ❋ खाली मूठि हाथ रहि जाय
खेंचि शिरोही लइ सैयदने ❋ औ भूरापर दई चलाय।
शीश काटि लौ वा भूराको ❋ बीर भुगन्ता बढो अगार ॥
बीर भुगन्ताने ललकारो ❋ सैयद खबरदार ह्वइ जाउ।
लई कमानियाँ बीर भुगन्ता ❋ समुहे कैबर दियो चलाय॥
चोट बचाई तब सैयदने ❋ फिरित्यहिंभालादियोचलाय
भाला लागत सैयद गिरि गये ❋ लाखनि गये सनाका खाय
बोले लाखनि तब गंगाते ❋ मामा राखौ धर्म हमार।
सैयद जूझि गये खेतन में ❋ को असमय में ऐहै काम ॥
हाथी बढायो तब गंगाने ❋ बीर भुगंते दइ ललकार।
लैकै भाला बीर भुगन्ता ❋ सो गंगापर दियो चलाय ॥
चोट बचाय लई गंगाने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि

करो जडाका इक समुद्देपर ❋ बीर भुगंतै दियो गिराय ॥
यह गति देखी पृथीराज जब ❋ तब धाँधू ते कही सुनाय ।
मारि गिरावौ कनवजियनको ❋ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
हाथी बढायो तब धाँधूने ❋ औ धाँधू यह कही सुनाय
कौने मारो बीर भुगंतै ❋ सो समुहे ह्वै देय जवाब॥
हथिनी दाबी तब गंगाने ❋ औ धाँधूको दियो जवाब।
हमने मारो बीर भुगन्तै ❋ यह कहि हथिनी दई बढाय
गुर्ज उठायो तब धाँधूने ❋ सो गंगापर दियो चलाय।
चोट बचाय लई गंगाने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि
ढाल अडाय दियो धाँधूने ❋ तापर भयो जडाका जाय।
टूटि शिरोही गइ गंगाकी ❋ खाली मूठि हाथ रहि जाय
यह गति देखी जब गंगाने ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
जौन शिरोही ते गज काटे ❋ औ घोडनके चारो पाँव ॥
सोइ शिरोही धोखा देगइ ❋ हमरो काल रह्यो नियराय ।
हाथी बढायो तब धाँधूने ❋ औ भालाको दिये चलाय ॥
भाला लागत गंगा गिरि गये ❋ लाखनि देखि गये घबराय ।
भुरुही बढाये लाखनि आये ❋ औ धाँधूको दइ ललकार॥
खबरदार रहियो हाथीपर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय।
बोले धाँधू तब लाखनिते ❋ पहले चोट करो तुम आय।
ज्वाब दियो तब लाखनि राना ❋ नहिंयहहुकमकनौजिक्यार
पहले चोट करो अपनी तुम ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ
इतनी सुनतै धाँधू ठाकुर ❋ अपनी लीन्हीं लाल कमान
कैबर छांडि दियो समुहेपर ❋ लाखनि लीन्हीं चोट बचाय
भाला लैकै तब धाँधूने ❋ सो लाखनिपर दियो चलाय
हथिनी इटिगइ तब लाखनिकी ❋ भाला गिरो भूमिपरजाय

खैंचि शिरोही लइ धाँधू तब ❋ औ लाखनिपर दई चलाय
ढाल अडाई लाखनि राना ❋ धाँधूकि टूटि गई तलवारि
गुर्ज उठायो लाखनि राना ❋ सो धाँधूपर दियो चलाय
लाग्यो गुर्ज जाय खोपरीमें ❋ धाँधू जूझि गये मैदान ॥
देखि हाल यह पृथीराज तब ❋ मनमें बहुत गये घबराय ।
बडो शूरमा यहु मारोगो ❋ को गाढेमें ऐहै काम ॥
नौसै हाथीको हलका है ❋ आगे बढे पिथौरा राय ।
आदि भयंकर झूमत आवै ❋ बैठे शब्दबोधि चौहान ।
बीचमें घिरि गये लाखनि राना ।तब लाखनि मन सोचन लाग
सिगरो लश्कर पिरथी लाये ❋ हमते कियो सामना आय
उतरे लाखनि तब भुरुहीते ❋ औ धरती पर पहुँचे आय
फूल मँगाय लियो गगरीभरि ❋ सो हाथिनीको दियो पिलाय
भाँग मिठाई औ अफीमको ❋ गोला दीन्हों तुरत खवाय
हाथिनी मस्त करी लाखनिने ❋ औ साँकलको दइ पकराय
बोले लाखनि तब हाथिनीते ❋ भुरुही राखो धर्म हमार ।
यह कहि चाढिगे लाखनि राना ❋ आगे हाथिनी दई बढाय ॥
खैंचि शिरोही लइ लाखनिने ❋ समुहे गोल गये समुहाय ।
भुरुही साँकल फेरन लागी ❋ लश्कर तिडी बिडी ह्वइजाय
आकिले लाखनिकी दपटानिमें ❋ सब दल रैन बैन ह्वइ जाय
आगि लगन पाई ना सरमें ❋ बेला केश दिये छिटकाय
लपटैं छूटीं तब बारनते ❋ जरने लगा सरा ततकाल
ढाल अडाये लाखनि राना ❋ सम्मुहे खडे पिथौरा राय ॥
लाखनि बोले पृथीराजते ❋ तुम सुनिलेउ बार चौहान
है कोउ क्षत्री तुम्हरे दलमें ❋ सन्मुख लडै हमारे साथ ॥
यह सुनि पिरथी बोलन लागे ❋ लाखनि सुनो हमारी बात

बारह रानिनके इकलौता ❋ औ सोलाके सर्ब सिंगार
आस लकाडिया हो जैचँदकी ❋ नाइक देहौ प्राण गँवाय ।
कही हमारी लाखनि मानौ ❋ तुम समुहेते जाउ बराय ॥
घुंडी खोली तब लाखनिने ❋ समहे छाती दई अडाय
बोले लाखनि पृथीराजते ❋ तुम सुनिलेउ पिथौरा राय
हिरणाकुश सतयुगमें ह्वइगौ ❋ जाने कियो अखंडित राज
सो ना अमर भयो पृथिवीपर ❋ अब क्या अमर कनौजी राय
त्रेतायुगमें रावण ह्वइ गयो ❋ जाके बीस भुजा दश भाल
सो ना अमर भयो दुनियाँमें ❋ अब क्या अमर कनौजी राय
द्वापरम राजा दुर्योधन ❋ ह्वइगे बहुत बली सरनाम ।
सो नहिं अमर भये धरतीपर ❋ अब क्या अमर कनौजी राय
धर्म क्षात्रियनके नाहीं हैं ❋ जो हटि धरैं पिछारी पावँ ।
फिरि समुझायो पृथीराजने ❋ लाखनि मानौ कही हमारि
जैसे लडिका रतीभानके ❋ तैसेइ लडिका लगौ हमार ।
ताते तुमको समुझावत हैं ❋ हमते नाहिं करो तकरार ॥
भुरुही लावो हमरे दलमें ❋ हम तुम लूटैं नगर महोब।
हँसिकै लाखनि बोलन लागे ❋ औ पिरथीको दियो जवाब
धर्म नहीं ह यहु क्षात्रिनको ❋ की घटि करैं काहुके साथ
बोले पृथीराज गुस्सा ह्वइ ❋ तादिन कहाँ रहे महराज ॥
लाये संयोगिनि हम कउनजते ❋ अब बाढि करत सामुहे बात
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ काहे बोलत बात बनाय
नाहीं जचँद मडवा गाडो ❋ नाहीं दीन्हों कन्यादान ।
चोरी लाये तुम कनउजतें ❋ अब बढि कहत बात महराज
उमिर हमारी तब थोरी थी ❋ तब ना धरी कमर तलवारि
बदला लेहैं संयोगिनिको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ॥

इतनी सुनतै गुस्सा ह्वइ तब ❋ पृथीराजने लई कमान ।
तीर निकारि लिये तरकसते ❋ छाती डटी कनौजी केरि ॥
बाइस तीर हते तरकसमें ❋ सो पिरथीने दिये चलाय ।
ढाल फारि लाखनि रानाकी ❋ छाती निकरि गये वा पार ॥
देह नहीं हाली लाखनिकी ❋ पिरथी गये सनाका खाय ।
बडो शूरमा यहु लाखनि है ❋ नाती बेनचक्कवै क्यार ॥
है यहु बेटा रतीभानको ❋ यहु मारेते मरि है नाहिं ।
भुरुही हथिनी आगे बाढिगै ❋ आदि भयंकर दियो हटाय
सोचैं पृथीराज अपने मन ❋ गरुई गाज कनौजी केरि ।
बडी जोरावर यह हथिनी है ❋ हमरो हाथी दियो हटाय ॥
पीठी फेरी पृथीराज ने ❋ हादा गिरे कनौजी राय ।
हाथसे गिरी ढाल लाखानिके ❋ सो चौंडाने लई उठाय ॥
जहँ मुर्चापर उदैसिंह थे ❋ तहँपर गयो चौंडिया राय ।
चौंडा बोल्यो हँसि ऊदनि ते ❋ ऊदनि देखौ दृष्टि पसारि ॥
लाये थाती जो कनउजते ❋ सो तुम रणमें दई गँवाय ।
लाश पडी लाखनि रानाकी ❋ सो तुम जाय लेउ उठवाय ॥
काहू लूटी छुरी कटारी ❋ काहू लुटी बैंजनी पाग ।
हम लै आये गैंडावाली ❋ सो तुम देखि लेउ पहिचानि
देखि ढाल ऊदनि पहिचानी ❋ अपनो घोडा दियो बढाय ।
जायक देखो जब लाखनिको ❋ ऊदनि छाँडि दई डिंडकार
हाय बिधाता यह कैसी भइ ❋ हमते बिछुरो मित्र हमार ।
देखि न पाये मरती बिरिया ❋ मारे गये कनौजी राय ॥
अब कहँ मिलिहौ लाखनिराना ❋ सो तौ हमहिं देउ बतलाय
बचन बँधे हमरे सँग आये ❋ यहँपर दीन्हें प्राण गँवाय ॥
माता मिलि है ना देवैसी ❋ भाइ न मिलै बीर मलिखान ।

मित्र कनौजी अस मिलि है ना ❋ चाहै सात धरौं औंतार॥
दिया बुझाय गयो कनउजको ❋ अब हम देहैं कौन जवाब।
हमते पुछि हैं रानी तिलका ❋ पुछि हैं हमहिं कुसुमदे रानि
कुशल बताय देउ रानाकी ❋ तब हम करि हैं कौन उपाय।
मुख दिखलैबो भारी परि है ❋ क्या जैचँदको दिहौं जवाब॥
कहि आये थे हम तिलकाते ❋ पहिले मरैं उदैसिंह राय ।
बात हमारी झूँठी ह्वैगइ ❋ हमरे जीवन को धिरकार॥
सराके ठाढे ऊदनि रोवैं ❋ लैलै नाम ब्यलमदे क्यार ।
याही दिनको तुम उपजी थी ❋ तीनों दीपक दिये बुझाय ॥
दिल्ली कनउज औ महुबेका ❋ तुमने दीन्हों दिया बुझाय ।
आभा बोली तब बेलाकी ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
लिखी बिधाताकी मेटै को ❋ जो कछु कर्मलिखी सो होय।
गढ दिल्लीते औ महुबेलौं ❋ ह्वै हैं सबै सुहागिनि राँड ॥
अब तुम रोवत हौ काहेको ❋ काहे भरम गँवायो आय ।
सुनतै चलि भये ऊदनि तहँते ❋ अपनोमरणठानित्यहिकाल
चौंडा ब्राह्मण हमको मारै ❋ हम बैकुंठ धामको जायँ ।
सोचि समझि यह बच ऊदनिने ❋ अपनोघोडादियोबढाय
ऊदनि ललकारो चौंडाको ❋ ब्राह्मण खबरदार ह्वै जाउ ।
हम तुम खल रणखेतन में ❋ दुइमें एकु आँकु रहि जाय ॥
आजु अखाडेमें बरनी है ❋ चौंडा खेलौ जूझ अघाय ।
इतनी सुनतै चौंडा ब्राह्मण ❋ अपनो हाथी दियो बढाय ॥
बोल्यो चौंडा तब ऊदनिते ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ।
सम्हरोऊदनि तुम घोडापर ❋ यह कहि लीन्हीं लाल कमान
तीर निकारि लियो तरकसते ❋ सो ऊदनि पर दियो चलाय
घोडा बेंदुला दाहिने होइ गयो ❋ कैबर निकरि गयो वा पार॥

साँग उठाई तब चौंडाने ❋ सो ऊदनिपर दई चलाय।
चोट बचाय लई ऊदनिने ❋ नीचे साँग गिरी अरराय॥
भाला मारो तब चौंडाने ❋ सोऊ ऊदनि गये बचाय।
सोचे ऊदनि तब अपने मन ❋ हमने मरन करो अख्त्यार
फिरि क्यों वृथा लडत चौंडाते ❋ यह मन सोचि उदैसिंह राय
ऐंड लगाई रसबेंदुलके ❋ औ हौदापर उरके जाय॥
ढालकि औझड ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय।
हौदा मुडिया भौ चौंडाको ❋ चौंडा गयो सनाका खाय॥
खैंचि शिरोही लइ चौंडा नब ❋ लैकै रामचन्द्रको नाम।
करो जडाका बघ ऊदनि पर ❋ ऊदनि दीन्हीं ढाल अडाय
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❋ सोने फूल गिरे झहनाय।
शीश काटि लौ तब ऊदनिको ❋ ऊदनि स्वर्गलोकको जायँ॥
देखि हाल यह इन्दल बोले ❋ औ आल्हाते लगे बतान
काहे दादा यह कैसी भइ ❋ मारे गये उदैसिंह राय॥
मार्‍यो चाचै यहि चौंडाने ❋ ताको देउ जानते मारि।
हमरी बरनीको नाहीं है ❋ नहिं करिदेतिउँ खंडा चारि
सुनतै गुस्सा ह्वइ आल्हाने ❋ अपनो हाथी दियो बढाय।
इक ललकार दईचौंडाको ❋ चौंडा खबरदार ह्वइजाउ॥
हाथ बढायो तब चौंडाने ❋ करम लान्हीं लाल कमान।
कैबर छांडि दियो समुहेपर ❋ आल्हा लीन्हीं चोट बचाय
साँग उठाई तब चौंडाने ❋ सो आल्हापर दई चलाय।
चोट बचाय लई आल्हाने ❋ चौंडा खैंचि लई तलवारि॥
चोट चलाय दई आल्हापर ❋ आल्हा दीन्हीं ढाल अडाय
तीनि शिरोही चौंडा मारी ❋ आल्हा लैगे चोट बचाय।
टूटि शिरोही गइ चौंडाकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय

हाथी बढायो तब आल्हाने ❁ औ अपने मन कियो बिचार
है यहु जालिम चौंडा ब्राह्मण ❁ द्रोणाचारजको औतार ।
गिरि है रुधिर बूँद धरतीपर ❁ दुसरो चौंडा होय तयार ॥
बाँह पकरिकै तब चौंडाकी ❁ त्यहि हौदाते लियो उतारि
मींजि मींजिकै चौंडै मार्यो ❁ देखो हाल पिथौरा राय ॥
सोच आयगो पृथीराजको ❁ मारो गयो चौंडिया राय ।
बडो शूरमा यह मारो गयो ❁ को गाढेमें ऐहै काम ॥
हाय बिधाता यह कसी भइ ❁ कोउ न रह्यो शूर सरदार ।
हाथी बढायो पृथीराज तब ❁ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
पृथीराज बोले आल्हाते ❁ अब तुम खबरदार ह्वै जाउ
सम्हारिकै बैठो तुम हौदामें ❁ तुम्हरो काल पहूँचो आय
इतनी सुनते नुनि आल्हाने ❁ समुहे छाती दई अडाय ।
घुंडी खोलि दई आल्हा जब ❁ पिरथी लीन्हीं लाल कमान
तीर चलायो पृथीराजने ❁ लागो तीर भुजामें जाय ।
लगत तीरके भुजदण्डनते ❁ निकसी तुरत दूधकी धार ॥
देखि हाल यह पृथीराज तब ❁ अपनो हाथी दियो हटाय ।
मोह आइगो नुनि आल्हाको । मलिमलि हाथ बहुत पछितायँ ॥
अपने मनमें हम जानी थी ❁ हमरे अमर उदैसिंह राय ।
जो हम जनते हम अम्मर हैं ❁ काहे मरत लहुरवा भाय ॥
खोली साँकल तब आल्हाने ❁ पचशावदको दई गहाय ।
फेरी साँकल तब हाथीने ❁ क्षत्रिन काटि करो खरिहान
जब सुधि आई बघ ऊदनिकी ❁ आल्हा गये क्रोधमें छाय ।
खड्ग दई थी जो देवीने ❁ सो आल्हाने लई निकारि ॥
जहँलग आभा परी खडगकी ❁ क्षत्री भये शीशते हीन ।
शीश उतारिगे सब शत्रुनके ❁ रहिगे चन्दभाट पृथीराज ॥

ये दोनों थे वृक्ष ओट में ❋ तौलौं गोरख पहुँचे आय ।
हाथ पकारिकै तब आल्हाको ❋ गुरु गोरखजी लगे बतान॥
बेटा तजिदेउ अब गुस्सा तुम ❋ अपनी म्यान करो तलवारि
खड्गम्यानमेंकरिआल्हातब ❋ गुरु गोरखको कियो प्रणाम
समुहे आये पृथीराज जब ❋ देखत आल्हा गये रिसाय ।
नाश करि दियो इन भारतको ❋ कीन्ह्योंनाश क्षत्रियन क्यार
चारिहु ओरको आल्हा देखो ❋ कोऊ शूर न परो दिखाय ।
लोथैं डारीं तहँ लोथिनपर ❋ चहुँदिशि देखि परा सुनसान
मारनहित तब पृथीराजके ❋ आल्हा खाँडा लियोउठाय ।
हाथ पकारि लौ तब गोरखने ❋ आल्हा मानौ बात हमारि॥
छोंडि देउ तुम पृथीराजको ❋ बनको चलौ हमारे साथ ।
धरि दौ खाँडा तब आल्हाने ❋ पृथीराजपै गै नागिचाय ॥
लील छुवाय दियो आँखिनमें ❋ अपनो करिकै दौ लौटाय ।
खबरि पहुँचि गइगढमहुबेमें ❋ सब कटि मरे सूर सरदार॥
करत बिलाप चलीं रानी सब ❋ समुहे इन्दल परे दिखाय ।
बोली सुनवाँ तब इन्दलते ❋ रणको हाल देउ बतलाय ॥
आल्हा ऊदनि को देखो कहुँ ❋ तौ तुम हमहिं देउ बतलाय।
यहसुनिआल्हाकहिइन्दलते ❋ तिरिया लेत कंतको नाम ॥
राज छोंडिकै तुम महुबे को ❋ बनको चलौ हमारे साथ ।
बोले इन्दल तब सुनवाँते ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं॥
समुहे दादा हमरे ठाढे ❋ तुमने लियो कंतको नाम ।
राख समेटि दई तुरते तहँ ❋ इन्दल चौरा दियो बनाय॥
कूदि बछेरा पर चढि बैठे ❋ औ आल्हा सँग भये तयार।
चालिभै आल्हा कजरीबनको ❋ लटकति चली सुनमँदे रानि
पूँछ काटि दइ तब हाथीकी ❋ सुनवाँ गिरी भूमिपर जाय ।

आल्हा चले गये कजरी बन ❀ सुनवाँ जरी कुंडमें जाय ॥
फुलवाजरिगइ औ रानीसब ❀ अपने दीन्हें प्राण गँवाय ।
मल्हना चलिभइ पारस लैकै ❀ सागर होम दियो करवाय ॥
करिकै पूजा वा पारस की ❀ बोली हाथ जोरि महरानि।
चन्द्रवंश में जो कोउ होवै ❀ महुबे आय लेय अवतार॥
ता घर ऐयो तुम पूजन हित ❀ नाहीं तुमहिं औरते काम ।
यह कहि पारस पत्थर लैकै ❀ सो सागरमें दियो सेराय॥
लंघन करिकै परिमालै ने ❀ दुखते दीन्हें प्राण गँवाय ।
सती ह्वइ गई मल्हना रानी ❀ महुबे दीपक गयो बुझाय ॥
आल्ह खड यहु पूरो ह्वइ गो ❀ रहि गो एक रामको नाम ।
भूल चूक ह्वइहै यामें कछु ❀ क्षमिहैं चूक सुजनगुण धाम
पढि प्रसन्न ह्वइहैं सज्जनजन ❀ निन्दा करि हैं क्रूर अजान
आल्हखंड असली बातें सब ❀ हमनेलिखी सुमिरि हनुमान
आल्हा गावौ समय पाय तुम ❀ नितउठि नाम लेउभगवान
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीतारामक्यार धरि ध्यान

इति बेलाके सती होनेकी लडाई एवं
आल्हखण्ड समाप्त ।

श्रीः ।

अथ आल्हखंड कवितावली ।

इस आल्हखंड कवितावलीमें आल्हखंड विषयक कविता लिखी गई है, अर्थात् आल्हखंडमें कहने योग्य कवित्त, सवैया कुंडालिया, सौरनी आदि लिखी हैं. जहाँ जो उचित समझे उसको वहाँपर उच्चारण करे यही नियम है ।

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पाँच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

कवित्त–सिद्धिके सदन गजवदन विशाल तन, दरश कियेते वेगि हरत कलेशको । अरुण परागको ललाटमें तिलक सोहै, बुद्धिके निधान रूप तेज ज्यों दिनेशको ॥ मगल करण भव हरण शरण गये, उदित प्रभाव जग विदित सुरेशको । जेते शुभ कार्य तामें पूजिये प्रथम ताहि, ऐसो जगवदन सुनंदन महेशको ॥ २ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

जय जय गणनायक, जयति विनायक, जनसुखदायक लंबोदर ।
जय जयति कृपाला, दीनदयाला, रूप विशाला, शशि शेखर ॥
जय जय भगवंता, जयति अनंता, जय इकदंता नागवदन् ।
जय गिरिजा नंदन, त्रिभुवन वंदन, दुष्ट निकंदन बुद्धि मदन् ॥
जय मूषककेतू, कृपानिकेतू, भव सरिसेतू तव लीला ।
जय विद्यासागर, त्रिपुर उजागर सब गुण आगर शुभ शीला
जय विघ्नविनाशक, बुद्धि प्रकाशक, शक्ति उपासक सब लायक
शिवते नहिं हारे, बहु भट मारे, शिवा पियारे वरदायक ॥ ३ ॥

छन्द चौपदी ।

जय त्रिभुवन वंदनि, सुर उर चंदनि, दुष्ट निकंदनि सदा जये ।

मम विपति विभंजनि, खलदल गंजनि, जन मनरंजनि कृ-
पामये ॥ जय जय जगजननी, भवभयहरणी, जग विस्तरणी
शिववामा । जय विषय निवारिणि, कलिमल हारिणि, अधम
उधारिणि सुखधामा ॥ ४ ॥

सवैया ।

हो वरदानि अनुग्रह खानि, सुनी यह वान भवानि तिहारी।
द्वै कर तीव्र गदा धरि ज्यों, करती सब दासनकी रखवारी ॥
त्यों करिये हमरी रखवारि, दया उर धारि सुनो करतारी ।
केवल है अवलम्ब तुहीं, जगदम्ब बिलंब कहा मम बारी५॥

कुंडलिया–मनमें धीरज बाँधिकै, कीजै जप तप दान ।
लावौ मन समुझायकै, पदसरोजका ध्यान ॥
पद सरोजका ध्यान, मान मन वचन हमारा ।
भवसागर नहिं अंत कृष्णका लेय सहारा ॥
नारायण धरि ध्यान, अरे मन चेत पियारा ।
भजै नहीं हरि नाम, मूढ डूबै मँझधारा ॥ ६ ॥

सवैया ।

जय जगवंदन जय व्रजचदन, जय नँदनंदन जय गिरिधारी।
जय असुरारि महादुख हारि, सदा सुखकारि सुकुंजविहारी॥
जय जगपालक बुद्धि प्रकाशक, संत उबारक कृष्ण मुरारी ।
जय प्रभु गोविंद दीनको संकट, काटि सदा करिये रखवारी

कुंडलिया–जगमें छल बल छांडिकै, निश्चय भजिये राम ।
यमदूतोंका भय मिटै, सब सुधरैंगे काम ॥
सब सुधरैंगे काम, भजन विन नहीं गुजारा ।
क्या सोवै सुखनींद, काल शिरपै ललकारा ॥
नारायण संसार रामगुण गावो प्यारे ।
सुमिरि सुमिरि हरिचरण होय सुख चित्त तुम्हारे८

सवैया।

दीनदयालु कहावत हौ तहि, नामकी लाज करौ रघुवीरा।
नाम रटौं तुम्हरो हियमें नित, माँगत हौं तुव भक्ति गँभीरा॥
भक्तनके दुख दूरि दुरावत, ताते रटौं धरिकै मन धीरा।
माथ नवाय करौं विनती प्रभु, वेगि हरौ हमरी सब पीरा॥९॥
मैं सुमिरौं तुम्हरे पदपंकज, वेगि विनय सुनिये रघुनाथा।
मेरे तो एक तुम्हीं प्रभु हौ सब, काह बनाय लिखौं बहु गाथा
स्वारथ साथ सबै नर देत, न देत कोऊ परमारथ साथा।
दीन पुकार करै रघुनन्दन, वेगि करौ जन जानि सनाथा॥१०
रामको नाम बडो जगमें सोइ, रामको नाम रटैं नर नारी।
रामके नाम तरी शबरी बहु, तारे अजामिलसे खल भारी॥
रामको नाम लियो हनुमान, हते बहु निश्चर लंक मँझारी।
प्रेमते नेमते नाम रटौ नित, रामको नाम बडो हितकारी॥११॥
श्रीरघुनाथ सियावरको शिर, नाय कवीन्द्रनको शिर नावौं।
पूत प्रभंजनको हनुमन्त, प्रभूत बली सब भांति मनावौं।
ध्यावौं सदा गुरुके पद पंकज, शंभु पदांबुजमें लव लावौं।
क्षत्रिन भूषण शत्रु निपूदन, भारत शूरनके गुण गावौं॥१२॥
कुंडलिया-मन मेरे तू शोच ले, भूतल है दरबार।
अबके चूके ठौर ना, मन होवैगा ख्वार॥
मन होवैगा ख्वार पार नहिं होगी नैया।
मात पिता सुत नारि विपतिमें कोइ न भैया॥
नारायण संसार कोई नहिं धीर धरैया।
भज ले सीताराम नित्य जो पीर हरैया॥ १३॥

सवैया।

जग कोऊ बनावत ऊँचे अटा, घन घोर घटा लगे तम्बू कनातैं
पुनि तात तिया सुत मातके ख्याल फँसे जगजालघनबहु घातैं

अपने मनके सब धाम रचे, नहिं अन्त समय सँग एकहु जातैं
इक रामके नाम विना सुमिरे, जगमें धिरकार सबै यह बातैं

शिवविनय ।

भाल विशाल त्रिपुंड्र विराजत, मस्तक एक कला शशि सोहै
दीनदयालु कृपालु विभो दुख, दोष दुरावत ताप विमोहै ॥
पार न पावत वेद कभू, महिमा तुम्हरी कहि पावत को है ।
मुंडन माल गले उर ब्याल, रटो शिवशंकर पालत जो है ॥
श्रीगिरिजापतिको बिनवों, बिनवों पुनि मैं गिरिजेश दुलारो
अंजनि पुत्र बली हनुमान, तुही सब भाँतिनसों रखवारो ॥
हर्षि हिये बिनवों सब देवन, भक्तन कष्ट सदा निरवारो ।
मैं मतिमन्द यथामतिसों,सबके हित गावत वीर पँवारो १६॥
जाहि मनाय बनाय प्रपंच, विरंचि रच्यो विरच्यो जगतीको
विष्णु करे प्रतिपालन लालन, पाय सहाय अलक्ष्य गतीको
शंकर सृष्टि सँहारत ता बल, फर्क न आवत एक रतीको ।
ध्यान करो तेहि सारसतीको, उदारमती शिरी पारबतीको॥

सवैया मत्तगयन्द ।

शुंभ निशुंभ विनाशिनि विन्ध्य,निवासिनि श्रीगिरिराजकुमारी॥
देव विपत्ति परी जबहीं, तबहीं तुम आनि तहाँ निरवारी ॥
त्यों लखिकै हमरो अति संकट, वेगि हरो गिरिनाथ पियारी
केवल है अवलंब तुहीं, जगदंब विलंब कहा मम वारी १८॥

कवित्त ।

रामसों न धीर हनुमानसों न वीर अरु, बालिसों लड़ैया नहिं क्रोधी भृगुरामसों।भीषमसों पूत ना सपूत भागीरथ सम, भानुसों न तेजमान रूप चारु कामसों ॥ दानी बलि करण न सत्यशील हरिचन्दशिवसों न योगी नतो भोगी घनश्यामसों

भाईसों न भरत न वरत एकादशीसों, गंगासों न तीरथ न मंत्र रामनामसों ॥ १९॥

सवैया ।

हे हनुमन्त अनन्त बली जन, आपनकेरि विनय उर धारहु
मोह मदादि विकार महातम, शीघ्र कृपा करिकै निरवारहु॥
दासकि आश दया करि सारहु, आनि परे सोइ संकट टारहु
आरत दीन पुकारत हौं, जनको भवसागर पार उतारहु॥२०
नन्द यशोमतिके पद ध्याय, मनाय हिये महँ नन्द दुलारो।
दीनदयाल दयानिधि है, जिन संकटमें प्रहलाद उबारो ॥
भक्तनपै जब कष्ट परो, तबहीं प्रभु ताहि तहाँ निरवारो।
मैं मतिमन्द यथामतिसों, सबके हित गावत वीर पँवारो ॥
नन्द यशोमतिको सुमिरौं, सुमिरौं पुनि मैं पद कृष्णमुरारी
ध्यान धरौं नँदनन्दनको जिन, भक्तनकी विपदा निरवारी
वेगि हरौ हमरे सब संकट, दास विनय सुनिये गिरिधारी।
गावत हौं गुण वीरनके प्रभु, पार करौ यह नाव हमारी॥२२
जो जग जन्म न होत उदय कर, तो अस को करतो प्रभुताई
अपने बल साहस तेब त ऊदनि, चहूँ दिशि जीति लियो बरियाई
ब्याह किये सब भाइनके अरु, पाइ सभा मर्याद बडाई।
राजन आपके पुण्य प्रतापसे, छाय रही जगमें ठकुराई॥२३॥
जोगी हैं पाँच प्रवीन बडे, जनु पाँचहु देव जुरे समुदाई।
अंग विभूति गले अलफी, अरु कानन कुंडलकी छबि छाई॥
रूप अनूप दियो करतार, न देखी कहूँ अस सुन्दरताई।
दर्शन योग्य हैं साधु सबै मनु पाँचहु तत्त्व मिले इकठाई ॥

१ माडौकी लडाईमें पहले तालहन, आल्हा मालिखे ऊदानि, ढेबा ये पाँचों योगी बनकर माडौमें भेद लेने गये थे

मोती जवाहिर आनि दिये भरि, थार तिन्हें कुशला महरानी
देखिके ऊदनि बोलन लाग ये, कंकड हैं हम ना पहिचानी॥
मेरे नहीं कछु कामके हैं, हमरे गुरुकी है यही इक बानी।
देहु हमें गळहार उतारि, रहै तुम्हरी हमपै ये निशानी॥२५॥
वीरनमाहिं शिरोमणिको, जिनके यशको सब ही जग गावैं।
देवन माहिं वही शिरताज, जिन्हैं सब देव मुनीश मनावैं॥
भक्तशिरोमणि कौन कहौ, हियते नित जो निज इष्टहि ध्यावैं
साधन भक्ति वही जगमें, जन जाते सदाहि परंपद पावैं२६॥
वीरनमाहिं रहे रणधीर जू, भीष्मपितामह और कन्हैया।
देवन मध्य गणेश भये तिहुँ लोकमें हैं सबके पुजवैया॥
भक्त शिरोमणि भे प्रहलाद, नहीं इन सम कोउ राम जपैया।
लालजू प्रेम पवित्र है भक्ति, यही भवसागर पार करैया२७॥

कवित्त ।

चुनि चुनि चुनिन्दे ज्वान नाहर लडैया जेइ, तिनको सजाय पुनि धावा करि घेरिलेव। खूनी ते मतंग मतवाले दंतवाले गज, तिन्हें लय जाय रिपु दलहिं बघेरि लेव॥ कट्टर जे घोडे टाप फेंकत उटक्कर हैं, जुलमी चढैया असवारनको टेरि लेव। शत्रुनको काटि मुंड रुड खंड खंड करि, बाकी फौज आगे करि ऊख सम पेरिलेव॥ २८॥ लपकि लपकि ललकारकै कृपान झारि घन सम गर्जि तर्जि वर्जि रिपु मारैंगे। घटा घोर युद्ध करि क्रुद्ध अरिदल बीच, मर्दि मींसि काटि शीश लोथ चीथ डारैंगे। पकरि पछारि महि मल्लनके कल्ला फारि, हेरि हेरि घेरि घेरि उदर बिदारैंगे। टूक टूक ह्वैहैं ध्वज तऊ ना दिखैहैं पीठि, असल कनौजी पग पाछे नाहिं टारैंगे॥ २९॥

१ जंबैकी रानी कुशलाने मोती दिये उस समयका यह कवित्त है।

२ ये दो कवित्त जयचंदके वचन हैं।

कुंडलिया—सुखसे विपदा है भली, जो थोड़े दिन होय।
इष्ट मित्र अरु बन्धुगण, जानि परत सबकोय॥
जानि परत सबकोय बात नाहिं पूँछे कोई।
जब संकट टरि जाय मित्र होवै रिपु सोई॥
नारायण धरि ध्यान आप मनको समुझावै।
कछु दिनमें सुख होय सदा नाहिं विपति सतावै ३० ॥

कवित्त।

योधा कौन जगमें जो सन्मुख लड़ैगो आय, सामने परै जो आय मेरी तलवारके। मारिकै चिथार डारौं शानहू निकारि डारौं, नाहर लडैया जेइ शूर सरदारके॥ खंड खंड करिकै भू लोथिनते पाटि डारौं, नदिया बहाय डारौं रुधिरकी धारके। कहत पुकार रण मध्य ललकार मारौं, भूपतिको मारौं, अब युद्धमें पछारके॥ ३१ ॥

सवैया।

योगी यती तपसी न रहे, न रहे नृप चक्रवती धनुधारी।
नाहिं रहे जग शूर न वीर महान बली गुणि पण्डित भारी॥
ज्ञानी रु ध्यानी रहे न इहाँ, न रहे धनवान न दीन दुखारी
ईशहु देह धरे न रहे नर, नाहिं रहे तो कहा दुख भारी॥ ३२ ॥

कवित्त।

दाता कर्ण विक्रम मान्धाता औ दिलीप पृथी जिनके सुयश द्वीप द्वीप लग छाये हैं। बालिसों बलवान् कौन भयो है धराके बीच, रावण समान को प्रतापी जग जाये हैं॥ बाणकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे, जाहि यश कृष्ण-चन्द्र भारत में गाये हैं। ऐसे ऐसे शूर वीर रचे काल पृथिवी पै फेर चकचूर करि धूरिमें मिलाये हैं॥ ३३ ॥

सवैया ।

युद्धको साज बनो चहुँ ओरसे, बीर बली रणधीर सयाने ।
बादलसों दल साजि चढे, तेहि औसरकी छबि कौन बखाने
शूर महा बलवान सबै, जिनको लखि कालहु हारि पराने ।
सुन्दर साज कहा बरणौं, तेहि सैन्यको कायर देखि डराने॥
कुंडलिया--रणमें शायर दश भले, कायर भल न पचास ।
शायर रण सन्मुख लडैं, कायर प्राणकि आस ॥
कायर प्राणकि आस भागि रणते वे जावैं ।
आपु हँसावैं लोग जगतमें नाम धरावैं ॥
कहि गिरधर कविराय बात चारौ युग जाहिर ।
शायर भले हैं पाँच संग सौ भले न कायर ३५॥

सवैया ।

जो दश पुत्र जनै गदही, तो कहा दश पुत्र जने सुख पावै ।
लादत लादत भार सबी विधि, आयु घटै तबहीं मरिजावै॥
सिंहिनि एकहि पुत्र जनै, वनमें सुखसों सब आयु बितावै ।
पूत सपूत सदा सुख देत, कपूत सदा कुल दाग लगावै ३६॥
कुंडालिया--साईं ऐसे समरमें, जो बाचिजावैं प्रान ।
छाँडि चाकरी घर रहैं, देन न आवैं जान ॥
देन न आवैं जान मान चाहै नहिं होई ।
भीख मांगिकै खायँ नोकरी करैं न सोई ॥
नारायण द्विज कहै प्राण लै चले बचाई ।
रण दइ पीठि दिखाइ भागि गये कायर साईं ३७ ॥
यारौ रणमें आयकै, कीजै युद्ध अघाय ।
बैरिनको हनि डारिये, आगे धरिये पायँ ॥
आगे धरिये पायँ मोह चितमें नहिं कीजे ।
रणमें करि संग्राम पाँव पाछू नहिं दीजे ॥

नारायण करि ध्यान शूरता यही बिचारो ॥
रणते कायर भजै शूर भागैं नहिं यारो ॥ ६८ ॥

सवैया ।

सूर्य प्रकाश करै जबहीं, तब चन्द्र प्रकाश लखाय परै ना ।
शब्द सुनाय परै हरिको तब, मत्त गयद दिखाय परै ना ॥
शूर सिंगार करै रणको, तब नारि सिंगारपै ध्यान धरै ना ।
बात यही समरत्थन कोरि कि, भाभी टरै पर बात टरै ना ३९
कुंडलिया--मारो अपने क्रोधको, निश्चय शत्रू ठान ।
ऐसी समता धारि ल, होवे मित्र जहान ॥
होवै मित्र जहान कान सब मार भारी ।
करि आदर सत्कार बात पूछग सारी ॥
नारायण धारि ध्यान बोल सबस प्रिय बैना ।
होउ सिन्धु भव पार पाय जगमें सुख चैना ॥ ४० ॥

सवैया ।

लाज गई बछराजक साथ तल्वारि गई मलिखान अकेले ।
काढिकै तेग फिरो दलमें, पृथीराजकी फौजन मारिकै ठेले ।
लोहूके नारे पनारे चले, मानों रंगरेज कुसुम्भ सनेले ।
रानी कह मलिखानकी नारि, कि आवत कंत वसंतसे खेले ४१
कुंडलिया--साई पुर पाला परो, आसमानते आय ।
पंगु अन्धको छाँडिकै, पुरजन चले बराय ॥
पुरजन चल बराय अन्ध यक मतो विचारो ।
धरि पगाको पीठि दीठि वाकी पगु धारो ॥
काह गिरधर कविराय मतेसों चलिये भाई ।
विना मतका राज्य गयो रावणको साइ ॥ ४२ ॥
साइ समय न चूकिये खेलि शत्रूसों सार ।
दाँव परे नाहिं चूकिये, तुरत डारिये मार ॥

तुरत डारियो मार नरद काची कारि दीजै ।
काची होय तो होय जीति जगमें यश लीजै ॥
कहि गिरधर कविराय युगन ऐसी चालि आई ।
सौ सौ सौहैं खाय शत्रुको मारिये साईं ॥ ४६ ॥
हिरना बिचलो सिंहसे, औझर खुरी चलाय ॥
झारखंड झीने परे, सिंहा चले बराय ॥
सिंहा चले बराय समय समरत्थ विचारो ।
कुलै कालिमें कानि हँसो हँसिकै पग डारो ॥
कहि गिरधर कविराय हमहिं याही वन रहना ।
आज गइ कर जायँ काल्हि हम हैं कै हिरना ॥ ४४ ॥
धोखे दाडिमके सुआ गयो नारियल खान ।
खम खाई पाई सजा, तब लाग्यो पछितान ॥
तब लाग्यो पछितान बुद्धि अपनीको रोयो ।
निर्गुनियनके साथ बैठि गुन अपनो खोयो ॥
कहि गिरधर कविराय कहूँ जैयो ना ओखे ।
गई तडाका टूटि चोंच दाडिमके धोखे ॥ ४९ ॥

सवैया ।

जो घट माटीको फूटि गयो फिर होत कहा तिहि लाखके लाखे
शत्रुन दाँव चलाय दियो फिरि होत कहा बल पौरुष भाखे॥
धीरज छूटि गयो रणमें जब, होत कहा तब शस्त्रन राखे ॥
बात गई जगमें ज्यहिकी, फिरि होत कहातन प्राणके राखे॥
कुंडालिया- जगमें सारी सोध ले, हित अनहितकी बात
बिना भक्ति भगवानकी औसर बीता जात ।
औसर बीता जात खात है भूलिकै धोखा ।
बिन चेते निजरूप होय ना तेरी मोखा ॥

नारायण मन समुझि देख दुख सुख अरु रोषा ।
धर्म सनातन त्यागि धर मत शिरपै दोषा ॥ ४७ ॥

सवैया ।

लाखन भूपनम इक सुन्दर, रूप मणी लगि काम लजावै ।
लाखनकी गिनती दलम अरु, लाखन शूरनमें चलि जावै॥
लाखन वीर हन क्षणमें लखि, ताहि भगै रिपु प्राण बचावै ।
ऐसो महा बलवान सो लाखनि, लाखनमैंतलवारि चलावै४८

कुंडलिया–शुद्ध नाम करतारको, लीजै बारंबार ।
भवसागरको भय मिटै, होव नया पार ॥
होवै नैया पार धारसों पार लँघावै ।
कारि आतमका ध्यान आपमें आप समावै ॥
नारायण धारि ध्यान मना तुझको समुझावै ।
नरतन हीरा जन्म मूढ तू व्यर्थ गवावै ॥ ४९ ॥

सवैया ।

पुण्य पताप प्रभा पलटै, विचरैं खल नीच निशाचर राई ।
भक्तनकों दुख भूरि मिलै, अरु पापके भार धरा गरुआई ॥
धम रु कम घटै जबहीं, तबहीं जग बाजत द्वेष बधाई ।
भार उतारनको जगम, तबहीं प्रगटै भुबि श्रीयदुराई ॥५०॥

कुंडलिया–सबकी बाजी लगि रही, धर्मराजसों जान ।
लकै फाँसी हाथमें, यम घाटग आन ॥
यम घोटग आन जान तेरी भरमावैं ।
मात पिता सुत नारि बन्धु कोइ पास न आवैं ॥
नारायण धरु ध्यान बधा यमपुरको जावै ।
तब रोवै पछिताय नहीं कछु पार बसावै ॥ ५१ ॥

सवैया ।

ज्ञान घटै ठग चोरकी संगति, रोष घटै मनके समुझाये ।
मान घटै नित माँगनसे, अरु नीर घटै ऋतु ग्रीषम आये ॥
पाप घटै कछु पुण्य किये अरु, रोग घटै कछु औषधि खाये
नारि प्रसंगसे जोर घटै, यम त्रास घटै हरिके गुण गाये८२॥
कुंडलिया— साईं अपने भाइको, कबँहु न दीजै त्रास ।
पलक ओट नहिं कीजिये, सदा राखिये पास ॥
सदा राखिये पास त्रास कबहूँ नहिं दीजै ।
त्रास दियो लंकेश तासुकी गति सुनि लीजै ।
कहि गिरधर कविराय रामसों मिलिगयो जाई ॥
पाय बिभीषण राज लंकपति बाजो साईं ॥ ८३ ॥

सवैया ।

कैटभसे नरकासुरसे अरु, भीषम द्रोण महायश खेवा ।
बालि बली बलि बाण दधीचि, ययाति दिलीपहुसे बलसेवा।
रावण और युधिष्ठिर भारत, भीम महाबलवान सुदेवा ।
अन्त समय उबरे न कोऊ,क्षणमाहिं भये सब काल कलेवा८४

युद्ध आज्ञा भुजंग प्र० ।

अरे आ सिंदूरा बजाओ बजाओ।नगाडे पै चोबैं लगाओ लगाओ ॥ चतुर्वर्ण सेना बुलाओ बुलाओ । ध्वजा औ पताका उडाओ उडाओ ॥ रथी सारथी बीर धाओ सिधाओ।चकाबू रचो शीघ्र सेना सजाओ॥अभी मोरचे जंमाओ जमाओ । जँबूरे सिताबी चलाओ चलाओ ॥ निशाने पै तोपै लगाओ लगाओ । गनीमोंके धुरें उडाओ उडाओ॥ कडाबीनलैबाण दागोदगाओ।उखाडो पछाडो गिराओ भगावो॥कटारी छुरी बाण बरछी सम्हारो। भरो रक्तका सिन्धु खाँडा पखारो । जहाँ शत्रुपाओ तहाँ पीस डारो।पुकारो पृथीराजकी जय पुकारो८५

राग सिंदूरा ।

युद्ध अवनि बीर ठवानि धावत बलशाली ॥ क कं कर धर कृपाण फं फं फेरत सुजान चंचल चपला समान चमक है निराली ॥ गं गं गहि लेत बान खं खं खैंचत कमान दं दं दं देत तान लागत जनु ब्याली ॥ पं प पग फिरत जाय बं बं बरछी चलाय सं स सं सन्सनाय धावत जनु काली ॥ रं रं रण करत यहाँ तं तं तत्काल वहाँ एक छिन अनेक ठौर दीखत रणवाली। युद्ध अवनि वीर ठवानि धावत बलशाली ॥ ९६ ॥

राग काफी ।

लडत सब बीर विनोद भर ।

पिचकारिनसे चलत तमंचा, लालहि लाल करे ।
गोला चलत कुमकुमा मानों, लाल गुलाल भरे ॥
जल सीकरसे तीर चतुर्दिशि, अगणित उमँग परे ।
भये रुधिरमें सकल तरातर, मज्जा मद भरे ॥
बर्छी तेग त्रिशूल भुशुंडी, जो जेहि हाथ परे ।
मार मार कह मारत बहुविधि, तनकी सुधि बिसरे ॥
धुवाँ धार अँधियार दशा दिशि गरदाबाद भरे ।
मच्यो घोर घमसान कौन कित काहु न जान परे ॥९७॥

नाराच-छंद ।

अनेक पागको तजैं भजैं दशा निहारिकै ॥
अनेक वस्त्र हीन शस्त्र भूमिमाहिं डारिकै ॥
अनेक अंग भंग संग साथको बिसारिकै ॥
अनेक भागि जायँ लोकलाजको निवारिकै ॥
अनेक पादुका बिहाय धाय गात मारिकै ॥
अनेक जी बचाय जायँ घास शीश धारिकै ॥

अनेक साधु वेष साजि जात वस्त्र फारिकै ॥
अनेक हाय मार मार प्राण देत हारिकै ॥ ५८ ॥

कवित्त ।

धावहु चतुरंगिनी लै वेगि बलशाली जन, पृथ्वीते नाम पृथ्वीराजको मिटाय दो। गावहु सिंदूरा अरु शंकरादि ऊँचे स्वर तोपनको मारि मारि भूमि उलटाय दो ॥ लावो मम शस्त्र मैं चलौंगो तुम्हारे संग शत्रुको सुयश आज धूरिमें मिलाय दो। दाबहु स्वसेनसे रिपुनको भली प्रकार, दिल्लिहिउजारि बीच धारमें बहाय दो॥५९॥ फूटि गये हीराकी बिकानी कनी हाट हाट, काहू घाटि मोल काहू बाढि मोलको लयो। टूटि गई लंका फूटि मिलिगो बिभीषण आय, रावण समेत वंश नाशवानह्वै गयो। कहै कवि गंग दुर्योधनसे छत्रधारी, तनिकके फूटेते गुमान वाको नैगयो। फूटेते नरद उठि जात बाजी चौसरकी, आपसके फूटे कहो कौनको भलो भयो ॥ ६० ॥

वीररस सवैया ।

राम शरासनते चले तीर, रहे न शरीर हडावड फूटी ।
रावण धीर न पीर गली लखि लैकर खप्पर योगिनि जूटी ।
शोणित छीट छटान परी, तुलसी प्रभु सोहै महा छबि छूटी ।
मानहु मर्कत शैल विशालमें, फैलि रही जनु बीरबहूटी ॥६१॥
गहि मन्दर बन्दर भालु चले, सो मनो उमडे घन सावनके ।
तुलसी उत झुंड प्रचंड झुके, झपटे भट जे सुर दानवके ।
बिरुझे विरदेत जो खेत अडे, न टरे हठि बैर बढावनके ।
रण मारु मची उपरी उपरा, भलेवीर रघूपति रावनके॥६२॥
कीजे न कोप कृपानिधि राम जो, ता गढलंक उठाय मैं लाऊँ
कोउको भय अरु शक न मानिक, रावण रानिपै पानी भराऊँ

लच्छ कहैं रघुराज समच्छ, विपच्छज सो नित सिद्धि चलाऊँ
माथे मरोरि धरौं दशकन्धके, नाथके हाथका पान जो पाऊँ॥
कुंभकरण्ण हन्यो रण राम, दल्यो दशकन्धर कंधर तोरे।
भूषण वंश विभूषण भूषण, तेज प्रताप गरे अरि ओरे।
देव निशान बजावत गावत, धावत गे मन भावत मोरे।
नाचत वानर भालु सबै, तुलसी कहि हारे हहाभय होरे।६४॥
हनुमान हठीलो रँगीलो बली, जेहि मान मथ्यो गढलंकपतीको
लैकर मुन्दर कूदि समुन्दर, शोक हरो जाय सीय सतीको।
लाय पहार दई है सजीवनि, तेज गयो क्षणमें शक्तीको।
तुलसी जन संकट क्यों न कटै, जब ध्यान धरै हनुमानयतीको
बालि बँध्यो बलि राव बँध्यो, करशूलीको शूल कपाल थली है
काम रच्यो जर काल परयो, बंधसेतु धरयो बिष हाल हली है
सिंधु मथ्योकलकाली नथ्योकहि केशवचन्द्र कुचालिचलीहै
रामहुँकी हरी रावण वाम, चहूँ दिशि एक अदृष्ट बली है ६६ ॥
कोशल राजके काज हौं आज, त्रिकूट उपारिके वारिधि बोरौं
द्वौ भुज दंड दै अंड कटाह, चपेटके चोट चटाकके फोरौं ॥
आयसु भंगको जो न डरौं तो, मींजि सभासद शोणित बोरौं
बालिको बालक तौ तुलसी, दशहू मुखकेरणमेंरदतोरौं६७ ॥
तीर कमान गही दलमंडक, मार मची घमसान मचायो
योगिनि रज्जकै भागी भई, शिवशंकर मुंडकै माल लैआयो॥
भीमसमान को युद्ध कियो, कवि जैत कहै जगमें यश पायो।
शाहकेकाजपै शूर लड्यो, शिर टूटिपरयो धड धारुकेधायो ६८
अंजनि तात दई जब लात, गिरयो हहरात न गात सँभारो।
फेरि सचेत उठ्यो रणधीर, भई अति पीर शरीर न टारो।
रावण ताहि प्रशंसि कह्यो अति, है बल पौरुष कीश तिहारो।

देखि हृदय सकुचे हनुमान, न प्रान गयो धिक मान हमारो६९
मंडित जे रविरूप किरीटन, माणिक मोतिनसों झलकारे ।
पूजित फूल सुगन्धनसों नभ, बालनके तनमें महकारे ॥
काहू लचे न लचावत और, न चन्दन ऐसे महा अहकारे ।
ते शिर रावणके रणमें, हनुमान बली चढि लातन मारे॥७०॥
इन्द्रके बज्रस जे न टरे, न टरे हैं जलेशके फाँस प्रहारे ।
शंभु त्रिशूल गह्यो नहिं नेक, न विष्णुके चक्रसों वक्र न हारे ।
ब्रह्मकी शक्ति न शाले हिये, रण आयते रावणके ललकारे ।
काल दपेटन जे न टरे, हनुमान बली ते चपेटन मारे ॥ ७१ ॥
अति कोपसों रोप्यो है पाँव सभा, सब लंक सशंकित शोरमचा
तमके घननादसे वीर प्रचारिकै, हारि निशाचर सैन पचा ।
न टरै पग मेरुहसों गरुओ, सो मनो महि संग विरंचि रचा।
तुलसी सब शूर सराहत हैं, जगमें बलशालि है बालिबचा७२।
तोसों कहौं दशकन्धर रे, रघुवीर विरोध न कीजिये बौरे ।
बालि बली खर दूषण और, अनेक गिरे जेते भीतिमें दौरे।
ऐसोइ हाल भयो त्वहि कौन तो, लै मिलु सीय चहै सुख जौरे
रामके रोष न राखिसकै, तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे७३

कवित्त ।

हनूमाननन्दनप्रभंजनको लंकाबीच, कूदो देखि साहससरा-
सरके सरको। ताल देत जाके काल कालको कराल भयो, छुटि
गे हथ्यार जेकराकरके करको॥ खल [illegible] हीयखलनके हल
हल, दहल [illegible]मलके बराबरक बरको। [illegible] हारि हारि गये अडर
[illegible] हह, [illegible] ढरकेधराधरके [illegible] वारिटारि डारों
कुंभकर्णहिं बिदारि डारों, मारों मेघनादै आजुयोंबल अनन्त
हौं [illegible]पद्माकर त्रिकूटहीको ढाहि डारौं, डारतकरेई यातुधा-

ननको अन्त हौं ॥ अच्छहि निरच्छ कपि रिच्छहि उचारौं इमि,तोत्र तिच्छ तुच्छनको कछुवै न गन्त हौं। डारि जारौं लंकहि उजारि डारौं उपवन, फारि डारौं रावणको तो मैं हनुमंत हौं॥७५॥ सोहैं अंत्र ओढे जे न छोडे शीश संगरके, लंगर लँगूर उच्च ओजके अतंकामें।कहै पदमाकर त्यों हुंकरत फुंकरत, फैलत फुलत फाल बाँधत फलंकामें ॥ आगे रघुवीरके समीरके तनयकै संग,तारी द तडातडके तडके तमंकामें। शंका दै दशाननको हंका दै सबंका वीर, डंका दै विजयको कपि कूदि पऱ्यो लंकामें ॥७६॥ देखि चंडमुंडको प्रचंड उग्र बोली शिवा, अबल अरक्षणकी रक्ष पक्ष पाली हौं । कहैं महाकाली देव कौतुक विलोकौ नभ, चारौं दिग दन्तिवेको आजु दुराताली हौं ॥ फोरि डारौं वसुधा मरोरि डारौं मेरु गिरि, कालचक्र तोरि डारौं आजु मैं बहाली हौं । काली करौं अतिदल सब विकराली करौं, जगभूमि लाली करौं तौ मैं महाकाली हौं ॥ ७७ ॥ लगीसों लगाई लंक खेहनि खराब करौं, मारि करौं मोरनि अहार मार जारेको । सा कवि निधान कान अंगुरीन मूँदि देहौं, सुनि हौं न घोर शोर झिल्ली झनकारेको ॥ भेकनकी भीड सहसानन मिटाय डारौं, मेटि डारौं गरब गरूर घनकारेको । पाऊँ जो पकरि कहूँ जलसों जकरि तन, फीहा फीहा करौं या पपीहा दई मारेको ॥ ७८ ॥ गरदके झुंड ढक्यो मार्तण्ड मण्डल लै, बाने फहराने जब ढिग आनि अरिके। तमकि तमकि तब राजे कर जीलै वीर, बिरझाने खरुझाने जैसे बाघ थरिके॥ मंडन विरचि लीनी घोडनकी बाग दीनी, दौरिकै दरेरे जैसे भादवकी लरिके । जित तित विजली सलाह लगे लहकन, बरसन बाण लगे जैसे बूँद झरिके ॥ ७९ ॥ अभय कठोर

बाणी सुनिकै लखनजूकी, मारिबेको चाही जो सुधारी खल तलवारि । वीर हनुमंत तेहि गरजि इहास कर, झपटि पकरि ग्रीव भूमि लै परे पछारि ॥ पुच्छन लपेटि अरु दंतन दर-दराय, नखन बकोटि चोथि देत महि डारि डारि । उदर बिदारि मारि लुत्थन लुटारि बीर, जैसे मृगराज गजराज डारै फारि फारि॥८०॥नाचि नाचि कूदि कूदि किलकि कि-लकि कपि,उछारि उछारि राहलेत आसमानकी।बलकिबलकि बलु कारि कारि छरि दरि, छरत छरेद भेद कृत गति भानकी॥ रुंडनसौं रुड अरु मुंडनसों मुंड करि, भारी भट झंडन घुमंड मारु घानकी । स्याबसि कहत राम हिये हरषात जात, देखौ वीर लषण लडनि हनुमानकी ॥८१ ॥ आयो आयो आयो सोई वानर बहोरि भयो, शोर चहुँ ओर लंका आये युव-राजके । एक काढे सौंज एक धौज करे कहा है है, पोच भई महाशोझ सुभट समाजके ॥ गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथ करि, मूदे कान यातुधान मानौं गाजे गाजके । सहमि सुखाति बात जातकी सुरति करि, लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेट बाजके ॥ ८२ ॥ लोथिनसे लोहूके प्रवाह चले जहाँ तहाँ, मानहु गिरन मेरु झरना झरत हैं । शोणित सहत घोर कुंजर करारे भारे, कूलते समूह वाजि विटप परत हैं । सुभट शरीर नीर चारी भारी भारी तहाँ, शूरन उछाह कूर कादर डरत हैं । फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेट खात, काक कंक बालक कोलाहल करत हैं ॥ ८३ ॥ दिग्गज दबकि जात शेश शीश अलसात, हलहलात वारिधि घटत द्युति भानुकी । मेरु धसकत कसकत उर रावणको, चलत अवनि छबि छपत कृशानुकी ॥ सुभट सकात दैत्य देखिकै परात मन, राम मुसकात अति पाय निज जानकी । गर्भ गिरि जात शोक सुर वितताल वन, नाक अररात सुनि

हाँक हनुमानकी ॥ ८४ ॥ जाकी बाँकी वीरता सुनत सहमत शूर, जाकी आँच अबहू लसत लंका लाहसी। सोई हनुमान बलवान बाँको बानाइत, जो है यातुधान सेना चले लेत थाहसी ॥ कम्पत अकम्पन सुखाय अतिकाँप काँप, कुंभऊ-करण आय रहो लेत आहसी। देखे गजराज मृगराज ज्यों गरज धायो, वीर रघुवीरको समीर सूनु साहसी ॥ ८५ ॥

इति श्रीआल्हखण्ड कवितावली समाप्त।

श्रीः ।

कविचन्द भाटकृत आल्हखण्डकी भूमिका ।

कविचन्द बरदायी कृत आल्हखंड लिखनेसे पहले कविचन्द भाट कृत आल्हखंडके सत्यासत्यका निर्णय कर लेना परमावश्यक है । परन्तु इस बातका निर्णय करना कठिन ही नहीं बरन् असंभव है, क्योंकि यदि चन्दकृत पृथ्वीराज रासोंको यदि सत्य मान लिया जावे तो आल्हा गानेवालोंका कुल गाना असत्य हो जायगा । यदि आल्हा गानेवालोंका आल्हा सत्य माना जावे तो कविचन्द्र कृत पृथीराज रासोंमेंका आल्हखण्ड पक्षपात युक्त प्रमाणित होता है । यह बात तो सत्य ही है कि जिस राजाके यहाँ जो कवि परिपालित होता है वह कवि उस राजाके पराजयकी बात तो लिखही नहीं सकता जयकी बातको शतगुणा बढाकर लिखता है, इस वाक्यके अनुसार चन्द्रकृत आल्हखंडको पक्षपात युक्त मान लेनेमें आश्चर्यकी बात नहीं है । परंतु इतिहासकार चंद्रकृत पृथ्वीराज रासोंको इस कारण निरंतर सत्य मानते हैं कि वह पुस्तकाकार होकर प्रचलित हुआ साथही इतिहासोंमेंभी पाया जाता है और आल्हा अल्हैतोंकी जबानपर ही रहा । जबसे विक्रमीय संवत् १९२९में फर्रुखाबाद कंप फतेगढमें बंदोबस्तके कलेक्टर मिस्टर सी. ई. इलियट साहब बहादुरने अल्हैतोंसे आल्हखंड लिखवा कर उसका तर्जुमा अँगरेजीमें करके लंडन भेजा और हिंदीमें कम्प फतेगढमें दिल्कुशाप्रेसमें पहली बार छपा तबसे आल्हखंड पुस्तकाकार होकर प्रचलित हुआ, इसमें ५२ गढके राजाओंकी बातें हैं, यह आल्हखंड सच्चा है इसमें तेईस लडाइयाँ, तेईस लडाइयोंसे पृथक् २६ । ५६ । ६४ लडाइयोंवाले आल्हखण्डोंमें जो जो लडाइयाँ सच्ची नहीं हैं, उन झूँठी लडाइयोंके पढने और विचारनेसे बुद्धिमान् जनोंके हृदयमें उनकी झुठाई भासित हो जाती,

है ॥ परन्तु जिन लोगोंके हृदयमें विचार शक्तिका अंकुर ही नहीं जमा उनके लिये तो सब धान बाईस ही पसेरी हैं, उनके विषयमें तो कुछ कहना ही नहीं है ॥

अथ कविचन्द भाट कृत आल्हखण्ड प्रारंभ।

दोहा—कहत चन्द गुण छन्द पढि, क्रोध उदंगल सोइ ॥
चहूँआन चन्देल कुल, कंदल उपज न होइ ॥ १ ॥
चहूँआन पूँछत बगदि, कौन बरस किनि मास ॥
कौन बारको तिथि सुकवि, करौ विचार निवास ॥२॥
ग्यारहसै चालीस इक, जुद्ध अतुल भर होइ ॥
कातिक शुदि बुध त्रोदशी, समर सामिला लोइ॥३॥
आठ सहस असवार सजि, परस्थान नृप कीन ।
पूरब दिशि पर गमन किय, सुआ बचन सुनि लीन४॥

छप्पै ।

समर सिखरि गढ परनि राज दिल्लिय दिशि चल्लिब
पातसाहि सुनि खबरि धांय बिच ही रण मिल्लिब ॥
सकल सिमिटि सामंत चंद कयमास बुद्धिवर ।
लाहिब जुद्ध चहुँआन गहिब पृथीराज अप्पुकर ॥
रजपूत टूट पंचास रण लुट्टिय वर सेना घनिय ।
सहस षष्टि पट्टान पर जीति चल्यो संभारि धनिय५॥

चौपाई ।

राजा दिल्ली दिशि चढि आइब।चूकी राह बहीर सुभाइब ॥
घायल आइ महोबे पानह । हो परिमाल सुनी इह कानह॥६

छंद पद्धरी।

बरनी विवाह चहुँआन रान।जब सुने वचन निज करि प्रमान
जाइब गँभीर भानियो वीर। कंमोद भनी जीती गहीर ॥

रण कटिव पंच हैं हय हजार । जादौं कमोद मनि कटि दुतार ॥
सुलतान पकारिलिये नृपति आइ।रुसमत्त ताप मिटिगये ताइ
जुग्गिनि पुरेश दिशि रतिय पाइ।भूली बहोरि महुबे सुआइ॥
घायल पचास रजपूत संग । दासी सुमंजरी अति अनंग॥
पहुँचे सु महोबे निकट आइ । बरसै सुमेघ बूँदन अघाइ ॥
भये विकल लोग घायल उताप।नृप बागमान चलि गये आप
जहँ महल बने अन्नेकनेक ।कलमलत जोध चाढि चाढि वनेक
बरजियो आय मालीन सोइ ।बोलियो बोल अति क्रोध होइ
गारी सु दीन उभहारि हत्थ । फेंको सु एक पत्थर समत्थ ॥
लाग्यो सु आइ रजपूत शीश ।धायो सु तेग कटि कटि बरीस
दीन्हीं सुँघाय दुहुँ हत्थ सोइ।उडि पऱ्यो मत्थ धरणी सु होइ
भइ कुंक सुनी परिमाल राज । पट्टाइ जोध करि हुकुम साज
चंदेल बैस जाधरा सूर । चौदा सहस्र कलमले शूर ॥
सो लखी जादव चाढि नरेश । सजि गहर बार गोइल अशेश
बरजियो बनाफर जुद्धताइ । क्यों करत बैर चंदेल राइ ॥
पृथीराज लोग घायल गहीर । आई जु थान भाजी बहीर ॥
बैरी जु आइ निज शरण लेहि। बोलिये नहीं जो दुःख देहि ॥
चहुँआन नाहिं आपुको शत्र। तिनपै न राज बाँधिये अस्त्र॥
परिमाल उच्चारिव सुनौ आल्ह । बिन चूक मारि माली कराल

१ यहाँ इस बातपर विचार करना चाहिये कि क्या पचासों रजपूत घायल थे, उनमें कोई बिना घावके न था फिर मालियोंने आकर उनको मना किया फिर गालियाँ दीं और पत्थर भी फेंके ये बातें झूंठ मालूम पडती हैं कि रजपूतोंने कुछ नहीं कहा और मालियोंने इतने काम कर डाले यह पक्षपात नहीं है तो क्या है ? सच्ची बात तो यह है कि वह जनाना बाग होगा उसमें ये लोग जा ठहरे और अपने उद्धत स्वभावके अनुसार गुलगपाडा करने लगे होंगे, तब मालीने मना किया इसपर इन्होंने मालीका शिर काट डाला एवं सर्वत्र ॥

कालिहको आइ पृथीराज शूर। मारि हैं और काहू हजूर ॥
बरजियो बनाफर जुद्धताइ। हरिदास बघेलो विरचि भाइ
आये सुसाजि दरबार शूर। रांनी मल्हना बोली हजूर ॥
तुम हनो जाय इनकी समाज। क्षत्रीन धर्म इन नाहिं राज ॥
कुंचे अवास छज्जे समुद्ध। परिमाल तहाँ बैठे बिरुद्ध ॥
मालिनि पुकार कीन्हीं नवीन। परिमाल फौजपर हुकुम कीन

दोहा- पकारि बाग रजपूत सब, क्रोध जानि परिमाल।
शिर लाग्यो आकाशसों, पायँ लगे पाताल॥८॥

छंद मोतीदाम।

कियो परिमाल हुंकम सुगाजि। चले सब रावत जंगपे साजि
चंदेल बनाफर मुख्य सुशूर। बघेल बगोइ रहैं झकझूर ॥
चले भर जां घर मल्हन सोइ। चले भर जद्दव मद्दव होइ ॥
चल्यो हरिदास बघेल विलिट्ट। सुचारिय सेन उचारिय इष्ट॥
निवाजिव बैस चँदेल हुकम्म। सम्मुख शस्त्र सु अस्त्र भिरम्म
सुनी रजपूतन बात कुढंग। वधे वपु धाइ उताय उतंग ॥
कसैं रजपूत सुन्यो जब घेरु। कही परिमाल करो जिन बेरु
सुनै चहुँआनन छाँडि है दाउ। करो मति जुद्ध चँदेलन राउ॥
करौ पृथिराज सुकाज विरुद्ध। भजो तजि खेत जुरैं जब जुद्ध
इती सुनि वैन किये रतसैन। कही नृप मारहु मारहु ऐन ॥
सब सब साजि चँदेलन फौज। मिले रजपूत सुसन्मुख चौज
भई जब दृष्टि सुदृष्टि करूरि। मिले रजपूत सनम्मुख पूरि ॥

१ यहां शंका यह है कि आल्हाकी इच्छा न थी, राजाने आज्ञा नहीं दी थी तो मल्हनाने सहसा कैसे आज्ञा दे दी कि जाकर इनकी समाज हनो ठीक खबर तक मिली नहीं मालिनिने पीछेसे आकर खबर की इसी प्रकार सर्वत्र शंकायें हैं सो नहीं लिखेंगे क्योंकि यहाँ इस पुस्तकके खंडनकी आवश्यकता नहीं है।

मिले मुख आइ सुछल्ल जु आन।उल्हन असात्रिय क्रोध अमान
लगे शर शायक क्षात्रिय आइ।किधौं विष आसिय पासियपाइ
लगे उर साँगि शकात्तिय सेल। करैं दुहूँ बीर दुही मुख खेल॥
कटक्कत घाइल खग्गन खाइ। खटक्कत सेलन खेलन राइ॥
गटक्कत गोटन गिद्धन दौरि। घटक्कत घायल वाहि मरोरि॥
नटक्कत नाचत घाइ मुछाल। चटक्कत चौंप गही करमाल॥
छटक्कत सूर धरापर धाय। जटक्कत जूथन जुग्गिन चाय॥
झटक्कत एकनको गहि एक। टटक्कत लुट्टक कुट्टक मेक॥
ठठक्कत काइ रही सत जुद्ध। डुडक्कत डौरुव वाद्य विरुद्ध॥
ढुढक्कत ढुक्कत रुक्कत साइ। णणंकत रूख खणंकत काइ॥
तता थेइ नाचत विक्रम मंकि। थरत्थर कंपत कायर अंकि॥
दरद्दर दौरत वीर दुरन्त। धरद्धर चाल परं न करन्त॥
नरन्नर रूर सरूर रखाय। परंपर फुट्टत जुट्टत काय॥
फरफ्फर फौज तरफ्फर मार। वरव्वर लाजत घायल लार॥
भरम्भर भाजिय फौज चँदेल। मरम्मर सुद्धिय सिद्धिल खेल
वरव्वर छेदिय घाइल धाइ। लरे पृथिराजकि सैन सुधाइ॥
तबै उमरावन पाइल चाल।भजी सब फौज लखी परिमाल
हजार सु तीनि परे धर मध्य।भजी परिमालकि फौज प्रसध्य
कटे रण तीसक घायल सोइ। रुपै रण बीस कपंड बहोइ॥
गह्यो गुण मंजरि पाणिय धाइ।उठावति प्यादति कीनहु चाइ
लगे शर सेल सुसत्रह गात। करे गुणमंजरि जुग्गिनि बात
निवाजिय वैस चँदेलन तान। बली हरिदास निपाइ बितान
तब नृप ऊदनि लीय बुलाय। सुनी जब कान पयादेइ धाय
पठाइद मल्हन दे तरवारि। अहो इन घायल लेहु जु मारि
कहे जब ऊदनि वैन प्रसिद्ध। सुनो नृप ए रजपूत अवद्ध॥

... राजनको
कही पारिमाल दिवान नवीन । हना इन फौज हजार सु तीन॥
हनौ इनको रण ऊदनि लोइ। तबै हगचैनलहैसबकोइ ॥९॥

छप्पै ।

जब ऊदनि मुख उचरिसुनहुपरिमालअरजइक । घायल महा अबद्धकहीपरमान व्यासतक ॥ होय चौप चहुँआन रोष भित्तन नहिं मारिय । अतुल तेज पृथिराज सुनो बिनती हितकारिय । चंदेल चाहि मानों अरज अरथलगै सोइकिज्जिये । नहिं करो बेर पृथिराजसे जग ऊपर जसु लिज्जिये ॥ १० ॥

चौपाई ।

सुनि ऊदनिकी बानी लोइ । महला भोपति बोले दोइ ॥
हम दरबार भाइ दोउ मंडहिं । रजपूतनपरमाव्रतखंडहिं ॥११

दोहा-महला भोपतिकी सुनी, रिस पाई परिमाल ॥
दौरो ऊदनि मारिये, घायल घाइन हाल ॥ १२ ॥

छन्द भुजंगी ।

सुनीबातचन्देलभोपात्तिभाषी । भयोत्यारऊदन्निकेबेग साषी
गहैं तेग हत्थं समत्थं सुधायो।लडौबागखर्गंतमासोदिखायो
कियोराजफ़ुरमानडेरासिधारे। किये कूचअग्गंनिहंगं निहारे
दिये पंच हज्जार सत्थं चँदेलं । चले बाग काजैंसमाजैं सुझेलं
निकट्टं च बागं वचं न पुकारे। कढौवेगिरजपूतचहुँआन वारे
सुनीकनकबानीगुमानीचलाये। अभंगं बलीबाहुजंगं मिलाये
कहैं कुंदलंफेरिमनमें बिचारी । हनैंक्योंभजैजैभयंखै हमारी
करैं खंड खंड भुसंडं भकारैं ।हथ्यारं धरौजोधऊदनिहँकारैं॥
भजौ जाउह्यांतेबचैजीतिहारो। कह्योमानियेआपुसुन्दरहमारो
तबैकनकबोल्योमहारोषह्वैकै । गिरैं शीश तौऊ लडैं रुंड ह्वैकै

सुनौनन्ददस्सराजकेबारबारं । पृथीराजको लोन खग्गंउजारं
इही बोल बानीदलंबीच रूरे । दिये आयसेलंकिये बोलपूरे॥
चलावंत बीरं दुहूँ ओर बाँके । परे फूटि धरणी दुहूँसैन घाँके
चलावंत बीरं शकत्ती कटारी । उरं फोरिहीकंपरेफूटि न्यारी
चलावंत गुरजैं शिरं चूर होई ।लगै जासु अंगं गिरैभूमि सोई
चलावंत मुद्गर हकारंत शूरं । मकारंत भै खात कायरसुकूरं
चलावंत बीरं बरच्छी सँभारी । परैफूटिन्यारीउरंलागि भारी
लगै साँगि छातीभयरंद भारे । मनौ जावकंभाट कीने पनारे
लगै हीकचमडाढहैजातिपारं ।अटारीभनोकामिनीखोलिद्वारं
बहै तेग कंधं परै साँस न्यारे ।गिरैं टूटि तरबूजसे मुंड भारे॥
पटेबाज केते लड़ैं धोपदैकै । लगामैं सुमत्थं फिरैं मुंड लैकै
किते ज्वानमुदगरलियेहाथसीलं ।फिरावैंचलावैंकरैंखीलखीलं
परे रुंड मुंडं कहूँ हाथ डुंडं । कहूँ पाइँ प्यादे कहूँ पील सुंडं
कहूँ कंध बंधं कहूँ रंद हीकं । कहूँ हैबरं टूट धरनी धरीकं ॥
भयो जुद्ध भारी बही श्रोणधारा।गयेटूटघायललडे सो अपारा
रह्यो एकशूरंकनकहैअमानो । लियोसेलहत्थंहियोसोरिसानो
कहैउदसोंबैनकिलकाररोसं । बलंआपुमेंतोलडोआय मोसं॥
सुनैबैनरनमेंपिल्योउदभारो । गहै तेग हत्थ समत्थं प्रचारो॥
इतैकनकचहुँआनरजपूतधायो।वरंवीरऊदन्निपैकोपि आयो॥
गयो कोपिबीरंजहाँउदघाती।दियोजायसेलंकियोसालछाती
दई तेग उदं भई पार मुंडं । गिरच्योशीशजोरंभयोबीर डुंडं
हियो सो उर उदके एकनेजा । भयो पार पेट अलेटं करेजा॥
इतैशूरआयोधरनिचाहुआनं । उतै मूरछा उद खाइसुज्वानं॥
पचासो परे घायलंखते जाने ।बरच्छीलगीतेगजमघरकमाने

छप्पै ।

कटे खेत चंदेल शूर इक सहस समानह। गिरे बनाफर साठि देखि ऊदनि परमानह ॥ परि परिहार पचास परे चेरा क्षत दोइक । गहरवार शत दोइ लोह अंतर शिर होइक ॥ रजपूत धरे घायल कनक परे बीस संज्ञा गइय । कवि चन्द कहैं परिमालसों पृथीराजसों लग्गइय ॥ १४ ॥

चौपाई ।

परे बीस घायल रजपूतह । सहस एक चन्देल सुदूतह ॥
गहरवार शत दोइ समानैं । परे बनाफर साठि अमानैं १५

दोहा—परे बीस घायल समर, और कनक चहुँआन ॥
पार ऊदनि रण मूरछा, काटि दासी बपुरान ॥ १६॥

छप्पै ।

काट दासी बपुरान लख परिमाल अवासह । सहस एक चंदेल खेल रणही करि वासह ॥ लग्गि नई परिमाल चाइ पृथिराज तनवारि। कहत चन्द वरदाय बीस घायल परि संभारि सनमध्य देश जातह परिन घायल सो मद्धवे गवन। हुव बानि विरुद्ध चहुँआनसों भविष्य बात मेटै कवन ॥ १७ ॥

चौपाई ।

ऊदनि जगी मूरछा शूरह। उठे चले चंदेल हजूरह ॥
जाइ कही हम घायल मारे । वे सामी पार सबै संहारे १८

दोहा—कही उद जो तुम हुकुम, कीनो हमको राय ॥
सोई हम पूरो कियो, मारे घायल धाय ॥ १९ ॥
बहुत भये चन्देल खुश, सुनि ऊदनिके बैन ॥
बहला पास बुलायके, लगे इनाम सुदैन ॥ २० ॥
हाथी दोइ तुरंग शत, मोतिन माल सुदेश ॥
ऊदनिको शिरपाव दै, उठि करि आपु नरेश ॥ २१॥

किया हुकुम चन्देल नृप, मनौ मोनि बहु सोइ ॥
देखन गढ सुकलिंजर, चलौ आजु सब कोइ ॥ २२ ॥
करो त्यार रनिवासको, नवल नगरको आजि ॥
आल्हा पास बुलायकै, कियो हुकुम नृप गाजि ॥ २३ ॥

छन्द पद्धरी ।

बुल्लाइ राज आल्हन्न लीन । सब शूर बीर सज्जत प्रवीन ॥
हाथीन रत्थ साजहु सुवेगि । बलवान शूर बाँधत सुतेग ॥
डोला सुडोल चहुडाल सज्जि । रनिवास काज डंबर सुगज्जि ॥
ए दल प्रवीन अन्नेक भार । रहकला तोप बन्दूक सार ॥
नौबत्ति नाद नीसान बज्जि । घन गरजि मेघ सुरपत्ति लज्जि
कालिंज काज चढि चालि नरेश । आनन्द होइ तहँ करि प्रवेश
बुल्लाय पुत्र नृपसंग लीन । ऊदनि बुलाय करि हुकुम कीन
तुम चलौ नगर कालिंजपत्थ । लै शूर बीर सामन्त सत्थ ॥
चलि चलिय राज एकंत होय । वाहिपर समूह करवल सजोय ॥
सब चले साजि परिमाल संग । पहुँचे सु जाय जहँ वन उतंग ॥
परिमाल हुकुम कीन्हों सुतब्ब । खेलौ शिकार सब शूर अब्ब ॥
खेलत शिकार सब शूर बीर । एकै हुलास सज्जत गहीर ॥
देख्यौ कुरंग वन एक राज । हयवर सु आल्ह कीन्हों दराज
ललकारि शूर हयदपटि धाय । लिय पकरि मिरग जीवतसुभाय
खेलैं शिकार सब शूर ज्वान । फिरि चले नगरको करि उठान
पहुँचे सु नगर कालिंज जाय । सब देशमाँझ पटिगये पाय ॥
लीन्हें सजोय शुभ तिलक नारि । गावंत गीत ठाढी दुवारि ॥
सबहीको राज सन्मान कीन । द्वै द्वै सुहेम सबहीको दीन ॥
जब गये महल भीतरहि राज । सब शूर बीर डेरन समाज ॥
रनिवास साथ महला समेत । भोपत्ति संग दाखिल निकेत २४

दोहा-करिकेली पारिमाल नृप, सब रनिवास समेत ॥
महला भोपति भूपको, मतो कुमतिको देत ॥ २५ ॥
आल्हा हय दौरायकै, पकरि लियो मृग जाय ॥
उनके ऐसे पाँच हैं, नृपके एक न भाय ॥ २६ ॥
घोडे पाँच मँगाइये, देहु आल्हको और ॥
नाहिं करैं तो घर तजैं, जाहिं और ही ठौर ॥ २७ ॥
होनहार होइके रहै, मिटै न क्यों हूँ जानि ॥
आय गई मन राजके, बात कुमतिकी खानि ॥ २८॥

चौपाई ।

भोपति आल्हा उद बुलाइब ❋ नृप कहि ऐसे वचन सुनाइब
पाँच बछेरा घरके दीजै ❋ उनके पलटे हयवर लीजै २९

दोहा-घोडे देहु तौ घर रहौ, देहु न तजौ सुठाम ।
द्रैमें नीको जो लग, कीजे ताहि सकाम ॥ ३० ॥

छप्पै ।

आल्हा सुनि इमि वचन बोलि उत्तर नाहिं दीन्हों । उठि आयो घर सुभट मंत्र मातासों कीन्हों ॥ कहिय आजु उन चुगुल बात मोसों इक भारी । घोडे घरके देहु राज माँगत मनुहारी ॥ छाँडिय देश नातर अबै आन देश कीजै गवन। तुम कहो मतो सो कीजिये मात मंत्र सुनिये श्रवन ॥ ३१ ॥ माता सुनि यह बात कही आल्हासों बानी । पूत बछेरे न देहु लेहु यह बात सुमानी ॥ देहु छांडि यह देश लेहु कनउजकी गैलह। मिलौ चलिय जयचंद और छांडहु सब रैलह ॥ सुनि मात बात सोइ करिय उही बार कीन्हों गवन । सब साजि आपने कटकको चले आल्ह दुर्जन दवन ॥३२॥

दोहा-आल्ह महोबो छांडिकै, कनउज कियो पयान ॥
मिले जाय जयचन्दसों, बाजे नगर निसान ॥ ३३ ॥

भोपतिकी मारत गयो, जागीरी दलपात्ति ॥
आगि दत लूटत भगे, गाम सबै सब जत्ति ॥ ३४ ॥
पृथीराज कानन सुनी, घायल हतन सुजान ॥
महुबेते परिमाल नृप, कालिंज कियो पयान ॥३५॥

छप्पै ।

सुनी खबरि चहुँआन बोलि सामन्त शूर लिय । सोच जालमहँ परचो भयो बहु प्रबल दुःख हिय ॥ कौन चूक चन्देल हने घायल रण पानह । कौन चूक चन्देल हनी गुण मंजरि जानह ॥ कीन्हीं न खूब चन्देल नृप नाहक मारि विरुद्ध किय। कवि चन्द वाक्य साँची भई मिटै नहीं बिनु जुद्ध किय ३६॥

दोहा--यह बिचारि राजा कहत, सब सरदार बुलाय ॥
सुनहु सर्व सामंत हो, करौ मंत्र अब आइ ॥ ३७ ॥

छप्पै ।

सुनौ सर्व सामत करिव चन्देल विरुद्धह। हनि घायल बेचूक और दासी वपु सुद्धह ॥ सुनौ मंत्र कयमास सुनौ गुज्जर राय रामह । सुनौ चंद पुंडीर सुनौ जादौ गुन धामह॥ चामुंडराय सुनिये श्रवण सेनि पज्जून विचारिय । संजमराय लख्खन सुनौ तत्त सुमंत्र उचारिय ॥ ३८ ॥

छंद पद्धरी ।

उच्चारि बघेल लक्खन समत्थ । भंजिये देश महुबो सुमत्थ ॥
उच्चरे बात चहुँआन कान्ह । भंजिये देश महुबो सुथान ॥
बोले यों चंदपुण्डीर बीर । पक्कारि नरेश परिमाल धीर ॥
सांझिमाराय बोल्यो बिरंत । चढि ये सुभूप कढिये तुरंत ॥
सारंग बोलि बानी विराट । कढ्ढिये माल परिमाल जात ॥

कीजिये

अचलेश बोलि भाटी सुधीर। मारौ सुजाय महुबे गहीर ॥
चामुंड बोलि विरदै तवंक। धारहु सुतेग मारहु निशंक ॥
सुनि मंत्र मुख्य निंडुर नरेश। मारिये देश महुबो सुवेश ॥
भोहाँ चँदेल बोल्यो सुलोय। पृथीराज कीजिये हुकुम मोय
गोइंद बोलि रावत्त राज। मारौं चँदेलकी मैं समाज ॥
बिझराराज करि दाव पाज। काटो सुजाय परिमाल राज ॥
चलिये सुरराज अति क्रोध होय।सामंत शूर उच्चरत सोय ॥
कयमास बोलि आगे नरेश। चितयो सुमंत्र इह जुद्धनेस ॥
जयचन्द करै ऊपर चँदेल। कीजिये मंत्र विद्या अमेल ॥
कनवज्ज और महुबो सुवेश। भंजिये शूर दिन बिन उदेश॥
थापियो मत्र चहुँआन सुद्ध। धारियो धर्म चन्देल जुद्ध ॥
बुलाय चन्द वरदाय सोय।यह भविष बात तोहि अगम होय
तब कहे चन्द वरदाय बात। होगी सुजंग भारी सुजात ॥
फिरि थमै एक द्वै मास जुद्ध। पुनि मचै खेत भारी विरुद्ध ॥
भारत्थ होइ. महुबे सुखेत। कोई न बचै इह जानि लेत॥
पाछे सुजीति होगी निदान। झारै सुखेत तूही सुजान ॥
यह सुनी चन्दकी चाहुँआन।पृथीराज आपु कीन्हीं प्रमान॥
बुलाय राम गुरु रामराज। काढिये महूरत बोलि साज ॥
रचि कुंडमुंड सचि होम सार। संकल्प कीन मारन विचार ॥
वनजारिनशिष्यशिवदासबाट्टि।रविका विलास कइ होम कट्टि
करि हस्त चाल जपि रुद्र मंत्र।त्रैलोक बिजय भुगवै सुतंत ॥
केताकिय पुहुप हरपर चढाय। केसूके फूल हित करि बनाय॥
चक्कोर आइ नृप दरश दीन।खंजन शिखंडि विवि परश कीन
बहु दान दान चहुँआन रान।किय युद्ध चाव मन उमँगि दान

अष्टमी वार शुक्कर अनूप । भादौ सुकृष्णपक्षं सुरूप ॥
सामंत सत्त ग्यारह बरीस । चालीस जानिपृथिराज ईश ॥
शुभ दीन महूरत विप्र सोइ । चहुँआन राज उच्चरिब लोइ ॥
ग्रह देख कौन कौने लगाय । द्विज कहत खोलि पत्रा सुनाय
रवि योग पुष्पत्रयथानचन्द । पंचमो शूर आनन्दकन्द ॥
सप्तमो शुक्र गुरु दशम जान । नवमोसुबुद्धवरअधिक पान ॥
तीसरो शनीचर छठो केत । पंचमो भूमिजा आरि दरेत ॥
ग्यारहों राहु चाढिचलिनरेंद । पारत्थ जेमिवल बढे दंद ॥
शुभशकुनदेखिग्रहशुभलखाय। कीन्हों सुकूच पृथिराज राय
कीन्हों मुकामनृपबागआय । बत्तीसहंसहयवरमँगाय ॥३९॥

चौपाई ।

बाग आयनृपकियेविनोदह । अंछनि राजानि बैठी गोदह ॥
चन्द बुलाय कह्यो नृपहीको । कवि यह बाग बरनिये नीको

छंद भुजंगी ।

कहै चन्द ऐसे सुनौसर्व भूपं । कहौंबागकीराज शोभाअनूपं ॥
चहूँ ओर डंडासरसरंगरागे । बुरजचारिसुन्दरबहुतदामलागे
बन्यो कोशफेरंउभैबागसोई । अनेकं तिवारे जहाँ हेम लोई ॥
बने गौखछज्जेअनूपंअवासं । लिखेचित्रतिनमैं चतुरनेविलासं
जहाँफूलनानाप्रकारंखिलेहैं । चमेलीसरसमोतियासों मिलेहैं
जहाँसेवतीऔगुलाबालसेहैं ।निवाडा बबूना जुहीसों गसेहैं ॥
जहाँकेतकीऔमदनबानजानौ । जहाँनूतफूल कदम्मैं बखानौ
गुलादाउदीऔहजाराबिराजैं। जहाँमाधवीस्वच्छसुंदरसमाजैं
गुलाबासगुर्राजहाँइश्कपेंचा ।जहाँमोगराऔकलीकुंदसेंचा ॥
बसंतीकुजाकेवडागुलसरोशन। जहाँरायवेलीजुहीसोमसोशन
सदा सो गुलाबंअशर्फीसहाई । तहाँगोलगेंदाअरगजाअवाई

अनेकं सुफूलं कहाँलौं बखानौ। अनेकं तरहदार मेवा सुमानौ॥ अंजीरं खरे सेव आँडू जहाँहीं। अँगूरे नरंगी खुरट आम पाहीं॥ जहाँकोकिलामोरबानीउचारैं। तहाँकूककोयल अनेकंहँकारैं॥ जहाँ भौंरचहुँओरभन्नातडोलैं। तहाँ चिक्करैं चक्कवा औ चकोरैं जहाँ आय पृथीराज कीनौ मुकामं। सबै शूर सामंत संगं सकामं

छप्पै।

गेर महल पृथिराज सीख सब कारन दीनी। कुसुमपाट शिर पाग शूर लोहा कर लीनी॥ पहर निशा रहे जागि कीन्ह करि विक्रम अंगह। सीख दन्हि सुंदरिय वीर कीन्हें वपु जंगह कयमास बोलि आगे कियव केदिल नाद बजाइयव। सामंत शूर गुरु रामसों हैं सब सामंत आइयव॥ ४१॥

दोहा–कियो नगाडो कूचको, सामंत लिये बुलाय॥
हुकुम कियो कयमाससों, घोडे देहु बढाय॥ ४२॥

छन्द हनूफाल।

नृप जागि बंब कराय। कयमास अग्र बुलाय॥ चहुँआन कान्हरचन्द। गुरु राम आनँद कन्द॥ सो हने कठेहरु बाज। विलहना वट्ठन काज॥ हय मोर कन्ह हर दीन। ऐराख वंश नवीन॥ शिरताज आरव शुद्ध। कयमास दीन विबुद्ध॥ हयराज चामुंड काज। खंधारि उपजि समाज॥ हयरतन चंढ पुंडीर। भुज लक्कहैं वर हीय॥ हय मुकुट गोइंद काज। मानिक्क बाज समाज॥ नृप सुरंग संग सुदीन। ठट्टी सुवेश नवीन॥ मन प्यार निडरराय। इस वरुद्धरं उपजाय॥ हयतेज रूप सुराज। दिय रामदेवनी काज॥ मग सीमलेसी काज। समप्पिके हरिवाज॥ असु कुसुम अरु दल ढालि। विलहाना भौंह चँदेलि॥ सरसीह देवर लीन। अचलेस कारन दीन॥ सुरखा सुदल मुख शूर। दिये आल्ह

कारन तूर ॥ नवलेसको हय दीन । नृप हेम सरभर लीन ॥ हाहुली कारन हीर।ताजी सुतेज गहीर ॥ हंवीर काज सहंस। उपाजियो तुरकी वंस॥गंभीरकाज तुरंग । रेशमी रंग सुरंग॥ सामंत और कुलीन।अनेक हय वरदीन॥घोडे हजारकलारि। दीन्हें सुबाँटि बिचारि॥मंगाय पील नारिंद।बकशीश कीन्हों चंद ॥ गुरु राम कारन कीन । हय सहस हेम सुदीन॥मंगाय करिव सिंगार।मद गलित जनु मदभार॥उत्तंग गिरिवर रंग । जनु सिखिरी कजरंग॥शिर चरचि लाल सिंदूर।जनु तडित घनमें पूर ॥ असवार भए पृथिराज । कयमास संग समाज ॥ तासमय घुग्घूपंछि ॥चौकीर देखन अंछि ॥ सम्मुक्ख स्यार शबद्द । आइजा फनौफन मद्द॥जा शीश बैठी दोवि।जलजात खंजन सोवि॥बग देखि ऊँचे पाय।मुखमें मिल्यो भख आय॥ जलमाँझ चकइन वेलि।साजि करति पियसों केलि॥भै शगुन आनँद कंद । हँसि गाँठि बाँध्यो चंद ॥ ४३ ॥

दोहा–चल्यो साजि संभारि धनी, सामत शूर समाज ॥
वोरन दल चन्देलको, जोरन जुद्धहि राज ॥ ४४ ॥

छप्पै ।

चालिब राज चहुँआन लीन्ह सामंत शूर भर ।
अतुल तेज भर अतुल सुभट भ्रम शीश महाधर ॥
बीस सहस सब संग जंग कन्दालि कसि भारी ।
चहूँआन राठौर वैस कूरम बडभारी ॥
गहलौतवघेल वगोइरिय मोडिय बड गुज्जरमिलिय ।
तोमर पँवार खिच्ची पुँडीर दाहिमा हाडा चालिय ४५॥

दोहा–चल्यो साजि संभारि धनी, सामत शूर अभंग ।
लियव अंग पुनि हास कर,करन सारिसमा जंग४६॥

छंद मोतीदाम ।

चल्यो पृथीराज सुसाजिहैं सैन । सजे सब सामँत शूर सतैन ॥
सजे चहुआन सुकन्हर सत्थ । सजे कछवाह पजून समत्थ ॥
सजे सँग दाहिमा चामुंड शूर । सजे कयमास लिये मुख नूर ॥
सजे कमधुज्ज सुनिड्डर राय । सजे परसंग सुखी वियभाय ॥
सजे सँग भौंह चँदेल सुबीर । सजे अचलेश सुभट्टी भीर ॥
सजे परिहार सुकूरम भार । सजे सँग सामत साखुल लार ॥
सजे सुवबेलव लख्खन आय । सजे चहुआन सुसंयमराय ॥
सजे अततांइय बीर बनाय । सजे सँग सामंत हाहुली राय ॥
सजे सँग भार सुहाडा हठील । सजे सँग जद्दव मद्द सचील ॥
सजे सँग चंद पुंडीर सरद्द । सजे सँग गौर सुगाह नरद्द ॥
सजे हरियंत मलेसिय दंद । सजे सँग मारु अठाय अरंद ॥
सजे सँग माल विशाल सुएव । सजे सँग जद्दव जाम उदेव ॥
सजे सँग टोक चटा सुरिसाय । सजे गहलौत सुगोइंद राय ॥
सजे बिंझराज सुखेन खगार । सजे सँग उद्दय राय पगार ॥
सजे सँग बागरा साखुल सोय । सजे सँग मल्ह चँदेल सुसोय ॥
सजे सँग भट्टिय भीम गहीर । सजे सँग शूर पमार सुवीर ॥
सजे निरवान सुबीर बहान । सजे सँग वीर प्रसग प्रथान ॥
सजे परिहार सुपीप मरद्द । सजे सँग गौर सगाहन रद्द ॥
सजे सँग मोरिय सेंगर शूर । सजे सँग तेज लडो गररूर ॥
सजे सँग तारन मल्ह समाज । सजे सुबली सँग सोम समाज ॥
सजे सँग धामर धीरपरम्म । सजे सँग रावत राम गरम्म ॥
सजी सँग फौज सबै पृथिराज । सजी सँग सामँत शूर समाज ॥
कियेदरकूच चल्यो चहुआन । चंदेलन ऊपर कूच निदान ॥
भजे भुमियाँ सोई छांडिहैं देश । बसे वन मन्दिर कीन्ह नरेश ॥

चले मग शुद्ध सु ऊवट वाट । पिलेदल सामंत दारुणठाट ॥
मिले मगमाहिं मरद्द बुलाय । सुनोपीरमालकोथानबताय ॥
कही यह एक रहै मलिखान । लडै तुमते सुनिकै उह ज्वान॥
इतीसुनिबागलई चहुँआन । करौचलियुद्धजहाँमलिखान ॥
चलीसबफौजनिसानबजाय । जहाँमलिखानरहैअकुलाय ४७

दोहा-कासिद सुनि मलिखानको, ले सब खबरि सुजान ॥
जलद पंथ पायँन चल्यो, शुद्ध सारिसवाँथान ॥४८॥
गयो उहुत मलिखान पर, नैकारि करी सलाम ॥
आयो दल चहुँआनको, ज्यों रावणपर राम ॥ ४९ ॥

छप्पै ।

पृथीराज

पद्धरै सज्जि चौरे चढि आइव ॥ नहिय आल्ह उहनि सुकरैं ऊपर भर संगह । महला भोपति चुगुल चारु परिहारस अंगह ॥ अरसिंह बोलि विरसिंहको नरसिह मंत्र यह लीजिये । जे सिंह शूर शब्दन सुनौ मिली अनी कह कीजिये ॥ ५० ॥
सुनिव कहत जयसिंह सुनौ भाई मलिखानह । आपु हुकुम मुख करौ वहीं रोकैं चौहानह ॥ लडैं धरैं यह टक करैं स्वर्गनको स्यालह । भरै जुग्गिनी आइ धाइ खप्पररणहालह॥ जय राज नन्द इमि उच्चरत तुरत कह्यो सोई करन । चंदेल नोन साँचो करैं रजपूतन मंगल करन ॥ ५१ ॥

दोहा-हिम्मत है क्षत्रीनको, आश कोनकी पाय ॥
कहा आल्ह ऊदनि करैं, महला भोपतिआय ॥५२॥
आय बनी अब तो इहाँ, तुमसों जंग जरूर ॥
ताते करौ न ढील अब, लडौ मंत्र करि पूर ॥ ५३ ॥
सुनी बात जयसिंहकी, मलिखान महराज ॥
सबै सेनको हुकुम किय, करौ लरनको साज ॥५४॥

छप्पै ।

कियो लरनको साज सेन बुल्लाय संगलिय । किय केसरिया ज्वान हाल केसरि घुराय दिय ॥ करी त्यार सब फौज जुरी हज्जार आठ बर । बाण तोप तरवारि तुपक बाँधे कमान सर॥हाथी पचास सज्जे प्रबल कोतल हय आगर अगर थंमियो जाय पृथिराज दल कोश एक बाहर नगर ॥ ५५ ॥

चौपाई ।

मल्लिखान कासिद बुलाइव । कहौ पिथौरासों तुम जाइव ॥
इही ठौर डेरा करवावो । जुद्ध होय सो त्यारी पावो ॥
इही ठौर जुद्ध करिबेको । आगे नाहिं ठौर लडिबेको ॥
मल्लिखानहू आवै धाई । जुरै जंग होइ बडी लडाई ५६

छप्पै ।

कासिद सुनि यह बात चल्यो पृथीराज पास तब।जो बातैं सुनि गयो जलद ह्वाँ कही जाय सब॥महाराज पृथीराज करौ डेरा या ठौरह । जंग खेत है इही ठौर आगे नहिं औरह॥कर जोरि सरल बातैं कहत लगे अच्छ रावर बरन । तुम साजौ जुद्ध त्यारी करौ मल्लिखान आवै लरन ॥ ५७ ॥

दोहा–सुनि बानी कासिदकी, किये नगारे तेन ।
उहीं उतारि डेरा किये, सजी सजाई सेन ॥५८॥

छंद भुजंगी ।

बजैं बंब हाथीनपै भूमि लरजैं । मनो मेघ भादौं प्रबल झूमि गरजैं॥सुनी मल्लिखानं नगारो करायो।सजी फौज चौजें रणं रोस पायो॥चले बीर केते लिये हाथ तेगं।किते लै गरजैं पिले वेगि बेगं ॥ किते मुदगरं लै धरैं कन्ध भारी । किते सेल साँगै बरच्छी कटारी॥किते हाथ कुत्ती कबज पेस लीये।किते खंजरं पंजरं बार कीये॥किते तीर बीरं लिये सो कमानं । किते हाथ

फरसा लिये बीर बानं॥किते हाथ नेजे तबल तोप सज्जैं।किते बीर जोधा करैं शोर गज्जैं॥किते लाल बानेनते शूर न्यारे।किते मूँगिया रंग पहिरे पचारे ॥ किते शर्बती श्वेत तूसी हरेई।किते सो सिंदूरी अमौआ लरेई॥किते बीर आबी सजैं वस्त्र अंगं।किते शूर सुन्दर सजैं श्याम रंगं॥बसंती सजैं बस्त्र जे चाय चौजं। किते अगरई चंपई बीर फौजं॥किते सोसनी सोर पहरे अमानैं किते कासनी रंग सज्जैं सुवानैं॥किते आसमानी सुनहरी समाजें किते बीर केसरिय हरिवल बिराजें ॥ किते सो गुलाबी सजैं फाकताई । नरंगी किते रंग पहिरे सुहाई ॥ किते शूर सूहे सजैं वस्त्र नीके । किते बीर प्याज़ सजैं सन्दलीके ॥ किते शूर सफतालु साजे वसन हैं॥किते बीर लीले बने सोर सनहैं ॥ किते बीर चीरा चरार्चि चारु पहरैं । किते कोचकी रोंचकी रंग गहरैं॥सजैं पिस्तई किसमिसी शूर केते।जँगाली रँगे धूमरे वास जेते ॥ बनें रग रंगं लडन चाउ कीन्हों । सबै हाथ हाथं हथ्थारं सुलीन्हों ॥ सजे अंगजैसिंह भाई सुपाँचौ। करौ नोन परिमालको आजु साँचौ । हजारे सजे संग भाई भतीजे । सहंसं सजे शूर सामंत लीजे ॥ बँधे गोल ठट्टं गरहं चलाये॥सजे कंगलं अंग नेजा दिखाये॥मिली दृष्टिसों दृष्टि चहुँआनकेरी।कियो नंद नीसान फौजं सुफेरी॥मुखं अग्र कन्हं कयंमास भारी । नरंनाह चामुंड कनकेस धारी॥ वरंबीर धीरं चल्यो इन्दराजं।इतै अग्र सामंत शूरं समाजं॥वरंबीर शारङ्ग मोरी नहानं।परिहार लक्खन सुअल्हन सुजानं,वरंबीर सामंत संयम्म रायं । पँजूनं वरं कच्छवायं सुपायं ॥ जुरे जाम जादौ दिशा दाक्षिणीयं । इते साज़ि शूरं दलन रक्खिनीयं॥धरैं धीर पम्मार पुंडीरचंदं । अचलसिंह पाठी पहारं सुदंदं ॥ सजं डोड खींची बघेला विलष्टं । सजे बीर हाडा शिरं धारि इष्टं॥

भरं हाहुली और हंबीरपानं । इते कीन सामंत वाई भुजानं॥ विजयराज पृथीराज सज्जे सयंदं।बजैं नंद नीशान गज्जैं गयंदं॥ लख्योमालिखानंदिख्यौचाहुँआनं।उठीबागबीरंप्रसंगंप्रथानं॥ लखी फौज परिमालके बीर पिछे । धरा धीर धरती बराबीर मिछे॥ करे खंड खंडं भुशंडं सबारी । छकैं छाक लग्गैं बहैं स्वर्ग तारी॥अनामान खग्गं करैं फाँक दोई।गिरे शूर धरनी रकत भूमि होई॥चले खूब फरसा उडैं मुंड लेके।दलं हाँक मारैं लडैं रुंड ह्वैके॥सटं साँगि लग्गैं उरं बीर छाती । धरं फूटि शूरं निकसि पार जाती।घटं कंत धावैं नटंबीरनाचैं ।वरंबीचकैऔ-सटं वार साँचैं॥जटंज्वाल केसी सजहाल लोई। उरं झार झारैं उमारैं सतोई ॥ लगै तीर बीरं हियं लागि झूमैं । परे पार ह्वैके गडे जाय भूमैं॥लगैं सेल हीकं गिरैं शूरआई। करैं नाहिंसंख्या परैं मूरछाई॥लगैं बीर छातीवरं सोकटारी।मनौदूलही द्वारखा-लें अटारी। लियेहाथखप्परसोजोगिन्निडोलैं।बडे गिद्धआये-गगनमाहिं बोलैं॥ बरैं अप्छरा शूर सो काम आवैं। सुरंलोक विम्मान धारिके सुधावैं॥ भयो बीर खेतं बढो जुद्ध भारी।बही सो नदी श्रोण भै लाल भारी ॥ तबै मल्लिखानं सु धायो रि-सानं । लिये हाथ तेगं अवेगं अमानं॥पिले जाय दलमें भयो वारपारं । गयो फेरिके कन्हपै तेग झारं॥परी तेग खाली लगी पलिमानं।तते कन्हने खैंचि दीन्हींकमानं॥ लगीशीशझारंसु-टोपं कटायो। तबै फेरि मलिखान तेगा चलायो॥ दियो कन्ह कंधं भ्रम्यो सातबारं।दई तेग वेगं भई वारपारं॥दई चंडपुंडीर किरवान औरे । गिरो शीश धरनी लियो जाय गोरे ॥ भयो रुंडमुंडं चल्यो कन्हपैकं।दयोकन्हने फेरिमुदगर उठैकं।गिर्यो टूटि मलिखान धरनी गहाई । बर्यो तासमय अप्छरा फेरि आई ।गई अप्छरा लै तहाँ सूरलोकं।भयो शब्द जयजय दुहूं

फौज शोकं॥मरचो देखिमलिखान जयसिंह धायो॥लियेहाथ बरछीसनमुक्ख आयो॥दई जोरते चंडपुंडीर छाती।गई फूटि हीकं भई भूमि राती॥भयो मूरछा चंडपुंडीरबीरं।भज्यो देखि चामुंड सूधे गहीरं॥दईजाय जयसिंहके तेग रीसं॥गिरचोरुंड धरनी परचो टूटि शीशं॥पलटि एक नरसिंहके जाय दीन्हीं। सम्हारि शूरने ढालपै रोंकि लीन्हीं॥कमरते लई हत्थ जम्धर नृसिंहं। दई रायचामुंडके रोष आयो॥लियो दौरि मुगदरादियो जाइ रीसं।गिरे वीर नरसिंह ह्वै टंक बीसं॥गिरे देखिजयसिंह नरसिंह दोऊ।भजी फौज अरसिंह बिरसिंह सोऊ॥ गये भागि परिमालपै चालुखाई । लयो सरिसमा गढ्ढचहुँआन धाई ॥ ५९ ॥

दोहा—तोरि सरिसमा नगर नृप, हने सेनि रण भाइ ॥
अरसिंह बिरसिंह जुद्ध तजि, भजे महोबे आइ॥ ६० ॥

छप्पै ।

मल्खिान रण परे पानि क्षत्रिय ध्रम रक्खिब।करिब लोनको सोचु ख्याल सबही रण लक्खिब। परे बीर नरसिंह परे जयसिंह अमाने। भजि अरसिंह बिरसिंह गये चंदेल सुथाने॥ परि डेढ सहस ठाकुर अवनि चारि सहस संगी कहिब ॥ हज्जार गिरे पृथिराजके लरिव शूर अंतर रहिब ॥ ६१ ॥

चौपाई ।

बेशुमार घायल भै चंदह । और कन्ह चामुंड सुदंदह ॥
सो परिमाल सुनीइन कानह।उपज्योडर अंतर चहुँआनह६२

छप्पै ।

सुनिव बात परिमाल काल आयो पृथिराजह।मल्खिानलिय मारि मारि जयसिंह सुसाजह ॥ मारि सरिसमा नगर भागि अरसिंह बिरसिंह डर । हनि जयसिंह नरसिंह जुद्ध कीन्हें

वर ॥ चहुँआन शूर सामंत पति साहि पकारि जिन छाँडि दिय । सब शूर और महिला सुवन भोपति पास बुलाय लिय

चौपाई ।

सुत चन्देल बुलाये सोई । महला भोपति परिगह दोइ ॥
कायथ सो श्रीवास कल्यानह। उचारि वचन राजा परिमानह॥

छप्पै ।

बोलि सुतन परिमाल बोलि कायथ कल्यानह । बोलि वैसु सुनरेश गौड सेंगर सब ज्वानह ॥ गहरवार गोहित्त भार जगनिक ढिग बुल्लिव । प्रोहित केशवदास राजवानी ढिग खुल्लिव आइयो सेन चहुँआन पति सजौ जुद्ध जालिम सबै । तुम कहौ मतो सो कीजिये लाज रहै हम तुम सबै ॥ ६५ ॥

चौपाई ।

तब रानी मल्हन देहू भाखी । राजा जुद्ध मास द्व राखी ॥
जगनिक पठओ अल्ह बुलाओ।पंगकाज अरदास लिखाओ
रानी मत सबके मन आयो । राजाने जगनिक सु बुलाया॥
दोहा-रानीकी परिमाल सुनि, जगनिक निकट बुलाय ॥
आल्हा ऊदनिको अबै, लावौ तुम जु मनाय ॥६६॥
ह्याँ जो तुम आँखिन लख्यो, सो सब कहियो जाय
सिरसा गढ मार्‍यो सबै, दीन्हौं देश ढहाय ॥६७ ॥
इतनी सुनि जगनिक चल्यो, आल्ह मनावन काज॥
गयो वेगि कनउज नगर, जहाँ बनाफर राज ॥ ६८ ॥

चौपाई ।

रानी बात कही सब मानी । पृथीराजसों अधगति ठानी ॥
जाल्हन पठयो नजरि सु दीजे।मास दोइ ह्याँ छावनि कीजै॥
यों कहिक कागद लिखवायो। येही लिखिके आल्ह बुलायो।

पान पचास हजार पठाये । जे मगही छंदनिमें गाये ॥
अतर गुलाब बंदूक बरच्छिय । हय वर दोइ चढनको कच्छिय
लै सहुगाति जाल्ह जब चल्लिब । पृथीराजसों नदपर मिल्लिब
दे कागद सब नजरि सु दीनी । सब परसोधि मिलनको चीनी
कागद बाँचत लै चहुँआनह । सिद्धि श्री पृथिराज सुथानह॥
जगनिक हमन कनौज पठाइब । जहाँ बनाफर रूठि बढाइब
आवै आल्ह जुद्ध तब होइब। इह पृथिराज बाँचि खत सोइब
पृथीराज सब नजरि सुराखी । बिदाकियेजाल्हनशुभभाखी
दोहा-कागद दे जाल्हन्न तब, चल्यो महोबे धाम ॥
डेरा करि सरिता निकट, पिथ्थल कियो मुकाम ७०
फिरि राजा वरदायसों, बाचन उचरी एमि ॥
आल्ह उद्द परिमालते, रूठि गये सो केमि ॥ ७१ ॥

छप्पै ।

कानन सुनि चहुँआन कहे वरदाय मत्र गति । प्रथम देश परिमाल रह्यो जसराज सेनपति ॥ गढा जाइ नृप लागि परी गोंडनसों जंगह । पर्‍यो चाल चन्देल उली धरनी धर अंगह ॥ रोकियो सेन अरि सेन सब काम मरन धीर न धरिय । खेलियो ख्याल बिन शीश धर काम जाय फते करिय ॥ ७२ ॥

चौपाई ।

गढा नगर चंदेल सुलियो । गोड सु मिले युद्ध तजि दियो॥
भगी सेन देखी जस राजह । दीन्हों शीश स्वामिके काजह
दोहा-चाल परी रोक्यो जने, काम आइ जसराज ॥
मारि गोड लीन्हों गढा, शिर दै स्वामी काज॥७४॥
ताके सुत दोऊ सुभट, आल्हा ऊदनि शूर ॥
फौजन मारन अरि हनन, बल विशेष भुज भूर॥७५॥

चौपाई।

राजा जीति महोबे आइब। आल्हा ऊदनि पाइ लगाइब ॥
दै जसराज भार तब सारो। सेनापति धरनी रखवारो ॥
करैं प्यार मल्हनदे रानी। ब्रह्मानद समय सुत मानी ॥
ऐराकिन घर घोडा जाये। पाँच बछरा लगे सुहाये ॥
महला भोपति चुगुली कीनी। सो परिमाल मान सब लीनी॥
नृपति कलिंजर देखन कीनो। राजा आल्ह बुलाय सुलानो ॥
पाँच बछेरा मांगे दीजै। उनक पलटे हयवर लीजै ॥
नातर वास छोडि या ठौरह। जाउ जहाँ चाहो तहँ औरह ॥
आल्हा सुनि माता ढिग आयो। कहा राज सों आय सुनायो
घर बैठी देवलदे खीजी। पूत बछेग देन न कीजी ॥
वास छांडि कनउजको चलिये। जाय बदल पंगुलते मिलिये
साहन वाहन सबही लीने। कनउज देश पयाने कीने ॥
जागीरी भोपतिकी मारी। बस्ती सबै उजारि पजारी ॥
परिपाटी परिहार सुचुक्किय। ऊदनि मुख काहू रहि रुक्किय

छप्पै।

आल्ह कियो कनवज्ज चाव पृथिराज देश दल। भोपतिकी जागीर धीर उज्जारि जारि बल ॥ कारि आदर जयचंद दीन्ह बड देश सुभारी। घोडे पाँच मँगाय दोइ हाथी हितकारी ॥ मोती रूमाल उत्तंग अति हीरा पहुँची सुद्धरिय। परिमाल सुतन सौंप्यो अधिक मिलिय मान मंगल भरिय७७

दोहा-चन्द कहै पृथिराजसों, बिसऱ्यो आल्हगँवाय ॥
मनहु बनाफर आइ हैं, रुंडन मुंडन चाय ॥ ७८ ॥

छप्पै।

गयव जगन कनउज्ज दइय आल्हनको पत्री। उद्दल इंदल जोगि दइ देवलदे मंत्री ॥ पृथीराज पद्धरे सज्जि महुबे

चढ़ि आइब । मल्लिखान जैसिंहवती नरसिंह जुझाइब ॥ भारि भञ्जि सिरसमा नगर नृप देश चंदेल दहाइब । पृथिराज थम्भि द्वै मासलौं मैं तुम पास पठाइब ॥ ७९ ॥

चौपाई ।

जबतुमआल्ह निकसिकरि चल्लिब।मल्हनदे अतिदुःखउगिल्लिब मल्हन बैठी महलन बाट सजोवै ।कनउज दिशा देखिकै रोवै अति दल जोरि पिथौरा आयो । सगरो देश उजारि दहायो जयचँदको अरदास लिखाइय। सो गुरु आल्ह कहो तुम जाइय कुमक माँगिये गहि सँग लीज। खङ्गन खेल बनाफर कीजै॥ इतनी बात जगनसी कही । सुनि आल्हाकी देही दही॥८०॥

छप्पै ।

सुनि जगनिककी बात आल्ह बाल्यो इमि बानी । लुटौ महोबो नगर कुटौ परिमाल गुमानी ॥ बिना चूक परिमाल किये परदेशनि न्यारे । काम आय जसराज सबै नृपकाज सुधारे॥ परिहार सेन आगे धरो लरौं चारि करिवानसों। सामंत शूर सन्मुक्ख ह्वै जुद्ध करहु चहुँआनसों ॥ ८१ ॥

चौपाई ।

जगनिक भाट बचन इमि बुल्लिव। अब तुम आल्ह महोबे चल्लिब भगिहै भरम चँदलनुको सब। आल्हा सुनि पछिताओगे तब सुनि जगनिक यह बात सुमानी। हम यह राज कछू नहिं जानी हम सिर बाँधि महोबे रक्खिब। नृप चंदेल चुगुल मुख दिक्खिब

छप्पै ।

हम मारे बड गौड देवगर चंदावारे । हम जादव करि जुद्ध धारि चन्देल उधारे ॥ हम कटहरिय काटि दट्टि परिमाल देश दल । हम कौतुक किरवान लूटि लीन्हें सुसबै तुल । लीन्हें सुपील जयचंदके असिय

लाख गिनियो सुतिछ। सुनि भाट बात रजपूतकी राजन जानी नाहिं कुछ ॥ ८३ ॥ हम आगे पतिसाह फौज भागी दश बारह। हमन सतारिया काटि कियो दल कूटि पुवारह ॥ हम जीती धर गया और दल प्रबल पठानह । हम बाँध्यो शिर नेत खेत दल बिरचि अमानह॥ मेवाति मारि पद्धर करिय अन्तर वेद दहाइयो। बंघेल मारि वसुधा हरी गढ चंदेल लगाइयो ॥ ८४ ॥

चौपाई ।

राजा दश जीते जस राजह। लीनी धर कंचनकी साजह ॥
ताको फल राजा यह कीनो। हमको देश निकारा दीनों ॥
ता पाछे हम ख्याल सुकीनो।राजा जीति इकति कर लीन्हों
सात बार ऊदनि जुध कीनों।जैतपत्र चन्देलहि दीन्हों ८५॥

छप्पै ।

सात बार पर धवल लगे चौरासी गातह।जीति राव इकतीस रीस कारि सोनि सुसातह ॥ स्वामिधर्म उज्वल करिव दुर्जन दल जोरह। गौंड मारि उज्जारि वारि नसतर कर तोरह ॥ बज्जाइ लोह तेरह बरस पंचासनि लागि छाँह किय। चंदेल चुगल मानी कही तीजे पन परदेश दिय ॥ ८६ ॥

छंद पद्धरी ।

सुनि भाट बोलि उच्चारि बतान।आल्हन नरेश सो सुनिय कान
परिमाल छाँडि बालकन वप्य।जयमाल धरा जसराय अप्य॥
चंदा सपर्व लिय उभै दंड । वारीश देशदल कियो खंड ॥
रैवास पासकी लूटि सर्व। मानियो बीर जीता सुगर्व ॥
जद्दवा राइ खग्गन खिलाइ। मेवाति मारि धर लई धाइ ॥
पंजाब देश पंजाब जान। वैराट देशको गर्वमान ॥
मालवादेश लिय पेशमारि। उद्दिय पमारकी धर उजारि ॥
चंदेल राज बड्डाइ दीन। फिरि गढा मारि मढ पेश कीन॥

यह सुनिव बात परिमाल राज । आये सुकाम जस राजकाज
शिर धुनिव आल्ह लीन्हें बुलाय। आपनो देश सब दल बताय
तरवारि बाँधि सिरदार कीन। हयवर मँगाय तेहि बेर दीन ॥
कय सेव अग्र ठाकुर सुशुद्ध । वाजियो व ठाकुर नाम जुद्ध ॥
बैठंत राज आल्हन नरेश । मारियो जाय पूरब्ब देश ॥
पट्टान गयाके जेर कीन । तहँ गर्वकोट इक लूटि लीन ॥
जीतियो जुद्ध निसरत्थ जाय। सम सहाबाद खर्गन खिलाय
केहरि कटेरिकै मन्न मारि । लीन्हें सुपील जयचंद धारि ॥
हिंडोन देश जादौ दहाय । लूटियो सिद्धि नव निद्धि पाय
पतिसाह फौज कइ बेर मारि। चालुक्क सिक्खको गर्व गारि॥
शत बार खेत परियो सुदंद । धरि स्वामिधर्म जस गजनंद
साँकरे स्वामि छंडै सुजाय । अग्गोरन इक्क गहरे पराय ॥
तुम सहा आज कनउज्ज चाव। साँकरे परेकि चंदेल राव ॥
जुहि होत बधाई नृपति कीन।धीर चामर मल्हनदे प्रवीन ॥
करि रुदन मल्हनदे कह्यो मोहिं।सो मात दिवलदे कह्यो तोहिं८७

दोहा–देवलदे कानन सुनौ, कह्यो मल्हनदे मोहिं ॥
भीर परा चदल पै, है मिलिबेकी तोहिं ॥ ८८ ॥

चौपाई ।

देवलदे तुम बाँची बंदिय । अरि परिमाल धार ना संधिय
गढसों आनि लग्यो पृथिराजै। आल्हा सीख देहु तुम काजै
बाँची व्यास छाइह मुख गाई। वाचा जगमें मुकति कहाई ॥
जो कुछ बाँचि दिवलदे बुल्लिब। आल्हा सुनत महोबे चल्लिब
पृथीराजसों युद्ध सु कीजै। स्वामिधर्मको फल अब लीजै
तब ऊदनि यह बोलिब बानी । होय महोबेकि चूरा घानी ॥
बुरे हाल काढे परिमालह । सो सब भूलि गई अब ख्यालह
जम्मानिक उद्दलको समुझावहि। कीजै सो जगमें जसु पावहि

माता दीन वचन करि रोई। तैं सब बनाफरनकी खोई ॥
स्वामिकाज इन देह न कट्टिय। इय करतार कूखि किन फट्टिय

छप्पै।

आल्ह उदलिय सुनत उट्ठि मुरडाय बीर दुहुँ। मातु सुक्ख मानियो जाय इम मरैं कुटुम सुहु॥ लरैं धरैं शिर धर्म कटैं किरवान पान धारि। करैं जुद्ध भरि पूर जाहि शोणित समुद्र तारि॥ जोगिनिय गिद्ध भायो करिहिं हूर बरैं सूरति घनिय। तो कोखि मात उज्जल करहिं चलि भेंटैं संभारि धनिय ॥ ९० ॥

दोहा—चलन महोबेकी सुनी, देवलदे सुख पाइ ॥
अरज करन जयचंदसों, चले बनाफर राइ॥ ९१॥

छप्पै।

देखि नयन जयचंद बोलि आल्हनसों बानी। क्यों आये दरबार उट्ठि इहि वेर गुमानी ॥ कसे कवच इक अंग जंग कंदल कासि भारिय। विदा किये कहुँ नाहिं नाहिं हंकारि पुकारिय॥ इमि कहत बनाफर जोरि कर लेन सुजगनिक आइयो। पृथीराज महोबे जुद्धकों सु हम परिमाल बुलाइयो ॥ ९२ ॥

चौपाई।

नैन रतन करि बोले बानी। मारिबे काज महोबे ठानी ॥
अबलों नोंन हमारो खायो। चंदेलन ढिग मरन बुलायो ॥
सिगरी जाय नाव बँद कीजे। आल्हा ऊदनि जान न दीजे॥
छावनि करहु हमारे पासहि। छाँडहु अबै महोबे आसहि॥
तब आल्हन्न रतन किये नैन। सुनि जयचन्द नृपतिके बैन॥
कनउज लूटि ऋद्धिसब हरिहौं। पाछे जुद्ध महोबे करिहौं ॥
आल्हा पंग क्रोध जब भये। ऊदनि शस्त्र हाथमो लये ॥
तबजगनिककहिबिरद विशालह। दीनीअरजालिखीपरिमालह

छप्पै ।

गढ दुर्गम खल भलत अरट्टय परत गिरग्गिरि। तृण बण-घन टूटंत धरनि धँस समाति हयन भारि । सर संभन खलभलत डिडिड्डिड्डाय करक्खय। कमठ पीठि कलमलति पुड्डमिपर भय रुवरक्खय॥ जयचन्द पयान प्रसंभरति पुनिब्रह्ममंड विछुट्टि है । नन चलहु न चालि नन चालि न चलि सुभमाचल प्रलय पलट्टि है ॥ ९४ ॥

चौपाई ।

अरजी बाँचि विरह सुनि भारी। कछु आल्हाको क्रोध निहारी
करैं चाकरी सेवा ठाई । पृथीराज पर कुमक पठाई ॥

छप्पै ।

बाँचि अरज जयचन्द कहे मुख वचन भाट वर । करै चाकरी प्रगट करहु उप्पर आतुर कर॥ पृथिराज पद्धरै सेनि वड आय सो किन्निय ।कुट्टि सारिसमा नगर लुट्टि धरनीधर लिन्निय॥ बुल्लाइ कुमर सँग आल्हके जुद्ध समर भर लिज्जिये। संभारि सेन बिजयपाल सुव तुम ज़ारि पिंग़ारि किज्जिये॥ ९६॥

दोहा–बाँचि अरज जयचंद नृप, बोलि दिवान हजूर ।
बिदा करो सेना सजो, आल्हा संग जरूर॥ ९७ ॥

छन्द मोतीदाम ।

बिदाकिये आल्ह सुपंगुल राय। दिये दश हयवर साज बनाय॥
दिये दुइ पील सुउज्ज्वल दंत। छहू ऋतु छाय रहे मय मंत ॥
दई दश वीनिके मोतिय माल। दई कर पहुँचिय रुद्र विशाल
दिये शिरोपायकसाब्बियसात। निरक्खत चंद मुसिक्कत जात
कटारि जरावकी दीनी हैदोइ। रखो तुम आल्ह क्षत्रीधर्म सोइ
बोल्यो इमि लक्खनसीकमधुज्ज। धरे भ्रम शीश सक्षात्रिय लज्ज
दई सँग फौज पचास हजार ।दिये दश डील बताइ जुझार ॥

दिये सँग मोरिय रूप सुशुद्ध। दिये सँग चालुकके सब जुद्ध॥
दिये सिकवार सुकूरमपाल। दिये सँग वैस सुवै ततकाल॥
दिये चहुँआन सुमंगल राय। दिये सँग बाबुल सेंगर पाय॥
दिये सँग सैंगर राय अमान। दिये सँग ताल्हन वेग पठान॥
हजार पचास दिये असवार। धरे सिरसामत धर्म दतार॥
दिये नृप आल्हको पान मँगाइ। लई नृप सीख चँदेल सहाइ॥
जगन्निक कारन पील मँगाय। समर्पिय पिंगुल साज बनाय॥
दिये सिरोपाय तुरी दुइ शुद्ध। दई द्रवि बीस हजार विबुद्ध॥
दिये दुइ ग्राम सुपत्र लिखाय। समप्पिय भाट सुपिंगुल राय॥
उठे जयचन्द बिदा किये आल्ह। समप्पिय फौज तबै ततकाल
पधारिय आल्ह हवेलिय सुद्ध। धरे हिय माँझ पिथौरह जुद्ध॥
हवेली सु आल्ह चलाव सुकीन। मँगायके पालकी पाँच नवीन
चढायकै देश चले सुख शूर। दुहूँ ठकुराइनि देश जरूर॥
चले चालि ऊदनि जोध सुवाह। गही सु महोबेकी फेरिक राह
करायकै पारथी पूजन आल्ह। अगन्नित आय तितै ततकाल॥
बधे करवान चढे हय सोइ। चले बढि ऊदनि सुकृत होइ॥
चले जगनिक्क किये जुध चाव। अबै सुख मानि चँदेलनि राव
निकासि कनव्वज बाहर सोइ। तहाँ भयो सोन छत्री भ्रम होइ
सम्मुख काक करालिय कूक। भयो दिशि जैमनी और उलूक॥
ठठक्किय भाट निरक्खि सुगुन्न। लिखी लरु आल्हसुसक्किव दन्न

चौपाई।

मुसकि आल्ह फिरि बोलिव बानी। तैं कछु होनहारकी जा[illegible]
सामत शूर अटल भर रक्खिय। औ कवि चंद भवानी भा[illegible]
उनसों जुद्ध न जीतैं कोइय। हिंदू तुरक मिलैं दल दो[illegible]इय॥
पातसाह करि उनसों हारचो। कनवज पतिको गर्व प्र[illegible]

दोहा–होनहार ऐसी लिखी, कही आल्ह अकुलाय ॥
हम सामंतानि जूझिहैं, राज चँदेल सुजाय ॥ १०० ॥

छप्पै ।

दुरजोधन परिमाल जबै बरज्यो नहिं मान्यो। तब घायल मरवाइ बात हम तबहीं जान्यो॥ फिरि फिरि ऊदनि बरजि करी बिनती हितकारी । चुगुलनि चुगुली करी बात बिगरी अति भारी हम देखत परिमालको जान दुःख देख्यो नहीं। सुनि भाट बात रजपूतकी बिहँसि आल्ह ऐसे कही ॥ १०१ ॥

चौपाई ।

जगनिक कही सु हम सब जानी। होनहार अबिगति नहिं मानी
गंगातट डेरा करवाये । कुमक दई सो आनि मिलाये ॥
लखनसी जाल्हनसी दोई। इन मिलि आल्ह मित्रता होई, १०

दोहा–मिहमानी देवल करी, संग एकही साज ॥
अन्न घृत्त पकवान शत, बहुनै स्वाद समाज ॥१०४॥
राति रहे उतरे नदी, चले महोबे बार ॥
कुमक लिये जयचन्दकी, विक्रम बीर जुझार॥ १०४॥

छन्द पद्धरी ।

चढि चलिय आल्ह ऊदाह्लै सोइ। उर स्वामि धर्म रातें बिलोइ गंजिये गांभे बाजिय निसान । सज्जिय जुवान अति जोरवान धरि पील अगिग पंचास पत्र । चलिये सुडील करिये न रंच जेमने शब्द स्यारस्स कीन। भख नीलकंठ मुख मक्खि लीन चमचामिय मेव पश्चिन दिसान। यह चित जानि लखिविग्रवान फिक्करिय दौरि आडी सुआय। जम्बूक शब्द बोले कुभाय ॥ सुरजमाँझ इक कवँधि दिक्खि। यह चित्त जोर लख्यो सलक्खि हँसि काहिय वेर अब कह लवाइ। रजपूत मरन मंगल बताइ इहि बात सोच कीजे न कोइ । रजपूत बात इक विकट

होइ ॥ दर कूच कूच कीने पयान । किय जुद्ध चाव मन उमँग मान ॥ कहु एकहीव समर है न चाय । परिमाल हेत कारि बाँधि भाय ॥ ताडंत तुरी मारंत सिंह । भुव भव्य बात भुगवै सुहिंह ॥ चहुँआन प्रतिज्ञा किये जुद्ध । परिमाल पान लखिबी बिबुद्ध ॥ पट्ठाइ दीन कासिद एक । आये सुजोध इह बात मेक ॥ केसरि मँगाय केसरिय कीन । सेवा मँगाय सुखसों अधीन ॥ उतसाह हर्ष किय मग्गलोय । साँकरे स्वामि जाने सुलोय ॥ कासिद पठे परिमाल पास । बैठियो भूप ऊंचे अवास ॥ गुदरिय खबरि दरबार जाय। आए सुबनाफर दोय भाय ॥ दरबार जाय बोल्यो जहूर। आए सुआल्ह सेवा हजूर॥ सुनि राज हर्ष मन बहुत कीन । उच्चरिय वचन चंदेल दीन॥ केतीक सेन आल्हन्न लाय । बोल्यो सुदीन कासिद चाय ॥ द्वै शत सुपील सेना सुभाय । पंचाश सहस इह पंगु राय ॥ लक्खन भतीज नृप संग दीन । सरदार आठ द्वै दश प्रवीन॥ ताल्हन्न पठान लाखन कुलीन। आल्हन्न काज ऊपर सुकीन॥

दोहा-सुनि बानी कासिदकी, किये नगारे वेन ॥
साजबाज सब साजिकै, सजि आये सब सेन॥ १०६॥
देवलदे जगनिक्क सँग, चली महोबे धाय ।
मल्हनदे सुनि खबरिको, आगे भई सुगाय ॥ १०७॥
मिली बागमें आयकै, अंगसों अंग मिलाय ।
एक पालकी बैठिकै, भूप सुवन घर जाइ ॥ १०८ ॥
देवलदे रानी निकट, कहि कनवजकी बात ।
वचन कहे जैचंदने, ते सब करे विख्यात ॥ १०९ ॥
जगनिक्को हाथी दियो, दोय गाम अजघट्ट ।
भाट निवाज चंदेलने, करी बडाई भट्ट ॥ ११० ॥

असवारी राजा सजी, सँग ब्रह्माजित लीन ।
तुरी बैठि परिमालजू, आल्ह मिलायो कीन॥ १११॥
आय आल्ह समुहे चले, लाखन ताल्हन संग ।
मिले आय सब बीचमें भेंटे राजानि अंग ॥ ११२ ॥

छंद हनूफाल ।

चढि चले आल्ह अमान । परिमाल आइय जान ॥ सिर पाय कीन सुअंग । चढि चले आल्ह निषंग । मिलि सबै निकट सुआय । परिमाल अंग लगाय ॥ मिलिटाक रूप जवीन । चंदेल आदर कीन ॥ चालुक्क केशव दास । परिमाल मिलिब हुलास ॥ तोमर सुवोहित आय। मिलि नृपतिके लगि पाय ॥ चढि जद्दवंद सुवाल।मिलिहेत करि परिमाल॥ चहुँआन मंगल आय।मिलियो नरेश सुधाय॥वड गुज्जरं सोनिंग । मिलियो सुराजनिअंग॥ मिलि सिक्र कूरम पाल। उठि अग्रराज निहाल ॥ सेंगर वराय अमान । मिलि भूप नूपुरवान॥ मिलि वैस अग्र सुकाल । मिलियो सु उठि परिमाल ॥ ढिग आय ताल्हन वेग । पट्ठान मिलिय सुतेग ॥ जयचन्द कुशल पुछाइ । फुरमान शीश चढाइ ॥ दिय आल्ह कारन राय । परगने चारि बताय ॥ मंगाइ हाथी दोइ । संमप्पि आल्हन सोइ ॥ मंगाइ मोतीमाल । पहुँची जवाँहर लाल ॥ शिरपेंच पन्नापान। मिलि जोति छाई भान॥ नृपजाल कंधे दीन। सनमान बहु विधि कीन ॥ उद्दल सुलागिव पाँय । नृप बोलि कंठ लगाय॥ दिय तुरी तेरह साजि। सुवरंन साज समाजि॥ रानी सुनिकट बुलाय । न्यौछावरैं करवाय ॥ करि अरज मल्हन एह। ये बात मोको देह ॥ फिरि आल्ह बोले ताम । मौसी तिहारे काम ॥ मोतीन आरति कीन। या भांति आदर लीन॥ सुख मानि सब मिलि भूप । गये सभा सुभग सरूप॥ ११३॥

दोहा-आल्हाकी जु बिदा करी, नृपति हवेली काज ॥
फौज उतारी पंगुकी, बागन माँझ समाज ॥ ११४ ॥
आल्हा आये सात दिन, भई खबरि पृथीराज ॥
बोलि कान्ह कैमास भर, कियो लरनको साज ११५

छप्पै ।

बोलि कान्ह कैमास बोलि सामंत महाभर । बोलि चंड-पुंडीर बोलि चामुंड मुंडवर ॥ बोलि लखन परिहार बोलि पंजून महामति । बोलि जंगरा राय बोलि कनकेश बिरद पति ॥ कमधुज्ज राय निड्डुर बुल्लिव वरदायक अरु बुल्लियव । सब मिलि मशूर सामंत हौ तंत्र मंत्र सब खुल्लियव ॥ ११६ ॥

दोहा-कहै चंद पृथिराज सुनि, ढील न कीजै नेत ॥
आयो आल्ह[१] कनौजते, सहस पचास समेत ॥ ११७॥

चौपाई ।

आल्हा सहस पचासक लायो । पंगुपती जो संग पठायो ॥
आये आल्ह सात दिन बीते । कीजै जुद्ध चँदेलन हीते ११८

दोहा-सुनि बानी कवि चन्दकी, पृथीराज महराज ॥
हुकुम कियो कागद लिखो, वेगि चँदेले काज ११९॥

चौपाई ।

दोइ मास हम छावनि कीनी । क्षत्री धर्म कारने चीनी ॥
अब चंदेल जुद्ध वर मंडहु । नातर नगर महोबो छंडहु ॥
गुण मंजरि मोहिं सालति दासी । घायल हने अनाहक नासी॥
पहिले जोम लरनको कीनो । अब चंदेल कहाँ बल हीनो ॥

---

१ यहाँ चंदने पृथीराजसे कहा कि अब ढील न करके शीघ्र युद्ध कीजिये, चंदको शांतिस्थापन कराना था न कि आपसमें बीरोंको लडवाय देशको निर्बल कराय भारतको गारत करानेमें सहायता दी ऐसा ही कन्नौजकी लडाईमें किया ।

दोहा–पहिले तुमने यों लिखी, जगनि कनौज पठाय ॥
आल्हा ऊदनि रूठि गये, लावैं ताहि मनाय॥१२१॥
मास दोय हम थँभि गये, मानि तिहारी बात ॥
अब आये आल्हा भये, गढै माँझ दिन सात॥१२२॥
कै जु जुद्ध वेगी करौ, कै भाजौ तजि ठाम ॥
कै जु हमारे ह्वै रहौ, बसौ आपने गाम ॥ १२३ ॥
या प्रकार कागद लिख्यो, कायथ चतुर सुजान ॥
जुद्ध करौ छाँडौ नगर, दोऊ बात सयान ॥ १२४ ॥
पत्री लिखि कासिद जबै, बोल्यो रामस्वरूप ॥
जाउ चँदेलेपै जहाँ, पत्री देहु अनूप ॥ १२५ ॥
या पत्रीको आजुही, आवै जल्द जवाब ॥
जुद्ध करौ छाँडौ नगर, रहौ हमारे ताव ॥ २२६ ॥
पत्री लै कासिद चल्यो, गही महोबे बाट ॥
गयो वेगि परिमाल पै, जहाँ चँदेले ठाट ॥ १२७ ॥
दिय कागज नृप नाथ कर, देहि जवाब लिखाय ॥
ढील करौ मति तनक अब, बाँचि लेहु सुख पाय१२८

चौपाई ।

सुनी दूतकी बानी राजा । बाँच्यो खत्त लिख्यो पृथिराजा॥
जे ब्यौरे लिखि भेजे रातैं । ते परिमाल बाँचि सब बातैं ॥
तब सिरदारी सबै बुलाई । राजा उर चिंता बहु छाई१२९॥
दोहा–बाँचतही राजा महा, पर्‌यो सोचके कूप ॥
महिला भोपति आदि दै, सबै बुलाये भूप ॥ १३०॥

छंद रघुनराज ।

बुलाय राज आल्हय । करंत मंत्र ख्यालयं ॥ बुलाय उद-लीनयं । कुमार द्वै प्रबीनयं । बुलाय प्रोहितं लिय । करंत मंत्र

जे कियं॥बुलाय कायथं कला।सुचार बुद्धिमें भला॥बुलाय राज हि त्रयं।अनेक जुद्ध जित्तयं॥बुलाय भाट लीनयं।नरेश थाप कीनयं॥ बुलाय साह सुंदरं।करंति बात इंदिरं॥ चँदेल वीर धीरय।गहरवार हीरयं॥बुलाय राज इंदिरं।मल्हन रानि मांदिरं॥तहाँ सुमंत्र कीनयं। अनेक मर्म चीनयं॥पिथौरा दूत आइयो। तुरंत जुद्ध ठाइयो॥सिताब जुद्ध मांडिये। नहीं तो ठाम छंडिये॥ कहै चंदेल आल्हते। करौ सुजुद्ध काल्हते॥ बुल्यो सुआल्ह नूपुरं॥ सुनौ चँदेल भूपुरं॥करौ सु जुद्ध दीनमें दिवस्स दोय तीनमें॥ बिचारि लोग आदनौ। लरिहलं हना-पनौ॥ कही चँदेल आल्हयं। कितेक सेन भालयं॥इहै बनाफरं कही। हजार साठि है सही॥ पचास पंगकी भली।करी सुदोइसै चली॥ गयंद तीनिसै इहाँ। दलं दलं परै जहाँ॥कियो हुकम्म जुद्धयं। करौ हथ्यार शुद्धयं॥ चंदेल चेतकी नयं। निकस्सि डेरा दीनय॥ करै सुजोध मंत्रयं। गुरू विशेष जंत्रयं॥१२१॥

दोहा-एक लाख हज्जार दश, सेना सबै चँदेल॥
करी पाँचसै सो सजी, कियो बनाफर पेल॥१२२

चौपाई।

शहर बाहिर डरा किय। मनमें कारि कारि करें हिये॥
पाछे मसलति करौ कराओ। पृथीराजको खत लिखवाओ॥

दोहा-लिखी पिथौरा कारने, सुनि संभरिके राय॥
एतवार दिन द्वादशी, करें जुद्ध हम आय॥१२४

चौपाई।

लिखि पत्री कासिद पठायो। जुद्ध चाव चंदेल करायो॥
सब दल डेरा बाहर कीन्हों।यह परिमाल लिख्यो कर दीन्हों

दोहा-लिख्यो बाँचि संभरि धनी, कियो लरनको साज।
मानौ रावण पर बहुरि, कोप्यौ रघुकुल राज१२६

शुक्रवार नौमी निकट, संभरि बीर नरिंद ॥
वोरन दल चंदेलको, कियो नगारो नंद ॥ १३७ ॥

छंद चामर ।

किने निसान नद पान बहसि सामंत सूरयं।मरदन कराये अंग न्हाये पान खायं पूरयं॥उत सुनी अप्छरी खरी उच्छरि अंग मंजन कीनयं।बहु फिरैं हरषी वाल सुरखी नैन अंजन दीनयं ॥ हर्षे कपाली खुली ताली रुंडमाली पूरयं । चौंसठ्ठि अगन वाधि उछंगानि हरैं अंगानि तूरयं॥पारिचारि धावैं चित्र आवैं गीत गावैं मंगलं। चहुँआन चन्देल खुले बहु खेल मेल उच्छलं ॥

चौपाई ।

सामंत शूर चढे जुद्ध चावहु । सार सँभारि सँभारि रावहु ॥
इतै सुभट्ट कवच कर लीने।उत अप्छरा सिंगार सुकीने १३९

दोहा-शूर कवच बाने बने, मंगल भरन सुभाव ॥
उतै अप्छरा तन सजैं, बरन बरनको चाव॥१४०

छन्द भुजंगी ।

इतै शूर न्हाये करैं ज्ञान ध्यानं । उतै अप्छरा अंग मंडैं सुभानं ॥ इतै टोप टंकारि शशि शूर मंडं।उतै अप्छरा कंचुकी धारि अंगं ॥ इतै शूर मोजा बनावंत भायं।उतै अप्छरा नूपुरं पन्हि पायं॥इतै शूर साँगे बंधे ताइतंपं।उतै अप्छरा जांघिया पान्हि जंघं ॥ इतै पाग पेचं सँभारंत शूरं । उतै शीश फूलं गुहावंति नूरं॥इतै शूरमा पागपै झिलम डारैं । उतै रुद्द रंभा सुमांगैं सँभारैं॥इतै शूर सर्व खरे खर्ग तंजैं।उतै अप्छरा अंजनं नैन अंजैं ॥ इतै शूर जमडाढकै बाढ दीनें।उतै अप्छरा कंकनं पान कीने॥इते शूर साँगै लिये हाथ न्यारी।उतै अप्छरा हाथ पर माल धारी॥इतै शूर तुलसीनकी माल भाई।उतै अप्छरा

माल मोती बनाई ॥ इतै शूर किरवान कम्मान नाई । उत अप्सरा चौंकि आंछे नचाई ॥ इतै शूर बीरं लिये हाथ नेजा। उतै अप्सरा आननं चंद तेजा॥ इतै नग सामंत घोरे नलीने। उतै अप्सरा साजि बिम्मान कीने ॥ कहै चन्द ऐसो निरक्खो न सोई । बरन्यो समानं परी बीर दोई ॥ १४१ ॥

चौपाई ।

परी शूर बरने कबि दोऊ । उत परिमाल सजे दल सोऊ॥
दोइ कोशको बीच सुकीनो । दुहुँ दल आय पयानो लीनो॥

दोहा-नौमी तिथि शुक्रहि दिवस, चढे सकल सजि शूर ॥
दोय कोश अंतर रहिव, गहिव मुकाम जरूर ॥ १४२

छप्पै ।

करि मसलति परिमाल आल्ह ऊदनि ढिग बुल्लिव । अरु कायथ कल्यान धर्म धरि प्रोहित तुल्लिव॥बोलिव जगनिक भाटबोलि लक्खनकमधुज्जह । बोलिव ताल्हन तुरक बोलि भोपति जम जुद्धह ॥ रानी सुबोलि परदा रखिय देवल ढिग बैठारियव। परिमाल कहै सामंतसों तत्त सुमंत्र उचारियव॥

चौपाइ ।

बोलिव सामा सहजसुजानहु । राजा आल्हाको मत मानहु ॥
देवल रानी ढिग बैठारो । पाछे लरनको मंत्र बिचारो ॥
राजा उठि भीतरको आयो । वाही ढिग आल्हा बैठायो ॥
रानी मल्हनदे अति बुल्लिव । पाछे बात मतेकी खुल्लिव ॥
तेज पिथौराको अतिकहिये । तासों जुद्ध कौन बिधि लहिये
हारैं नगर महोबो छूटै । दंड देहिं तौ अपयश फूटै ॥
फिरि देवलदे बोलिव बानी । सुनौ श्रवण राजा अरु रानी ॥
नीको होय करो सुविचारो । परिगह बोलि मतो सु उचारो

देवल कही सबै यह भाखौं । रामायण भारथकी राखौं ॥
स्वामि सांकरे छाँडन कहै । चंद सूरलौं नरकहि रहै ॥
अपनो स्वामि सांकरे छांडै । आपु न आय फेरि घरु मांडै
पौन नीर तौलौं नर्कहि परई । ताकी साखि ब्यास मुनिभरई
खाविंद हेत आपुसों मरैं । क्षत्रीधर्म शीश पर धरैं ॥
वे जीवत सत कहिये नारी । पार्वतीको अंश निहारी ॥
बोले आल्ह सुनो हो माता । कलिजुगमें राखो इहि बाता॥
संभरेशकी फौजहि मारौं सामत खंड खंड करि डारौं ॥
तो कुलकाज चढाऊँ पानी । भुवि मंडलमें चले कहानी ॥
मल्हनदे बोली तब बानी । आल्हा सीख हमारी मानी ॥
सामतशूरविषमअतिसुनिये । राखौं देश दंड दै दुनिये ॥
उद्दल वैनतमाकि करिबुल्लिव। अब इन बातन काहे खुल्लिव॥
घायल मारत मैं वर जाने । अब क्यों माता भये सयाने ॥

दोहा—चारि बार बिनती करी, मानी नहीं लगार ॥
अब क्यों राजा समुझियो, लखि सामंतन भार १४६
हम होते निरखै नहीं, बुरी तिहारि नरेश ॥
काम आय जब बिगरिहै, महुबा नगर सुवेश॥ १४७॥
तुम आगे परिमालजू, मरिहैं दोऊ भाय ॥
वरैं अप्सरा हम जबहिं, राज चँदेल सुजाय॥ १४८॥
होनहार को मेटि है, कही दिवलदे सुद्ध ॥
नोन सींचि चंदेलको, पूत सुधारहु जुद्ध ॥ १४९ ॥
मसलति करि बाहिर कढे, आल्हा उद नरेश ॥
उतै मारि पज्जारिकै, चामुंड धारचो देश ॥ १५० ॥
जारि गाँव उज्जारिकै, लूटी ऋद्धि अचेत ॥
दौरि लरौ चंदेलजू, थोरो जोरो हेत ॥ १५१ ॥

इतनी सुनि आल्हा सुभट, उठ्यो लाल कारि नैन ॥
चलो लरो ढील न करो, कहे तेज हो वैन ॥ १५२ ॥
तब बरजे परिमाल नृप, आजु शनीचर बार ॥
कालिह करा पृथिराजसों, जुद्ध सुबुद्ध बिचार ॥ १५३ ॥
जा धरतकिो खायके, धूआं देखै कोइ ॥
कहैं आल्ह परिमालसों, क्षत्री धर्म न होइ ॥ १५४ ॥
राजानि आगे पैज कारि, कही बनाफर सोइ ॥
प्रात करों पृथिराजसों, जुद्ध विरुद्धह होइ ॥ १५५ ॥
सबहीको नृप सीख दै, गेर महल फिरि आय ॥
रानीसों मसलत करैं, मन धारि चिंता लाय ॥ १५६

चौपाई ।

बोलि चदल सुनो हो रानी । अबतो दोष पाछिला मानी ॥
आइ चढ्यो चहुँआन हँकारो। करता विन को है रखवारो ॥
रानी कहै सुनो हो राजा । करो सबेरे सेन समाजा ॥
प्रात जुद्ध कीजै आभूतं । मिलिहै राज दुहूँ दल दूतं ॥
आल्हा गयो हवेली आपुन।उद्दल इन्दल मिलन समातुन ॥
भोजन कीना एकहि होइ । इंदल सहित मिले सब कोइ ॥
गेर महल ह्वाँ कंदप खुल्ले ।अधरामृत अमृत सम तुल्ले १५७

छप्पै ।

पहर निशा पिछलिय जागि उठि नीर मँगाइब । करिव न्हानि दै दान ध्यान गोरखका लाइब ॥ कियो बनाफर होम नवग्रह पूजा कीनी। हनू पताका जंत्र धारि शोभित भुज दीनी आइयो तुरी पाछिले पहर तापर असवारी कियब । साजि चले लरन चहुँआनसों हत्थ बीर लोहा लियब॥ १५८॥ तबहीं उद्दल लिय बोलि कही बातें समझाइब । पृथीराज चहुँआन ॥

पैज करि कारि चढि आइब ॥ लेहु बार कर तेग देहु दुर्जनके धाइब । लरौ करौ रन आजु अवनिपै सुजस चलाइब॥ धारियो न पाउँ पाछे अहुटि शूरनसों संग्राम रुचौ ॥ राखियो नाम जस राजको शीश छाँडि रुंडहि नचौ ॥ १५९ ॥

चौपाई ।

इइ सुनि उदल वचन उचारिब। भाई तुम नीकी सुबिचारिब सामंतनसों खगन खेलह। पृथीराजसों ठट्टन ठेलह ॥ देवल कहै सुनौ सुत दोई । नैन हलाहल करौ तुम सोई ॥ खाँइदके आगे शिर दीजै । निर्भय राज स्वर्गको लीजै ॥ नव ठकुरानि उदलकी बुल्लिव।सुनिहौ सासु वचन इमि भुल्लिव निहचै वेद नरक हित भाष्यो । पीव मरत तिरिया तन राष्यौ

दोहा—पीव मरत तिरिया रहै, करै पूतकी आस ॥
सो रानी निहचै लहै, महा नरकको वास ॥ १६१ ॥
भयो प्रात परिमाल उठि, न्हान दान दै भूर ॥
कियो नगारो फौजमें, भये त्यार सब शूर ॥ १६२ ॥

चौपाई ।

राजा जागि नगारो कीनो । आल्हा काजै आयसु दीनो ॥ सही नाद बाजी महनाई । बजी पाखेरैं हैवरठाई ॥ १६३

छंद पद्धरी ।

बुल्लाय आल्ह ऊदलहु राज । कीनो सुनगारो बंब साज ॥
बुल्लाय पुत्र नृप संग लीन । बिल इना शूर वाठे नकीन॥
चंदेल कही सुनि आल्ह शूर । घोडे सु बाँटि दीजै जरूर ॥
तब सुनि आल्ह विद्या निधान। घोडे मँगाय बोले जुवान ॥
दल ठेल तुरी ऊदलहि दीन । कुम्मेद रंग सुन्दर नबीन ॥
बोदला दियो नवलेस काज। तुरकी तरेर साहर समाज ॥
हरिपाल केहरी वाजि हाल । चंचल सुचित्त सुन्दर सुचाल

भोपत्ति काज दिय जग जीत। सुरखा सुरंग पुट्ठे अदीत ॥
नारेन काज दिय तेज रूप। ऐराकि जाति लिय नृप अनूप
जगनिक्क भाट बोल्यो हजूर। दीनो अनूप हय राज शूर ॥
ताल्हन्न बोलि आगे नरेश। दीनो कुरंग बाजी सुवेश ॥
सामंत और अन्नेक नाम। अन्नेक वाजि दीने सकाम ॥
पाइगातुरी इक शत हजार। दीनी सुबाँटि कारि कारि विचार
परिमाल सेन हज्जार साठि। साजियो शूर चंदेल घाटि ॥
पंचास सहस जयचंद रौल। ते किये शूर आगे हरौल ॥
हाथी सुदोय शतपंच फौज। तनिसै पील जयचंद चौज ॥
हय पीठि आल्ह असवार होय। परिमाल राज उच्चरिय सोय॥
सब फौज आप सरदार ईश। सब जुद्ध लाज तोरे जु शीश॥
उच्चरयो बनाफर सुन चंदेल। हैवर मँगाय दल करिव पेल ॥
परिहार उच्चरिव सुनहु राज। आसरे आल्ह चढिये समाज॥
पाँचसै पील जासंग पूर। परिहै सुभारत शीश चूर ॥
इत सुनी बात पृथिराज पेल। कीनी सु जुद्ध त्यारी चंदेल॥
सुनि शूरबीर चौहान रान। बाजंत बंब समुह उठान ॥
मुख अग्र कन्ह पुंडीर चंद। बिहँसे सुशूर सुनि कन्ह दंद ॥
दिक्खिथो फौज चंदेल राव। कापंत देह डगमगत पाँव ॥
दृग मूँदि बैन किलकारकीन। आल्हन्न पास बुलवाय लीन॥
मोपर न जुद्ध ह्वैहै सुजान। पृथिराज फाज भारी प्रमान ॥
कीजियेआल्हअबकछुउपाय। संकट निवास मेरो मिटाय ॥
दीजिये दंड पृथिराज काज। छाँडिये आल्ह संभारि समाज॥
दीजिये सुता अधराजछाँडि। चहुँआन संग नहिं जुद्धमाँडि

चौपाई।

काँपि कही परिमाल नरेशह। आल्हा आधो दीजे देशह॥
लाख पचास दरबिऔ कन्या। लै चहुँआन मिलाय सुधन्या

छप्पै ।

सुनिव आल्ह इमि वचन नयन राते करि बुल्लिव । दीन वचन रण चढे राज ऐसे मति खुल्लिव ॥ एक लाख दश सहस सन मंडित चहुँ ओरह । आपु राज देखिये मारि सामंत न तोरह ॥ लडे एकते एक ह्वै देहिं दंड पृथिराज तब । रन चढे पाउँ पाछे धरत छत्रिधर्म घटि जाय सब ॥ १६६ ॥ क्यों जगनिक सुपठाय मोहि कनवजते बुल्लव । क्यों राखो पृथीराज मास द्वै तब क्यों भुल्लव ॥ काहेको सजि सेन किये डेरा सनमुक्खह । काह खत भिजवाय लरनकी त्यारी रुक्खह ॥ पहले न दंड दीन्हा समुझि अब बानी कातरता करत । तुम सिद्धि करौ गढको अबै पृथीराजसों हम लरत ॥ १६७ ॥

दोहा—महला भोपति संग लै, दलते कढे चँदेल ॥
पिली फौज पृथीराजकी, झिली बनाफर सेल ॥ १६८ ॥
ब्रह्माजित सँग बापके, गयो करनगढ माहिं ॥
उतै बनाफरने करी, चारि फौज रनमाहिं ॥ १६९ ॥

छन्द मोतीदाम ।

लखि राजन फौज चदल चले । तिहि ऊपरकान्ह अमान पिले ॥ तब आल्हन रोंकि लिये सबही । करिबे हम जुद्ध खडे अबहीं ॥ नृपकी खुशी देखनको गडसें । हम जुद्ध करें तुमसों अडसें ॥ तब कान्ह कही नृप भागि गयो । तुम चाकरते कह जुद्ध रह्यो ॥ जियमें प्रभु हारि गयो जिनको । दल जीति सकै कहु क्यों तिनको ॥ तब आल्ह कही चहुआन सुनो । तुम ओरनमें हमको न गिनो ॥ जिन चाबि चना भ्रमसो नरचा । करिहैं सबकी किरचैं किरचैं ॥ न करौ अब ढील घरी पलको । लखियो तुम जुद्ध बनाफरको ॥ इत लक्खि त्रिलोकिय सेन घनी । चहुँ-

आन बनाइय चारि अनी ॥ मुख अग्र सुकन्ह अमान कियो। भर चंदपुंडीर सुअंग दियो ॥ तिनमें परिहार सुलक्खनयं। सँग संजमराय सुभक्खनयं ॥ अचलेश हरीसिंह सो गुरयं। जहँ जद्दवराय ऋषीस्वरयं ॥ इतने सिरदार अगे धरियं। फिरि दाहिनी बाजु कसो करिय॥कछवाह पजून सुपाल्हनयं। सिक्रवार जुझार सुजाल्हनयं ॥ नरसिंह पहार सुतोरनय। सँग धामर धीर अमोरनय ॥ बिंझराज समाज सयंधरयं। सँग दाहिमा सामत दावरियं॥जहँ खिच्चिय देव सुजैत पिल्यो। सँग हाहुली राय अमार चल्यो ॥ दिशि दाहिनि सामँत एकरियं। हनुमंत समान बली वरियं ॥ दिशि वाइयँ भौंह चँदेल किये। अचलेस भले सिय संग दिये ॥ दोइ दीन सुमीर गँभीर नरं। अत ताइय संभर ईश वर ॥ जहँ मल्ल चँदेल सुपूर नयं। दिय बाईं दिशा मुख नूरनयं ॥ जहँ सीनग मल्ल कमच्छ मिले। परिहार सुनाहर संग चले ॥ सह सामल सामंत सग दिये। जहँ खेत खगार निशंक लिये ॥ कयमास कमध्वज विक्रमय। जहँ गौर सुछत्रिय सौभ्र मियं। हलकारिय सेन नरेश लियं। दिशि पश्चिम सामत ये करियं॥ चतुरंगिय सेन बनाइ लिय। मनसी मनसे अब जुद्ध कियं। उत लक्खन फौज सुदोय कियं। हलकारि कमध्वज लोह लियं ॥ कमधुज्ज सुलक्खन ताल्हकिय। चहुँआन सुमंगल संग दियं॥ सिक्रतार सुतोमर पाल्हनय। जहाँ मोरिय रूप सुजाल्हनयं॥ जहँ जादव राय सुरूप धरं ॥ तहाँ चालुक सारंग बीर वरं। तहँ ताल्हन बेग हरोल कियं। दल बीस हजार सुसंग दियं ॥ बिच तीस हजार सुगोल रची।सिरदार सुलक्खन संग सची॥ हय पीठि सुआल्ह बनाफरयं। तिहिं अग्र सुउद्दल ह्वै सुगयं॥

दिशि बाइयँ मोहनदास कियं। सुरकासिय जुद्धको बर्तलियं॥ अरसिंह सुसिंह समाज वरं। गजराज सुसाजि चल्यो अभरं॥ तहाँ सेंगर राय अमान भयं। जिन बाइँ दिशा भरने भरयं॥ दिशि दाहिनी ओर सबै सुरयं। दुतियं दल रोकि अनेक हयं। बरने अति तोमर मोहनयं। परिमाल सबै दल सोहनयं॥ महि कर्म सिवाझर आगरयं। इतने भट दाहिनि ओर भयं॥ दल बानियाके सब संग चलं। मकरंद सुकायथ भूरि बलं॥ लखि देव करन्न सुरंजनयं। क्रमचंद सुहाथ गुरज्ज नयं॥ बड गुज्जर बागरी पच्छिमयं। सब फौज बनी शुभ कुच्छनयं १७०

चौपाई।

पंग पचास हजार चले पिलि। और पचास चंदेलनको मिलि चारि फौज आल्हा लखि सारह। पृथीराजसों वीस हजारह॥

दोहा—देखि फौज परिमाल नृप, काँपि चल्यो तन पान॥
दश हजार भर संग लै, गये महोबे थान॥ १७२॥
मल्हनदे आवत लखे, ब्रह्मजीत परिमाल॥
महा दुःख दारुण भयो, बाढ्यो कोप कराल॥ १७३॥

छन्द भुजंगी।

कही बात रानी महाराज ऐसे। अनी छोंडि आए यहाँ आप कैसे॥ सुनी बात राजा कही राज रानी। पृथीराजको देखिकै भीति मानी॥ सुता राज आधो बिचारो सुमैंने। मिलै लाख पंचास लै द्रव्य वैने॥ नहीं आल्ह मानी कही आजु मेरी। कही जाउ मोसों कलिंजर कनेरी॥ करैंगे पृथीराजसों जंग भारी। कहो जो कछू सो करौं आजु प्यारी॥ कही ना गई रोसु चंदेल कानी। ब्रह्माजीतकी ओर रानी रिसानी॥ अरे पूत धिक्कार मोको महा है। किहू कर्म छत्री न जाने कहा है॥ नहीं जानती बीज चंदेल काको। कहायो सुमू बोरिया

पूत जाको ॥ भया कूखि मेरी बडो दुःख मोको । पर्‌यो कूप क्यों ना नहीं ठौर तोको ॥ सुनी मातकी यों ब्रह्माजीत बानी।भयो दुःख मनमें सुधिक्कार मानी । अरी मात मोसों कहै वैन कैसे । हनों चाहुँआनै करी सिंह जैसे ॥ कह्यो क्यों न मानिये शासन पिताकी ॥ लगै दोष भारी कहौं मैं हिताकी ॥ भयो वृद्ध राजा गई बुद्धि जाकी । भयो का जो भई दसा दीन ताकी ॥ लये जीतिकै देश अनेक जाने। पखारयो सही सिंधुमें खर्ग जाने ॥ दिना फेरकी बात माता न जानी । बली स्यारसे होत कातर गुमानी ॥ इन्हैं देखि व्याकुल सु आयो करन मैं।अबै जाउँगो मा तहाँई लरन मैं ॥ करौंगो धरामें कछू नाम ऐसो । लरौंगो सुनौंगी श्रवण माहिं तैसो ॥करौं ऊजरी कोखि तेरी महाही॥सुजसको लहौं आजु रनमें लहाही ॥ किताकी करौ सेव चिंता न कीजे। पतिव्रताहीको महा धर्म लीजे ॥ १७४ ॥

छप्पै ।

सुभट शूर ब्रह्मजीत वचन जिमि इमि उच्चारिव। संभरेशकी मारि फौज सब शूर बितारिव।हरहुँ गर्व चहुंआन लरहुं बिन शीश धरापर।करहुँ सुजस जगमाहिं भरहुं खप्पर जुग्गिनि वर ॥ गिद्धनि अघाय पूरन करहुँ शिव मालाहूरन बरहुं। शोणित समुद्र तारि जाहु मा मल्हनदे ऊज्ज्वल करहुं॥ १७५

दोहा-ब्रह्माजित आयो बगदि,क्षत्री धर्म बिचारि ॥
लरन परन मनमें करन, पृथीराजसों रारि ॥ १७६॥
जुरी अनी शूरन दपटि, लरत हँकारि हँकारि ॥
दुहूँ दलनके बीचमें, होत मारही मारि ॥ १७७ ॥

छंद भुजंगी ।

दुहूँ सेन मिल्ली दुहूँ बाग लीनी।दुहूँ धारि धर्मं वरन अप्प

कीनी ॥ दुहूँ साँग कट्टी दुहूँ कोर वट्टी।दुहूँ वाक बानी सबद्दं उचट्टी॥बजैं भेरि नीसान जंगं तबल्लं।बजैं शख तुरही हथल्लं सुसल्लं ॥ दुहूँ नाद कीन्हें सुरंशंख भारी । दुहू नाम हंके सुहेहें हंकारी ॥ कहै चंद ऐसे सुनौ चाहुआनं । चलाओ सु नेजा सुवाई भुजानं ॥ मुखं मंत्र जंपै सुइष्ट भवानी।मिलाओ बलं बाँधि धावै जनानी॥ आगे कीन सेना सुचंडोल हाथी। रहैं पुट्टि असवार बिलहंत साथी ॥ नचायं तुरी कान्ह पट्टी उठाई।किधौं रामपै राम भौहैं रुठाई ॥ आगे आप हाथीनपै हाथ वाहैं। वरं दत खैंचैं उपारैं उमाहैं ॥उपारं उदंतं बली बाहु जोरैं । गहैं पुच्छ सुडाव गामैं अमोरैं ॥ कहं डील सुंडानपै तेग लावैं। गहैं कोपि दक्षं धरन्नी कि लावैं ॥ कहूँ अंग धायं कहूँ कीन रोरैं । कहूं मारु मारैं कहूं शूर दोरैं ॥कहूं पील सुंडं पकरि खैंच मारैं । कहूं शूर शीश सिरं तेग झारैं॥ कहूं कायरं खाय भै खाय भाजैं । लडैं शूर केते रनं लाज लाजैं ॥ कहूँ बीर वाने तराने तराजैं । कहूँ जुद्धके आयुधैं हाथ साजैं॥कहूँ कीकि हीकं कटारी चलावैं । कहूँ मल्ल नाराच मुंडी बहावैं कहूँ कंध बंधं कहूं रद्द हीकं । कहूं घाव कुत्ती कहूँ पीक लीकं कहूँ हक्क धक्कं दुहूँ सोनि सोई ।वजामैं वरं लोह निमोंह होई॥ करैं खंड खंडं अखडं अखारे।किते एक जोधानके शीश फारे॥ वरं सांगि लागे उरं फार होई।गिरैं नट्टवासे कला चूकि सोई॥ लगे तीर हीकं हियं होस भाजैं।गडैं पार ह्वैके धरन्नी समाजैं ॥ किते मारु मारं किते हाय हाय । किते पांय प्यादे करैं चाय चायं ॥ गिरैं शीश तेगं गुहैं गोर मालं। मनो भाय फांसी उतारं कलालं ॥ चलैं बीर बैताल हालं प्रचंडं । लरैं पंडवासे करैं खंड खंडं ॥ भुसंडैं उडैं सो भुजा जंग अंगं। अखंडं बली धीर वारं अभंगं ॥ बहैं कंधरीवान वेधं खुलामैं । परैं मुंड धरनी सुरुंडं नचामैं ॥गुरंजं बहैं शीश मानी भवानी।

वरच्छी तिरच्छी लगामें अमानी ॥ बहैं खंजरं मारु मारुं त-तारं । परैं पीर धरनी समानं वितीरं ॥ करैं बारहंका कटारी करूरं । परी मारु मित्रं परे चक्रचूरं ॥इसी भाँति कन्हं कियो जुद्ध भारी । मिट्यो ध्यान अंबा खुली रुद्र तारी ॥ १७८ ॥

दोहा-कन्ह कटक कीन्हों कहर, हटक परी मन माहिं ॥
भटकि भीर भाजे बली, कोऊ बगदतु नाहिं॥ १७९॥

छंद रसावली ।

कन्ह कोप्यो जबै । कीन जुद्धं तबै ॥ धाय सूधे बली । सर्व फौजैं दली ॥ धाय सूरं गहैं।डारि धरनी रहैं ॥ मार बाणं कियं । खाय सेलं लियं ॥ राज राजं दुखं । खाय रारैं मुखं॥ बीर नादं रचैं । चाय केते मचैं ॥बीर बानं धरे । खाय सूरं भरे ॥ फौज कंपी जबै । कन्ह देख्यो तबै ॥ १८० ॥

छप्पै ।

देखि कान्हको जुद्ध आल्ह लक्खनसी बुल्लिव । ताल्हन वेग पठान रूप मोरी रव खुल्लिव॥सोलंखी बीर केसरी वीर कल्याण बीरवर । तोमर वोहित बीर धीर बोले सुंपीर पर ॥ चहुँआन कन्ह भारी प्रबल जुद्ध करौ सब एक ह्वै । दलथंभ आपु हय छंडिके संभारो सेना सबै ॥ १८१ ॥

दोहा-ताल्हा हय दौराइकै, संभारी सब सैन ॥
लेहु लोहु सब हाथमें, लरौ करौ हिय मैन ॥ १८२ ॥

छंदपद्धरी ।

धामंत ताल संभारि सेनि। सिरदार आठ बर महे तेनि॥ गोइंद राय हारि पंद सोइ । इक्कल बलाइ दल सलख लोइ ॥ मोरी सरूर सैंगर अमानि।जादो सुइंद वर गह्यो पानि॥मंगल चोहान तोमर जुवान।चालुक्क केसरी सुबल मान॥ बड गुज्जर राना महाबाहु । सुज्जान वैस संभारि सुचाहु ॥ नरहरिय वैस कायथ कल्यान।सैंगर बराय जल्हन जुवान॥बंबेल शूर पूरन

अमोर।लोधी सुशीश रामं सुजोर॥गोकुल सुवघेलो रूपराज।
गोतम जुझार इन्दलि समाज॥ पाल्हन पमार भगवान शूर।
निडुरहराय डोंगर जरूर ॥ जगनिक भाट जाल्हन जुवान ॥
विनियाँसु ईसुरा सुबलवान ।कायत्थ कर्मचंन्दं बलिष्ट। मक-
रन्द जानु श्रीबास इष्ट॥ हरिचंद वेव कन दुरित जोर। किरपा
सुगौर जुद्धं अमोर ॥ मंदोर भूप निजराज शूर । कछवाह
राम लीने सुनूर ॥ गंभीर तेग अज्जानबाहु । अनिरुद्ध सिंह
सेंगर सुनाहु।बिरसिंह बीर सुरखी सुमूर । जट्टवा राय कमनै-
त पूर ॥ परिमाल सेन इतने हजूर । नवरंग राय रघुवंश
शूर॥पृथीराज सेन सामंत दंद । कयमास कन्ह पुंडीरचंद ॥
निडुरह राय पज्जून मोइ । बीरं बलिष्ट नरसिंह लोइ ॥ हा-
हुली राय हंबीर पीर । लक्खन पमार संयोग हीर ॥ रावत्त
राम तोंवर पहार । संझिमा राय विरसिंह सार॥ वर अत्तवा-
य चहुँआन बंक । नरनाह कन्ह आगे निशंक॥ चामुंडराय
धामर सुधीर । खेता पगार पाल्हन सुबीर ॥ परिमाल सेन
लक्खन सुधाय । पृथीराज सेन निडुरह राय ॥ धाये सु-
दोय मुक मेल कीन।धरिधर्म हाथ किरवान लीन ॥ १८३॥

दोहा—लक्खनसी परिमाल दल, निडुर दल चहुँआन ॥
आहुरियो सामंत ए, सरसे बीर अमान ॥ १८४ ॥

चौपाई ।

लक्खन पंग भतीजो इतमें । पृथीराज निडुर दल जितमें ॥
एक द्वै बीर आहुरे जंगह । लालचंदेल संभारयो अंगह१८५

छंद त्रोटक ।

लखि लक्खन निडुरसी धरनं। चहुँआन चंदेल निरखि भवनं
कमधुज्ज सो दोउअ ओर अरे।बहु लाज जंजीरनिसों जकरे॥

हलकार दुहूँ जन लोह लियं । निरखे चहुँआन चँदेल हियं ॥
लगि तीर सनाहनि पार कियं। मछरी मनो जालमें सुक्खलियं
लगि सेल बखत्तर पार भये । मुख पन्नग वारिमेंकाढ़ि लिये॥
किरवान बहैं भुजदंड मथं । तरबूज मनौ हरकंत मथं ॥
तरवारि चलैं दुहुँ ओर लरं । बिन शीश लरैं शिर टूटि परं
गहि लेत गयंद नरिंद करं । पकरैं कर सुंड फिराय तरं ॥
उचकायके पुच्छव नील हियं।हनुमंत दौनागिरिलौं गहियं॥
हयके गहि पायँ पटक्कि धरं । तरवारि दई असवार मरं ॥
इक सत्थ लरैं भरवत्थ बली । तहँ शोणितक्कि सरिता जु चली
इहि भाँति दुहूँ जन जुद्ध कियं। तजि शंक निशंकसमानिहिय
जुरि लक्खन निड्डुर बीरमहा। इन दोइनने बड जुद्ध गहा ॥

छन्द पद्धरी ।

बिरचियोलोहलक्ख रुधाय। ता समैं कोपि निड्डुरह राय ॥
बाजंति बंब पीलन सुपीठि । मैना सुजानकी तेज डीठि ॥
हलकारिसेनिकिलक रिआय ।अपअप्प जीति चाहत सुभाय
लक्खन जुटत वजरंग बीर । निड्डुरहराय मज्जत गभीर ॥
हंकारि शब्द बल करत हंक । दलदपटि शूर दौरैं निशंक ॥
बिफरंज बीर बरनेत शूर । मुदगल उतंग मारत जरूर ॥
लगिखीलखीलह्वैजातशीश । दश पाँच आठ द्वै चार बीस ॥
गहि सुंड मुंड फेरंत पांय । हय फेंकि देत पूछैं फिराय ॥
मारंत पीर तोरंत मुंड । बाहंत तेग डोलंत रुंड ॥
गहिलेत एकको एक धाय ।गहि कमरि ज्वानं मारत फिराय
कायर कितेक कोपत डरात । केतेक शूर बीरं लगात ॥
केतेक तेग लगि होत रुंड । केतेक हाथ बिन शीश झुंड ॥
घायल कितेक धरपर अचेत । चहुँओर जोर भयो बीर खेत॥

लक्खनहिसंगताल्हनपठान । निंडुरह संग सेना सुजान ॥
हज्जार संग पंचास भीर । लक्खनहि संग सज्जति गहीर ॥
सिरदार आठ कमधुज्ज संग । दौरे सगोल बरिके अभंग ॥
निंडुरह राय पर हल्ल कीन । ताल्हन पठान आगे नवीन ॥
इकलो जु देखि निंडुरह राय । आये जु शूर परिमाल धाय ॥
खोलियोआँखिपट्टीसकान्ह । लैकारि गुरज्ज धायो अमान्ह ॥
सामुहे आय ताल्हन्न वेग । दीनी सुकान्हके आय तेग ॥
दीन्हीं गुरज्ज ताल्हन्न शीश । ह्वै गये मुंडके टूक बीस ॥
रुंडं हकारि फिरि हल्ल कीन । कयमास शीशमें गुरज दीन ॥
फिरिदयोकान्हमुदगरफिराय । टूट्यो पठान धरनी पराय ॥
तब दई तेग कयमास दौरि । ह्वैगये टूक धरके बितौरि ॥
सौनिंग देखि ताल्हन्न काम । चलियो सुसाजि सेंगरसुठाम
इनमें पजून कूरंम धाय । सौनिंग उतै सेंगर बराय ॥
लई हाथ सांगि सेंगर सु शूर । दीनी पजूनकै ही जरूर ॥
हीकं अपार चोटं लगाय । पुनि लई तेग पज्जून धाय ॥
दीनी दुहत्थ शीशं उडाय । गिरे धरे धरणि सेंगर बराय ॥
इत लगी सांगि हीकं अपार । भये अति अचेत पज्जूनसार
फिरि पिल्यो रूप मोरी मरद्द । केतेक शूर वरधै जरद्द ॥
चंदेल फौजके शूर धाय । मगंल चौहान नारै नराय ॥
केसव सुदास मल्हन अमान । सिरदार आठ सुन्दर सुजान
मचकंत धरनिलचकंतशीश । कसकंत कूर चंदेल देश ॥
बाजंत वज्र करि सँभारि सार । मानो करंत परबत्त पार ॥
इत पृथीराजके शूर धाय । सिरदार आठ भाजे सुभाय ॥

छप्पै ।

हनि ताल्हन पठान कान्हने काटे प्राणह । सेंगर सोनिगपर

कीन्हें बहु ज्वानह ॥ लडै एक रुड खेले बिन शीशह ।
कन्ह गुरज्जहं मारिकै ताल्ह शिर किय बीसह ॥ और हजार
रजपूत कटि हाँथी पंच पचास गिरि । चहुँआन हाँक सामंत
करि चली पंगकी फौज फिरि ॥ १८८ ॥

दोहा-पृथीराज दलमें परे, हाथी मस्त पचास ॥
अरु हजार रजपूत कटि, घायल शूर प्रकाश॥ १८९॥
कछवाहे पज्जूनके, लगी साँगि बहु सोइ ॥
परी मूर्छा धरणिपै, द्व सामन्तन खोइ ॥ १९० ॥
भजी फौज लाखन लखी, ताल्हन आये काम ॥
हाक मार,कमधुज्जने, बल करिकै दल थाम॥ १९१ ॥

चौपाई ।

जुरी सेन भाजी सब सोइय । फिरि रजपूत एकतन होइय ॥
जुरी सेन छत्तीस हजारह । भये अगारी फिर सरदारह ॥
निडुरराय फतेसिर बुल्लिब । बीर बीरतनमें रस झुल्लिब ॥
जुरी जंग फिर सामँत धाये । आयुध लये क्रोध उर छाये ॥

छंद मोतीदाम ।

हजार छतीस जुरे रन जुद्ध । सजे कमधुज्ज सुलक्खन सुद्ध ॥
इतै भर लक्खन नाभिय जुद्ध । उतै रुप्यो निंडुर रायसों जुद्ध
बहैं किरवान सुज्वानन हत्थ । करैं दल हंक सबै समरत्थ ॥
भभक्कति सेन चटक्कति तोप । करक्खत ज्वान दुहूँ दल कोप ॥
भनक्कय बान सु पजर बेधि । करक्खैं कमान दुहूँ कर छेदि॥
लगैं उर सांगि सुपील गिरंत । सनम्मुख शूर उपारत दंत ॥
धरैं कर खप्पर जुग्गिन जोर। हकाराति डोलति बोलति सोर॥
लगै शिर तेगन शूर परं । तबहीं सुवरंगना आय बरं ॥
लगैं उर खंजर पंजर पार । करैं किलकार सु जुग्गिनि लार॥

झटक्कत एक्कनको गहि एक । पटक्कत जाय धरापर टेक ॥
लटक्कत शीश हटक्कत शूर । चटक्कत तोप भटक्कट भूर ॥
सटक्कत तेग नटक्कत निद्ध । फटक्कत बीर गटक्कत गिद्ध ॥
ठठक्कत कायर घायन देखि । छटक्कत शूर धरापर पेखि ॥
बहै किरवान परै शिर शूर । करैं बपु रोष दुहू दलपूर ॥
मिले द ऽ लक्खन निंडुर राय । भये हग चारि किये हियचाय
लई कर ल ऽखन तेग सहाय । दई शिर निंडुरके सुख पाय॥
कट्यो लगि टोप लगा शिर आय । पर्यो धर मुर्छित निंडुरराय
लख्यौ जब लक्खन कान्ह सुधाय। लये सुकमान दिय सर आय
उठ्यो जब निंडुर लीय गुरज्ज। दई वर लक्खन शीश सुरज्ज ॥
हजारक टूक भये शिर सोइ । परे धर लक्खन लक्खन होइ॥
भयो फिरि मुर्च्छित निंडुर राय।गह्यो धर लक्खन अंतसुपाय
लई किरवान सो कान्हर कोपि। चले कयमास लये मुख ओपि
इतै सनमुक्ख सुबाबुल सज्जि । भये भगवान हरौल सुगज्जि॥
चले दलपत्ति लिये किरवान । चले नर बद्ध नरायण ज्वान॥
मुकुंद सु कायथ अग्र सुहोइ । इते जुर पंगकी फौजमें साइ ॥
इतै भयचंद पुंडीर जुमान । उतै भय बाबुल औ भगवान॥
लयो खर्ग चंदपुंडीर सु कोपि । दयो भगवानके शीशमें रोपि
लयो शिर पार धर्यो धर धीर । तबै उत आइय बाबुल बीर
नरायन दास नरव्वद कोपि । मिले इत कन्हर आय सुरोपि
मुगद्दर कन्हपै तीन सुडारि । लगे नहिं नेक सनमुख चारि॥
गहे जब कन्हर तीनों चरन्न । पक्किय लेकर पीन धरन्न ॥
भये धर चून गये जमलोक । भगी जयचन्दकि फौज सशोक

दोहा–भजी सेन सरदार है, थाँभी दलपाति दौरि ॥
जात कहाँ भाजे करौ, पृथीराजसों रौरि ॥ १९४ ॥

छंद भुजंगी ।

पिल्यो वैस दलपत्ति सनमुक्ख सूरो। गहैं तेग हत्थं समत्थं गरूरो ॥ पिल्यो चपियो जोध मकरंद बीरं । अखाडे परे ते पचारे अधीरं ॥ धरैं नोन शीशं मरैं खेत हेतं । फते स्वामि रट्टैं भये जो अचेतं ॥ बजै नाल गोला हयं सो सरक्कै । किते कावरं अंग जंगं करक्कैं ॥ मिले हत्थ हत्थं समत्थं सुवानी । मनौ थान खेलंत हेरी रमानी॥झुलैं झूल झूलैं झँझीलै झटक्कैं। किते कायरं भाजि न्यारे फटक्कैं॥इतै चंद पुंडीरमकरंद धायो। दुहूँ हत्थ तेगं हयं सो नचायो॥तवै चंद बोल्यो सुनौ कायथ- इहा । करौ जाय लिखनी कहा जुद्ध कइहो॥सुनी चंद मकरंद मुकमेल कीनो।लये हाथ तेगं अवेगं नवीनो॥दई चंद पुंडीरकै शीश जानी । मनों बीज आकाशते झिलमिलानी ॥ लटक्कै सुचंदं धरा मूरछायो । तिही ऊपरं दौरि कयमास आयो ॥ दई आय कयमास मकरंद ईशं।दई अंग संगी भई पार शीशं भई लागि न्यारी शिरं फार दोई।मनों बाँटिये फारि तरबूज सोई ॥ परचो कायथं सो धरंनी धरामैं।बरचो अप्सरा लैगई लै बरामैं ॥ गिरचो देखि मकरंद दलपत्ति धायो । लये हाथ कुत्ती हयं सो दबायो । दई आप हीकं कयंमास पीकं । भ्रमो सात बारं गिरचो मूरसीकं ॥ लख्यौ कन्ह कयमास सो मूरछायो । दलंपत्तिपै आय मुगदर चलायो ॥ भयो चूरचूरं दलंपत्ति खेतं । भयो चंद पुंडीर दलमें अचेतं ॥ १९५ ॥

चौपाई ।

कहैं आल्ह उद्दल सुनु भाई । कनउज कुमक काम सब आई
लाखन ताल्हन वचन निबाहे । पृथीराज दल खर्ग न माहे

दोहा-कही बात कनवज्जमें, सो साँचो कर दीन ॥
लरे मरे मारे बहुत, छत्री धर्म सुकीन ॥ १९७ ॥

ब्रह्माजीत बुलायकै, कहैं आल्ह इमि बैन ॥
जाउ आपु परिमालपै, करौ महोबे चैन ॥ १९८ ॥

छप्पै ।

उचारि आल्ह इमि वचन सुनौ ब्रह्माजितकान्हह। आपु जुद्ध रण छाँडि जाहु जीवत घर मानह। हम मारिहैं सब सुभट काम आवैं घर काजह। तुम कालिंजर जाउ मिलो चन्देल समाजह कीजियो बैन अज्यौ न तजि दंड दर्वि मुख भाक्खियो। मिलियो सुराज चहुँआनसों नगर महोबो रक्खियो ॥ १९९ ॥

छंद पद्धरी ।

उच्चरे ब्रह्मानन्द सुनौ आल्ह। चलिये जु शूर सामंत चाल॥
लीजिये बाग निमोंह होय। करिये न दूसरी बात कोय ॥
किज्जिये जुद्ध अब मोह छंडि। चहुँआन रानके गर्ब खंडि ॥
सुनि आल्ह बैन ऊदनि बुलाय। दीनो सु बोझ भारत्थ माय॥
सामंत पास बुल्लाय लीन । सबसों सुनाय करि बैन कीन ॥
सेना सुसाठि हज्जार तोलि । उच्चरे आल्ह जिय शंक बोलि॥
कनवज्ज नाथ दिय कुमक सुद्ध। आये सुकाम सामंत जुद्ध ॥
कमधुज्ज लखन ताल्हन पठान। पाहिले जुटंत पारि है जिठान॥
परिमाल शूर सबही सलाल । चंदेल नोन कीजे हलाल ॥
लीजिये लोह निमोंह होइ । चाहो सुजीव घर जाहु सोइ ॥

चौपाई ।

या विधि आल्ह बनाफर कही । सब रजपूत एक तन सही॥
छत्री धर्म काज शिर दीजे । जी चाहै सो रस्ता लीजे २०१

दोहा–आल्हन मंत्र सुनाय या, सबनि चित्त दिय खेल ।
अबहिं बरो सुर अप्सरा, नोनु उजारि चँदेल ॥२०२॥

छंद भुजंगी ।

कही बात आल्हा सुनौ ब्रह्मजीतं। करौ मत्ति चिन्ता लहौ बात

मीतं॥ अतुल जुद्ध सामंत देखे न भारी।करौ जुद्ध परिमाल नंदं विचारी॥तजौ जुद्ध सामंत नृप पास जा तू।करौ जाय निरशंक सेवा पिता तू॥लरैंगे मरैंगे करैंगे न लाचौं।करैंगे सुपारिमालको नोन साँचो॥कहो जाय चन्देलसों बात एही।मरैं के विजय पाय बगदे सुवेही॥विजय पायके आय तोते मिलैंगे।मरैं तो सुयश आय अवनिपे चलैंगे।तबै दीजिये दंड पृथीराज राजै। मिलौ आय आगे रहौ राज लाजै॥सुनी शूर बानी ब्रह्माजीत सारी। तबै आल्हसों बैन बोल्यो हँकारी ॥ २०३ ॥

दोहा--राजा धर जीतैं सुभरैं, करैं स्वगका भाग ॥
चहूँ वक्र जस विस्तरैं, हँसैं न दुर्जन लोग ॥ २०४ ॥

छप्पै।

फिर सुकहत ब्रह्मजीत आल्ह बानी सुनि लीजै।करौ पैंज परिमाल मारु सामतन कीजै।बरहु स्वर्गअप्छरा हरहुचहुँआन गर्व सब।भरहु जुग्गिनी पत्र रुधिरसों सुकर मुंडभव॥परिमाल नन्द इमि उच्चरत टूक टूक ह्वैके लरहु।काटौ सुदंत हस्तीनके मल्हन दे उज्जल करहु ॥ २०५ ॥

छंद मोतीदाम।

कहै ब्रह्माजीत सुवैन हुलास । सुनो सब फौज चँदेल निवास ॥ सुनौ उच बानिय ऊदल आल्ह। सबै चलौ शूर छत्री ध्रम चाल ॥ बुलाइय केशवदास चँदेल। करौ अरिसों अब फौज अमेल ॥लियो रायासिंह सुगौर बुलाय।सज्यो सँग लोधिय ईश्वर राय॥बुलायव भूपति मल्हन पूर। बुलायव बैस नरव्वद शूर॥मिल्यो चहुँआन सुरूप गहीर।दिये दिसवाइय भारिय भीर ॥ बुलाय बखान पठान चँदेल । मिल्यो शत्रुसाल सुमल्हन मेल ॥सकत्तिय सिंह सुसौम मरद्द। लिये

जगते ससुस्थाम सरद्द ॥ सज्यो परमानँद पूरण राय । दई दिश दक्खिन और बताय ॥ भये हरिवल्ल सु ऊदल आय । लिये सँग जाल्हन भाट प्रताप ॥ लियो चक्रपान बघेल सुशूर । दलं गहलोत भुजा भरि पूर ॥ जगन्निक दाहिमा डाहर दीन । इतै सरदार हरौल सुकीन॥बिचैं ब्रह्मजीत कुमार सुशूर । दलं शिरमौर सु आल्हनपूर ॥ अमान सुराय पमार परम्म । चले शिर धारि सो छत्रि धरम्म ॥ सबै दल जोरि हजार पचास । धरे शिर धर्म करै हिय हास ॥ २०६ ॥

चौपाई ।

दश हजार बाईं दिशि दीनी । आठ हजार गोलसों कीनी ॥ द्वादश सहस दाहिनी तोलइ।बीस हजार बीचमें गोलइ२०७

दोहा--सहस बीसके गोलमें,ब्रह्माजित अरु आल्ह ॥
आठ सहस सेना तबै, हंकारी तत्काल ॥ २०८ ॥

छंद पद्धरी ।

हलकारि आल्ह सेना सुपूर । सब भये शूर आगे हुजूर॥ हलकार शब्द किलकार कीन।अप अप्पु जुद्ध रणभार लीन ॥ कंगल सुअंग शिर टोप लोइ।सामंत उद्द आगे सुहोइ॥हज्जार आठ असवार संग।दौरे सुगोल करिकै उतंग॥ बारह हजार दक्षिण दिशान । दौरे सुहात लै बीर बान॥है गई एक सेना मिलाय ॥ हज्जार बीस हरि बल सुभाय॥उत पाँच सहस सेना हरौल।सिरदार आठ सुंदर सुडौल॥नरनाह कन्ह पुंडीरचंद। गोइंद राय गहलौत दंद॥पज्जून जैत भौंहाँ चंदेल।कनकेश बीर पम्मार पेल ॥ तोंवर पमार हाडा हमीर।संझिमा राय हाहुली हीर ॥ इतने हरौल सिरदार कीन। लै तेग सुभट हय छाँडि दीन ॥ऊदनि सुसंग सरदार इत्त।सकतेस सोमवंशी सुमित्त॥

दाहिमा शूर भोपति पास । जाल्हन्न राय जंगं हुलास ॥ अम्मान राय परिहार सोइ । बीरं बलिष्ठ नरसिंह लोइ ॥ प्रोहित्त परमनंदं सुचाल । भूनग भदौरिया छत्रसाल ॥ तोंबर पहार भुज धरा रुद्ध । अचलेश अजय उमँगे सु जुद्ध ॥ नवलेश अल्ह मन रन उमंग । कूदे सु एकही बार जंग ॥ इतने सु कूदि धरि जुद्ध लाज । हज्जार बीर ठाकुर समाज ॥ उतरं सु शूर दशहू दिशान । अप अप्प इष्ट वर करत पान ॥२०९॥

दोहा—चाहुँआन कन्हर प्रबल, उद्दल सुभट प्रताप ।
जुद्ध करनको सामुहे, भये बीर वर लाप ॥ २१० ॥

छंद त्रोटक ।

तजिकै हय उद्दल कन्ह लरं । गहिकै किरवान सुढाल करं ॥
उमँग चहुँआन चँदेल दलं । अप अप्प सुसेन कराय हलं ॥
गज उद्दल सौक हरोल कियं । गज सौक इतै उत पेलि दियं ॥
अति सुन्दर पीलन पांक्ति लगी । भर भादव जानि घटा उमँगी
उत उज्जल दंत लसंत सधें । बगुला घनमें जनु पंक्ति बंधें ॥
अति लाल बिशाल ध्वजारमकी । तडिता मनौ बद्दलमें चमकी
हँसती शत दोइ हरौल दियं । तिन ऊपर कन्ह सकोप कियं ॥
गहि दंत उपारत मंतवली । मनु मालिनी तोरति फूल कली ॥
हँसती शत दोइ जमाति भली । तहँ श्रोणितकी सरिता जो चली
पटकै गहि शुंड गयंद करं । हनुमंत गिरावत पानि गिरं ॥
बिरच्यो वर कान्ह अमान बली । दृगदेखिचंदेलकीफौजहली
पिलियो उत उद्दल तेज कियं । सब सेन समाज सु एक जियं ॥
पुनि बाग लई दल ऊपरयं । चहुँआन बनाफर भूपरयं ॥२११॥

दोहा—लरत शूर सन्मुख जहाँ, धरत धर्म शिर भार ॥
परत टूटि धरनी तक, करत मारई मार ॥ २१२ ॥

छंद मोतीदाम ।

गहैं किरवान सुज्वानन हत्थ । परे धर ऊपर शीश समत्थ ॥
करक्खि कमान करक्कर छुट्टि । खरक्कत बान सनाहनि फुट्टि ॥
गनंगन जुत्थ पलप्पल धाय । घनग्घन घायल होत पराय ॥
नरंनर लोह सुलोहुन पूर । चरंचर टुट्टय सीसय चूर ॥
छलब्बल खेलत मेलत मार । जरत जुवान झिलैं दल भार ॥
झलक्कत तेज झलाझल झेल । करैं दल शूर दुहूँ दिशि पेल ॥
डरड्डुर कायर कोपत देखि । रुणंकय रुण्ड खनकय पेखि ॥
ढरक्कत मुण्ड निरंखत नैन । करक्खत तीर परक्खत बैन ॥
थिरक्कति सेन मुरक्कति नाहिं । दरब्बर दौरि परैं दलमाहिं ॥
परंपर फुट्टत पापर पूर । फरप्फर फैलत फैंफट तूर ॥
खरक्खर खात रुपै दल दोइ । हरी हर नाम उचारत सोइ ॥
पिले इत सजम राय सहाय । उतै गहलौत दलप्पति राय ॥
पिल्यो मुख आय मरद्दनमेल । तजी किरवान लिये कर सेल
लगायब संजमक हिय सार । रह्यो सधि सूर भयो लगि पार
दई दलपत्तिके शीशमें तेग । सदासिव गौर लियो शिर वेग
लख्यौ तबभोपतिकीनिह रीस । दई उन दौरिके संजम शीश ॥
भ्रम्यो शत बार सुमूरछमानि । चल्यो नरसिंह सहाइक तानि
दई नरसिंह गुरज्ज सु शीश । पर्‍यो गिरि भोपति सोधरनीश
चले चक्रपानि इते नरसिंह । मिले दोउ बीच परी मनविंह ॥
बलब्बल होइ लरे मल सार । गिरे दोउ सग भई भरमार ॥
निकासि जमद्धरचक्रय पानि । दइ नरसिंहके हीकमें आनि ॥
दियो नरसिंह सुखजरआंत । मेरे चक्रपानि उभेरे दांत २१३

दोहा—चक्रपानि मारि जुद्ध तजि, अद्भुटि फौज परिमाल ॥
तबै आल्ह बानी कही, ब्रह्मजीतसों हाल ॥ २१४ ॥

छन्द छप्पै ।

मरन धार मंगालिय वीर ब्रह्माजीत सुआइव । भजे नृपति परिमाल देखि दल धर्म लजाइब ॥ कुट्टि कुटम पंगको कमध लक्खन जुरि जंगह । तिल तिल तन कटि गयो मरन छाँड्यो नहिं अंगह ॥ ताल्हन पठान बिन शीश रुपि अतुल पराक्रमं कमध किय । भाजत सैन जीवत माँहि उह मोहि दुःख सालंत हिय ॥ २१८ ॥

छंद पद्धरी ।

परिमाल नद हलकारि आय । बिरचियो कुँवर मंगल मनाय ॥
हलकारिसेन सब एक कीन । आल्हन्न शीशपर भार दीन ॥
ऊदल्ल सारु दिय संग शूर । फिरि चले जुद्धको ह्वै हजूर ॥
सक्रुतेस सोमवंशी जुवान । बकसी सुदेव क्रन सजि समान ॥
वर गहरवार सत्रसाल शूर । डोंगर सुदलन देवा हजूर ॥
तोमर अमान रान्यौरराय । सिक्रवार शूरके सब सुधाइ ॥
बडवंत गोड जद्दव सुझील । सुरखी वसंत सुंदर सुशील ॥
जाल्हन्न भाट अति तेज तानि । कायस्थ कर्मचंदहि बखानि
बनियां सुभार मल्हन सरद्द । ऊदल्ल संग एते मरद्द ॥
हज्जार षोडश असवार दीन । गजराज दोयसै मद मलीन ॥
पंचास तोप धरि हेम अच । गोला सु खाति मन पंच पंच ॥
हज्जार पंच दिय वानभूर । ऊदन्नि संग सजि चले शूर ॥
इत कन्ह चंद पुंडीर जैत । कनकेश शूर उत्तम सुचेत ॥
भौंहा चँदेल परिहार पीप । अतताइ गोपि सो अरि समीप ॥
संझिमा राय धरि धीर जुद्ध । गूजर अनेक मन किये सुद्ध ॥
लक्खन पमार हाडा हमीर । सजि चले शूर सामंत धीर ॥
चहुँआन टोंक चाटा सुसज्जि । लक्खन पमार नौबत्ति बज्जि ॥

तोमर पमार भुज धरा रुद्ध । अचलेश अजय उमँगे सुजुद्ध ॥
पज्जून मलय सीपिना पूत । कोपंत जानु रघुनाथ दूत ॥
ले हाथ अस्त्र शस्त्र कराल । फकंत ज्वान रान विशाल२१६

दोहा—पाँच सहस पृथिराजके, हरिबल कन्ह सुमार ॥
उतै बनाफर सैन जुरि, ऊदल बीस हजार ॥ २१७ ॥
दोऊ वीर रिसायकै, अस्त्र लिये कर माहिं ॥
बाग उठाइ सगा गहे, चले महातन त्राहि ॥ २१८॥

छन्द हनूफाल ।

बजरंग बीर उमंग । चले साजिकै बहु जंग॥ उत कन्ह है-वर डारि । आये सुबीर हंकारि ॥ दस सहस हैं वर लोइ । उतरैं सु हैवर सोइ ॥ दश सहस हैवर पुट्टि । जिन तोपवानन छुट्टि॥ हय छाँडि तीनि हजार । चहुँआन कान्हर लार ॥ असवार दोय सहंस । रहे पुट्टि राखय हंस ॥ दिशि पिले पेले ताय । झेले सुकन्ह सुभाय॥कढि दत मंतनि पानि।थलवलि कंदल तानि॥ गहि शुंड फेरत गाहि । हनुवन्त गिरिवर वाहि ॥ भुज तुण्ड पटकत तानि । हनुवन्त दुति जिहि जानि ॥ हय पकरि बाहत फेरि । असवार जूथन हेरि ॥ अगहन्त पीलन कोपि । भानियो कन्हर जोपि ॥ परदल सुजल मुख मूथ । जिमि लंक बन्धन जूथ ॥ मुरकी सुफौज चंदेल । बल देखि कन्हर मेल ॥ मारे सुपील मतंग । धर परे परवत अंग ॥ २१९ ॥

छप्पै ।

कन्ह कोपि चहुँआन हने हाथी मतवारे । काढि·दंत बढि बाहु डोरि डंकूरसे डारे ॥ हैं वरहत्थ समूह ढाहि दल दयो सुसैनह । भजी फौज चंदेल देखि सामंत सुनैनह ॥ मुरकियो फौज ऊदल लखी भयो बनाफर कोटि रन । सयलोट करि दुर्जन चमू में भेंटत सामंत घन ॥ २२० ॥

छंद मोतीदाम।

मिलि लाखन फौज बनाफर बीर। चल्यौ सनमुक्ख मरन्न सुधीर ॥ करी परदाक्षिन आल्हन काज। लिये सब सामत संग समाज॥ चल्यो सोमवंश सुसत्तिय धीर। पिल्यौ वरदेव करन्न गहीर ॥ पिल्यौ दल डोंगर देव दुआर। पिल्यौ सु अ-मान है तोमर तार ॥ पिल्यो राय रह्ल रह्यो रमरह्। पिल्यो सत्रसाल सुबाँधि जरह् ॥ पिल्यो सिक्रवार सुरज्जन सिंह। पिल्यो दल केशव गौड सुर्षिंह ॥ पिल्यो दल दुर्जन जह्व जोर। सुरक्खिय बीर बसंत अमोर ॥ पिल्यो दल जाल्हन भाट हुलास। पिल्यो कमचंद सुकायथ पास ॥ पिल्यो भर मल्हन बैस वरिष्ठ। इते पिलि ऊदनि संग सरिष्ठ॥ इते हय छंडित ऊदानि सत्थ। उतै हय छंडिय कन्ह समत्थ ॥ भुज-ब्बल आयुध सायुध नाहिं। डगंमग कायर त्रासहि पाहि ॥ कराक्खि कमान लई कर सेनि। मराक्किय कुंडली कीजिय मेनि ॥ चलावत सेल ढिठाय पगेन। मनो अहि बाँबिय होत मगेन॥ चलावत हैं बडि दंत दुवाह। करैं वर प्राण सुउ-ब्बट राह ॥ बहैं गडकर्ण सुलागत हीक। मनौ अहि मात्तिय जीय सुलीक ॥ बहैं बहुतैं सरनावक नेह। वरक्खय बूँद सुअं-तर मेह ॥ दई कर डारि कमान जुतैन।गहैं कर सेल लडैं दोउ सैन ॥ करैं दुहुँओर अन्यो अनमार। दुहूँ घट होत हैं पंजर पार ॥ लगावत तोवर जोभर जोर। बहै रुधि छीछि दुहू दल ओर ॥ लगे उर आय सकत्तिय शूर। मनौ विषया सिय लागि करूर ॥ अन्यो आनि सेलनि घग्गर मार। तबै दुहुँ ओर गही तरवार ॥ लगे वर कंध प्रबंध बुलाय। मनो जमराज जनेउ बताय ॥ लगैं शिर ऊपर कट्टय टोप। मनो किय गंग सरस्वाति लोप ॥ बहै किरवान सुकंधनि झांक।

रुपे रण रुंड करैं शिर हांक ॥ बहै शिव शूरनको शिर नेत । हँकारत राहु वधाब्बिय केत ॥ तजी किरवान लई जम डाढ । लगावत हक्क करी बल गाढ ॥ बखत्तर पार करै भुज जोर । मनो घन बेधि उठी रजकोर ॥ लगावत खंजर पंजर पार । किधौं किय कालिका दंत निवार ॥ चलावत संकर फेरि जु मान । छुवावत अंग निहंग कृपान॥चलाय गुरज्ज सु पीलनि शीश । मनो गिरि फोरि पुरंदर रीस ॥ लगाय भुसुंडानि सासनि ताम ।मनो दधि फोरिय ग्वालिनि स्याम॥लगायव केहरिके नख पेट । बखत्तर पार भये चरपेट । लगाइव रंजक बंदानि दाम । किधौं कढि पुच्छ सुनागिनि नाम॥ इहि विधि उद्दल कन्ह लरंत । महा उर क्षत्रिय धर्म धरंत ॥ बडो करि जुद्ध बनाफर राय ।गये धुकि शूर अनेक लराय ॥ ठठाकिय सेन उते चहुँआन । मिले दोउ बीर परग्घट आन ॥२२१ ॥

दोहा–दौरचो संझिमराय रण, ऊदल ऊपर आय ॥
सकति सोमवंशी मरद, झेल्यो बीच रिसाय॥२२२॥

छन्द भुजंगी ।

पिल्यो संझिमा राय उद्दल्लि कानी । धरैं खर्ग हत्थं सुमत्थं गुमानी ॥ लरुयो सक्कते राय संझिसु राजं । लियो बीचही आय जुद्धं समाजं ॥ दुहूँ बीर गरजे बजामंत बाहं ।दुहूँ शूर मरणं सुमंड्यो उमाहं॥कटं काटि खंगा उमंगा चलावैं।कस्यौ धर्म शीशं निकट्टं मिलावैं ॥ गटंगट्ट जुग्गिन्नि लोहू गटक्कैं । चटक्कैं बिहूसो धरामें पटक्कैं ॥ नटं जेमिनाचंत वारं दुधारं । चटक्कैं तुरी छाँडि है जाति पारं ॥ छलन्बल्ल शूरं समारं सजोरं । जरीजं जरैं ज्वान अम्मान तोरं ॥ झटक्कैं कितेकं किते एक ज्वानं । नटक्कैं किते बीर खैंचैं कमानं ॥ टट आयं केतक शूरं हकारैं । ठठक्कैं जहाँ जंग कायरं लारैं ॥ ढडंकत्त बाजंत डौंरू दमामें । दढंकंत डाढं धरैं लेंग मामें ॥

नरं आय केते लडैं चूरचूरं । तताथेइ नाचंत साचंग रूरं ॥
थहर थहर कापंत कायरं केते । दलंमें लरैं धायके सूर जेते॥
धर सेल हत्थं करैं जुद्ध भारे । नरं नेह छंडे भए नेह न्यारे ॥
परैं शूर बीरं धरा देह कट्टैं।फिरैं नाहिं दोऊ फते स्वामि रट्टैं॥
बली बीर केते गहैं सुंडि पीलं।फिरामैंपकारि खैंचि मारंत डीलं॥
भभक्कत्त खप्पर करंमाँह लीये।मरैं शूर जुग्गिनि मुखंश्रोण पीये
जुरे आय दोऊ दलं दौरि बीच।ररैं राम रामं करैं रुधिर कीचं॥
लरैं राउ राजं धरैं शीश धर्मं।बरैं अप्छरा जंग छाँडैं अधर्मं॥इतै
शूर चहुँआन संझिम रायं ।उतै उद्द बीरं बनाफर सुभायं॥वरं
सोमवंशीअगारीअमानो।लरुयो संझिमा नेहकेसोरिसानो।इतै
शूर चहुँआन संझिम रायं।उतै उद्द बीरं बनाफरसुभायं॥लियो
सेल हत्थंदियोजायज्वानं।इतैबीरसकतेसदीनीकृपानं ॥लग्यो
संझिमा सेल हीक सतापं।रुप्यो जाय धरनी परयो देह कापं॥
लगी तेगसांझिमके अंग भारी।गई अंग संगा परयो भूमि धारी॥
परयो अंतसेजं सकत्तीलखायो।तहाँगहरवारंछताकोपिआयो
इतै चंदपुंडीर नैनं लखायो।तबै कोपि करि बीरचंदंसुधायो।इतै
चंद पुंडीर देवी पुजाई।तजैं संकरं अंगकिलकारि आई॥लखी
सत्रसालं विंशालंवरिष्टं।चल्योपीयपरिहारमरिंगरिष्टं॥ पिल्यो
देव करणं करैं जोर छत्ता।जपै मंत्र सुःखं भयो क्रोधमत्ता॥इतै
देव करणं छमा गहरवारं।उतै चंद पुंडिर पीपा पहारं॥इतै दोय
परिमालके शूर ठाये । तिनी ऊपरंचंद पुंडीरआये ॥ हयंपीठि
परिहार पाछे सहायं॥लिये आय दोऊ किये चायचायं ॥लई
कोपि करि सत्रसालं कमानं।धरयो बान शूरं दई खैंचि तान
लग्यो पीय परिहारके तीर आई । भयो वारपारंपरेमूरछाई ॥
परयो पीप परिहार खेतं अचेतं । उठयो संझिमा राय पाये।

सुचेतं॥ उठ्यो संझिमा रायके करण धायो। सुसंझिममें आय खरगं चलायो ॥ लगी शीश तेगं शिरं पार होई। दुहूँ हाथ फाँकैं गहै वीर सोई ॥ कमानं छता खैंचि शीशं विधायो। दुहूँ फार भेदी सनम्मुक्ख धायो ॥ २२३ ॥

दोहा—देव करन दइ दौरिके, संझिम शीश कृपान ॥
लटकि फाँक द्वै ह्वै गई, धायो चंद अमान ॥ २२४ ॥
दुहूँ हाथ फाँकैं गही, दियो तीर करि कूत ॥
जुरचो शीश धायो लरन, भयो फेरि साबूत ॥२२५॥

छंद पद्धरी ।

संझिमा राय हनि सोमवंस । रोकिये धाइ उत्तंग तंस ॥
सकतेस दई किरवान धाय । परियो सुधरनि संझिमा राय॥
धायो सुचंद पुंडीर पीप । आयो सुसाजि चंदेल दीप ॥
जहँ सत्रसाल आये सु संग।सब शूर कोपि करि करि उमंग ॥
कंमान पकारि सत्रसाल शूर । दीनों सुपीप कैंही करूर ॥
लाग्यौ सु तीर धर फूटि लोइ।परियौ सुधरनि परिहार सोइ ॥
ता समय उठ्यो संझिम नरेस । मिटिगई मूरछा सर्व तेस ॥
दौरचो सुदेव करन गहैं रीश । दीन्हीं सुतेग संझिमा शीश॥
काटि गयो शीश द्वै फार होय।गहि लीन्ह चंद दुहुँ हत्थ सोय॥
लै तीर वेधि फारं जुवान । भयो शीश फेरि साबूत ज्वान
फिरि परचो शूर दलमें रिसाय।लै तेग हाथ दइ करन धाय॥
काटि टोप मुंडधर कमर सार । पाखर सुजीन हैवर उतार ॥
गिरि परे धरा द्वै भाग होइ। लखि सत्रसाल आडो जु सोइ॥
कम्मान खैंचि सत्रसाल तीर। दीन्हों सुकन्हके जाय तीर ॥
उत चंद आय मुकमेल कीन।सत्रसाल शीशमें गुरज दीन ॥

परियो सु टूटि रन गहरवार। फिरि भयो आय आडौ अवार॥
रान्यो रराय लै सांगि संग। दीनीं सुचंद पुंडीर अंग॥
हीकं अपार नीकं लगाय। गिरि परे चंद धरनी धराय॥
तब लख्यो कन्हने चंद हाल। दीनौं सुजाय मुदगल विशाल॥
लगि शीश खीलखीलं कराय। इत परे खेत रान्यो रराय२२६

चौपाई।

परि संकतेस सोमवंशी रन। गहरवार राठौर परे तन॥
डोंगरसींद वारन कट्टिव। सामंत शूर सामुहे दट्टिव॥
चंद पुंडीर गिरे मुरछाइय। अरु परिहार पीप गिरि ठाइय
संझिमराय फते सिर बुट्टिव। वीर धीरतनसे रस फुट्टिव२२७

दोहा-इतै कन्ह म जे आइयो, उत ऊदनि मजि आय॥
आपु आपु नृप जे छई, मंगल मरन सुभाय२२८

छंद त्रोटक।

इत कन्हर निट्ठुर जे ा दले। कनकं बड गुज्जर संग चले॥
लखि भौंह चँदेल पजू । बली। इतने सँग मामँत रंग रली॥
लखि ऊदनि जोधसलखुखयं। सँग तोमर वान बली रुखयं॥
कमधुज्ज सुराय सला ािलियं। सिक्रवार सुमज्जन सोभिलियं॥
बडबंड सु केशव गौड पिले। जहँ जद्दव राय उमंगि चले॥
मुरके बर बीर वसन्त बने। सँग जाल्हन भाट समातरने॥
बकसी जहँ कायथ कर्मचदं। उमँग्यो बनियाँ भर मल्हददं॥
पिलियो तहँ ऊदनि पायनिसों। भर झेलि बनाफर चायनसों
मुख अंग पचासक तोप करी। ठहराय जँजीरन शोर भरी॥
अरु पाँच हजार सुवान सजे। अपने अपने कर लेत गजे॥
हलकारिय गौल सुसेनि दलं। जिकरे सु जँजीरन सोर मलं॥
अब बान सुज्वान दई चिनगी। दल सामँत ऊपर दौं सिलगी

तब तोपन जामिगी दै जुदई । चहुँआन दलं बहु भै जु भई ॥
अररांहट भौ अति,सोर सह्यो। उलका दिस अंबर छाय रह्यो
लगि बान अनेकन ज्वान परे। तहँ तोपनि गोल अनेक मरे ॥
धुकिकै धर संझिम राय गिरे। रन पाँव हजार तहाँ जिकरे ॥
हसती परे तीस सबै रनमें । कितने डर कायर ही मनमें ॥
फिरिकै सोइ उद्दल बाग लई। सँग बसि हजार सुभार तई ॥
बलवंड करक्खिय खंड तनं । खँडखंड प्रचंड गयंद करं ॥
बिचरे दल पित्थलितेज तरा।सब भार सुऊदल केलि लरा॥
चहुँआन हरौल अनी मुरकी। लखि संझिम राय गिरे धरकी
जहँ चंद पुंडीर रु पीप परे । मुरझाय सुलक्ख धरानि धरे ॥
तब कन्हर कोप कियो रनमें । मुरकाय सुसेन दई गनमें ॥
करमान लई हय छाँडि दिये।सनमुक्ख सुकन्हर कोप किये॥
इत बीर वसंत सुकर्म चद । उमँग्यो बनियाँ भरमल्हदद ॥
मिलि डोंगर देव नरेश बली। सँग जाल्हन भाट प्रताप झली
परिमाल सुनैं नृप गासिबलं।चहुँआन सबै दल तासि हलं॥
सुर भोग लहौ इह उद्द कही।मृत लोकके भोग तजौ सबही॥

छप्पै ।

डिगी फौज पृथीराज तोप बाननकी मारी । पर्‌यो सो संझिम राय चंद पुंडीर सुधारी॥पर्‌यो पीप परिहार परे गुज्जर रन सोई ।परियो तीस गयन्द सहस हैवर कटि लोई॥रजपूत सहस डेढहु परे फौज बिचरि पाछे हुइय । चहुँआन हत्थ हार्‌यो हुमकि सांकि बीर दारुण दइय ॥ २३० ॥

चौपाई ।

बिछुरी फाज लखी चहुँआनह । पेलिव हाथी आगे कान्हह
कन्हरजै तहँ हुलियो वीरह । नरसिंह राम मलयसी धीरह॥

छंद त्रोटक ।

नृपहाथिय पिय्य लियेलिवरं। सब सेनि सकेलिय एक करं॥
कयमास स कन्ह पजूनमिले। जुरिके सब राय हमीर चले॥
जहाँ खिच्चिय देव प्रसंग नरं। बिझराय सुधामर धीर वरं॥
जहाँ खेत सुपूरन सह्ल चले। भर मल्हन ऊपर भार मिले॥
नृप ऊदनि ऊपर कोप कियं। इतने उमरायन संग दियं॥
इत देखि बनाफर शूर सथं। सँग डोंगर देव प्रसंग मथं॥
क्रमवीर बसंत रु जाल्हनयं। सिक्कवार सुरज्जन माल नयं॥
जहाँ भोज बनाफरभारभलं। बखता अजवावर कोपिदलं॥
महुकंभ मिले भर माल तये। इतने मिलि उद्दल संग भये॥
उत कन्ह चलाइय कोपकिय। इत ऊदलि बीर अपार दियं॥
बिफरे चहुँआन बनाफरयं। धारि हत्थनि लोह बली बलयं
चहुँआन दबाय हरोल लियं। उत ऊदनि बीर समाज किय
पिलियो कछवाह पजून बली। डरुमानिचंदेलकी फौजचली॥
पटकैं गहि हैवर भूपरयं। मसकंत गयंदनके बलय॥
कहुँ हकैं धक्कहिं शूर सुखं। कहुँ मारत सायक लाय रुखं॥
कहुँ सेल चलावत बाहु बरं। धर टूटि बखत्तर फूटि उरं॥
सिक्कवार सुरज्जन आय इतै। बिफरे कछवाह पजून जितै॥
सिक्कवार चलाइय तेगवरं। उर लागि पजूनके फट्टिधरं॥
संधिराय पजूनने कोप कियं। करवांन सुरज्जन कंध दियं॥
गिरियं सिर टूटि धरान्नि परे। ततकाल वरंगणि आय बरे॥
भ्रम दाय पजून गिरे धरनी। फिरि आइय गौंडरसी मरनी
तिहिऊपरिआयकेजामअरयो। कटिमेंतरकस्सानिलायसरयो
लइ खैंचि कमानसुज्वाननरं। दियबानसुकान्हरलागिधरं॥
फिरि तेग लई कर कोप कियं। रपटाय सुजैतके शीश दियं॥

लगिटोपकट्यो।शिर आयलगी।सँभरचोफिरि जैतअमान तगी॥
किय ऊपर डोंगरने जबहीं । सजिजामपैकोप कियोतबहीं॥
धुकिके दई डोंगरसी पगमें । घर घूमिके जाम गिरे मगमें ॥
फिरि चेतिके तेग दई शिरमें। पुनि डोंगर देव बलं विरमें ॥
शिर डोंगर टूटिकबंध नच्यो।शिवमालमें शीशसुहाल सच्यो
बकसीक्रमचंद सु आय गयो।खग धारन बीच दुधार लयो ॥
नरसिंह इते मुकमेल कियो । क्रमचंद दुधार सुजाय दियो ॥
लखि कन्ह भ्रम्यो नरसिंहइयं । रिसके क्रमचन्द सुखैंचि लयं
गहि पाय सुधीर पटक्कि घरं । घर चून भयो शिर टूटि परं ॥
लखि साहि सुधीर पटक्किबलं। पिलियो सु तहाँ पृथिराजदलं
नरसिंह सुसाहको देखि चखं।हय दाबि सु आय प्रहार लखं॥
नरसिंह लई गुरजे करमें । इत साहसु माँगि लई बरमें ॥
कर साँगिलै साह चलाय दई। नरसिंह लगी उर आय सई॥
धुकिमूरछखायनृसिंहपरचो । तिहि ऊपर पूरन मल्ल अरचो॥
लइ तग दई शिरमांह तबै। धर जाय परचो शिर टूटि जबै॥
तब देखिसुरज्जनआयअरचो ।तब पूरन मल्लते जाय लरचो॥
दइ तेग सुरज्जन शीश हथं । भइ पार धरा शिर टूटि मथं॥
लजि कन्हर आय गुरज्ज दई।लागि शीश सुरज्जन माहिसही॥
भये टूक अनेक परचोधरनी। तबहीं लखि फौज सबै करनी
फिरि ऊदलकान्हकोजुद्धभयो। सु सुनो कविचन्दबनायकह्यो

दोहा—जाल्हन भाट निराट लखि, मरन सु नियरो आय ॥
सुनियो सुत जसराजके, स्वर्ग भोग मन लाय२३३॥
उतै कन्ह सजि आइयो, इत ऊदनि साजि आय ॥
चहुँआन चंदेलके, लडे शूर सब धाय ॥ २३४ ॥

छंद भुजंगी ।

मिले उद्दल कन्ह दोऊ अभंगं । बिरच्चे सु जोधा दुहूँ स्वामि संगं ॥ जपैं इष्ट मुक्खं उचारंत सोई । भवानी धरैं ध्यान धामंत दोई ॥ उचारंत मंत्रं उचारंत धाये । विचारंत दोऊ सनमुक्ख धाये॥ मिली दृष्टिसों दृष्टि बानी उचारी । अहो कन्ह धीरे मंड्यो जुद्ध भारी ॥ दलं पात माहीं सबै आपु जीते। अबै जुद्ध कीजै सरस उद्दहीते। घने द्योस पट्टी सु आँखैं बँधाई । अबै ऊदल सों पऱ्यो काम आई ॥ लरे शूर केते नते आप जंगं । हने वापुरं जाय लै शूर संगं ॥ पऱ्यो जुद्ध मोसो अबै त्यार हूजै । भरोसे न औरैं लरौ जंग बूझे ॥ तबै कन्ह बोल्यो महा रोष होई । सुनो नंद जसराजके बात सोई ॥ इहाँ गोंड नाहीं गढा मारि जानों। अबै कन्ह चहुँआनसों जुद्ध ठानो॥ हने लोग घायल बिचारे सदाही । पऱ्यो शूर क्षत्रीनते काम नाहीं ॥ सुनी शूर बानी तबै उद्द धायो।इतै कन्ह बीनं रन रोष पायो। दुहूँ ओरते बीर बिरचे अमानैं। किये अंग रागं लसैं प्रीतिवानैं॥ चलावंत बीरं सकत्ती कटारी। लगे बीर छाती परे फूटि न्यारी॥ चलावंत बीरं दुहूँ ओर बाँके । परैं फूटि धरनी दुहूँ सेन धाँके ॥ चलावंत सेलं दुहूँ हाथ जोरैं।सनाहं सुफूटंत फूटंत घोरैं॥ चल तेग वेगं सुशूरं हँकारैं । मनो पात्र चक्रं कुलालं उतारैं ॥ चला-वंत फरसा शिरं फार होई । मना बाँटिये फारि तरबूज सोई ॥ लगे शीश गुरजं परैं खील ह्वैके। मनों कृष्ण मट्ठुकी दही डारि कैके॥ मुगदरं भीरु भारी सुशीशं।लटक्कैं अनेकं पटक्कैं सुदीशं॥ लगैं जामदाढं सनाहं सफूटैं । वयं अंत लै काल जैपाल खूटैं ॥ लगामैं तहाँ केहरी नक्ख सारैं । वरं कगलं अंगजंग सफारैं ॥ इसी भाँति कन्हं लडैं उद्द दोऊ । कटक्कैं अटक्कैं दुहूँ कोप होऊ ॥ इते कान्हकी भारि कयमास आयो । वरं टोक-

चाटा शिरं शूर ठायो ॥ लख्यो जाल्हनं चाट कयमास दोई । भयो आय आडौ महाराय सोई ॥ इतै टोकचाटा मुकं मेल कीना । बली जाल्हनं तानिके बीच लीनो ॥ दई तेग दोऊ दुहूँ वार कीनो । लगी सग दोऊनके अंग कीनों ॥ लगी जाल्हन हाथकी तेग चाही ॥ पर्‍यो शीश धरनी सुचाटा नहाही॥वरंटोक चाटा शिरंरुंड वाही।लगी जाल्हनंके गिर्‍यो भूमि माही ॥ तहीं जाय कयमास सेल चलायो । बली जाल्हनं खेत धरनी मिलायो ॥ पर्‍यो जाल्हनं खेत उद्दाल्हि धायो । तुरंगं करैं त्यार ललकारि आयो ॥ उभै शुंभ हयने धरे मुंड पील । कमरते लई तेग उद्दं असीलं ॥ दई कन्हके कंध बध खुलाया । अचेतं गयेते भयो मूरछायो ॥ करो म्यान तग लई बीर बाँक । तबै कन्ह चेत्यो लख्यो उद्दधाकें ॥ नहीं तेग लीनी गुरज्जं न हत्थं । पकारे उद्दको हाथही लच्छयत्थ॥ लडे मल्ल जैस दुहूं पीठ पीलं। हटै नाहिं दोऊ दुहू ओर डीलं॥ लख फौज दोऊ सकै जाय को है । कही चन्द ऐसे महाजुद्ध हाह ॥ भये लत्थपत्थं गिरे पील पेते । भये लोटपोटं दुहूँ बीर होते ॥ तरे उद्द ऊपर सुकन्हैं बलिष्टं। तबै जुद्ध भारी भयो खेत रिष्टं॥तहाँ चन्द बोल्यो चहूँआन डीलं। लगाओ सुतेगं करौ काह ढीलं॥तबै कान्ह चत्यौ सुनी भाट बानी। गयो पक्ष कयमास आसप्रमानी॥बली दूसरो बीर कयमास आयो।उरं उद्दक आय सेलं लगायो ॥ गही तेग कन्हं शिरं वार कीन्हों।

१ यहाँ ऐसा जान पडता है कि ऊदनिने कान्हदेवको पछाड दिया और छातीपर चढ बैठा कान्हको मारनाही चाहता था कि चंदभाटने कयमाससे कहा कि धोखा देकर ऊदनिको मारो और कान्हको बचाओ तब कयमासने धोखा देकर ऊदनिके ऊपर से लका आघात किया जब ऊदनि कयमासकी ओर चला तब कान्हने उठकर तेग लेके ऊदनि का शिर धोखा देकर काट डाला इस प्रकार धोखेसे ऊदनि बीर मारागया परंतु चंदभाटको तो कान्हकी तारीफ करनी थी इस कारण ऊदनिको नीचे कान्हको ऊपर लिखा।

परयो उद्दलं टूटि धरनी नवीनो॥रुप्यो रुंड धरनी शिरं हाँक मारे। भयो सेर उद्दल्हि बैठ्यो हँकारे। तबै उद्दलं रुंड घायो हँकारे।बली तेग कयमासके कंध झारी॥परयो मूरछा दाहिमा भूमि आयो।कट्यो टोप मुंड धरा मूरछायो ॥ परयो कन्ह दलमें बनाफर हँकारी।किते शूर मारे परे सो अगारी ॥ किते रुंड कीये लिये काटि मुंडं।हने पील केते किये सुंड डंडं॥किते डारि दीने धरानिये तरंगं। बडी मारु मारी करी उद्द जंगं॥ भयो कन्हदलमें हहकार भारी। पर शूर जितमें भजै फौज सारी॥ नचै रुंड तेगं लिये हाथ न्यारी।इसी भाँति उद्दं करी जंग रारी॥करी म्यान तेगं अवेगं सभाई। गिरयो शूर धरनी भयो मूरछाई॥ गई अप्छरा लै तहाँ सूरलोक । भयो शब्द जै दुहूँ फौज सोकं॥ २२६ ॥

दोहा-उद्दालिको नाच्यो कमध, पर्‍यो शीश धर शूर ॥
इनी फौज पृथिराजकी, एक हजार हुजूर ॥ २३२ ॥

चौपाई।

पहले ऊदल कन्ह धुकायो। पाछे कन्ह उठ्यो रिस लायो॥
लरा शूर दोऊ मलसारहं । भए मुरछा दोऊ भारह ॥
फिरि चहुँआन चेत किय चंदह।तब कयमास आय ढिग बदह
सेल साधि ऊदलके मारिव। ऊदलि खींचि दई तलवारिव॥
भयो रुंड खेल्यौ धरनी सह । दई तेग कन्हरके शीशह॥
फेरि दई कयमास सुकंदह । भये मूरछा दोऊ दंदह ॥
फिरि ऊदनि दलमाहिं हकारिव। आगे परे सबै सो मारिव॥
पहर द्वैक कीन्हों बहु जुद्धह।पाछे भयो मूरछा उद्दह॥२३७॥

दोहा–तीनिउं मिलिकै मारियो, नृप जसराजकुमार ॥
मारे भट पृथीराजके, शिर विन एक हजार २३८

छप्पै ।

सुनि ब्रह्माजीत सु बात काम ऊदलि रन आइव । द्वैह बली सब टूटि सार सामंतानि पाइव॥सत्रसाल सकतेस परे दर करन अमानह । सुरजन डोंगर परे परे जाल्हन रन पानह॥धर परे पीलंसै दोय सन दश हजार हैवर वहर।मुख वाह वाह अल्हन कही कन्ह कटक कीनो कहर ॥ २३९ ॥

चौपाई ।

ऊदल कटे बीर रनमाहीं । क्षत्रीधर्म धर्यो शिरमाहीं ॥
ब्रह्माजीत बोले इह बानी । स्वर्गभोग भोगे सुखदानी २४०

छन्द नराच ।

कियो कुमार हल्लय । सबै सुसूर मल्लयं ॥ हरोल पील कीनियं । आरिव्व पुट्ठि दीनियं॥स्वामीति धर्म चीनियं।तमंकि बाग लीनियं॥बनाय बेस फौजयं।बिचारि आल्ह चोजयं॥ मिले मरद्द मारिकै । अनेक दावँ धारिकै॥बँध्यो गरद्द गोलयं बिचौ कुमारि सोमय॥चढ्यो सु आल्ह हाथियं।लिये सुभाट साथियं ॥इत चौहान चल्लियं।मरद्द मेल मिल्लियं॥सामंत शूर साथय । हथ्यार हाथ हाथयं।कैमास कन्ह जेतयं।हमीर युक्त नैतय॥उतै सु आल्ह साजियं । लखैं सुकाम लाजियं॥चल्यो परिमालनंदयं । मनौ द्वितीय चंदयं ॥ सुरग्ग भोग आइय। खिलंत खर्ग ताइयं ॥ बुल्यो सुआल्ह बाँचयं।सुनौं चहुँआन

---

१ ऊदनिको तीनोंने मिलकर मारा जैसे महाभारत युद्धमें अभिमन्यु कुमारको अनेक वीरोंने अधर्म युद्ध करके मारा था, इसी प्रकार यहाँ ऊदनि भी अधर्म युद्ध करके मारा गया । अधर्म युद्ध करनेसे कौरव पराजय हुए. इसी प्रकार अधर्म युद्धसे अंतमें पृथीराजकी भी दुर्गति हुई ऊदनि आदि शूरोंने ही वीरगति पाई ।

साँचयं ॥ धरंम जुद्ध कीजिये ।वचन्न व्यास लीजिये॥ बुलाय जोध जोधयं॥करैं हथ्यार शोधयं॥सुधर्म जुद्ध मंडिये।अधर्म जुद्ध छंडिये ॥ सुजंत्र मंत्र कीजिये । प्रलोक जीति लीजिये॥

दोहा-ऊदनि काम सु आइयो, दई खबरि प्रतिहार ॥
अब सुधीर परिमालके, सब तेरे शिर भार॥२४२ ॥

छंद भुजंगी।

पऱ्यो ऊदल खेत सो आल्ह जान्यो।कऱ्यो क्रोध अंग रनं मरन ठान्यो ॥ लिये बान हत्थं बुल्यो बीरबानी । करैं पेज मनमें महा सुक्ख दानी॥ धरैं ईश मुंडं गरैं आज मेरो।उधारौं अबै नोन चंदेल तेरो॥ ऐसे बोलि आल्हंन सबको सुनायो। धरैं स्वामिधर्मं कूदि बीच आयो ॥ चलाये दुहूँ बीर बाँधे गरिष्टं ॥ चले साथ शूरं जपै सुक्ख इष्टं ॥ करैं खंडखंडं भुसंडं पछारैं । परैं बीर जोधा करी कुंभ फारैं॥ भभक्कैं भुसंडं निसुंडे बरच्छी । किधौं नागिनी सिंह नागैं तिरच्छी॥सुदंडं घटा जानि गाजंत बाजं । बली बाहु जोरं ततोरं समाजं ॥ गटा सेनि बंधी दुहू बीर धाये।मनौं मेघ दोऊ दिशाते घुमाये झमंके धवा आगि लग्गैं घमोरैं । उरं फूटि संनाह फूटंत धोरैं मिले शूर शूरं अपूरं अखारे।किते एक जोधानके शीश फारे॥ गहैं सुंडि दंती सुमंती चिकारैं । कढे तेग बेगं मनौरेबिकारैं॥ इतै कन्ह चहुँआन कयमास धाये । अखारे करे ते पचारे मिलाये ॥ कहूँ कै भुजा जोरि तोरंत पाटैं । किते एक जोधानके शीश काटैं ॥ किते डील गहि पीलको लै फिरामें । किते फूटि मुंडं परैं सो सभामें ॥ कहूँ हैवरं पुच्छ गहि तानि वाहैं। कहूँ पाय प्यादे गहैं धरनिमा हैं ॥ कहूँ साँगि वाहैं कहूँ कीन रोरैं । कहूँ बान छाँडै कहूँ शूर दौरैं॥ कहूँ बीर गुरजं सिरं खैंचि मारैं । कहूँ शूर बीर शिरं तेग झारैं॥ कहूँ परगला बीर बाहंत

जोरैं । कहूँ काटते शीश शूरं सजोरैं ॥ कहूँ संकरं सार बाहैं अमानैं । कहूँ पेल खल नवैं लै कमानैं ॥ कहूँ कंधबंधं सुबंधं खुलावैं । कहूँ किंगरा बिंदरी लै बजावैं ॥ कहूँ तेग संभारिकै खैंचि लेते । कहूँ खंजरं लै हियं मारि देते ॥ कहूँ बीर बाहैं भुसुंडैं निहारी । कहूँ डाकिनी संकिनी कूक भारी ॥ कहूँ भेष भीलनी भ्यानक्क गाजैं । कहूँ जोगिनी हाथ खप्पर बिराजैं ॥ कटारी कियं अंग उर जात नामी । खुले द्वार मानो अटारी सुवामी ॥ कहूँ खंजरं पिंजरं मारि फारैं। कहूँ रंजकं मारि हाँक सुधारैं ॥ कहूँ बीर कम्मान बानं चलामैं । परे मुंड धरनी सुरुंडं नचामैं ॥ कहूँ शूर धरनी परैं काम आवैं । वरैं अप्छरा सूरलोकं सिधावैं ॥ भयं काम भारी भयो फौज फौजं । किते शूर धरनी परे टूट चौजं॥इसी भाँति कयमास कन्हं चलाई। घनी सेन चंदेल धरनी मिलाई ॥ भगी सेन देखी चखी अल्ह सोई।भये आय आगे महाराय सोई॥तबै कन्हसों वैन बोल्यो पतीजै । सबै सेनको दुःख क्यों बादि दीजे ॥२४३ ॥

चौपाई ।

आल्ह भये सेना अंगरूरे । वचन कन्हसों बोलि गरूरे ॥
सुन चहुँआन आपु रण कीजे । सबै सेनको क्यों दुख दीजे ॥
आल्ह सकतिको मंत्र उपायव।सोइ अर्जुनको ईश बतायव ॥
निद्रा अस्त्र प्रयोग सुकीनो।ओंघत सामँत शूर नबीनो२४४

छंद पद्धरी ।

उच्चरे मल्ह वानी निराट।सुनिये सुकन्ह कयमास पाट ॥
सबसे न काज दुख देहु काय । कीजिये जुद्ध मोसंग चाय ॥
जंपियो मंत्र तारा सुभाय । कीन्हों सुध्यान उर मध्य आय॥
हंकार कियो देवी बलिष्ट । किलकारि कीन हलकारि इष्ट ॥
निद्रा प्रयोग कीनो सुवीर । ओघंत सर्व सामंत धीर ॥

कयमास कन्ह पुंडीर चन्द । ओघन्त सर्व सामन्त दन्त ॥ तौवर पहारसुसंलखसोइ।भौंहा चँदेल नरसिंह लोइ ॥परिहार पीप हाडा हमीर ।खीची सुडौंड धामर सुधीर ॥खेता खगार अनेक फौज।छांडी सुजंग सामंत चौज॥औघत इते सामन्त सोइ।छांडी सुजग उन्मत्तहोइ॥दार सुजोधचन्देलसेन।बलवंत बीर निर्मोह तेन॥केतेक शीश टूटंत मार । केतेक अंगलगि होत फार॥केतेक चरण टूटन्त जग । केतेक शीश बिन लरत अंग॥केतेक शूर रण कटि हुलास।केतीक गयेचहुँआन पास॥ नरनाह कन्ह पुडीर सोइ।बीरं बली सुनरसिंह लोइ ॥ मारन्त आल्ह सजि सेन शूर । चलिये नरेश ऊपर जरूर ॥ अचरज्ज पाय पृथिराज देखि।वरदाय चन्द बोल्यो विशेखि॥सुनिचन्द बैन आयो सुतीर । उच्चरयो तबै पृथीराज बीर॥कीनो सुमन्त्र आल्हन अभंग ।औघन्त शूर सब छांडि जग ॥उच्चरयो चंद सुनिये नरेश । कीन्हों प्रयोग आल्हन सुवेश ॥ तारा सुहस्त झीनो सुपाय।दीना सुमन्त्र शकर सहाय।पंडवसुकीनकौरवन निद्ध । सो कियो आल्ह तुम परमसिद्ध ॥अवतार उही अब भयो आय।दीनो सु मन्त्र गोरख बताय॥यह सुनी बात पृथी-राज भूप । बोले सुचन्दसों दन्द गूप ॥ २४५ ॥

दोहा-पृथीराज पूछत बगादि, कब सु मिले ऋषिराय ॥
किहि प्रकार विद्या दई, किहि बिधि मन्त्र बताय२४६

छप्पे ।

कहत चन्द वरदाय आल्ह अवतारसलम्भय।गयोशिकार इकबार राति उद्यान भूलि गय॥गिरि ऊपर जहां गयो तहां गोरख ऋषि बैठव।कियो दरश तब आल्ह आल्ह गोरख चख देठव ॥ लग्गयो पाँय जसराय सुहाथ जोरि बिनती करिय।

मोहिं संग लेहु उपदेश करि तजी भवन सम्पति भारिय २४७
तब गोरख मुख उचारि वरष सेवा करि सारह।तबतारीसमखुली
देहु जो माँगे बारह॥करैं बनाफर सेव रैन दिन एक चित्त करि।
हाथ पायँ ध्वावंत प्रात उठि धीर नीर भरि॥या विधि सुसेव
कीनी प्रगट एक चित्त करि आल्हये। बीतो सु बरस तारी
खुली बहुत खुशी गोरख भये॥ २४८॥

चौपाई ।

तब गोरख मुख बोलिव बानी। आल्हा माँगि कछू मन मानी
बरस एक लगि धायव मोको।जो माँगे सो देंगो तोको२४९॥

दोहा—अस्त्र शस्त्र सिखये सबै, कीन्हीं अमर सुदेह ॥
ऊहल लगि गृहमें रहौ, पाछे जोग सुलेहु ॥ २५० ॥
सो ऊदनि जूझो अबै, गोरख आवतु होय ॥
आल्हा संग सिधारि हैं, वचन कहगये सोय ॥२५१॥
अब याते यह मंत्र है, और न करौ उपाउ ॥
गोरख आवत होयगो, भलो बन्यो है दांउ ॥२५२॥
चामुंडको कीजे बिदा, कदन करन चंदेल ॥
आततायको अग्र करि, करौ लरनको खेल ॥२५३॥
चंद वचन पृथीराज सुनि, लोचन भये बिशाल ॥
बिदा करी चामुंडकी, पकरनको परिमाल ॥ २५४ ॥
चलौ सहस रजपूत लै, चामुंडराय सहाय ॥
आततायको अग्र करि, कियो जुद्ध मनभाय॥ २५५॥

छन्द त्रोटक ।

करि कोप तबै पृथीराज मनं। अतताय सु अग्र किये सजनं ॥
मुख मंत्र उचारत आपु नृपं । करिके उपजूथ निदेह द्रपं ॥
गिरिजा हरशंकर ध्यान हियं। अतताय नरेश सुलोह लियं ॥

महा कालिय ध्यान धरयो जबहीं। अतताइय सिद्धि करी तबहीं
वरबीर अराधन चंद कियं। रविको करि ध्यान समान हियं॥
बिफरे बर बीर पिल बलमें। हथ लै तिरशूल चले दलमें।
मुख मंत्र उचारत सो हलमें। मंत्र सिद्धि किये कलसों पलमें।
किलकारियकालिका आगनकी। सुधि भूलिगईउठिजागनकी
बिन शुंड बिहंड गयंद करैं। खँड खंड प्रचंड नरेश हरैं॥
लगि लोह सुपूरन हूरवरं। उमँगे सब शूर चँदेल घरं॥
अगवानिय केसव आय गयो। रण अश्व कैमास उठाय लयो
तबहीं अतताइय मेल कियं। वर केसवके तिरशूल दियं॥
लटक्यौ तन केशव भूमि परयो। ततकाल वरंगनि आय बरयो।
तबहीं जगनिक्क प्रताप बली। कर तेग लई अमरेज तली॥
जगनिक्कपै लायर कन्ह रखं। किरमान सुदी पर कन्ह मुखं॥
भर मन्यौनरनाहधरान्निपरयौ। तेहिऊपर दाहिमा आनिअरयौ
कयमास लगाइय तेग तनं। लगि शीश सही कबिराज भनं।
जगनिक्क लयो कर सेल गन्यौ। कयमास प्रकासही जाय हन्यौ
कयमास दई फिर तेग शिरं। भइ पार धरा शिर टूटि गिरं॥
धरनी धर दौरत शीश बिना। किरमान लये कर धार मना॥
बिन शीश जगन्निक्क पील हन्यौ। भट शूर महा चहुँआन गन्यौ
दोहा-जगनिक परयौ सुशीश बिन, उठ्यो रुंड करि रोस॥
पील हन्यो देख्यो नृपति, करी कीर जनु जोस२८७॥

छप्पै।

रुपि जगनिक रनमाहिं हत्थ वाहे कर हत्थिय। हनी सेन हज्जार रुंड धायो समरात्थिय॥ हली फौज चहुँआन रुंड खेल्यो बिन शीशह। मानि जोर पृथिराज पील मारयौ करि रोसह।

कीनो कहाव रनमाहिं बढि लोहा लहरि बाढम सुहर ।
जंपियो चंदबानी बरनि, भट्ट ठट्ट कीन्हों कहर ॥२५८॥

–आततायी आल्हा उपर, हाँकि चल्यो बलवान ॥
उतै बनाफर आयकै, बोल्यो बीच बिहान ॥ २५९ ॥

छंद पद्धरी ।

बिरच्यो सु आततायं बलिष्ट। उत आल्ह बीर मन धारि इष्ट ॥ टार जु शूर चंदेल फौज।इतमें सुदौरि चहुँआन चौज। छूटंत बान सननं सनात।तोपं बलिष्ट भवनं भनात॥विफरंत बीर धीर हँकारि । उचरन्त दुहूँ दल मार मारि ॥ बाहंत सेल हेलं समारि।लागन्त अंग हिकं सुफारि॥खैंचत कमानमारन्त तीर।लागन्त पार फूटन्त पीर॥बाजंत तेग वेगं अनेग। टूटंत मुंड रुंडं बनेग ॥ मारंत ज्वान मुदगर फिराय । लागंत शीश चूरं कराय।बाहन्त गुरज गहि सँभरि शूर । कांपंत देखि कातर सुकूर॥ खंजर सुखैंचि हीकं लगाय । वारं प्रवेश सारं समाय ॥ फेकन्त चक्र अक्रं फिराय । ले जांत शूर शीश उडाय॥मारन्त बीर बानैत बाँक। लागंति अंग फोरंति कांक॥ बाहंत अंग जमधर जुवान ॥ फाटन्ति हीक लीकं प्रमान ॥ केते न हाथ नहिं सार भाय । फेकंत एकको एक धाय ॥ या भाँति आततायं लरात ।आल्हन्न बीर मार सरात॥ लै आततायि बीरं त्रिशूल। दीन्हों सुआल्ह हींक प्रमूल ॥आल्हन सु खैंचि तेगं लगाय । धुकि पऱ्यो धरनि शूरं समाय ॥ आल्हा अनैत उत भयो जुद्ध।भयो विषम खेत भारी विरुद्ध॥२६०॥

दोहा– भयो मूरछा आल्ह नृप, आततायके दंद ॥
ता समये पृथिराजसों, बानी बोल्यो चंद ॥२६१॥

चौपाई

आल्हा गिरो मूरछा खाइय। दोउ बीर गिरे मुरझाय ॥
ब्रह्मजीतको वेगहि मारौ। नातर उठे आल्ह रन हारौ ॥
दोहा—ब्रह्मजितसों जुद्ध करि, संभरि राय सँभारि ॥
जो जगि है आल्हा नृपति, तौ हारौगे रारि॥२६३॥

छप्पै।

पेल पील पृथिराज चरयो चंदेल सनमुख । ईश मंत्र उच्चारि बीर वर धारि मंत्र रुख ॥ नृपति आपु हुंकारि बान कंमान पान किय। खैंचि राज करि रोस तीर चन्देल हीक दिय ॥ भेदंत तीर खेदन्त हुय फूटि अंग सननात गय ॥ पाखर सुफूटि हय वर सहित औ तुरंग असवार भय ॥२६४ लग्यो तीर चन्देल धरयो पृथिराज सनंमुख। लये बीर कर साँगि आगि चख भरे बान दुख ॥ आन आन पृथिराज चाय खगनसों खेलह। करैं जुद्ध पर सुद्ध बीर सामन्तन ठेलह ॥ सुनि चाहुँआन पालं उतरि हय मँगाय असवारभय। आये सु बीर दुहुँ ओरते रास जोरि घमसाय हय ॥ २६५ ॥

छन्द भुजंगी।

चले सो चँदेलंमुखचाहुँआनं।प्रियामान जंगं उमगंउठानं।
लई साँगि हत्थं हनीराजहीकं। भई पार अंगं भ्रम्यौ शूर जीकं।
भ्रम्यौ कगलं अंगजंगंधुकायो। अचेत हयंते धरा मूरछायो ॥
लख्यौ चन्दवरदायराजाधिराजं।गुरूमन्त्रकीन्हौंविरुद्धंसमाजं।
जगी मूर्च्छा चाहुँआनं जहाँहीं।गयो रोस ह्वै ब्रह्मजीतं तहाँहीं।
लये बान कंमान हत्थं समत्थं।दयो खैंचि तीरं चन्देलंसुमत्थं।
लई खैंचि तेगं शिवं वार कीनो।परं उद्दलं खेत धरनीनबीनो।

भजी फौज चंदेलकी सर्वसत्थं। उत्योतासमय आल्हबीरंसमत्थं। भयो चेतआल्हाइतै अत्तताई। लियेखर्ग हत्थंमिलेबीचआई। हनी आल्ह तेगं इतै अत्तनायं। गिरचो बीर धुक्किके सुधरनी धरायं। करी पैज आल्हा चलयो राज सुक्खं। धरौ स्वामिधर्मे हियं शूर सुक्खं॥ पृथीराज धरनी अचेतं परायं। अगारी कयंमास ठान्यो रिसायं॥ इतै आल्ह धाये किये रोस सक्खं। उतै आहिमा तेग दीनी सखुक्खं॥ दई आल्हके धाय कन्धं खुलायो। दई आल्ह तेगं सुधरनी परायो॥ कियो ध्यान गोरख सुविद्या पसारी। प्रयोगे रहे शूर सामन्त भारी॥ गुरु चन्दवरदाय आल्हं धरायो। तुलायं सरा और हस्ती फिरायो॥ चली आल्ह विद्या अनेकं उपाई। गुरू चन्द आगे सुजानं न पाई॥ भई स्वर्गवानी अनन्दं उपाई। अहो भट्ट गुरुराय जीतै न जाई॥ इतेमें गुरु गोरखं आप आये। अगारी करारं किये जानि पाये॥ तबै गोरखं आल्हसों बैन भाखे। रहो धर्मपे कर्म विद्याभिलाखे॥ २६६॥

चौपाई।

भये मूरछा सब बरदाई। गोरखकी वसुधा फैलाई॥
गोरख कह्यो योगपथ लीजै। काया काजै अमर सुकीजै॥

---

१ यहाँ चंदजीने अपनी प्रशंसा की है राजा परिमालकी ओरके भट्ट गुरु मार डाले गये उनके लिये आकाशवाणी नहीं हुई चंदजीके लिये आकाशवाणी हुई कि अहो भट्ट गुरुराय! जीते न जाई सच्ची बात तो यह जान पड़ती है कि आल्हाने सबको परास्त किया तब वहाँ गोरखनाथजीने आकर पृथ्वीराजको सचेत कर समझाया और दिल्लीको लौट जानेकी आज्ञा दी, जब पृथ्वीराजका कूच होगया तब आल्हाको साथ लेके वनको चले गये चामुंडराय तो आल्हाके जुद्ध समय मारा गया था परिमालको पकड़नेके लिये भेजना कैसा इसी प्रकार आगेकी बातैं भी चंदकी सशंकित हैं।

देह अमर कर वनको धाये । छोडा भोग योग मनलाये ॥
जगसों छोंडि योग रंगमाहीं । सकल कामना मनते ठायीं२६७
दोहा-आल्ह चले ताजि समरको, छांडि भोगको वास ॥
गोरख संगी ह्वइ चले, किये निरंजन आस॥२६८॥

छप्पै ।

लोह लागि चहुँआन परे धरनी मुरछाइय।गिद्धिनि बैठी आइ चोंच चाहत दृग लाइय॥देख्यो संझिम राय नृपति पंखनि गच्छन।अपने तनको मास काटि दीयो भषपच्छन ॥उडिगई मांस लै गगनको चाहुआन दृग छंड तव।धनि धन्य संझिमा रायको अंत समय भ्रम लिज्जियव ॥ २६९ ॥

दोहा-गिद्धिनिको निज पल दियो, नृपके नैन बचाय ॥
देह सहित वैकुंठको, पहुँचे संझिम राय ॥ २७० ॥

छंद पद्धरी ।

चामुंड जीति परिमाल लाय।सब लूट माल कागद बताय॥ चंदेल रायको लै मिलाय । उन पकरि बाँह उरसों लगाय ॥ पंचाश क्रोड रौकंत दाम। पंचास क्रोड पाषान याम॥ मुक्ता सुवास भूषन सजोर । पंचास क्रोडको और जोर ॥ अन्नेक वाजि अन्नेक माल । अन्नेक पील डीलं बिशाल ॥ भूषण अनेक नग खचित लोल । अन्नेक वसन लीन्हें अमोल ॥ शत कोटि दींव कहुँ नाहिं सँभार । चामुंड जाति दाहिमा सार ॥ अन्नेक लूटको माल सांटि । सब दियो राज सबको सुबांटि ॥ परिमाल राजको छाँडि दीन । तुम रहो जाय कनवज कुलीन ॥ २७१ ॥

दोहा-कछवाहे पज्जूनको, राखि महोबे थान ॥
दंड छौंडि परिमालको,कीन्हों नृपति पयान॥२७२॥

चाहुँआन दिल्ली नगर, कीन्हों नृपति प्रवेश ॥
घरघर मंगल गावहीं, आयो जीति नरेश ॥२७३ ॥
संझिम राय कुमारको, बोलि हुजूर नरेश ॥
हय गय मणि माणिक बकसि, अधआसन अध देश॥
और शूर सामंत सब, घर इनाम पहुँचाय ॥
ह्वइ प्रसन्न बैठो तखत, सो वह संभारि राय॥ २७५ ॥
याको सुनि कछु कीजिये, यथाशक्ति सन्मान ॥
कबहूँ हार न आवही, पाँच पचास प्रमान ॥ २७६ ॥
आल्हखंड पूरण भयो, कह्यो चन्द कवि राय ॥
पढ सुनै सीखे रहै, ताको सुभट सहाय ॥ २७७ ॥

इति श्रीकविचन्दभाट विरचित आल्हखण्ड सम्पूर्ण शुभमस्तु ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, 'लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर' प्रेस-कल्याण | खेमराज श्रीकृष्णदास, 'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम् प्रेस-मुम्बई.

नाम.	की. रु. आ.
द्रौपदी पचीसी—पं० शारदाप्रसाद अग्निहोत्री निर्मित	.... ०—१
नरसीमेहताका मामेरा—बडा भक्तोद्धारण नरसीताकी नान्हींबाईका भगवानने मामेरा किया उसका वर्णन (मारवाडीभाषामें)	.... ०—६
नवरत्नरासविलास इसमें श्रीकृष्णजीकी अनेक प्रकारकी रासलीला हैं। रासधारियोंको अवश्य लेने योग्य है.	.... ०—१२
दुर्गाचालीसी—भगवती दुर्गाजीकी स्तुति	.... ०—१
दानलीला, नागलीला और गर्भचिंतामणि-तीनों एकत्र हैं	....०—१
द्वादशग्रन्थी—(गुरुनानकजीकी) गाहिरिगंभीरियेमतके स्वामी रोपडनिवासी विष्णुदासजीकृत अतिउत्तम भक्तिबाधरूप स्तुति और विनय हैं.	.... ०—७

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस कल्याण—मुंबई.